

प्रकाशक—

भीमन्त छेठ सिद्धाचार्य सहस्रीचन्द्र,

वैज-साहित्योद्धारक-कर्म-धर्मालय

बम्बई (बर)



मुद्रक—

टी. एम्. पाटील

मैत्र

छात्रवृत्ति प्रिंटिंग प्रेस, बम्बई.

THE ŚATKHANDĀGAMA

OF

PUṢPADANTA AND BHŪTABALI

WITH

THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

VOL VIII

BANDHA-SWAMITVA-VICAYA

Edited - -

with introduction translation, indexes and notes

By

Dr HIRALAL JAIN M. A., LL. B., D. Litt.,

C. P. Educational Service, Nagpur-Mahavidyalaya, Nagpur

ASSISTED BY

Pandit Balchandra Siddhanta Shastri

with the cooperation of

Pandit DEVAKINANDAN
Siddhanta Shastri

*

Dr A. N. UPADHYE
M. A., D. Litt.

Published by

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra

Jaina Sāhitya Uddharaka Fond Kāryālaya,

AMRAOTI (Betar).

1947

Price rupees ten only

प्रकाशक—

भीमन्त सेठ सिताधराय सस्मीचन्द्र,

वैद्य-साहित्योद्धारक-कठ सर्पाजप

जम्नपती (बर)



मुद्रक—

टी. एम् पाटील

मैज

छात्रपती प्रिंटिंग प्रेस, जम्नपती.

THE ŚATKHANDĀGAMA

OF

PUṢPADANTA AND BHŪTABALI

WITH

THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VIRASENA

VOL VIII

BANDHA-SWAMITVA-VICAYA

Edited

with introduction translation indexes and notes

By

Dr. HIRALAL JAIN M. A., LL. B., D. Litt.,

C. P. Educational Service, Nagpur-Mahavidyalaya, Nagpur

ASSISTED BY

Pandit Balchandra Siddhanta Shastri.

with the cooperation of

Pandit DEVAKINANDAN
Siddhanta Shastri

Dr. A. N. UPADHYE
M. A., D. Litt.

Published by

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,
Jains Sūhitya Uddharakī Fend Karyālaya,
AMRAOTI (Berar).

1947

Price rupees ten only

Published by—

Shrimant Seth Shitalbal Laxmichandra,

Jains Sahitya Uddharaks Fund Karyālay.

AMRAOTI [Berar].



Printed by—

T. M. Patil, Manager

Saraswati Printing Press,

AMRAOTI (Berar).

विषय-सूची



	पृष्ठ
१ प्रारम्भ	१
१	
प्रस्तावना	
Introduction	
१ विवरण	१
२ वस्तुनिष्ठ विवरण	९
३ विवरण	१७
२	
मूल, अनुवाद और विवरण	१-१०८
१ विवरण	१
२ विवरण	११
३	
विवरण	
१ विवरण	१
२ विवरण	२१
३ विवरण	२
४ विवरण	२२
५ विवरण	२



प्राक्-कथन



बट्टकम्पागम सभसे माग सुएकनके प्रकटित होनेके दो वर्ष पश्चात् एष
आठव माग बन्धस्वामित्व-विषय पञ्चमेके बाब पाहुँच रहा है । इस मागके
साथ बट्टकम्पागमके प्रथम तीन सख पूर्यत, बिद्राससभके सम्मुख ठपलिन हो
गये । कगब, सुरा व ब्यबत्तादि सम्बन्धी अनेक बट्टिनाइयो व बसुविषयके
होते हुए भी यह कार्य गतिशील बना ही रहा है, इसका जेय प्रबन्धमागके
संस्थापक श्रीमन्त सेठजी व अन्य अधिकारी, भेरे सहयोगी व बसुधर्मजी साजी
तथा सरस्वती प्रेसके मैनेजर श्रीकुत टी एम्, पाटीलको है जो इस कार्यके विशेष
रुचि और कपलके साथ निबधते जा रहे हैं । इन सबका मैं हृदयसे अनुगृहीत हूँ ।
जन्मीके सहयोगके ककार आगेका कार्य भी समुचित रूपसे कल्य रहेगा, ऐसी
आशा है । जेँ मागका मुखम प्रारम्भ हो गया है ।

प्रस्तावना

INTRODUCTION

The present volume contains the complete third part (Khanda) of the *Satkhandāgama*. It is called *Bandha-samlitta vicaya* which means Quest of those who bind the Karmas. Out of the 148 varieties of Karmas, it is only 120 that are capable of being produced directly by the soul. The author of the *Sūtras* has mentioned, in the form of questions and answers, the spiritual stages (*Gunasthānas*) and the detailed conditions of life and existence (*Marganāsthanas*) in which specified Karmas may be forged. Forty-two *Sūtras* are devoted to the *Gunasthāna* treatment, and the rest 282 to the *Marganāsthāna*. The commentator has enlarged the scope of the treatment of the subject by raising twenty-three questions and answering them in relation to all the Karmas. In this way good many details about the Karma Siddhanta have been exposed and the whole work is very important for a thorough study of Jain Philosophy.

विषय-परिचय

इस खण्डका नाम बन्धस्यामित्व-विषय है, जिसका अर्थ है बन्धके स्थानित्वका विषय अर्थात् विचारणा, मीमांसा या परीक्षा । तदनुसार यहाँ यह विवेचन किया गया है कि कौनसा बन्धबन्ध जिस किस गुणस्थानमें व मार्गागस्थानमें सम्मन है । इस खण्डकी उत्पत्ति इस प्रकार बताई गई है —

इति आदि चौबीस अनुयोगश्लोकोमें छठवें अनुयोगश्लोकका नाम बन्धन है । बन्धनके चार भेद हैं—बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविनाश । बन्धविनाश चार प्रकारका है—प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रवेश । इनमें प्रकृतिबन्ध दो प्रकारका है—मूल प्रकृतिबन्ध और उत्तर प्रकृतिबन्ध । सत्प्रत्ययणा पृष्ठ १२७ के अनुसार उत्तर प्रकृतिबन्ध भी दो प्रकारका है, एकैक्योत्तरप्रकृतिबन्ध और अन्धोभासुत्तरप्रकृतिबन्ध । एकैक्योत्तरप्रकृतिबन्धके समुच्चयित्वादि चौबीस अनुयोगश्लोक हैं जिनमें बतलाने अनुयोगश्लोक बन्धस्यामित्व-विषय है ।

इस खण्डमें ३२४ सूत्र हैं । प्रथम ४२ सूत्रोंमें शेष अर्थात् केवल गुणस्थानानुसार प्रत्ययण है, और शेष सूत्रोंमें शेष अर्थात् मार्गानुसार गुणस्थानोंका प्रत्ययण किया गया है । सूत्रोंमें प्रश्नोत्तर रूपसे केवल यह बतलाया गया है कि कौन कौन प्रकृतिवर्ग कितन कितन गुण स्थानोंमें बन्धके प्राप्त होती हैं । किन्तु बतलाने सूत्रोंके देशामर्शक मानकर बन्धमुच्छेद आदि सम्बन्धी तैत्तिरीय प्रश्न और उठाये हैं और उनका समाधान करके बन्धोदयमुच्छेद, श्लोदय-परोदय, साम्प्रत-निरुद्ध, समस्तव्यवस्थाय, गति-संयोग व गति-स्थानित्व, बन्धाग्राह्य, बन्ध-व्युत्पत्तिस्थान, साप्ति अनादि व ध्रुव-अध्रुव बन्धोंकी व्यवस्थाका स्पष्टीकरण कर दिया है, जिससे विषय सर्वांगून प्रकटित हो गया है । इस प्रत्ययणाकी कुछ विशेष व्यवस्थाये इस प्रकार हैं—

सन्तरवन्धी—एक समय बधकर द्वितीय समयमें विनश्य बन्ध विनाश हो जाता है वे सन्तरवन्धी प्रकृतिय हैं । वे ३४ हैं—असाक्ष्येनीय, सीरि नृपुंसकवे, बरति, सोरु, मरुगति, ऐकेन्द्रियादि ४ जाति, समचतुरप्रसंस्थानका छोट क्षेत्र ५ सरधान, बर्धर्मनायक सहननरो छोट क्षेत्र ५ सहनन, नरकगालुपुर्ण, आकाश, उपेत, अप्रशस्तविहायोगति, स्वाचार, सूत्र, अर्थात्, साधारणशरीर, बरिवा, अशुभ, दुर्मग, दुस्तर, अनादेय और अपराधी ।

निरन्तरबन्धी — जो प्रकृतिषु जगत्स्ये मी कर्तुर्मुहूर्त काल तक निरन्तर रूपसे बँसी है वे निरन्तरबन्धी हैं। वे ५४ हैं— ध्रुवबन्धी ४७ (देखिये पृ. ३), वायु ४, दीर्घक, आहारकक्षरी और आहारकक्षरीरंगोपांग।

सान्तर-निरन्तरबन्धी— जो जगत्स्ये एक समय और उत्कर्षत एक समयसे लेकर कर्तुर्मुहूर्तके आगे मी बँसी जाती हैं वे सान्तर-निरन्तरबन्धी प्रकृतिषु हैं। वे १२ हैं— सात्यमेदनीय पुरुषमेव हात्य, रति, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, पक्षेन्द्रिय ज्ञानि, वीरारिक्त-शरीर, वैदिकिक्तशरीर, समचतुरस्रस्वान औरारिक्तशरीररंगोपांग, वैदिकिक्तशरीररंगोपांग, बर्द्धम-रुहन्न, तिर्यग्गसानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी देवगानुपूर्वी परमात, उच्छ्रय प्रशस्तविज्ञानोगति, अस, बरर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, तिर, ध्रुम ध्रुमग, सुस्तर आदेय, यज्ञवर्ति, नीचगोन और उच्चगोन।

गतिसंयुक्त— प्रभुके उदरमें यह कलापाया गया है कि विवक्षित प्रकृतिके बन्धके साथ बार गतियोंमें कौनसी गतियोंका बन्ध होता है। जैसे— मिथ्याचिदे जीव ५ ज्ञानाकरणको चारों गतियोंके साथ, उच्छ्रयगतिसे मनुष्य व देवगतिके साथ, तथा ब्रह्मसूत्रिके नरकगतिके बिना होय १ गतियोंसे संयुक्त बँधता है।

गतिस्वामित्वमें विवक्षित प्रकृतियोंसे बंधनेवाले कौन कौनसी गतियोंके जीव हैं यह प्रकटित किया गया है। जैसे— ५ ज्ञानाकरणसे मिथ्याचिदे असक्त गुणस्वान तक चारों गतियोंके, संयतासेव तिर्यच व मनुष्य गतिके, तथा प्रत्यचि उपरिम गुणस्वानकी मनुष्यगतिके ही जीव बँधते हैं।

जगत्तन्में विवक्षित प्रकृतिक बन्ध किस गुणस्वानसे किस गुणस्वान तक होता है, यह प्रकट किया गया है। जैसे— ५ ज्ञानाकरणका बन्ध मिथ्याचिदे लेकर सूक्ष्मात्मगत गुणस्वान तक होता है।

सावि बन्ध— विवक्षित प्रकृतिके बन्धका एक बार स्पष्ट हो जानेपर जो उपसमझोति भय हुए जीवने पुन उसका बन्ध प्रारम्भ हो जाता है वह सावि बन्ध है। जैसे— उपसमझ कराय गुणस्वानसे भय होकर सूक्ष्मात्मगत गुणस्वानसे प्राप्त हुए जीवके ५ ज्ञानाकरणका बन्ध।

जगदि बन्ध— विवक्षित कर्मके बन्धके बुद्धिउत्तिस्वानको नहीं प्राप्त हुए जीवके जो उसका बन्ध होता है वह जगदि बन्ध कहा जाता है। जैसे— अपने बन्धबुद्धिउत्तिस्वान रूप सूक्ष्मात्मगत गुणस्वानके अन्तिम समयसे नीचे सर्वत्र ५ ज्ञानाकरणका बन्ध।

ध्रुव बन्ध—अमर्य जीवोंके जो ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध होता है वह अनादि अनन्त होनेसे ध्रुव बन्ध कहा जाता है ।

ध्रुवबन्धी प्रकृतियाँ ४७ हैं— ५ ज्ञानाकरण, ९ दर्शनाकरण, मिथ्यात्व, १६ कर्माय, मय, बुध्पत्ता, तैजस व कर्मण सरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपधातु, निर्माण और ५ अन्तराय ।

अध्रुव बन्ध—मर्य जीवोंके जो कर्मबन्ध होता है वह विनश्य होनेसे अध्रुव बन्ध है ।

अध्रुवबन्धी प्रकृतियाँ—ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंसे शेष ७१ प्रकृतियाँ अध्रुवबन्धी हैं ।

इन्में ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव चापों प्रकार तथा शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध ही होता है ।

उक्त व्यवस्थायें यथासम्भव आगेकी तालिकाओंमें स्पष्ट की गई हैं—

बन्धोदय-तालिका

श्रंका	प्रकृति	स्वोदयबन्धी कादि	साम्प्रतबन्धी कादि	बन्ध किस गुणस्वाभाव किस गुणस्वाभाव तक	बन्ध किस गुणस्वाभाव किस गुणस्वाभाव तक	पृष्ठ
१-५	ज्ञानाकरण ५	स्वो बन्धी	निरन्तरबन्धी	१-१०	१-१२	७
६-९	अधुदर्शनाकरणादि ४	"	"	"	"	"
१०-११	मिथ्या, प्रपञ्चा	स्व-परि	"	१-८	"	१५
१२-१४	मिथ्यानिग्रहादि ३	"	"	१-२	१-६	१०
१५	सत्तापेक्षनीय	"	सा निर.	१-११	१-१४	१८
१६	असत्तापेक्षनीय	"	साम्प्रतबन्धी	१-६	"	४०
१७	मिथ्यात्व	स्वो	नि	१	१	४२
१८-२१	अनन्तानुबन्धी ४	स्व-परि	"	१-२	१-२	१०
२२-२५	अप्रज्ञास्वयानाकरण ४	"	"	१-४	१-४	४६
२६-२९	प्रज्ञास्वयानाकरण ४	"	"	१-५	१-५	५०
३०-३२	सम्बन्धनप्रोधादि ३	"	"	१-९	१-९	५२-५५
३३	सम्बन्धनकोम	"	"	"	१-१०	५८

संख्या	महति	स्वोदयधम्मी वादि	साम्प्रदायधम्मी वादि	वज्र किंत्त गुणस्थानधरे किंत्त गुणस्थान उक्त	वज्र किंत्त गुणस्थानधरे किंत्त गुणस्थान उक्त	पृष्ठ
३४ ३५	हास्य, छति	स्व-परो	सा. नि	१-८	१-८	९५
३६ ३७	कस्ति, जोक्त	"	सा	१-६	"	१०
३८ ३९	मय, जुगुप्सा	"	नि	१-८	"	५९
४०	मपुसज्ज्वर	"	सा.	१	१-९	४२
४१	अभिद	"	"	१-१	"	३०
४२	पुरुषवेत्त	"	सा नि	१-९	"	५१
४३	नारसगु	परो	नि	१	१-४	४१
४४	तिर्यंगासु	स्व-परो.	"	१-२	१-५	१०
४५	मनुष्पासु	"	"	१, २, ४	१-१४	६१
४६	देवासु	परो	"	१-७	१-४	६४
				(१६ को छोड़)		
४७	नरकासु	"	सा.	१	"	४२
४८	तिर्यंगासु	स्व-परो.	सा नि	१-२	१-५	३०
४९	मनुष्पासु	"	"	१-४	१-१४	४६
५०	देवासु	परो	"	१-८	१-४	६६
५१ ५४	एकेन्द्रियादि ४ वादि	स्व-परो.	सा.	१	१	४१
५५	पंचेन्द्रिय वादि	"	सा. नि	१-८	१-१४	६६
५६	बौद्धादिकस्योपर	"	"	१-४	१-११	४६
५७	शैब्यदिकस्योपर	परो.	"	१-८	१-४	६६
५८	ब्राह्मणस्योपर।	"	नि	७-८	६	७१
५९	तैत्तिरीयस्योपर	स्वो.	"	१-८	१-११	६६
६०	वर्त्मनस्योपर	"	"	"	"	१
६१	बौद्धादिकस्योपर	स्व-परो.	सा. नि	१-४	"	४६
६२	शैब्यदिकस्योपर	परो.	"	१-८	१-४	६६
६३	ब्राह्मणस्योपर	"	नि	७-८	६	७१

६४	निर्माण	स्वो	नि	१-८	१-१३	६६
६५	समवतारसंस्थान	स्व-परो	सा नि	"	"	"
६६	न्यग्रोषपरिमण्डलसंस्थान	"	सा	१-२	"	३०
६७	स्थासि संस्थान	"	"	"	"	"
६८	कुम्भकसंस्थान	स्व-परो	सा	१-२	१-१३	३०
६९	शामन संस्थान	"	"	"	"	"
७०	हृण्डकसंस्थान	"	"	१	"	४२
७१	वज्रहृदयमन्त्रासंस्थान	"	सा नि	१-४	"	४६
७२	वज्रनासासंस्थान	"	सा	१-२	१-११	३०
७३	नासासंस्थान	"	"	"	"	"
७४	अर्धनासासंस्थान	"	"	"	१-७	"
७५	शक्तिसंस्थान	"	"	"	"	"
७६	अक्षपातसंस्थासंस्थान	"	"	१	"	४२
७७	स्पर्श	स्वो.	नि	१-८	१-१३	६६
७८	रस	"	"	"	"	"
७९	गन्ध	"	"	"	"	"
८०	वर्ण	"	"	"	"	"
८१	नरकगत्यानुपूर्वी	परो.	सा	१	१, २, ४	४२
८२	सिद्धिगत्यानुपूर्वी	स्व-परो	सा-नि	१-२	"	३०
८३	मनुष्यगत्यानुपूर्वी	"	"	१-४	"	४६
८४	देवगत्यानुपूर्वी	परो	"	१-८	"	६६
८५	अगुह्यमु,	स्वो.	नि	"	१-१३	"
८६	उपपात	स्व-परो.	"	"	"	"
८७	परपात	"	सा नि	"	"	३५
८८	अक्षय	"	सा	१	१	४२
८९	उद्योत	"	"	१-२	१-५	३०
९०	उद्योत	"	सा नि	१-८	१-१३	६६
९१	प्रसस्तविद्योगति	"	"	"	"	"

श्रुति	प्रकृति	स्वरूपवली प्रकृति	सामान्यवली प्रकृति	मध्य विषय गुणवली प्रकृति	उच्च विषय गुणवली प्रकृति	पृष्ठ
९२	अप्रवृत्तिमायोगति	स्व-परो	सा.	१-२	१-११	१०
९३	प्रत्येकस्वरित	"	सा नि	१-८	"	११
९४	साधारणस्वरित	"	सा	१	१	४२
९५	अस	"	सा नि	१-८	१-१४	११
९६	स्वप्न	"	सा.	१	१	४२
९७	सुमग	"	सा नि	१-८	१-१४	११
९८	दुर्मग	"	सा	१-२	१-४	१०
९९	सुस्वर	"	सा नि	१-८	१-११	११
१००	दुस्वर	"	सा.	१-२	"	१०
१०१	सुप्त	स्वो	सा. नि	१-८	"	११
१०२	असुप्त	"	सा	१-१	"	४०
१०३	वाक्	स्व-परो	सा. नि	१-८	१-१४	११
१०४	सुप्त	"	सा	१	१	४२
१०५	पर्याप्त	"	सा. नि.	१-८	१-१४	११
१०६	अपर्याप्त	"	सा	१	१	४१
१०७	स्वित	स्वो	सा नि	१-८	१-११	११
१०८	अस्वित	"	सा	१-१	"	४०
१०९	आग्नेय	स्व-परो	सा. नि	१-८	१-१४	११
११०	अग्नेय	"	सा.	१-२	१-४	१०
१११	पश्चिमि	"	सा नि	१-१०	१-१४	७
११२	अपश्चिमि	"	सा	१-१	१-४	४०
११३	दक्षिण	परो	नि	४-८	१३-१४	७३
११४	उत्तरमोक्ष	स्व-परो	सा. नि	१-१०	१-१४	७
११५	दीर्घमोक्ष	"	"	१-२	१-५	१०
११६	अन्तर्गम ५	स्वो.	नि	१-१०	१-१२	७

प्रत्यय-तालिका (पृ १९-२४)

पुनरावृत्ति	मिथ्यात्व ५	विविधता ११	कथा २५	बोधा ३५	समस्त ५७
मिथ्यात्व	५	१२	२५	११ आहारद्विकसे रहित	५५
सासादन		"	"	"	९०
मिथ	--	"	२१ अनन्तानुबन्धितुषसे रहित	१० आ. द्विक, औ. मि., वै. मि. व कर्मणसे रहित	४१
अस्यता		"	"	११ आहारद्विकसे रहित	४६
देहस्यता	---	११ प्रसन्नस- यम रहित	१७ अप्रत्याख्यानबन्धुषसे रहित	९ आ द्विक, औ. मि., वै. द्वि. व कर्मणसे रहित	१७
प्रमत्त	--		११ प्रत्याख्यानबन्धुषसे रहित	११ आहारद्विकसे सहित उपर्युक्त	१४
अप्रमत्त	---		"	९ आहारद्विकसे रहित उपर्युक्त	२२
अद्वैतत्व	--	--	"	"	"
अनिवृत्ति करण मा. १	---		७ नेत्रावयव ९ से हीन	"	१६
मा २	--	---	९ मनुष्यकोदसे हीन	"	१५

प्रकरण	विषय	विवरण	कथा	बोत	काल
कनिष्ठ- करण भा १	"	"	५ खनिसे हीन	१५ वा. वि. बो. वि. वे. वि. व. कर्मणसे रहित	१४
भा ४	"	"	४ पुरुषसे हीन	"	११
भा ५	"	"	३ संग्रहणमात्रसे हीन	"	११
भा ६	"	"	२ संग्रहणमात्रसे हीन	"	११
भा ७	"	"	१ संग्रहणमात्रसे हीन	"	१०
सुखसाध- नियम	"	"	"	"	"
उपशान्त- कथा	"	"	"	"	९
अष्टांगयोग	"	"	"	"	७
संयोग- केसरी	"	"	"	७ सत्य व अनुमय मन और वचन, श्री वि. कर्मण	७
अयोग- केसरी	"	"	"	"	"

विषय-सूची



क्रम नं	विषय	पृष्ठ	क्रम नं	विषय	पृष्ठ
१	ध्वजाक्षरका मंगलाक्षरका	१	१४	भुवबन्धी प्रकृतियोंका निर्देश	१७
२	बन्ध स्वामित्व-विषयका वा प्रकारसे निर्देश	"	१५	निरन्तरबन्ध और भुवबन्धमें विशेषता	"
३	बन्ध-स्वामित्व विषयका अघटार	२	१६	मूल और उत्तर प्रत्ययोंकी विस्तृत प्रकृपणा	१९
४	बन्ध व मोक्षका स्वरूप	३	१७	गतिचंगोकाविषयका प्रश्नोंका उत्तर	२८
५	बन्ध स्वामित्व विषयका निरूपण	'	१८	मित्रानिद्रादिक पञ्चीस प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	३०
६	मोक्षसे बन्ध स्वामित्व-विषयके चौदह जीवसमाप्तोंका निर्देश	४	१९	मित्रा और प्रच्छा प्रकृतिके बंध स्वामित्व आदिका विचार	३१
७	चौदह गुणस्थानोंमें प्रकृतिबन्ध व्युत्पत्तिकी प्रतिष्ठा	५	२०	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	३८
८	व्युत्पत्तिके मेद और उमका निरूपण	"	२१	असातावेदनीय आदि छह प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	४०
९	लोपकी अपेक्षा बन्धस्वामित्व	७ ९२	२२	मिथ्यात्व आदि सोलह प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	४२
१०	पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धनोंकी प्रकृपणमें तेईस प्रश्नोंका उद्भावन	७	२३	अप्रत्याक्ष्याभावरणीय आदि नौ प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	४६
११	प्रकृतियोंकी उद्घम्युच्छिति	९	२४	प्रत्याक्ष्याभावरणवस्तुके बन्ध स्वामित्व आदिका विचार	५०
१२	प्रकृतियोंके बन्धोद्घम्यकी पूर्वा परता	११	२५	पुरपवेद और संम्बलनप्रयोगके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५२
१३	पांच ज्ञानावरणीयादिकोंके बंधके स्वामी व उत्तके व्युत्पत्तिस्थानकी प्रकृपणा करते हुए उन तेईस प्रश्नोंका उत्तर	१२	२६	संम्बलन मान और मायाके बन्ध स्वामित्व आदिका विचार	५५
१४	सात्तर निरन्तर और सात्तर-निरन्तर रूपसे बंधनेवाली प्रकृतियोंका निर्देश	१६			

क्रम सं	विषय	पृष्ठ	क्रम सं	विषय	पृष्ठ
२७	संन्यस्तन शोभके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	५८	४१	तीर्थंकर प्रकृतिक बन्ध स्वामित्वका विचार	१०३
२८	हास्य रति भय और कुपुष्पाक बन्धस्वामित्व आदिक विचार	५९	४२	प्रथम तीन पृथिवियोंमें बन्ध- स्वामित्वका विचार	१४
२९	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	६१	४३	चतुर्थ पंचम और छठी पृथिवीमें बन्धस्वामित्व आदिक विचार	१०५
३	देवानुके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	६४	४४	सातवीं पृथिवीमें कामावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	"
३१	देवगति आदि सत्तार्हस प्रकृति बोध बन्धस्वामित्व आदिक विचार	६६	४५	मातृवी पृथिवीमें मित्रानिद्रा आदिक बन्धस्वामित्वका विचार	१९
३२	आहारकशरीर और आहारक शरीरयोपयोगके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	७१	४६	सातवीं पृथिवीमें मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१११
३३	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	७३	तिर्यगतिमें—		
३४	तीर्थंकर प्रकृतिके विशेष कारणोंकी आलोचना	७५	४७	तिर्येच पंचन्द्रिय तिर्येच पंचे न्द्रिय तिर्येच पर्याप्त और पंच न्द्रिय तिर्येच योगमितिबोधमें कामावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	११२
३५	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धके सांख्य कारणोंकी प्रकृष्टता	७८	४८	मित्रानिद्रा आदिके बन्ध- स्वामित्वका विचार	११५
३६	तीर्थंकर प्रकृतिके उदयका माहस्य	९१	४९	मिथ्यात्व आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१२३
आदेशकी अपेक्षा बन्धस्वामित्व ९३ ३९८ गतिमार्गका			५०	अप्रत्याग्याहारमग्नयुक्तके बन्ध- स्वामित्वका विचार	१२५
३७	नरकगतिमें कामावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	९३	५१	देवानुके बन्धस्वामित्वका विचार	१२६
३८	मित्रानिद्राआदिके बन्धस्वामित्वका विचार	९८	५२	पंचन्द्रिय तिर्येच अपर्याप्तोंमें कामावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१२७
३९	मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१११	मनुष्यगतिमें—		
४०	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	११२	५३	मनुष्य मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनिर्वाणोंमें योगके समान बन्धस्वामित्वकी प्रकृष्टता	१३

क्रम सं	विषय	पृष्ठ	क्रम सं	विषय	पृष्ठ
५४	मनुष्य अपर्याप्तोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्रकृपणा	१३४	११	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१५४
देवगतिमें—			१७	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
५५	देवोंमें पांच ज्ञानावरणीय भादिके बन्धस्वामित्व का विचार	१३७	१८	मनुष्योंसे छेकर सर्वार्थसिद्धि तक पांच ज्ञानावरणीय भादिके बन्धस्वामित्वका विचार	१५५
५३	निद्रानिद्रा भादिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१४७		इन्द्रियमार्गीणा	
५७	मिथ्यात्व भादिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१४३	६१	पंचेन्द्रिय, वादर, सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त विक्रमत्रय पर्याप्त अपर्याप्त तथा पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्रकृपणा	१५८
५८	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१४४	७०	पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंमें पांच ज्ञानावरणीय भादिके बन्ध स्वामित्वके विचारमें बन्धका भादि विषयक तदस प्रज्ञाके एकत्रिसंयोगादि अंगोंकी प्रकृपणा	१७०
५९	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्व का विचार	१४५	७१	उक्त अर्थोंमें निद्रानिद्रा भादिके बन्धस्वामित्वका विचार	१७३
६०	प्रकृत्यासी ज्ञानव्यग्नर और ज्योतिषी देवोंमें कुछ विशेषताके साथ सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्व का विचार प्रकृपणा	१४६	७२	निद्रा और प्रज्ञाके बन्ध स्वामित्वका विचार	१७७
६१	मीथम और ईशान कस्यबासी देवोंमें सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्रकृपणा	१४७	७३	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	"
६२	मनहनुमारसे छेकर सहस्रार कस्य तकके देवोंमें प्रथम पृथि वीस्य नारदियोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्रकृपणा	१४८	७४	असातावेदनीय भादि छह प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्वका विचार	१७८
६३	ज्ञानत कस्यम छेकर मी प्रियेयक तक पांच ज्ञानावरणीय भादिके बन्धस्वामित्वका विचार	१४९	७५	मिथ्यात्व भादिके बन्धस्वामित्वका विचार	१८०
६४	निद्रानिद्रा भादिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१५१	७६	अप्रत्याख्यानावरणीय भादिके बन्धस्वामित्वका विचार	१८१
६५	मिथ्यात्व भादिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१५३			

क्रम सं	विषय	पृष्ठ	क्रम सं	विषय	पृष्ठ
२७	संज्ञकज्ञान कोमके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	५८	४१	तीर्थकर प्रकृतिक बन्ध स्वामित्वका विचार	१३
२८	हास्य वृत्ति मय और मनुष्याके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	५९	४२	प्रथम तीन पृथिवियोंमें बन्ध-स्वामित्वका विचार	१४
२९	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	६१	४३	चतुर्थ पंचम और छठी पृथिवीमें बन्धस्वामित्व आदिक विचार	१०५
३०	देवायुके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	६४	४४	सातवीं पृथिवीमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	"
३१	देववृत्ति आदि सत्ताईस प्रकृति बन्ध बन्धस्वामित्व आदिक विचार	६६	४५	सातवीं पृथिवीमें मित्रावित्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१९
३२	आहारकक्षरीर और आहारक क्षरीरसंगोपांगके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	७१	४६	सातवीं पृथिवीमें मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१११
३३	तीर्थकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्व आदिक विचार	७३	तियमातिमें—		
३४	तीर्थकर प्रकृतिक विशेष करणोंकी आरंभ	७६	४७	निर्येव ऐवेन्द्रिय तिर्येव पचे द्विष तिर्येव पर्याप्त और ऐव द्विष तिर्येव बोधिमतिर्योमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	११२
३५	तीर्थकर प्रकृतिके बन्धके सातह करणोंकी प्रकृति	७८	४८	मित्रावित्रा आदिके बन्ध-स्वामित्वका विचार	११९
३६	तीर्थकर प्रकृतिके उद्भवका आहारमय	९१	४९	मिथ्यात्व आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१२३
अनेकरी बनेका बन्धस्वामित्व ९३-१९८ प्रतिमार्गा			५०	अप्रत्याख्यामावरणचतुष्टके बंध स्वामित्वका विचार	१२५
३७	अरुणातिमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	९३	५१	देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१२६
३८	मित्रानिमित्रादिक बन्धस्वामित्वका विचार	९८	५२	ऐवेन्द्रिय तिर्येव अपर्याप्तोमें ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१२७
३९	मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	११	मनुष्यगतिमें—		
४०	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१२	५३	मनुष्य मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यविषयोंमें बोधके समान बन्धस्वामित्वकी प्रकृति	१३

क्रम सं	विषय	पृष्ठ	क्रम सं	विषय	पृष्ठ
५४	मनुष्य अपराधोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यक अपराधोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्ररूपणा	१३४	१९	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१५४
	देशगतिमें—		२०	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्ध-स्वामित्वका विचार	"
५५	देवोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्व आदिक का विचार	१३७	२१	मनुष्योंसे छेकर सर्वांसिद्धि तक पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१५५
५६	निद्रानिद्रा आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१४१		इन्द्रियमार्गणा	
५७	मिथ्यात्व आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१४३	२२	पंचेन्द्रिय, वाहर, सूक्ष्म पयाप्त अपराधों तक विहसन्न पयाप्त अपराधों तथा पंचेन्द्रिय अपराधोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यक अपराधोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१५८
५८	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१४४	३०	पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वके विचारमें बन्धक आदि विषयक त्रैलोक्य प्रज्ञाके एक-विधयोगादि भगवत्की प्ररूपणा	१७०
५९	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्व आदिक का विचार	१४५	३१	उक्त जीवोंमें निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१७४
६०	प्रबलवासी चान्द्रमण्डल और ज्योतिषी देवोंमें कुछ विशेषताके साथ सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्व आदिकी प्ररूपणा	१४६	३२	निद्रा और प्रथमके बन्ध स्वामित्वका विचार	१७७
६१	मीथम और ईशान कल्पवासी देवोंमें सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१४७	३३	साक्षात्देवनीयक बन्धस्वामित्वका विचार	"
६२	समस्तुमारस छेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें प्रथम पृथिवीस्थ नायकियोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्ररूपणा	१४८	३४	मसावादेवनीय आदि छह प्रकृतिपोंके बन्धस्वामित्वका विचार	१७८
६३	मानव कल्पस छेकर नौ प्रवेपक तक पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१४९	३५	मिथ्यात्व आदिक बन्धस्वामित्वका विचार	१८०
६४	निद्रानिद्रा आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१५१	३६	ममत्वावधामापरणीय आदिक बन्धस्वामित्वका विचार	१८१
६५	मिथ्यात्व आदिक बन्ध स्वामित्वका विचार	१५३			

क्रम नं	विषय	पृष्ठ क्रम नं	विषय	पृष्ठ
७७	प्रत्याख्यापारवचनानुसारेण स्वामित्वका विचार	१८४	योगमार्गप्र	
७८	पुरुषार्थ और संन्यासप्रयोगके सम्बन्धस्वामित्वका विचार		८९ पांच प्रयोगयोगी पांच ब्रह्मयोगी और काययोगी जीवोंमें सब प्रकृतियोंके सम्बन्धस्वामित्वकी भाषाके समान प्रकल्पना	२०१
७९	संन्यास मत और भाषाके सम्बन्धस्वामित्वका विचार	१८५	९० उक्त जीवोंमें साक्षात्देवकीय विषयका सम्बन्धस्वामित्वकी कुछ विशेषता	२०२
८०	संन्यासन छोड़के ब्रह्मस्वामित्वका विचार	"	९१ भौतिककाययोगियोंमें मनुष्य गतिके समान सम्बन्धस्वामित्वकी प्रकल्पना	२०३
८१	हास्य रति मय और सुगुप्ताके सम्बन्धस्वामित्वका विचार	१८६	९२ उक्त जीवोंमें साक्षात्देवकीयके सम्बन्धस्वामित्वकी मनोबोधियोंके समान प्रकल्पना	२०४
८२	मनुष्यायुके सम्बन्धस्वामित्वका विचार		९३ भौतिकमिथकाययोगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय भाविके सम्बन्धस्वामित्वका विचार	"
८३	देवानुके सम्बन्धस्वामित्वका विचार	१८७	९४ मिथ्यामिथ्या भाविके सम्बन्धस्वामित्वका विचार	२०५
८४	देवगति भाविके सम्बन्धस्वामित्वका विचार	"	९५ साक्षात्देवकीयके सम्बन्धस्वामित्वका विचार	२०६
८५	माहारकशरीर और माहारक अणुपरमाणुके सम्बन्धस्वामित्वका विचार	१८८	९६ मिथ्यात्व भाविके सम्बन्धस्वामित्वका विचार	२०७
८६	तीर्थंकर प्रकृतिके सम्बन्धस्वामित्वका विचार		९७ देवब्रह्मके सम्बन्धस्वामित्वका विचार	२०८
	अप्रमाणप्रमाण		९८ वैदिककाययोगियोंमें देवगतिके समान सम्बन्धस्वामित्वकी प्रकल्पना	२०९
८७	पृथिवीकायिक, जलकायिक, वायुकायिक, अग्निकायिक, निर्गुण जीव वायु सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त तथा वायु वनस्पतिकायिक प्रत्यक्षशरीर पर्याप्त अपर्याप्तोंमें पंचमिथ्या विवेक अपर्याप्तोंके समान सम्बन्धस्वामित्वकी प्रकल्पना	१८९	९९ वैदिकमिथकाययोगियोंमें देवगतिके समान सम्बन्धस्वामित्वकी प्रकल्पना	२१०
८८	देवकायिक व वायुकायिक वायु सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्तोंमें कुछ विशेषताके साथ पंचमिथ्या विवेक अपर्याप्तोंके समान सम्बन्धस्वामित्वकी प्रकल्पना	१९०	१०० उक्त जीवोंमें निर्गुणायु और मनुष्यायुके सम्बन्धस्वामित्वकी विशेषता	२११

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
१०१	आहारक य आहारकमिधकाय योगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धन्यामित्यका विचार	२६०	११४ हास्य य रतिसे छेकर तीर्थेकर प्रकृति तक भोगके समान प्ररूपणा	२५४
१०२	कर्मण्यकाययोगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धन्यामित्यका विचार	२६५	११५ अपगतबेदियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धन्यामित्यका विचार	२६४
१०३	निद्रानिद्रा आदिके बन्धन्यामित्यका विचार	२६७	११६ सातावेदनीयके बन्धन्यामित्यका विचार	२६५
१०४	सातावेदनीयके बन्धन्यामित्यका विचार	२६८	११७ संन्यसनशेषके बन्धन्यामित्यका विचार	२६६
१०५	मिथ्यात्व आदिके बन्धन्यामित्यका विचार	२६९	११८ संन्यसन मान और भाषाके बन्धन्यामित्यका विचार	२६७
१०६	वेदगति आदिके बन्धन्यामित्यका विचार	२७१	११९ सम्पन्नसामके बन्धन्यामित्यका विचार	२६८
वेदमार्गणा			कषायमार्गणा	
१०७	छी पुण्य और नपुंसकबेदियोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धन्यामित्यका विचार	२७२	१२० श्लेषकषायी तीर्थोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धन्यामित्यका विचार	२६९
१०८	निद्रानिद्रा आदि द्विस्थानिक प्रकृतियोंके बन्धन्यामित्यकी भाषाके समान प्ररूपणा	२७५	१२१ द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी भाषाके समान प्ररूपणा	२७२
१०९	निद्रा और प्रबुद्धाकी भोगके समान प्ररूपणा	२७८	१२२ निद्रासे छेकर प्रत्यास्वानावरण बहुतक तक भाषाके समान प्ररूपणा	२७४
११०	असातावेदनीयकी भाषाके समान प्ररूपणा	२७९	१२३ पुण्यवेदिकी भाषाके समान प्ररूपणा	२७५
१११	मिथ्यात्व आदिके एकस्थानिक प्रकृतियोंकी भाषाके समान प्ररूपणा	"	१२४ हास्य य रतिम मकर तीर्थेकर प्रकृति तक भोगके समान प्ररूपणा	"
११२	अप्रत्यास्वानावरणीयकी भाषाके समान प्ररूपणा	२८१	१२५ सामकषायी तीर्थोंमें पांच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धन्यामित्यका विचार	"
११३	प्रत्यास्वानावरणीयकी भाषाके समान प्ररूपणा	२८४	१२६ द्विस्थानिक आदि प्रकृतियोंकी भाषाके समान प्ररूपणा	२७६

क्रम सं	विषय	पृष्ठ सं	क्रम सं	विषय	पृष्ठ सं
१२७	हास्यरति भाषिकी ओषधके समान प्ररूपणा	२७७	१४०	ममःपयपय्याभिवर्गमें पांच ब्राना घरणीय भाषिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२९५
१२८	मायाकयापी जीर्णोंमें पांच ब्रानावरणीय भाषिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"	१४१	निद्रा और प्रचडाके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
१२९	हिस्वाभिक भाषिकी ओषधके समान प्ररूपणा	"	१४२	सातावेदनीयके बन्ध स्वामित्व का विचार	२९६
१३०	हास्यरति भाषिकी ओषधके समान प्ररूपणा	२७८	१४३	शेष प्रकृतियोंकी कुछ बिरो पताके साथ ओषधके समान प्ररूपणा	
१३१	सोमकयापी जीर्णोंमें पांच ब्रानावरणीय भाषिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"	१४४	केवलब्रानियोंमें सातावेदनीयके बन्ध स्वामित्वका विचार	२९७
१३२	शेष प्रकृतियोंकी ओषधके समान प्ररूपणा	"		समममार्गणा	
१३३	धकयापी जीर्णोंमें सातावेद नीयके बन्ध स्वामित्वका विचार	"	१४५	संपत जीर्णोंमें मन पर्य यज्ञाभियोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्ररूपणा	२९८
	ज्ञानमार्गणा		१४६	सातावेदनीयके बन्ध स्वामित्वमें कुछ बिरोपता	"
१३४	मतिजबानी भुतमजानी और निर्मगब्रानियोंमें पांच ब्रानावर णीय भाषिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२७९	१४७	सामायिक छेरोपस्थापनशुद्धि- संयतोंमें पांच ब्रानावरणीय भाषिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
१३५	एकस्वाभिक प्रकृतियोंकी ओषधके समान प्ररूपणा	२८५	१४८	शेष प्रकृतियोंके बन्ध स्वामित्वकी मनापर्ययज्ञाभियों के समान प्ररूपणा	३००
१३६	नामिधियोधिक, भुत और मजधियाली जीर्णोंमें पांच ब्रानावरणीय भाषिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२८६	१४९	परिहारशुद्धिसंयतोंमें पांच ब्रानावरणीय भाषिके बन्ध स्वामित्वका विचार	३३
१३७	निद्रा व प्रचडाकी ओषधके समान प्ररूपणा	२८७	१५०	मसातावेदनीय भाषिके बन्ध स्वामित्वका विचार	३५
१३८	सातावेदनीयके बन्ध स्वामित्वका विचार	२८८	१५१	वेद्यायुके बन्ध स्वामित्वका विचार	३६
१३९	शेष प्रकृतियोंकी ओषधके समान प्ररूपणा	२८९	१५२	माहारघरीर और माहार घरीरोंमें पांचके बन्ध स्वामित्व का विचार	३७७

क्रम सं	विषय	पृष्ठ	क्रम सं	विषय	पृष्ठ
१४३	सूक्ष्ममात्रापरिचय संयतोंमें पांच प्रानापरणीय भादिके बन्धन्यामित्यका विचार	३८	१४१	तत्र भार पद्मसेद्यापासोंमें पांच प्रानापरणीय भादिके बन्धन्यामित्यका विचार	३३३
१५४	यथाक्यातविहारमुद्रितसंयतोंमें सातावेदनीयके बन्धन्यामित्यका विचार	३०९	१४६	द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी भाषक समान प्ररूपणा	३३७
१५५	संयतासंयतोंमें पांच प्राना परणीय भादिके बन्धन्यामित्यका विचार	३१०	१४७	असंयताबन्धनीयकी भाषक समान प्ररूपणा	३३९
१५६	असंयत जीवोंमें पांच प्राना-परणीय भादिके बन्धन्यामित्यका विचार	३१२	१४८	मिथ्यात्व भादिके बन्धन्यामित्यका विचार	३४०
१५७	द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी भाषक समान प्ररूपणा	३१७	१४९	अप्रत्याक्यानापरणीयकी भाषक समान प्ररूपणा	३४१
१५८	एकस्थानिक प्रकृतियोंकी भाषके समान प्ररूपणा	"	१५०	प्रत्याक्यानापरणीयकी भाषक समान प्ररूपणा	३४३
१५९	मनुष्यायु और देवायुके बन्धन्यामित्यका विचार	"	१५१	मनुष्यायुकी भाषक समान प्ररूपणा	"
१६०	तीर्थंकर प्रकृतिक बन्धन्यामित्यका विचार	३१८	१५२	देवायुकी भाषक समान प्ररूपणा	३४४
	दशममागणा		१५३	माहारकशरीर और माहारक शरीरगोपांगके बन्धन्यामित्यका विचार	"
१६१	अधुवदानी और अन्धधुवदानी जीवोंमें भाषके समान बन्धन्यामित्यकी प्ररूपणा	"	१५४	तीर्थंकर प्रकृतिक बन्धन्यामित्यका विचार	३४५
१६२	सातावेदनीयके बन्धन्यामित्यमें कुछ विरायता	३१९	१५५	पद्मसेद्यापासोंमें मिथ्यात्व बन्धनकी मारदियोंके समान प्ररूपणा	३४६
१६३	अधधुवदानी जीवोंमें अधधि प्राणियों और अधधुवदानी जीवोंमें अधधनजानियोंके समान बन्धन्यामित्यकी प्ररूपणा		१५६	पुनःसंयतापासोंमें तीर्थंकर प्रकृति तत्र भाषक समान प्ररूपणा	"
	तेन्यामागणा		१५७	उक्त जीवोंमें प्रानापरणीयके बन्धन्यामित्यकी मनोपागियोंके समान प्ररूपणा	३४६
१६४	कृष्ण मीन और बापालसद्या यन्त्रोंमें अर्धयन्त्राके समान बन्धन्यामित्यकी प्ररूपणा	३२०	१५८	द्विस्थानिक और एकस्थानिक प्रकृतियोंकी अर्धप्रत्ययविमान यानी द्वापके समान प्ररूपणा	"

क्रम नं	विषय	पृष्ठ	क्रम नं	विषय	पृष्ठ
सम्प्रसादार्थ					
१७	सम्प्र जीवोंमें भाषक समान बन्धस्वामित्वकी प्रकृपणा	१५५	१९१	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	१७१
१८	सम्प्र जीवोंमें पाँच ज्ञाना वरणीय भाषिक बन्ध स्वामित्वका विचार	१५६	१९२	असातावेदनीय भाषिक बन्धस्वामित्वका विचार	१७१
सम्प्रसन्नमार्गार्थ					
१८१	सम्प्रसन्नदृष्टि और सापेक्षसम्प्र सन्नदृष्टि जीवोंमें भाषिकविशेषिक ज्ञानियोंके समान बन्ध- स्वामित्वकी प्रकृपणा	१६३	१९३	अप्रत्याख्यात्मावरणीयकी अवधिज्ञानियोंके समान प्रकृपणा	"
१८२	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वमें कुछ विशेषता	१६४	१९४	उक्त जीवोंमें भाषिक बन्धका अभाव	१७३
१८३	बद्धसम्प्रसन्नदृष्टियोंमें पाँच ज्ञानावरणीय भाषिके बन्ध- स्वामित्वका विचार	"	१९५	अप्रत्याख्यात्मावरणवस्तुत्पत्तिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
१८४	असातावेदनीय भाषिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१६७	१९६	पुरुषवेद और संज्ञकमलोपके बन्धस्वामित्वका विचार	"
१८५	अप्रत्याख्यात्मावरणीय भाषिक बन्धस्वामित्वका विचार	१६९	१९७	संज्ञकम मात्र और भाषाके बन्धस्वामित्वका विचार	१७८
१८६	अप्रत्याख्यात्मावरणवस्तुत्पत्तिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१७०	१९८	संज्ञकमलोपके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
१८७	वेदायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१७१	१९९	हास्य रति भय और सुगुप्ताके बन्धस्वामित्वका विचार	१७९
१८८	आहारकशरीर और आहारक शरीरगोपांगके बन्धस्वामित्वका विचार	१७२	२००	देहगति भाषिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
१८९	उपशमसम्प्रसन्नदृष्टियोंमें पाँच ज्ञानावरणीय भाषिक बन्ध स्वामित्वका विचार	"	२०१	आहारकशरीर और आहारक- शरीरगोपांगके बन्धस्वामित्व का विचार	१८८
१९०	मित्रा और प्रबलके बन्ध स्वामित्वका विचार	१७४	२०२	सासादनसम्प्रसन्नदृष्टियोंकी प्रति- भाषियोंके समान प्रकृपणा	"
			२०३	सम्प्रसन्नदृष्टियोंकी अर्ध- पक्षोंके समान प्रकृपणा	१८३
			२०४	मिथ्यादृष्टियोंकी असम्प्र जीवोंके समान प्रकृपणा	१८६
			२०५	संज्ञी जीवोंमें मोक्षके समान बन्धस्वामित्वकी प्रकृपणा	"

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
२०२	शाखापरमीपत्र बगवतमिष्य की वापुसमीप्री श्रीचोत्र समान प्रकरणमा	१८३	२०८ शाखापरमीपत्र श्रीचोत्रे भाष्य समान बगवतमिष्यकी प्रकरणमा	१९०
२०३	शाखापरमीपत्र श्रीचोत्रे भाष्य समान बगवतमिष्यकी प्रकरणमा	"	२०९ शाखापरमीपत्र श्रीचोत्रे भाष्य बगवतमिष्यकी समान बगव तमिष्यकी प्रकरणमा	१९१

गुह्य-पत्र

पृष्ठ सं.	विषय	गुह्य
८ १८	विषय गुह्यपत्र लक्ष	विषय गुह्यपत्र लक्ष
९ ४	बगवतमिष्य	बगवतमिष्य
११ ७	बगवतमिष्य	बगवतमिष्य
१५ ६	बगवतमिष्य	बगवतमिष्य
" ११	बगवतमिष्य	बगवतमिष्य
" ११	बगवतमिष्य	बगवतमिष्य
" १५ १६	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष
११ ६	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष
" ११	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष
१८ ८	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष
" ११	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष
" १५	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष
१५ ८	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष
१५ १०	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष
११ ७	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष
१५ ८	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष
१८ ८	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष	बगवतमिष्य लक्ष लक्ष लक्ष लक्ष

पृष्ठ	पं.	मशुख	शुख
४३	११	विरपगदपाभोगाशुमुखि	विरपगद विरपगदपाभोगाशुमुखि
"	२३	नारकपु और	नारकपु नारकानि और
४९	७	पुषर्षपा ।	पुषर्षपा
"	१७-२१	सर्ग काव --- क्यो मही पापा जाय ।	शुद्ध — सर्ग काव --- --- औदारिकर्षात्तत्त पुष क्य और अनादिक क्य भी क्यो मही पापा जाय ।
"	२३	अनादि रूपसे पुष क्यपर	अनादि एवं पुष क्यपर
५	४	बर्षा ॥ २० ॥	बर्षा । पद बर्षा अक्षसेता अर्षा ॥ २० ॥
"	१५	कथन है ॥ २० ॥	कथन है । ये कथक है, होय अकथक है ॥ २० ॥
५२	५	पुनिहामावाधो	पुनिपामावाहा
"	१८	दो प्रसूते क्यका	पुन कथक
"	२५	x x x	१ प्रतिपु इतिहामावाधो इति पाठ ।
५४	६	गयपच्छमा	सगपच्छमा
"	२०	गयप्रलय है, अर्थात् उच्चर प्रलय ऊपर कथा ही चुके हैं,	स्वनिमित्तक है
"	२३	अनुभागेदपसे अचरा अनस्तगुण	अनुभागेदपसी अपेक्षा अनस्तगुणे हीन
"	३०	x x x	१ प्रतिपु गयपच्छमा इति पाठ ।
५५	२	क्योकि, कर्ण	क्योकि, [विष्णुष और साद्यदन गुण स्थानमे]
७८	१४	अन्तर्गत	अन्तर्दीपक
९१	१	छात्रस्त	छात्रस्त
"	"	अच्छविज्जा धर्मविज्जा	अच्छविज्जा धर्मविज्जा ब्रह्मविज्जा
"	१५	अक्षनीय बर्णीय,	अक्षनीय धूर्जनीय, बर्णीय
९२	१९	पांच मुष्टियो कर्षात् अंगोसे	पांच मुष्टियो कर्षात् पांच अंगो हाथ भूमिस्थिति
९९	४	बर्षो	बर्षो
१०४	२२	द्वितीय दण्डकमे (१)	द्वितीय दण्डक कर्षात् विज्ञानिहा आदि विज्ञानिह प्रकृतिपेमे

पृष्ठ	पं	अशुद्ध	शुद्ध
१०६	३	असकित्ति विमिष	असकित्ति अजसकित्ति-विमिष
"	१६	यशस्वीर्ति, निर्माण	यशस्वीर्ति अयशस्वीर्ति, निर्माण
११३	११	अत्यगवीर्य	अत्य गवीर्य
"	२५	अर्धगतिसे	इस गतिसे
१२१	९	उपपन्नायं सनत्कुमारादि	उपपन्नायं भोटासिपसरीरभगोर्धगरत्स सनत्कुमापदि
१२१	२४	बीबोके, और सनत्कुमापदि	बीबोके उपर्युक्त प्रहृनियोंका, तथा लौदा- रिकाशरीरगोपांगका सनत्कुमापदि
"	"	मी इनका निरन्तर	मी निरन्तर
१२२	७	मणुस्साड-मणुसगरूपाभोग्गाणु पुष्पीभो	मणुस्साड [मणुसगर] मणुसगर पाभोग्गाणुपुष्पीभो
"	८	तिरिक्काड-तिरिक्कागूरूपाभो ग्गाणुपुष्पीभो	तिरिक्काड [तिरिक्कागूरू] तिरिक्का गूरूपाभोग्गाणुपुष्पीभो
"	२१	मनुष्यासु एव	मनुष्यासु, [मनुष्यगति] एव
"	२२	तिर्यगासु, तिर्यगतिप्रायोग्यानु पूर्वी	तिर्यगासु, [तिर्यगति], तिर्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी
१२७	७	पग्जत्त-पत्तेय	पग्जत्त-अपग्जत्त पत्तेय
"	१९	पर्याप्त, प्रपेक	पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रपेक
१३०	३	धुवबंधित्तादो । x x x	धुवबंधित्तादो । अपसेसार्ण सादि अयुवा अयुवबंधित्तादो ।
"	१५	धुनवन्धी हैं । x x x	धुनवन्धी हैं । शेष प्रकृतियोंका सादि और अधुन वन्ध होता है, क्योंकि, व अधुनवन्धी हैं ।
१३४	११	अपवृत्तया-सोससकसाय	अपवृत्तयापरणीय-सादासाद-मिच्छत्त- सोससकसाय
१३६	९	[तिर्यगाड-तिर्यगागूरूपाभोग्गाणु पुष्पी]	[तिरिक्कागूरू तिरिक्कागूरूपाभोग्गाणु- पुष्पी]
१४९	८	विमिष दर्वतपाहपाणं	विमिष उष्णमाह-दर्वतपाहपाणं
"	२०	निर्माण और	निर्माण, उष्णगोध और
१५०	१०	सादासाद	सादासाद
१५३	१२	पविक्का	पदिवक्का



सिरि भगवत-पुण्ड्रं त भूषणं पणीदो

छक्खंडागमो

सिरि-भरिसेणाहरिप विरह्य भवला-टीका-समणिदो
तस्स तदियल्लो

बंधसामित्तविचओ

माहवन्नाहरिप भरहंते वदिउण्ण^१ सिद्ध वि ।

जे पंच अण्णाल वोन्ठे बंधस्स सामित्तं ॥

जो सो बंधसामित्तविचओ णाम तस्स इमो दुविहो णिदेसो
ओघेण आदेसेण य ॥ १ ॥

किमिदं सुतं बुद्धदे ? संबंधामिहेयं-यमोमणपटुणावणट्टं । जो सो बंधसामित्तविचओ

साधु उपाध्याय आचार्य भरहंत और सिद्ध ये जो पंच अण्णाल आचार्य
सोमसत्तम परमेश्वरी हैं उनके नमस्कार करके बंधके व्याप्तित्वका कहते हैं ।

जो बंधस्यामित्तविचय है उसका यह निर्देश आप और आदेशकरी अपेक्षासे दो
प्रकार है ॥ १ ॥

शुंकर—यह सूत्र क्यों कहा जाता है ?

समाधान—सम्यग्ध अभिधाय और प्रयात्तमके यतनानके लिए उक्त सूत्र कहा
गया है ।

जो यह बंधस्यामित्तविचय है इसमें सम्यग्ध कहा गया है । यह इस प्रकार

१ मतिरु वदिउण्ण इति पाठः ।

२ अनामको काष्ठपत्रे इति पाठः ।

३ मतिरु लक्षणादिह इति पाठः ।

नामेति एदेव सवधा कहिदो । तं जहा— कदि-वेदमादिचटुवीसअभिभोगातेसु तत्त्वं बंध-
मिदि छट्ठमणिभोगात्तरं । तं चउत्थिहं बंधा बंधमा बंधजिअं बंधविहायमिदि । तत्त्वं पवो नाम
जीवस्स कम्मात्ते च संबधं कयमस्सिदण परूवेदि । बंधगो ति कहियासो एद्धासअभिभोगातेदि
बंधग परूवेदि । बंधजिअं भाग कहियासं तेवीसवग्गणादि बंधजोगामबंधजोगा च योगात्तत्त्वं
परूवेदि । अं तं बंधविहायं तं चउत्थिहं पयडि-हुदि अणुयाग-पदेसववो चेदि । तत्त्वं
पयडिबवो दुविहो मूळमयडिबंधो उत्तरपयडिबंधो भदि । जो सो मूळमयडिबंधो सो दुविहो
एगममूळमयडिबंधो अव्योगात्तमूळमयडिबंधो चेदि । जो सो अव्योगात्तमूळमयडिबंधो सो दुविहो
मुजगारबधो पयडिहुलबंधो भदि । तत्त्वं उत्तरपयडिबंधस्स समुच्चित्तपामो चटुवीसअभिभोग-
हात्तत्त्वं भवति । तेसु चटुवीसअभिभोगातेसु बंधसमित्तं ज्ञमं जमिभंसाहारं । तस्सेव बंध
सामित्तविषयो ति सण्णा । जो सो बंधसामित्तविषयो बंधज-बंधविहायमपसिद्धो [सो]
एवाहसरूपेण जगत्तमिहो । जो सो ति वयणं जेण सो समात्तिदो तेण एसो निदेसो
संबधपरूवना । एसो बंध जमिहं परूववो भि । तं जहा— जीव-कम्मात्ते मिच्छत्तसंयम-
कसाय-अभोहि एयत्तपरिजामो बंधो । उतं च—

हे— इमि बंधना भादि जीवीस अणुयोगात्तौमे बन्धन नामक जो छटा अनुयोगात्तार है वह
चार प्रकार है— बंध बंधक, बन्धनीय और बन्धविधान । उनमें बन्ध नामक अधिकार
जीव और कमीके सम्बन्धका लक्ष्यो मपेक्षा करके निरूपण करता है । बन्धक अधिकार
ग्यारह अनुयोगात्तौमे बन्धकीय निरूपण करता है । बन्धनीय नामक अधिकार तीस
वर्गजातीस बन्धयोग्य और सबन्धयोग्य पुत्राद्य प्रत्यक्ष प्ररूपण करता है । जो बन्ध-
विधान है वह चार प्रकार है— मरुतिबंध स्थितिबंध अनुमागबन्ध और प्रवेशबन्ध ।
उनमें मरुतिबन्ध दो प्रकार है— मूळमरुतिबन्ध और उत्तरमरुतिबंध । जो मूळमरुतिबन्ध
है वह दो प्रकार है— एक-एकमूळमरुतिबन्ध और अव्योगात्तमूळमरुतिबन्ध । जो
अव्योगात्तमूळमरुतिबन्ध है वह दो प्रकार है— मुजगारबंध और मरुतिस्वात्मबन्ध ।
इनमें उत्तरमरुतिबन्धक समुच्चित्त बरनेवासे जीवीस अनुयोगात्तार है । उन जीवीस
अनुयोगात्तौमे बन्धस्वामित्व नामक अनुयोगात्तार है । उनका ही नाम बन्धस्वामित्वविषय
है । जो बन्धस्वामित्वविषय बन्धन अनुयोगात्तारक अस्तर्गत बन्धविधान अधिकारके भीतर
प्रसिद्ध है वह प्रवाहकपक्ष अनादिनिघन है । जो सा इस बचनसे कृत्ति वसक्य स्मरण
करता गया है इसीमिये यह निर्देशा सम्बन्धका निरूपक है और वही अभिधेयक भी
निरूपक है । वह इस प्रकार है— जीव और कमीक मिच्छात्त अस्तंयम कयाव और
पागीस जो एवत्त परिजाम होता है उस बन्ध कहत है । कहा भी है—

वधेण य सत्रोगे पोमलदम्भेण होइ बीमस्स ।

बधो पुण विण्णेओ बधविओओ पमोक्खो^१ दु ॥ १ ॥

एदस्स पंधस्स सामिच्च पधसामिच्चं, तस्स विचमो [पधमामित्तविचमो, विचमो] विचारणा मीमांसा परिक्षा इदि एयट्ठो । तस्स पधसामिच्चविचयस्स इमो दुविहो गिरेसो सि वेपेद सुत्तं देसामासिय तणेत्थ पभोजणं पि परूवेदथ्व । किमट्ठमेत्थ पधस्स सामिच्चं उच्चदे ? संत-दथ्व-स्रेत्त-पेत्तेसण-कालंतर-मायप्पापहुव-गइरागइपंधगत्तेण अवगयाणं चोइसगुणट्ठाणाणं अपवगदे पंधविसेसे पधगतं पधकमरणगइरागइओ च सम्मं ण पप्पति पि कज्जम् चोइस-गुणट्ठाणाणि अट्ठिक्खिच्च अप्पाउमाणमणुगइट्ठं पंधविसेसो उच्चदे । तस्स गिरेसो दुविहो ओपदेसमेण्ण । तिविहो किम्प होदि ? ण, वयणपत्रोगो हि पाम परट्ठो । य च परो वि दुणयवदिरितो अस्मि जेण तिविहा एयविहा वा परूवणा होन्व सि । ओपणिरेसो दन्व-ट्ठियपयाणुमाइक्खो, इयरो वि पज्जवट्ठियणयस्स ।

जीवका पुद्गल द्रव्यसे जो बन्ध सहित संयोग होता है उसे पन्ध भीर बन्धके वियोगको मोक्ष ज्ञानना चाहिये ॥ १ ॥

इस बन्धका जो स्वामित्व है वह बन्धस्वामित्व है । उसका जो विचय है वह बन्धस्यामित्तविचय है । विचय विचारणा मीमांसा और परीक्षा ये समानार्थक शब्द हैं । उस बन्धस्वामित्तविचयका यह दो प्रकारका निर्देश है क्योंकि यह सूत्र देशामर्शक है इस लिये यहाँ प्रयोजन भी कहना चाहिये ।

शुक्र—यहाँ बन्धके स्वामित्वको किस लिये कहा जाता है ?

समाधान—सत्त्व द्रव्य क्षेत्र स्पर्शन काष्ठ मन्तर, मास भक्ष्यबहुत्व और गत्या गति बन्धक रूपसे जाने गये चौदह गुणस्यानौके बन्धविशेषके अज्ञान होमेपर पन्धकृत्य व बन्धमिमित्तक गति आगतिकर भस्म प्रकार प्राप्त नहीं हो सकती ऐसा जानकर चौदह गुणस्यानौक अधिकार करके भक्ष्यायु शिष्यों अनुग्रहके लिये बन्धविशेष कहा जाता है । उसका निर्देश मोक्ष और आवेशक मेइसे दो प्रकार है ।

शुक्र—वह निर्देश तीन प्रकारका क्यों नहीं होता ?

समाधान—नहीं होता क्योंकि बन्धमका प्रयाग परके लिये होता है और पर भी दो मयोंको छाड़कर है नहीं जिससे तीन प्रकार या एक प्रकार प्ररूपणा होसके ।

ओपनिर्देश द्रव्यार्थिक मयबालोंका और इतर अथात् भावदामिर्देश पर्यायार्थिक मयबालोंका अनुग्रहकता है ।

१. वट्ठिय पमोक्खो इदि वाद ।

ओषेण ब्रह्मसामिच्छविचयस्त चोदसजीवसमासाणि णादन्वाणि
भवति ॥ २ ॥

‘ब्रह्म उरेसां तद्वा निरेसा’ इति ज्ञानावपङ्कमापेक्षति उच्यते । ब्रह्मसामिच्छविचयस्तेषां
संबन्धे छट्टी दृष्टव्या । अथवा, ब्रह्मसामिच्छविचय इति विसृज्यतत्त्वमसमीपं छट्टीनिरेसो
कथयन्त्वो । पुष्पमवगम्या चेव चोदसजीवसमासा, पुणो ते एव किमिदं पठन्ति नन्वेते ? न एव
हेतोः, विसृज्यतत्त्वमसिस्त्वसमात्मकत्वात् ।

मिच्छाद्विष्टी सासणसम्माद्विष्टी सम्मामिच्छाद्विष्टी असजदसम्माद्विष्टी
सजदासजदा पमत्तसजदा अप्पमत्तसजदा अपुत्तवकरणपइत्तवसमा
स्सवा अणियट्ठियादरसांपराइयपइत्तवसमा स्सवा सुहुमसांपराइयपइत्त
वसमा स्सवा उवससकसायवीयरागछदुमत्त्या स्त्रीणकसायवीयरायछदु
मत्त्या सजोगिकेवली अजोगिकेवली ॥ ३ ॥

ओषधी ओषणा ब्रह्मसामिच्छविचयक चोदस जीवसमास जानने योग्य हैं ॥ १ ॥

जैसा उद्देश पिसा निवेदन होता है इच्छाके व्याप्तार्थ ओषधने देखा गया है ।
ब्रह्मसामिच्छविचयक यह सम्बन्धमें पढ़ी विमर्शित ज्ञानता चाहिये । अथवा ब्रह्म-
सामिच्छविचयमें इस प्रकार विषयप्रतिपत्ति करके छन्दस्य सप्तमी विमर्शितके स्वात्ममें पढ़ी
विमर्शित निवेदन करना चाहिये ।

संज्ञ—चोदस जीवसमास पूर्वमें आने ही आ चुके हैं फिर कमकी यहाँ प्रकल्पना
किसछिये की जाती है ?

समाधान—यह कोई बात नहीं है क्योंकि, यह कथन विस्मरणशील शिष्योंके
स्मरण करनेके लिये है ।

मिथ्यादृष्टि, साक्षात्तसम्बन्धि, सम्बन्धिमिथ्यादृष्टि, अर्थस्तसम्बन्धि, संयत्तासंयत,
प्रमत्तसंयत, अमत्तसंयत, अपूर्वज्ञप्रविष्ट उपशमक व क्षमक, अनिशुविषादसाम्प्रदायिक
प्रतिष्ठ उपशमक व क्षमक, सूक्ष्मात्मन्यायिकप्रविष्ट उपशमक व क्षमक, उपशान्तकथाय वीत
रागाद्व्यस्य, क्षीयकथाय वीतरागाद्व्यस्य, समग्रिकेवली और अयोपिकेवली, ये चोदस जीव
समस्त हैं ॥ ३ ॥

एदस्स सुचस्स भत्तो जह्म जीवट्टणे वित्थरेण परूविदी तद्वा एत्थ परूवेदब्बो,
विसेसामावाधो । एव चोदसण्ह जीवसमासाणं सरूय समात्थि बंधसामिचपरूयपट्टमुत्तरसुच
मणदि—

एदेसि चोदसण्ह जीवसमासाण पयडिबधवोच्छेदो कादब्बो
भवदि ॥ ४ ॥

अदि जीवसमासाण पयडिबधवोच्छेदो चेव उच्छट्ठि तो एदस्स-गंयस्स बंधसामिच-
विचयसण्णा कव घट्ठे ? ण एस दोसो, एदस्मि गुणट्टणे एदेसि पयडिण वधवोच्छेदो हेदि
चि कहिदे हेट्ठिस्सगुणट्टाणाणि तासि पयडिणं वधसामिमाणि चि सिदीदो । किं च वोच्छेदो
दुविहो उत्पादाणुच्छेदो अनुत्पादाणुच्छेदो चेदि । उत्पादं सत्त्व, अनुच्छेदो विनाशं अभाव-
नीरूपिता इति यावत् । उत्पाद एव अनुच्छेदं उत्पादानुच्छेदं, भाव एव अभाव इति यावत् ।
एसो दम्भट्ठियणपव्ववहासो । ण च एसो एयत्तेण चप्पकमो, उत्तरकाळे अपिदपन्नायस्स

इस सूत्रका अर्थ जैसे जीवस्थानमें विस्तारसे कहा गया है वैसे ही यहां भी
कहना चाहिये क्योंकि जीवस्थानसे यहां कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार चौदह
जीवसमासोंके स्वरूपका स्मरण कराकर बन्धस्वामित्वके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

इन चौदह जीवसमासोंके प्रकृतिबन्धव्युच्छेदका कथन करने योग्य है ॥ ४ ॥

शुद्ध—यदि यहां जीवसमासोंका प्रकृतिबन्धव्युच्छेद ही कहा जाता है तो फिर
इस प्रत्यक्ष बन्धस्वामित्व यह नाम कैसे घटित होगा ?

समाधान—यह कोई शंका नहीं है क्योंकि, इस गुणस्थानमें इनकी प्रकृतिबोध
प्रवृत्त्युच्छेद होता है ऐसा कहनेपर उसमें नायिक गुणस्थान उस प्रकृतिबोधके बन्धक
न्यामी हैं यह स्वयमेव सिद्ध हो जाता है । दूसरी बात यह है कि व्युच्छेद दो प्रकारका
है—उत्पादानुच्छेद और अनुत्पादानुच्छेद । उत्पादका अर्थ सत्त्व और अनुच्छेदका अर्थ
विनाश अभाव अथवा नीरूपीपना है । उत्पाद ही अनुच्छेद उत्पादानुच्छेद (इस
प्रकार यहां कर्मधारय समास है) । उक्त कथनका अभिप्राय भावको ही अभाव पतछाना
है । यह प्रत्यार्थिक मयके आश्रित व्यवहार है । और यह पञ्चास्त रूपसंख्या सूत्रका
मिथ्या भी नहीं है क्योंकि उत्तरकाळमें विवक्षित पचापक विनाशसे विविष्ट द्रव्य पूर्व

विधातेषां विभिन्नदृष्यस्य पुनित्कृतेषु वि उक्तमादौ । दृष्यद्विषययमि सतस्य पञ्चापार्ण
 कथमभावो ? को मज्जति तेमिं तत्त्वामात्रां चि, किंतु ते तस्य अप्यद्वया अविवक्षितान्
 अविवक्षिता इति तेमिं दृष्यमेव न तस्य पञ्चापार्ण । कथमविवक्षितेषु अविवक्षितं पञ्चापार्ण
 दृष्यं ? न, दृष्यद्वो एतत्तत्तेमिं पुनर्मृगणमनुवर्तमादौ, दृष्यसहाकारं नेनुवर्तेमा । यदि
 एवं हो मावस्य दुर्चरिमादिषु सम्यसु चरिमममर इव अमावकवहारो किम्य कीरवे ? न एव
 दोमो, दुर्चरिमादीषु चरिमममपमेव अमातेषु सह पञ्चापार्ण अमावादौ । दृष्यद्विस्य
 कथमभावः प्रकृत्यो ? न एव दोमो, 'यदस्ति न तद् द्रव्यमतिष्ठप्य वक्षत' इति हो वि पण
 अविवक्षितान् द्विद्वेगममपस्य मावामावकवहारविरहामावादौ । अनुत्पत्तः असत्त्वं, अनुच्छेदः

कथमे मी पाया जाता है ।

शुद्ध—द्रव्याधिक नयमें विद्यमान पर्यायोंका अभाव कैसे होता है ?

समाधान—यह कौन कहता है कि उनका वहाँ अभाव होता है किन्तु वे वहाँ
 अव्यक्त अविवक्षित अथवा अनर्थित हैं, इसलिये उनके द्रव्यपत्ता ही है, पर्यायपत्ता वहाँ
 नहीं है ।

शुद्ध—द्रव्याधिक नयक वशमे द्रव्यसे मिश्र पर्यायोंक द्रव्यत्व कैसे सम्भव है ?

समाधान—यह शंका ठीक नहीं क्योंकि, पर्याय द्रव्यसे सवषया मिश्र नहीं पायी
 जाती किन्तु द्रव्यस्वरूप ही वे उपसन्ध होती हैं ।

शुद्ध—यदि ऐसा है तो फिर पर्यायक अन्तिम समयक अभाव विचरमात्र
 समयोंमें भी अभावका व्यवहार क्यों नहीं किया जाता ?

समाधान—यह कार्य शाय नहीं है क्योंकि, विचरमात्रिक समयोंके अन्तिम
 समयक अभाव अभावक साथ प्रत्यासत्ति नहीं है ।

शुद्ध—द्रव्याधिकर्षी अपेक्षा पर्यायोंम अभावका व्यवहार कैसे होता है ?

समाधान—यह कार्य शाय नहीं क्योंकि, जो है वह वाताका अतीवमज्ज कर नहीं
 रहता इस लिये वाता अपाका माध्यमकर स्थित नैमगमनक माय न अभाव रूप व्यवहारमें
 कार्य विषय नहीं है ।

अनुत्पत्तका अर्थ असत्य और अनुच्छेदका अर्थ विनाश है । अनुत्पत्त ही अनुच्छेद

विनाश, अनुत्पाद एव अनुच्छेद (अनुत्पादानुच्छेद) असत् अभाव इति यावत्, सत् असत्विरोधात् । एते पञ्चवद्विषयव्यवहारो । एते पुन उपादानुच्छेदमस्तिदूष जेप सुचकारेण अभावव्यवहारो कथो तेप भावो भेव पयडिबपत्स परुविदो । तेपेदत्स गयत्स बचसामिचविचयसम्पा पडदि चि ।

पचण्ण णाणावरणीयाण चटुण्ह दसणावरणीयाण जसकित्ति उच्चागोद पचण्हमतराइयाण को वंधो को अवंधो ? ॥५॥

बंधो वंधो चि मणिदं होदि । पयडिममुभिकचणाए पाणावरणादीणं सरुव परुविद मिदि पेह परुविन्जदे, पठपसुत्तिपयो । को वंधो को अवंधो चि पियेसदो एद पुच्छ-सुचमासकियसुच वा । किं मिच्छइही वंधो किं सासणसम्माइही किं सम्मामिच्छाइही किं असज्जदसम्माइही एव गतूण किं अपोगी किं सिद्धो वंधो चि तेपेवं पुच्छ कयप्पा । एद देसामासियसुच । किं वंधो पुण्णं वोच्छिन्जदि किमुदो पुण्णं वोच्छिन्जदि किं दो वि समं वोच्छिन्जति, किं सोदएण एदासिं वंधो किं परोदएण किं स-परोदएण, किं सांतरो वंधो किं

अर्थात् असत्का अभाव होता है क्योंकि सत्के असत्त्वका विरोध है । यह पर्यायाधिक नपके आश्रित व्यवहार है । यहाँपर भूँकि सूत्रकारने उत्पादानुच्छेदका आशय करके ही अभावका व्यवहार किया है इसलिये प्रकृतियन्त्रका सर्वभाव ही निरूपित किया गया है । इस प्रकार इस ग्रन्थका बन्धस्वामित्वविषय नाम संगत ही है ।

पाँच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चागोत्र और पाँच अन्तर्याम, इनका कौन बन्धक है और कौन अवन्धक है ? ॥ ५ ॥

बन्ध शब्दसे यहाँ बन्धकका अभिप्राय प्रकृत किया गया है । भूँकि यहलिसु लब्धित्तन बूझिकरमें कामावरणादिकोंका स्वरूप कहा जा चुका है अत एव अब इनका स्वरूप यहाँ नहीं कहा जाता क्योंकि ऐसा करनेसे पुनरुक्ति-दोष आवेगा । कौन बन्धक और कौन अवन्धक इस निर्वाचसे यह पृच्छमसूत्र अथवा आदर्शसूत्र है ऐसा समझना चाहिये । इसीलिये क्या मिष्पाइदि बन्धक है क्या सासावनसम्पगइदि बन्धक है क्या सम्मामिष्पाइदि बन्धक है क्या अलंपतसम्पगइदि बन्धक है इस प्रकार जाकर क्या अपोगी बन्धक है क्या सिद्ध जीव बन्धक है ऐसा यहाँ प्रश्न करना चाहिये । यह वेदामर्शक सूत्र है । इसलिये यहाँ क्या बन्धकी पूर्वमें व्युत्पत्ति होती है (१) क्या उदयकी पूर्वमें व्युत्पत्ति है (२) या क्षमोक्षी साय ही व्युत्पत्ति होती है (३) क्या अपन उदयके साथ इसका बन्ध होता है (४) क्या पर महत्तियोंके उदयके साथ इसका बन्ध होता है (५) या अपन व पर क्षमोंके उदयके इसका बन्ध होता है (६)

भिरंतरा वंवा किं सांत्तभिरंतरे, किं सपञ्चओ किमपञ्चओ, किं गहमठ्ठा किमपहमठ्ठे,
कदिग्दिवा मग्गिओ अमग्गिओ, किं वा पवडापं, किं चरिममग्ग वंवा वेत्तिज्जदि किं पद्म-
समा किमपद्ममचरिममग्ग वंवा वात्तिज्जदि, किं सप्पिओ वंवा किं अप्पिओ, किं पुओ किमपुओ
पि, वेत्तिज्जओ तेविसपुञ्जओ पुत्तिप्पुञ्जए अतम्मदाओ पि दठ्ठमाओ । एत्थुवउम्भवीओ
चारिमगाहाओ—

वया वंवायिही पुण सामित्ताण पञ्चपविही य ।

पदे पंचणिओमा मग्गणगणसु मग्गेज्जा^१ ॥ २ ॥

वरोत्थ पुत्र वा समं व निपण्ण कम्म व पेरेण ।

अण्णउग्गमुण्ण व सुत्ताग्गिअर कउ च ॥ ३ ॥

पञ्चप-सामित्तिही सत्तुत्तदापण्य तह वेप ।

सामित्तेयमप पवडैण ठाणमासउअ ॥ ४ ॥

वेत्तिज्ज पुत्ते या मम व स-पेरेण तदुमण्ण ।

सुअ गित्ता वा चरिमैर मादिअदीया ॥ ५ ॥

कया सत्तर वग्ग होता है (७) कया निरत्तर वग्ग होता है (८) वा सत्तर-निरत्तर
वग्ग होता है (९) कया सत्तमित्तक वग्ग होता है (१०) वा अनित्तमित्तक (११) कया
गतिमंजुल वग्ग होता है (१२) वा गतिमंजुलगम रहित (१३) जिज्ञासी पतिवात्त जीव
स्वामी है (१४) और जिज्ञासी गतिवात्त स्वामी नहीं है (१५) वग्गात्तान् किना है अर्थात्
वग्गकी संज्ञा किन्तु शुभस्यत्त तह है (१६) कया अन्तिम समयमें वग्गकी स्पष्टिउत्ति होती
है (१७) कया प्रथम समयमें वग्गकी स्पष्टिउत्ति होती है (१८) वा बीचक समयमें
(१९) वग्ग कया सादि है (२०) वा कया अनादि (२१) कया भुव वग्ग होता है (२२)
वा जग्ग (२३) य तरेण प्रस पूर्णत प्रसक्त अस्तगत है एसा जलना आदिप । यहाँ
उपपुन्र आर गाथाएँ—

वग्ग वग्गपिधि वग्गवग्गिअ अग्गान् अघान् वग्गवग्गिमा बीर प्रत्यपविधि य
पाण निषेय मारणाप्पासोमि म्माज्ज वाण है ॥ २ ॥

वग्ग पूर्वमें है उद्ग पूर्वमें है वा क्षुण्ण साध है किन्तु कर्मका वग्ग निजके उद्गवक
साध होता है किन्तु वग्ग साध बीर किन्तु अन्त्यतरक उद्गवक साध बीर प्रवृत्ति
सत्तरवग्गवादी है और बीर निरत्तरवग्गवादी प्रत्यपविधि वग्गवग्गिअ तथा गति
मंजुल वग्गात्तान्क साध प्रवृत्तिपरिक्छान्ता वाधपकर वग्गिअ जलना आदिप ॥३-५॥

वग्ग पूर्वमें उद्ग पूर्वमें वा क्षुण्ण साध होने है यह वग्ग अन्त्यतरके परोक्षपद वा
क्षुण्ण उद्गवक होता है उद्ग वग्ग सत्तर है वा निरत्तर यह अन्तिम समयमें होता है
वा इतर समयमें तथा यह सादि है वा अनादि है ॥ ५ ॥

एत्थ एत्थसु पुच्छसु विसमपुच्छमन्त्वो वुच्चदे । तं जहा— वयवोच्छेदो एत्थेव
सुचसिदो सि तं मोत्तण पयडीणमुदयबोच्छेद ताव वत्तास्सामो । मिच्छत-एदिय-वीदिय
तीदिय-चउरिदियवादि-आदाव-पावर-सुदुम-अपजव-साहारणाव दसणं पयडीणं मिच्छइद्विस्स
अरिमसमयम्मि उदयबोच्छेदो । एसो महाकम्मपयडिपाहुदववसो । पुणिसुत्तकत्ताराणमुवपेण
पंचण पयडीणमुदयबोच्छेदो, षडुवादि-पावराण सासपसम्मादिद्विम्हि उदयबोच्छेदमुवगमादो ।
अपंतानुषधिकेह-माण-माया-ऐहणं सासपसम्माद्विअरिमसमए उदयबोच्छेदो । सम्मा-
मिच्छतस्स सम्मामिच्छइद्विम्हि उदयबोच्छेदो । अपजवसापावरणकोह-माण-माया-ऐह-णिरयाठ
देवाठ-भिरयगइ-देवगइ-वेठवियसरीर-वेठवियसरीरअगोवंग-वत्तारिमाणुपुवि-दुमग-अणदेज्ज-
अजसकितीणं सत्तरसण्णमेदासिं पयडीणं असंजदसम्मादिद्विम्हि उदयबोच्छेदो । पजवसापा-
वरणकोह-माण-माया-ऐह-तिरिक्खाठ तिरिक्खाइ-उज्जोअ-धीचागोदाणमदुग्घं पयडीणं सज्जदा
संजदम्मि उदयबोच्छेदो । पिदापिहा-पयत्तपयत्त-मीणगिदि-आहारसरीरदुगारं पचण पयडीणं

इन प्रश्नोंमें विषय प्रश्नोंका अर्थ कहत हैं । यह इस प्रकार है— बूँकि वन्ध-
युच्छेद यहां ही सूचत सिद्ध है मत एव उसको छोड़कर प्रकृतियोंके उदययुच्छेदको
कहते हैं । मिथ्यात्व, एकेन्द्रिय द्वैन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय आदि आताप स्वावर,
सूक्ष्म अपर्याप्त और साधारण इन दश प्रकृतियोंका उदययुच्छेद मिथ्याद्वि गुण
स्थानके अन्तिम समयमें होता है । यह महाकर्मप्रकृतिमामृतका उपदेश है । बूर्धिसूत्रोंके
कर्ता वतिवृषभाचार्यक उपदेशसे मिथ्यात्व गुणस्थानके अन्तिम समयमें पाँच प्रकृतियोंका
उदययुच्छेद होता है क्योंकि चार आदि और स्वावर प्रकृतियोंका उदययुच्छेद
सासात्नसम्यग्द्वि गुणस्थानमें माया गया है । अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया और
छोमका उदययुच्छेद सासात्नसम्यग्द्वि गुणस्थानके अन्तिम समयमें होता है ।
सम्यग्मिथ्यात्वका उदययुच्छेद सम्यग्मिथ्याद्वि गुणस्थानमें होता है । अमत्पाप्याना-
वरण क्रोध मान माया छोम नारकायु देवायु मरकगति देवगति वैक्रियिकशरीर,
वैक्रियिकशरीरांगोपांग चार आनुषंगी दुर्मग अनन्तए और अपयशकौर्ति इन सत्तर
प्रकृतियोंका उदययुच्छेद संसृतसम्यग्द्वि गुणस्थानमें होता है । मत्पाप्यानावरण
क्रोध मान माया छोम तिर्यगायु तिर्यगगति उद्योत और नीच गोज इन आठ प्रकृतियोंका
उदययुच्छेद संसृतसंसृतगुणस्थानमें होता है । मित्रानित्रा प्रचलप्रचला स्थानयुधि
आहारशरीर और आहारशरीरांगोपांग इन पाँच प्रकृतियोंका उदययुच्छेद प्रमत्तसंसृत

१ मरिणु कमिज्जवत्ताएव इति पाठ ।

२ मिच्छे मिच्छात्त एदयमिदं सत्तमे वर्णयथी । वारुणिक मित्ते मित्तं च न उदयवेदिज्जना ॥
यो क. २६५

३ अत्र वैदिकसत्या वेदविषयक मिल देशक । अत्र विरिपाहुन्धी दुग्गलानेज्ज अज्जन ॥
यो क. २६६

७ ५ २

ममस्तज्जदमि उदयवाच्छेदो' । अद्वयरायण-स्त्रीत्य-मसंपत्तेष्वसरीरसचङ्गण-वेदरात्मज्यं
 चतुर्दं पयडीषं मय्यमस्तसंजदमि उदयवाच्छेदो । इत्य-रदि-अदि-सोग-मय दुर्गुच्छं मय
 पयडीषमप्युक्तरमि उदयवाच्छेदो । इत्य-जतुसय-पुरिसवेद-कोह-माण-मायसंजलमान मय
 पयडीषमपिपक्षिदि उदयवाच्छेदो । त्रेमसंजलमस्त एवमस्त च सुदुर्मसंपरायचरिमसमयमि
 उदयवाच्छेदो । कञ्चमारमय-पारायणसरीरसंचङ्गणं दोषं पयडीष उचसंतकसायमि
 उदयवाच्छेदो । विहा-पयलनं दोषं पि स्त्रीकसायदुचरिमसमयमि उदयवाच्छेदो ।
 पंचपत्तारपीय-चतर्दसचारपीय-चतर्दहमानं चोदसमं पयडीष स्त्रीकसायचरिमसमयमि
 उदयवाच्छेदो' । अरात्य-संज्ञ-कमस्तसरीर-मस्तमय अरात्यसरीरमोवेम-चरिसहकर
 पारायणसरीरसंचङ्गण-यण मंध-रस-फस-अगुरुजलुज-उचसाद-परषादुस्तास-दोविहात्मदि-
 पतेमसरीर-विहापि-सुहासुह-मुस्तर-मुस्तर विमिजानमेगुपतीसमयडीष सजोगिकेवदिदि उदय

गुणस्वात्मै होता है । मय्यमस्तसंजदमि उदयवाच्छेदो अमस्तसंजदमि गुणस्वात्मै होता है । इत्य रति मयति
 शोक, मय और सुगुप्ता इस छंद मयतिषोका उदयवाच्छेद मय्यमस्तसंजदमि गुणस्वात्मै
 होता है । स्त्री मयुसक और पुरुषबन्ध संमन्त्रन कोच माम और माया इन छंद मयतिषोका
 उदयवाच्छेद मयिपक्षिदमि गुणस्वात्मै होता है । केवल एक संमन्त्रन कोमका उदय-
 वाच्छेद चरिमसमयमिदि गुणस्वात्मक मयिपक्षिदमि समयमै होता है । वज्रनायक और
 मस्तमय शरीरसंचङ्गण इन दो मयतिषोका उदयवाच्छेद उपरास्तकयाथ गुणस्वात्मै
 होता है । विहा और मयलन दोमो मयतिषोका उदयवाच्छेद स्त्रीकसाय गुणस्वात्मके
 विहाय समयमै होता है । पांच ज्ञानावरणीय और चतुर्दसचारणीय और पांच अस्तारव इन
 चोदसम मयतिषोका उदयवाच्छेद स्त्रीकसाय गुणस्वात्मके मयिपक्षिदमि समयमै होता है ।
 चैतन्यिक, त्रेमस और कमस्त शरीर, छंद संस्वाय चैतन्यिकशरीरगोपाय चतुर्दसचार-
 संहमय चरि मय रस स्पर्श अगुरुजलुज, उचसाद परषाद उचसास दो विहापो-
 पतिषां प्रत्येकशरीर, स्विट, अस्तिर, शुभ मयुम सुस्तर, दुष्तर और निर्माय इन उचरीत
 मयतिषोका उदयवाच्छेद सजोगिकेवडी गुणस्वात्मै होता है । दो चरणीय मयुग्वातु,

१ हेतु इति कलाता तिरिवाञ्जल नीच निरिपक्षी । ७३ आराधन नीचतिव परकोपिन्ना ।
 श्री क २१०

१ अपपदे उचय अतिमिपक्षिद मयुग्वादि । ७३ च नीच नीचता अतिमिपक्षिदमि ॥ केतन
 कोर-जान बावजलमयेव लुक्के । लुक्के नीची उचि वज्रनायक नायक ॥ श्री क २११ - २१२

१ चोचरायदुचरिमे विहा वकता व उचकोपिन्ना । चोचरायकतव उचचचरि चरिमदि ॥
 श्री क २१०

वोच्छेदो' । देवेदणीय-मणुस्साठ-मणुस्सगइ-अविदिपजावि-संस-भादर पञ्जत्त-सुमय-आवेज्ज
असगित्ति-सित्थपर उच्चमोदार्णं तेरसण्हं पयबीणमजोमिकेवल्लिहि उदयवोच्छेदो' । एत्थ
उवसइरगाहा—

दत्त चट्ठुरिणि सत्तास अट्ठ य तह पच चेर चउरो य ।

छच्छक्क एग दुग दुग चोरस उगुतीस तेरसुदयविही' ॥ ६ ॥

एवमुदयवोच्छेदं परुषिय कस्सिं पयबीणं बघो उदए पिट्ठे वि होदि, कस्सिं पयबीणं
बघि पिट्ठे वि उदमो होदि, कस्सिं बघोदया सम वोच्छिज्जति पि बुच्चदे । तं ब्रह्मा—
देवाठ-देवगइ-वेठवियसरि-वेठवियअगोवग-देवगइपाओम्माणुपुवि-आहारदुग-अजसकित्तीण
महण्ण पयबीणं पइममुदमो वोच्छिज्जदि पच्छा बघो । एत्थ उवसइरगाहा—

देवाठ-देवचउक्कइरगुअ च अनसमट्ठण्ह ।

पममुओ विणस्सणि पच्छा बघो मुणयेवो ॥ ७ ॥

मनुष्यगति ऐश्वर्ययुक्ताति अस बाहर, पर्याप्त सुमग आदेय यथाकीर्ति तीर्थंकर और
उच्चगात्र इन तरह प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद अयोगिकेवसी गुणस्थानमें होता है । यहाँ
उपसंहारगाथा—

इस बार, एक सत्तरह आठ पाँच बार, छह छह एक, दो दो बीबह,
उनतीस और तेरह (इस प्रकार कमशः मिथ्यावादि आदि बीबह गुणस्थानोंमें उदयव्युच्छिष्ट
प्रकृतियोंकी संख्या है) ॥ ६ ॥

इस प्रकार उदयव्युच्छेदकर करकर अब किम प्रकृतियोंका बन्ध उदयके मद्र
होनेपर भी होता है किम प्रकृतियोंका उदय बन्धके मद्र होनेपर भी होता है और किम
प्रकृतियोंका बन्ध य उदय दोनों साथ ही व्युच्छिष्ट होते हैं इस बातको कहते हैं । वह
इस प्रकार है— देवायु, देवगति वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकमांगोपांग देवगतिप्रायेतयानु
पूर्वी आहारकशरीर, आहारकमांगोपांग और अयथाकीर्ति इन आठ प्रकृतियोंका प्रथम
उदयका विच्छेद होता है, पश्चात् बन्धका । यहाँ उपसंहारगाथा—

देवायु देवचतुष्क अर्थात् देवगति देवगत्यानुपूर्वी वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिक
मांगोपांग तथा आहारकशरीर, आहारक मांगोपांग एवं अयथाकीर्ति इन आठ प्रकृतियोंका
पहिछ उदय मद्र होता है, पश्चात् बन्ध देखा जानना चाहिये ॥ ७ ॥

१ उदिवेकअम्य निमित्तं विर इह सर यदि उरळ ठेजइव । सगण बन्धसुदयउदय पतेव ओमिहि ॥
श्री क. २७२

२ उदिवेक मद्रवदरी पविदिप-सुमय ठस निवदिज्जं । सम निच मद्रवाउ उच्च च अजोमिपविमिहि ॥
श्री क. २७३ १ श्री क. २७४

४ देवचउक्कइरगुअउवसइरगाहा ही पच्छा । श्री क. ४

तराह्यान्मेगासीदिपयहीनें पढमे वचो वोच्छिञ्जदि, पच्छ उदओ । एत्थ उवसंहरगाहा—

पुब्बुत्तस्सेसाओ एगासीणी हवति पयटीओ ।

साण वधुच्छेदो पुब्ब पच्छेत्तच्छेदो ॥ १० ॥

सेसाणं बहवसरमत्थं भणित्तामो ।

मिच्छादिद्विष्णुद्वि जाव सुहुमसांपराह्यसुद्धिसजदेसु उवसमा
खवा वंधा । सुहुमसांपराह्यसुद्धिसजदद्वाए' चरिमसमय गतूण वधो
वोच्छिजदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुवदे । त जहा— 'मिच्छाद्विष्णुद्वि जाव सुहुमसांपराह्य
खवा' ति एदेण वधपेण वदामं जाणाविदं । 'एदे वधा, अवसेसा अवधा ति' एदेण
वधस्स सामिअं जाणाविद । 'सुहुमसांपराह्यसुद्धिसजदद्वाए चरिमसमय गतूण वधो वोच्छि
जदि' ति एदेण वि 'किं चरिमसमय वधो वोच्छिञ्जदि ति' पुच्छय एदम [वपडम-]
अचरिमपडिसेहसुदेण पडिउत्तरो द्विण्णो । अवसेसाण पुच्छअणं ण परिच्छेओ करो । तेगेद

और पांच अस्तित्व इम इक्यासी प्रकृतियोंका पहिल बन्ध मद्य होता है पश्चात् उदय ।
यहां उपसंहारगाथा—

पूर्वोक्त प्रकृतियोंस शेष ओ इक्यासी प्रकृतियां रहती हैं उनका बन्धव्युच्छेद
पहिजे और उदयव्युच्छेद पश्चात् होता है ॥ १० ॥

शेष प्रकृतियोंका मर्ष पचावसर करेग—

मिथ्यादृष्टिमे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसयत उपशामक व क्षपक तक उपर्युक्त
ज्ञानावरणादि प्रकृतियोंके बन्धक हैं । सूक्ष्मसाम्परायिककालके अन्तिम समयमें जाकर बन्ध
व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवशक हैं ॥ ६ ॥

इस सूत्रका मर्ष कहते हैं । यह इस प्रकार है— मिथ्यादृष्टिस लेकर सूक्ष्मसाम्प-
रायिक क्षपक तक इस बन्धनसे बन्धावस्थान्ना जापित किया है । ये बन्धक हैं शेष अवशक
हैं इससे बन्धका स्वात्मिक जापित किया है । सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयतकालके अन्तिम
समयमें जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है इससे भी क्या चरम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न
होता ? इस प्रश्नका प्रथम और [अप्रथम] अचरम समयके प्रतिपक्षमुक्तसे प्रत्युत्तर
दिया गया है । शेष प्रकृतियोंका मर्षय यहाँ सूत्रमें नहीं किया गया । इसीछिये यह ब्रह्ममार्शक

मिथुन-वर्षेतासुर्गनियतः-अपस्वकृतावतरणपठः पस्वकृतावतरणपठः-विष-
संबल-पुरिस्तेद-इस्स-दि-मय-दुर्गुल-प्रादिर्य-सीदुदिय-विदिय-पठरिदिय-मनुमा-
पस्वोमापुष्पि-आदाव-धातर-सुहृ-अपस्वत-साहारा-पठ-पस्वपयदी-व-वोदया-सम्-पुष्पि-
ज्वंति । परम उवसंहासाहामो—

मिथुन-मय-दुर्गा-हस्त-रवि-पुलि-बासपा ।

सुहृन् जाह्नवउक्थ सष्टारण्य भयग्रत् ॥ ८ ॥

पञ्चरस वत्साया शिषु साहेगेभ्येण आशुपुत्री य ।

मनुसाणं एवासि समग बबोदुच्छ्रो ॥ ९ ॥

पञ्चणाभावरणीय-पञ्चदशपरणीय-द्वैतेयणीय-त्रैहृसंस्तन-इति षट्सयपद-अथ-सोम-
पिरयाठ तिरिक्खाठ मणुस्साठ-गिरयगइ-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-पविंदियवाइ-भोराठिय-तंवा-
कम्मइयसरीर-असंखण भोराठियसरीरबंगोवंग-असंखण-अण्णचठइ-गिरयगइ-तिरिक्खगइपाओ-
म्माणुण्णि-मणुस्सअण्णचठइ-ठमेव दोविहायगइ तस पादर-पण्ण-पत्तेयसरीर-भिराभिर-मुहा-
सइ-सुभग-इभग सुस्स-हुस्स-आदेज्ज अण्णजेज्ज असगिति विमिषि तिरिक्खर-मीणुक्खगाद-पंथं

मिथ्यात्व चार अमृतानुबन्धी चार अमृत्याप्यानावरण चार मृत्याप्यानावरण
तीस संश्लेषन पुढपेव हास्य रति मय पुगुप्ता एकमित्रय द्विमित्रय त्रिमित्रय चतुरि
मित्रयइति मनुष्यगतिमाप्नोम्यानुपूर्वी भाताप स्यावर, सूक्ष्म मयर्वाप्त मीर साधारण इव
इकतीस प्रकृतिपौत्र बन्ध व उदय दोनो साय स्पृष्टिउद्य हात ई । यहा उपसंहारगाथावै—

मिथ्यात्व मयं अनुगृह्यता इत्यस्य एति पुनरपेक्ष इत्याह, आताप एवम् एकेन्द्रिय
भावि चार जाति साधारण मपर्याप्त संस्पर्शबोधोक्तं पिता पश्यन् कपाय और अनुभव-
गत्यानुपूर्वी इत प्रकृतिपूर्वकं स्वयम्पुच्छं और स्वयम्पुच्छेन साथ ही होता है ॥८-९॥

पांच इनाबरणीय मी वृक्षमाधरणीय दो कृत्रीय संख्यक्रमसोम स्त्रीविह ननुसक
 वेत् अरति शोक नारक्यपु, तिर्पगायु, मनुष्यायु, नरक्यगति तिर्पगाति मनुष्यगति पंचे
 त्रिपयगति नैतारिक, त्रिपय नैतारिक शरीर, छह संस्यान नैतारिकशरीरपयोपाय छह
 संहयन नैतारिक नार, नरक्यमाधरणीयपूर्वी तिर्पगातिप्रयोत्पातपूर्वी अगुच्छपु भासिक नार,
 अयोत्त दो विहायोपगति नर नार, पर्याय प्रयोत्पातशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ नशुभ सुभग
 दुर्भग सुखर, दुःखर, भास्येय यमयोप यशस्वीति निर्माज तीर्थकर, नैतारिक नार उच्छयोत्त

१. अथर्ववेदः इत्युक्तं यद्वेदः इति वाच्यं ।

२ विष्णुपराशरान् ब्रह्म शास्त्रसंस्कृतम् । पञ्चरात्रशास्त्रं महाभारत इत्यन्तु चन्द्रिका प्रामाण्येन । तत्र
वेदोपांगत्वात् वैदिकतायाः पुनः तु न यथा - ४ ।

पञ्चति । पञ्चदसपावरणाय-देवेदणीय सोल्लभकसाय नवभोकसाय तिरिक्त्वाउ-मणुस्साउ तिरिक्त्वाइ-मणुस्साइ पइदिय वीइदिय-तीइदिय चउरिंदिय-पभिंदियआदि-ओरात्तियसरीर छ-संयण ओरात्तियसरीरअगोवग छसषडण-तिमिक्खगइ-मणुस्मगइपामोमाणुपुब्बि-उषवाइ पषाद-सस्सास-आदाव उब्बोव-देविहामगदि तस थावर-आदर-सुहुम-पञ्चत्त अपञ्चत्त-पत्तेय-साधारण सरीर-सुमग-दुमग-सुस्सर-दुस्सर-आदेव्व-अजादेव्व-जसक्कि-अजसक्कि-पीपुक्कागोदमिदि पदावो वासीदिपयडीओ सोदय-परोक्षेण पञ्चति । एत्थ उवसंहरगाहाओ—

माणतगय-सण-पिरात्तिउ-सज्जत्तमेइइ ।

णिमिण अगुह्खल्लुअ दण्णवउक्क च मिच्छत्त ॥ १० ॥

सत्ताअमेणाओ ब्रह्मति इ सात्तण पयणीओ ।

सादय-परोक्षेण ति ब्रह्मवससियाओ इ ॥ ११ ॥

एत्थ पापावरणतत्पयडसपयडीओ दसपावरणस चत्तारि पयडीओ चैव बधमाणापि । सव्वगुणट्ठाणामि सोदएण चैव वधति, मिच्छइट्ठिप्पहुडि जाय खीणकसाया ति एदासि पितरोदयओ सोदएण वञ्चमाणपयडीगमम्भंतरे पादावो वा । जसक्किं मिच्छइट्ठिप्पहुडि

सत्ताईस प्रकृतिपां स्तोत्रपसे वधती है । पांच दर्शनावरणीय वो वेदनीय सोल्लभ कषाय भी भोक्त्राय तिर्यगायु मनुष्यायु तिर्यगगति मनुष्यगति एकस्त्रिय द्वीस्त्रिय त्रीस्त्रिय चतुरि स्त्रिय पंचस्त्रिय आति आहारिक-शरीर छह संख्याम आहारिक-शरीर-गायां छह संहमन तिर्यगगति-प्रायोभ्यानुपूर्वी मनुष्यगति-प्रायाग्यानुपूर्वी उपपात परपात उच्छ्वास आताप उद्योत वो विहायोगति जस स्थावर वातर सूक्ष्म पयाम अपर्याप्त प्रत्येक साधारण शरीर, सुमग दुर्भग सुस्पर, दुस्वर, आदेय अनादेय यशकीर्ति अयशकीर्ति नीचगोत्र और उच्छ्वासा य प्यासी प्रकृतिपां स्थाव्य परोक्षेण दोनो प्रकरसे वधती है । यहाँ उपसंहरगाथायें—

पांच शानावरण पांच अन्तराय दर्शनावरण घाट, स्थिर आदिक चार, तेजस और काम्य शरीर, निर्माण अगुरुकलपुक, वर्णादिक चार और मिच्छात्त य सत्ताईस प्रकृतिपां वो स्थाव्यसे वधती है और दोन प्रकृतिपां भ्याव्य परोक्षसे वधती है ॥ १२-१३ ॥

यहाँ शानावरण य अन्तरायकी दश प्रकृतिपां तथा दर्शनावरणकी चार ही प्रकृतियां बंधनेवाली हैं । ये अपने बन्ध याम्य सब गुणरथाजों से स्तोत्रपसे ही वधती हैं क्योंकि मिच्छादृष्टि सत्तर शीघ्रकषाय गुणस्थान तत्र इमका निरन्तर उद्यय रहता है अथवा इनका पतन स्तोत्रयस पथमवाती प्रकृतियोक भीतर है । यदाकीर्ति प्रकृतिपा मिच्छादृष्टि

देसामासिपसुर्त, तन्हा एतत् क्षीयत्वाप परूषण कस्मामो । त जह्य— किं वंचो पुनं
 योच्छिञ्चति, किमुद्वो पुन्य योच्छिञ्चति, किं दा वि स्मं वाच्छिञ्चति, एदासि तिष्ण पुच्छये
 वृत्तो वृत्ते । एदासि सेत्तुष्ण पयडीयं वंचो पुनं योच्छिञ्चति सुहृत्सांपादयपरिममण,
 उदवा पच्छ योच्छिञ्चति । पचपाणावरणीय-चउदंसपावरणीय-चंतउदयार्ण स्त्रीकसाप-
 चरिममण, असक्तिं उवागोदयमजोगिचरिममण उदयवास्तेददसणादो । किं सेदयण,
 किं परोदयण, किं सेदयपरोदयण एदासि वंचो ति पुच्छमस्तिदण वृत्ते । एतत् ताव एरेप
 संपवेण सेदयण परोदयण सेदय परोदयण वच्छमाणपयडिपरूषणं कस्मामो । तं जह्य— निरवाउ
 देवाउ-निरयगद-देवगद-वेउवियसरीर आहारसरीर-वेउविय-आहारसरीरगोत्रंग-निरयगद-देवगद-
 पात्रोमात्रपुच्छि-तिष्ठपरमिदि एदाभो एकचक्रसपयडीभो परोदयण वच्छति । एतत् उप
 संहरमाह—

ति कयर-निरय-वेउउ-वेउवियउक दा वि आहृत ।

एकचक्रमपयडीय वृत्ते इ फाल्ग वृत्ता ॥ ११ ॥

पचपाणावरणीय [चउदंसपावरणीय] मिच्छत-तत्रा-कस्मामपरीर-वृत्तपठनं
 वृत्तपठन-विराभिर-सुहासुह-विमिश्र-पचंतउदयमिदि एदाभो सत्तवीसपयडीभो सेदयण

एतद् ई और वृत्तामराक हाथसे यहां कीन अर्थात् अन्तर्निहित अर्थोकी प्रकल्पना करते हैं ।
 वह इस प्रकार है— क्या वक्ष्य पूर्वमे स्फुटिउच हाता है क्या उच्य पूर्वमे स्फुटिउच होता
 है या क्या दोनों साथ स्फुटिउच होत है ? हम तीन प्रश्नोंका उत्तर कहते हैं— इन सोमद
 प्रकृतिपौत्रा वक्ष्य उच्यन्तु केउतिसे पहिले सूक्ष्ममात्रपयडीय गुणस्थानके अन्तिम समयमे
 स्फुटिउच हाता है तत्पश्चात् उच्यकी स्फुटिउचि होती है, क्योंकि पांच ज्ञानावरणीय
 चार वर्तमानावरणीय और पांच अन्तरात् इन बीसह प्रकृतिपौत्रा क्षीयत्वाय गुणस्थानके
 अन्तिम समयमे तथा यशनीति व उचगता इन दा प्रकृतिपौत्रा अयोगिकेवसीके अन्तिम
 समयमे उच्य-पुच्छ देखा जाता है । क्या स्त्रीवसे क्या परोक्षमे या क्या स्त्रीव
 परोक्षसे इनका वक्ष्य हाता है ? इस प्रश्नका आशयकर उत्तर कहते हैं । नर यहां पहिले इन
 सम्बन्धमे स्त्रीव परोक्ष और स्त्रीव परोक्षमे वंचमेवामी प्रकृतिपौत्रा निकरण करते
 हैं । वह इस प्रकार है— नारकपु देवापु नरकगति देवगति वैदिकिकराटीर, आहारक-
 राटीर, वैदिकिकराटीरगोत्रंग आहारकराटीरगोत्रंग नरकगत्यानुपूर्वा देवगत्यानुपूर्वा
 और तीयकट, ये ग्याह प्रकृतिपा परोक्षसे वंचती है । यहां उपसंहारमाया—

तीयकट, नारकपु देवापु वैदिकिकराटीरदि वह और दोनों आहारक, इन
 ग्याह प्रकृतिपौत्रा वक्ष्य परोक्षमे कहा गया है ॥ ११ ॥

पांच ज्ञानावरणीय [चार वर्तमानावरणीय] मिथ्यात्व तैजस और कर्मज राटीर,
 वजांदिह चार, अगुदकपुच्छ, रिपट, मास्वट, शुभ अशुभ निर्मांज और पांच अन्तराप, ये

पञ्चति । पचदमणावरणीय-द्वेषेदणीय सोटसकसाय पचमोकसाय तिरिक्साड-मणुस्साड
तिरिक्साड-मणुस्साड पश्चिदिय वीश्चिदिय-तीश्चिदिय चउरिदिय-पश्चिदियजादि-भेत्तालियसरीर छ-
सत्रण-भेत्तालियसरीरअंगावग उअपडण-तिरिक्साड मणुस्साडपामोगाणुपुञ्चि उअपाद फभाद-
उत्सास-भादाय उअओव-द्वेषिहायगदि तस थावर-वाटर-सुहुम-प-अच-अपञ्च-पतेम-साधारण
सरीर-सुमग-दुमग-सुम्सर-दुस्सर अण्व-अणदेज्ज-असकिचि-अजसकिचि-पीपुञ्चागोदमिदि
एदामो वासीदिपयडीओ सोदय-परोदण पञ्चति । एत्थ उअसहरगाहाओ—

णार्णवगाय-मण-मिगिञ्च-तज्जम्माहा ।

मिमिण अगुअडण्डअ डण्णवञ्च च मिच्छत्त ॥ १० ॥

सत्तामेणाभा वञ्चति इ सादण पयसा ।

सत्थ-परोदण पि वञ्चनससियाओ दु ॥ ११ ॥

एत्थ णाणावरणतरादयदसपयडीओ दसणावरणस चत्तारि पयडीओ चेव वचमाणापि ।
सञ्चगुण्डणापि सोदण भेय वचति, मिच्छाद्विण्डुडि जाव खीणकसाया चि एदसि
भिरंतरोदयाओ सोदण वञ्चमापयडीपमम्भन्ते पादयो वा । असकिचि मिच्छाद्विण्डुडि

सत्तारस प्रकृतिषां स्वोदयसे वचती है । पांच वदनावरणीय वा वेदनीय सोटह कयाय नी
मोकयाय तिर्यगाय मनुष्याय तिर्यगाय मनुष्यगति पक्खिन्द्रिय छीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरि
न्द्रिय पंचन्द्रिय जाति भौतारिकशरीर, छह सम्मान भौतारिकशरीरपांगपांग छह संज्ञम
तिर्यगायिमायाग्यानुपूर्वी मनुष्यगतिमायाग्यानुपूर्वी उपपात परपात उच्छवास आताप
उपात दो विहायागति जस स्यावर, पावर, सूक्ष्म पयान मययान प्रत्येक साधारण
शरीर, सुमग दुमग सुस्वर, दुस्वर आदिय अनादिय यजकीर्ति अयजकीर्ति मीचनोत्र
भीर उच्छवासा य प्यासी प्रकृतिषां स्यादय परादय वामो प्रकाटसे वचती है । यहाँ
उपसंहारगाथायें—

पांच वदनावरण पांच मन्तराय वदनावरण चार, स्थिर आदिक चार, तैजस भीर
कार्मण्य शरीर, निर्माण मनुष्यकलपुक, यणादिक चार भीर मिथ्यात्व य सत्ताइम प्रकृतियां
तां स्वादयसे वचती है और शाय प्रकृतियां स्वादय परादयम वचती है ॥ १२-१३ ॥

यहाँ वदनावरण य मन्तरायकी वद प्रकृतियां तथा वदनावरणकी चार ही प्रकृतियां
वचनवाली है । ये अयम बन्ध याग्य सत्र गुणम्यानामो स्यादयम ही वचती है क्योंकि,
मिथ्यादृष्टिसे सबर क्षीणकयाय गुणम्यान लभ इत्यत्र निरन्तर उदय रहता है अथवा
इत्यत्र पतन स्योदयम वचनवासी प्रकृतियोंक भीतर है । यथाकीर्ति प्रकृतिको मिथ्यादृष्टिसे

प्राप्तं ब्रह्मसंज्ञादिति सिद्धं एव वि पश्यन् वि वदति, एतेषु दोषं एकद्वयसुदय-
च्छन्ने । उदयिमा सोदयन् नैव वदति, स्रज्जदसंज्ञदप्यनुष्ठितवर्तिमसु गुणज्ञासु ब्रह्मसंज्ञि-
सदयामावाहो । उच्छागोर्द मिच्छन्ति प्यनुष्ठितं जाव स्रज्जदसंज्ञा सि एदे सोदयन् स्रज्जय-
नि वदति, एव दोषं गोत्राणमुदयममावाहो । उदयिमा पुन सोदयन् नैव वदति, तन्
वीचागोदसुदयामावाहो । तस्य ब्रह्मसंज्ञि-उच्छागोत्राणि सोदय-परोदयवधा इति सिद्धं ।

एदासि वंधा किं संस्तो किं विरतो किं सांतर निरतो सि एदासि पुच्छन् पश्यन् ।
एव एदेन अत्यंतवेधेन ताव सांतर-निरत-सांतरनिरतो वदन्तमामपयडीमो जायतेये ।
त जज्ञ — पञ्चापान्वरीय-अवदस्यन्वरीय मिच्छन्त-सोत्तमकसाय-मम दुग्धं जाठचउक्क
आहार-तेजा-कम्मइयसरी-आहारसरीअगोका-वन्ध-गम-रस-फास-अगुरुवल्बुज-उवपाद विमि-
तित्यवर-वंधतरापमिदि एदासो अउवर्ण पयडीमो निरत वदति । तस्य उवसहारमाह-

सत्ताल भुवाओ तिरव्याहार-जाठचचरि ।

अउवण पयडीमो अज्जति निरत सत्ता ॥ १४ ॥

छेकर असंयतसम्पत्तिं तच्च स्वात्पये मी बांधते हैं और परोदयसे मी बांधते हैं क्योंकि,
इम गुणस्यानाम यशस्वीति और अपयशस्वीतिमिदं किसी एकका उदय रहता है । असंयत-
सम्पत्तिमिदं ऊपरक गुणस्यानवर्ती जीव स्वात्पसे ही बांधते हैं क्योंकि, संयतासंयतसं-
यत्कर उपरिम गुणस्यानाम अपयशस्वीतिमिदं उदय नहीं रहता । उच्छागोत्राणि मिच्छादिति
छेकर संयतासंयत तच्च जीव स्वोदयसं और परोदयसे मी बांधते हैं क्योंकि यही दोनी
गात्रोंका उदय सम्भव है । परन्तु इससे ऊपरके जीव स्वोदयसे ही बांधते हैं क्योंकि,
यही मीचगात्रका उदय नहीं रहता । इस कारण यशस्वीति और उच्छागोत्र प्रवृत्तियां
स्वात्प परोदयसं वधनेवासी हैं यह सिद्ध होता है ।

अथ उक्त सोमस्य प्रवृत्तियोंका बन्ध क्या सांतर है क्या निरतर है और क्या
सांतर निरतर है ? ये तीन प्रश्न प्राप्य ज्ञान हैं । यहाँ इस कार्यसम्पत्तिसे पश्चिमे सांतर,
निरतर और सांतर निरतर रूपसे वधनेवासी प्रवृत्तियोंका बांध करता है । वह इस
प्रकार है—प्रांच आनावरणीय मी इरीमावरणीय मिच्छात्वा साह कयाव मम पुगुत्ता
आपु आर, आहारकशरीर, ऐश्वर्यशरीर, कर्मजशरीर, आहारकशरीरगोपांग वधं गन्ध
रस स्पर्श अगुरुकमबुद्ध, उपपात निर्माण तीर्थकर और प्रांच अस्तत्प ये बीजम
प्रवृत्तियां निरतर वंधती हैं । यहाँ उपसंहारवाचा—

सैतालीस भुवमवृत्तिना तीर्थकर, आहारकशरीर, आहारकशरीरगोपांग और
आर आपु ये सब बीजम प्रवृत्तियां निरतर वंधती हैं ॥ १४ ॥

कर्मो ध्रुवधियपयसीओ ? एदाओ चेव आउचठक्क-न्तिथयराहारदुमविरहिदाओ ।
एदासि परूषणगाहाओ—

णाणन्नायन्सय दसुण णम मिच्छंतांस्स कम्माया ।

मयक्कम् दुगुच्छंतां वि य तेआ कम्म च वण्णचट्ठ ॥ १५ ॥

अगुरुकळह उच्चान्तां णिमिणं णाम च होति सगदाळ ।

बजो चन्द्रियण्यो ध्रुवध्वीग पयस्विवा ॥ १६ ॥

गिरंतरणध्वस्स ध्रुवध्वस्स के विसेसो ? जिस्से पयसीए पञ्चओ जस्य कस्य वि जीये
अणादि-ध्रुवमात्रेण लब्धम् सा ध्रुवध्वपयसी । जिस्से पयसीए पञ्चओ^१ शियमेण सादि अद्भुतो
अंतोमुद्रादिकरत्नवद्वाहं सा गिरंतरणध्वपयसी । जिस्से जिस्से पयसीए अद्भुतपुष्प वषट्ठोच्छेदो
संभवइ सा सातरध्वपयसी । असादावेदणीय इति-शत्रुसमवेद अरु-सोम-गिरयगाह-आहचठक्क-
हेट्टिमपचसंयण-यंमपचयण-गिरयगाहपाआमाणुपुञ्जि-आणुओष-अणसत्पविह्वयगाह-यावर

शस्त्र—ध्रुवध्वी प्रकृतियां कीमसी है ?

समाधान—आर आपु तीर्थंकर भीर दो आहारमे रहित ये उपर्युक्त प्रकृतियां ही
हृष्यप्रकृतियां हैं । इन प्रकृतियोंकी निकपक गाथायें—

आनायरण भीर अंतरायसी वदा सी ब्रह्मनायरण मिथ्यात्व खालह कपाय मयकर्म
सुगुप्ता वैजस भीर कर्मण शरीर, वर्णादिव धार, अगुरुकळमु, उपघात भीर निमाण
सामकर्म य सैतालीस ध्रुवध्वी प्रकृतियां हैं । इनका प्रकृतिबन्ध नादि अनादि भुव पर्य
अभुव रूपस धार प्रकारका होता है ॥ १५-१६ ॥

शस्त्र—गिरंतरणध्व भीर भुवध्वमे क्या भेद है ?

समाधान—जिस प्रकृतिका प्रत्यय जिस किसी भी जीयमें अनादि पर्यं भुव मायम
पाया जाता है वह भुवध्वप्रकृति है और जिस प्रकृतिका प्रत्यय नियमस सादि पर्यं अभुव
तथा अस्तमुहस आदि फल तक अवस्थित रहनपाया है वह गिरंतरणध्वप्रकृति है ।

जिस जिस प्रकृतिका काळक्षयमे पण्ययुग्ण्डव सम्भव है यह साम्तरध्वप्रकृति
है । अनादावेदनीय त्वयेद् नपुंसकश्च भवति शास्त्र, मरकगाति आनि धार, अयस्त्वम
पांच संस्थान पांच संहतन मरकगातिप्रापणानुपूर्वी आनाय उचल अमनासविहाया-

१ वासिनि विष्णु कमाया मय हेजन्नुग विस्मिन्न वण्णओ । सपदात्तुशान वदुया लनाय व इथा ॥

सुहृम-अपञ्चत साहस्र-अधिर असुह-दुभग-दुस्सर मपाए-ज-अवसकिषी एवमो योवीसप
 डीमो सान्तर वञ्चति । अवसेमाओ वतीस पयडीओ सांतर गिरन्तर वञ्चति । तासि वाम्बिरेमो
 वीरे । तं पहा— सत्त्वदधीव पुरिसवेद इस्स-रदि-तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-देवमइ-पविदि-
 वादि भागलिय-वेउअविसरीर-समजठरससय-आणलिय-वेउअविसरीर-लोवेण वञ्चरिस्स
 वहरपायवममिसवइय-निरिक्खगइ-मणुस्सगइ-देवगइ-पाम्माणुपुअि-परघादुस्सस-सम्प-
 विहायमइ-सम गदर-प-अव-पयससि-थिर-सुह-सुपग सुस्सर आदेअे वसकिषि-वीपुवाम्म-
 मिति सान्तर-गिरन्तर वञ्चमाणपयडीओ । एव उवमंहारगाहाओ—

इमि-गउमपय-आ-अउर-असार गिरयदुगं ।

आशउ-ओरगइ-सोगासुइ पयमयगा ॥ १७ ॥

पयसुहसप-आ मिहाय-अपसमिया अणे ।

पय-सुहमसुहद-आलीमि-सान्तर वया ॥ १८ ॥

यति स्थावर, गृह्य अपपात साधारण अमियर, अमुम पुमंग दुस्सर, अमन्त्र और
 अयशर्वाति य वीलीस प्रहतिपां सात्तर रूपसे वंचती है । ओप वतीस प्रहतिपां
 सात्तर निरन्तर रूपसे वंचती है । उमका मामनिर्विश क्रिया जाता है । यह इस प्रकार
 है—सत्त्वदधीव पुरिसवेद इत्ये एति निर्गमति मनुष्यगति वृक्षगति पथेन्द्रियशालि
 औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर, समजठरससंस्थान औदारिकशरीर-गापांग वैक्रियिक
 शरीर-गापांग पञ्चमयप्रकारशरीर-महान निर्गमतिप्राधान्यानुपूर्वी मनुष्यगति
 प्राधान्यानुपूर्वी वृक्षगतिप्राधान्यानुपूर्वी पशुगति उच्छ्रयात् प्रशम्यविहायोगति व्रम,
 पत्तर, पयोज प्रत्यक्षशरीर, म्बिर शुभ सुभग सुम्पर, अमय यशर्वाति
 वीक्षगात्र और उच्छ्रयात् य सात्तर निरन्तर रूपसे वंचनवासी प्रहतिपां है । यही
 उपनिषद्वाक्यार्थ—

एवमिह अमुमकपय आनि चार, अमन्त्रावृत्तिव मरकगति मरकगतिप्राधान्यानु
 पूर्वी अमन्त्र उपात अरुण शक्त, अमुम पञ्च संस्थान पांश अमुम महान अयशस
 विहायोगति स्थावर गृह्य एवं अमुम आदि अय यश इम प्रकार ये वीलीस
 प्रहतिपां यही सात्तर वंचनवासी है ॥ १७-१८ ॥

१ गिरयदुगं गिरयदुगं गिरि मया-अपयय ॥ दुस्स-अउर-असार गिरयदुगं गिरयदुगं गिरयदुगं । गरी
 वीरे वीरे गरीवा वीरे वीरी ॥ गी क. ४ ४ ४ ५

२ अमि-गउमपय-आ-अउर-असार गिरयदुगं ।

३ एव उवमंहारगाहाओ— सत्त्वदधीव पुरिसवेद इत्ये एति निर्गमति मनुष्यगति वृक्षगति पथेन्द्रियशालि
 औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर, समजठरससंस्थान औदारिकशरीर-गापांग वैक्रियिक
 शरीर-गापांग पञ्चमयप्रकारशरीर-महान निर्गमतिप्राधान्यानुपूर्वी मनुष्यगति
 प्राधान्यानुपूर्वी वृक्षगतिप्राधान्यानुपूर्वी पशुगति उच्छ्रयात् प्रशम्यविहायोगति व्रम, पत्तर, पयोज
 प्रत्यक्षशरीर, म्बिर शुभ सुभग सुम्पर, अमय यशर्वाति वीक्षगात्र और उच्छ्रयात् य सात्तर निरन्तर
 रूपसे वंचनवासी प्रहतिपां है ॥ १७-१८ ॥

रात्रिगिरिगणेण य षष्ठीसुखमनियथा पयईथा ।

सप्तमि पञ्चपात्रं द्वात्रिंशत् पञ्चपात्रा ॥ १० ॥

एष पंचपापावर्णीय चउदमनावर्णीय-वंचनान्यपयडीआ विगंतं पच्छति, पुन
 पंधिच्छा । जमस्ति मांनर विगंतं पच्छति । कुण ? मिच्छाडिप्पदुडि वाय पमता ति
 सानर-विगंतं पच्छइ, पण्डिसग्गजमस्तिण पधममग्गा । उरि विगंतं पच्छइ जमस्ति,
 पडिसग्गपयडीण पधामाग्गा । तप जमस्ति पधप मांनर विगंत । उप्पागाद मिच्छाडि
 मामनमम्मत्तिजा मांनर पंधेति, पडिसग्गपयडीण तस्य पंधममग्गा । उरिमा पुन विगंतं
 पंधति, पण्डिसग्गपयडीण तथ पंधामाग्गा । भोगमूलीसु पुग मत्तगुणान्तीरा उप्पागादं
 पय विगंत पंधेति, तस्य पञ्चनरत्तं दग्गइ मात्ता अण्णगण पंधामाग्गा । ता उप्पागादं
 वि पधप मांनर-विगंतं ।

प्यामि पयसीति किं मावभा यथा क्रिययभा ति पुच्छिदे उच्यद— मयस्वगो
पंथा, न निवृत्त्या । अथ ताव पचययस्वगा वरिद । तं उदा— निवृत्तामवम-समाय

नय वस्त्राग प्रवृत्तियो मूढ य उवाच भद्र कथं प्रकृतं प्रत्ययैव यन्मिथुनं हास्य
साम्प्रत निगम्यत रूपस्य संघर्षा ॥ १० ॥

यही वाच्य मानावश्य बाह्य स्वीकारावश्य भाव वाच्य भिन्नताय प्रवृत्तिर्वा निमित्तता
 संघर्षा है कथञ्चि य प्रवृत्तिर्वा भिन्नता है । यथाज्ञानता औप सामान्य निमित्तता रूप
 बाधता है । इत्यत्रा बाधता यह है कि मिथ्यात्वविषय मकर प्रमत्त गुणस्थान तत्र यह प्रवृत्ति
 सामान्य निमित्तता संघर्षा है कथञ्चि यही इत्यत्रा मान्यता । अन्तर्भावनिता वक्ष्य सामान्य है ।
 प्रमत्त गुणस्थानतः ऊपर यथाज्ञानि प्रवृत्ति निमित्तता संघर्षा है कथञ्चि यही प्रतिपत्ता
 प्रवृत्तिवत् वक्ष्यता अभाव है । इति । अथ यथाज्ञान वक्ष्यता सामान्य निमित्तता है । इत्युपाह्व ।
 मिथ्यात्वविषय भाव सामान्यमवस्था है औप सामान्य बाधता है कथञ्चि उनमें मान्यता
 प्रवृत्तिता वक्ष्यता सामान्य है । यद्यपि उदात्ततम गुणस्थानतः औप इत निमित्तता बाधता है
 कथञ्चि यही प्रतिपत्ता प्रवृत्तिता वक्ष्यता मती रहता । तथा सामान्यमवस्थामे सर्व गुणस्थानतः
 औप कथञ्चि इत्युपाह्व है । निमित्तता बाधता है कथञ्चि यही यथाज्ञानतममे वक्ष्यता
 उदात्त वक्ष्यता यथाज्ञान वक्ष्यता मती रहता । इत अथ इत्युपाह्व वक्ष्यता सामान्य निमित्तता है ।

इस प्रकृतिये का नाम मज्झमय अथवा मज्झिम बंध होता है या नाम मज्झमय
अथवा मज्झम बंध होता है। इस प्रकार कहा जाता है— इस प्रकृतिये का नाम
मज्झमय होता है मज्झमय नहीं। यही ग दल मज्झमय प्रकृत्या ही ज्ञात है। यह हम



योगा इति एदे चत्वारि मूलावयवा । सपदि उत्तरपञ्चमपरूपं कस्सामो मिच्छाद्विभक्ति
 गुणद्वयेषु दोषद्वये— मिच्छते पंचविहं एतन्पञ्चाव-विवरीय-वेणस्य-सप्तश्रमिच्छतमिदि । तत्र
 अति चेव, अति चेव; एगमेव, अजेगमेव; सावयवे चेव, गिरययवे चेव; मिधमेव, अमिध-
 मेव; इच्छाद्वयो एतन्नाद्विभक्तौ एतन्मिच्छते । विचारिज्जभाणे जीवाजीवादिपयस्या न संति
 मिच्छादिपयस्येहि, तदे सन्ममप्राणमेव, पाथं अति च अहिमिवसो अण्णाममिच्छते ।
 हिंसात्तियवपम बोद्ध-मेवुण-परिमाह राग-दोस-मोहप्राणेहि चेव भिम्भुहोहं चि अहिमिवसं
 विवरीयमिच्छते । अहिंसा-पाठस्यमुदाह सच्चाहं पि विजयादो चेव, य आण-इसम-त्तेत-
 वासन्तिअहिंसेति चि अहिमिवसो येमस्यमिच्छते । सञ्चत्य संदेहो चेव मिच्छतो अति चि

मनार है— मिष्प्यात् अस्वम कयाय और पाग यं बार मूठ प्रत्यय है । अब उत्तर
 प्रत्ययोंका निरूपण मिष्प्यादि आदि शुभस्थानोंमें छाकर करते हैं— एकल्ल अज्ञान
 विपरीत वैतथ्य और सांशयिक मिष्प्यात्क मंछते मिष्प्यात् पांच प्रकार है । इसमें सत्
 ही है असत् ही है; एक ही है अनेक ही है; सायय ही है निरवयव ही है नित्य ही
 है अनित्य ही है; इत्यादि एकल्ल अमिनिवेशकी एकल्लमिष्प्यात् कहत हैं । नित्यावित्य
 रिक्त्योमें विचार करनेपर जीवाजीवादि पदार्थ नहीं है अत एव सब अज्ञान ही है ज्ञान
 नहीं है एमे अमिनिवेशको अज्ञानमिष्प्यात् कहत हैं । हिंसा असीक कथम और मेवुण
 परिमाह, राग द्वेष मोह और अज्ञान इनसे ही मुक्ति होती है ऐसा अमिनिवेश विपरीत
 मिष्प्यात् कहलाता है । धिक्क एवं पाच्छीकिक सुख सभी धिनपसे ही प्राप्त होते हैं य
 कि ज्ञान वर्धन तप और उपवास अनित्य होशोसे; ऐसे अमिनिवेशको नाम वैतथ्य
 मिष्प्यात् है । सयं सवेह ही है मिथ्य नहीं है ऐसे अमिनिवेशको संशयमिष्प्यात् कहत

१ अर्था अन्त्य इति पाठ ।

२ एव इत्यत्र इत्येति अमिनिवेशमिच्छेत् प्रात । त नि ८ १ त रा ८ १ २८
 पत्रमिनिवेश एतन्मम अमिनिवेश । इत्येति अमिनिवेश इति अमिनिवेशम् ॥ त ता ५ १

३ मिनिवेशमिच्छेत् अमिनिवेशम् । त नि ८ १ त रा ८ १ २८ मिनिवेशमिच्छेत् अमिनिवेशम्
 इत्येति । अमिनिवेशमिच्छेत् अमिनिवेशम् ॥ त ता ५ २

४ पुन एव अमिनिवेशम् अमिनिवेशम् । त नि ८ १ त रा ८ १ २८ अमिनिवेशम् अमिनिवेशम्
 अमिनिवेशम् अमिनिवेशम् । त नि ८ १ त रा ८ १ २८ अमिनिवेशम् अमिनिवेशम्
 अमिनिवेशम् अमिनिवेशम् । त नि ८ १ त रा ८ १ २८ अमिनिवेशम् अमिनिवेशम्

५ अमिनिवेशम् अमिनिवेशम् । त नि ८ १ त रा ८ १ २८ अमिनिवेशम् अमिनिवेशम्
 अमिनिवेशम् अमिनिवेशम् । त नि ८ १ त रा ८ १ २८ अमिनिवेशम् अमिनिवेशम्

[५३] । एतत् आहारदुग्मवन्निदे मिच्छादृष्टिपडिपडपञ्चया पंचवचसा ह्येति [५५] । एदेहि पञ्चपण्डि मिच्छादृष्टि सुषुप्तमात्मपयदीभो वचदि । एतत् पंचमिच्छतपञ्चयेसु वच निदेसु पंचामपञ्चया ह्येति [५७] । एदेहि पञ्चपण्डि सामणसम्मादृष्टि सुषुप्तमात्मपयदीभो वचदि । पंचासपञ्चपण्डि ओगलियमिम्म-वठन्धियमिस्म कम्मइय-अपतत्तुपंचिचउत्तकसु वच निदसु तदात्त पञ्चया ह्येति [५९] । एदेहि पञ्चपण्डि सम्माभिग्गदृष्टि सेत्तमपयदीभो वचदि । सेदात्तपञ्चपण्डि आरात्तियमिम्म-वठन्धियमिस्म कम्मइयपञ्चपण्डि पत्तिउत्तेसु छादात्त पञ्चया [६१] । एदेहि पञ्चपण्डि वमज्जदसम्मादृष्टि अपिदसात्तमपयदीभो वचदि । एदसु वमज्जदसम्मादृष्टि पञ्चपण्डि अपञ्चपत्तुपञ्चउत्तक आरात्तियमिस्म वठन्धिय-वेउधियमिस्म-कम्मइय तयामज्जसु वचनिदसु सत्तत्तमपञ्चया ह्येति [६३] । एदेहि पञ्चपण्डि सज्जदसंज्जद अपिदसात्तम-पयदीभो वचदि । एदेसु सज्जदसंज्जदस्य सत्तत्तमपञ्चपण्डि पञ्चकत्तुपञ्चउत्तक एककारम-असंज्जमपञ्चपण्डि वचनिदसु अवमेसा पत्तीम, तस्य आहारदुगे पत्तिउत्ते वउत्तीस पञ्चया ह्येति [६५] । एदेहि पञ्चपण्डि पमत्तमज्जद अपिदसेत्तमपयदीभो वचदि । एदेसु वउत्तीम-पञ्चपण्डि आहारदुग्मवन्निद पत्तीम पञ्चया ह्येति [६७] । एदेहि पञ्चपण्डि अपमत्तमज्जद

— — —

इतमेवे आहारक धीर आहारकमिधयो अन्तर्ग कर्त्तृनेपर मिच्छादृष्टिमे सम्यक् प्रत्यय पञ्चयत्न (५५) दातुं है । इत प्रत्ययोंस मिच्छादृष्टि मूलात्त सायह प्रवृत्तियोंका बांधना है । इतमेवे पांच मिच्छादृष्टिप्रत्ययोंका अन्तर्ग कर्त्तृनेपर पञ्चात् (५७) प्रत्यय दाते है । इत प्रत्ययान्न सामाजिकप्रत्ययदृष्टि मूलात्त सायह प्रवृत्तियोंका बांधना है । इत पञ्चाम प्रत्ययामेस आहारिकमिध धैर्यविक्रमस्य कामस्य धीर चार अन्तर्गानुपगर्घा प्रत्ययोंका अन्तर्ग कर्त्तृनेपर तत्तामीस प्रत्यय दातुं है (५९) । इत प्रत्ययोंमे सम्मामिच्छादृष्टि सायह प्रवृत्तियोंका बांधना है । तत्तामीस प्रत्ययामे आहारिकमिध धैर्यविक्रममिध धीर कामस्य प्रत्ययका मिमत्तमज्जद उपार्त्ताम प्रत्यय दातुं है (६१) । इत प्रत्ययोंस अस्वतन्त्रमिच्छादृष्टि विषयित्त सायह प्रवृत्तियोंका बांधना है । इत अस्वतन्त्रमिच्छादृष्टिक प्रत्ययोंमेस चार अन्तर्गानुपगर्घा आहारिकमिध धैर्यविक्रम, धैर्यविक्रममिध कामस्य धीर वरतासंयम इत मी प्रत्ययका वम कर्त्तृनेपर सीतास प्रत्यय दातुं है (६३) । इत प्रत्ययोंस संयतासंयत विषयित्त सायह प्रवृत्तियोंका बांधना है । इत संयतासंयतक सीतास प्रत्ययोंमेस चार अन्तर्गानुपगर्घा धीर त्याग अस्वतन्त्र प्रत्ययोंका वम कर्त्तृनेपर हाय वार्त्तास दातुं है उन्मे आहारक धीर आहारकमिधस्य मिता इतपर धीरीर प्रत्यय दातुं है (६५) । इत प्रत्ययोंस अमत्तमज्जद विषयित्त सायह प्रवृत्तियोंका बांधना है । इत धीरीर प्रत्ययामेस आहारक विषयका वम कर्त्तृनेपर वार्त्तास प्रत्यय दातुं है (६७) । इत प्रत्ययोंमे अमत्तमज्जद धीर

अपुत्रकरणपद्मसमा^१ सत्वा च अपिदसोत्सपयडीमो वचति । एदेसु सेव छण्णोकसाएसु
 अवणिदेसु सोत्स हति । १६ । एदेहि पञ्चएहि पदमभणियडी सोत्स पयडीमो वचदि । एत्थ
 गवुसयवदे अवणिदे पण्णारस हति । १५ । एदेहि पञ्चएहि विदियमणियडी अपिदपयडीमो
 वचदि । एदेसु इत्थिवदे अवणिदे चोहस हति । १४ । एदेहि पञ्चएहि तदियमणियडी
 अपिदपयडीमो वचदि । एत्थ पुरिसवदे अवणिदे तेरह हति । १३ । एदेहि पञ्चएहि
 चठत्थमणियडी अपिदपयडीमो वचदि । पुणो एत्थ कावसंजल्ले अवणिदे चारस हति
१२ । एदेहि चारसपञ्चएहि पंचममणियडी अपिदपयडीमो वचदि । पुणो एत्थ माण-
 सजल्ले अवणिदे एकचारस हति । ११ । एदेहि पञ्चएहि छट्ठमणियडी अपिदपयडीमो
 वचदि । एदेहि तो मायासजल्ले अवणिदे दस हति । १० । एदेहि पञ्चएहि सत्तममणियडी
 अपिदपयडीमो वचदि । एदेहि सेव दसहि पञ्चएहि सुहुमसांपराइयो^२ वि अपिदसोत्सपयडीमो
 वचदि । दससु लेमसजल्ले अवणिदे पव हति । ९ । एदे उत्तवंतकसाय-स्वीणकसाएहि
 पञ्चमाणपयडीर्ण पञ्चया । एदेहि तो मन्निमदो-दोमणवचिजेगे अवणिय भोरात्थियमिस्स

मपूर्वकरणमणिद उपशमक एवं क्षयक जीव विधक्षित सोत्सह प्रकृतियोंके बांधता है ।
 इन्हीं प्रत्ययोंमेंसे छह मोकरायों को अलग करनेपर मोसह होते हैं (१६) । इन प्रत्ययोंसे
 मयम अनिष्टुत्तिकरण सोत्सह प्रकृतियोंको बांधता है । इनमेंसे मपुंसकपेयका अलग कर-
 नेपर पञ्चह होते हैं (१५) । इन प्रत्ययोंसे द्वितीय अनिष्टुत्तिकरण विधक्षित प्रकृतियोंके
 बांधता है । इनमेंसे त्रिवेदका कम करनेपर चौदह होते हैं (१४) । इन प्रत्ययोंसे तृतीय
 अनिष्टुत्तिकरण विधक्षित प्रकृतियोंको बांधता है । इनमेंसे पुरपपेयको अलग करनेपर
 तरह होते हैं (१३) । इन प्रत्ययोंसे चतुर्थ अनिष्टुत्तिकरण विधक्षित प्रकृतियोंके बांधता
 है । पुनः इनमेंसे भोषसंजल्लमको अलग करनेपर बारह होते हैं (१२) । इन बारह
 प्रत्ययोंसे पंचम अनिष्टुत्तिकरण विधक्षित प्रकृतियोंको बांधता है । पुनः इनमेंसे मानसज-
 ल्लक कम करनेपर ग्यारह होते हैं (११) । इन प्रत्ययोंसे छठा अनिष्टुत्तिकरण विधक्षित
 प्रकृतियोंको बांधता है । इनमेंसे मायासजल्लमको अलग करनेपर दस होते हैं (१०) । इन
 प्रत्ययोंमें सत्तम अनिष्टुत्तिकरण विधक्षित प्रकृतियोंके बांधता है । इन्हीं दश प्रत्ययोंसे
 सुहुमसांपरायिक भी विधक्षित सोत्सह प्रकृतियोंको बांधता है । इन दश प्रत्ययोंमेंसे
 सामसंजल्लमको अलग करनेपर भी प्रत्यय होते हैं (९) । य भी उपशान्तकपाय और
 शीघ्रकपाय जीवोंके द्वारा बांधी जानेवाली प्रकृतियोंके प्रत्यय हैं । इनमेंसे मयम

१ जर्नी अपुत्रपत्तयइत्तयणा इति पाठ ।

२ मणिउ छांपज्जवा इति पाठ ।

कर्मव्यवसाययोगसु पवित्रतेषु सत ह्येति । ७ । । जेदि सचदि पञ्चपदि सजोविनिबे
वेषदि । एत्थ उवसंहासाहाओ —

चदुपञ्चगो वना पदमे उवसिनि ए निपचरओ ।

मिस्सगविणिओ उवमिदुग व सेसेगदेसदि ॥ २० ॥

उवलिगवण पुण दुपञ्चओ जोगपञ्चओ तिप्पं ।

सामग्गपञ्चया सत्त उद्धणं ह्येति कम्मणं ॥ २१ ॥

पणउण्णा इर वण्णा तिदत्त छाशाल सचतीत्ता य ।

चदुरीस दु वारीत्ता सोत्त एगूग ज्ञान गय सच ॥ २२ ॥

संपदि एगम्मइयउत्तरुपपञ्चए चोइसमीत्वसमासेसु भविस्सामो । तं पण—

दो दो अर्थात् नृपा और मत्त्वसूपा मन और क्लम योनोंको मलय करके भौदारिकमित्र व
कर्मव्यवसाययोगको मित्रा इत्येव खात होते हैं (७) । इन सात प्रत्ययोंसं संपोली शिन
[एक सातवेदनीयको] बोधते हैं । यहां उपसंहारगाथायें—

प्रथम गुणस्वाममें चारों प्रत्ययोंसे वण्य होता है । इससे ऊपर तीन गुणस्वामोंमें
मिष्यत्वाद्यो छोड़कर दोष तीन प्रत्ययसंयुक्त वण्य होता है । देशसंयत गुणस्वाममें
मिष्यत्वाद्य अर्थात् विष्णायिरत्तत्वाद्य द्वितीय प्रत्यय और कगाय व पांम ये दोष दोनों उपरिम
प्रत्यय रहते हैं । इससे ऊपर पांच गुणस्वामोंमें कपाय और पांग इन दो प्रत्ययोंके विमिश्रित
वण्य होता है । पुनः उपशान्तमोहादि तीन गुणस्वामोंमें कयस योगविमिश्रित वण्य होता
है । इस प्रकार गुणस्वाम क्रमसे आठ क्रमोंके ये सामान्य प्रत्यय हैं ॥ २०-२१ ॥

पचबनं पचामं ततालीसं छयालीसं सतीस बीपीस दो वार बार्दिसं
सांछइं और इसमें आगे भी तक एक एक क्रम अर्थात् पण्डइं चोइइं ठेरइं शाइ
व्याइइं दइइं दइइं बीं बीं और सत्तं इस प्रकार क्रमसे मिष्यात्वादि अष्टादश
तक आठ गुणस्वामोंमें अभिवृत्तिकरणके माल मालोंमें तथा सूक्ष्मसाम्यव्याधि संपोली
केवली तक दोष गुणस्वामोंमें वण्यप्रत्ययोंकी संख्या है ॥ २२ ॥

अब एक खण्डमें राज्ञानाम उत्तरोत्तर प्रत्ययोंको बान्ह जीवसमासोंमें बहते हैं ।

१ बरनी पचिबीरपण्णरओ बानी पचिबिद देव वण्णरओ इति पाठ ।

२ बरनी छेपेदेनदि बरनी देनदेनदि इति पाठ । चदुपञ्चरणी वनी परमे वरणिने
निपचरओ । मिस्सगविदि पचिबिद व देनदेनवि ॥ भी व ७८७

३ भी व ७८८

४ वण्णत्ता वण्णत्ता निपच कायउ लण्णत्ता व । चदुरीत्ता वारीत्ता शरीरत्तुत्ताओ वि ॥ दूले
लीगवदुरी दूले जाइ इति दण्ण । चदुरीत्त दण वण वीरिदि वणत्ता ॥ भी व ७८९-७९०

५ बरनी वण्णदि इति पाठ ।

तस्य ताव मिच्छाद्द्विस्स जहण्णेण दस पच्चया । पचसु मिच्छतेसु एक्को । एक्केण
 इदिण एक्कं कय्य जहण्णेण विराहेदि [ति] दोष्णि असज्जमपच्चया । अण्णानुपवि
 षउक्क विसजेविय मिच्छत्त गयस्स आवलियमेत्तकालमण्णतानुपविचउक्कस्सुदयामावादो
 पारससु कमाएसु तिप्पि कमापपच्चया । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स रदि-अरदि-सोगदोसु
 जुगलेसु एक्कदर जुगल । दससु जोगेसु एक्को जोगो । एवमेदे सव्वे वि जहण्णेण दस
 पच्चया [१०] । पंचमु मिच्छतेसु एक्को । एक्केण इदिण छक्कए विराहेदि ति सत्त असज्जम
 पच्चया । सोल्लेसु कमाएसु चत्तारि कमापपच्चया [४] । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स रदि
 अरदि-सोगो-जुगलेसु एक्क जुगल । मय दुगुळाओ दोष्णि । तेरसेसु जोगपच्चएसु एक्को ।
 एवमेदे सव्वे वि अट्ठारम होति [१८] । एवमेदेदि दस अट्ठारसजहण्णुक्कसपच्चएदि मिच्छा-
 द्द्वि अण्णिमोत्तसपयडीओ पचइ ।

एक्कंइदिण एक्कं कय्यं विराहेदि ति दोमसंजमपच्चया । सोल्लेसु कमाएसु
 चत्तारि कमापपच्चया । तिसु वेदेसु एक्को वेदपचआ । हस्स-रदि-अरदि-सोगदो-जुगलेसु
 एक्कदर जुगलं । तेरससु जोगेसु एक्को । एव जहण्णेण सासणस्स दस पच्चया होति [१०] ।
 उक्कलेण सत्तस पच्चया होति, मिच्छत्तस्सुदयामावादो [१७] । एवमेदेदि जहण्णुक्कस

यह इस प्रकार है- उनमें मिष्याद्विष्टि अघम्यमं द्वा प्रत्यय होते हैं । पाँच मिष्याद्विष्टिमेंसे एक
 मिष्याद्विष्टि एक इन्द्रियमं एक कायकी अघम्यमं विराधना करता है इस प्रकार दो
 असंयम प्रत्यय, अनग्तानुबन्धितपुण्यका विमंय जन करक मिष्याद्विष्टि प्राप्ति हुए जीवक
 बाधमीमात्र कास तक अनग्तानुबन्धितपुण्यका उद्भव न रहनसं चारह कार्योंमें तीन
 कार्या प्रत्यय तीन यदोंमें एक हास्य रति और भरति शोक इन दो युगलोंमेंसे एक युगल
 तथा द्वा योंमें एक याग इस प्रकार य मय ही अघम्यमं द्वा प्रत्यय होते हैं (१०) । पाँच
 मिष्याद्विष्टिमें एक एक इन्द्रियमं छह कार्योंकी विराधना करता है अतः सात असंयम
 प्रत्यय सात्वत कार्याम चार कार्या प्रत्यय तीन यदोंमें एक हास्य रति और भरति-शाक
 इन दो युगलोंमें एक युगल मय य जुगलमा दो तरह याग प्रत्ययोंमेंसे एक इस प्रकार
 य सभी भटावह हाल है (१८) । इस प्रकार इन अघम्य द्वा भाग उद्भव भटावह प्रत्ययोंसं
 मिष्याद्विष्टि जीव विविधित सात्वत प्रद्विष्टियोंच विराधना है ।

एक इन्द्रियमं एक कायकी विराधना करता है इस प्रकार दो असंयम प्रत्यय
 सोमह कार्योंमें चार कार्या प्रत्यय तीन यदोंमें एक यद् प्रत्यय हास्य रति और भरति
 शाक इन दो युगलोंमें एक युगल तरद योंमें एक याग इस प्रकार सात्वात्मकमिष्याद्विष्टि
 अघम्यमं द्वा (१०) और उद्भवमं सत्तवह प्रत्यय हाल हैं । यदोंच उद्भव मिष्याद्विष्टि उद्भव
 नहीं रहता (१७) । इस प्रकार क्रमसं इन अघम्य चार उद्भव द्वा य सत्तवह प्रत्ययोंमें

दस सप्तारमपञ्चण्हि सासणसम्मादिही अपिदसेत्तमपमयीओ वेधदि ।

एकैपिदिण एक्क कय विराहदि ति दा असजमपञ्चया । जणतापुबंवि-
बहुक्कवदिरित्तपासकमाएसु तिणि कमायपञ्चया । तिसु वदेसु एकके । हस रदि अरि
सोगदोडुगलेसु एकक । दससु जगेसु एकके । एवमेदे सथे वि पन होति । ९ ।।
एकैपिदिण छत्तर विराहदि ति मत्त असजमपञ्चया । जणतापुबंविदिरित्तपासकमाएसु
तिणि कमायपञ्चया । तिसु वदेसु एकके । हस रदि अरि-सोगदोडुगलेसु एकक
जुगले । दो मय दुगुछओ । हससु जगेसु एकक । एवमेदे सोत्तम पञ्चया । १० ।। एहि
अहम्मक्कम्मपन सोत्तसपञ्चण्हि सम्मामिच्छइही असजदसम्माइही च अपिदसेत्तमपमयीओ
वेधदि ।

एकैपिदिण एक्क कय विराहदि ति दा असजमपञ्चया । जणतापुबंवि-
चत्तरवत्तकविरिदभट्टकसाएसु दो कमायपञ्चया । तिसु वदेसु एकके । हस-रदि-अरि
सोगदोडुगलेसु एकक । जवजगेसु एकके । एवमेदे अट । ८ ।। एकैपिदिण पंचकए
विराहदि ति छत्तसजमपञ्चया । दा कमायपञ्चया । एकके वदपञ्चमा । हस रदि-अरि सोग

सासणममयण्हि विषयित्त साम्ह प्रहरियोका बांधना है ।

एक इन्द्रियम एक कायकी विगणना करता है इस प्रकार दो असेवम प्रत्यय
अनन्तानुबन्धितपुण्यका छाड़कर दोष बाह्य कयायम तीन कयाय प्रत्यय तीन बहोमे
एक, हास्य रति और भगति शाक इन दो युगमासे एक, दश पागोमेन एक इस प्रकार
य समी नी प्रत्यय दान है (९) । एक इन्द्रियम छह कायकी विगणना करता है इस
प्रकार सप्त असेवम प्रत्यय अनन्तानुबन्धीन रहित पण्य कयायोंम तीन कयाय प्रत्यय
तीन बहोमे एक, हास्य रति और भगति शाक इन दो युगमासे एक युगम मय और
सुगुप्ता य दो दश पागोमेन एक, इस प्रकार य साम्ह प्रत्यय दान है (१०) । इन
अस्य भार उरुह नी और स मह प्रत्ययोंन सम्यगिमप्याण्हि भार असपनममयण्हि
और विरहित साम्ह प्रहरियोका बांधना है ।

एक इन्द्रियम एक कायकी विगणना करता है इस प्रकार दो असेवम प्रत्यय
अनन्तानुबन्धितपुण्य और सम्यगप्याणामाचत्तकपुण्यम रहित भार कयायोंम दो कयाय
प्रत्यय तीन बहोमे एक, हास्य रति और भगति शाक इन दो युगमासे एक नी पागोमे
एक, इस प्रकार य आठ प्रत्यय दान है (८) । एक इन्द्रियम पांच कायकी विगणना
करता है इस प्रकार छह असेवम प्रत्यय दो कयाय प्रत्यय एक यद प्रत्यय हास्य रति
और भगति शाक इन दो युगमासेन एक मय और सुगुप्ता तथा नी पागोमेन एक, इस

दोण्ह जुगत्त्रणमेक्कदर । मय दुगुल्लओ । णवजोगेसु एकस्से । एवमेदे चोइस । १४ । एदेहि जहण्णुक्कत्सपचण्हि सज्जसाब्बदो अपिदसोत्तसपयडीओ पधदि ।

चतुसंजलणेसु एकस्से क्कमायपञ्चओ । तिसु वेदेसु एकस्से । हस्स-रदि-अरदि-सोण दोण्ह जुगत्त्रणमेक्कदर । णवसु जोगेसु एकस्से । एवमेदे पच जहण्णेण पच्चया । ५ । एकस्से क्कमायपञ्चओ । एक्के वेदपञ्चओ । हस्स रदि-अरदि-सोणदोण्ह जुगत्त्रणमेक्कदर । मयदुगुल्लओ । णवसु जोगेसु एकस्से । एवमेदे सत्तुक्कत्सपच्चया । ७ । एवमेदेहि जहण्णुक्कत्सपच-सत्त-पञ्चण्हि पमत्तसंब्बदो अप्पमत्तमज्जदो अपुण्वक्कणो च अपिदपयडीओ पधदि ।

एकस्से सज्जलणकमाओ । एकस्से जोगो । एवमेदे जहण्णेण दो पच्चया । २ । उक्कत्सेण तिण्णि वेदेण सह । १ । एदेहि जहण्णुक्कत्सणो-तिण्णिपच्चण्हि अपियट्ठी अपिण्णोत्तसपयडीओ पधदि ।

ओमक्कमाओ एकस्से । [एकस्से] जोगपञ्चओ । एवमेदेहि जहण्णेण उक्कत्सेण वि दोहि पच्चण्हि सुहुमसांपराइओ अपिदपयडीओ पधदि । उवति उवसत्तकमाओ स्त्रीणक्कमाओ सज्जोगी च एकस्सेण चैव जोगेण पधति । एत्थ उवसहारगाहा—

प्रकार ये चौदह प्रत्यय हैं । इन अष्टम्य और उत्कृष्ट भाट य चौदह प्रत्ययोंसे संयत्तासंयत जीव विपक्षित साम्ह प्रवृत्तियोंको बांधता है ।

याग सप्तम्योमैमे एक क्कमाय प्रत्यय तीन यदोमैमे एक हास्य-रति और भरति शाक इन दो युगल्लोमस एक तथा मी योमैमेस एक इस प्रकार अष्टम्यसं य पांच प्रत्यय हैं (५) । एक क्कमाय प्रत्यय एक वेद प्रत्यय हास्य-रति और भरति शाक इन दो युगल्लोमैस एक युगल मय और जुगुप्ता तथा मी योमैमेस एक इस प्रकार ये सात उत्कृष्ट प्रत्यय हैं (७) । इस प्रकार इन अष्टम्य और उत्कृष्ट पांच य सात प्रत्ययोंमे प्रमत्तसंयत अप्रमत्तसंयत और अप्रयत्नण गुणस्थानधर्मो जीव विपक्षित प्रवृत्तियोंको बांधता है ।

एक सज्जलणकमाय और एक याग इस प्रकार ये अष्टम्यसं दो प्रत्यय (२) तथा उत्कर्षमं यैवक माय तीन (३) इस प्रकार इन अष्टम्य और उत्कृष्ट दो य तीन प्रत्ययोंमे अनिरुक्तिरूप गुणस्थानधर्मो जीव विपक्षित साम्ह प्रवृत्तियोंको बांधता है । ओमक्कमाय एक और एक याग प्रत्यय इस प्रकार इन अष्टम्य य उत्कर्षमं मी दो प्रत्ययोंमे मूलमन्नाय चाधिक तीन विपक्षित प्रवृत्तियोंको बांधता है । इसमें ऊपर उपशांतकमाय शीणकमाय और सपाणिकपली कथ्य एक यागम ही सम्पद हैं । यहां उपसहारगाहा—

दस अक्षरस्य सप्त सप्त गण साक्स्य च सागं तु ।

अष्ट य चास्य पण्य सप्त निष्टु निष्टु एवमेव च ॥ २३ ॥

किंदिंसंभृतं ? परिस्ते पुष्पस्य चोदसीयसमाप्तपडिबद्धो उत्तरो वृष्पदे । तं
बद्धा— मिष्पदिष्टी चदुगदिसंभृतं पंधदि । पवरी उच्चागेर्दं गिरय तिरिक्त्तगर्दं मातृष
दुगदिसंभृतं पंधदि । जसकिंति गिरयगर्दं मातृष किंदिंसंभृतं पंधदि । सप्तपो चोदस-
पवडीभा गिरयगर्दं मातृष विगदिसंभृतं पंधदि । उच्चागेर्दं गिरय-तिरिक्त्तगर्दं मातृष
दुगदिसंभृतं पंधदि । जसकिंति पुन गिरयगर्दं मातृष किंदिंसंभृतं पंधदि । सम्भामिष्पदिष्टी
जसंजदसम्भामिष्पदिष्टी च सात्सपयडीभा गिरयगर्दं तिरिक्त्तगर्दं मातृष दुगदिसंभृतं पंधदि ।
सम्भामिष्पदिष्टी जसंजदसम्भामिष्पदिष्टी च अपुन्यन्यद्वय संसुग्मे भागं गंतुं द्विष्टा चि अपिदसंभामिष्पदिष्टीभा
देवगदिसंभृतं पंधदि । उवरिगा अगदिसंभृतं पंधदि ।

कदिगदीया सामिपो ? परिस्म पुष्पस्य परिस्ते वृष्पदे— मिष्पदिष्टी चदुगदिया

मिष्पदिष्टी गुणस्थानम ज्ञा य भडाग्दं मात्सादनम स्या य सप्तगर्दं वा गुणस्थानम
अथान मिष्प भौर अविस्तानस्यगर्दम मा य सामद संपत्तामपत्तमं भाद
भौर बीद्दं ममत्तसंपत्तादिह तानमं पांथ य मात अनितुत्तकत्तमं वा य तान गूरम
नाम्परायमं वा तथा उपगाम्पत्ताय शीतकत्ताय एव स्यागिज्जामी गुणस्थानम एकमात्र
हस प्रचार एक जीयक एक समयम अप्रत्य य उरुष्ट य सप्तप्रत्य य य ज्ञान ॥ २३ ॥

कनिर्गी गतिग संयुक्त पन्थक है ? इस प्रश्नका प्रत्युक्त जीयसमाप्त सप्तगर्द
उत्तर कहत है । यह इस प्रकार है— मिष्पदिष्टी जीय पागं मातर्बीस मातृष उक्त
महत्तियोंका पन्थक है । विनाय इतना है कि उच्चगात्रका मरकगति भौर निर्वगगतिको
छाड़कर दाव का गतिर्योग संयुक्त बांधत है । यदाकनिर्गी मरकगतिका छड़कर तीन
गतिपाग संयुक्त बांधता है । मात्सादन गुणस्थानम यादृह महत्तियोंका मरकगतिको
छाड़ तीन गतिपाग संयुक्त बांधता है उच्चगात्रका मरक य निर्वगगतिका छड़ दाव
का गतिर्योग संयुक्त बांधता है । निम्न गतिर्योगका मरकगतिका छड़ दाव तीन गतिपागे
संयुक्त बांधता है । सम्भामिष्पदिष्टी भौर ममत्तसंपत्तादि जीय मातृह महत्तियोंका
मरकगति य निर्वगगतिका छड़ वा गतिर्योग संयुक्त बांधत है । गततामपत्तम सप्त प्रत्युक्त
बात्स संभामिष्पदिष्टी जसंजदसंभामिष्पदिष्टी च अपुन्यन्यद्वय संसुग्मे भागं गंतुं द्विष्टा चि अपिदसंभामिष्पदिष्टीभा
बांधत है । इसका उत्तर जीय ममत्तसंयुक्त बांधत है ।

उक्त महत्तियोंका विनाय गतिपाग जीय प्रारम्भ कान है ? इस प्रश्नका प्रत्युक्त
कहत है— मिष्पदिष्टी चदुगदिया मातृष मातृह महत्तियोंका मरकगतिका छड़ दाव तीन गतिपागे
संयुक्त बांधता है ।

सामिणो । सासणसम्माइही सम्मामिच्छइही असज्जवसम्माइहिणो वि चटुगदिया सामिणो । दुगदिसज्जवसज्जव सामिणो । उवरिमा मणुसगदिया चेष । अट्ठाणं सुत्तसिद्धं । पढम अपढमचरिम चरिमसमयपवोचेत्तपुच्छविषयपरुषणा वि सुत्तसिद्धा चेष ।

किं सादिभो किमपादिआ किं भुवो किमद्भुवो पधो वि एदिस्से पुच्छए सुच्छदे—
चोइसपयडीणं पधो मिच्छइहिस्स सादिभो, उवसमसेहिमिह पधोचेत्त कट्ठण हेहा ओइरिय वंधस्सदि करिय पडिबणमिच्छत्ताण सादियपधोवत्तमादो । अणादिगो, उवसम-
सेहिमपात्तुमिच्छदिहिजीवाणं वंधस्स आदीए अमावादो । भुवो पधो, अमवियमिच्छदिहिण
पधस्स वोचेत्तमावादो । अद्भुवो, उवमम-सुवगसेहिं चट्ठणपाओगमिच्छइहिपधस्स भुवत्ता
मावादो । असक्खि उच्चागोत्ताणं पि एवं चेष । पवरि अणादि भुववंधा गत्थि, अजसक्खि
णीचागोत्ताणं पडिबन्नाण समवादो । सव्वगुणट्ठापेसु सेसेसु चोइसपुवपयडीयो सादि-अणादि
अद्भुवमिदि तिहि विषयेहि वज्झति । भुवमगो गत्थि, तेसिं भविषाणं थियमेण वंधोचेत्त

इति श्री अंत्यतमस्यगृहि मी चारों गतियोंके जीव स्वामी हैं । दो गतियोंके
संप्रदासयत जीव स्वामी हैं । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्यगतिके ही जीव स्वामी हैं ।
बन्धायान सूनसंमिद है । प्रथम अग्रिम अचरम और चरम समयमें होनेवाले बन्धायुक्त
सम्बन्धी प्रत्येक प्रकृति मी सूनसिद्ध ही है ।

अथ क्या सादिक बन्ध होता है क्या अनादिक बन्ध होता क्या भुव बन्ध
होता है या क्या अद्भुव बन्ध होता है ? इस प्रश्नका उत्तर कहत हैं— श्रीगृह प्रकृतियोंका
बन्ध मिथ्यादृष्टिके सादिक होता है क्योंकि उपशमधेयीमें पण्डपुच्छेत्त करके पुनः नविक
उत्तरकर बन्धका प्ररम्भ करके मिथ्याग्रन्थों माल हुए जीवोंके सादिक बन्ध पाया जाता है ।
अनादिक बन्ध होता है क्योंकि उपशमधेयीपर नहीं चढ़े हुए मिथ्यादृष्टि जीवोंके बन्धके
मादिक अभाव है । भुव बन्ध होता है क्योंकि, अमय मिथ्यादृष्टि जीवोंके बन्धका कमी
पुच्छत्त नहीं होता । अद्भुव बन्ध होता है क्योंकि उपशम और शपक धेयीपर चढ़मके
योग मिथ्यादृष्टि जीवोंका बन्ध भुव नहीं होता । यगदीर्ति और उच्चगोत्र प्रकृतियोंका मी
मिथ्यादृष्टिके इसी प्रकार ही बन्ध होता है । शिरोय इतना है कि इन दोनों प्रकृतियोंका उमक
अनादि और भुव बन्ध नहीं होता क्योंकि इनमें प्रतिपन्नमृत भयदादीर्ति और नीच
पावका बन्ध सम्मथ है । दोष नर गुणस्थानोंमें श्रीगृह भुवप्रकृतियों मादि अमादि और
अभुव इन तीन विधियोंसे वंधती हैं । यहाँ भुव मंग नहीं है क्योंकि, उन मय जीवोंके

समवाये । अस्तित्व-उपपत्त्यादाय पुन वधो सम्पत्तुष्टयमेव सारि मद्रुवो धेव ।

णिदाणिदा-पयलापयला-यीणगिद्धि-अणताणुवधिकोह-माण-
माया-लोम-इत्येवेद तिरिक्खाउ-तिरिक्खगह-वउसठाण-वउसघहण-
तिरिक्खगहपाओग्गाणुपुब्बि उज्जोव अप्ससत्यविहायगह दुभग-दुस्सर
अणादेज्ज-णीवागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ ७ ॥

एवं पुन्यसुचं देसामासिचं च । तेण किं मिच्छाद्दी वधो किं सासपसम्माद्दी
वधो किं सम्मामिच्छाद्दी वधो एवं गत्तु किमप्येगी किं सिद्धो वधो, निम्मेदिं सम्मान
वधो पुनं वच्छिन्नं, किमुदो किं दो वि समं वोच्छिन्नं, एदावो किं सादएण वच्छति
किं परोदएण, किं सादय-परोदएण किं सांतरं वच्छति, किं गिरंतरं वच्छति, किं सांतर पिरंतरं
वच्छति, किं पच्छदि वच्छति, किं पच्छदि विगा वच्छति, किं गहसंजुचं वच्छति, किमगह
संजुचं वच्छति, कदिगदिया प्देसिं वधसामिणं होति, कदिगदिया न होति, किं वा वधद्वयं,
किं वरिमसमए वधो वोच्छिन्नं, किं पदममए, किमपदम-अपरिमसमए वधो वोच्छिन्नं, किं

विषयसं वधोऽप्युक्तं सम्मत्तं है । परन्तु यथास्ति और उच्यते प्रकृतियों का वध सर्व
गुणस्थानों में साति और मनुष्य ही होता है ।

निद्रानिद्रा, प्रवत्प्रवत्त स्त्यानष्टि, अनन्ताणुवन्धी क्रोध, मान, माया, लोम,
स्त्रीवेद, निर्यगायु, निर्यगति, चार सम्मान चार संहनन, निर्यगतिप्राप्त्यनुपूर्वी, उद्योत,
अप्रसक्तविहायेलनि, दुर्मम दुस्तर, अनन्तय और नीचगोत्र, इन प्रकृतियों का वध
है और वधेन अवन्धक ? ॥ ७ ॥

यह पूछना ही वचनसामान्य है । अतएव क्या मिच्छादि वन्धक है क्या सास-
पसम्मादि वन्धक है क्या सम्मामिच्छादि वन्धक है इस प्रकार जाकर क्या अवोपी
वन्धक है क्या मित्र वन्धक है, क्या इन कर्मों का वध पूर्व में व्युत्पिष्ट होता है क्या
उत्तर पूर्व में व्युत्पिष्ट होता है क्या दोसों साथ ही व्युत्पिष्ट होते हैं ये प्रकृतियों का
स्वातन्त्र्यसे वधती है क्या परस्परसे वधती है क्या स्वातन्त्र्य-परस्परसे वधती है, क्या
सास्तर वधती है क्या गिरन्तर वधती है क्या सास्तर गिरन्तर वधती है, क्या प्रत्ययोंसे
वधती है क्या विना प्रत्ययोंक वधती है, क्या गतिसेपुक्त वधती है क्या अगतिसेपुक्त
वधती है, इस कर्मोंक वन्धक स्वामी किन गतिसेपुक्त होते हैं व किन गतिसेपुक्त नहीं
होते, वन्धकस्वामी किन गतिसेपुक्त होते हैं व किन गतिसेपुक्त नहीं होते, वन्धक
समयसे वन्ध व्युत्पिष्ट होता है क्या अग्रयम वन्धक समयसे वन्ध व्युत्पिष्ट होता है

किमेदासि सादिओ वधो, किम्पादिओ, किं धुयो, किम्दुयो वधो ति ण्दाओ पुष्पमो एत्थ वदन्नाओ । एदासि पुष्पममुत्तरपरूषणद्रमुत्तरसुत्तं मणदि—

मिच्छाहट्टी सासणसम्माहट्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ८ ॥

एदं सामासियमुत्तं, सामितद्वानपरूषणगोरेण पुष्पसुत्तुद्विद्वसवत्परूषणादो । सामितमद्वानं च सुत्तादो वेष गन्धदि ति ण तेमित्तो वुच्चदे । किमेदासि वधो पुष्पं वोच्छिज्जदे, किमुदओ पुष्पं वोच्छिज्जदे, एदस्मवो वुच्चदे— धीमगिदितियस्स पुष्पं वधो वोच्छिज्जो, पम्प उदयस्स वोच्छेदो, सासणसम्मादिद्विचरिममए वधे किंते स्ते पम्प उवरि गतूण पमत्सज्जदस्मि उदयवोच्छेदोवत्तमादा । अफ्तापुवधिचठक्कत्तस्स वधोदया सम किद्वि, सासणसम्माहट्टिचरिममए एदेसि वधोदयाणं जुगय वोच्छेदसणादो । इत्थिवदस्स पुष्पं वधा पम्पा उदयो वोच्छिज्जो, सासणमि वधे वोच्छिज्जे पम्पा उवरि गतूण अणि यद्विद्वि उदयवोच्छेदो । एव तिरिक्काठ-तिरिक्खगाइ तिरिक्खगाइपाओगापुप्पि-उज्जोव

क्या इन प्रकृतियोंका सादिक बन्ध है क्या मनादिक बन्ध है क्या धृक् बन्ध है या क्या अग्रज बन्ध है नम प्रश्न य प्रश्न यहाँ करना चाहिये । इन प्रश्नोंका उत्तर कहनेके लिए भगवा सूत्र कहत है—

उपयुक्त प्रकृतियोंके मिथ्यादृष्टि और सायादनसम्यग्दृष्टि जीव बधक है । ये बधक है, श्रेय जीव अनन्यक है ॥ ८ ॥

यह ब्रह्मात्मक सूत्र है क्योंकि बन्धक स्वामित्व और अध्यात्मकी प्रकृति द्वारा वह पृच्छासूत्रमें उद्दिष्ट वध अर्थोंका निरूपण करता है । पम्पस्वामित्व और मम्पाव धृक् सूत्रस ही जाना जाता है अतः इन वान्तोक्क मर्थ यहाँ नहीं कहा जाता । 'क्या इनका बन्ध पहिले व्युत्पिच्छ होला है या उदय पहिले व्युत्पिच्छ होला है ? इसका मर्थ कहने है— मम्पावधृक् आह तीन प्रकृतियोंका पूर्वमें बन्ध व्युत्पिच्छ होता है तत्पश्चात् उदयक व्युत्पिच्छ होता है क्योंकि सामादनसम्यग्दृष्टिके कारण समयमें बन्धक नष्ट होनेपर पम्पात् ऊपर जाकर प्रमत्तमयतमें इनका उदयका व्युत्पिच्छ पाया जाता है । ममत्तानुबन्धितनु एयका बन्ध और उदय दोनों साथ नष्ट होत है क्योंकि, सामादनसम्यग्दृष्टिके कारण समयमें इनका बन्ध और उदयका एक साथ व्युत्पिच्छ होता जाता है । म्मीयदका पूर्वमें पम्प पम्पात् उदय व्युत्पिच्छ होता है क्योंकि, सामादनगुणस्थानमें बन्धक व्युत्पिच्छ होनेपर तत्पश्चात् ऊपर जाकर मज्झिदृष्टिऊपर गुणस्थानमें उदयका व्युत्पिच्छ होता है । इसी प्रकार तिरिगापु तिरिगाणि निरुपगतिप्रायोगवानुपूर्व उद्योत और नीचगाव प्रकृति

चतुसंश्लेष-चतुसंधान-उज्ज्वल अप्यमत्यविहायगदि-दूमग-दुस्तर भगवत्प्राप्तिसिद्धि
येदमेगो, सार्तरांधिषं पढि मेदामावादा । नीचागोत्रस्य तिरिक्तागदिमगा, तेउ-वाउककइएसु
सत्तमपुष्पिवेरइएसु च नीचागादस्य निर्तर चतुवलेमादा ।

किं पञ्चएहि बन्धति किं तेहि विना, एदस्सत्यो दुष्पदे— मिच्छइद्दि मिच्छउ-
संभम-कसाय-बोगसण्णइचदुहि मूलपञ्चएहि पयवणुत्तरपञ्चएहि दस-जट्टरसएगसम
संभविजइणुत्तमपञ्चएहि य एदाओ पयडीआ बंधदि । साम्पजसम्माइद्दि मिच्छयं माएण
तीहि मूलपञ्चएहि पचासुत्तरपञ्चएहि एगसमयसंभविदम सत्तारसजइणुत्तसपञ्चएहि य
एदाओ पयडीआ बंधदि । जवरि तिरिक्ताउजस्य वेउम्विमिस्स-कम्मइयपञ्चएहि विना
तेवण्य ओरास्मिमिस्सय च विना सत्तेनाउ पचया मिच्छइद्दि-साम्पजाम' होति ।

गइसंस्तुपुष्पए मत्तो दुष्पदे । त जहा — धीनगिद्धितिय-अपेतासुविचउत्तक
च मिच्छइद्दि चउगइसंस्तु संसयो विरयगइए विना तिगइसंस्तु चपइ । इत्थिमेव मिच्छ
इद्दि सासुणा च विरयगइए विना तिगइसंस्तु चपइ । तिरिक्ताउ-तिरिक्तागइ तिरिक्ता-

चार संस्त्यान चार संहमन उघोस अमत्तस्तविहायांगति दुर्भंग दुस्तर और
अमत्तय प्रकृतियां स्वीकृते समान हैं क्योंकि सत्तररग्नित्वक प्राप्ति इन प्रकृतियोंमें
कीयेइसे कार्य मेव नहीं है । नीचगात्र तिर्यग्गतिक समान हैं क्योंकि तेजःनायिक और
वायुकायिक तथा सत्तम धूमिरीक मारुत्तियोंमें नीचगोत्रका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

अब सुबोक्क प्रकृतियां क्या प्रत्ययोंसे बंधती हैं या क्या उनक बिना ? इसका
जय कहते हैं—मिष्पाइदि जीव मिष्पात्व मत्तयम कपाय और योग संज्ञावाले चार मूल
प्रत्ययोंसे पञ्चवम उत्तर प्रत्ययोंत तथा एक समयमें सम्मम हातेवाके दहा और जट्टर
अपण्य व जट्टर प्रत्ययोंसे इन प्रकृतियोंमें बंधते हैं । साम्पजसम्पणइदि मिष्पात्वका
छोइकर शय तीन मूल प्रत्ययोंसे पचास उत्तर प्रत्ययोंसे तथा एक समयमें सम्मम दहा
और सत्तर अण्य व जट्टर प्रत्ययोंसे इन प्रकृतियोंमें बंधते हैं । विशेष यह कि तिर्ब
गायुके वैदियिजमिअ और कर्मज कयपायक बिना मिष्पाइदिके तिरयम तथा वैदियिक
मिअ कर्मज और भीवारिजमिअक बिना सासत्तमसम्पणइदिके संताजीस प्रत्यय होते हैं ।

गतिसेयुक्क प्रत्यय उत्तर कहते हैं । यह इस प्रकार है—स्व्यावएहि भावि तीन
तथा अमत्तासुविचउत्तकके मिष्पाइदि जीव चारों गतिबोंसे संयुक्त मार सासात्तन
सम्पणइदि नरकगतिके बिना तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है १ स्वविदके मिष्पाइदि और
सासात्तनसम्पणइदि नरकगतिके बिना तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति

गहाभोम्मापुपुब्बि-उज्जेये मिच्छाद्दही सासणो च तिरिक्खगाइसंजुत्तं वधंति । चउसअण
चउसंघइणाणि मिच्छाद्दही सासणसम्माद्दही तिरिक्ख-मपुसगाइसंजुत्तं वधंति । अप्पसत्य-
विहायगाइ दुमग दुस्सर-अणदेज्ज पीचमोदाणि मिच्छाद्दही देवगर्हए विणा तिगइसंजुत्त, सासणो
देव-पिरयगर्हइ विणा दुगदिसंजुत्त वधदि ।

अदि गदिया सामिणा चि भुत्ते वीणगिद्धितिय-अणतापुवधिसउक्कदिपयईपं वधस्स
चउमाइमिच्छाद्दहि-सासणसम्मादिद्धिणो सामी । वधद्वानं सासणचरिमसमए वधवोच्छेदो च
सुचपिदिहो चि न पुणो बुच्चदे ।

किमेवासिं पयईण सादिभो वधवो चि पुच्छासवदो अत्थो बुच्चदे । तं जहा—
वीणगिद्धितिय अणतापुवधिसउक्कदिपयईपं वधो मिच्छाद्दहिदि सादिभो अणदिभो भुवो बद्धवो
च । सासणम्मि अणाइपुवेण विणा दुविययो । सेसानं पयईण वधो मिच्छाद्दहि-सासणैसु
सादिभो बद्धवो च ।

निदा-पयलाण को वधो को अवधो ? ॥ ९ ॥

एवं पुच्छसुच देसामासियं, तथेत्थ पुब्बिस्सपुच्छाभो सध्वाभो पुब्बिद्ध्वाभो ।

तिर्यग्गतिप्रयोग्यानुपूर्वी और लघोत्तको मिथ्यादृष्टि और सामान्यनमस्यगृहि तिर्यग्गतिसे
संयुक्त बांधते है । बार संस्थान और बार संहमनोंको मिथ्यादृष्टि और सासादन
सम्यग्गृहि तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसं संयुक्त बांधते हैं । अग्रशस्तयिहायोगति दुर्गम दुस्वर,
अमादय और लीचमोक्तको मिथ्यादृष्टि देवगतिक बिना तीन गतियोंसे संयुक्त और सामा
न्यसम्यग्गृहि देव व नरक गतिक बिना दो गतियोंसे संयुक्त बांधता है ।

जिन गतिबाध जीव स्वामी होते है ऐसा कहनेपर उत्तर कहते हैं—स्थान
शुद्धिचय और मनस्तानुबन्धिचतुष्क भावि प्रकृतियोंक बन्धके चारों गतियोंबन्धे मिथ्या
दृष्टि और सासादनसम्यग्गृहि स्वामी है । बन्धाध्यान और सामान्यनक चरम समयमें होमे
पासा बन्धाधुष्यन् स्वसे निर्दिष्ट है अतः उस फिरसे नहीं कहते ।

क्या इन प्रकृतियोंका साविक बन्ध है ? इस प्रश्नसे सम्यग् मर्यको कहते हैं ।
यह इस प्रकार है—स्थानशुद्धिचय और मनस्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध मिथ्यादृष्टि शुण
स्थानमें साविक, अमाविक, भुव और भुवव रूप होता है । सासादन शुणस्थानमें अनादि
और लुप्तक बिना दो प्रकारका होता है । दोय प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सामान्यन
बाधों शुणस्थानमें साविक व भुवव होता है ।

निदा और प्रचल प्रकृतियोंका कौन बन्धक है और कौन अवन्धक ? ॥ ९ ॥

यह पुच्छाम्ब दशामशोक है अनपच यहां सब पूर्वोक्त प्रश्न पूछना चाहिये ।

बीजागादाणि, सामयमि बंधवाच्छेदे ज्ञात् पञ्च उच्यते गतूय संश्रमंश्रमि उदय
वाच्छेदादा, निरिच्छाशुपुष्पाणि अमज्जदमम्मादिभिह उदययोच्छेदुवत्तमादो । एवं मज्जिम-
चदुमंश्रमि, मायणमि वंधे वन्के मने उचरि गतूय सज्जागिभिह उदयवाच्छेदा । एवं
पंच मज्जिमचदुमंश्रमि, मायणमि बंध वन्के सेने उचरि अममत-उचमतरुससु कमेप
दोष्ण दाष्णमुदयकतयमणो । एवं अणमन्वविहासगदीय, सामयमि वंधे वन्के सेने
उचरि मज्जागिभिह उदययोच्छेदादो । एवं दुमग मणोरेज्जाण वसन्त, सामयमि वंध वन्के
उचरि अमंजदमम्मादिभिह उदयवाच्छेदा । एवं दुस्सरस्म नि वतन्ते, सामयमि वंधे वन्के
सज्जागिकवत्तिभिह उदयवाच्छेदा ।

किं संपण्णं किं फलण्णं किमुमण्णं वज्जंति सि पुच्छए उत्तरं पुच्छे । तं जह-
वीणगिद्धितियमिच्छेदे निरिच्छाउजं निरिच्छाद चदुमंश्रमि चदुमंश्रमि निरिच्छ
यदिषामाम्माशुपुष्पि उज्जा मणम वनिहायगदिमंभाणुपबिचदुमं दुमग-दुस्सर मणोरेज्ज
बीजागादाणि च मिच्छादि-सामयमम्मादिणि सावण्ण नि परोदण्ण नि पंचंति, निरिहा

योंकि पूर्वमें बन्धन्युच्छिद्य होता है तत्पश्चात् उदयका व्युच्छिद्य होता है क्योंकि साम्या
जनगुणस्थानमें बन्धका व्युच्छिद्य हो जानपर पश्चात् ऊपर जाकर संपत्तासेयत गुणस्थानमें
उदयका व्युच्छिद्य होता है तथा निर्यग्गतप्रायाग्यानुपूर्वी उदयका व्युच्छिद्य असंपत्त
मन्वरादि शुक्लस्थानमें पाया जाता है । इसी प्रकार मरण्य बार संस्थामाका पूर्वमें बन्ध
व्युच्छिद्य होता है तत्पश्चात् उदयका व्युच्छिद्य होता है क्योंकि साम्याजन गुणस्थानमें
बन्ध का एक जानपर ऊपर जाकर संपत्तासेयती गुणस्थानमें उदयका व्युच्छिद्य होता है ।
इसी प्रकार ही मरण्य बार संहनन है क्योंकि, साम्याजनगुणस्थानमें इनक बन्धक एक
जानपर ऊपर अग्रजसंपत्त भात उपगाम्यरुपाय गुणस्थानाम क्रमस वा वा संहननोका
उदयमय द्वारा होता है । इसी प्रकार अग्रजान्ता उदायात्मिकता भी कथन करना चाहिय
क्योंकि साम्याजनगुणस्थानमें बन्धक एक जानपर ऊपर संपत्तासेयतीमें उदयका व्युच्छिद्य
होता है । इसी प्रकार दुमग मंश्र मनादयका कथन करना चाहिय क्योंकि साम्याजनमें
बन्धक एक जानपर ऊपर असंपत्तमन्वरादिम उदयका व्युच्छिद्य होता है । इसी प्रकार
दुस्सरस्म भी कहना चाहिय क्योंकि साम्याजनमें बन्धक एक जानपर संपत्तासेयतीमें
उदयका व्युच्छिद्य होता है ।

उत्तरं पुंश्रं मज्जिनियां कया स्यादयम कया पणायम वा कया इत्त पणाय उमयकपण
बंधनी है" इस प्रश्नका उत्तर कहल है । यह इस प्रकार है—स्थानपृष्ठिजप मंश्रय निर्य
गायु निर्यगति बार संस्थान बार संहनन निर्यगतिप्रायाग्यानुपूर्वी उदात अग्रजान्ता
पिदावागति अग्रजानुपमिचयनुच दुर्मय दुस्सर मनादय मीर मीरगाव इम मज्जिनियोंका
मिच्छादि भीर साम्याजनमन्वरादि म्मरायम मी भीर पणायम मी बांधन है क्योंकि

भावादा ।

किं सातर किं गिरतर किं सांतर गिरतर बब्बंति ति एदस्मघो बुब्बदे— थीण निदितियेमपताणुषविचउक्क च गिरतरे बब्बइ, धुववविताणे । इत्थिवेदो मिच्छइट्ठि-सासण सम्मादिट्ठिहि सातर बब्बइ, बभगद्धाए, खीणाए, पियमेण पडिवक्खपयईण बंधममवादो । तिरिस्खाउअं मिच्छइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिहि गिरतर बब्बइ, अट्ठाक्खण्ण बधम्म बक्कणा भावाण । निरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओगाणुपुप्पीओ सातर गिरतर बब्बंति ।

होदु सांतरवघो, पडिवक्खपयईण पधुवलमादो न गिरंतरवघो, तस्म करणाणु-
वलमादो ति सुत्ते बुब्बदे— न एम दोसा, तठक्कइय-वाउक्कइयमिच्छइट्ठिणं सत्तमपुववि
गेइयमिच्छइट्ठिण च मक्कपडिपद्धमकिल्लेमेण गिरतरवघोवलमादो । सामणमम्माइट्ठिणो दाणं
पयईणवेदासि कथं गिरंतरबंधया ? न, सत्तमपुवविमामणाण तिरिक्खगइं मोत्तुपण्णगइण वधा
भावादा ?

इममें कोइ बिगध नहीं ह ।

उक्त प्रवृत्तियों क्या सास्तर क्या निरस्तर या क्या सास्तर निरस्तर बंधनी हैं ?
इसका अर्थ कहना है—स्व्यानुवृत्तित्रय और मनस्सानुवृत्तिचतुष्क निरस्तर बंधनी हैं
क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी प्रवृत्तियाँ हैं । स्वीधक्का मिथ्याहृदि और सामादनमभ्यहृदि सास्तर
बांधन हैं क्योंकि बन्धककालक र्हाण हानेपर नियमन प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंका बन्ध सम्मथ
है । नियगायुधे मिथ्याहृदि और सामादनमभ्यहृदि निरस्तर बांधन हैं क्योंकि, अन्तर्धे
अयमे बन्धक रक्कनच समाय है । नियगाति और नियंगतिप्रायागयानुपूर्वीका सास्तर
निरस्तर बांधन हैं ।

शुक्र—प्रतिपक्षभूत प्रवृत्तियोंक बन्धकी उपलब्धि हानम सास्तर बन्ध मन् ही
हा किन्तु निरस्तर बन्ध नहीं हो सकता क्योंकि उसका कारणोंका समाय है ?

समाधान—इस शकाका उत्तर कहना है कि यह बार बार नहीं है क्योंकि
तेजकापिक और पायुकापिक मिथ्याहृदियों तथा ममम वृथिपीक भावकी मिथ्याहृदियोंक
मयम सम्बद्ध संहृगक कारण उक्त हैं। प्रवृत्तियोंका निरस्तर बन्ध पाया जाता है ।

शुक्र—सामादनमभ्यहृदि इस नामों प्रवृत्तियोंक निरस्तर बन्धक कैसा है ?

समाधान—यह दोषा ठीक नहीं क्योंकि ममम वृथिपीक सामादनमभ्यहृदियोंक
निर्यंगानिका छाहकर मयम भावयोंका बन्ध ही नहीं होता ।

१ अ-अपरा गिरि इति वाड ।

२ अ-आरौ इव बभग बभिव इति वा ।

चतुस्रस्य-चतुस्रस्य-उन्मोष-अपसरविद्यामगदि-दुस्र-दुस्तर अयादे-अपमिति
 वेदमंगा, मानरविच पडि भेदाभावात् । श्रीचागोदस्म तिरिक्तादिभगो, तेउ-वाउककइएसु
 यत्तमपुष्पिणरइएसु य पीचागादस्म किर्तरं चतुस्रस्य ।

किं पञ्चएदि पञ्चति किं तदि विजा एदस्सथो बुष्पद— मिष्मदिद्वि मिष्मत्ता
 सज्जम-कमाय योगमणिइचद्वि मूलपञ्चएदि पणवणुत्तरपञ्चएदि दस-भहारसएगसमय
 संमनिमइणुत्तरकस्मपञ्चएदि य एदाभो पयडीआ पचदि । सासपसम्माइद्वि मिष्मत्तं मात्त
 तीहि मूलपञ्चएदि पचासुत्तरपञ्चएदि एगममयसमविददस मत्तारसज्जइणुत्तरकस्मपञ्चएदि य
 एदाआ पयडीआ पचदि । बरि तिरिक्ताउअस्म वेउअियमिस्म-कम्मइयपञ्चएदि विष्प
 तेपण भोराटियमिस्मय च विजा ससत्ताउ पञ्चया मिष्मइद्वि-सासमाय' ह्येति ।

गमंनुत्तपुष्पाय अयो बुष्पदे । त अइ — श्रीचागिद्वितिय-अपेतापुष्पिणउअकं
 च मिष्मइद्वि चउगइमनुत्तं, सामया विरयगईण विजा तिगइसंनुत्तं चंभइ । इतिअवेदे मिष्म
 इद्वि सामया च विरयगईण विजा तिगइमनुत्तं चंभइ । तिरिक्ताउ-तिरिक्तागइ तिरिक्ता

चार संख्याय चार संख्याय उद्याय अमशास्त्रविद्यायागति बुष्पग दुस्तर भार
 अमाइय प्रहृतिया श्रीरक्ष समाम है कर्षोकि मत्तरवर्षिष्यत्तक मति इस प्रहृतिपौमे
 श्रीपक्षमे अइ मेह मही है । श्रीचागाव निर्यगति समाम है कर्षोकि, तज्जकापिक श्री
 चापुकापिक तथा मत्तम पृथिवीक मारुकिर्षोमे श्रीचागोवका निरन्तर बन्ध गाया जला है ।

अप मृषाव प्रहृतिया कया प्रत्ययोंस चंभती है या कया उअवे धिमा ? इसका
 अर्थ कहत है—मिष्याएदि जीव मिष्याय असेयम कराय और यात संघावाय चार मूल
 प्रत्ययवार पचवन उत्तर प्रत्ययाम तथा एक समयमें समय जानवाक बुदा भीर अठारह
 अल्प य उठार प्रत्ययोंस इस प्रहृतियाका बांधत है । सामावतसम्पदइ मिष्यायका
 उठार बार तीन मूल प्रत्ययोंस पचाय उत्तर प्रत्ययोंस तथा एक समयम समय बुदा
 भार सत्तर अल्प य उठार प्रत्ययोंस इस प्रहृतियाका बांधत है । पिडाप यह कि निर्ब
 गापुच बैबिबिचमिअ और चामेच अययागक पिना मिष्याएदि निर्यग तथा बैबिबिच
 मिअ चामेच और श्रीचागिचमिअक बिना सामावतसम्पदइ संतालीस प्रत्यय जान है ।

गतिर्ययुक्त प्रत्यय उअर कहत है । यह इस प्रकार है—म्यामगुयि यादि तीन
 तथा अमशानुर्षिष्यत्तुत्तका मिष्याएदि जीव चारों गतिपोंस र्ययुक्त और सामावत
 सम्पदइ तज्जगति क पिना तीन गतिपोंस र्ययुक्त बांधता है । श्रीरक्ष मिष्याएदि और
 चागावतसम्पदइ तज्जगति क पिना तीन गतिपोंस र्ययुक्त बांधता है । निर्यगायु निर्यगति

गइपाभोगाणुपुम्बि-उज्जोवे मिच्छइट्ठी सासणो च तिरिक्खगइसज्जुत्त वधति । चउसंयप
चउसंधइणापि मिच्छइट्ठी सासणसम्माइट्ठी तिरिक्ख-मणुसगइसज्जुत्त वधति । अप्सत्थ
विहायगइ दुमग दुस्सर-अणदेज्ज णीचागोदापि मिच्छइट्ठी देवगइए विणा तिगइसज्जुत्त, सासणो
देव-भिरयगइहि विणा दुगदिसज्जुत्त वधति ।

कदि गदिया सामिणा ति बुत्ते धीणगिदित्तिय अणताणुवधिवत्तककदिपयडीण वंधस्स
चउगइमिच्छइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिमो सामी । वधद्वरणं सासणचरिमसमए वंधवोच्छेदो च
सुखगिदित्तो ति ण पुणो वुच्चदे ।

किमदासि पयडीण सादिओ वंधओ ति पुच्छसवदो अत्थो पुच्छेद । तं जहा—
धीमगिदित्तिय अणताणुवधिवत्तककण वधो मिच्छइट्ठिद्वि सादिओ अणादिओ- धुवो बद्धवो
च । सासणम्मि अणाधुवेण विणा दुवियणो । सेमायं पयडीण वधो मिच्छइट्ठि-सासणसु
सादिओ बद्धवो च ।

णिहा-पयलण को वधो को अवधो ? ॥ ९ ॥

एदं पुच्छसुचं देसामासियं, तपस्य पुम्बिस्सपुच्छओ सज्जाओ पुच्छिद्वयाओ ।

तिर्यग्गतिप्रपाग्यानुपूर्वी और उद्योतको मिथ्याहृदि और सामान्यनसम्यग्हृदि तिर्यग्गतिमे
संयुक्त बांधते हैं । चार संन्यास और चार संहननोंको मिथ्याहृदि और सामान्यन
सम्यग्हृदि तिर्यग्गति च मनुष्यगतितसे संयुक्त बांधते हैं । अग्रशस्तविहायोगति दुर्मग दुस्पर,
अमात्र्य और नीचगोत्रको मिथ्याहृदि देवगतिके बिना तीन गतियोंसे संयुक्त और सामा
न्यनसम्यग्हृदि देव च नरक गतिके बिना दो गतियोंसे संयुक्त बांधता है ।

किनन गतिबाल जीव स्वामी हाते हैं ऐसा कहमेपर उत्तर कहते हैं—स्थान
पृथिव्य और अनन्तानुबन्धिबन्तुक भावि प्रकृतियोंके बन्धक चारों गतियोंबाले मिथ्या
हृदि और सामान्यनसम्यग्हृदि स्वामी हैं । बन्धावधाम और सामान्यनके बरम समयमें हमें
बाह्य बन्धधुच्छद स्वप्ने निर्विष्ट हैं अतः उम फिरने नहीं कहने ।

क्या इन प्रकृतियोंका सादिक बन्ध है ? इस प्रश्नस सम्यग्ध धर्मको कहते हैं ।
यह हम प्रश्नर है—स्थानपृथिव्य और अनन्तानुबन्धिबन्तुकका बन्ध मिथ्याहृदि गुण
स्थानमें सादिक, अनादिक भूच और अद्भुत रूप होता है । सामान्यन गुणस्थानमें अनादि
और भूचके बिना दो प्रकारका होता है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्याहृदि और सामान्यन
बानों गुणस्थानमें सादिक य अद्भुत होता है ।

निद्रा और प्रचय प्रकृतियोंका कैन बन्धक है और कैन अवन्धक ? ॥ ९ ॥

यह पृच्छाम्ब वदामासोक है अनण्य यहाँ सब पृषोक्त प्रश्न पूछना चाहिये ।

पुच्छिसिस्सस संदेहविनासपद्मुत्तरसुत्तं मण्दि

मिच्छाद्विष्टपद्मि जाव अपुव्वकरणपविट्टसुद्धिसज्जेसु उवसमा
स्ववा वधा । अपुव्वकरणद्वाए सत्तेज्जदिम भाग गतूण वधो
वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १० ॥

एदं पि देसामासियसुत्तं, वधद्वार्णं ऋषिसामि-असामिणो च अपुव्वकरणद्वाए अपरम
अवरिमसमए वधवाच्छेदं च मणिद्वज संसरथ सुधिय अद्वान्ता । अपुव्वकरणद्वाए परम
सत्तममगे निहा पयत्तए वधो धक्कदि ति एरथ वसव्वं । कथमेदं वध्मे ? परमगुरुपएसो ।

किमेदेसिं कम्मए वधो पुव्वं पच्छमं समुदण्ण वाच्छिज्जदि ति पुच्छए विच्छा
कीरेदे । एदसिं वधो पुव्वं विजत्तदि, पच्छमं उदयस्स वोच्छेदो, अपुव्वकरणद्वाए परमसत्तम
मगे वधे वधे संते उवरि गतूण सीलकमायस्स दुपरिमसमयमि उदयवोच्छेदो ।

किं सोदण्णं पोटण्णं सोदय-पटण्णं वन्धति ति पुच्छए वुत्थेदे— एदामो रो वि
पयडीमो सोदय-पटण्णं वन्धति, जाजांतरायपंचकस्सेव एदसिं पुत्रादयत्तामावाधो । किं

शोक्युत्तं शिष्यकं वन्धेद्वको वृत्तं करणकं छिये उत्तरं सूत्रं कइत है—

मिथ्याद्यसिं ठेकर अपूर्वकरणप्रविष्टसुद्धिसंयतोमं उपशमकं और रूपकं तत्त वन्धक
है । अपूर्वकरणकप्रत्येके सक्रयत्तवै माग जाकर वन्धस्युच्छेद होता है । ये वन्धक है, शेष
जीव अवन्धक है ॥ १० ॥

यह भी वेदामाशंक सूत्र है क्योंकि वह वन्धाध्यात वन्धस्वामी मस्वा भी तथ्या
अपूर्वकरणकप्रत्येके मप्रथम अक्षरम समयमें हामिवाक वन्धस्युच्छेदको कहकर शेष अर्थको
सूचित कर बचसिप्त है । अपूर्वकरणकप्रत्येके प्रथम वतम मागमें निद्रा और प्रवधा
प्रकृतियोंका वन्ध बंध जाता है, ऐसा पदार्थ कहना चाहिये ।

शक्य—यह कैसे जाता जाता है ?

समाधान—यह परम गुरुके उपदेशसे जाता जाता है ।

क्या हम दोनों कर्मोंका वन्ध उदयसे पूर्व पश्चात् अवध्या सायमें व्युत्थिज्ज होता
है ? इस प्रश्नका निर्णय करते हैं—इतका वन्ध पूर्वमें तप होता है तत्पश्चात् उदयका
व्युच्छेद होता है क्योंकि अपूर्वकरणकप्रत्येके प्रथम वतम मागमें वन्धके रक्त जानेपर
ऊपर जाकर सीलकमाय गुणस्थानके शिखरम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है ।

‘होम। कर्मं प्रकृतिषां क्या स्तोत्रं क्या परोक्षं वा क्या स्तोत्रं परोक्षसे वधती है ?’
इस प्रश्नका उत्तर कइत है—वे दोनों ही प्रकृतिषां स्तोत्रं परोक्षवत् वधती है क्योंकि, पांच
जानावरण और पांच जन्तुधायके समाप्त हो दोनों प्रकृतिषां व्युच्छेदका अभाव है ।

सत्तरं पिरंतरं सत्तर-पिरंतरं बन्धंति ? एदाभो पिरंतरं बन्धंति, सत्तेतात्तुयपयडीसु पादमेव । किं पन्थपदि वचदि ति पुन्मय वुन्चदे— मिच्छाद्वी चदुहि मूलपन्थपदि पन्वम्पणाणा समयुत्तरपन्थपदि दस अद्वागसपगसमयजहणुक्कत्सपन्थपदि, सासणो मिच्छसेण विजा तिहि मूलपन्थपदि पंचासुत्तरपन्थपदि दस सत्तरसपगसमयजहणुक्कत्सपन्थपदि, सम्मामिच्छाद्वी तिहि मूलपन्थपदि तेदात्तुत्तरपन्थपदि एगसमयपन्थ-सोत्सजहणुक्कत्सपन्थपदि, असंजदसम्माद्वी तिहि मूलपन्थपदि छेदात्तुत्तरपन्थपदि एगसमयपन्थ-सोत्सजहणुक्कत्सपन्थपदि, सजदासंजदां मिस्मा-संयेण सहिदकसाय जेगदोमूलपन्थपदि सत्तीसुत्तरपन्थपदि एगसमयपन्थ चोदसजहणुक्कत्सपन्थपदि, पमतसंजदो दोहि मूलपन्थपदि चदुवीसुत्तरपन्थपदि एगसमयपन्थ-सत्तजहणुक्कत्सपन्थपदि, अप्पमत्तसंजदो अप्पयक्कणो च दोहि मूलपन्थपदि वावीसुत्तरपन्थपदि एगसमयपन्थ सत्तजहणुक्कत्सपन्थपदि वचति ।

संज्ञ—उक्त दोनों प्रकृतियों क्या भ्रान्तर, निरन्तर या साम्प्रत-निरन्तर बंधती हैं?

समाधान—य दोनों प्रकृतियों निरन्तर बंधती हैं, क्योंकि, ये सैतालीस भूव प्रकृतियोंक अन्तर्गत हैं ।

‘य प्रकृतियां किम किम प्रत्ययोंसे बंधती हैं ?’ इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं—मिथ्या दृष्टि जीव वार मूल प्रत्ययोंसे पञ्चजन माना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्ययोंसे तथा द्वा और मठारह एक समय सम्बन्धी अर्धम्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे मित्रा एवं प्रबला प्रकृतियोंको बांधते हैं । भासात्तुसम्यग्दृष्टि मिथ्यात्वके बिना तीन मूल प्रत्ययोंसे पञ्चान उत्तर प्रत्ययोंसे तथा द्वा और सत्तरह एक समय सम्बन्धी अर्धम्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं । सम्मिमिथ्यादृष्टि तीन मूल प्रत्ययोंसे तैतालीस उत्तर प्रत्ययोंसे तथा एक समय सम्बन्धी मी व सोत्तह अर्धम्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं । मत्तपतसम्यग्दृष्टि तीन मूल प्रत्ययोंसे छयालीस उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्बन्धी मी और सोत्तह अर्धम्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं । संयतामंयत मिथ्र मत्तपम (संयमा संयम) के साथ करण एवं बोध रूप दो मूल प्रत्ययोंसे सैतीस उत्तर प्रत्ययोंसे तथा एक समय सम्बन्धी भाठ व चैत्तह अर्धम्य और उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं । प्रमत्तसंयत दो मूल प्रत्ययोंसे, चोरीस उत्तर प्रत्ययोंसे तथा एक समय सम्बन्धी पांच और सात अर्धम्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं । अमत्तसंयत और अपूर्वकरजगुणस्यामयती जीव वा मूल प्रत्ययोंसे चारिस उत्तर प्रत्ययोंसे तथा एक समय सम्बन्धी पांच और सात अर्धम्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बांधते हैं ।

ग्राहसंज्ञतर्कपुच्छाय परमो— मिच्छाहृदी चतुर्ग्राहसंज्ञतं, साम्यो विग्रहसंज्ञतं, सम्मामिच्छाहृदी वचसदसम्माहृदी इव-मनुस्समइमजुतं, उवरिमा देवग्राहसंज्ञतं मिहा-यपत्तया हो वि वंचति । कदिगदिया सामी, एदिस्स पुच्छाय बुद्धे— मिच्छाहृदी ससपमम्माहृदी सम्मामिच्छाहृदी वचसदसम्माहृदी चतुर्ग्राहा, दुग्दिसेवदासंजदा, उवरिमा मनुस्सपर्यया सामी । अद्वयं सुगम । वोप्पिप्पणपदमो वि सुगम । किं सादिमा वि पुच्छाय बुद्धे— मिच्छाहृदिमिहि मिहा-यपत्तयं वंचो मादिमां वजादिमो धुवो अद्वयो वि चटुवियप्पो । सासवाविगुणद्वयं विवियप्पो, बुवत्तामावावो । सेसं सुगम ।

साक्षादेदनीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ ११ ॥

वंचो वंचयो वि पत्तप्पो । एदं पुच्छासुतं देसामामिह, सामिपु छं पिहिसिद्धम सेम-पुच्छाविसयपिहिसाकवादा । तेजस्व सत्त्वपुच्छमो मिहिसिद्धिमावो । पुच्छिदसिस्समंमयपुच्छवइ-सुत्तसुत्तं मयदि—

गतिसंपुक्त वचसध्वान्धी प्रत्यक्षा वर्ध कहतु है— मिच्छाहृदि जीव चारों गतिर्गोले संयुक्त साक्षात्तनसम्परादि तीन गतिर्गोले संयुक्त सम्मामिच्छाहृदि और असेपत सम्परादि द्वेष्ट व मनुष्य गतिसे संयुक्त तथा उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त मिहा व प्रवक्षा दोनों प्रकृतिर्गोला बांधते हैं ।

किन्तु गतिर्गोलाके जीव वक्त दोनों प्रकृतियाँ स्वामी हैं ? इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं— मिच्छाहृदि, साक्षात्तनसम्परादि, सम्मामिच्छाहृदि और असेपतसम्परादि चारों गतिर्गोलाके दो गतिर्गोलाके संपत्तासंपत्त तथा उपरिम जीव मनुष्यगतिर्गोले स्वामी प्राप्त हैं । वचसाध्वान्ध सुगम है । चरम समयाविरूप वच्य मुच्छिप्रमवेश भी सुगम है । वक्त प्रकृतिर्गोला वच्य क्या सावि है ? इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं— मिच्छाहृदि गुणस्थानमें मित्रा और प्रवक्षा प्रकृतिर्गोला वच्य साविक, वमाविक भुव और मनुष्य इत्ये प्रकार चारों लच्छका होता है । साक्षात्तनादि गुणस्थानोंमें भुव वच्यके व होवेश होय तीन प्रकारका वच्य होता है । होय स्वार्थ सुगम है ।

साक्षादेदनीयक कौन वच्यक और कौन अवच्यक है ? ॥ ११ ॥

वच्य हावसे वच्यक रूप मर्त्य प्रहल करना चाहिये । यह पुच्छासुत देसामार्थक है क्योंकि, वह स्वामीविरूपक पुच्छाका निर्देश करके होय पुच्छाविरूपक निर्देश नहीं करता । इसादिप यहां सब पुच्छामार्थक निर्देश करना चाहिये । हावबुक्त शिष्यके संशयको दूर करनेक किये उत्तर मूत्र कहते हैं—

मिच्छाद्विष्टिपुष्टि जाव सजोगिकेवलि ति वधा । सजोगि
केवलिअद्वाए चरिमसमय गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा,
अवसेसा अवधा ॥ १२ ॥

एवं पि सुखं देसामासियं, सामित्तमद्वाणं वधविणासद्वाणं च मणिद्विष्टिपुष्टिमत्थापणं
गिरिमादो । तेभिरेवेति परवृत्त्या करिदे । तं जहा— एतस्स वधो पुण्यमुदयो पञ्चम
वोच्छिज्जदि, सजोगिचरिमसमये वधे वोच्छिज्जणं सते पञ्चम सजोगिचरिमसमये उदयवोच्छेदादो ।
सादावदनीय मिच्छाद्विष्टिपुष्टि जाव सजोगिकेवलि ति सोदणं परोदणं वि बन्धदि,
सादावदनीयं परावसिदसणादो, म-परोदणं वि वधविरोहमावादो च । मिच्छाद्विष्टिपुष्टि
जाव पमत्तो ति सांतरो वधा, तत्थ पडिवक्खपयडीए वधसंमवादो । उवरि गिरित्तो,
पडिवक्खपयडीए वधामावादो । जम्हि जम्हि गुणद्विष्टि अत्थिया अत्थिया मूल्यवया पाणा-
समयउत्तरपञ्चया एगसमयवहणुक्कत्तसपञ्चया च बुत्ता तापि गुणद्विष्टिपुष्टि तत्तिपदि
पचपदि सादावदनीयं वधति ।

मिथ्यावृष्टि सेकर सयागिकवली तक सातावदनीयके बन्धक है । सयोगिकेवलिमत्तके
अन्तिम समयका प्राप्त होकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, क्षप जीव मध्वक
है ॥ १२ ॥

यह भी सूत्र वराहमिहिक है क्योंकि यह स्वामिन्ध बन्धाध्याय और बन्धविनाश
स्थानको बहकर अन्य भयोंका निर्देश नहीं करता । इस कारण अन्य भयोंकी प्रकृपणा
करत है । वह इस प्रकार है— सातावेदनीयका बन्ध पूर्वम भार उद्य पदवात् व्युच्छिन्न
होता है क्योंकि सयागिकवलीक अन्तिम समयमें पञ्चक व्युच्छिन्न हानपर पीछ भयाग
केवलीक अन्तिम समयमें उद्यका व्युच्छिन्न होता है । सातावेदनीय मिथ्यावृष्टि सेकर
सयागिकवली तक स्थान्यम और परावसने भी बंधता है क्योंकि यहाँ साता और
मसाताक उद्यमें परिवर्तन देखा जाता है तथा स्प परावसस बन्ध हममें कार विरोध भी
नहीं है । मिथ्यावृष्टिसे लकर प्रमत्त गुणस्थान तक सातावेदनीयका बन्ध साम्तर है
क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रवृत्ति (ममाता) का बन्ध सम्मथ है । प्रमत्त गुणस्थानम ऊपर
मिगत्तर बन्ध है क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष प्रवृत्ति बन्धका अभाष है । जिन जिन गुणस्थानमें
जितन जितन मूत्र प्रत्यय जाना समय सम्पन्धी उत्तर प्रत्यय और एक समय सम्पन्धी अघन्य
प उत्तर प्रत्यय बह गये हैं, ये गुणस्थान उत्तम प्रत्ययोंस सातावेदनीयका बांधत हैं ।

मिच्छाद्वि विरयमइए बिणा तिगइमंजुतं । अप्यसत्थाए तिरिक्सगइए सह कर्षं
सहबंघो ? न, विरयमई व भवंतिअप्यसम्भत्तामादाओ । एव ससजो बि । सम्मामिच्छाद्वि
भवंतदसम्माद्वि दुगइमंजुतं वंघंति विरय-तिरिक्समइए बिणा । उवरिमा दबगइतंजुतं ।
अपुम्भकरणस चरिमसत्तमागणहुडि उवरि भगदिसंजुतं वंघंति । मिच्छाद्वि-सामपसम्माद्वि
सम्मामिच्छाद्वि-भवंतदसम्माद्विजो अहुगदिया, दुगदिसंजुतंभंज्जा साम्भो, सेमा मजुम-
गरीए वेव । वंघदावं वंघवोच्छेदद्वयं व सुममं सुतुछदा । सम्भेसु गुणद्वयसु सत्ता-
वदपीसस वंघो सप्ति-अद्वुवा, सत्तासत्तावं पणवत्तसत्तुवेण वेवदो ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग अथिर असुह-अजसकित्तिणामाण
को वधो को अवधो ? ॥ १३ ॥

एवं पुच्छसुचं हेमामासियं, तपस्य मध्यपुच्छमा कम्पय्यामा । अवधा, वाम्भिकिय

मिच्छाद्वि जीव नरकगतिक बिना तीन गतिपोंस संयुक्त सातावेदणीयक
बांधते हैं ।

उक्त—अप्रशस्त विधगगतिक साय कैस सातावेदणीयक बन्ध होता स-मव है ?

समाधान—महाँ, क्योंकि तिर्बमाति नरकगतिक समान अत्यन्त अप्रशस्त महाँ है ।

इसी प्रकार सातावेदनीयगद्वि मी तीन गतिपोंसे संयुक्त सातावेदणीयके
बांधते हैं । सम्भमिच्छाद्वि और भवंतदसम्भगद्वि नरक और तिरिक्सगतिक बिना दो
गतिपोंसे संयुक्त बांधते हैं । उपरिम और वंघगतिसे संयुक्त बांधते हैं । अपूर्वद्वयके
अन्तिम सत्तम भागसे छेकर ऊपरके जीव भगदिसंयुक्त बांधते हैं । मिच्छाद्वि, साता-
वेदनीयगद्वि, सम्भमिच्छाद्वि एवं भवंतदसम्भगद्वि चारों गतिपोंवाले तथा दो गतिपों-
वाले संबत्तासंयत स्वामी हैं । बाप जीव मनुष्यगतिके ही स्वामी हैं । बन्धाधान और
बन्धपुच्छद्वयान सूत्रोक्त इन्हेंसे सुगम है । सब गुणस्वामीमें साता और असाताक
परिवर्तित बन्ध होनेसे सातावेदनीयक बन्ध साधि और मजुह है ।

असातावेदनीय, अस्ति, साक, अस्थिर, मजुम और अयशकिति नामकमक कीन
बन्धक और कीन अकन्धक है ? ॥ १३ ॥

यह पूछाएव वेदामरीक है इसलिये यहाँ छव मन्त्रोंसे करना चाहिये । अथवा

सुत्तमेदमिदि दृष्टव्व । तण्णिण्णयअणणइसुत्तरसुत्त मणणि —

मिच्छादिद्विगृह्णहि जाव पमत्तसज्जदा वधा । एदे वधा, अवसेसा
अवधा ॥ १४ ॥

एद देसामामिय सुत्तं, पुच्छिद्वन्थापमगदम छिविदूण अब्बहाणादा । तण्णेण सुहदत्थाप
अरपपरूवणा करिदे । असादावेदर्णीयस्स पुम्भं वधा उदमो पच्छा वाप्पिण्णो, पमत्तसज्जदमि
अवधोच्छेदे स्ति पच्छा अजोगिचरिमसमयमि उदयवोच्छेदादो । एवमरदि-सोगार्णं, पमत्त
सज्जदमि वधं जइ मंत अपुम्भचरिमसमयमि उदयवोच्छेदादो । अथिर-असुहाण वि
एव वध वत्तम्भं, पमत्तमि वधे विण्णे मज्जागिचरिमसमयमि उदयवोच्छेदादो । अजसमिणीए
पुप्फमुदमो वोप्पिअन्नि पच्छा वधो, असज्जदमम्मानिद्विहि उदय जइ पच्छा पमत्तसज्जदमि
अवधोच्छेदादो ।

असादावेदर्णीय अरदि-सागा मोदय पगदएहि वन्मति, उदयम्य पुवत्तमावादा ।

यह भाषाका सूत्र है ऐसा समझना चाहिय । उन्मक निश्चयात्पादनाय उत्तर सूत्र कहत हैं—

मिप्प्यादधिम लकण प्रमत्तसंयत तक वन्धक ई । य वन्धक ई, शेष जीव अमन्धक
है ॥ १४ ॥

यह दशामात्रक सूत्र है क्योंकि, यह पूछ हुए अर्थोंक एक दशका छुकर अव
स्थित ह । इस कारण इसक छारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा भी जानी है । असातावेद
नीयका पूर्वमें बन्ध भार पड्यान् उदय व्युत्पिछ हला है क्योंकि प्रमत्तगुणस्थानमें
बन्धव्युत्पिछ हाजानपर पीछ अवोक्तकर्मकी अन्तिम समयमें उदयका व्युत्पिछ हाता है ।
इसी प्रकार अरति भीर दावका वन्ध पूर्वमें भीर उदय पड्यान् व्युत्पिछ होता है क्योंकि,
प्रमत्तसंयतमें बन्धक मर हाजानपर पीछ अपूपकर्मक आन्तम समयमें उदयका व्युत्पिछ
हाता है । अस्तिअ भीर अशुभ प्रवृत्तियोंका भी इसी प्रकार ही बन्धावयवव्युत्पिछ कहना
चाहिय क्योंकि प्रमत्तसंयतमें बन्धक मर हाजपर सयागकर्मकी अन्तिम समयमें उदयका
व्युत्पिछ हाता है । अयजकर्मिका पूर्वमें उदय व्युत्पिछ हाता ह पड्यान् बन्ध
क्योंकि अमंयतमम्यदधि गुणस्थानमें उदयक मर हाजानपर पीछ प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें
बन्धका व्युत्पिछ हाता है ।

असातावेदर्णीय अरति भीर दाव प्रवृत्तियां क्वादय पगदयत वंधनी है क्योंकि

अ भाषाया निवर्तकः इति वा ।

मिथ्यादृष्टि मिरयगृह्य विना विगृह्यसंयुतं । अप्यस्यार्थे तिरस्त्रिगृह्य सह कथं सादृश्या ? न, मिरयगृह्य व अक्षतियध्वन्यमयतामात्रादौ । एव समस्यो वि । सम्मामिथ्यादृष्टि असंयुतसम्मादृष्टि दुर्गमसंयुतं बंधति मिरय-तिरस्त्रिगृह्य विना । उपनिमा देवगृह्यसंयुतं । अपूर्णकर्मस्य परिमसत्तमभागप्रादृष्टि उचरि अगदिसंयुतं बंधति । मिथ्यादृष्टि-सास्यसम्मादृष्टि-सम्मामिथ्यादृष्टि-असंयुतसम्मादृष्टियो अगुदिया, दुर्गदिसंयुतसंयुता मामिचो, संसा मनु-गरीए येव । पंचदश बंधवोच्छेददृष्ट्यं च सुगमं सुपुतादो । सन्धेसु गुणदृष्टेसु सादा-वर्णीयस्य पंचा सादि-अदुवा, मयासादृश्यं परवत्तनमरूपं बंधता ।

असादावेदणीय अरदि-सोग-अधिर असुह-अजसकितिणामाणं
को यधो को अयधो ? ॥ १३ ॥

एह पुण्यसुतं देसाम्मामिचं तथैव मय्यपुण्यमा कथय्याओ । अपवा, अम्येकिय

मिथ्यादृष्टि जीव नरकगतिके विना तीन गतिपोंस संयुक्त सातावदनीयका बंधते है ।

शुद्ध—अमशस्त्र तिर्यग्गतिः साध केसं नासावेदनीयका बन्ध होना ल मय है ।

समाधान—नहीं क्योंकि तिर्यग्गतिः समान अत्यन्त अमशस्त्र नहीं है ।

इसी प्रकार सासात्तनसम्मादृष्टि मी तीन गतिपोंसे संयुक्त सातावदनीयका बंधते है । सम्मामिथ्यादृष्टि और असंयुतसम्मादृष्टि नरक और तिर्यग्गतिके विना दो गतिपोंस संयुक्त बंधते है । उपनिमा जीव देवगतिसं संयुक्त बंधते है । अपूर्णकर्मस्य परिमसत्तम भागसं मेकर ऊपरक जीव अगदिसंयुक्त बंधते है । मिथ्यादृष्टि, सासा-दनसम्मादृष्टि, सम्मामिथ्यादृष्टि एवं असंयुतसम्मादृष्टि चारों गतिबंधाळ तथा दो गतिपों वाले संबंधासंयुत स्वामी है । शाय जीव मनुष्यगणिक ही स्वामी है । बन्धाप्याम और बन्धनुच्छेदस्यान स्वाक हानिसे सुगम है । सब गुणध्वन्योमे साता और असाताका परिचरित बन्ध हानिसे सातावेदनीयका बन्ध सादि और अशुद्ध है ।

असादावेदनीय अरति शोक, अम्भिर, अनुम और मयसर्वाणि नामकमका केन बन्धक और केन अबन्धक है ? ॥ १३ ॥

एह पुण्यसुतं देसाम्मामिचं है इसलिये यहां सब मर्षाका करना चाहिये । अथवा

सुखमेवमिदि ददृश्व । तज्जिण्णययज्जण्हमुत्तरसुख मणन्नि —

मिच्छादिद्विषहृदि जाव पमत्तसजदा वधा । एदे वधा, अवसेसा
अवधा ॥ १४ ॥

एद देसामामिय सुतं, पुष्पिच्छाणमगदम छिन्दिण अवद्राणादां । तपदेण सुहद याम
अत्थपरूषणा करिदे । अमादवेदणीयम्स पुष्पं वंधो उदयो पच्छ बोष्पिण्णो, पमत्तसज्जमि
बंधवोच्छदे सित पच्छ अज्जोगिचरिमसमयमि उदयवोच्छेदादो । एवमरति-सोगार्थं, पमत्त
सज्जमि वधे गह मंत अपुष्पचरिमसमयमि उदयवोच्छेदादां । अधिर-असुहाण पि
एव वध वत्तथं, पमत्तमि वंधे विणट्ट सज्जागिचरिममयमि उदयवोच्छेदादो । अमसगिस्सीप
पुष्पमुदयो बोष्पिच्छत्रि पच्छ वंधो, असज्जमम्मादिट्ठिदि उदप गह पच्छ पमत्तमंज्जमि
बंधवोच्छेदादो ।

असादनेदर्पाय-अग्नि-सागा मोक्ष्य पगदर्शहं वज्रमिति, उदयस्य ध्रुवतामावादा ।

यह भाषाका मूल है यन्मा समग्रमा चाहिये। उसका निरूपणपादमाय उत्तर मूल कहत हैं—

मिथ्याचक्षुस्मि लक्षणं प्रमत्तमयतं तदा बाधकं ह । यं बाधकं ह, शेषं जीवि मया बाधकं
ह ॥ १४ ॥

यह दशामर्शक सूत्र है क्योंकि, वह पूछे हुए मर्शक एक दशका मुकर भव
स्थित है। इस कारण इसका उद्देश्य सुचित मर्शकी प्रकृषणा की जानी है। असाधारण
मीषका पूर्वमे बन्ध मीर पञ्चात् उद्भूय भुविष्ठ हाता है क्योंकि, प्रमत्तगुणस्थानमे
बन्धभुविष्ठ हाजानपर पीछे मर्शककर्मकी अन्तिम समयमे उद्भूय भुविष्ठ हाता है।
इसी प्रकार भरति मीर शोकका बन्ध पूर्वमे मीर उद्भूय पञ्चात् भुविष्ठ हाता है क्योंकि
प्रमत्तस्थानमे बन्धक नष्ट हाजानपर पीछे मर्शककर्मकी अन्तिम समयमे उद्भूयका भुविष्ठ
हाता है। अस्थिर मीर भुविष्ठ प्रवृत्तियोंका मीर इसी प्रकार ही बन्धाव्यभुविष्ठ कहमा
काहिय क्योंकि प्रमत्तस्थानमे बन्धक नष्ट हाजानपर स्यागाकर्मकी अन्तिम समयमे उद्भूयका
भुविष्ठ हाता है। असाधारणपूर्वमे उद्भूय भुविष्ठ हाता है पञ्चात् बन्ध
क्योंकि अमत्तस्थानमे उद्भूयक नष्ट हाजानपर पीछे प्रमत्तस्थान गुणस्थानमे
बन्धका भुविष्ठ हाता है।

अमलासुदीप मग्नि भीम नाक महर्षिषा स्थापय परादयन संघर्षा हे कथोक्ति

एवमवसक्तिर्हि वि, उच्यते अद्वयतन्त्रेण भवामावादा । जवरि सज्जडासज्जदप्यद्वि सवरि
 परित्पयेव वेवो, तत्त्व असक्तिरिति मोक्षाय अवराण उदमाभावात् । अथिर-असुहाण सोदप्यव
 वेवो, धुवोदयत्वात् । एदासि सम्प पयडीयं मिच्छाद्विष्टिप्यद्वि क्त्सु वि गुणहायेसु सांतेय
 वेवो । कुरो ? एदासि पडिवक्खपयडीयमेव वेववाच्छेदमावादा । जाभाकरणादिसेत्सपयडीयं
 वे पयया प्फुविदा एदसु क्त्सु गुणहायेसु तेहि च पयचएहि एदाया क्त्सपयडीया वम्हति ।
 असद-अदि-संगे मिच्छाद्वि चउगइसंजुत्त, सासणा निरयगइं मोत्तुं तिगइसजुत्त, सम्मा-
 मिच्छाद्वि असज्जदसम्मादिद्विणा देव-भगुमगइसंजुत्त, उवरिमा देवगइसजुत्त वेवति । एव
 अथिर असुप-अवसक्तिर्हि भवामावादा । चउगइमिच्छाद्वि-सासणसम्मादिद्वि-सम्मादिमिच्छाद्वि
 असज्जदसम्मादिद्विणा सामी । इगइसंजदसंजद सामी । पमत्तसेज्जदा भगुसा चव । वेवद्याप
 वभवोच्छेदद्वयं च सुगमं । एतावो छ वि पयडीयो वेवेण सादि भदुवाओ ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-णिरयाउ णिरयगइ एहदिय-वेहदिय-तीह-
 दिय-चउरिंदियजादि-हुदसठाण-असपत्तसेवट्टसरीरसघट्टण णिरयगइ-

इतच्छ उच्यते नृव नही है । इसी प्रकार अवशर्कति भी स्वात्म्य परोक्षसे संबंधी है क्योंकि,
 उच्यते अत्रुवतायै अपक्षा इमं उक्त तीनों प्रकृतियोंसे कार्य मेव नहीं है । विराय
 इतत्ता है कि संबतासंयतन संकम भाग इसका वक्ष्य परोक्षसे ही होता है क्योंकि, वहाँ
 यशस्वीर्तिका छावकर अवशर्कतिरुच्य उच्य नहीं रहता । अस्थिर और अशुभ प्रकृतियोंका
 वक्ष्य स्वल्पसे ही होता है क्योंकि, व अवशर्कती प्रकृतियाँ हैं । इन छहों प्रकृतियोंका मिथ्या-
 दृष्टि भावि छह गुणस्यानामै वान्तर वक्ष्य होता है । इसका कारण यह है कि यहाँ इनकी
 प्रतिपक्ष प्रकृतियाँ वक्ष्य-पुच्छवक्ष्य अभाव है । आनायरभावि सासह प्रकृतियाँ आ प्रत्यय
 इन छह गुणस्यानामै कह गये हैं उन्हीं प्रत्ययान ही ये छह प्रकृतियाँ संबंधी हैं । असत्ता-
 कर्त्तव्य भवति और शाक प्रकृतियोंके मिथ्यादृष्टि जीव चारों गतियोंसे संयुक्त सामा
 वसत्त्वगदृष्टि मरकगतिव्य छावकर तीन गतियोंसे संयुक्त सम्भगिमिथ्यादृष्टि और असंयत
 लम्पगदृष्टि वक्ष्य मनुष्य गतियामें संयुक्त तथा उपरिम जीव दशगतिव्य संयुक्त बांधते हैं ।
 इसी प्रकार अस्थिर अशुभ और अवशर्कति प्रकृतियोंका भी गतिमंयुक्त वक्ष्य ज्ञानता
 कार्यव्य क्योंकि उनसे इनका व र भव नहीं है । चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सामावत
 सत्यगदृष्टि सम्भगिमिथ्यादृष्टि और असंयतलम्पगदृष्टि क्यामी हैं । इन गतियोंके संयता-
 संयत क्यामी हैं । प्रमत्तमेवत मनुष्य ही क्यामी जान है । वक्ष्यावक्ष्य और वक्ष्यपुच्छ
 क्याम सुगम है । ये छहों प्रकृतियाँ वक्ष्यन सादि एवं अत्रय हैं ।

मिथ्यात्व, नर्तमरूपेण नरकयु नरकमति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुष्टिन्द्रिय
 जानि, हुण्डमस्थान, अर्धशास्त्रमृष्टिकर्महनन, नरकगतिप्राप्त्यानुपत्ती, आनाय, म्यावर,

पाओग्गाणुपुब्बि-आदाव थावर-सुहुम-अपञ्जत्त-साहारणसरीरणामाणं
को वधो को अवधो ? ॥ १५ ॥

एह पुच्छासुत्तं देसामासिय, तेषेत्थ सन्वपुच्छाओ कयप्वाओ । पुच्छिदसिस्सस्स
संसयणिणासणद्धसुत्तसुत्त मणदि—

मिच्छाइही वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १६ ॥

एह देसामासियसुत्तं, सामित्तद्वापाप दोण्ण चेव परूवणाओ । तेषेत्थेण सुइदत्थाण
परूवण कीरदे— मिच्छत्तस्स वधोदया सम वोच्छिज्जति, मिच्छाइहिचरिमसमए वधोदयवोच्छेद
दंसणाओ । एइदिय-वीइदिय-त्तीइदिय चउरिंदियजादि आदाव थावर-सुहुम-अपञ्जत्त-साहारण
सरीरण मिच्छत्तमगो, मिच्छाइहिमिह वधोदयवोच्छेद पडि एदासि मिच्छत्तेण सह भेदामावाओ ।
अवसयवदस्स पुब्ब वधवोच्छेदो पच्छ उदयस्स, मिच्छाइहिमिह वधे मत्ते सत्ते पच्छ अपि
यहिमिह उदयवोच्छेदाओ । एव गिरयाउ-गिरयागइपाओग्गाणुपुब्बिणामाण वसत्थं, मिच्छाइहिमिह

सुम्म, अपयात्त और साधारणसरीर नामकमकर कौन बन्धक है और कौन अबन्धक है ?
॥ १५ ॥

यह पुच्छामूल ब्रह्मामर्शक है इसलिये यहां पूर्वोक्त सब भक्तोंको कहना चाहिये ।
पूछनवाले शिष्यका भ्रमय मष्ट करनेक लिये उत्तर स्पष्ट कहते हैं—

मिध्याहृष्टि जीव बन्धक है । ये बन्धक हैं, क्षण जीव अबन्धक है ॥ १६ ॥

यह ब्रह्मामर्शक मूल है क्योंकि, वह बन्धस्वामित्व और बन्धाप्याम इन दोनोंका
ही प्ररूपण करता है । इस कारण इसमें सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं—मिध्यात्व
महत्तिका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युत्पिच्छ हात हैं क्योंकि मिध्याहृष्टि गुणस्थानके
अन्तिम समयमें इसक बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । एके भ्रिय क्षिप्रिय
क्षेत्रिय क्षुद्रिय क्षुद्रिय जाति माताप स्यावर, सुहम अपर्याम और साधारणसरीर
महत्तियोक्त बन्धोदयव्युच्छेद मिध्यात्व महत्तिक ही समान है क्योंकि मिध्याहृष्टि गुणस्थानमें
होनेवाले बन्धोदयव्युच्छेदके प्रति हमका मिध्यात्वके साथ कोई भेद नहीं है । मनुसकबंधका
पूर्वमें बन्धव्युच्छेद और पश्चात् उदयका व्युच्छेद होता है क्योंकि, मिध्याहृष्टि गुणस्थानमें
बन्धके मष्ट होजानेपर पीछे अभिहृष्टिकरण गुणस्थानमें उदयका व्युच्छेद होता है । इसी
प्रकार मारकापु और मरकगतिमाय, ग्यानुपूर्वी नामकमकरा बन्धोदयव्युच्छेद कहना चाहिये
क्योंकि, मिध्याहृष्टि गुणस्थानमें बन्धके मष्ट होजानेपर पीछे भ्रमयनसम्यहृष्टि गुणस्थानमें

बन्धे बद्धे संते पञ्च अमंजइसम्माद्विदि उदयवाग्गेदादो । एव हुण्डसंयण-असंपत्तेवह-
सपिरसंपद्वार्त्तं पि बत्तम्, मिच्छाद्विदि बन्धे सिद्धे मते पञ्च महाकमेव सज्जमिकेवति-
अपमसर्मज्जेसु उदयवाग्गेदादो ।

मिच्छतस्स सोदएमेव बन्धो । भियाउ विरमइ-विरमइपाभोगमासुपुम्बिआमाओ ए-
दएमेव बन्धति, सोदएण सगवस्स विरोहादो । पणुमयवेह-एईदिय बीरदिय-तीईदिय-चउरि
दियवादि-हुण्डसंयण असंपत्तेवहसपिरसंपद्व-अत्ताव-धाव-सुहुम-अपग्गत्त-माहारममरिअमि
सोदय-सोदएद्वि बन्धति, उमयथा वि विरोहामादाओ ।

मिच्छत भियाउअ प विरंतरवधिओ, धुववधितादा अडाकस्सएण वधविआमा-
मादाओ । अवसेससम्पपयीओ सांतरे बन्धति, तामि पडिक्कस्सपयडिबवमंमवाओ ।

बहुदि मूलीएवद्वि पंचवंचाममापासमयउत्तरपएवद्वि इम अहारसएणममयइएण-
कस्सपएवद्वि य मिच्छाद्वि पदाओ पयडीओ बंध । बवति वेठविय-वेठवियमित्स-
आरत्तियमित्स-कम्माइयएवद्वि विआ एगवंचामपएवद्वि भियाउअ वचइ पि बत्तम् । एवं

इतक उदयका एवच्छेद हाता है । इसी प्रकार हुण्डसंस्थान और असंपातसुपादिकासंज्ञक
भी कहना चाहिये क्योंकि मिच्छाद्वि गुणस्थानमें बन्धक नष्ट होजायेपर पीछे क्या-
कामसे उपयोगकेवली और अपमसमयन गुणस्थानमें इतक उदयका एवच्छेद होता है ।

मिच्छात्वका स्वोदयस ही बन्ध हाता है । नारकपु जरकमाति और जरकमाति
प्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्म परत्तयस ही बंधने हैं क्योंकि, स्वोदयस इतक अपने बन्धका
विराध है । नपुंसकवह एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुर्दिन्द्रिय अति हुण्डसंस्थान
असंपातसुपादिकासंज्ञक जाताप क्यावर, त्थम अपर्याप्प और साधारणकारीर स्वोदय
परोदयसे बंधने हैं क्योंकि, दोनों प्रकारस भी इनका बन्ध हातमें कोई विशेष नहीं है ।

मिध्यात्व और नारकपु मङ्गलिया निरन्तर बंधनेवाली हैं क्योंकि भुक्कन्धी
हातसे कालसमये इतक बन्धविनाशका जमाव है । होय सब मङ्गलिया नान्तर बंधती
हैं क्योंकि, उनकी प्रतिपन्न मङ्गलियोंक बन्धकी सम्भावना है ।

बार मूळ मत्तपोस पक्कल जामा समय सम्बन्धी उत्तर मत्तपोस तथा इहा व मडा-
रइ एक समय सम्बन्धी अस्थ एव उत्तर मत्तपोसे मिध्याद्वि इव मङ्गलियोंको बांधता
है । बिनाय इतना है कि वैश्विक, वैद्विकमिध और त्रिकमिध और कर्मव कवपोप
मावबौक विना वह इकपावन मत्तपोस नारकपुका बांधता है, ऐसा कहना चाहिये । इसी

[पिरयगइ] गिरयगइपात्रोमगाणुपुष्पिण । वेइंदिय-तेइंदिय-चठरिंदिय-सुहुम-साहारण अपञ्चतार्ण
वेठभियदुगेण विजा तेवण्णा पञ्चया ।

मिच्छतं चठगइसत्तुत्तं, पत्तुमपवेइं देवगइए विजा तिगइसत्तुत्त, पिरयाउ-गिरय
यइ-पिरयगइपात्रोमगाणुपुष्पिणामात्रो गिरयगइमत्तुत्तं, हुंढमत्तण देवगइं मोत्तूण तिगइसत्तुत्तं,
असपत्तसेवइमरीरसचडण-अपञ्चतार्णामात्रो तिरिक्ख-मनुमगइसत्तुत्त, समात्रो तिरिक्खगइ
सत्तुत्त वंछति ।

मिच्छत-पत्तुमपवेइ-हुंढमत्तण-असपत्तसेवइमरीरसचडणण चठगइमिच्छाइइ सीमी ।
एइंदिय-आन्नाय यत्तण्णामात्र वचस्स पिरयगइ मोत्तूण तिगइमि-छाइइ सीमी । सेसाणं पयइीणं
तिरिक्ख-मनुमगइमिच्छाइइ सीमी । वंछटाणं वंछवोप्पेइइहाणं च सुगम । मिच्छतस्स वंछा
सादि अणादि-भुव-अद्दुवेमण्ण चठभिये । मेसाणं वंछा सादि अद्दुवो ।

—

प्रकाश [नरकगति भीर] नरकगतिप्रायेत्यानुपूर्विके भी इत्यादिप्रत्यय ई । शीन्द्रिय
भीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय मूकम माध रण भीर अपर्याप्त प्रकृतियोंके वैभिविकृतिकके विना
निरपन प्रत्यय ई ।

मिथ्यात्वके आर गतियोंमें संयुक्त मनुमकवेइके देवगतिके विना तीन गतियोंसे
संयुक्त, मातकायु नरकगति भीर नरकगतिप्रायेत्यानुपूर्वी नामकर्मके नरकगतिसे संयुक्त,
हुण्डमंस्थानके देवगतिके छोड़ तीन गतियोंमें संयुक्त मत्तमानसुपाटिकाशरीरसंहनन
भीर अपर्याप्त नामकर्मके निर्वगति च मनुष्यगतिये संयुक्त गया शय प्रकृतियोंके
निर्वगतिसे संयुक्त वांछते ई ।

मिथ्यात्व मनुमकवेइ हुण्डमंस्थान भीर मत्तमानसुपाटिकाशरीरसंहनन
प्रकृतियाए आर गतियोंके मिथ्याएहि स्वामी ई । एकत्रिय माताय भीर ह्यावर नामकर्मके
वच्यक नरकगतिसे छोड़ शय तीन गतियोंके मिथ्याएहि स्वामी ई । शय प्रकृतियोंके
नियगगति च मनुष्यगतिके मिथ्याएहि स्वामी ई । पञ्चाप्यान भीर वच्यभ्युच्छइस्थान
सुगम ई । मिथ्यात्वक वंछ सादि अनादि छव भीर मध्य मेइस आर प्रकर ई । शय
प्रकृतियोंका वच्य सादि भीर मध्य होता ई ।

अपच्चकस्त्राणावरणीयकोध माण म
लियसरीर-ओरालियसरीरअगोवग-वज्ज
मणुसगइपाओगगाणुपुब्बिणामाग को वधे
सुगम ।

मिच्छाद्विष्टिपुट्टि जाव असजदम
अवसेसा अवधा ॥ १८ ॥

एह देसामासियसुत्ते, सामित्तद्वज्जार्णं' चेव पर
खीरेदे । तं जहा— अप' बन्धुजावरणघटककस्म मणु'
समं वाप्पिअमति, एवमिदं अमंअदसम्मादिदिमिदं दाण्णं ।
बंदो पच्च उदयो वोअप्पेओ, अमअदसम्मादिदिमिदं' &
उदयबोअप्पेओ । एवमेतालियसरीर-ओरालियसरीरअगोव
गवरि सजोगिअरिमम्मए उदयबोअप्पेओ ।

अप्रत्यास्थानावरणीय क्षेत्र, मान, माया, छम,
रिक्खरीरांगोपांग, अत्रयमवज्जनाअचमंहनन और मनुष्यग
बन्धक और कैद अवधक है ॥ १७ ॥

एह सूत्र सुगम है ।

मिथ्याद्विष्टि लेकर अमयनसम्पदद्वि तक बधन
अवधक है ॥ १८ ॥

एह देशामर्शक सूत्र है क्योंकि यह केवल व अ
विरूपण करता है । इसी कारण इस सूत्रसं सूचित जर्ण
प्रकार है—अप्रत्यास्थानावरणबन्धक और मनुष्यगतिमात्र
उत्पन्न इत्यादि साधनें स्पष्टिज्ज होते हैं क्योंकि, एक अमयन
विनाश पाये जाते हैं । मनुष्यगतिमात्र पूर्वमें बन्ध और पञ्च
क्योंकि अमयनसम्पदद्वि शुद्धस्थानमें बन्धके मष्ट होतेपर
समयमें उत्पन्न स्पष्टिज्ज होता है । इसी प्रकार भैरवार्ति
और अत्रयमवज्जनाअचमंहननका पूर्वमें बन्ध और पञ्चान् उत्प
होता है कि संपादकी अस्थित समयमें उत्पन्न स्पष्टिज्ज होता

अपञ्चकस्त्राणावरणचटक्कादीनां मन्त्रसि मोक्ष-परोदणहि यथा, विराहामावाधो ।
 गविरि सुम्नामिच्छाङ्कि-अमञ्जसम्मादिद्रीसु मणुमगइदुगोतालियदुग-वज्जमिहमपइणाण परो
 दथो यथा । अपञ्चकस्त्राणावरणचटक्कयथो भिन्तरो, धुववंधित्तादो । मणुमगइ-मणुमगइपा
 ओमाणुपुव्वियथा मिच्छाङ्कि-मासणमम्माइद्रीणं मांतर-भिन्तरो, भाणन्तिदवसु गितरबंध
 टदण मणाय सातरयधुवलमादो । सम्नामिच्छाङ्कि-अमञ्जसम्माइद्रीसु भिन्तरो, देव-भेरइयं
 अपिदनेगुणट्ठपेसु अण्णगइ आणुपुव्वीण यथामावाधो । पवमागलियमरीर-भागलियमरीर
 अगोवग यन्त्रमिमहमवइणाणं वत्तय । कुत्ता ? आगलियमरीरस्य मन्त्रदेव-गण्डणसु तउ
 वाउक्काइणसु च गितर धंघुवलमादो, अण्णाय मांतरयधमपणो मोरालियमरीरअगोवगम
 सव्वभेरइणसु सपक्कुमागन्तिदवेषु च गितर धंघं टदण इमाणादिह्मिदवाण मिच्छाङ्कि-
 मासणसु तिक्कित्त-मणुस्सेसु च सातरयधुवलमादो, वज्जमिमहमवइणम्म देव-गण्डयमम्मा-
 मिच्छाङ्कि-अमञ्जसमम्माइद्रीसु भिन्तरो धंघं टदण मणाय सातरयधुवलमादो ।

अप्रत्याप्यानावरणचटक्का आदिक मन्त्रका व्याख्य परादयम बन्ध हाता है क्योंकि
 यथा हानम काइ बिगध नहीं है । विनाय यह है कि मन्त्रमिच्छादि और अमंयतमस्य
 गति गुणस्थानमें मनुष्यगतिविषय औदारिकठिक पर्यं यज्ञममंजननय परादय बन्ध
 हाता है ।

अप्रत्याप्यानावरणचटक्का मन्त्र निरन्तर है क्योंकि य प्रागे प्रतियया ध्रुव
 वर्णी है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्राप्त्यानुपूर्वीका मन्त्र मिच्छादि और सामाज्य
 सम्यग्वादि साम्ना निरन्तर है क्योंकि मानताकि यथोमें निरन्तर बन्धका प्राप्तकर मन्त्र
 साम्ना बन्ध पाया जाता है । मन्त्रमिच्छादि और अमंयतमस्यगति गुणस्थानोंमें निर-
 न्तर बन्ध है क्योंकि यथो य मारुक्कियोके इस विषयित हा गुणस्थानोंमें मन्त्र गति य
 आनुपूर्वीके मन्त्रका समाय है । इसी प्रकार औदारिककारी औदारिककारीगायांग और
 यज्ञममंजननय भी कहना चाहिये । इसका कारण यह कि औदारिककारीका मन्त्र यथ
 मारुक्क तथा तज्जपिय य वायुकायिक जीथोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है मन्त्र
 यही मन्त्र साम्ना इत्या जाता है । औदारिककारीगायांगका मन्त्र मारुक्कियों और
 साम्नायुमा पर्यं माह्मद् कस्य यथोमें भी निरन्तर बन्ध पाकर इत्याताय्क मन्त्रमन्त्र यथोके
 मिच्छादि य सामाज्य गुणस्थानोंमें तथा नियं और मनुष्योंमें साम्ना बन्ध पाया जाता
 है । यज्ञममंजननय यथ और मारुक्क मन्त्रमिच्छादि य अमंयतमस्यगति गुणस्थानोंमें
 निरन्तर बन्ध पाकर मन्त्र साम्ना बन्ध पाया जाता है ।

अपञ्चकस्त्राणावरणीयकोध माण माया-लोभ-मणुसगइ-ओरा-
लियसरीर-ओरालियमरीरअगोवग-वज्जरिमहवइरणारायणसघडण-
मणुमगइपाओग्गाणुपुब्बिणामाण को वधो को अवधो ? ॥ १७ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अमजदमम्माइट्ठी वधा । एदे वधा,
अवसेसा अवधा ॥ १८ ॥

एह दमामाभियसुत्त, सामित्ताणल' चेव पक्खपादो । तेजदेण सुइइत्थपक्खवा
कीरे । तं जहा— अपञ्चकस्त्राणावरणीयकोधमं मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बिणामाए कपोदया
समे वाट्ठिअत्ति, एअइहि अमजदमम्माइहि दाणा विणामुवलेभादो । मणुसगइए पुत्रे
पपो पप्प उइओ वोप्पिअ, अमजदमम्माइहि अवे जह पच्छ मज्झिमसिममपमि
उइयवाअइदो । एवमोराटियमरीर भाराटियमरीरअंगवंग-वज्जरिमहवइरणारायणसघडणजे ।
अवरि सजागिअसिममए उइयवोअइ ।

अप्रत्यात्पानावरणीय क्रोध, मान, माया, लोभ, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदा-
रिकशरीरांगोपांग, वज्रपंमवज्रनारायणमहनन और मनुष्यगतिप्राप्तोप्मानुपूर्वी नामकर्मका कौन
बन्धक और कौन अन्धक है ? ॥ १७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिप्पाअट्ठिमे लेख अमयतमस्यगहि तक बन्धक है । य अन्धक है, अथ कौन
अबन्धक है ॥ १८ ॥

यह वेदात्मक सूत्र है अर्थात् यह केवल बन्धनत्वमित्य और बन्धाभावस्य ही
निरूपण करता है । इसी कारण इस सूत्रम सूचित सर्वेन्द्रो प्ररूपणा करते हैं । यह इस
प्रकार है—अप्रत्यात्पानावरणीयकोध और मनुष्यगतिप्राप्तोप्मानुपूर्वी नामकर्मका बन्ध और
अथ औदा औपाधमे व्युत्पिअ होता है अर्थात्, एक अमयतमस्यगहि गुणस्यात्ममे औदा
विमोच पाये जात है । मनुष्यगतिका पूर्वमे बन्ध और पश्चात् अथ व्युत्पिअ होता है,
अर्थात्, अमयतमस्यगहि गुणस्यात्ममे वक्ष्य मय हस्तपर पीछ अयोगजबन्धीके अन्तिम
समयमे अथवा व्युत्पिअ होता है । इसी प्रकार औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग
और वज्रपंमवज्रनारायणमहनन पूर्वमे बन्ध और पश्चात् अथ व्युत्पिअ होता है । विशेष
इतना है कि अन्धगीक अन्तिम समयमे अथवा व्युत्पिअ होता है ।

१ मीटु अट्ठिअत्ति एति पाठ ।

२ मीटु विणताइकमादो एति पाठ ।

३ मीटु अन्धगीइति एति पाठ ।

अपञ्चकखाणावरणचउक्कादीण सुव्वसिं सोढय-परोदणहि वधो, विराहामावादो ।
 पवरि सम्मामिच्छइट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठ्रीसु मणुसगइदुगोसालियदुग-वज्जरिसहसंघट्ठणाण परो
 दओ वंधो । अपञ्चकखाणावरणचउक्कवधो गिरतरो, धुववधित्तादो । मणुसगइ मणुसगइपा
 ओमाणुपुव्विकंधो मिच्छइट्ठि-सामणसम्माइणीण सातर-भिरतरो, आण्णादिदेवेषु भिरंतरवंध
 उद्वण अण्णत्थ सांतरवधुवत्तमादो । सम्मामिच्छइट्ठि असंजदसम्माइट्ठ्रीसु भिरंतर, देव णेरइयं
 अपिदोरोणुपट्ठापेसु अण्णगइ आणुपुव्वीण वंधामावाणे । णवमेरालियसरीर-आणलियसरीर
 भगोवग-वज्जरिसहसंघट्ठणाणं वत्तयं । कुट्ठो ? आणलियसरीरस्स सव्वदेव-भरइणसु तेठ
 वाठकइणसु च भिरतर वधुवत्तमादो, अण्णत्थ सांतरवधदसणादो भोरालियमरीरवंगोवगस्स
 सव्वकेणसु सणक्कुमारदिदेवेषु च गिरतर वध उद्वण २साणादिट्ठिडिमव्वाण मिच्छइट्ठि-
 सासणेसु तिरिक्ख-मणुस्सेसु च सांतरवधुवत्तमादां, वज्जरिसहसंघट्ठणस्स देव-भरइयसम्मा
 मिच्छइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठ्रीसु भिरंतरं वंध उद्वण अण्णत्थ सांतरवंधुवत्तमाणे ।

अमत्स्याक्यानावरणचतुष्क मासिक सवका स्वोदय परोदयसे वन्ध होता है क्योंकि,
 एना हानमें कोई विगम नहीं है । बिनाय यह है कि सम्यग्मिध्याहारि और असंयतसम्य
 ग्हारि गुणस्थानमें मनुष्यगतिष्ठिक भौतिककठिक एव बज्रगमसंहननका परोदय वन्ध
 होता है ।

अमत्स्याक्यानावरणचतुष्कका वन्ध निरन्तर है क्योंकि य चारों प्रवृत्तियाँ भुव
 वन्धी हैं । मनुष्यगति और मनुष्यगतिमायाग्यानुपूर्विका वन्ध मिध्याहारि और सामान्य
 सम्यग्हारिके सात्तर निरन्तर है क्योंकि आत्मतादि द्वेषोंमें निरन्तर वन्धन प्राप्तकर अम्यत्र
 सान्तर वन्ध पाया जाता है । सम्यग्मिध्याहारि और असंयतसम्यग्हारि गुणस्थानोंमें निर
 न्तर वन्ध है क्योंकि वधों व नारकियोंके म विवक्षित हो गुणस्थानोंमें अम्य गति व
 आनुपूर्विका वन्धका समाव है । इसी प्रकार भौतिककठारी भौतिककठारीरोगापांग और
 बज्रगमसंहननका भी कहना चाहिये । मन्त्र कारण यह कि भौतिककठारीरव सर्व वध
 नारकी तथा तेजकथिक व वायुकथिक जीवामें निरन्तर वन्ध पाया जाता है अम्यत्र
 यही वन्ध सान्तर देखा जाता है । भौतिककठारीरोगापांगका सब नारकियोंमें और
 सामान्यमात्र पर्य माहन्त्र कस्यक द्वेषोंमें भी निरन्तर वन्ध पाकर इशामादिक अथमन वधोंके
 मिध्याहारि य सामान्य गुणस्थानोंमें तथा तिर्यक और मनुष्योंमें सान्तर वन्ध पाया जाता
 है बज्रगमसंहननका वध और नारकी सम्यग्मिध्याहारि व असंयतसम्यग्हारि गुणस्थानोंमें
 निरन्तर वन्ध पाकर अम्यत्र सान्तर वन्ध पाया जाता है ।

पञ्चमो । सेसकसायाणमुदमो ओगो ष पञ्चमो ण होदि, एतो उवरि तेसु संतेसु वि एदासि
 वंधामावादो । ण मिच्छत्तार्णताणुयंधि-अप-चकक्षाणात्वरणाणमुदमो वि एदासि वंधस्स पञ्चमो,
 तेण विणा वि वंधुवलमादो । जस्सण्णय-यदिरगेहि जस्सण्णयवदिरगा होति [तं] तस्स कम्मिपरं
 ष करणं । ण चंदं पञ्चकक्षाणत्तरं मुग्घा अण्णत्तस्मि तम्हा पञ्चकक्षाणोदमो षेव
 पञ्चमो सि सिद्ध । मिच्छाद्दिद्दि णट्टवंधमोल्लसपयडीण यधस्स मिच्छतोदमो षेव पञ्चमो,
 तेण विणा तामि यधाजुवलमादो । सामणम्मि णट्टवंधपणुवीसपयडीण अण्णताणुवधीणमुदमो
 षेव पञ्चमो, तेण विणा तामि यधाजुवलमादो । असंजमम्मदिद्दिद्दि णट्टवंधणयपयडीण
 वंधस्स अपञ्चकक्षाणोदमो करण, तेण विणा तामि वंधाजुवलमादो । पमसंसंजमम्मि णट्टवंध
 छप्पयडीण वंधम्म पमादो पञ्चमो, तेण विणा तदणुवलमादो । एवमण्णत्तय वि जाणिय
 वत्तम् ।

एदाओ पयडीओ मिच्छाद्दि चउगइमत्तुत्तं, मामणो पिरयगइण विणा तिगइसंजुत्तं,

देव कयापोंक उद्य मार याग प्रत्यय नहीं है क्योंकि पांचवें गुणस्थानके ऊपर
 उनका प्रत्यय भी इनका वन्ध नहीं होता । मिथ्यात्त्व भनस्तानुबन्धी और मप्रत्या
 पानावरण प्रकृतियोंका उद्य भी इन प्रकृतियोंके वन्धका प्रत्यय नहीं है क्योंकि, उनके
 उद्यके बिना भी इनका वन्ध पाया जाता है । जिसके सम्बन्ध और ध्यतिरेकका पाप
 जिसका सम्बन्ध और ध्यतिरेक होता है वह उनका काय और कृमरा काय होता है ।
 और यह बात प्रत्यापानावरणके उद्यके छोड़कर सम्भव है नहीं इसलिये प्रत्यापाना-
 वरणका उद्य ही अपने वन्धका प्रत्यय है यह बात सिद्ध हुई । मिथ्यादि गुणस्थानमें
 ध्युच्छिन्न सोलह प्रकृतियोंके वन्धका प्रत्यय मिथ्यावन्ध उद्य ही है क्योंकि उसके
 बिना हम सोलह प्रकृतियोंका वन्ध पाया नहीं जाना । सामान्यगुणस्थानमें ध्युच्छिन्न
 पचीस प्रकृतियोंके वन्धका भनस्तानुबन्धितुक्का उद्य ही प्रत्यय है क्योंकि, उसके
 बिना हम पचीस प्रकृतियोंका वन्ध पाया नहीं जाना । भनस्तानुबन्धितुक्का उद्य ही
 ध्युच्छिन्न नौ प्रकृतियोंके वन्धका मप्रत्यापानावरणका उद्य कारण है क्योंकि, उसके
 बिना उनका वन्ध पाया नहीं जाता । प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें ध्युच्छिन्न छह प्रकृतियोंके
 वन्धका प्रत्यय प्रमाद है क्योंकि, उनका बिना उनका वन्ध पाया नहीं जाता । इसी प्रकार
 सम्भव भी जानकर कहना चाहिये ।

इन प्रकृतियोंके मिथ्यादि चारों गणियोंमें संयुक्त सामान्यगुणस्थानमें प्रत्यय

पञ्चवस्त्राणावरणीयकोध माण-माया-लोमाण को बंधो को
अबंधो ? ॥ १९ ॥

सुगममेवं सुष्ठु ।

मिच्छादृष्टिपुद्गि जाव सजदामजदा वधा ॥ २० ॥

एदं दसमासिपसुचं, सामितद्वाराजमेव परवणादा । तमेव अतुतायाम् परवणा
करिदे । त अह— एदासि पयडीज बंधादया सम धास्मिणा, संयदासजदमि बंधस्तेन
उदयवोष्पेद्वसुणादा । एदासि अतुताय पि बंधो सोदय-परदएहि, अघादीज बंधकठे तस्तेन
उदए वि होदयमिवि नियमामावादा । एदासि अतुताय पि भित्तरो बंधो, सपतासीसुव
बंधपयडीसु पादादा । मिच्छादृष्टिमादिपंचगुणद्वयेसु अ पंचया परवदा मृत्युधरमेव तदि
पंचपदि एतावा बन्धति सि तेसु तेसु गुणद्वयेसु त ते केव पंचया वत्तया, बन्धस
पंचयसमूहकज्जकादा । अथवा, एदासि पयडीमं बंधस्म पञ्चवस्त्राणपयडीए उदयमाम्म

प्रत्याख्यानावरणीय बंधव, मान, माया और लोपक कौन बन्धक और कौन अबन्धक
है ? ॥ १९ ॥

यह पूछ सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे ठहर संयतास्थित तक बन्धक हैं ॥ २० ॥

यह वक्षामर्शः सूत्र है क्योंकि यह बन्धस्वामित्व और बन्धाध्यात्मका ही निरूपण
करता है । इस कारण यहाँ अतुक्त अर्थोंकी प्रकृष्टता करते हैं । यह इस प्रकार है—इस
कारण प्रकृतियोंका बन्ध और उदय दोनों साथ ही व्युत्पिद्य होत हैं क्योंकि संयतास्थित
गुणस्थानमें बन्धक समान इनके उदयका भी व्युत्पिद्य देखा जाता है । इस कारण ही
प्रकृतियोंका बन्ध स्वोदय परादयसे होता है क्योंकि क्राधादिबन्धोंके बन्धकालमें उदयका ही
उदय भी होता चाहिये ऐसा कार्य निश्चय नहीं है । इस कारणका ही निरन्तर बन्ध होता है
क्योंकि ये कारण प्रकृतियाँ नितालीस भुवनगो प्रकृतियोंमें जाती है ।

मिथ्यादृष्टि साक्षि पांच गुणस्थानोंमें का मूक व उत्तर प्रत्यय कहे
गये हैं इन प्रत्ययोंस व प्रकृतियाँ बंधती हैं मत यह उन उन गुण
स्थानोंमें उन्हीं उन्हीं प्रत्ययोंका बंधमा चाहिये क्योंकि, बन्ध प्रत्ययसमूहका कार्य
है । अथवा इन प्रकृतियोंके बन्धका प्रत्यय प्रत्याख्यात प्रकृतिक उदयसामान्य है ।

पञ्चभो । सेसकसायाणमुदभो जोगो च पञ्चभो ण होदि, एत्थे उवरि तेसु संतेसु वि एदासि
 वधामावादो । ण मिच्छत्ताणंताणुववि-अपञ्चभस्त्राणावरणाणमुदभो वि एदासि वचस्स पञ्चभो,
 तेण विणा वि वधुवलमादो । जस्सण्णय-वदिरेगेदि जस्सण्णयवदिरेगा होति [तं] तस्स कम्ममियं
 च करण । ण चेदं पञ्चभस्त्राणोदयं मुच्चा अम्पत्यतिथि तम्हा पञ्चभस्त्राणोदभो चेव
 पञ्चभो ति सिद्धं । मिच्छादिदिमिह गट्टवंधसोलसपयडीण वंधस्स मिच्छोदभो चेव पञ्चभो,
 तेण विणा तासि वंधाणुवलमादो । सासणमि गट्टपवणुवीसपयडीण अपत्ताणुववीणमुदभो
 चेव पञ्चभो, तेण विणा तासि वंधाणुवलमादो । असंजदसम्मादिदिमिह गट्टवंधणवपयडीण
 वंधस्स अपञ्चभस्त्राणोदभो करण, तेण विणा तासि वंधाणुवलमादो । पमसंसंजदमि गट्टवंध
 छप्पयडीण वंधस्स पमादो पञ्चभो, तेण विणा तदणुवलमादो । पयमण्णत्य वि जाणिय
 वत्तण ।

एदाभो पयडीभो मिच्छादिदि वट्ठगइमंजुत्त, मामगे भिरयगइण विणा तिगइसंजदं,

दोष करणोंका उद्योग और पाप प्रत्यय नहीं है क्योंकि, पाँचवें गुणस्थानक ऊपर
 उनका रहमपर भी इनका बन्ध नहीं होता । मिथ्यात्व अनन्तानुबन्धी और अप्रत्या-
 क्यामावरण प्रकृतियोंका उद्योग भी इन प्रकृतियोंक बन्धक प्रत्यय नहीं है क्योंकि उनके
 उद्योगके बिना भी इनका बन्ध पाया जाता है । जिसके अन्वय और व्यतिरेकका साथ
 जिसका अन्वय और व्यतिरेक होता है वह उसका कार्य और दूतका कारण होता है ।
 और यह बात प्रत्याक्यामावरणक उद्योगके छोड़कर सम्भव है नहीं इसलिये प्रत्याक्यामा-
 वरणका उद्योग ही अपन बन्धका प्रत्यय है यह बात सिद्ध हुई । मिथ्यादिदि गुणस्थानमें
 व्युच्छिन्न सोलह प्रकृतियोंके बन्धका प्रत्यय मिथ्यात्वका उद्योग ही है क्योंकि उसके
 बिना उन सोलह प्रकृतियोंका बन्ध पाया नहीं जाता । साम्नादमगुणस्थानमें व्युच्छिन्न
 पचीस प्रकृतियोंके बन्धका अनन्तानुबन्धिचतुष्कका उद्योग ही प्रत्यय है क्योंकि उसके
 बिना इन पचीस प्रकृतियोंका बन्ध पाया नहीं जाता । अर्धयत्तसम्पददि गुणस्थानमें
 व्युच्छिन्न भी प्रकृतियोंके बन्धका अप्रत्याक्यामावरणका उद्योग कारण है क्योंकि, उसके
 बिना उनका बन्ध पाया नहीं जाता । प्रमसंसंयत्त गुणस्थानमें व्युच्छिन्न छह प्रकृतियोंके
 बन्धका प्रत्यय प्रमाद है, क्योंकि, उसके बिना उनका बन्ध पाया नहीं जाता । इसी प्रकार
 अन्यत्र भी जानकर कहना चाहिये ।

इन प्रकृतियोंके मिथ्यादिदि चारों गणियोंसे संयुक्त साम्नादमसम्पददि मरक

सम्प्राप्तिमिच्छाद्दीर्घमसंज्ञदसम्प्रादिद्दीर्घदेवगाइ-मनुमाइमंहुतं, संज्ञदसंज्ञदा देवगाइमंहुतं वंषेति ।
एदासि षठगइमिच्छाद्दीर्घ-सामपसम्प्रादिद्दीर्घ-सम्प्राप्तिमिच्छाद्दीर्घमसंज्ञदसम्प्रादिद्दीर्घा वंषस्स
सामी । संज्ञदसंज्ञदा दुमइया सामी । षपठानं वंषविषट्ठानं च सुगमं । एदासि वंषो
मिच्छाद्दीर्घमिच्छाद्दीर्घो, मत्तेदास्यमपुमंमपयडीसु पाणाशो । उवरिमेसु गुणहापसु निविहो,
हुविहामावाशो ।

पुरिसवेद-कोधसजलणाण को वंधो को अवधो ? ॥ २१ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्दीर्घमिच्छाद्दीर्घ जाव अणियट्ठिवादरसापराइयपहट्ठउवसमा
ख्वा वधा । अणियट्ठिवादरद्धाए सेसे सम्बेज्जाभाग गत्तूण वधो
वोन्धिज्जदि । एदे वधा, अवसेमा अवधा ॥ २२ ॥

मिच्छाद्दीर्घमिच्छाद्दीर्घ उवसमा ग्वा वधा ' एदेण सुतावयवण गुणहापगवर्ष

गणिक विना तीन गणितान् संयुक्तः सम्मगिमप्यादि और असंयतसम्प्रादि देवगणि एवं
मनुष्यगणितं संयुक्तं तथा संवत्सामंयत देवगणितं संयुक्तं बांधने हैं । चारों गणियोंके
मिच्छाद्दीर्घ, साक्षात्तसम्प्रादि सम्मगिमप्यादि और असंयतसम्प्रादि इन मनुष्यगणिकोंके
बन्धक स्वामी हैं । दो गणियोंके संयतार्थयत स्वामी हैं । बन्धात्मान और बन्धाधिनसंस्थान
स्थान सुगम हैं । मिच्छाद्दीर्घ गुणस्थानमें इनका चारों प्रकारका बन्ध है क्योंकि ये
संज्ञाधीन सुबन्धवस्तुत्विकोंमें आती हैं । उगमि गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध है
क्योंकि वहाँ दो प्रकारका बन्धक अमात्र है ।

पुरुषवेद और मन्वन्तक्रेषक कौन बन्धक और कौन अवन्धक ? ॥ २१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिच्छाद्दीर्घसे लेकर अनिष्टुतिप्रवत्तसाम्प्रादिकप्रतिष्ठ उपश्रमक एवं क्षपक तक
बन्धक है । अनिष्टुतिप्रवत्तकस्तकं शेषमें संख्यात बहुमात्र आकर बन्धपुच्छेद होता है । ये
बन्धक हैं, शेष जीव अवन्धक हैं ॥ २२ ॥

मिच्छाद्दीर्घसे लेकर अनिष्टुतिप्रवत्त उपश्रमक और क्षपक बन्धक हैं इस

१ क्षप्ता देव क्षप्ता देवक्ष क्षप्ता देवक्ष इति वाम ।

२ मतिष्ठ -सत्य इति वाम ।

सामितं धवद्याण च परुविदं । 'अणियट्ठिवादरदाए सेसे सखेज्जामागं गतूण धवो धोच्छिज्जदि' ति एदेण धवविण्णट्ठणां परुविदं । तं अहा— सेसे अत्तरकण्णे कदे जा सेसा अणियट्ठिज्जदा तम्मि सेसे सखेज्जखडे कदे तत्थ बहुखंडाणि गतूणगखंडावसेसे पुरिसवेद-क्रेषसज्जलणाय धवो धोच्छिज्जो ति उच्च होदि । एदे तिणिण्णे धेव अत्था एदेण परुविदा सि देसामासिय सुसमेदं । तेणेदस्मियरत्थायं परुवणा बन्धे—

पुरिसवेद-क्रेषसज्जलाण धवोदया समं वाच्छिज्जति, पुरिसवेद-क्रेषसज्जलणाय उदए संतप्पसपणुवसमेण वा ण्ठे यथाणुवळमाणे । ससारावत्थाए सोदएण विणा वि धवो उक्कम्मादि सि ण सादयाविणामावी एदामि धवो ति बुद्धं होदु तथा तत्थ, इच्छिज्जमाणत्तादो । एत्थ पुण पडिवन्त्तपयट्ठिवधेण विणा धवविण्णट्ठणां धव उदयविणामासो एगान्दि काठे रोण्ण विणामो ण विरुद्धदे ति । एदामि दोण्ण पयडीयं सोत्तपरोदपदि धवो, सोदएण विणा वि धवोवळमादो । क्रेषसज्जलणस्य धवो भिरंतरो, मत्तेतात्मीसधुवयंघपयडीयं मन्धे

सुखावययमे गुणस्थानगत बन्धस्थानित्वा और बन्धस्थानका निरूपण किया है । 'मनिवृत्ति बाधरकायके शोयमे संख्यात यहभाग आकर बन्ध ध्युच्छिन्न होता है इससे बन्धध्युच्छेद स्थानका निरूपण किया है । यह हम प्रकार है— शाय मर्यात् मत्तरकरण करणपर जो भवशाय मनिवृत्तिच्छाद रहता है इस शाय कासक मर्यात काण्ड करणपर उनमें बहुत काण्ड आकर एक काण्ड भयणिष्ट रहनेपर पुनरवेद जीर संज्वलनकायका बन्ध ध्युच्छिन्न होता है यह उसका समिमाय है । ये तीन ही मर्य इस सूत्र छाय कह गये हैं, मत एव यह देशामर्शक सूत्र है । इसी कारण हमका मर्य मर्यादी प्ररूपणा की जाती है—

पुरययेव और संज्वलनकोष इनके बन्ध व उदय दोनों साथ ध्युच्छिन्न हात है क्योंकि पुरययेव और संज्वलनकोषके उदयका सारवस्तयमे या उपायमे नष्ट होनेपर उन दोनोंका बन्ध नहीं पाया जाता ।

सूत्र—ससारावत्थामे स्यादयक विना भी बन्ध पाया जाता है मत एव इनका बन्ध स्यादयका भविताभावी नहीं है ?

समाधान—एसी शोक करणपर उत्तर दत्त है कि ससारावत्थामे विना मन्धे ही हा क्योंकि वहां एसा दृष्ट है । परन्तु यहाँपर मनिपस धट्टनिके बन्धके विना बन्ध ध्युच्छेदस्थानमे ही उदयका ध्युच्छेद हातमे एक कायमे दोनोंका ध्युच्छेद चिह्न नहीं है ।

हम दोनों प्रकृतियोंका स्यादय परावयमे बन्ध हाता है क्योंकि स्यादयक विना भी इनका बन्ध पाया जाता है । संज्वलनकायका बन्ध निरन्तर है क्योंकि यह सत्ताकीस

पादादौ । पुरिसवेदेषो सांतरो । कुदो ? मिच्छाद्वि सासपेसु पडिक्खपयपयिणं वेसु-
बलमादो । भिंरंतरो वि, पम्म-सुक्खस्मियतिरिक्ख-मपुसमिच्छाद्वि-सासपसम्मादिहीसु सम्म-
मिच्छाद्विमादिठवरिमगुणद्वयेसु च भिंरंतरोवेषुबलमादो ।

एवासि पचयपरूवणं कीरमाणे पुव पुव ने पचया मलुत्तरमाणेयसमयमेयमिग्गा
गुणद्वयानां परूविदा ताणि गुणद्वयानां तेहि पचयहि एवासो पयहीओ वधति ति पु-
परूवणा जल्लि, मेवापुवलेमादो । अथवा पुरिसवेदो गमपचओ, अवगद्वेदेसु तप्पेपानु
बलेमादो । कोपसंजल्लो संबल्लमग्गायस्स तिग्गल्लुमागोदयपचओ, उवसमसेहिंदि कोप
परिमाणामोदयादो अणेतगुणहीणं यूपानुमागोदयण कोपसंजल्लस्स वेषापुवलेमादो ।
मिच्छाद्वि सासपे च भियगईए विणा पुरिमवेदं तिगईसंनुत्त वधइ । विरयगईए सह
पुरिसवेदो किंण वन्हेदे ? न, अर्धतामयेण पडिसिद्धतादो । सम्मामिच्छाद्वि बसेन
सम्मादिही च दुमईसंजुत्त, तेसिं विरय तिरिक्खगईए वषामावादा । संबदासंजदप्पहुडि उवरिमा

ब्रह्मण्यी प्रकृतियोंके मध्यमें आया है । पुरुषकेवल ब्रह्म सात्त्विक है । इसका कारण यह कि
मिच्छाद्वि और सासात्त्विक गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वण्य पाया जाता है । वही ब्रह्म
मिच्छाद्वि भी है क्योंकि, पक्ष एवं शुद्ध केस्वावास मिच्छा व मसुप्य मिच्छाद्वि और
सासात्त्विकमध्यगद्विओंमें तथा सम्यग्मिच्छाद्वि भावि उपरिम गुणस्थानोंमें भी मिच्छा
वण्य पाया जाता है ।

इन दोनों प्रकृतियोंके प्रत्ययोंका प्रकृपण करमपर मूम उत्तर तथा नामा व एक
समय सगुण्यी प्रत्ययोंके मेवने मित्र पृथक् पृथक् जो प्रत्यय जिन गुणस्थानोंके कहे गये हैं वे
गुणस्थान इन प्रत्ययोंने इन प्रकृतियोंको बांधते हैं अतः इनकी पृथक् प्रत्ययप्रकृपणा नहीं है
क्योंकि, उससे यहाँ कोई मेव नहीं पाया जाता । अथवा पुरुषकेवल गतप्रत्यय है अर्थात्
उसका प्रत्यय रूपर होता ही चुके है क्योंकि, अपगतवर्तियोंमें उसका वण्य नहीं पाया
जाता । संज्ञकनोपका वण्य संज्ञकनकावके तीव्र अनुमागोदयनिमित्तक है क्योंकि,
अपगतवर्तियोंमें अस्तिम अनुमागोदयसे अथवा अस्तगुणद्वयानिं हीन अनुमागोदयसे
संज्ञकनोपका वण्य नहीं पाया जाता ।

मिच्छाद्वि और सासात्त्विकमध्यगद्वि मरकगतिके बिना पुरुषकेवल तीव्र गतियोंसे
संयुक्त बांधते हैं ।

संज्ञक—मरकगतिके साथ पुरुषके कौनों नहीं बांधता ?

समाधान—नहीं बांधता क्योंकि, यह भगवन्तामाय रूपर प्रतिविम्ब है ।

सम्यग्मिच्छाद्वि और असेयतमम्यगद्वि दो गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि,
—के मरकगति और तिर्यग्गतिके वण्यका अभाव है । संयत्तामेयतने केकर उपरिम भी

देवगइसंजुत्त, सेमगइप्प तत्त्व वंधामावादो । अपुत्तवक्कणसत्तमसत्तभागप्पहुट्ठि उवरिमा
मगणिमंजुत्त वर्धति, तत्त्व गइक्कम्मस्स वंधामावादो । एवं केषमजलणम्म वि वत्तप्प । पवरि
मिप्पमइत्ती चउगइसंहुत्ते वधइ, तत्त्व गिरयगइए सह वधविरोहामावादो । पुगिसवेदवपस्स
चउगइमिच्छाइट्ठि-मामणमम्माइट्ठि-मम्मामिच्छाइट्ठि असंजदमम्मादिट्ठिणो सामी । दुगइसंजदा
संजदा सामी, देव-गिरयगइमु तत्त्वावादा । उवरिमा मनुसगइए सामी, मण्णत्त्व पमत्तादीण-
ममावादो । पुगिसवेदवधो मध्यगुणद्वारेणु मादिगो बद्धुवो, पडिवक्खपमहीणं वंधुवल्हमादो ।
णियमेण सम्मामिच्छाइट्ठिणहुट्ठि उवमिमेसु वंधविणासदसप्पादो । कावसंजलणम्म मिप्पमइट्ठिमि
चउम्बिहो वधो, धुवपवित्तदो । उवमिमेसु तिविहा, धुवसामावादो ।

माण मायसजलणाण को वधो को अवधो ? ॥ २३ ॥

सुगममेदं ।

वैश्वगतिसे संयुक्त बांधन है क्योंकि यहाँ गतियोंका बन्ध नहीं होता । अपूर्वकारणसे
सातवें सप्तम माणसे लेकर उपरिम जीव मगतिसंयुक्त पुरुषवैश्वको बांधते हैं क्योंकि
यहाँ गतिकर्मका बन्ध नहीं होता । इसी प्रकार सम्बलनकोषके भी कहना चाहिये ।
विरोध इतना है कि मिष्पाहट्टि उमे जाए गतियोंसे संयुक्त बांधता है क्योंकि यहाँ
मरकगतिके साथ उसका बन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

पुरुषवैश्वके बन्धक चारों गतियोंपाल मिष्पाहट्टि, सासात्तमम्यगट्टि, मय्य
मिष्पाहट्टि और असंयत्तसम्यगट्टि स्थानी हैं । दो गतियोंबान्ने संयतामयत्त स्थानी हैं
क्योंकि वृक्ष व मरक गतिमें संयतासंयताओंका समाप है । ऊपरका जीव समुप्यगतिके ही
स्थानी हैं क्योंकि, वृक्षी गतियोंमें ममत्तसंयतात्रिकोंका समाप है । पुरुषवैश्वका बन्ध मय्य
गुणस्थानोंमें सादिक व अभुय है क्योंकि यहाँ प्रतिपन्न प्रवृत्तियोंका बन्ध पाया जाता है
नियमसे सम्यगिमिष्पाहट्टिसे लेकर उपरिम गुणस्थानोंमें प्रतिपन्न प्रवृत्तियोंका बन्ध
पिनाश दृष्टा जाता है । सम्बलनकोषका मिष्पाहट्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध
होता है क्योंकि, वह छयबन्धी है । उपरिम गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है
क्योंकि, यहाँ भुय बन्धका समाप है ।

सम्बलन मान और मायाकर कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २३ ॥

यह धृत्त सुगम है ।

मिच्छाद्विष्णुद्वि जाव अणियद्विवादरसांपराइयपविट्टवसमा
स्ववा वधा । अणियद्विवादरद्वाए सेसे सेसे सखेज्जामाग गतूण वधो
वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २४ ॥

‘मिच्छाद्विष्णुद्वि जाव अणियद्विवादरसांपराइयपविट्टवसमा खया वधा’ एदम
सुतावयवेण पचद्दाम गइगणम विना गुणहाणायवंपसमिचं व बुलं । ‘अणियद्विवादरद्वाए
सेसे सम संसेज्जामागं गतूण वधा वोच्छिज्जदि’ एदम सुतावयवेण पचविष्णुद्वि
कोपसंज्जमे विषये जो अवसेसा अणियद्विवादरद्वाए संसेज्जदिमागो तमिह संसेज्ज खी कद
तत्थ बहुमागं गतूण एयमागावसेमे माजनंज्जन्तस्स वधयाच्छेदो । पुनो तमिह एगखे
संसेज्जन्ति कद तत्थ बहुखे गतूण एगखत्तसेमे मायामज्जमवधोच्छेदो ति । कम्मदं
बन्धे ? ‘समं समं संसेज्जं मागे गतूणति’ मिच्छाभिरेसात्ता । कत्तापपाहुइसुत्तमेदं सुत्तं
विस्सुद्धि ति सुत्ते सत्थं विस्सुद्धि, किंतु एयंतगाहो एत्थ न कप्पय्यो, इदमव तं पेव

मिष्पाएएमे ठस अतिवृत्तिरूपवात्तसाम्पराधिक्यविष्ट उपशमक व क्षपक तत्त
बन्धक है । अनिवृत्तिवादरकालकं शप क्षपे संख्यात बहुभाग जाकर पच भुञ्जिह हाता
है । यं बन्धक है, मय भीर बन्धक है ॥ २४ ॥

मिष्पाएएमे केकर अतिवृत्तिरूपवात्तसाम्पराधिक्यविष्ट उपशमक व क्षपक
तत्त बन्धक है इस सूत्रावयवसे बन्धावाम भीर गतिगत बन्धस्यामित्यक्त विना गुण
स्यामगत बन्धस्यामित्य मी कहा गया है । अतिवृत्तिरूपवात्तकं शप शेषम संख्यात
बहुभाग जाकर बन्ध भुञ्जिह हाता है इस सूत्रावयव द्वारा बन्धविमलस्यातकी
प्रकृष्टता की गई है । संख्यजनकोषे विनष्ट हानिपर जो शेष अतिवृत्तिवात्तकाकम
संख्यातकी माग रहता है उसका संख्यात प्रण करनेपर बन्ध बहुमागोकी विनाशक एक
माग शेष रहनेपर संख्यजनमात्रका बन्ध भुञ्जिह होता है । पुनः एक लक्षके संख्यात
बन्ध करनेपर उनमें बहुत खण्डोंकी विनाशक एक प्रण शेष रहनेपर संख्यजनमात्रका
बन्ध भुञ्जिह हाता है ।

शंख—यह कैसा जाता जाता है ?

समाधान—शेष शेषम संख्यात बहुभाग जाकर इस बीसा अधात वा बार
निर्देशमे एक प्रकार बलों प्रकृष्टताका भुञ्जिहकाल जाना जाता है ।

शंख—कयापपाहुलके सूत्रम हो यह सूत्र विधधरा मान हाता ?

समाधान—यही आशय हानिपर करते हैं कि सबमुक्तमें कयापपाहुलके सूत्रसे
यह सूत्र विस्सुद्धि है, परन्तु वहां एकान्तप्रद नहीं करता बाह्य क्योंकि, यही सत्य है

सम्भमिदि सुदकेवलीहि पञ्चवस्वणापीहि वा विणा अवहारिन्त्रमाणे मिच्छत्तपसंगादो । कथं सुत्तापं विरोहो ? न, सुतोवसहसार्णमसयलसुद्धधारयाहरियपरतताम विरोहसमवदसपान्दो । उवसहसार्णं कथं पुन सुत्तत्वं जुज्जवे ? न, अमियसायरजलसस अलिज्जर-घड-पडी-सरासुद्धचप गयसस वि अमियतुवत्तमानो ।

संपदि एदेण सुद्धत्वाण परवृत्तणा कीरद । त जहा— एदासिं द्राण्ण पयसीप पभोदया अक्कमेण वोचिहन्नेति, उदए विजेरे वषाणुवत्तमादो । न च उदयदाक्खएण उदयसस विणासो एत्थ विवक्खिओ, सतोवसम-सएहि समुप्पण्णुदयामावेण अहियारादो । एदासिं सोदय-परोदएहि वंधो, भिरंतरवधीण सांतस्सुदयार्णं सोदण्णेव वषविरोहादो । भिरतर वंधीओ, पुववंधीहि सह पाद्दादो । मिच्छद्दिट्ठिण्हुडि जे पञ्चया मत्तुत्तरणभेगसमयमेयमिप्पा पुव्वं परवृत्तिदा तग्गुणविमिद्धजीवा तेहि धेय पञ्चएहि एदामो पयसीओ वंधति, पञ्चयतरा

या ' वही सख है येना भुतकवमियो अघसा प्रत्यक्षज्ञानियों विला मित्रय करनपर मिथ्यात्यका प्रमय होगा ।

शंका—सूचोंक विरोध कैम हो सकता है ?

समाधान—यह शका ठीक नहीं क्योंकि मरु भुतक धारक भाषायोंक परतंत्र सूत्र व उपसंहारोंके विरोधकी सम्भावना देखी जाती है ।

शंका—उपसंहारोंक सूत्रपना कैम उचित है ?

समाधान—यह भी शका ठीक नहीं क्योंकि अलिज्जर (घटविधोय) घट घटी धाराय व उद्बन्धन भाद्रिम स्थित भी समुत्तसागरक जलमें समुत्तत्व पाया ही जाता है ।

अब इस सूत्रके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्रकृषणा करत हैं । वह इस प्रकार है— इन शानों प्रकृतियोंका वन्ध और उद्बन्ध दोनों एक साथ व्युत्पिच्छ होते हैं क्योंकि इनके उद्बन्धकनए हानेपर फिर वन्ध नहीं पाया जाता । और यहाँ उद्बन्धकामक समयमें हेमेषाका उद्बन्धका विनाश विवक्षित नहीं है क्योंकि सत्त्वोपशम या सत्यसत्यस उद्बन्ध उद्बन्धामावका अधिकार है । इन दोनों प्रकृतियोंका व्योदय परोदयन वन्ध होता है क्योंकि, निरन्तरवन्धी और साम्तर उद्बन्धवासी प्रकृतियोंका स्वादयमें ही वन्ध हानका विरोध है । व निरन्तरवन्धी प्रकृतिपां हैं क्योंकि, व भुववन्धी प्रकृतियोंके साथ मानी हैं । मिथ्यादृष्टि सत्कर मूम उत्तर व माना पर्य एक समय सद्गन्धी भेदोंम मिथ आ प्रत्यय पूर्वमें कह जा चुके हैं उन गुण स्थानोंम विशिष्ट जीव उन्हीं प्रत्ययोंम इन प्रकृतियोंका बांधन है क्योंकि अन्य प्रत्ययोंका

१ अत्रता सुतात्मवाराणा आ-वाद्रता सुतात्मवाराणा इति वात ।

२ अ-अप्रतो उद्बन्धवाच वाद्रता नहिदयार्ण इति पाठ ।

भावाधो । अवधा, एदमि संजलणेदयनिसेमो येव पस्सभा, तण विष्ठा वपल्लुवत्तेमदा ।

मिच्छादिद्वी चउगइसंजुत, तस्स सप्पगइयंवेहि विरहामावाधो । सामणो तियइसंजुत, तस्स णरसगइयंवेध सह विरहणा । मम्मामिच्छादिद्वी असज्जदसम्मादिद्वी च दुगइमेजुत वंषति, तेमिं विरम-त्तिरिक्खगइहि सह विरहादा । उवरिमा देवगइ अगइमेजुत वा वंषति, तेमिं सेमगइहि सह विरहादा । मिच्छादिद्वी सामणमम्मादिद्वी सम्मामिच्छादिद्वी असज्जदसम्मादिद्वी चउगइया, दुगइमबदामनदा, संमा मणुस्सगइया मामी । वपडाण वपवाप्पिगज्जणं च सुमुदिद्विमि सुमं । मिच्छादिद्विस्स चउविधो वधा, पुववंषितादा । सेमाव निविहा, पुवत्तामावादा ।

लोभसजलणस्म को वधो को अवधो ? ॥ २५ ॥

सुगमं ।

मिच्छादिद्विप्पहुडि जाव अणियद्विवादरसांपराइयपविट्ठउवसमा खवा वधा । अणियद्विवादरद्दाए चरिमसमयं गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ २६ ॥

अभाव है । अथवा इन प्रकृतियोंका संयोजनका उद्देश्यविना ही प्रत्यय है, क्योंकि, उसके बिना इनका बन्ध पाया नहीं जाता ।

मिथ्यादृष्टि होने और गतिधर्मोंसे संयुक्त बांधता है, क्योंकि, उसके साथ गतिधर्मोंके बन्धके साथ धर्म विरोध नहीं है । साक्षात्तसम्पत्ति ही गतिधर्मोंसे संयुक्त बांधता है क्योंकि, उसके नरकगतिबन्धके साथ विरोध है । सम्परिमप्यादृष्टि और असंपत्तिसम्पत्ति दो गतिधर्मोंसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि उनके मरक व तिर्यग्गतिके साथ बन्ध होनेमें विरोध है । अपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त या गतिसंयोगसे रहित बांधते हैं क्योंकि उनके दोष गतिधर्मोंके साथ बन्ध होनेमें विरोध है । मिथ्यादृष्टि, साक्षात्तसम्पत्ति, सम्परिमप्यादृष्टि और असंपत्तिसम्पत्ति चारों गतिधर्मोंके ही गतिधर्मोंके संयोजनसे ही दोष गुणस्थानवर्ती जीव मनुष्यपतिवर्ती जाती हैं । बन्धाभाव और बन्धप्युच्छिन्नस्थिति बन्धि सूत्रप्रतिपादित है अतः सुगम है । मिथ्यादृष्टिके इनका चारों प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, वे भुववन्धी प्रकृतियाँ हैं । दोष जीवोंके भुववन्धका अभाव होनेसे तीन प्रकारका हो बन्ध होता है ।

संयोजनलेमक केन बन्धक और केन वधन्यक है ? ॥ २५ ॥

यह सून सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिष्टविचाररसान्तरात्मिकप्रविष्ट उपसमक और क्षणिक तक बन्धक है । अनिष्टविचाररकृत्तके अन्तिम समयके प्राप्त होकर जब प्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक है, दोष जीव अपन्धक है ॥ २६ ॥

‘मिच्छादृष्टिपुद्गि०’ एदेण सुत्तावयवेण वधदापं गुणद्वयगयसामितं च परूषिदं ।
 ‘अणियद्विवादर०’ एदेण वधविजहृष्टापपरूषणा कदा । एदेसि तिर्णं चैवरथापं परूषणा
 कदा सि देसामासियमुत्तमेदं । तेजेइण सूइदत्थाण परूषणा कीरेदे । तं जहा—

धंधो पुनं वोच्छिन्नदि पञ्च उदओ, अणियद्विचरिमिसमए वधे वोच्छिण्णे सुहुम
 सापराइपरिमिसमए उवयवोच्छेदुवल्भादो । स्त्रेमसज्जलणस्स सोदय-परोदएइ धंधो, पुवो
 दयत्तामावादो । गिरतरो धंधो, धुवधंधितादो । पञ्चयपरूषणाए माणसंजलणमंगो । गइसंहुत्त
 सामित्तदाण-वधवोच्छिन्नप्राणपरूषणाभो सुगमाभो । मिच्छादृष्टिम्म चउभ्विदो धंधो, धुव
 धंधितादो । सेमापं तिज्जिहो वधो, धुवत्तामावादो ।

हस्त-रति मय-दुगुलाण को वधो को अवधो ? ॥ २७ ॥

सुगम ।

मिथ्यादृष्टिसे केकर भवितुं शक्यतामपराधिकप्रति उपशमक और क्षयक तक
 पञ्चक है इस मूत्राश द्वारा वधोप्याम और गुणस्थानगत वधस्यामित्वरी प्ररूपणा
 की गई है । ‘अभिवृत्तिबाधकानक भस्तिम समयक प्राण हाकर पञ्च व्युत्पिउय होला है
 इस मूत्राश द्वारा वधव्युत्पिउतिम्यानक निरूपण किया गया है । वृत्ति मूत्र द्वारा इन्हीं
 तीन मर्थोंकी प्ररूपणा की गई है अतएव यह वेशामशक मूत्र है । इस कारण इसक द्वारा
 स्थित मर्थोका निरूपण करने हैं । यह इस प्रकार है—

मंत्रमनमोमक वध पूर्वमें व्युत्पिउय हाता है पश्चात् उच्य । क्योंकि अभिवृत्ति
 करणक भस्तिम समयमें वधके व्युत्पिउय हाजानपर सूक्ष्माभ्यागपिकक भस्तिम समयमें
 उच्यक व्युत्पिउ पाया जाता है । मंत्रमनमोमका व्योदय-परादयम वध होता है
 क्योंकि, उनक ध्रुवोदयवधका अभाव है । वध उनक निरन्तर है क्योंकि, यह ध्रुववधो
 है । प्रत्येकी प्ररूपणा मंत्रमनमोमक समाप्त है । गतिमैयुक्तता स्थामित्य अप्याम और
 वधव्युत्पिउतिरूपानकी प्ररूपणायें सुगम हैं । मिथ्यादृष्टि खाते प्रकाशका वध होता है
 क्योंकि यह भयवधो प्रकटि है । शय जीवोंक तीन प्रकारका वध होता है क्योंकि,
 उनक ध्रुववधका अभाव है ।

हाम्य, रति, मय और दुगुला प्रकृतिपोंस कन वधक है और कन अवधक
 है ? ॥ २७ ॥

यह मूत्र सुगम है ।

मिच्छाद्विषहृदि जाव अपुञ्चकरणपविट्टवसमा स्वा बंधा ।
अपुञ्चकरणद्वाए चरिमसमय गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा,
अवसेसा अवधा ॥ २८ ॥

एदेव बंधद्वय गुणगवंधमासिध पंधविषहृदयं च परस्मिन् । तेमेरं हेसाम्मसिधं
बद्धमप्यस्य हेससत्त्वापमेरव समवामावाधो । तेनदेव सुहरवपरूवना कीरदे— हस्स-रि
मय-दुगुळ्ळं बंधोदया सम वाच्छिज्जति, अपुञ्चकरणचरिमसमयं बद्धमं वोच्छेदुवत्माधो ।
सोदय-परोदपरि बंधो, पुनोदयत्तमावाधो परोदए वि पधविरोहामावाधो । मय-दुगुळ्ळं
सम्बगुणद्वयेसु भित्तरो बंधो, पुनबंधपिताधो । हस्स-रदीण मिच्छाद्विषहृदि जाव पमत्संबरो
वि सान्तरो बंधो, एत्थ पधिवक्खपयविबंधुवत्माधो । उवरि पिरंतरो, पधिवक्खपयविबंधा-
मावाधो । पन्धयपरूवनाए माणत्तरवमगो । मिच्छाद्विषहृदि वडगइसत्तुस, एदासि बंधस
वडगइबंधेण सह विरोहामावाधो । पवरि हस्स-रदीमो तिगइसत्तुस बंधइ, तम्बवस

मिष्पाद्विषे केकर अपूर्णकरणप्रविष्ट उपशमक और द्वयक तक बंधक हैं । अपूर्ण-
करणसत्त्वे अन्तिम समयको प्राप्त होकर बंध व्युच्छिन्न होता है । ये वन्धक हैं, ध्व पीत
बन्धक हैं ॥ २८ ॥

इस सूत्रके द्वारा बन्धाव्याज गुणस्वातगत वन्धस्वामित्य और बन्धव्युच्छिष्टिस्थानको
प्रकरणका को है, इसीछिये इस देशामशक सूत्र समस्तता चाहिये सम्यथा वहाँ होय
अर्थकी सम्भावना नहीं है । अतएव इसका द्वारा सूचित अर्थको प्रकरणका करते हैं— हास्य
एति भय और दुगुळ्ळा इसका बन्ध और उच्च दानों साथ व्युच्छिन्न होत हैं क्योंकि अपूर्ण
करणके अन्तिम समयमें उक्त चारों प्रकृतियोंके बन्ध और उच्च दानोंकी व्युच्छिष्टि पायी
जाती है । इनका बन्ध स्वोत्पन्न परोक्षम होता है क्योंकि ये पुनोदयी प्रकृतियों नहीं हैं अतः
इनके परोक्षमसे ही बन्ध होमेम कार्य विरोध नहीं है । मय और दुगुळ्ळाका सब गुणस्वामोंमें
मिरल्लर बन्ध है क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं । हास्य और एतिहा मिष्पाद्विषम केकर प्रमत्त
संपत्त तक साम्प्रत बन्ध है, क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है ।
प्रमत्तसंपत्तम ऊपर मिरल्लर बन्ध है, क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्धका जमाव
है । प्रत्यर्थकी प्रकरणका साम्प्रतजक समान है ।

मिष्पाद्विष चारों गतिबोले संयुक्त पांघने हैं क्योंकि मिष्पाद्विष इतक बन्धक
चार गतिबोले बन्धके साथ कार्य विरोध नहीं है । विशेष इतना है कि हास्य और एतिको
तीन गतिबोले संयुक्त बांधता है क्योंकि, इनके बन्धका मरकगतिज बन्धक साथ विरोध

भिरयगइवपेण सह विरोहादो । सप्पमो तिगइसद्धुत्त, तत्त्व भिरयगईए वधामावादो । सम्मा मिच्छइदि असज्जदसम्मादिट्ठिणो दुगइसद्धुत्त, एदेसिं भिरय-तिरिक्खगईए वधामावादो । उव रिमा देवगइमद्धुत्त वधंति, तेसु अण्णगइए वधामावादो । पवरि अपुप्पकरणद्वाए चरिमे सत्तमे भागे वट्टमाणा अगइसद्धुत्त वधंति सि वत्तव्व । चउगइमिच्छइदि-सासणसम्माइदि-सम्मामिच्छइदि-असज्जदसम्मादिट्ठिणो सामी । दुगइमज्जासज्जा, देव-पेरएएसु अणुप्पईणममावादो । उवरिमा मणुस्सा भेव होदण एदासिं पवस्स सामी, अण्णस्य पमत्तादीणममावादो । वधद्धानं वध विणट्टद्धानं च सुगमं । मय-दुगुंकाण मिच्छइदिमिह चउमिहो वधो, पुववधित्तो । उवरिमेसु तिविहो वधो, पुवत्तामावादो । इस्म-रदीप वधो सादि-अद्धो, पडिवक्खपयडिवपुवत्तमादो ।

मणुस्साउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ २९ ॥

एद देसामासियं पुच्छासुत्तं । तेण को पधमो को अवधमो, किमेदस्स वधो पुप्प वोच्छिज्जदि किमुदमो किं दो वि सम वोच्छिज्जति, किं सोदण्य परोदण्य किं सोदय

है । सामाज्यमसम्प्रादृष्टि तीन गतिपौत्र संयुक्त बांधता है क्योंकि, वहां नरकगतिक बन्ध नहीं रहता । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतमसम्प्रादृष्टि दो गतिपौत्र संयुक्त बांधते हैं क्योंकि इनके नरकगति और निर्यगगतिक बन्धका समाप है । उपरिम और देवगतिते संयुक्त बांधते हैं क्योंकि उनमें अन्य गतियोंका बन्ध नहीं होता । बिशेष इतना है कि मपूर्व करणकालक प्रमितम मत्तम मार्गमें वर्तमान जीव भगतिमयुक्त बांधते हैं ऐसा कहना चाहिये ।

चार गतिपौत्राणं मिथ्यादृष्टि, सामाज्यमसम्प्रादृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतमसम्प्रादृष्टि स्वामी है । दो गतिपौत्राणं संयतार्थयत स्वामी हैं क्योंकि देव और मारुतिकपौत्रे अनुमनियौक्य समाप है । उपरिम और मनुष्य ही होकर इनके बन्धके स्वामी हैं क्योंकि, अन्यत्र प्रमत्तादिकौक्य समाप है ।

वर्धाध्माय और बन्धगुच्छेदस्याय सुगम है । मय और पुण्यसाध्य मिथ्यादृष्टि गुणस्यायमें चारों प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, ये अवयवही महतिर्या हैं । उपरिम गुणस्यायनोम तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, वहां छत्र बन्धका समाप है । हान्य और रतिक बन्ध सादि मध्य है क्योंकि इनकी प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंका बन्ध उपलब्ध है ।

मनुष्यायुका कौन वधक और कौन अवधक है ? ॥ २९ ॥

एद देसामशक पृच्छासुत्तं है । इस कारण कौन बन्धक कौन अवधक, क्या इसका बन्ध पूर्वमें स्पृष्टिष्ठ होता है क्या उद्य या क्या शर्मो ही साथ स्पृष्टिष्ठ होता है, क्या स्थोदयम क्या परोदयम या क्या भ्योदय परोदयम बन्ध होता है, क्या इसका

परोक्षएव, किं सांतरं किं विरंतरं किं सांतर-विरंतरं, किं पञ्चएहि किं तेहि विना, किं गश्तं किं किमगश्तं किं ब्रह्म, एदस्म ब्रह्मस्व कदिगदिया समी ब्रह्ममी वा, किं ब्रह्मज्ञानं, किं परिमसमए ब्रह्मो बोधिञ्जहि किं पञ्चमसमए किमपञ्चम-अपरिमसमए ब्रह्मो बोधिञ्जहि, किं सदिभो किमगदिभो किं भुवो किमद्भुवो ब्रह्मो वि एदाओ पुष्पभो एरथ कयप्पाओ । पुणे पुष्पिञ्जजणसुमाहट्टं उत्तरसुत्तं भणदि—

मिञ्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी असंजदसम्माहट्ठी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधधा ॥ ३० ॥

एतत् ब्रह्मज्ञानं गुणरूपाणि अस्तिदूषणं ब्रह्मसामितं च उक्तं, तेन इदंरमाणं फलवत्तां कीरे । तं नह्य— मनुस्माठमस्म पुत्र ब्रह्मो बोधिञ्जहि पञ्च उदयो, असंजदसम्मा-
रिद्धिहि ब्रह्मब्रह्म मनुसाउमस्स ब्रह्मणिपरिमसमए उदयबोण्ठेनुवठंमारो । मिञ्छाहट्ठी-
सासणसम्मारिद्धिबो सोदएण परोक्षएण वि मनुसाउमं पवंति, अविरोद्धारो । असंजदसम्माहट्ठी
परोक्षएव, सोदएण सह तत्त्व ब्रह्मविरोद्धारो । विरंतरो ब्रह्मो, ब्रह्ममाणमव पडिबकसपयदीए

ब्रह्म सात्त्विक, कया विरन्तर, वा कया सत्त्विक-विरन्तर है, कया मत्त्वपूर्ण या कया उनके किता
ही ब्रह्म होता है कया गतिरहित या कया अगतिरहित ब्रह्म होता है इसके ब्रह्मके फलवत्ता
गतिरहितके स्वामी भवता अस्वामी है ब्रह्ममाणम कया है कया अरुण समयमें ब्रह्म व्युत्पन्न
होता है कया मध्यम समयमें वा कया अमध्यम मध्यम समयमें ब्रह्म व्युत्पन्न होता है। कया
सात्त्विक, कया असात्त्विक, कया शुद्ध वा कया अशुद्ध ब्रह्म होता है। इन प्रश्नों का बताना करना
चाहिये । फिरसे पूछाशुद्ध अर्थात् मनुमहर्षि किये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिथ्याहृदि, सासाह्नमसम्यग्दृष्टि जीव अर्थात्सम्यग्दृष्टि वन्धक है । ये बन्धक हैं,
येप जीव बन्धक हैं ॥ ३ ॥

इस सूत्रमें ब्रह्ममाणम और गुणस्वान्तर्गत साधनकर ब्रह्मस्वमित्त्व ही कहा गया
है इसलिये जन्म मर्त्योत्थ प्रकृतिवा करने है । वह इस प्रकार है— मनुष्याशुद्ध पूर्वमें ब्रह्म
व्युत्पन्न होता है अर्थात् उदय कयाकि, असंजदसम्यग्दृष्टि गुणस्वान्तर्गत मनुष्याशुद्ध
ब्रह्मके व्युत्पन्न होजायेपर अयोपकेबर्धके अन्तिम समयमें उदयका व्युत्पन्न पाया जाता
है । मिथ्याहृदि और सासाह्नमसम्यग्दृष्टि अज्ञान और परोक्षस भी मनुष्याशुद्धो बांधते
हैं कयाकि, इसमें कोई विरोध नहीं है । अर्थात्सम्यग्दृष्टि परोक्षस ही मनुष्याशुद्धो
बांधते हैं कयाकि अज्ञानके साथ ब्रह्म होनेका इस गुणस्वान्तर्गत विरोध है । इसका
ब्रह्म विरन्तर है कयाकि, ब्रह्ममाणम मर्त्यमें मणिपद महर्षिके ब्रह्मके किता इसके ब्रह्मकी

संघेन विषा संघपरिसुमत्तिदमणा । संघविरोहा अंतगमिदि किण्ण पेप्पदे ? न, पडिवक्ख
 पयस्सिधकदत्तेण एत्थ पमोयणाणे । मिच्छदिट्ठिस्स मूलत्तप्पाणेगममयज्जहणुत्तकस्सपप्पया
 पाणावरणहि सुत्ता चेत्त होंति । गउरि पाणाममयउक्कस्सपप्पया तेक्कप्पे होंति, वेउभिय
 मित्थ कम्मइयाणममावादा । मासुणस्स पाणाममयउक्कस्सपप्पया मत्तेताळिस्स, ओरात्तियमित्थ
 वेउभियमित्थ-कम्मइयाणममावादो । असंजदस्समाइट्ठिस्स मणुमाउअ संघमाणम्म मूलपप्पया
 निण्णि, मिच्छत्तामावादो । एगममइयज्जहणुत्तकस्सपप्पया पत्त मोत्तम् । पाणाममयउत्तरपप्पया
 पादाउ, आरात्तिय-ओरात्तियमित्थ-वेउभियमित्थ-कम्मइयाणममावादो । निण्णि वि गुणट्ठाणाणि
 मनुस्सगइयेत्तुसं बरंति, तत्तपधम्म अण्णगइहि सह विरोहादो । चउगइमिच्छइट्ठि-सासुण
 सम्माइट्ठिणे मामी । दुगइअयेत्तुसम्मादिट्ठिणा सामी, निरिक्ख-मणुस्सगइदिदअसंजद
 सम्मदिट्ठिण मणुस्माउसंघेन विरोहादा । संघट्ठाण सुगमं । संघवोत्थेणे असंजदमम्मादिट्ठिस्स
 अपइम-अचग्गिममए । मणुस्माउअस्स संघा माटि-अदुवो, पैयस्स धुवत्तामावादो ।

समानि बर्त्ता जाती ह ।

शुक्र—बन्धक पिगध ही अस्तर है एसा क्यों नहीं ग्रहण करत ?

समाधान—ऐसा ग्रहण इसलिय नहीं करत कि यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिक बन्ध
 टाए किये गए अस्तरम् प्रयाजन है ।

मिथ्यादृष्टिक मूल और उत्तर माना य एक समय सम्बन्धी अणुय एवं उत्कृष्ट
 प्रत्यय ज्ञानावरणमें बद्ध हुए ही होते हैं । विचार इतना है कि माना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट
 प्रत्यय निरपेक्ष होते हैं क्योंकि वैकल्पिकमित्र और कार्यय कप्रयोगका यहाँ अभाव है ।
 साक्षात्तसम्बन्धदृष्टिक माना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय स्वाधीन होते हैं क्योंकि, यहाँ
 औद्धारिकमित्र वैकल्पिकमित्र और क्रमण कार्ययोगिता अभाव है । मनुष्यायुक्त बांधने
 वाले अर्धयत्तसम्बन्धदृष्टिक मूल प्रत्यय हीन होते हैं क्योंकि उसके मिथ्यात्वका अभाव है ।
 एक समय सम्बन्धी अणुय य उत्कृष्ट प्रत्यय नी और साम्य होते हैं । माना समय सम्बन्धी
 उत्तर प्रत्यय स्वाधीन होते हैं क्योंकि यहाँ औद्धारिक, औद्धारिकमित्र वैकल्पिकमित्र
 और कार्यय कप्रयोगिता अभाव है ।

तीनों ही गुणस्थान मनुष्यगतिमें संयुक्त बांधत हैं क्योंकि, उसके बन्धक
 अणु गतिपोंके साथ विशेष है । बाँध गतिपोंवाले मिथ्यादृष्टि और साक्षात्तसम्बन्धदृष्टि
 स्वामी हैं । दो गतिपोंवाले अर्धयत्तसम्बन्धदृष्टि स्वामी हैं क्योंकि, तिर्यग्गति और मनुष्य
 गतिमें स्थित अर्धयत्तसम्बन्धदृष्टिपोंके मनुष्यायुक्तबांधने विरोध है । बन्ध्यापान सुगम है ।
 बन्ध्यापान अर्धयत्तसम्बन्धदृष्टिक अग्रयम बन्धन समयमें होता है । मनुष्यायुक्त बन्ध
 साहि-अदुव है क्योंकि, उसके बन्धक धुवताका अभाव है ।

देवाउअस्स को बंधो को अबंधो ? ॥ ३१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाद्विती सासणसम्माद्विती असजदसम्माद्विती संजदासजदा
पमत्तसजदा अप्पमत्तसजदा वधा । अप्पमत्तमजदद्वाए सखेज्जदिभाग
गतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३२ ॥

‘ मिच्छाद्वितीयद्विती ’ एदेण सुत्तावयवेण वधद्वारं गुणगयसामिधं च परुविदं ।
‘ अप्पमत्तमजदद्वाए ’ एदेण बंधविजद्वितीयं परुविदं । तिप्प भेव परुवणादो दसम्मासिन्ध-
सुत्तमिण । तेणेदेण सूद्वल्ले भविस्सामो । त जहा — एदस्स पुप्फमुदभो बोधिज्जदि पञ्च
बंधो, देवाउअस्स असंभदसम्मादिद्वितीयमसमए बोधिज्जमुदयस्स अप्पमत्तद्वारं ससंभदिमानी
गतूण बंधवोच्छेदुवर्त्तमादो । परोदएजेव बंधो, सोदएजदस्स तित्थपरस्सेव बंधविरोहादो ।
विरत्तये बंधो, पडिवक्खपयडिबन्धकयत्तमावादो ।

मिच्छाद्विस्स देवाउअ बधतस्स वत्थारि मूत्तपञ्चया । एगममइया जहणुक्कस्स-

देवासुक्क केन बन्धक और केन अबन्धक है ? ॥ ३१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिच्छाद्वि, सासणानमम्यगद्वि, असंयतसम्यगद्वि, संयतासंयत, प्रमत्तमयत, और
अप्रमत्तमयत बन्धक है । अप्रमत्तमयतकालके संस्कारावर्त्ते भाग जाकर बन्ध व्युत्पिन्न होता
है । ये बन्धक हैं, ऊपर नीचे अबन्धक हैं ॥ ३२ ॥

मिच्छाद्वि भावि अप्रमत्तमयत तक बन्धक है इस सूत्रांग ज्ञात बन्धा-
व्याज और सुत्तस्थानगत स्वामित्वार्थ प्रकृष्टा भी गई है । अप्रमत्तसंयतकालक
संस्कारावर्त्ते भाग जाकर बन्ध व्युत्पिन्न होता है इससे बन्धविजद्वितीयमानी प्रकृष्टा भी
है । इस हीन मयीही ही प्रकृष्टा करनेसे यह सूत्र वैशाल्यक है । इस कारण हमसे
सुचित मयीका कहत है । वह इस प्रकार है — बंधावृत्त पूर्वमे जय व्युत्पिन्न होता है
पश्चात् बन्ध वयोनि असंयतसम्यगद्वितीयमसमयमे इससे जयवर्त्त व्युत्पिन्न
ज्ञानपर पश्चात् अप्रमत्तकालक संस्कारावर्त्ते भाग जाकर बन्धव्युत्पिन्न पाया जाता है ।
इसका बन्ध परावृत्त ही होता है क्योंकि तीर्थंकर प्रत्येक समान स्वभावसे इससे
बन्ध ज्ञानका विरोध है । बन्ध इसका निरन्तर है वनाकि प्रतिपत्त प्रत्येक बन्धसे किये
गये मन्त्रावृत्त यही अभाव है ।

इपावृत्त बंधनपास मिच्छाद्वि मूल प्राप्त्य जात जात है । एक समय मन्त्रावृत्त

पञ्चया दस अट्टारस । पाणासमयउक्कस्सपञ्चया एककवंचास, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरात्थिमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणं तत्यामावादो । सासणसम्मादिट्ठिस्स पञ्चया देवाउअ बंधमाप्पस्स पाणावरणवत्तुत्थ । णवरि पाणासमयउक्कस्सपञ्चया छादात्, वेउव्विय-वेउ व्वियमिस्स-ओरात्थिमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो । असंजदसम्मादिट्ठिपञ्चयपरूपणाए पाणावरणमगो । णवरि पाणासमयउक्कस्सपञ्चया वादात्, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरा त्थिमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो । उवरिमेषु गुणट्ठप्पेसु पञ्चया देवाउअस्स पाणा वरणतुत्थ ।

संखे देवगइसज्जुत्तं, अण्णगइबंधेण देवाउअबंधस्स विरोहत्थो । तिरिक्ख-मणुस्सगइ मिच्छाइद्दी सासणसम्माइद्दी असंजदसम्माइद्दी संजदसंजदा सामी । उवरिमा मणुसा चेव, अण्णत्थ महव्वयाणमप्पुवत्तंमात्थो । बंधट्ठाणं सुगमं । अप्पमतट्ठाए संखेज्जदिमागे गदे देवाउअस्स बंधोचन्द्रो । अप्पमतट्ठाए संखेज्जसु मागेसु गदेसु देवाउअस्स बंधो वोधिज्जदि ति केसु नि सुत्तपोत्थएसु उवलम्माइ । तथो एत्थ उक्कसं लद्धं वत्तव्व । देवाउअस्स बंधो सादिमो भद्दुवो, भद्दुवपविचारी ।

अधन्य य उत्तुए प्रत्यय क्रमशः दृष्ट मीर मटारइ हाते हैं । नाना समय सम्बन्धी उत्तुए प्रत्यय इत्यादि हाते हैं क्योंकि यहाँ वैकल्पिक वैकल्पिकमिथ और औदारिकमिथ और कर्मज प्रत्ययोंका समाव है । देवायुका बांधनेवासे सामान्यसम्बन्धिके प्रत्यय ज्ञानावरणके बन्धक समान हैं । विशेष इतना है कि ज्ञाना समय सम्बन्धी उत्तुए प्रत्यय हयालीन हाते हैं क्योंकि वैकल्पिक वैकल्पिकमिथ और औदारिकमिथ और कर्मज प्रत्ययोंका यहाँ समाव है । असंयतसम्बन्धिकी प्रत्ययप्रकपणा ज्ञानावरणक समान है । विशेषता यह है कि ज्ञाना समय सम्बन्धी उत्तुए प्रत्यय हयालीन हैं क्योंकि वैकल्पिक वैकल्पिकमिथ और औदारिकमिथ और कर्मज प्रत्ययोंका यहाँ समाव है । उपरिम गुणहवानोंमें देवायुके प्रत्यय ज्ञानावरणके समान हैं ।

समी जीव दृवगतिसं संयुक्त बांधत हैं क्योंकि जन्म गतयाके बन्धके साथ देवायुके बन्धका विरोध है । निर्वच और मनुष्य गतिक मिच्छादि, सासाइनसम्बन्धिक असंयतसम्बन्धिक और संयतार्थगत स्वामी हैं । उपरिम जीव मनुष्य ही स्वामी हैं क्योंकि वृक्षरी गतियोंमें महामत्तोंका समाव है । बन्धाध्वन सुगम है । अप्पमतट्ठाके संख्यातबे मागक बीत जानेपर देवायुका बन्ध पुच्छेय होता है । अप्पमतट्ठाके संख्यात बहुमागोंके बीत जानेपर देवायुका बन्ध पुच्छेय होता है ऐसा किन्ही सुबुस्तकोंमें पाया जाता है । इस कारण यहाँ उक्कसं प्राप्तरूप कहना चाहिये । देवायुका बन्ध सादि व भट्ट है क्योंकि वह मट्टवचणी है ।

देवगह-पचिंदियजाति-वेउत्रिय तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस
सअण-वेउत्रियमरीर-अगोवग वण्ण गध रस फास देवगइपाओग्गाणु-
पुब्बि अगुरुवलहुव उवघाद परघाद उस्सास-पसत्थविहायगइ-त्तस वादर
पज्जत्त पत्तेयसरीर थिर-सुम-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज णिमिणणामाण का
वधो को अयंधो ? ॥ ३२ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्टिपुडि जाव अपुब्बकरणपइद्वउवममा खवा वधा ।
अपुब्बकरणदाए ममेज्जे भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा,
अवसेसा अयधा ॥ ३४ ॥

अथेय सुत्थ पंधदाल गुणगयमामिर्त्त पधविषद्वृत्तं पि य सुत्तं तज्जई देवामामिय ।
तदा एत्थं सुइद्वपस्सवा कइद्व— देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुब्बि-वेउत्रियमरीर-वेउत्रिय
अगोवगणामाण पुब्बसुत्ता वाच्छिज्जदि पच्छ वधो, अयंज्जमम्मात्तिहिदि जइद्वपाओग्गाणि
पठणं पयईणमपुब्बकरणदाए ममेज्जसु भागसु गदसु पंधवाण्डुवर्त्तमादा । तजा-कम्मइय-

दवगणि पंचन्द्रियजाति, चक्रियरु, तेजस व कम्मज शरीर ममचतुरसमस्थान,
चैत्रियिच्छरीरगाणां, वण गंध रस, मग, दवगणिप्रायोम्यानुपूर्वी, अगुरुत्तु, उपवाल,
परवाल, उच्छ्वास, प्रशम्नविहायगति त्रम पाण, पयाम, प्रत्येकशरीर, स्मिर, सुम, सुभग,
सुम्भर, भाद्रय और निमाज इन नामक प्रकृतियों का कर्तव्य पंधक और कर्तव्य अचन्धक
है ॥ ३३ ॥

यद म्थ सुगम ई ।

मिथ्यादिम तज्ज अपुब्बकरणप्रतिष्ठ उपशमक व क्षपक तद्व पन्धर ह । अपुब्बकरण
कम्मक मन्थ्यात बहुमागोवा विताकर इनका वध प्युच्छिष्ट होता है । य पन्धर है, क्षप
जीव अचन्धक है ॥ ३४ ॥

यूक्त इह म्थक आग वध्याप्याज गुणगयाजगल वामिन्ध और वध्याजिमदस्थानका
है निर्यो दिया गया है मतपक्ष यह दशात्मक म्थ ह । इस कारण इसका उपाय स्थिति
अपौरुषेय प्रकृत्या करत है—दवगणि दवगणिप्रायोम्यानुपूर्वी चैत्रियिच्छरीर भार चैत्रियिच्छ
पाटीरगाणां मायकर्मका पूर्णें उद्यमपुच्छिष्ट होता है पद्याज वध कर्त्तव्य अचन्धक
वद्वि गुणगयाजमे इह पाण प्रकृतियों उद्यमक वध दशात्मक पद्याज अपुब्बकरणकम्मक
मन्थ्यात बहुमागोवा विताकर इनका वधप्युच्छिष्ट पाया जाता है । तेजस व कर्मज शरीर,

सरिर-समचउरससंअण-वण-गध-रस-फमस-अगुरुअल्लुअ-उवधाद परधाद उस्सास-पसत्पविहाय
गह-पत्तेयसरिर बिर-सुम सुस्सर-पिमिणणामाण पुव पंचो वोचिअन्जदि पन्ध उदओ, अणुव
करणहि जहववाण एदामि पयणीं सजोगिचरिमसमयमि उदयवोच्छेदुयलंभादो । पंचिदिय
जादि सस-चादर पन्धत्त-सुमगादेन्नाण पि एव भेव । ठवरि एदासिमजोगिचरिमसम ए उदओ
वोच्छिण्णो ।

देवगह-देवगहपामोगाणुपुव्वि-वेउव्वियसरिर-वेउव्वियसरिरअगोवंगणामाण परोदएण
सव्वगुणहणेसु पंचो, परोदएण वज्जमाणएक्कमपयणीहि सह पादादो । तेजा-कम्मइय-वण
गध-रस फमस अगुरुअल्लुअ बिर-सुम पिमिणणामाभो सोदएणेव वन्धति, धुवादयतादो । पंचि
दियमादि-त्तस-यादर-पन्धत्तण मिच्छाइट्ठिहि पंचो सोदय परावओ । ठवरि सोदओ भेव,
तत्थ पडिवक्कुदयामावादो । समचउरसमअण-पसत्पविहायगह-सुस्सरणं सव्वगुणहणेसु
सोदय परोदओ, पडिवक्कुदयसंभवादो । सुमगादेज्जाण मिच्छाइट्ठि-सासणमम्माइट्ठि-सम्मामिच्छा
इट्ठि भसजदमम्माट्ठिसु सोत्थ परोदओ । ठवरि सोदओ भेव, पडिवक्कुदयामावादो । ठवधाद

समचउरससंअण-वण गध रस स्या अगुरुअल्लु अणुवधाद परधाद उच्छास
प्राप्तिविहायगति प्रत्यंरुशरीर स्थिर शुभ सुस्वर और निर्माण नामकमया पूर्वमे बन्ध
सुखिष्ठ हाता है पश्चात् उदय कर्णोकि अपूर्णकरणमे बन्धके मय हातापर पश्चात्
सयोगकयमीके अन्तिम समयमे इन प्रकृतियोंका उदयसुखिष्ठ पाया जाता है । पंचेन्द्रिय
जाति ब्रह्म बाहर पर्याप्त सुमग भार भाव्य इनका भी बन्धावयसुखिष्ठ इन्ही प्रकार है ।
विहायता यह है कि इनका उदय सयोगकयमीके अन्तिम समयमे सुखिष्ठ होता है ।

अथगति देवगतिप्रायोग्यामपूर्वी वैनिपिकारीर भार बन्धियनारीगांवांगका
बन्ध मय गुणस्याजोम परोदयस हाता है कर्णोकि य प्रकृतियां परोदयमे वधनेवासी ग्यारह
प्रकृतियां काय जाती है । तेजस्यकामज शरीर, वण गध रस स्या अगुरुअल्लु स्थिर
शुभ भार निर्माण य नामकमप्रकृतियां स्वादयस ही बधती है कर्णोकि य अणुवधी है ।
पंचेन्द्रिय जाति ब्रह्म बाहर और पर्याप्त प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्याहटि गुणस्याजोमे स्वादय
परोदयस हाता है । इसका ऊपर स्वादयस ही हाता है कर्णोकि यहां प्रतिपक्ष
प्रकृतियोंका उदयका अभाव है । समचउरससंअण-वण गध रस स्या अगुरुअल्लु स्थिर
शुभ गुणस्याजोमे स्वादय परोदयस बन्ध है कर्णोकि इसका प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदयका
अभावना है । सुमग और भाव्य प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्याहटि नामाइनसम्यहटि,
सम्यग्मिथ्याहटि एवं भयंयतसम्यहटि गुणस्याजोमे स्वादय परोदयस हाता है । इसके
ऊपर स्वादयस ही हाता है कर्णोकि यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदयका अभाव है ।

परपाद-उत्सास-पक्षेपसरीराण मिच्छाद्वि-साधनसम्माद्वि-मसंजदसम्मादिद्वीसु सादय-परोक्षो
 षंभो। अपन्त्रत्कले परपादुत्सासामुदयामावे वि, विमाहगदीए उवपाद पक्षेपसरीराण
 उदयामावे वि, मिच्छाद्वि-पक्षेपसरीरम्स सहाससरीरोदण सते वि षंभुवत्तमादो । वव
 सेसाण सादयो वेव, अपन्त्रस-माहाससरीरोदयाममावादो । गवरि परपादुत्सासाणं पमत्तमि
 सोदय-परोक्षो षंभो ।

तेजा-कम्माद्विपसरी-वण्ण-गंव रस-फास-अगुरुवत्तुव उवपाद-विमिणाण पिरत्तो षंभो,
 सुववन्तिपत्तो । देवगद-ववगद्वपाधोमाणुपुत्ति वेउध्वियसरीर-वउध्वियसरीरभंगोत्तगाण मिच्छ-
 द्वि-साधनसम्मादिद्वीसु सांतर गिरत्तो । कुटो ? वसंसेन्मवासाउअतिरिक्ख मणुत्सेसु भित्त
 वंभुवत्तमादो । उवरि गिरत्तो वेव, एगसमण्ण वंभुवरमागावादो । समवउरसंसेन्न-पसत्त-
 विहायगद-सुमग-सुम्भर आदेन्नाण सांतर-गिरत्तो मिच्छद्वि-साधनसम्मादिद्वीसु, मोममूपिपुसु
 भित्तवंभुवत्तमादो । उवरि भित्तं पडिक्खउपपडिक्खामत्तादो । पंथिदियवादि-त्तस-वातर

वपधात परधात उच्छ्वास और प्रत्यक्षशरीर प्रकृतिषोक्त मिथ्यादृष्टि साक्षात्तसम्बन्ध
 और अर्थात्तसम्बन्ध गुणस्थानमें स्वीकृत परोक्ष बन्ध है क्योंकि अपर्णातकाळमें परधात
 और उच्छ्वास प्रकृतिषोक्त उच्छ्वाका अभाव होनेपर भी उक्तका बन्ध विप्रवृत्तिमें वपधात और
 प्रत्यक्षशरीरके उच्छ्वाका अभाव होनेपर भी उक्तका बन्ध तथा मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें
 प्रत्यक्षशरीरके साधारणशरीरके उच्छ्वाक होनेपर भी बन्ध पाया जाता है । होय गुणस्थान
 पर्यां जीवोंके उच्छ्वाका बन्ध स्वीकृत ही है क्योंकि वहां अपर्णात और साधारणशरीरके
 उच्छ्वाका अभाव है । बिहोयता यह है कि परधात और उच्छ्वासका प्रमत्त गुणस्थानमें
 स्वीकृत परोक्ष बन्ध है ।

तिसस व काम्य शरीर, बर्ण बन्ध रस स्पर्श अगुरुवत्तु उवधात और निर्माज
 दमका निरन्तर बन्ध है क्योंकि ये भुवज्जी प्रकृतिषोक्त हैं । ववगति ववगतिप्रयोम्यानुपूर्वी
 वैकल्पिकशरीर और वैकल्पिकशरीरांग पांग इसका बन्ध मिथ्यादृष्टि और साक्षात्तसम्ब
 न्ध गुणस्थानोंमें सार्वत्र निरन्तर है । इसका कारण यह है कि अर्थात्तकर्तृपुष्क तिर्ब
 और मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है । इससे ऊपर निरन्तर ही बन्ध है क्योंकि,
 एक समयसे बन्धका बाधा नहीं रहता । समवउरसंस्थान प्रवृत्तिविहायगति सुमग
 शुस्वग और भवेय प्रकृतिषोक्त बन्ध मिथ्यादृष्टि और साक्षात्तसम्बन्धद्विषोमें सार्वत्र
 निरन्तर है क्योंकि, भोगमूमिपुष्कमें उक्तका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर
 निरन्तर ही बन्ध है क्योंकि, वहां प्रतिपत्त प्रकृतिषोक्त बन्धका अभाव है । पंथेद्विप-

पञ्चत पत्तेयसरीरणं मिच्छइट्ठिम्हि सांतर गिरंतरो यंचो । कुदो ? सणक्कुमाभादिदेव गेरइप्पसु भोगमूमीप्पसु च गिरतरमधुबलमादो । सासणादिस्सु गिरंतरो, पडिवक्खपयडिवंधामावादो । परपादुस्ससाण मिच्छ इट्ठिम्हि सांतर-गिरंतरो, देव-गेरइप्पसु भोगमूमीप्प च गिरंतरमधुबलमादो । सासणादिस्सु गिरंतरो, अपञ्जसयधामावादो । गिर-सुमारं मिच्छाइट्ठिप्पहुट्ठि जाव पमतो सि सांतरो । उअरि गिरंतरो, पिण्डिवक्खपयडिवंधादो ।

देवगद-देवगदपाओग्गाजुपुप्पि-वेउप्पियदुगाण मिच्छइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिओरा-
द्वियमिस्म कम्म-य-वेउप्पियदुगामावादो एककव्वाम-आपदात्थिमपच्चया । सम्मामिच्छ
दिट्ठिम्हि चादाठीमरच्चया, वेउप्पियकपजगामावाणे । असजदसम्मादिट्ठिम्हि चोदात्थिस
पच्चया, वेउप्पियदुगामावादो । अवसेसाण पयहीणं पच्चया सव्वगुणद्व्याणेषु [जाणावरण-]
पच्चयतुत्थ, विससकरणामावादो । अदि अत्थि तो चित्थिय वत्थ्यो ।

देवगद-देवगदपाओग्गाजुपुप्पिओ सव्वगुणद्व्याणजीवा देवगदसजुत्तं वधत्ति, अण्णगदइ
सह विरोहादो । वेउप्पियसरीर वेउप्पियमरीरभगोवंगाणि मिच्छइट्ठि देव-गेरइयगदसजुत्तं ।

जाति वत्त वत्तर पयात् और प्रत्येकशरीरक मिथ्याहृदि गुणस्थानमें साम्प्रत निरन्तर बन्ध
है । इसका कारण यह है कि समस्तभारतीय देशों मायिकियों और भोगमूमीयोंमें निरन्तर बन्ध
पाया जाता है । साम्प्रतन मादि उपरिम गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध है क्योंकि वहाँ
प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका समाव है । परन्तु और उक्तव्यासक मिथ्याहृदि गुणस्थानमें
वत्तर निरन्तर बन्ध है क्योंकि देव जातकी और भोगमूमीयोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता
है । साम्प्रतन मादि उपरिम गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध है क्योंकि वहाँ अपर्याप्तके
बन्धका समाव है । स्थिर भारद्वाज प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्याहृदिसे छेकर प्रसक्त तक साम्प्रत
है । ऊपर निरन्तर है क्योंकि वह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है ।

वृक्षगति देवगतिमायेन्यानुपूर्वी और वैकल्पिकश्रिकके प्रत्यय मिथ्याहृदि और
सासाजसम्प्रादृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे इत्यादि और छयाछीस है क्योंकि वहाँ
औद्यारिकमिध कर्मज और वैकल्पिकश्रिक प्रत्ययोंका समाव है । सम्प्रतिमिथ्याहृदि गुणस्थानमें
प्याछीस प्रत्यय है क्योंकि वहाँ वैकल्पिक कर्मयोगका समाव है । अर्थात्सम्प्रादृष्टि
गुणस्थानमें चबाछीस प्रत्यय है क्योंकि वहाँ वैकल्पिकश्रिकका समाव है । शेष प्रकृतियोंके
प्रत्यय सब गुणस्थानोंमें [ज्ञानावरणके] प्रत्ययोंके समान हैं क्योंकि विशेष कारणोंका
समाव है । और यदि है तो विचारकर कहना चाहिये ।

देवगति और वृक्षगतिमायेन्यानुपूर्वीको सब गुणस्थानोंके जीव देवगतिसे संयुक्त
बांधते हैं क्योंकि भाग्य गतियोंके साथ इनके बन्धका विशेष है । वैकल्पिकशरीर और
वैकल्पिकशरीरान्तोपांगको मिथ्याहृदि जीव देवगति व मरकगतिसे संयुक्त बांधते हैं । उपरिम

उत्तरिमगुणद्वयेषु द्वयगदमंभुत्वं बंधनि, सेमगुणद्वयाम् पिरयगदमंभुत्वं सह विरोधादौ ।
 पंषिदियत्रादि तेजा-कम्पद्वय-वण्ण-गध-रस-स्पर्श-अगुरुअलक्षुअ-उवपाद परपाद-उत्सास-उस-
 वात्तर पञ्चत पत्तेयमरीर-भिमिषणामामा मिच्छाद्विष्टा घटगदसद्वत्, सासणो विगदमंभुत्वं,
 मम्मामिच्छाद्विष्टि-अमंभदसम्मामिष्टिषो दुगदसद्वत्, उत्तरिमा देवगदसंभुत्वं बंधति । समचउरस
 मंयण पमत्थविहायगद-धिर-सुम-सुमग-सुस्मर-आदेयणामामो मिच्छाद्विष्टि-सासणसम्मामिष्टिषो
 निगदमंभुत्वं, पिरयगद-अमावादा । सम्मामिच्छाद्विष्टि-अमंभदसम्मामिष्टिषो दुगदमंभुत्वं,
 पिरय तिरिक्खगदमंभुत्वं । उत्तरिमा देवगदसद्वत्, सन्ध सेमगदमंभुत्वं बंधामावादा ।

देवगदि-देवगदिपात्राग्यानुपुप्पि उउत्थियमरीर सेउत्थियमरीरभंगोर्धगणामाण बंधस
 निरिक्ख मगुम्ममद मिच्छाद्विष्टि सामणमम्मामिष्टि-मम्मामिच्छाद्विष्टि-अमंभदसम्मामिष्टि-समंभदसंभद
 सामी । उत्तरिमा मगुमा बंध, अण्णरय तेस्मिमावादा । पंषिदियत्रादि तेजा-कम्पद्वयमरीर
 समचउरसमंयण-वण्ण-गध-रस-स्पर्श-अगुरुअलक्षुअ-उवपाद-परपाद-उत्सास-पमत्थविहायगद
 तम-वात्तर-पञ्चत-पत्तेयमरीर-धिर-सुम-सुमग-सुस्मर-आदेय-भिमिषणामामा घटगदमिच्छाद्विष्टि-
 सामणमम्मामिष्टि-मम्मामिच्छाद्विष्टि-अमंभदसम्मामिष्टिषो, दुगदमंभदसंभद, मगुमगदमंभदमो

गुणध्यानोम इवगलिस संयुक्त बांधत है क्योंकि, शत्रु गुणध्यानोका मरकगलियन्त्रक भाष
 निराध है । पंचभूतवज्राणि तैजस वकार्मण शरीर वर्ण गन्ध रस स्पर्श अगुरुअलक्षु उपपात
 परपात उच्छ्रयाण बंध वात्तर पयास प्रत्येकशरीर भीर निर्माण नामधर्मोका मिच्छाद्विष्टि
 कारणे गतिधाम संयुक्त सामाद्वयमम्यद्विष्टि तीन गतिधामे संयुक्त मध्यमिच्छाद्विष्टि व
 अमंभदसम्यद्विष्टि वा गतिधाम संयुक्त तथा उपरिम जीव इवगलिस संयुक्त बांधत है ।
 समचउरसमंयणाम प्रजान्तरिहायागति स्थित शुभ सुमग सुस्मर भीर भाव्य नाम
 धर्मोका मिच्छाद्विष्टि व सामाद्वयमम्यद्विष्टि तीन गतिधामे संयुक्त बांधते है क्योंकि, इसक
 बन्धक ग्राह उक्त मरकगलिक बन्धका अभाव है । मध्यमिच्छाद्विष्टि भीर असंभनमम्य
 द्विष्टि वा गतिधाम संयुक्त बांधत है क्योंकि उक्त मरकगलि भीर नियमानिक बन्धका
 अभाव है । उपरिम जीव इवगलिस संयुक्त बांधत है क्योंकि उनम शत्रु गतिधामे बन्धका
 अभाव है ।

इवगलि इवगलिमत्ताग्यानुपूर्वा पैकिपिकशरीर भीर पैकिपिकशरीरगतांग
 मामधर्मोके बन्धक निर्वच बभ्रुप गतिधाम मिच्छाद्विष्टि, सामाद्वयमम्यद्विष्टि मध्यमिच्छा
 द्विष्टि, अमंभदसम्यद्विष्टि भीर संयुक्तमंभन सामी है । उपरिम जीव मनुष्य ही सामी
 है क्योंकि, मध्यम प्रमत्तमंभनार्थिकोका अभाव है । पंचभूतवज्राणि तैजस व कार्मण शरीर,
 मरकगुणधर्मध्यान पत्ते गन्ध रस स्पर्श अगुरुअलक्षु उपपात परपात उच्छ्रयाण
 प्रजान्तरिहायागति बंध वात्तर पयास प्रत्येकशरीर स्थित शुभ सुमग सुस्मर भाव्य
 भीर निर्माण नामधर्मोके बन्धक कारणे गतिधाम मिच्छाद्विष्टि, सामाद्वयमम्यद्विष्टि
 मध्यमिच्छाद्विष्टि व अमंभदसम्यद्विष्टि, वा गतिधाम संयुक्तमंभन तथा मनुष्यगति

सामी । वधद्वय सुगम । अपुव्यकरणद सत्तखहाणि क्खज्जण खत्तहाणि ठवरि चडिय र
ख्खावसेमे वधो वोच्छिज्जदि । सुत्तामावे सत्त चेव ख्खाणि कीरति ति कष णव्वदे ।
आहरियपरपरामदुवदेसायो । तेजा-कम्मइयसरीर-वन्ध-गंध-रस-फणम-अगुरुवल्मुव-उव
विमिषणामात्म मिच्छदिद्विभिद चउच्चिहो वधो, धुवनवितादा । उवरिमगुणेषु ति
धुवत्तमावाधो । अवसेसाओ पयडीओ सादि-अद्दुवियाओ, पडिवक्खपयडिवधसंमयाओ,
धादुम्मासाणमपज्जत्तसत्त वधमाणकाले पडिवक्खवधपयडीण ममाव वि पंधामादुवल्मा

आहारसरीर-आहारसरीरअगोवगणामाण को वंधो
अवधो ? ॥ ३५ ॥

सुगममेव ।

अप्यमत्तसज्जा अपुव्यकरणपट्टउवसमा खवा वधा । अप्प
करणदाए सत्तेजे भागे गत्तूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे व
अवसेसा अवधा ॥ ३६ ॥

प्रमत्तसंयतादिक स्वामी है । वन्धावधान सुगम है । अपूर्वकरणकाएक साठ खण्ड करव
खण्ड ऊपर चढ़कर साठवें खण्डक शय रहनेपर उसका वन्ध स्फुटित हो जाता है ।

शुद्ध—खुदके अभावमें साठ ही खण्ड किय जाते हैं यह किम प्रकार
होता है ?

समाधान—नहीं यह भावार्थपरम्यदागत उपदेशान्नात होता है ।

तिसम य कामेण शरीर वधं गच्छ रस स्वशं मगुरुवल्मु उवधात भीर नि
नामकमोक्क मिध्यादधि-गुणस्थानमें जाये प्रकारका वन्ध है क्योंकि ये भुयस्सी प्रकृ
है । उपरिम गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका वन्ध है क्योंकि वही भुव यन्ध नहीं है ।
प्रकृतियां सादि व अभुव वन्धसं युक्त है क्योंकि उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वन्ध स
है । परमात्त भीर उच्छ्वासको अपर्णात संयुक्त बांधनक कालमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके व
अभावमें भी उसका वन्ध नहीं पाया जाता है ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरागोपांग नामकमोक्क कौन वन्धक और
अवन्धक है ? ॥ ३५ ॥

यह खल सुगम है ।

अप्रमत्तस्यत और अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक व धूपक वन्धक है । अपूर्व
कालके संस्त्यात बहुभागोंको बिताकर वन्ध स्फुटित होता है । ये वन्धक है, उप
अवन्धक है ॥ ३६ ॥

एवं दशामासिभ्यस्तु, पञ्चदश, सामित विजृम्भाय वि य परूषतादा । तेवरुष
सुखदशाप परूषता कीरद— एवमित्युदयो पुनं वोच्छिज्जदि पच्छा धेवो, पमत्तमज्जमि
महेदयानमेदामिमपुष्पकणमि बभवोच्छदुवत्तमादा । परादएणव एदाभा बज्जति, बह्म
हुगादयविहिदयपमत्तसु चैव पवोउत्तमादे । मितरं बज्जति, पडिवस्सपयडीव बवेव विष
बभमात्तादा । पञ्चपपरूषताए मूलुत्तमाजोगममयबह्मणुत्तस्सप चया शाणमरबम्स
वत्तमा । [अदि] चहुमंउत्तम-मयपेत्तस्साय-जोगा पापीस पच भाहारदुगस्स पच्चया तो सम्मसु
अप्पमत्तपुष्पकणेषु भाहारदुगवचप होदम्भ । न चव, तद्वापुवत्तमादा । तदा मज्झिहि ति
पच्चयहि होदम्भमिदि ? न एम दातो, इच्छिज्जमात्तादा । के ते बज्ज पच्चया अहि भाहार
दुगस्स वधा होदि ति सुते सुचद— नित्यपरादरिय-चहुसुद-पवयपाणुरामा भाहारदुग
पच्चयो । अप्पमादो वि सप्पमादेसु भाहारदुगवचपम्माणुवत्तमादो । अपुष्पस्सुपरिमत्तमम्भ

यह दोशामासिक सूत्र है क्योंकि यह बन्धाध्वान्त भगामित्य और बन्धधिनप्रस्थानना
ही प्रकृपण करता है । इसी कारण हम सूत्रसंश्लेषित मयोर्ध्व प्रकृपणा करते हैं— हम दोनों
प्रकृतियोंका उदय पूर्वमें व्युत्पिच्छ होता है पश्चात् पक्ष कर्षोक्ति प्रमत्तसंयतोमें इनका
उदयक मर हाजिलपर अपूर्वकरणमें बन्धव्युत्पन्न पाया जाता है । ये दोनों प्रकृतियाँ परा
दयसं वचनी हैं क्योंकि, भाहारदिकके उदयसं रहित मप्रमत्तसंयतोमें मयात् मप्रमत्त और
अपूर्वकरण गुणस्थामामें ही इनका बन्ध पाया जाता है । उक्त दोनों प्रकृतियाँ बन्ध
विरहित होता है क्योंकि प्रमत्तसंयत प्रकृतियोंका बन्धके बिना इनका बन्धना सम्भव पाया
जाता है । प्रत्ययप्रकृपणामें मूम व उत्तर माना एवं एक समय सम्मन्धी ज्ञानम्य उत्कृष्ट प्रत्यय
बलावरणके समान ही कहना चाहिये ।

शंकर—आर संज्जमम मी मोक्षपाय मीर मी योग इस प्रकार यदि बार्त ही
भाहारदिकक प्रत्यय है ता सर्व मप्रमत्त और अपूर्वकरण संयतोमें भाहारदिकका बन्ध
होना चाहिये । परन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि, बीसा पाया नहीं जाता । अत एव मन्त्र मी
प्रत्यय होना चाहिये ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि अन्य प्रत्ययोंका मानना भवाद ही है ।

मुद्र—ये अन्य प्रत्यय कीमत है त्रिमक ठारा भाहारदिकका बन्ध होता है ?

समाधान—हम शंकर उक्तम कहते हैं— तीर्थंकर, भाचार्य बहुभूत धर्मात्
उपाध्याय और प्रकृतन इनमें मयुराग करना भाहारदिकका कारण है । इसका अतिरिक्त
प्रमादका भभाव मी भाहारदिकका कारण है क्योंकि प्रमाद सहिद जीवोंमें भाहारदिकका
बन्ध पाया नहीं जाता ।

मिन्नण पवो ? ण, तत्थ तित्थयरत्तरिय-पहुसुद-पवयणविसयरगज्जिदससक्कराभावादो । देवगाइसुद्धो आहारदुगपवो, अण्णगईहि सह तम्पवविरोहादो । मणुसा पेय सामी, अण्णग्ग तित्थयरत्तरिय-पहुसुदरागस्स सन्नममहिंयस्स अपुवलमादो । पधदानं पधविणट्टट्ठाणं च सुगम, सुत्तणिदिट्ठत्तादो । सात्तिवो अद्दुवो च पवो, आहारदुगपन्धयस्स मादि-सपम्भवसाणत्त-दंसणादो ।

तित्थयरणामस्स को वधो को अवधो ? ॥ ३७ ॥

सुगमं ।

असजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपहट्ठउवसमा ख्वा वधा । अपुव्वकरणद्वाए सस्सेज्जे भागे गतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३८ ॥

एदं देसमासियसुत्तं, म्यामित-बंधदान-बंधविणट्टट्ठाणाण चेव पत्तवत्तादो । तत्तदेव

शुक्र—अपूर्वकरणक उपरिम सप्तम भागमें इनका बन्ध क्यों नहीं होता ?

समाधान—नहीं होता क्योंकि वहां तीर्थंकर, मात्मार्य बहुभुत और प्रबन्धन विरयक रागसे उत्पन्न हुए संस्कारोंका समाप है ।

आहारश्रिकका पन्ध देवगतित्ते संयुक्त होता है क्योंकि मध्य गतिपाक साथ उसका बन्ध होनका विरोध है । इनके बन्धक मनुष्य ही स्वामी हैं क्योंकि मध्यम तीर्थंकर, मात्मार्य और बहुभुत विरयक राग समय साहित पाया नहीं आता । बन्धाप्याम और बन्धविनष्टस्याम सुगम है क्योंकि ये स्वयं ही निर्दिष्ट हैं । ज्ञानों प्रवृत्तियोंका सादिक और अभुक्त बन्ध होता है क्योंकि, आहारश्रिकका प्रत्यय सादि और सपयबन्धमान देखा जाता है ।

तीर्थंकर नामकमकर कैरन पचक और कैरन अपन्धक है ? ॥ ३७ ॥

यह मूल सुगम है ।

असंततसम्यग्दर्शमे लेनर अपूर्वकरणप्रतिष्ठ उपशमक और क्षयक तक चपक है । अपूर्वकरणकालके सस्यात पहमागोंके विताक पच स्पृष्टिमत होता है । ये बन्धक हैं, शेष जीव अपन्धक हैं ॥ ३८ ॥

यह वक्ष्यामगक स्व है क्योंकि यह व्यामित्य बन्धाप्याम और बन्धविनष्टस्यामक

सूक्ष्मवर्णन कृत्स्नामो— तित्थयरस्स पुण्य बंधो वा छिन्नज्जि पप्पल उदरओ, अपुण्यकरन
 छसत्तममागपरिमत्तमए षट्ठवंधस्स तित्थयरस्स सज्जोगिपडमत्तमए उदयस्तादि कदूब
 बज्जोगिचरिमत्तमए उदयवोच्छेदुवर्लमादो । परोदयेणव षधो, तित्थयरकम्मुदयसंभवद्वान्तु
 सज्जोगि बज्जोगिजिण्णेषु तित्थयरबंधाजुवत्तमादो । विरंतरो षधो, सगवचक्ररत्ते संते' षट्ठकसएव
 बंधुकरमावादादो । असंनदसम्मादिट्ठी दुगत्तसंछुणं षधति, तित्थयरनधस्स विरय तिरिक्खगाइ
 बंधेहि सह विरोहादो । उवरिमा देवगइसंछुण, भणुसगाइडिदजीवाण तित्थयरबंधस्स देवकं
 मोचूण जण्णगाइहि सह विरोधत्तो । तिगदिअसंनदसम्मादिट्ठी सामी, तिरिक्खगाइए तित्थयरस्स
 बंधामावादा । मा हादु तत्थ तित्थयरकम्मबंधस्स पारमो, जिणाणममावादा । किंतु पुण्यं
 बद्धतिरिक्खत्ताउत्ताण पप्पल पडिवण्णमम्मत्तादिगुणेहि तित्थयरकम्म बंधमावाण पुणो तिरिक्खे
 सुप्पण्णाए तित्थयरस्स बंधस्स सामित्ते उप्पदि षि सुत्ते— ज, बद्धतिरिक्ख-मणुस्साउत्ताण
 जीवाण बद्धभिरय देवाउत्ताण जीवाण व तित्थयरकम्मस्स बंधामावादा । तं पि

ही प्रकृष्ट करता है । इसी कारणसे इसका द्वारा सुचित कर्षणोंका वर्णन करते हैं—
 तीर्थकर नामकर्मका पूर्वमें बन्ध स्पृष्टिग्रह होता है परन्तु बन्ध कर्षणोंके अपूर्वकरके छे
 लत्तम मागके अन्तिम समयमें बन्धक मए हाजानेपर तीर्थकर नामकर्मका उपयोगकेबलीके
 प्रथम समयमें उद्घका प्रारंभ करके अयोगकेबलीके अन्तिम समयमें उद्घका स्पृष्टेव
 पाया जाता है । इसका वन्ध परोक्ष्यस ही होता है क्योंकि, जहाँ तीर्थकरकर्मका उद्घ
 सम्मब है उन उपयोगकेबली और अयोगकेबली जिनमें तीर्थकरका बन्ध पाया नहीं जाता ।
 वन्ध इसका मिलन है क्योंकि अपन कारणक होनेपर कलसबसे वन्धका विग्राम
 नहीं होता । असंयतसम्पगइहि इस दो गतिषोंसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि तीर्थकर प्रकृतिके
 बन्धकर नरक व तीर्थक गतिषाक बन्धके साथ विरोध है । उपरिम जीव वृत्तगतिसे संयुक्त
 बांधते हैं क्योंकि मनुष्यगतिमें स्थित जीवोंक ताथकर प्रकृतिके वन्धका देवगतिसे
 छेककर अन्य गतिषोंक साथ विरोध है । तीम गतिषाक असंयतसम्पगइहि जीव इसक
 बन्धके स्वामी है क्योंकि तीर्थगतिके साथ तीर्थकरक वन्धका अभाव है ।

शुद्ध—तिर्यगातिम तीर्थकरकर्मके वन्धका प्रारंभ भल ही व हा क्योंकि बहो
 जिनोंका अभाव है । किंतु जिन्होंने पूर्वम तिर्यगायुक्त बांध लिया है उनके पीछे सम्य
 क्त्वादि गुणोंके प्राप्त होजानेसे तीर्थकरकर्मको बांधकर पुनः तिर्यकोंमें उत्पद्य होनेपर
 तीर्थकरक वन्धका स्वामिपता पाया जाता है ।

समाधान — इसक उत्तरमें कहते हैं कि ऐसा होना सम्भव नहीं है क्योंकि,
 जिन्होंने पूर्वमें नियत व मनुष्य जायुका वन्ध करलिया है उन जीवोंके नरक व देव आयुओंके
 वन्धसे संयुक्त जीवोंक समान तीर्थकरकर्मक वन्धका अभाव है ।

शुद्ध—बह भी कस सम्मब है ?

कदिहि कारणेहि जीवा तित्ययरणामगोद कम्म वंभंति ?

॥ ३९ ॥

कथं तित्ययरस्स णामकम्मानयवस्स गादमग्गा ? अ, उप्पागादयवविजाभविस्सय
तित्ययरस्स वि गोत्तमिदीदो । ममकम्माणं पप्पण भमणिदूण तित्ययरणामकम्मस्स विमिदि
पप्पवपरूवणा क्किन्दे ? मात्तकम्माणि मिच्छत्तपयाणि, मिच्छत्तेदण्ण विणा एदमिं वंषा
मावादो । पणुदीमकम्माणि भज्जनागुवंपिपचयाणि, तदुदण्ण विणा तमिं वंषाणुवत्तमादो ।
इमं कम्माणि जमजमपप्पयाणि, अपप्पसग्गणावरणादण्ण विणा तमिं वंषाभावात्ता ।
पप्पवत्ताणावरणचदुक्क सममामग्गादयवपप्पय, तेण विणा तत्तपणुवत्तमात्ता । कम्मम्माणि
पमादपप्पयाणि, पमादण विणा तमिं वंषाणुवत्तमादो । एवाउअ माक्किमविम्वहिपप्पइय,
अप्पमत्तदण्ण मउअदिमाग गोवे अइविमाहिइएवमगावेदण्ण माक्किमविमाहिइएव वेव देवाउअस्स

किन्तु कर्मणोमि जीव तीर्थकर नाम-गानकमक्य बाधते है ? ॥ ३० ॥

शुंक्क—नामकमक अक्षयबभूत तीर्थकर कर्मणो गान संज्ञा कस सम्मव है ?

समाधान—यह शंका ठीक नहीं क्योंकि उद्य गावक बन्धका भवितामावी हामसे
तीर्थकरकर्मणो भी गावक निवृत्त है ।

शुंक्क—होय कर्मणो ग्रन्थपोंका न कहकर कसम तीर्थकर नामकमक ही ग्रन्थ
ग्रन्थका क्यों की जाती है ?

समाधान—सोछह कर्म मिच्छाएवमिमित्तक है क्योंकि, मिच्छाएवक उद्यक बिना
इनक बन्धका अभाव है । एवहीम कस अमत्तानुवमिधतिमित्तक है क्योंकि, अमत्तानु
वमपी कयापक उद्य बिना उनका बन्ध नहीं पाया जाता । इहा कर्म अत्यममिमित्तक है,
क्योंकि, अमत्ताकयावावरणक उद्य बिना उनका बन्ध नहीं हाता । ग्रन्थाप्यामावरण
काहुक अपने ही ग्रामाण्य उद्यविमित्तक है क्योंकि, उसक बिना ग्रन्थाप्यामावरण
काहुकका बन्ध पाया नहीं जाता । उह कर्म प्रमत्तुमिमित्तक है क्योंकि, प्रमत्तक बिना
उनका बन्ध नहीं पाया जाता । देवाणु मग्गम पिणुशित्तमित्तक है क्योंकि, अममत्तकका
नैक्यामका माग बीत जातपर अतिहाय विगुधिक कयामका न पाकर ग्रन्थम विगुदि

१ तित्ययरणामगोदकम्म—तीत्ययरविशेष मम तीत्ययर मव बीत न कर्मविशेष
एव कम्ममत्तान् तीत्ययरमत्तान् । अ उ पृ २१११

२ अ-आत्तो तत्तद्वत्तावरणमत्तो वाप्पी मवत्तावरणमत्तो इति वत्त ।

वैषवोच्छेददसणादौ । आहारदुग्ध विविधरागसमण्डितसंज्ञमपञ्चइयं, तेषां विना तत्त्वबलात्
 वलमादौ । परमवर्णिवचसत्तावीसकम्माणि हस्त-रदि भय-दुर्गुणा पुरिसवेद-वदुसजलप्राणि च
 क्मायविसेसपञ्चइयाणि, अण्णहा एवेसि मिण्णज्जनेसु वचवोच्छेदापुववत्तीदौ । सोलसकसामाणि
 सामण्णपञ्चइयाणि, अणुमेतकसाए वि मीने तेसि वधुवलमादौ । सादत्वेदणीय जोगपञ्चइयं,
 सुहुमज्जोगे वि तस्स वधुवलमादौ । तण सञ्चकम्माण पञ्चया वृत्तिवलेण गच्छति ति प
 मभिया । पदस्स पुण तित्थयरणामकम्मस्स वधपञ्चओ ण गच्छे— जेद मिच्छत्तपञ्चइयं,
 तस्य वधानुवत्तमादौ । णामजमपञ्चइयं, संभेदेसु वि वधदसणादौ । ण कसामसामण्णपञ्चइयं,
 क्माय सते वि वधवोच्छेददसणादौ वधवारमाणुवत्तमादौ वा । ण क्मायमंददा करणं,
 तित्थकसाएसु मेरुइसु वि वधदसणादौ । ण तित्थकसाओ करण, मदक्ताएसु सम्बद्धेदेवेसु
 अपुव्वकरमेसु च वधदसणादौ । ण सुम्मत तन्मवकरण, सम्मादिट्ठिस्स' वि तित्थयरस्स
 वधानुवत्तमादौ । ण केवल इमपनिमुज्जवा क्माणं, मीणादमणोहणं पि केमि वि वधानु

स्याममें ही देखापुक्त पञ्चस्युच्छेद द्वारा जाता है । आहारदुग्ध विविध रागस संयुक्त
 संपमक निमित्तसे वधता है क्योंकि येमे संपमके बिना उसका वध नहीं पाया जाता ।
 परमवर्णिवचसत्तावीस कर्म एवं हास्य रति भय दुर्गुणा पुरुषवेद भीरुवारसंज्ञसन
 क्माय ये सब कर्म क्मायविशेषके निमित्तसे वधनवाते हैं, क्योंकि, इसके बिना उनके
 विध स्थापनोंमें वधस्युच्छेदकी उपपत्ति नहीं बनती । सोलह कर्म क्मायसामान्यके
 निमित्तसे वधनेवाते हैं क्योंकि अजमाव क्मायक भी होनेपर उसका वध पाया जाता
 है । आतावेदनीय योगनिमित्तक है क्योंकि, सूक्ष्म योगसे भी उसका वध पाया जाता
 है । इस प्रकार कृति सब कर्मोंके प्रत्यय युक्तवत्तसे जाने आते हैं अतः उनका यहां कथन
 नहीं किया गया । किन्तु इस तीर्थकर नामकमका वधपरत्यय नहीं जाना जाता— कारण कि
 यह मिष्पात्वनिमित्तक ता हो नहीं सकता क्योंकि मिष्पात्वक होनेपर उसका वध नहीं
 पाया जाता । असंपमनिमित्तक भी नहीं है क्योंकि, संपमोंमें भी उसका वध देखा जाता
 है । क्मायसामान्यनिमित्तक भी यह नहीं है क्योंकि क्मायके होनेपर भी उसका वध
 स्युच्छेद द्वारा जाता है अथवा क्मायक होनेपर भी उसके वधका मारभ्य नहीं होता । क्माय
 मन्त्रानिमित्तक भी इसका वध नहीं हो सकता क्योंकि तीर्थक्मायवाले मारकीर्षीक
 भी उसका वध देखा जाता है । तीर्थ क्माय भी इसके वधका कारण नहीं है क्योंकि,
 मन्त्रक्मायवाले सबार्थसिद्धिपिमानवासी देवों और अपूर्वकरणगुणस्थानवर्ती जीवोंमें भी
 उसका वध देखा जाता है । सम्यक्त्व भी उसके वधका कारण नहीं है क्योंकि सम्य
 ग्दृष्टिके भी तीर्थकर कर्मका वध नहीं पाया जाता । केवल दर्शनविशुद्धता भी उसका
 कारण नहीं है क्योंकि दर्शनमोहका दाय करवृत्तमेवासे भी किसी जीवोंके उसका वध

वर्तमानो । तदो एदस्स वंशकारणं वत्तण्यमेव । अपवा, वसंजद फमत-सजोमिमन्नामो धं एदं सुत्तमंतरीवयं सम्बद्धमात्रं पच्चयपरुवणाणं ति एदं सुत्तमागदं । क्वदिहि क्खत्तेहि— किमेककेण किं होदि किं तिहिमेवं पुब्बं क्वयन्ना । एवविहंसंसयमिं हिद्वत्तं विच्छन्नं अपयइमुत्तरमुत्तं भवति—

तत्थ इमेहि मौल्लसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोदकम्मं वंधंति ॥ ४० ॥

तत्र मनुस्सगरीए चेव तित्थयरकम्मस्स वंधपारमो होदि, न वण्णत्तेति ज्ञात्तावमई तत्तेति भुत्तं । वण्णगदीसु किण्ण पारमो होदि ति भुत्ते — न होदि, केवलजापोवत्तविस्सयजीव वध्वसइहक्खरिक्खरणस्स तित्थयरणामकम्मबंधपारमस्स तेण विण्णं समुत्पत्तिविरोहादो । अपवा, तत्र तित्थयरणामकम्मबंधकम्मराणि यमामि ति भूमिद् होदि । सोत्तसेति करणार्थं संज्ञा-मिस्से कोदो । पच्चयवट्ठियणए वत्तविच्छन्नामे तित्थयरकम्मबंधकरणामि सोत्तस्स भव होति । इत्थवट्ठियणए पुण्णं वत्तविच्छन्नामे एककं वि होदि, दो वि होति । तदो एत्थ सोत्तस्स चेव

महीं पापा जाता । अतएव इसके बन्धका कारण कहना ही चाहिए । अपवा असंपत्त प्रमत्त और सयोगी संज्ञाओंके समान यह सूत्र सब कर्मोंकी प्रत्यक्षप्रकरणार्थ अन्तर्हीणक है इसीछिये यह सूत्र माना है । कितने कारणोंसे— क्या एकसं क्या दोसे क्या तीनसे इस प्रकार यहाँ प्रसन्न करना चाहिये । हम प्रकार संशयमें स्थित जीवोंके निश्चयोत्पादनार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

यहां इन छोट्ट करणोंसे जीव तीर्थंकर नाम-गोत्रकर्मको बांधते हैं ॥ ४० ॥

मनुष्यगतिमें ही तीर्थंकरकर्मके बन्धका प्रारम्भ होता है, अन्यत्र नहीं इस बातके आपत्तार्थ सूत्रमें कहा देखा कहा गया है ।

प्रश्न—मनुष्यगतिक निश्चय अन्य गतियोंमें उसके बन्धका प्रारम्भ क्यों नहीं होता ?

समाधान—इस शक्यतेके उत्तरमें कहते हैं कि अन्य गतियोंमें उसके बन्धका प्रारम्भ नहीं होता कारण कि तीर्थंकर नामकर्मके बन्धके प्रारम्भका सहकरी कारण केवलजन्मसे उपपन्नित जीव प्रण है, अतएव मनुष्य गतिके बिना उसके बन्ध प्रारम्भकी उत्पत्तिविरोध है । अथवा उनमें तीर्थंकरनामकर्मके बन्धके कारणोंका कहते हैं, वह अनिशाय है । सोबह इस प्रकार कारणोंकी संख्याका निर्देश किया गया है । एकापार्थिक भवका भवजन्मन करनेपर तीर्थंकर नामकर्मके बन्धके कारण सोलह ही होते हैं । किन्तु द्व्यपार्थिक भवका भवजन्मन करनेपर एक ही कारण होता है, दो ही होते हैं । इत्थवट्ठिये यहाँ मोल्ल ही कारण होते हैं ऐसा भवकारण नहीं करना

कारणाणि सि पावहारण कयञ्च । एदस्स विण्णयस्सुत्तरसुत्तं भणदि -

दसणविसुज्झदाए विणयसपण्णदाए सीलव्वदेसु गिरदिचारदाए
आवासएसु अपरिहीणदाए स्वण-लवपडिबुज्झणदाए लद्धिसवेगसपण्ण
दाए जधायामे तथा तवे, साहूण पासुअपरिचागदाए साहूण समाहि
सधारणाए साहूण वेज्जावच्चजोगजुत्तदाए अरहत्तभत्तीए बहुसुद
भत्तीए पवयणभत्तीए पवयणवच्छलदाए पवयणप्पभावणदाए अभि
क्खण अभिक्खण गाणोवजोगजुत्तदाए इच्चेदेहि सोलसेहि कारणेहि
जीवा तित्थयरणामगोदं कम्म वधति' ॥ ४१ ॥

एदस्स सुवस्स अत्था बुद्ध्यदे । त जहा— दसणं सम्मदसणं, तस्स विसुज्झदा दसण
विसुज्झदा, तीए दसणविसुज्झदाए जीवा तित्थयरणामगोदं कम्म वधति । तिमूढयोड-अह

वाहिये । इस्सके निर्णयार्थं उत्तरं सूत्रं कथ्यते ।

दर्शनविशुद्धता, विनयसम्पन्नता, शील-व्रतोंमें निरतिशयता, छह आवश्यकोंमें अपरि
हीनता, क्षण-लवप्रतिबोधनता, लब्धि-संनिधिसम्पन्नता, यथाशक्ति तप, साधुओंको प्राप्तुकपरित्यागता,
साधुओंकी समाधिसंवाहना, साधुओंकी वैयाग्रस्वयोगयुक्तता, अरहत्तमक्ति, बहुभुतमक्ति,
प्रवचनमक्ति, प्रवचनवत्सलता, प्रवचनप्रभावनता और अमीक्षण-अमीक्षणानोपयोगयुक्तता,
इन सेत्तह कारणोंसे जीव तीयकर नाम-गोत्रकर्मको बांधते हैं ॥ ४१ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है— दर्शन का अर्थ सम्मदर्शन
है । उसकी विशुद्धताका नाम दर्शनविशुद्धता है । उस दर्शनविशुद्धतासे जीव तीर्थंकर
नाम गोत्रकर्मको बांधते हैं । तीन मूढताओंसे रहित और बाढ मछोंसे व्यतिरिक्त जो

१ अपरी यथायानि आत्मा यथाम कापरी यथायाम इति पाठः ।

मणिपु साहण इति पाठः ।

२ दर्शनशुद्धिर्विनयसम्पन्ना लोचनैः पननिषमोन्मीर्यब्रह्मलोपयान-संविद्या क्षणितरवत्ता तपनी साधु
समाधिबलात् वरजमर्षदाचार्यं बहु-त प्रवचनमतिरावरयतापीहामिषमार्गमावना अरहत्त्ववत्सल्यमिति तीर्थ
कारणम् । त नृ १ २८ अरिहन् मित्रं पवयनं बुद्धं वैरं बहुलं एव तपनी य । वरज्यता य तुमि जमिकन
मात्मारोपी य ॥ इममविषय आरम्भं य संलब्धं निराशयं । स्वण लव उपस्थिता वेदात्मके लक्ष्मी य ॥
अनुज्झनात्मके सुवमयी पवयनं पमावन्ता । पण्डि वरपेहि विवराए एव जीवो ॥ य मा १, ११०-११२

मलवदिगित्तमम्भर्ममपमावा दमपविमुञ्चदा माम । कथं ताण एककण चव निम्बपरणाम
कम्मस्स वंवा, मत्थमम्माइहीणं निम्बपणामकम्मपपपयगाओ चि ? सुप्पदे— ण निम्ब
वत्तत्तमलवदिगोहि चव दमपविमुञ्चदा मुदणयाहिप्पाएण हादि, किंतु पुग्गिस्सुपि
सरूवं तदण द्विदमम्भर्ममपमावा पासुअपरिक्काणे साहूणं समाहिमवाणे साहूणं वत्ता
वत्तजगे भरदवमतीण बहुमुदमतीए पवयणमतीए पवयणवत्तजज्जाए पवयण पहावण
ममिक्खणं पाप्पवज्जोगहुत्तत्ते पयहावणं विमुञ्चदा माम । तीण ममपविमुञ्चदाए एक्कण
वि निम्बपरकम्मं वंवंति ।

अथवा, विषयसंपन्नदाए चव तिन्धयरणामकम्मं वंवंति । तं अहा— विषया
निविहा पाप्म-ईमण-चरित्तविषया ति । तस्य पाप्मविषयो माम् अभिस्सुअभिस्सुअं पाप्म
जामहुत्तदा बहुमुदमती पवयणमती च । ईमणविषया माम् पवयणगुहइमम्यमानमइएणं
निम्बदाओ भस्मरणममलत्तज्जणमगूत-मिद्धमती एण-त्तवपडिमुञ्चदा त्पडिर्ममसंपन्नदा

सम्यग्दर्शनं प्राप्तं ज्ञानं इत्थं वृत्तान्निवृत्तता कथ्यते इ ।

शंकर—कथम् इत्थं एक दर्शनविशुद्धतामे ही तीर्थंकर नामकमथ वत्त वत्त
ममम इत्थं किं एसा माननेम एव सम्यग्दर्शिका तीर्थंकर नामकमेव वत्तवा प्रमेण
मावाग ।

समाधान—इत्थं शब्द उक्तमे कहत ई किं शुद्ध मयक मभिप्रायत तीं
मुक्तताओ भीम भाउ मत्तोस रहित ज्ञानग ही वृत्तान्निवृत्तता महीं हानी किन्तु
पूर्वोक्त गुणाने मय निजस्वरूपका प्राप्तिकर स्थित सम्यग्दर्शनकी साधुर्मेका साधुक
परिष्कार साधुमकी समाधिप्राप्तका साधुर्मेकी पैपाहृतिका मयाग भरदंतमकि
बहुधनमकि प्रयत्नमकि प्रयत्नव्ययता प्रयत्नप्रभावता धीर धर्मादयजानोपयोग
मुक्ततामे प्रयत्नका नाम विशुद्धता ई । इत्थं एक ही वृत्तान्निवृत्ततामे जीव तीर्थंकर वमकी
वापन ई ।

अथवा विनयसंग्रहतामे ही तीर्थंकर नामकमथ वापन ई । यह इत्थं प्रकारत-
ज्ञानविनय दर्शनविनय भीम चारिविनयक भदस विनय तीम प्रकार ई । उक्तमे पारंपार
ज्ञानापागत मुक्त रहनक साध बहुधनमकि धीर प्रयत्नमकि नाम ज्ञानविनय ई ।
भागमादित्थं सर्व पदार्थोक्त ध्यानक साध तीम मुदतामाग रहित ज्ञान भाउ मत्तोका
मुक्तता मरदंतमकि निजमकि अत्र मयमनिवृत्तता भाव सत्प्रेमपरायणताका ज्ञान

१ शंकर उक्तमथ वदती तत्त्वज्ञान इति वा ।

आवागती इत्यनेन इति वा ।

२ अ वागती शिवज्ञानात् वागती शिवज्ञानात् इति वा ।

च । चरित्तविषयो नाम सीलव्यवेमु गिरदिचारदा आवासणमु अपरिहीणदा जहाभामे तदा तवो च । साहूण पासुगपरिच्चाओ तेसिं समाहिंसंघारणं तेसिं वेज्जावच्चजोगद्धुत्तदा पवयण वल्लन्दा च पाण-दसण-चरिणं पि विषयो, तिरयणसमूहस्स साहु-पवयण च ववएसो । तदो विषयसंपण्णदा एक्कं वि होदूण सोलसावयवा । तेपेदीए विषयसंपण्णदए, एक्कए वि तिरयणपामकम्म मणुआ वपति । देव-पेरुएपाण कषमेसा समवदि ? ज, तस्य वि पाण दसणविषयानं समवदसपादो । कष तिसमूहकजं दोहि चेव सिच्छेदो ? ज एस दोसो, मट्ठिया जल-सूरणकट्टिहिंतो समुण्णजमाणसूरणकंदकुरस्स तकंदं दुरिजेहिंतो चेव समुण्णजमाणसुवत्तंमादो, दोहि तुरंगेहिं कट्टिजमाणसदणस्स पल्लवतेपेक्केणेय देवेण विज्जाहेरेण मणुएण वा कट्टिजमाण-

विनय कहते हैं । सील-मर्तोमें निरुत्तिचारता आपदयकोमें अपरिहीनता मर्थात् परिपूर्णता और शक्त्यनुसार तपक नाम चारित्रविनय है । साधुओंके लिये प्राप्तुक आहारविकल्प दान वन्यी समाधिक्य धारण करना, उनकी वैयावृत्तिमें उपयोग लगाना और प्रयत्न वस्तुछटा यह ज्ञान वर्णन एवं चारित्र तीनोंके ही विनय है क्योंकि, रत्नत्रय समूहको साधु व प्रयत्न संज्ञा प्राप्त है । इसी कारण कृत्ति विनयसम्पन्नता एक भी होकर छोछह अवयवोंसे सहित है अतः उस एक ही विनयसम्पन्नतासे मनुष्य तीर्थकर नामधर्मको बांधते हैं ।

शुक्र—यह विनयसम्पन्नता देव-भारिकियोंके कैसे सम्भव है ?

समाधान—उक्त शंका ठीक नहीं क्योंकि, देव-भारिकियोंमें भी ज्ञानविनय और दर्शनविनयकी सम्भावना देखी जाती है ।

शुक्र—तीनों विनयोंके समूहसे निवृत्त होनेवाला कार्य दोष ही कैसे सिद्ध हो सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, मट्टी जल और सूरणकंदसे उत्पन्न होने वाला सूरणकंदका झकुर उसके फन्दा और तुर्रिन मर्थात् धारण ही उत्पन्न होता हुआ पाया जाता है अथवा दो घोटोंसे खींचा जानवाला रथ बलवान् एक ही देव विद्याधर या मनुष्यसे

१ अर्द्धं निवृत्तं वेदव हरे व बभ्ये च तापुत्रये च । आरति उवन्ताए तपपयो दग्धे चापि ॥ मत्तो एवा वन्धवन्धन च पत्तवमत्तवन्धनम् । अत्तापवन्धनो दग्धविषयो तद्वत्तम् ॥ म आ ४७-४८

२ मट्टिउ त्रिगुण इति पाठ ।

३ अमरी कट्टिजमाणवेदनवत्त अमरी कट्टिजमाणवेदनवत्त वायश कट्टिजमाणवेदनवत्त इति पाठ ।

सुखसमाप्तो वा । यदि दद्वि चेव तित्त्वरणामकर्म बन्धइ ता चरितविषयो किमिदि
तत्त्वमपिदि सुखे ? न एस दोसो, पाप्म-नसणविषयक-विरोहिचरणविषयो न होदि ति
पहुप्पमणफट्ठत्तादो ।

ननुवा, सीलम्भवेसु निरदिचारदाए चेव तित्त्वरणामकर्म बन्धइ । तं जहा—
हिंसादि-भो-नम्भम-परिगोहेहिं तो विरदी वदे पाम । वदपरिबन्धनं सीलं नाम ।
सुउपाय-मांसमन्त्रण कोह माण-माया-ज्योह-हस्स-र-सोग मय-नुगुंछिय-पुरिस-बहुंसयवेयाति
आगो अदिचारो, एदेसि विनासो निरदिचारो संपुण्णदा, तस्स मावो निरदिचारदा । तस्मिं
सीलम्भवेसु निरदिचारदाए तित्त्वरणामकर्मसं बंधो होदि । कथमेव सेसपण्णसण्णं
संभवो ? न, सम्मसंसेण खन-उपविबुन्धन-उदिसवेयसंपण्णत्त-साहुसमादिसपा-

लीया गया पाया जाता है ।

शंकर—यदि जो ही बिनयोंसे तीर्थंकर नामकर्म बांधा जा सकता है, तो फिर
आरिजबिनयको उसका कारण क्यों कहा जाता है ?

समाधान—यह कोई बात नहीं क्योंकि आज-वर्तमानबिनयक कर्मका विरोधी
आरिजबिनय नहीं होता इस बातको सुचित करनेके लिये आरिजबिनयको भी कारण मान
लिया गया है ।

अथवा शीक मतोंमें निरतिचारतासे ही तीर्थंकर नामकर्म बांधा जाता है । यह इस
प्रकारसे—हिंसा, भक्ष्य और भद्रा और परिग्रहसे विरत होनेका नाम मत है । मतोंकी
रक्षाको शीक कहते हैं । सुउपान मांसभक्षण कोष मान माया ज्योह हास्य रति,
शोक, मय सुगुप्ता लीबेह पुकरवेह एवं नपुंसकवेह इनके त्याग न करनेका नाम
निरतिचार और इनके विनाशका नाम निरतिचार या सम्पूर्णता है इसके मानको निरति
चारता कहते हैं । शीक मतोंमें इस निरतिचारतासे तीर्थंकर कर्मका बन्ध होता है ।

शंकर—इसमें शेष पन्द्रह भावमार्गकी सम्मावना कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह शीक नहीं क्योंकि क्षण-कथप्रतिबुद्धता सधि संवेदसम्पन्नता

१ कर्मो -परिवर्तन आश्रमको परिवर्तन इति वाच ।

२ अतिगह्वरि अंतर्गुह्यतमकर्मणो न नैवकर्मद्वारेण हीलेतु निरुपा दृष्टि हील अंतश्चरितपर ।
व नै १ २४ आरिजबिचरयेसु शीस मतेसु निरुपा दृष्टि हील अतेप्यनतिचार—अतिगह्वरि
मतेसु $\times \times \times$ निरुपा दृष्टि अथ वाच वनता हील अतेप्यनतिचार इति वचने । उ ए १ २४ ३ हीलानि न
मतेनि न हील मते अथवा सवात्ताएव उदिय एव हीलानि उपायना मतमि फलतुना तै निरतिचार
क तैरिचरताकर्म वचनानि विचारैव । व न १ २

३ कर्मो निरतिचारतएव अश्रमको निरतिचार तैव इति वाच ।

रणयेमावञ्चनेनागुत्त-पासुमपरिचाग-अरहत-महुसुद पवयणमत्ति-पवयणपदावणत्त-अणुसुदि
 लुत्तेण विणा सीलम्बदाणमपदिचारत्तस्स अणुववत्तीदो । असंखेन्नगुणाए । सेदीए । कम्म
 पिञ्जरणहेद्द वदं माम । न च सम्मत्तेण विणा हिंसात्थि-अोन्व-अमपरिग्गहविग्गमेत्तेण सा
 गुणसेडिपिञ्जरा होदि, दोहिंतो चेसुप्पन्त्रमाप्पकम्भस्स तत्थेस्सदो समुप्पत्तिविरोहादो । होद्द
 माम एदेसिं समवो, न जाणविजयस्स ? न, छद्दम्ब-अवपदत्तयसमूह-तिहुवणविसएण अमिक्खण
 ममिक्खणमुवज्जेगविसयमापन्त्रमापेण जाणविजएण विणा सीलम्बदमिर्बधक्कसम्मत्तुप्पत्तीए
 अणुववत्तीदो । न तत्थ चरणविजयामावो वि, अहायामतवत्तासयापरिहीणत्त-पवयणपद्मत्त
 लक्खणचरणविजएण विणा सीलम्बदगिरिदिचारत्ताणुववत्तीदो । तम्हा तदियमेद तित्थयर
 पामकम्ममयंस्स करणं ।

आत्मासएसु अपरिहीणदाए— समदा-धर्व-धदण-पडिक्कमण-अवक्खण-विमोसमानेएण

साधुसमाधिधारण वैयासयोगयुक्तता प्राप्तकपरिस्थान अरहतमक्ति बहुभुतमक्ति,
 प्रथममक्ति और प्रयत्नप्रभावना लक्षण शुद्धिसे युक्त सम्यग्दर्शनके बिना हीस मतोंकी
 निरतिधारणा बन नहीं सकती । दूसरी बात यह है कि जो असंख्यात गुणित भेदोंसे
 कर्मनिर्वाणक कारण है यही मत है । और सम्यग्दर्शनक बिना हिंसा-असत्य,-धीर्य,
 अग्रह और परिग्रहसे विरत होने मात्रसे वह गुणधेर्माभिजरा हो नहीं सकती क्योंकि,
 दोनोंसे ही उत्पन्न होनेवाले कार्यकी उनमेंसे एकके द्वारा उत्पत्तिका विरोध है ।

शुद्ध—इनकी सम्भाषणा यहाँ भले ही हो पर ज्ञानभिनयकी सम्भावना नहीं
 हो सकती ।

समाधान—ऐसा नहीं है क्योंकि उह द्रव्य भी पदार्थोंके समूह और त्रिगुणको
 विषय करनेवाले एवं बार बार उपयोगविषयकी प्राप्त होनेवाले ज्ञानभिनयक बिना हीस
 मतोंके कारणभूत सम्यग्दर्शनकी उत्पत्ति नहीं बन सकती ।

हीस मतविषयक निरतिधारणामें आरिक्कविनयक भी समाप नहीं कहा जासकता
 है क्योंकि यथाशक्ति तप आग्रहकापरिहीनता और प्रयत्नवत्समता लक्षण आरिक्क
 विनयक बिना हीस मतविषयक निरतिधारणकी उत्पत्ति ही नहीं बनती । इस कारण यह
 तीर्थंकर नामकमेंके सगंधक तीसरा कारण है ।

आग्रहकमेंमें अपरिहीनतास ही तीर्थंकर नामकम रचना है—समता अथ,

कृत्यासया ह्येति' । सतु-मित्त-मणि-पादाङ्ग-सुवर्ण-मद्वियासु राग-देसामावो समस्त पाम' । तीक्ष्ण-
बागद-वद्विमानकस्तुविषयपंचपरमेसरार्ण भेदमकाञ्चन गमो बरहंतार्ण गमो त्रिपात्रमिवादिबना-
ककरो दम्बद्विजविषयभो यवो' पाम । उसहात्रिय-संमवादिपंच-सुमह-पठमपह-सुपास
भेदपह-सुपुद्गंत-सीयत-सर्वस-यामुपूज्य-विमलपंत-यम्भ-संति-कुमु-अर-महि-मुनिमुप्यय-भमि-
भेमि-पास-वहुमानादितिन्ययराणं भरहादिकेवलीणं आत्रिय-वहसात्यादीणं मेघ कञ्चन
यमोक्करो गुणमयभेदमस्त्रीभो' सहकृत्याउल्ले गुणागुसरणसकरो वा वंदपा' पाम । पंच-
महम्पसु चतरासीदितमस्त्रगुणागोक्तिसु समुपपन्नकलकमन्त्रालम्भ पठिकमणं पाम ।

पञ्चमा प्रतिष्ठाप्य प्रस्थाप्यत्वा भीर द्युस्वर्गके मेहस्त छह भावस्थक हाते हैं । प्राप्ति मित्र
मणि पापाप भीर सुवर्ण मूलिकासं रागदेयके भमापद्ये समता कहते हैं । महीत
भमागत भीर परतमान कास विषयक पांच परमेष्ठियोंके भक्को न करके बरहन्तोको
ममस्वरूप, त्रिभोको नमस्कार इत्यादि प्रार्थनार्थकनित्यपञ्चनमस्कारका नाम स्तब्ध है ।
अथम अश्रित नम्राय अभिनन्दन सुमति, पद्मप्रम सुपार्थ बन्धप्रम पुण्यवत्
श्रीतल भेषांस पासुपूज्य विमल भगन्त धम द्यागि कुम्भ भर, महि मुनिमुमत
ममि तेमि पार्थ भीर पर्यमानादि तीर्थकर तथा भरतादिक केवली भावार्थ एवं वैत्याकपा-
त्रिकोंके मेहका करके अथवा गुणगत मेहके आश्रित शान्दकसापसे व्यास गुणा-
स्मरण रूप नमस्कार करनेको बन्धना कहते हैं । बीरपसी छात्र गुणीक समूहने संयुक्त
पांच महाभक्तोंमें उत्पन्न हुए भक्तोंके भोतेका नाम प्रतिष्ठाप्य है । महाभक्तोंके विनाश व

१ तद्वत्त करो व वरन पठिचमन होए वादव । पञ्चस्यान स्थिमी करोवा बलवा वधि ॥
पृष्ठा २५ सामान्य वद्वीतभर वरन पठिचमन । पञ्चस्यान व तदा कामोन्मो इति वद्वी ॥ पृष्ठा
७ १५ वद्वीतवधिविवा — सामाधिक वगुर्विचलितव वरना प्रतिष्ठाप्य मवाल्माल वद्वीतर्गभेति । त ए
१ २४ ११ त वि त बलस्तव । आस्तव वीर पञ्च त वद्वी — सामान्य वद्वीत करो वरन पठि
वधन वद्वीतलो पञ्चस्यान त ए वास्तव । वद्वीत २५

२ वद्वी वद्वीत वा कामो मविचल इति पाठ ।

३ वद्वीत वरने व माकमि वद्वीत विचलित व । वगुर्विचलित वद्वीत वद्वीत सामान्य वाव ॥
पृष्ठा २१ तव सामाधिक वद्वीतवर्गमविचलित व विचलितवने वद्वी मविचलित । त ए १ २४ ११

४ वद्वीतवधिविवा वद्वीतवधि वद्वीतवधि व । वद्वीत वद्वीत व विचलितवने वद्वी वद्वी ॥
पृष्ठा ४ वगुर्विचलित वद्वीतवधि वद्वीतवधि । त ए १ २४ ११

५ वद्वी वद्वीतवधिविवा । वद्वीतवधि वद्वीतवधि वद्वीतवधि । त ए १ २४ ११

६ वद्वीत वद्वीतवधि वद्वीतवधि वद्वीतवधि । वद्वीतवधि वद्वीतवधि वद्वीतवधि । त ए १ २४ ११

वद्वी वद्वीतवधि वद्वीतवधि । त ए १ २४ ११

वद्वी वद्वीतवधि वद्वीतवधि । वद्वीतवधि वद्वीतवधि वद्वीतवधि । त ए १ २४ ११

महत्त्वयापि विनासण-मत्तरेणहणकारणाणि जहा ण होसंति तहा क्तेमि चि मणेणाल्लेचिय षठ
 रसीदिल्लक्खवदसुद्धिपडिग्गहो पच्चक्खाण णाम । सरीरहारेसु हु मण-वयण-पवुत्तीभो
 ओसारिय ख्खयमि एअग्गेण चित्तपिरेहो विओसम्मो^१ णाम । एदेसिं छम्भमावासयाण
 अपरिहीनदा अखडदा आवासयापरिहीनदा । तीए भावासयापरिहीनदाए एक्कए वि
 तित्थयरणामकम्मस्स बंधो होदि । ण च एत्थ सेसकारणाणमभावो, ण च देसणविसुद्धि
 विजयसंपत्ति-वदसील्लपिरदिचार-खणत्तवपडिबोह् लदिसंवेगसंपत्ति-जहायामवव-साहुसमाहिसंघा -
 रण-वेज्जात्तपच्चोण-पासुअपरिग्घागरहत-वहुसुद पवयणमत्ति-पवयणमच्छ-प्पहावणामिक्खण-
 णाणोअजोगमुत्तदाहि विणा अवासएसु पिरदिचारदा णाम समवदि । तम्हा एदं तिर्ययर
 णामकम्मवधस्स षउत्पकारणं ।

खण-त्तवपडिबुज्जणदाए— खण-त्तवा णाम कत्तवविसेसा । सम्मएसण-आण-वद-सील-
 गुणाणमुज्जात्तण कलंकमक्खाल्लणं संघक्खण वा पडिबुज्जण णाम, तस्स भावो पडिबुज्जणदा ।
 खण त्व पडि पडिबुज्जणदा खण-त्तवपडिबुज्जणदा । तीए एक्कए वि तिर्ययरणामकम्मस्स

ममात्मात्मक कारण जिस प्रकार न होने देखा करता हुं देखी मनसे मासोपमा करके
 बीजसी भाव मतोंकी दृष्टिके प्रतिग्रहका न म प्रत्याबमान है । शरीर व आहारमें मन एव
 वचनकी प्रवृत्तियोंको हटाकर ध्येय वस्तुकी ओर एकाग्रतासे चित्तका निरोध करनेको ध्युत्सर्ग
 कहते हैं । इन छह भावव्यक्तियों अपरिहीनता अर्थात् मलजडताका नाम भावव्यक्तापरि-
 हीनता है । उस एक ही भावव्यक्तापरिहीनतासे तीर्थंकर नामकर्मका वन्ध होता है । इसमें
 दोष क्षरणोंका अभाव भी नहीं है क्योंकि वर्तमानविशुद्धि चित्तवसम्पत्ति मत-शीलनिर्गति
 कारणता क्षण स्रवप्रतिबोध स्वयि संवेगसम्पत्ति अयादात्ति तप, साधुसमाधिसंभारण
 वैषामत्ययोग प्राप्तिकपरित्याग अरहन्तमत्ति पद्भुतमत्ति प्रबचनमत्ति प्रबचनयत्सलता
 प्रबचनप्रभावना और अमीत्य ज्ञानोपयोगयुक्तता इनक विना छह भावव्यक्तियोंमें निरति
 कारणता सम्भव ही नहीं है । इस कारण यह तीर्थंकर नामकर्मके वन्धका बहुतुल्य कारण है ।

क्षण स्रवप्रतिबुद्धतासे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— क्षण और स्रव ये कस्रविनोपके
 नाम हैं । सम्यग्दर्शन ज्ञान मत और शील गुणोंको उज्ज्वल करने मलका घाने अथवा
 असलेका नाम प्रतिबोधन और इसके भावका नाम प्रतिबोधनता है । प्रत्येक क्षण व स्रवमें
 होनेवासे प्रतिबोधका क्षण-स्रवप्रतिबुद्धता कहा जाता है । उस एक ही क्षण स्रवप्रतिबुद्धतासे

१ भावादीय कहे जडीयवशिखरं तिवरण । पच्चक्खाण वेव अवावण णाम कहे ॥ पूका १७
 कनाणत्तरीयसोत्तं मन्वाक्कामप । ४ ए १ २४ ११

२ मणिउ तपीरहात्तु इति पाठ ।

३ देहस्तिवन्निपमासिद्ध जडुतयापेण वचनकण्ठि । निजदवधितवहत्तो वाग्लज्जा तद्धविमयो ॥
 पूका २८ वासिद्धवक्कविवा कटीरममन्निवृत्ति कोवोनर्ग । ४ ए १ २४ ११

बोधो । एतत् वि पुण्यं व सेसकरणापमं तन्मात्रो हरिसेदम्बो । तदो एदं तित्त्वपरनामकम्-
वचस्स पंचमं करण ।

अद्विसंवेगसंपण्णदाय— सम्मदंसण-आण-चरणेसु अतिस्स समागमो उद्धी पाम ।
हरिसो संतो संवेगो नाम । उद्धीए संवेगो अद्विसंवेगो, तस्स संपण्णदा संपत्ती । तीए तित्त्वपर-
नामकम्भस्स एककए वि वचो । कथं अद्विसंवेगसंपयाए सेसकरणापं समवो ? न सेस-
करणेहि विवा अद्विसंवेगस्स संपया न्नु बदे, विरोहादो । अद्विसंवेगो नाम तिरयपरोहत्तो,
य सो दंसपविसुब्बदादीहि विणा संपुण्णो हादि, विपाडिसेह्मदो हिरण्य-सुवण्णदीहि विवा
पण्णो प्प । तदो वण्णो अतोस्सिसेसकरणा अद्विसंवेगसंपया कट्टं करणं ।

ब्रह्मसमे तदा तवे— वत्ते वीरियं नामो इदि एवदो । तवो दुविदो वाहिरो वप्पं
तरो वेदि । वाहिरो भणसणादिदो अम्मतरो विणयादिदो । एसो सम्भो वि तवो वारसविदो ।
ब्रह्मसमे तदा तवे स्ति तित्त्वपरनामकम्भ वन्हाइ । कुदो ? ब्रह्मसमतवे सयत्सेसतित्त्वपर

तीर्थंकर नामकर्मका बन्ध होता है । इसमें भी पूर्वक समान शेष कारणोंका अन्तर्भाव
दिखायाना चाहिये । इसीलिये यह तीर्थंकर नामकर्मके बन्धका पांचवां कारण है ।

अधिसंवेगसम्पद्यतास तीर्थंकर कर्मका बन्ध होता है— सम्भवर्णान सम्भगान्
भीर सम्पक्कारिणमं जो तीर्थका समागम होता है उसे अधिसंवेग कहत हैं । और हर्ष व
सात्त्विक मावका नाम संवेग है । अधिसंवेग या अधिसंवेग संवेगका नाम अधिसंवेग और
इसकी सम्पद्यताका अर्थ संप्राप्ति है । इन एक ही अधिसंवेगसम्पद्यतास तीर्थंकर
नामकर्मका बन्ध होता है ।

प्रश्न—अधिसंवेगसम्पद्यतामें शेष कारणोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान—क्योंकि, शेष कारणोंके बिना विद्वत् होमेसे अधिसंवेगकी सम्पदाका
संयोग ही नहीं होसकता । इसका कारण यह कि एतद्वचसहित हर्षका नाम अधिसंवेग है ।
और यह वर्णानविशुद्धतादीर्ष्यके बिना सम्पूर्ण होता नहीं है । क्योंकि, इसमें हिरण्य सुवर्ण-
दिर्घीक बिना ब्रह्माद्य हातके समान विरोध है । अत एव शेष कारणोंके अनेक अन्तर्गत
करनेवाली अधिसंवेगसम्पदा तीर्थंकर कर्मबन्धका कटा कारण है ।

हास्यनुसार तपसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— वद्य भीरं भीर धाम (स्वामन्)
ये समानार्थक शब्द हैं । तप दो प्रकार है— बाह्य और आन्तरिक । इसमें अज्ञानादिकका
नाम बाह्य तप और विनयादिकका नाम आन्तरिक तप है । उह बाह्य एवं उह आन्तरिक
इस प्रकार मिसकर यह सब तप बाराह प्रकार है । जैसा वस्त्र हो वैसा तप करनेपर तीर्थंकर
नामकर्म बंधता है । इसका कारण यह है कि यथाशक्तितापमें तीर्थंकर नामकर्मके बन्धके

कर्मणाम् संभवादो, जदो जहाभामो णाम बोधपत्तस्स धीरस्स पापदसणकल्लिदस्स होदि ।
 य च तस्य दंसणविसुब्बवादीणमभावो, तद्वा तवतस्स अण्णहाणुवन्तीदो । तदो एदं
 सत्तम करणं ।

साधुणं पासुअपरिचागदाए—अणंतपाण-दंसण-वीरिय विरह-स्वहयसम्मत्तादीण साहया
 साहू णाम । पग्ग्रा भोसरिदा भासवा जम्हा त पासुअ, अथवा अं निरवन्ने तं पासुअं ।
 किं ? पाण-दंसण-चरित्तादि । तस्स परिच्चागो विसन्जण, तस्स भावो पासुअपरिच्चागदा ।
 दयापुत्थीए साधुणं पाण-दंसण-चरित्तापरिच्चागो दाण पासुअपरिच्चागदा णाम । य चेदं
 करण परत्येसु संभवदि, तस्य चरित्ताभावादो । तिरयणोवेदसो वि ण परत्येसु अरिय, तेसिं
 दिट्ठिवादादिउवरिमसुत्तवदंसणे महियाराभावादो । तदो एदं करणं महेसिण चेव होदि ।
 ग च एत्थ सेसकर्मणाणमसंभवो । य च अरहंतादिषु अमत्तिमसं जवपदस्यविसयसरहणेषुम्मुद्धे
 सादिचारसीत्तम्भवे परिहीणाभासए गिरवन्तो पाण-दंसण-चरित्तापरिच्चागो संभवदि, विरोहादो ।
 तदो एदमहुमं करणं ।

समी शेष कारण सम्मभ है क्योंकि यथायाम तप ज्ञान-दर्शनसे युक्त सामान्य ब्रह्मज्ञान
 और धीर व्यक्तिक होता है और इसलिये उसमें दर्शनवि-गुणतादिकोंका समाव नहीं
 होसकता क्योंकि ऐसा होनेपर यथायाम तप वन नहीं सकता । इस कारण यह तीर्थंकर-
 नामकर्मबन्धका सातवां कारण है ।

साधुओंके द्वारा विहित प्राप्तुक्त अर्थात् निरवयव ज्ञान-दर्शनादिकके त्यागसे तीर्थंकर
 नामकर्म बंधता है—अनन्तज्ञान अनन्तदर्शन अनन्तधीय विरति और स्थायिक
 सम्यक्त्वादि गुणोंके जो साधक हैं वे साधु कहलाते हैं । जिसस माध्यम बन हो गये हैं
 उसका नाम प्राप्तुक है अथवा जो निरवयव है उसका नाम प्राप्तुक है । यह ज्ञान दर्शन य आरिक्ता
 दिक ही तो सकते हैं । उनके परित्याग यथात् विसर्जन करनको प्राप्तुकपरित्याग और
 इसका भावको प्राप्तुकपरित्यागता कहते हैं । अर्थात् दयापुत्थिसे साधुओं द्वारा किये जाने
 वाले ज्ञान दर्शन य आरिक्क परित्याग या दानका नाम प्राप्तुकपरित्यागता है । यह कारण
 गृहस्थोंमें सम्मभ नहीं है क्योंकि उनमें आरिक्क समाव है । रत्नत्रयका उपदेश भी
 गृहस्थोंमें सम्मभ नहीं है, क्योंकि, ब्रह्मिवादादिक अपरिम सुतने उपपदा वनमें अनन्त अधिकार
 नहीं है । अत एव यह कारण महर्षियोंके ही होता है । इसमें दोष कारणोंकी वर्तमानता
 नहीं है क्योंकि महागुणोंमें मणिसे रहित भी पद्मपत्रियपक अज्ञानसे उन्मुक्त
 सातिचार शीम-मत्तोंमें सहित और भावदपकोंकी हीनतासे अयुक्त होनेपर निरवयव ज्ञान,
 ज्ञान य आरिक्क परित्याग विरोध हानिम सम्मभ ही नहीं है । इसी कारण यह तीर्थंकर
 नामकर्म बन्धका आठवां कारण है ।

साहज समाहिसधारणदाय— ईसम पात्र परिसेसु सम्ममवद्वायं समाही नाम । सम्म
साहज वारण संधारण । समाहीए संधारण समाहिसधारण, तस्स मात्रा समाहिसधारणरा । ताए
तिरवयरपामकम्मं बन्धदि ति । केव वि करमेव पदंति समाहिं इहम सम्माहिही पवव
वच्छन्ने पवयणपद्दावओ विवयसंपज्जो सीत्त-वदादिधारवग्निओ अरहंतोदिसु मयो संतो जमि
पेदि तं समाहिसधारणं । कुदो एदमुवत्तम्मे ? सं-सदपत्तज्जादो । तेज बन्धदि
ति हुत्तं होदि । य च एव संसकारपापममावो, तदस्वितस्स दरिसिद्धदो । एवेमे
वपमं करणं ।

साहज वे जावच्चभोगहुत्तदाय— व्यापूते यत्किमेते तद्वैद्यावृत्त्यम् । जेण सम्मत-नाम
अरहंत-बहुसुंदरमसि-पवयणपवच्छन्नादिणा जीवो जुग्गइ वेन्जावच्चे सो वेन्जावच्चेओ ईसम-
विमुत्तदादि, तेज हुत्ता वे जावच्चभोगहुत्तदा । ताए एवविहाय एकअए वि
तिरवयरपामकम्मं बंधइ । एव संसकारपापं अहसंभवेण अतम्भाओ वत्तयो । एवेमे

साहुजोकी समाधिसंधारणतासे तीर्थकर नामकर्म बंधता है— दर्शन ज्ञान व
कारिणमें सत्यह् अक्षयानका नाम समाधि है । सम्यक् प्रकरसे धारण या साधनका नाम
संधारण है । समाधिका संधारण समाधिसंधारण और उत्तक मावका नाम समाधि
संधारणता है । इससे तीर्थकर नामकर्म बंधता है । किसी भी धारणसे मिली हुई
समाधिका देवकार सम्मरहादि, प्रवचनवत्सख प्रवचनप्रमावक, विनयसम्यक शीक मता
तिचारवर्जित और अरहंतादिर्णमें भक्तिमाम् हाकर कृति उसे धारण करता है इसीछिये
वह समाधिसंधारण है ।

सुंकर— वह कहाँसे जाता जाता है ?

समाधान— वह संधारण पदमें किये गये 'सं' शब्दक प्रयोगसे जाता जाता है ।

इस समाधिसंधारणसे तीर्थकर नामकर्म बंधता है वह भूमिमात्र है । इसमें शय
कारणोंका अभाव नहीं है, क्योंकि वनका अस्तित्व वहाँ दिखाई ही चुके हैं । इस प्रकार
वह तीर्था कारण है ।

साहुजोकी वैषाजत्वयोगयुक्ततासे तीर्थकर नामकर्म बंधता है— व्यापृत अर्थात्
योगादिस व्याकुल साहुज विषयमें जो किया जाता है उत्तका याम वैषाजत्व
है । जिस सम्यक् ज्ञान अरहन्तमणि बहुभुतमणि एवं प्रवचनवत्सखताविस
जीव वैषाजत्वमें खमता है वह वैषाजत्वयोग अर्थात् दर्शनविमुत्ततादि गुण हैं इनसे
संयुक्त इमेका नाम वैषाजत्वयोगयुक्तता है । इस प्रकारकी इस एक ही वैषाजत्वयोग
युक्ततासे तीर्थकर नामकर्म बंधता है । वहाँ शय कारणोंका अभावअत्र अन्तर्भाव कहना

दसमं कारण ।

अरहतमत्तीए—सुविदधादिकम्मा केवलण्णेष त्रिदसम्पदा अरहता पाम । अथवा, विद्विदद्वकम्माणं धाददधादिकम्माणं च अरहतेति सम्मा, अरिहणं पढि दोम्हं मेदा भावधो । तेषु मत्ती अरहतमत्ती । ताए तित्थपरकम्मं वञ्छइ । कवमेत्थं सेसकारणार्थं संभवो ? सुव्वदे—अरहतपुत्तालुत्ताणुवत्तणं तदनुत्ताणपासो वा अरहतमत्ती गाम । प च एसा दंसणविसुम्भदादीहि विणा संमवइ, विरोहाधो । तदो एसा एककारणसमं कारण ।

बहुसुदमत्तीए—वारसगपारया बहुसुदा पाम, तेषु मत्ती तेहि वक्खाभिद भागमत्ताणुवत्तणं तदनुत्ताणपासो वा—बहुसुदमत्ती । ताए वि तित्थपरणामकम्मं वञ्छइ, दंसणविसुम्भदादीहि विणा एदिस्से असमवाधो । एद वारसमं कारण ।

बाहिसे । इम प्रकार यह दशवां कारण है ।

अरहन्तमण्डिसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है—जिन्होंने प्रातिपाकर्मोंको मरु कर कबल-बालके द्वारा सम्पूर्ण पदार्थोंको बेल छिया है वे अरहन्त हैं । अथवा, भाठों कर्मोंको मरु करनेबाहे और प्रातिपा कर्मोंको मरु करनेबाहोंका नाम अरहन्त है, क्योंकि कर्म-शत्रुके विनाशके प्रति दोनोंमें कोई मरु नहीं है । (अर्थात् 'अरहन्त' शब्दका अर्थ है कि 'कर्म-शत्रुको मरु करनेवाला है मरु एव जिस प्रकार बार प्रातिपा कर्मोंको मरु कर देनेबासे सपोगी और भयोगी जिस अरहन्त शब्दके बाध्य हैं उसी प्रकार भाठों कर्मोंको मरु कर देनेबासे सिद्ध भी अरहन्त शब्दके बाध्य होसकते हैं क्योंकि निरसम्पर्यक्ती अर्थात् दोनोंमें कोई मरु नहीं है ।) इन अरहन्तोंमें जो गुणानुत्तरण मण्डि होती है वही अरहन्तमण्डि कहलाती है । इम अरहन्तमण्डिसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है ।

शुक्र—इसमें दोय कारणोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान—इस प्रांकाका उत्तर देने हैं कि अरहन्तके द्वारा उपविष्ट अनुष्ठानक अनुकूल प्रवृत्ति करने या उक्त अनुष्ठानके स्पर्शको अरहन्तमण्डि कहते हैं । और यह स्पर्शविशुद्धताविकोंके विना सम्भव नहीं है क्योंकि, एसा हमेंमें विरोध है । अतएव यह तीर्थंकर कर्मबन्धका व्याख्या कारण है ।

बहुभुतमण्डिसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है—जो बारह बगोंक पारणामी हैं वे बहुभुत को ज्ञाते हैं उनके द्वारा उपविष्ट मागमार्थके अनुकूल प्रवृत्ति करने या उक्त अनुष्ठानक स्पर्श करनेको बहुभुतमण्डि कहते हैं । उनसे भी तीर्थंकर नामकर्म बंधता है क्योंकि, यह भी दर्शनविशुद्धताविक दोय कारणोंक विना सम्भव नहीं है । यह तीर्थंकर नामकर्मबन्धका व्याख्या कारण है ।

पञ्चपञ्चमस्मि— मिदं तो वारहगाणि पञ्चपञ्च, प्रकृष्टं प्रकृष्टम्य पञ्चनं प्रचपञ्चिनि
 ध्मुम्यते । तस्मि मत्ती तम्ब पदुप्यादिदस्पाणुद्वान् । न च अण्णहा तरब मयी समवद्, नमेषुप्य
 सपुण्णवद्वाविरोहान् । तीए तित्थपरणामकम्म पञ्चइ । एएव मेमन्नरणापमनम्मो वत्तम्भो ।
 एवमद् सेरसम करणं ।

पञ्चपञ्चमस्मिद्वय— पञ्चपञ्चं मिदं तो वारहगाई, तम्ब मत्ता देम-महम्मरहो नमेष
 सम्माइठिणो च पञ्चपञ्चा । कुदो एएव आन्नरस्स अस्समणं ? 'एए छप्प समाणा' विं
 मुत्तेण आदिउत्थिए कपमकारत्तादो । तमु अनुरागो आन्नरत्ता ममेइमावो पञ्चपञ्चमस्मिद्वय
 णाम । तीए तित्थपरकम्म पञ्चइ । कुदो ? पञ्चमहम्मदादिभागमत्तमियपत्सुत्तकहाणुत्तास्स
 दसपविमुत्तवादीदि अविणामत्तादो । तेणद् बोइममे करणं ।

प्रचपञ्चमस्मिद्वय तीर्थंकर नामकर्म वंशता है— मिद्वान्त या वारह भंगोवा नाम
 प्रचपञ्च है क्योंकि प्रकृष्ट पञ्चन प्रचपञ्च या प्रकृष्ट (सर्वम) के पञ्चन प्रचपञ्च है ऐसी
 व्युत्पत्ति है । उस प्रचपञ्चमें कह रूप धर्मका अनुष्ठान करना यह प्रचपञ्चमें मक्ति कही
 जाती है । इसका विना अन्य प्रकारमें प्रचपञ्चमें मक्ति सम्भव नहीं है क्योंकि, असम्पूर्णमें
 सम्पूर्णके व्यवहारका विरोध है । इस प्रचपञ्चमस्मिद्वय तीर्थंकर नामकर्म वंशता है । इसमें
 शेष कृत्याका अन्तर्भाव कहना चाहिये । इस प्रकार यह तरहका कारण है ।

प्रचपञ्चमस्मिद्वय तीर्थंकर नामकर्म वंशता है— सिद्धान्त या वारह भंगोवा
 नाम प्रचपञ्च है । इसमें होमेबाळे वंशान्तरी महावन्ती और अर्धपतसम्प्राद्वि प्रचपञ्च रहे
 जाते हैं ।

संक्षेप—इसमें माध्यमका प्रचपञ्च पणों नहीं जाता । अर्थात् प्रचपञ्चमें होमेबाळे
 इस विमर्शके अनुसार प्रचपञ्च जाना चाहिये न कि प्रचपञ्च ?

समाधान— न मा इ ई उ ऊ, ए छह स्वर और ए, ओ ए वा सप्तवसर, इस
 प्रकार ये आठों स्वर अधिकोष मात्रमें एक दूसरेके स्थानमें आदेशको प्राप्त होते हैं । इस
 सूत्रसे भावि बुद्धिरूप भा क स्थानपर न का आदेश हो गया है ।

कन प्रचपञ्चों अर्थात् देशवन्ती महावन्ती और अर्धपतसम्प्राद्विओंमें जो अनुराग
 आकांक्षा अथवा 'ममेई' बुद्धि होती है उसका नाम प्रचपञ्चमस्मिद्वय है । इससे तीर्थंकर
 कर्म वंशता है । इसका कारण यह है कि पाँच महान्तारिकर नाममात्रविषयक उरुह
 अनुरागका वंशान्तिगुणतादिकर्म साथ अधिमात्रा है अर्थात् एक प्रकार प्रचपञ्चमस्मिद्वय
 वंशान्तिगुणतादि शेष गुणोंके विना नहीं बन सकती । इसीलिए यह बोझका कारण है ।

१ प्रचपञ्च इत्येव उरुपणामन्वयान्तो वा प्रचपञ्च । अत्र ५ ८२

२ इह कस्य तस्या त्रीणि न सम्भवन्ति इति चेत् । अन्तीत्यन्तविरोधा उपरि तत्र वचनात् ।
 अन्तीत्यन्त १ ५ ११६

पवयणपहावपदाए— आगमहस्त पवयणमिदि सण्णा । तस्स पहावपं णाम
वण्णज्जपणं तप्पुत्तिरूपं च, तस्स भावो पवयणपहावपदा । तीए तित्थयरकम्म पञ्चइ,
उक्कट्टपवयणपहावपत्तं दंसमविसुब्बदादीहि विणिणामावादो । तेणेइं पण्णरसमं करण ।

अभिकखणमभिकखण णाणोवजोगत्तुत्तदाए — अभिकखणमभिकखणं णाम बहुवार
मिदि मणिइं होदि । णाणोवजोगो ति भावसुइं दण्वसुइं धावेक्खदे । तेषु मुहुम्ममुहुत्तदाए
तित्थयरणामकम्मं पञ्चइ, दंसमविसुब्बदादीहि विणा एदिस्सें मणुववत्तीरो । एदेहि सोत्थेहि
करणेहि बीवा तित्थयरणामकम्मं बंरंति । अथवा, मम्मइमणे सेते सेसकरणाणं मब्बे एग
दुगादिसंवेणेण पञ्चइं ति वत्तव ।

जस्स इण तित्थयरणामगोदकम्मस्स उदएण सदेवासुर
माणुसस्स लोकस्स अच्चणिज्जा वदणिज्जा णमसणिज्जा णेदारा
धम्म-तित्थयरा जिणा केवल्लिणो इवति ॥ ४२ ॥

प्रवचनप्रमावनास तीर्थंकर नामकर्म बंधता है— आगमार्थक नाम प्रवचन है,
उसके वर्णजनम मर्याद कीर्तिविस्तार या इति करनेको प्रवचनकी प्रमावना और उसके
भावको प्रवचनप्रमावना कहते हैं । उससे तीर्थंकर कर्म बंधता है क्योंकि, उत्कृष्ट
प्रवचनप्रमावनाका वृक्षमविशुद्धतादिकोंके साथ अधिनाभाव है । इसीलिये यह पद्मप्रवर्ण
करण है ।

अमीक्ष्य-अमीक्ष्य ज्ञानोपयोगयुक्ततामे तीर्थंकर कर्म बंधता है— अमीक्ष्य-अमी
क्ष्यका अर्थ बहुत बार है । ज्ञानोपयोगसं भावपुत्र अथवा द्रव्यभूतकी अपेक्षा है । उन
(भाव व द्रव्य भूत) में बार बार उचुक्त रहनेसे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है क्योंकि,
वृक्षमविशुद्धतादिकोंके बिना यह अमीक्ष्य अमीक्ष्य ज्ञानोपयोगयुक्तता बन नहीं सकती ।

इत सोसह करणोंसे जीव तीर्थंकर नामकर्मसे बंधते हैं । अथवा सम्पदवर्तनके
होमपर होय कारणोंमेंसे एक दो भावि कारणोंके संयोगमे तीर्थंकर नामकर्म बंधता है
यहां कहना चाहिये ।

जिन जीवोंके तीर्थंकर नाम-गात्रकर्मका उदय होता है वे उसके उदयसे देव, असुर
और मनुष्य लोकके अर्चनीय, वंदनीय, नमस्कृतनीय, नेता, धर्म-तीर्थके कर्ता जिन व
केवली होते हैं ॥ ४२ ॥

१ तात्परेति बोधवतापानि सम्प्रसादयमानानि व्यस्तानि समस्तानि च तीर्थंकरनामकर्मोपपन्नानि
मनीष्यानि । उ मि १ २४ त उ १ २४ २४ तीर्थंकरनामकर्मणि नात्र त-कावत्पदमिति । व्यस्तानि
कवलाणि च मनीषि उद्धान्वयानि प्र ह उ २४ १८९ इत इना तवता व्यस्ता वा तीर्थंकरनाम भावना
मकरोति । उ ए भाव १ २४

तिर्ययरणामगोदकम्मस्सेति एव 'उदभो तपोधि' दोष्णं पशाममन्हाहरो कपम्भो,
वण्णह्य वरबाणुवत्तमो । अस्स चेमि नीत्तापे इणं एदस्स तिर्ययरणामगोदकम्मस्स उदभो
तेव उदएण सदेवासुर-माणुमस्स खेगस्स अण्णभिन्ना सि संघेवो कपय्या । चरु-वन्नि-पुण्ण
फउ-यंभ-भूव-दीत्तादीहि सगमतिपगासां अण्णया नाम । एदहि मह भइइयय कपयत्त
महम्मह-सण्णरोमणदिमहिमाविहासे पूजा नाम । तुहुं मिहवियट्टकम्मा कवत्तापेय दिहसन्तो
अम्ममुहसिहोहीए पुट्टामयदाणे सिहपरिवात्तभो दुहभिगादका देव ति एवमा कंदमा
नाम । पंचहि मुट्ठीहि विभिंदवत्तेसु निवदने जयंयण । घम्भो नाम सम्मइसण-नाण-
वरिच्छाभि । एदेहि संसार-सायं तरति ति एदामि तिर्य । एदम्म धम्म-नित्यस्स कत्ताय विषा
केवल्लिभो वेत्ताय च मर्षति ।

एवमाद्युगमो समस्तः ।

सूत्रमें तीर्थंकर नाम गोत्रकर्मका यहाँ उद्घप और उमस इन दो पदोंका सम्पादन करना चाहिये सम्पदा मर्यादी उपसर्गि नहीं होती। जिसके मर्यान् जिन जीवोंके, यह मर्यान् हम तीर्थंकर नाम गोत्रकर्मका उद्घप होता है वे उसके उद्घपसे देव असुर एवं मनुष्योंसे परिपूर्ण कालके मर्यादीय होते हैं ऐसा समझना चाहिये। बर, बलि पुत्र फल गन्ध धूप और दीप आदिजैसे मयनी भक्ति प्रकथित करनेका नाम कर्बना है। इनके साथ ऐन्द्रवज्र कन्दहस्त महामह और सर्वतोमद्र इत्यादि महिमा-विधानको पूजा कहते हैं। माप मष्ट कर्मोंको मष्ट करनेवासे केचकशामसे समस्त पदार्थोंको देखनेवासे धर्मोन्मुख शिष्टोंकी गोष्ठीमें समयहास होनेवाले शिष्टपरिपालक और बुद्धिमिश्र कटी देव हैं ऐसी प्रशंसा करनेका नाम कम्बना है। पांच मुष्टियों मर्यान् जंगोंसे जिनेश्व देवके बरजोंमें गिरनेको समस्तकार कहते हैं। धर्मका मर्य सम्पद्गर्हण सम्पद्गर्हण और सम्पद्गर्हण है। ब्रह्म इनसे संसार-सामरको तरल है इसीमये इन्हें तीर्थ कहा जाता है। इस कर्म तीर्थके कर्ता जिन केचकी और वेता होते हैं।

इस प्रकार भोषाद्रुयम समाप्त हुआ ।

१ उपर्युक्त बाल-वृत्तानि सर्वे सर्वेश्वर निरु । १ भा ३

२ अ मास दण्ड भरिउत्तानी छविपत्रमालात्री । मयमादमी न ठोरै तेन त मासनी छित्ति ॥
विद्या १३८

आदेसेण गदियाणुवादेण गिर्यगदीय णेरहपसु पञ्चणागावरण
छदसणावरण-सादासाद-चारसकसाय पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-
मय-दुगुछा मणुसगदि-पचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-
ममचउरमसठाण ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसघडण-वण्ण गध
रस-फाम-मणुसगइपाओग्गाणुपुचि-अगुरुलहुग-उवघाद-परघाद-
उत्सास-पसत्यविहायगदि-त्तस-चादर-पव्वत्त-पत्तेयसरीर-थिरायिर-सुहा-
सुह-सुभग-सुस्सर आदेज्ज जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-
पचतराइयाण को वधो को अवधो ? ॥ ४३ ॥

एद देसामासियपुच्छासुत्त, तणेदेण सुहदमन्वपुच्छाओ एम वत्तम्बाओ । एवं
पुच्छिइमिस्सिप्पिच्छमज्जपणट्ठमुत्तरसुत्तं मणदि—

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असजम्मम्मादिट्ठी वधा । एदे वधा,
अवधा णत्थि ॥ ४४ ॥

एद देसामासियसुत्त, मामिस्सद्वाणाण सेव परूवणत्तो । तणेदेण सुहदस्वार्थं परूवणं

अदेसकी अपेक्षा गतिमाग्यानुसार नरकजातिमें नारकियोंमें पाँच ज्ञानावरण, छह
इक्ष्णावरण, सातवेदनीय, असातवेदनीय, चारह कयाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, भरति, शोक,
मय, सुगुप्ता, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, बौद्धारिक तैजस व क्रमण क्षीर, समचतुरस्रसंस्मान,
बौद्धारिकशरीरगोपांग, ब्रह्मपममहनन, वज्र, गन्ध, रस, स्पृश, मनुष्यगतिप्रायाग्यानुपूर्वी,
अगुरुबलबुद्ध, उपपत्त, परपात, उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति, ब्रह्म, चादर, पयाप्त, प्रत्येक-
क्षीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्सर, आदेय, यशस्कृति, अयशस्कृति, निर्माण,
उच्छगोत्र और पाँच अन्तराय, इन क्रमोंके क्रमसे पंचक और क्रमसे अवन्धक हैं ? ॥ ४३ ॥

यह पृच्छासुत्त देशामर्णक है इसी कारण इसके द्वारा सूचित सब पृच्छाओंके
यहां कहना चाहिये । इस प्रकार पृच्छासुत्त शिष्यके मिश्रपद्यमार्थ उत्तर सूत्र करते हैं—

मिप्पाघट्टिके आदि लेकर अमंयतसम्यग्घटि तक पन्धक हैं । ये पन्धक हैं, अवन्धक
नहीं हैं ॥ ४४ ॥

यह देशामर्णक सूत्र है क्योंकि, यह बन्धस्वामित्व और बन्धारण्यमका ही निकषण
करता है । इसी कारण इसके द्वारा सूचित मर्षांकी प्रकल्पना करते हैं— पाँच ज्ञानावरणीय,

कस्तामो—पंचज्यावरणीय-ऊर्ध्वज्यावरणीय-सादासाद-वासकस्ताम-हस्त-रुदि-अरुदि-सोम-मय-
हुगुम्भ-पंचिदियजाति तेजा-कम्मइयसरीर-वज्ज गंध-रस फास-अगुस्तुहुम्भ-उवपाद-परपाद-
उत्तास-तस-बादर-यमत्त पत्तेयसरीर-विरागिर-सुहासुह-अजमकिचि-मिमिच-पंचतण्ड्याणं एदेसि
मेत्त बंधेत्तयवोच्छेदो नरिच, विरोहाभावदो । पुरिमवेद-मनुसगइ-भोराठियसरीर-समवउरस-
सउत्तण-भोराठियसरीरभगोत्तंम-वज्जसिहसंधपडम-मनुसगइपाभोगासुपुम्भ-पसत्तमिहत्तगइ-
सुमग-सुस्वर-अदेवज्ज-वसकिचि-उत्तपगोदाणमुदबो एत्त गत्ति चेव, विरोहावो । तम्हा एत्त
यदासु पयसीसु बंधेत्तयवोच्छेदाण पुप्फापुप्फविचरो गत्ति ।

पंचज्यावरणीय-चतुर्दसजावरणीय-पंचिदियजाति-तेजा-कम्मइय वज्ज गंध-रस-फास-
अगुस्तुहुम्भ-तस-बादर-यमत्त-विरागिर-सुमासुम-अजमकिचि-मिमिच-पंचतण्ड्याणं सोदबो
बंधो । विरा-यमत्त सादासाद-वासकस्ताम-हस्त-रुदि-अरुदि-सोम-मय-हुगुम्भजो सोदय पोट-
इपदि बन्धंति सव्यगुप्तद्वान्सु परत्तज्जोदयदो । उवपादं मिप्फाइदि नसज्जसम्पगइदिहिसु
सोदय-पोदपदि बन्धइ, विमहगदीए उदयामत्तदो । सत्तनसम्पादिदि-सम्पमिप्फादिहिसु
सोदय बन्धइ, तेसि तत्त उत्तपत्तीए अमावादो । परपादुत्तास-पत्तेयसरीराणि मिप्फाइदि

ऊर्ध्व-वर्धनावरणीय सादासादनीय मसतावेदनीय बादर कपाय हास्य एति अरुति
शोक, मय हुगुम्भा पंचेन्द्रियजाति तज्जस व कामेज शरीर, बर्ज गम्भ रस स्पर्श
अगुस्तुहुम्भ वज्जपात परपात उच्छ्वास वस बादर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर,
शुभ अशुभ अयशाक्षीर्ति निर्माण और पांच अन्तराव इनके वज्ज और उच्छ्वास पहां
पुप्फोद नहीं होता क्योंकि इसमें कोई विरोध नहीं है अर्थात् इनका वज्जोदय-पुप्फोद
वज्जसम्पन्न उन उपरि गुणस्थानोंमें होता है जा मरकगतिमें सम्मिल नहीं हैं । पुदपवेव
मनुष्यगति औदारिकशरीर, समवतुरकमस्थान औदारिकशरीरोंगोपांग वज्जयममंइमन
मनुष्यगतिप्रयोगानुपूर्वी प्रयास्तविहायोगति सुमग सुम्भर, अदेय यशाक्षीर्ति और
उच्छ्वागोव इन कर्मोंका उच्छ्वास पहां है ही नहीं क्योंकि नाटकियोंमें इनके उच्छ्वास विरोध
है । इसलिये पहां इन प्रकृतियोंमें वज्जपुप्फोद और उच्छ्वासपुप्फोदकी पूर्वापरताका विचार
नहीं है ।

पांच ज्ञानावरणीय और वर्धनावरणीय पंचेन्द्रियजाति तज्जस व कामेज शरीर,
बर्ज गम्भ रस स्पर्श अगुस्तुहुम्भ वस बादर, पर्याप्त स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ
अयशाक्षीर्ति निर्माण और पांच अन्तराव इनका स्वेच्छ वज्ज है । मित्रा प्रवक्तव्य साता
व मसतावेदनीय बादर कपाय हास्य एति अरुति शोक, मय और हुगुम्भा ये प्रकृतियां
स्वेच्छ-यच्छेदसे बंधती हैं क्योंकि, इनका सब गुणस्थानोंमें परिवर्तित उच्छ्वास रहता है ।
वज्जपात प्रकृति मिप्फादि और अजमवसम्पगदि गुणस्थानोंमें स्वेच्छ-यच्छेदसे बंधती
है क्योंकि, विमहयतिमें इसका उच्छ्वास नहीं रहता । सासात्तनसम्पगदि और सम्पमिप्फा-
दि गुणस्थानोंमें वही प्रकृति स्वेच्छ-यच्छेदसे बंधती है क्योंकि सासात्तनसम्पगदि और
सम्पमिप्फादिद्विषीं नाटकियोंमें उत्पत्ति नहीं है । परपात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीर

भसंजइसम्मादिहीसु सोदय-परोदएहि बन्हति, अपन्जसकले एदेसिमुदयामावादे । भवर्ति पत्तेयसरीरस्स उववाद्दमंगो, विग्गह्मदीए चेव उदयामावादे । सेससु दोसु सोदएणैव एवासि बंधो, तेसि तत्थ अपन्जसकालमावादे । पुरिसवेद-मणुसगइ ओरात्थियसरीर-समचउरसंसंअण ओरात्थियसरीरअंगोवंग वज्जरिसइसंधहण-मणुसगइपाओग्गानुपुब्बि-यसत्थविहायगइ सुमग-सुस्सर आदेव्व-असकिति-उप्पवोदाणं चदुसु गुणहाणेषु परोएणैव बंधो, गिरएसु एवासिमुदय विरोह्मदो ।

पञ्चणामावरणीय-अदसपावरणीय-चारमकसाय-भय दुगुअ-पंचिदियनादि-ओरात्थिय-
वेवा-कम्मइयसरीर ओरात्थियसरीरअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस फस-अगुस्सल्लुग-उववाद्द-परपाद-
उत्सास-तस-वाद्द-पन्जस-पत्तेयसरीर-भिभिअ पंचतराइयाणं गिरतरो बंधो, गिरयगइहि विरतर
बंधादो । सादामाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-धिगभिर-सुमासुम-असकिति-अअसकितिणं संतरो
बंधो, सव्वगुणहाणेषु पठिवक्खपयहीए बंधुवत्तमादो । पुरिसवेद-मणुसगइ समचउरसंसंअण
वज्जरिसइसंधहण-यसत्थविहायगइ-सुमग-सुस्सर-आदेव्व-मणुसगइपाओग्गानुपुब्बि-उप्पवोदाणं
मिप्फादिद्धि-सासअसम्मादिहीसु मांतरो बंधो, पठिवक्खपयधिवंधुवत्तमादो । भवरि मणुसगइ

प्रकृतिपां मिप्फाददि और भसयतसम्माददि गुणस्यानोंमें स्त्रोत्रय परोदयसं बंधती हैं क्योंकि,
अपर्पात्तकालमें इनका उदय नहीं रहता । विहाय इतना है कि प्रत्येकशरीरका बन्ध उपपातके
समान है क्योंकि, केवल विग्रहगतिमें ही उसका उदय नहीं रहता । शाय दो गुणस्यानोंमें
स्त्रोत्रयसे ही इनका बन्ध होता है क्योंकि शाय दोनों गुणस्यान नारकियोंके अपर्पात्त
कालमें होते नहीं हैं । पुरुषवेद मनुष्यगति औदारिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान,
औदारिकशरीरान्गोपांग वज्रर्मसंहनन मनुष्यगतिमायोग्यानुपूर्वी प्रशस्तविहायोगति
सुमग सुस्वर, भावेष यशकीर्ति और उक्कगोत्र प्रकृतियोंका चारों गुणस्यानोंमें परोदयसे
ही बन्ध होता है क्योंकि, नारकियोंमें इनके उदयका विरोध है ।

पांच ज्ञानावरणीय छह वर्णमावरणीय बाह्य कषाय भय दुगुप्ता पंचेन्द्रिय
जाति, औदारिक त्रैत्रस व कामय शरीर औदारिकशरीरान्गोपांग बर्ष गन्ध रस स्पर्श
अगुदल्लु उपपात परमात उक्कवास त्रस पाद्द पर्याप्त प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच
अमतराय इनका निगमतर बन्ध है क्योंकि ये प्रकृतिपां नारकगतिमें निगमतर बंधती हैं ।
साता व असाता जेवनीय हास्य रति भरति शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ
यशकीर्ति और अयशकीर्ति प्रकृतियोंका साम्तर बन्ध है क्योंकि, सर्व गुणस्यानोंमें इनकी
प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । पुरुषवेद मनुष्यगति समचतुरस्रसंस्थान
वज्रर्मसंहनन प्रशस्तविहायोगति सुमग सुस्वर, भावेष मनुष्यगतिमायोग्यानुपूर्वी और
उक्कगोत्र इनका मिप्फाददि और सासादनसम्माददि गुणस्यानोंमें साम्तर बन्ध है क्योंकि,
यही इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । विधेयता इतनी है कि तीर्थेकर

मनुमगइपाओमात्तुपुब्बीण मिच्छादिदिग्धिं तित्थपरसंदकम्मयस्मि पिरतरो वि वओ ठप्पदि ।
सम्मामिच्छादिदिग्धिं-असंजइसुम्मादिदिग्धिं भित्तरो वओ, एतामि पडिक्कउपपडीण वओम वाओ ।

एदाओ पयडीओ वओमाणमिच्छादिदिग्धिस्स चत्थारि मूलपञ्चया । पाणाममयउत्तरपञ्चया
एकवओस, ओरात्थि ओरात्थिमिस्स-इत्थि पुरिमपञ्चयाजममावाओ । एगसमयअहणुक्कसपञ्चया
अहाक्केण इस अट्ठम । सामयस्स मूलपञ्चया तिग्धि, मिच्छत्तामावाओ । पाणाममयउत्तर
पञ्चया चउवेत्तात्थीय, ओरात्थि ओरात्थिमिस्स-वेत्तात्थिमिस्स-कम्मइय-इत्थि-पुरिसपञ्च-
यामममावाओ । एगसमयअहणुक्कसपञ्चया अहाक्केण इस सत्तारम । सम्मामिच्छादिदिग्धिस्स
मूलपञ्चया तिग्धि, मिच्छत्तामावाओ । पाणाममयउत्तरपञ्चया चत्थीस, ओपेसु पञ्चपसु
ओरात्थि इत्थि-पुरिमपञ्चयाजममावाओ । एगसमयअहणुक्कसपञ्चया अहाक्केण पव
साठम । असंजइसुम्मादिदिग्धिस्स मूलपञ्चया तिग्धि, मिच्छत्तामावाओ । पाणाममयउत्तरपञ्चया
चउवेत्तात्थीय, ओपपञ्चपसु ओरात्थि ओरात्थिमिस्स-इत्थि-पुरिसपञ्चयाजममावाओ । एगसमय-
अहणुक्कसपञ्चया अहाक्केण ण मीलम ।

मठ्ठिच्छी सता एकनवास मिच्छादिदिग्धिं जीवमे मनुष्यगणि और मनुष्यगणिप्रापाम्यानुपूर्वीका
निरन्तर भी वपस पाया जाता है । सम्मामिच्छादिदिग्धिं और असंजइसुम्मादिदिग्धिं गुणस्थानोंमें
उक्त मठ्ठिच्छीका निरन्तर वपस है क्योंकि यहाँ इनकी प्रतिपक्ष मठ्ठिच्छीका वपस
वहीं होता है ।

इस मठ्ठिच्छीको जीवमेवास मिच्छादिदिग्धिं नामकी जीवक मूल प्रत्यय चारों हात हैं ।
जाना समय सम्मगधी उत्तर प्रत्यय इकपापन हात हैं क्योंकि, उसके भीक्षारिक, भीक्षारिक
मित्र अर्थात् और पुरुषवद् इन चार प्रत्ययोंका अभाव है । एक समय सम्मगधी अग्रम्य
और उरुह प्रत्यय क्रमसः दूरा और अठारह हात हैं । सासात्तुसम्यग्दृष्टिके मूल प्रत्यय
तीन हात हैं क्योंकि, उनका मिच्छात्ताका अभाव है । जाना समय सम्मगधी उत्तर प्रत्यय
चत्थीस हात हैं क्योंकि, उनका भीक्षारिक भीक्षारिकमित्र वैविधिकाभिन्न काम्ये तर्थात्
और पुरुषवद् इन छह प्रत्ययोंका अभाव है । एक समय सम्मगधी अग्रम्य व उरुह प्रत्यय
क्रमसः दूरा और सत्तरह हात हैं । सम्मगिमिच्छादिदिग्धिं मूल प्रत्यय तीन हात हैं क्योंकि,
उनका मिच्छात्ताका अभाव है । जाना समय सम्मगधी उत्तर प्रत्यय चत्थीस हात हैं क्योंकि,
ओपप्रत्ययोंमें भीक्षारिक, अर्थात् और पुरुषवद् प्रत्यय नहीं हात । एक समय सम्मगधी
अग्रम्य व उरुह प्रत्यय क्रमसः भी और साठह हात हैं । असंजइसुम्मादिदिग्धिं मिच्छात्ताका
अभाव हावसे मूल प्रत्यय तीन हात हैं व जाना समय सम्मगधी उत्तर प्रत्यय चत्थीस हात
हैं क्योंकि, भाषमन्वयोंमें भीक्षारिक, भीक्षारिकमित्र अर्थात् और पुरुषवद् इन चार
प्रत्ययोंका अभाव है । एक समय सम्मगधी अग्रम्य व उरुह प्रत्यय पञ्चात्रमस और और
साठह हात हैं ।

पंचपाणावरणीय-छन्दसपावरणीय-सादासाद-वारसकसाय-गुरिसवेद-हस्त-दि-अरि-
सोग मय-दुर्गुल्ल-पंचिदिययादि-भोलालिप-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंछाण-भोरालियसरीर
अंगोवंग-यन्त्रिसहसंघट्टण-वण्ण-गंध-रस फस-अगुरुवल्लुव-उवषाद-परपादुस्सास-पसत्पविहाय
गह-सस-वावर-पन्नज-पत्तेयसरीर-भिराभिर-सुमासुम-सुमग-सुस्सर-अदेज्ज-असंकिचि-भिमिज-
पंचतराह्याणि मिच्छाद्वि-सासणसम्मादिद्विपो दुगाइसत्तुत्त, सम्मामिच्छाद्वि-असंजदसम्मा-
द्विद्विपो मनुसगाइमत्तुत्तं बंधति, सेसगईण बंधामावाधो । मनुसगाइ-मनुसगाइपाजोमाणुपुब्बि
उच्चगोदाणि सव्वे मनुसगाइसंजुत्तं वेव भवति, सेसगईहि सह विरोहादो ।

एवासि सप्पासि पि पयडीज बंधस्स पेखाया चेव समी । बंधद्वार्ण सुगमं । एवासि
पेखायां गुणद्वार्ण चरिमाचरिमद्वारेणु बंधवोच्छेदो जति । सम्मपयडीजं बंधो सादि-अदुवो,
अपादि भुवपेइयाजममावाधो । अथवा, पंचपाणावरणीय-छन्दसपावरणीय-वारसकसाय मय,
दुर्गुल्ल-वण्णपठक-अगुरुवल्लुव-उवषाद-तेजा-कम्मइय-भिमिज-पंचतराह्याणि मिच्छाद्विद्वि-
पठव्विहो बंधो, उवसमसेहीदो भोरिय गिर्य पइद्वमि सादि अदुवबंधसंजादो । सेस
गुणद्वारेणु पुवं जति, बंधवोच्छेदमकुप्पमाजसासणादीजममावाधो । सेसपयडीजं बंधो सादि

पांच ज्ञानावरणीय छह वर्तमानावरणीय सत्ता व असाता वेदनीय बारह कपाय
पुरुषवेद हास्य रति भरति शोक, मय जुगुप्सा पचेन्द्रियजाति औदारिक तैजस व
कर्मण शरीर, समचतुरस्रसह्याण औदारिकशरीरगोपांग बज्रर्मसहहनन बर्ण गन्ध
रस स्पर्श अगुरुल्लु, उपधात परधात उच्छ्वास प्रशस्तविहायोपति वस बल्लर,
पवाप्त प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग सुस्वर, मादेय पचाकीर्ति निर्माण
और पांच अन्तराय इन प्रकृतियोंको मिथ्याद्वि एवं सासादनसम्पद्वि दो [तिर्यक्
और मनुष्य] गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं । सम्मगिमिथ्याद्वि और असंत्यतसम्पद्वि
मनुष्यगतित्ते संयुक्त बांधते हैं क्योंकि उनके शेष गतियोंका बन्ध नहीं होता । मनुष्यगति
मनुष्यगतिशायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रको समी मारकी मनुष्यगतित्ते संयुक्त ही बांधते
हैं क्योंकि उनके शेष गतियोंके साथ इनका बांधनेका विरोध है ।

इन समी प्रकृतियोंके बन्धक मारकी जीव ही स्वामी हैं । बन्धाध्याम सुगम है ।
इन प्रकृतियोंका मारकीयोंके गुणस्थानोंके वरम व अवरम स्थानोंमें बन्धपुच्छेद नहीं है ।
अर्थात् इन प्रकृतियोंका बन्धपुच्छेद मारकीयोंके सम्मव बार गुणस्थानोंमें नहीं होता ।
सब प्रकृतियोंका बन्ध सादि-अदुव है क्योंकि अनानि और शुभ मारकीयोंका अभाव है ।
अथवा पांच ज्ञानावरणीय छह वर्तमानावरणीय बारह कपाय मय जुगुप्सा वर्णादिक
जाट, अगुरुल्लु, उपधात तैजस व कर्मण शरीर, मिमाण और पांच अन्तराय इनका
मिथ्याद्वि गुणस्थानमें जाट प्रकाशक बन्ध है क्योंकि, उपशममेधीसे उतरकर मारकी
प्रतिष्ठ रूप जीवमें सादि व अदुव बन्ध देखा जाता है । शेष गुणस्थानोंमें शुभ बन्ध नहीं
है क्योंकि बन्धपुच्छेदको न करनेपाळे सासादनसम्पद्वि आदिकोंका अभाव है । शेष

वधुषो वधो, वधुवधविपदा ।

णिदाणिदा-पयलापयला-धीमगिद्धि-अणताणुवधिकोध-माण-
माया-लोभ-इत्येवेद तिरिक्खाठ-तिरिक्खगह-चउसठाण-चउसघडण-
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बि-उच्चोव अप्पसत्थविहायगइ दुभग दुस्सर-
अणादेज्ज णीचागोदाण को वधो को अणधो ? ॥ ४५ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्टी सासणसम्माद्विष्टी वंधा । एदे वधा, अवसेसा अवंधा
॥ ४६ ॥

सन्धानि वपसामित्तमुत्ताणि देवामामियाणि चि दहृप्वाणि । तेभेदेय सुइतरवक्खवर्ष
कस्समो । तं वहा— अणताणुवधिचउहस्स वधेदवा समं वोप्पिन्नंति, सासणवरिमसमयमि
एदस्स सम वधेदववोप्पेदुवलमादा । धीमगिद्धित्थि-इत्येवेद तिरिक्खाठ-तिरिक्खगह-चउ
संठाण चउसघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बि-उच्चोवार्ण विरयगदीए उइओ वन्धि, विरोहादो ।

प्रकृतिबोका बन्ध छादि वसुध ही है क्योंकि ये प्रकृतियाँ अशुक्लबन्धी है ।

निद्रा-निद्रा, प्रवत्त-प्रवत्त, सत्यानृष्टि, अनन्तानुबन्धी क्षेत्र, म्यान, माया, छेम,
क्षीवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्माति, चार संस्थान, चार संहमन, तिर्यग्मातिप्रायाम्यानुपूर्वी, उघोत्त,
अप्रमत्तसिद्धयोगति, दुर्मग, दुस्सर, अनादेय और नीचमोक्ष, इन प्रकृतिर्याक्य क्षेत्र बन्धक
और क्षेत्र बन्धक है ? ॥ ४५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिप्पात्थि और सामादनसम्यग्गति बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, क्षेत्र नारक्षी बन्धक
हैं ॥ ४६ ॥

बन्धस्यामित्येके सव सूत्र वेद्यामर्शाक है ऐसा समझना चाहिये । इसी कारण
इस सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार है— अनन्तानुबन्धि
अनुष्णका बन्ध और वक्ष्य दोसों साधर्म्यपुच्छिन्न होते हैं क्योंकि सामादनानुबन्धका
कारण समयमें अनन्तानुबन्धिअनुष्णका साध ही बन्धोदयपुच्छेत् पाया जाता है । अथवा
गुह्य जादिक सीस क्षीवेद तिर्यगायु, तिर्यग्माति चार संस्थान चार संहमन सिद्धमाति
प्रायोप्यानुपूर्वी और उघात्त इसका नरकगतिमें वक्ष्य नहीं है क्योंकि, ऐसा हममें विरोध

सदो एदासि पुन्य पञ्चम वा संघोदयवोच्छेदविचारो ऋत्वि, संतासंताणं सन्निवृत्तविरोहस्यो ।
अप्यसत्यविहायगद् दुमग-दुस्सर-अणादेज्ज-गीचागोदाणं पुण्यं संघो वोच्छिन्नवि-पञ्चम उदयो,
सासन्नमि षट्ठवणाणं असज्जदसम्मादिट्ठिहि उदयवोच्छेदुवलंमादो ।

अप्यसत्यविहायगद्-दुस्सर-अणंताणुसंधिचठक्कणं सोदय-परोदपणं संघो, मद्दुधोदय
सादो । पवरि अप्यसत्यविहायगदि-दुस्सरणं सासन्नसम्मादिट्ठिहि सोदयो वेव ऋत्वि ।
तिरिक्खाउ-तिरिक्खगद्-चठसत्थणं चठसंघण-तिरिक्खगद्पाओमाणुपुण्णि उज्जेय-भीजगिदि-
तियाणं परोदपणं संघो, एत्थ एदेसिमुदयामावादो । दुमग-अणादेज्ज-गीचागोदाणं सोदपणं
संघो, षट्ठवणं एदेसि पडिवक्खाणं उदयामावादो ।

भीजगिदित्ति अणंताणुसंधिचठक्कणं पिरतरो संघो । इत्थिवेदं चठसत्थणं-चठसंघण-
उज्जेय-अप्यसत्यविहायगद् दुमग-दुस्सर अणादेयाणं सांतरो संघो, पडिवक्खपयडिबंधसमवादो ।
तिरिक्खाउअस्स पिरंतरो संघो, पडिवक्खपयडिबंधेण विणा संघविरामुवलंमादो । तिरिक्खगद्
पाओमाणुपुण्णि तिरिक्खगद्-पीचागोदाणं सांतर गिरंतरो संघो, छमु पुडवीसु सांतरो होदणं
सत्तमपुडवीसि पिरंतरोवेव संघदसमादो । अदि पडिवक्खपयडिबंधमस्सिदणं मक्कमाणंवा

है । इमीसिये इन प्रकृतियोंके पूर्वमें मध्यमा पश्चात् बन्धादयम्युच्छेदका विचार नहीं है,
क्योंकि, सत् और असत् वस्तुके सम्प्रसारका विरोध है । अग्रशस्त्रविहायोगति दुर्मग,
दुस्वर, अनार्य और मीचगोत्रका पूर्वमें बन्ध म्युच्छिन्न होता है पश्चात् उदय
क्योंकि, साक्षात्तमगुणस्थानमें बन्धके मध्य होजातेपर अर्धयत्तसम्प्रदायि गुणस्थानमें इनका
उदयम्युच्छेद पाया जाता है ।

अग्रशस्त्रविहायोगति दुस्वर और अनार्यानुसंधिचठक्कणं स्वोदय-परोदयसे
बन्ध होता है क्योंकि, ये मध्यमादयी प्रकृतियाँ हैं । विशेष इतना है कि अग्रशस्त्रविहायोगति
और दुस्वरका साक्षात्तमगुणस्थानमें स्वोदय ही बन्ध होता है । तिर्यगायु,
तिर्यगाति बार संस्थान बार संहनन तिर्यगातिप्रायोग्यानुपूर्वी उद्योत और
स्थानम्युच्छिन्न इनका परोदयसे ही बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ इनके उदयका अभाव
है । दुर्मग अनार्य और मीचगोत्रका स्वोदयसे ही बन्ध होता है क्योंकि, मारुतियोंमें
इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है ।

स्थानम्युच्छिन्न आदिक तीन और अनार्यानुसंधिचठक्कणं गिरंतर बन्ध होता है ।
स्वोदय बार संस्थान बार संहनन उद्योत अग्रशस्त्रविहायोगति दुर्मग दुस्वर और
अनार्य इनका साक्षर बन्ध होता है क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव
है । तिर्यगायुका गिरंतर बन्ध होता है क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतिक बन्धक बिना इसके
बन्धकी विधासि पायी जाती है । तिर्यगातिप्रायोग्यानुपूर्वी त्रिवर्गाति और मीचगोत्रका
साक्षर गिरंतर बन्ध होता है क्योंकि, यह पृथिवियोंमें इनका साक्षर बन्ध होकर साक्षर,
पृथिवीमें गिरंतर रूपसे ही बन्ध देखा जाता है ।

सांत्तरबंषपयडी बुन्चदि तो उ भोवस्स पडिवस्सबंषपयडीए अणुन्जोवसरूवाए अभावाओ उन्जोवेण भिंत्तरबंषिणो होदव्यमव बंषविणत्तो अण्वि सि जदि सांत्तर बुन्चदि तो तिस-
यण्णारुगाठभाणं पि सांत्तरं पस जदि सि ? एएय परिहरो बुन्चदे— अं भुव पडिवस्स
पयडिबंषमस्सिदूए वस्समापबंषा सांत्तरबंषि सि तं सांत्तरबंषीसु पडिवस्सपयडिबंषाविणामाणं
इदूए भुव । परमत्वरो पुण एगसमयं बंषिदूए भिद्वियसमए जिस्से बवविणमो दिस्सदि स
सांत्तरबंषपयडी । जिस्से बंषकस्से जइणो वि भंतोमुहुत्तमेस्से सा भिंत्तरबंषपयडिं पि
वेत्तणं ।

पञ्चयपत्तवपे क्रिमापे चठअणियपयडिभंगा । गवरि तिरिक्खाठभस्स मिप्पमहिदि
एगुबंषपस पञ्चपा, वेठअणियमिस्स-कम्मइयप चयापमभावाओ ।

संज्ञ—यदि प्रतिपन्न प्रकृतिके बन्धका भाधय करक बन्धविध्यास्तिको प्राप्त
होनेवासी प्रकृति सात्तरबन्ध प्रकृति कही जाती है तो उद्योतकी प्रतिपन्नभूत अनुपात-
स्वरूप प्रकृतिका अभाप होनेसे उद्योतको निरन्तरबन्धी प्रकृति होना चाहिये । अथवा
बन्धका विभाषा है इस कारणसे यदि सात्तरता कही जाती है तो फिर तीर्थकर, माहायिक
और मायु कर्मीक भी सात्तरताका प्रसंग आता है ?

समाधान—यहां उपयुक्त शब्दका परिहार कहत हैं — प्रतिपन्न प्रकृतिके बन्धका
भाधय करक बन्धविध्यास्तिको प्राप्त होनेवासी प्रकृति सात्तरबन्धी है इस प्रकार जो
कहा है वह सात्तरबन्धी प्रकृतियोंमें प्रतिपन्न प्रकृतिक बन्धके अविनाशान्ते देखकर
कहा है । वास्तवमें तो एक समय बंधकर द्वितीय समयमें जिस प्रकृतिकी बन्धविध्यास्तित
देखी जाती है वह सात्तरबन्ध प्रकृति है । जिसका बन्धकाय अथवा भी अन्तर्मुद्रितमात्र है
वह निरन्तरबन्ध प्रकृति है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

प्रत्ययप्ररूपणा करत समय अतुस्थानिक (जार गुणस्थानोंमें बंधनेवासी)
प्रकृतियोंके समान ही प्रत्ययप्ररूपणा करना चाहिये । विचार इतना है कि तिर्यगायुके
मिप्प्यादृष्टि शुचस्थानमें यहां उभवात्त प्रत्यय है क्योंकि, वैदिकमिध और कर्मज
प्रत्ययोंका अभाव है ।

१ गौतु काका इति वाक ।

२ वाक्य अर्थात् बचन उभयमान बच उत्तरतः समवायारम्भ शारदसुर्गर्तुं न परत हा
कावत्तवा अतर्गुर्गर्तुमयेति तावते निष्पन्नकृत्वातरातिता बचो बला हा कावत्त इति व्युत्पत्तेः ।
अतर्गुर्गर्तुमिति निष्पन्नकृत्वातरातिता तावत्तवा इति कश्चित् । ××× अन्वयेति वा अतर्गुर्गर्तु
वावत्तसुर्गर्तु बन्धते हा निरन्तरवा विरन्तरतामत्तर्गुर्गर्तुमये अन्वयेककृत्वा वत्त तावो बचो बलानिति
व्युत्पत्तेः अतर्गुर्गर्तुमिति निष्पन्नकृत्वातरातिता इति वाक्य । क म ह १८ १५

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्माणुपुब्बि-उज्जोवाणि मिच्छाइड्ढि-सासण
सम्मादिट्ठिणो तिरिक्खगइसत्तुपं बंधति । सेसाओ दुग्गप्पपयडीओ दुग्गइसत्तुपं बंधति । सम्मासिं
पयडीणं पेरइया सानी । बंधइपं बंधविणइट्ठापं च सुगमं । धीपगिदितिय अर्यत्तासुबंधि
अउक्कणं मिच्छाइड्ढि चउत्थिहो बंधो । सासणे सादि-अदुओ । सेसाणं पयडीणं बंधो
सादि अदुओ बंध ।

मिच्छत्त-णवुसयवेद-हुइसठाण असपत्तसेवट्टसरीरसघडणणामाण
को बंधो को अवधो ? ॥ ४७ ॥

सुगम ।

मिच्छाइटी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ४८ ॥

एदेण सुइदस्थाण परूवणा कीरे— मिच्छत्तस्स बंधोदया सम बोधिसत्त्वंति,
मिच्छाइड्ढिचरिमसमए बंधोदयवोच्छेदइसणो । ननुसयवेद-हुइसठाण अर्यपत्तसेवट्टसरीरसघडण-
णामाण पुग्गं बंधो बोधिसत्त्वदि पन्हा उदओ मिच्छाइड्ढिचरिमसमए अट्ठबंधाणमेदासिं
असंभदसम्मादिट्ठिहि उदयवोच्छेदुवलमाओ । नवरि असंपत्तमेवट्टसरीरसंघडणस्स पुप्पावर

तिपगायु, तिर्यग्गति निर्धग्गतिमायोग्यानुपूर्वी और उद्योत प्रकृतियोंको मिथ्याएहि
पक्ष सासत्त्वानसम्पदएहि निर्यग्गतिसे संयुक्त बांधने हैं । दोय क्रियाय प्रकृतियोंको दो
गतियोंस संयुक्त बांधने हैं । सब प्रकृतियोंका मारवाँ स्वामी हैं । बन्धाध्याय और बन्ध
चित्तस्थान सुगम हैं । न्यायमयुद्धिबय और भ्रमन्यानुपनिषत्तनुष्कय मिथ्याएहि
गुणस्थानमें ब्याप्य प्रकारका बन्ध होता है । न्यायवृत्तमें सावि और अधुब बन्ध होता है ।
दोय प्रकृतियोंका बन्ध सावि व अधुय ही होता है ।

मिथ्यात्व, ननुसकवेद, हुइसंस्थान और अर्यप्राप्तमृपट्टिकसरीरसहनन नामकमक
कौन पन्धक और कौन अपन्धक हैं ? ॥ ४७ ॥

एह मूत्र सुगम है ।

मिथ्याएहि पन्धक हैं । ये पन्धक हैं, दोय नारकी जीव अपन्धक हैं ॥ ४८ ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं — मिथ्यात्वप्रकृतिव बन्ध और
वृत्त दोनों एक साथ व्युत्पिष्ठ होते हैं क्योंकि मिथ्याएहि गुणस्थानके अरम समयमें
इसक बन्ध और वृत्तम व्युत्पिष्ठ देया जाता है । ननुसकवद हुइसंस्थान और
अर्यप्राप्तमृपट्टिकसरीरसहनन नामकमोंका पूर्वमें बन्ध व्युत्पिष्ठ होता है पश्चात् उदय,
क्योंकि, मिथ्याएहि गुणस्थानके अरम समयमें बन्धके नष्ट हो जानेपर असंपत्तमस्यएहि
गुणस्थानमें इनका उदयव्युत्पिष्ठ पाया जाता है । विशेष इतना है कि असंपत्त

बंधोदयबोधोदयविचारो भवति, बंधं मोक्षं उद्गमामात्रो ।

मिच्छत-अनुमयबोध-हुण्डसंज्ञार्थं सोदयो बंधो । बंधरि हुण्डसंज्ञास्य स-सोदयो वि,
विम्वहगदीप' तत्सुदयामात्रो । अर्थात्समेकमरिर्बन्धस्य सोदयो बंधो, तस्य सं
वत्सुदयामात्रो । मिच्छतस्य भित्तो बंधो, धुवर्षपिताश । सेमात्र विष्णं सांतो, एतस्य
बन्धुवर्मसंज्ञादे ।

पञ्चयो चउद्गमियपयविषयपदि समा । एराओ पयडीओ अत्तारि वि हुण्डसंज्ञं
बन्धति । भेराया समी । [बंधाण] बंधविषयद्वयं च सुगमं । मिच्छतस्त चउद्गमो
बंधो, धुवर्षपिताश । सेमात्र सादि मद्रुवा, धुवर्षपितामत्रो ।

मणुस्ताउअस्स को वधो को अणधो ? ॥ ४९ ॥

सुगमं ।

स्वप्राज्ञाचारैरसंहननके एव या पञ्चान् बन्धाद्यभ्युच्छेत् इत्यत्र विचार नहीं है क्योंकि,
बन्धको छोड़कर वहाँ इसका उद्भवका अभाव है ।

मिथ्यात्व अनुभवके लीर हुण्डसंज्ञानका साक्ष्य बन्ध होता है । विशेष यह है
कि हुण्डसंज्ञानका बन्ध स्वादय परोक्षमे भी होता है क्योंकि, विम्वहगदीप उक्त उद्भव
नहीं रहता । अस्तंमात्रस्वप्राज्ञाचारैरसंहननका बन्ध परोक्षमे होता है, क्योंकि,
बापकेपौत्रों संहननका उद्भव नहीं रहता । मिथ्यात्वका बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि, वह
जुबबन्धी मरुति है । राय तीन मरुतियोंका साक्षर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयमें
उनके बन्धका विग्राम दिया जाता है ।

प्रत्ययाधी मरुतया अनुस्वामिक मरुतियोंके प्रत्ययोंके समाज है । वे बापों ही
मरुतियों का गणियोंसे संयुक्त बंधनी हैं । मारकी जीव स्वामी हैं । [बन्धाण्मात्र] लीर
बन्धविषयस्वात् सुगम है । मिथ्यात्वमरुतिका बन्ध बापें मरुतयका होता है, क्योंकि, वह
जुबबन्धी मरुति है । राय मरुतियोंका सादि च अनुभव बन्ध होता है, क्योंकि, च जुबबन्धी
नहीं है ।

मणुप्पायुक्क कीन बन्धक नीर कीन अणन्धक है ? ॥ ४९ ॥

वह सूच सुगम है ।

मिच्छाद्विटी सासणसम्माद्विटी असंजदसम्माद्विटी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ५० ॥

एदेण सुखदत्वस्स पक्खण कस्सामो—एव वधोदयाण पुप्फावरवोप्पेदविचारो मत्थि, वंषं मोक्षेण उदयामावादो । परोदएण वधंति, तिरयगदीय मनुस्साउभस्स उदरंविरोहादो । विरंतरं वधंति, एगसमएण वंधुवरमाभावादो । मिच्छाद्विस्स एगवन्धवपन्धया, वेठ म्वियमिस्स-कम्मइयपन्धयाणमभावादो । सासणस्स चोदाठ असंजदसम्मादिद्विस्स पाविस पन्धया । सेसं सुगम । मणुसगाइससुत्तं वधंति । मेरइया सामी । वंधव्वाण वधविषयइहासं च सुगम । सादि-अद्दुवा वंधो, अद्दुवंधविच्छरो ।

तित्थयरणामकम्मस्स को वधो को अवधो ? ॥ ५१ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिद्विटी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ५२ ॥

तित्थयरवधस्स उदयादो पुप्फं पन्ध्र वोप्पेदो होइ ति सम्पिक्कसो मत्थि, तित्थयर

मिप्पाद्वि, सासादनसम्पद्वि और असंजदसम्पद्वि वन्धक हैं । ये वन्धक हैं, शेष नारकी जीव अवन्धक हैं ॥ ५० ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थको प्रकृपणा करते हैं — यहाँ वन्ध और उदयक पूर्व या पश्चात् व्युत्पद्ये होनेका विचार नहीं है क्योंकि वन्धको छोड़कर नारकीयोंमें इसका उदय नहीं रहता है । नारकी जीव इसे परोक्षसे बांधते हैं क्योंकि मरणागतिमें मनुष्यायुके उदयका विरोध है । मिरम्भ बांधते हैं क्योंकि एक समयमें इसके वन्धका विग्राम-नहीं होता । मिप्पाद्विके उन्मत्तास प्रत्यय होते हैं क्योंकि ईक्षिपिकमिध और कर्मण प्रत्ययोंका यहाँ अभाव है । सासादनके वधासीम और असंजदसम्पद्विके वधासीस प्रत्यय होते हैं । शेष प्रत्ययप्रकृपणा सुगम है । मनुष्यायुके नारकी जीव मनुष्यमतिसे संयुक्त बांधते हैं । नारकी जीव स्वामी हैं । वन्धाप्याम और वन्धविमद्वस्यान-सुगम है । इन्धका वन्ध सादि च समुच्च होगा है; क्योंकि, यह समुच्चवन्धी प्रकृति है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ५१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंजदसम्पद्वि वन्धक है । ये वन्धक हैं, शेष नारकी अवन्धक हैं ॥ ५२ ॥

तीर्थंकर प्रकृतिके वन्धका उदयसे पूर्व वधया पश्चात् व्युत्पद्ये होता है इस प्रकार

सेत्सुदयामावादे । सेत्सेव परोक्षो बंधो । भिरंतरो बंधो, एगसमपण बधुवरमावादे । पञ्चवा
ईसणविसुब्बरा त्थदिसंवेगसंपन्नरा बरइत-बहुमुत्त-पवयणमत्तिमात्थो । मधुसगदिसंभुत्ते ।
पेरइया सामी । बंधद्वय बंधविषद्वयार्थं च सुगमं । बंधो सादि-भद्रुवा, बद्रुवबंधो ।

एव तिसु उवरिमासु पुढवीसु णेयत्त ॥ ५३ ॥

एवं बंधसामितं [सामर्थ्यं] पट्ट-च उच्यते । त्रिसेसे पुण भवत्त्रयिन्त्रमाप्य भेदा भविष्य । तं
भवित्स्यात्— मधुसगद-मधुसगदपाभोम्माशुपुष्पीण सांतर-भिरंतरो मिच्छाद्विद्विह पदमाप्य पुढवीस
बंधो भविष्य, सांतरो भेव; तित्थयरसंतक्रमियमिच्छाद्विद्विहपमभावादे । विदियदंबयमिह [तिरिक्त्वा
गद] तिरिक्त्वागदपाभोम्माशुपुष्पी-बीचागोदात्त सांतर-भिरंतरो बंधो जसिप, सांतरो भेव, 'सत्तमं
पुढवि मुत्ता बणत्तव त्रिययदीए एदासिं भिरतरबधामावादे । एसा भेवो पदम-विदिय-सदिय
पुढवीसु । विदिय-तदियपुढवीसु उवपाद-परपाद-उत्साम-पत्तेयसरीत्तमसंभद्रसम्माद्विद्विह
सोदो भेव बंधो, तत्त बपन्नत्तत्तत्त असंभद्रसम्माद्विद्विहं भवामावे । मधुसगददुगं तित्थयरसंत

गुह्यता यहाँ नहीं है क्योंकि तीर्थंकर प्रकृतिका यहाँ मारुतिपोंमें उच्च नहीं होता । इसी
कारण इसका परोक्षपक्ष बन्ध होता है । बन्ध इसका निरन्तर होता है क्योंकि एक
समयमें इसके बन्धका विग्रह नहीं होता । इसमें प्रत्यय वर्तमानविशुद्धता अन्वि-संबन्ध
सम्पन्नता अद्वैतमति बह्व्युक्तमति और प्रबलमति आधिक है । मधुप्यगतिसे
संयुक्त इसका बन्ध होता है । मारुती जीव स्वामी है । बन्धायत्तन और बन्धविनष्टस्यान
सुगम है । इसका बन्ध सादि च मधुव होता है क्योंकि, यह मधुबन्धी प्रकृति है ।

इम प्रकार यह व्यवस्था उपरिम तीन पृथिवियोंमें जानना चाहिये ॥ ५३ ॥

यह बन्धव्यवस्था [सामान्यकी] अपेक्षासे कहा गया है । किन्तु विशेषताका
अपसम्बन्धन करके पर भेद है । उस कहते हैं— मधुप्यगति और मधुप्यगतिप्राप्तोन्वातपुर्वीक
बन्ध प्रथम पृथिवीमें मिथ्याद्वि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर नहीं है, किन्तु सान्तर ही है।
क्योंकि यहाँ तीर्थंकर प्रकृतिक सत्त्वभासे मिथ्याद्वि मारुती जीव नहीं होते हैं । द्वितीय
वर्णकमें (१) [निर्यगति] निर्यगतिप्राप्तोन्वातपुर्वी और बीचगोन प्रकृतियोंका सान्तर निर-
न्तर बन्ध नहीं होता किन्तु सान्तर ही होता है, क्योंकि सत्त्व पृथिवीके छोड़कर बन्धव
वरकगतिम इन प्रकृतियोंके निरन्तर बन्धका अभाव है । वह भेद प्रथम द्वितीय और
तृतीय पृथिवियोंमें है । द्वितीय और तृतीय पृथिवियोंमें उपमात परमान उच्छब्दान और
प्रत्येकशरीर, इन प्रकृतियोंका असंपत्तसम्बन्धवि गुणस्थानमें स्वेदव ही बन्ध होता है
क्योंकि यहाँ अपर्याप्तकर्ममें असंपत्तसम्बन्धविषयका अभाव है । मधुप्यगति और

कम्मियमिच्छाद्द्वीण पिरतर, सेसाण सांतरी असजदसम्मादिद्विस्स चात्थीस पच्चया, वेठविय
मिस्सकम्मइयप चयाणममावादे । णत्तिओ चेव भेदो, णत्थि अण्णत्थ कत्थ यि ।

चउत्थीए पचमीए छट्ठीए पुढवीए एव चेव णेदज्ज । णवरि
विसेसो तित्थयर णत्थि' ॥ ५४ ॥

तित्थयरम्म बघो किमिदि णत्थि चि उत्ते तित्थयरं बंधमाणसम्माद्द्वीण मिच्छत्तं
गंतूण तित्थयरसत्तकम्मण सह विप्पियत्तदियपुढवीसु व उप्पज्जमाणममावादे । एदेणेव
कारणेण मनुग्गाइदुग्गं मिच्छादिद्वी सांतरे बधइ । णत्थि अण्णो भेदो ।

सत्तमाए पुढवीए णेरइया पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय
सादासाद-चारसकसाय पुरिसवेद-हस्स रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुछा-
पर्विदियजादि ओरालियत्तेजा-कम्मइयसरिर-समचउरससठाण-ओरा-

मनुष्यगतिप्राप्त्यनुपूर्वी तीर्थंकर प्रकृतिकी सत्तावाल मिथ्यादृष्टिपोंकि निरुत्तर बघती हैं
हाथ नारकियोंके साम्तर बंधती हैं । असंप्रतसम्यग्दृष्टिके बाळीस प्रत्यय हाते हैं क्योंकि
बैरुपिकमिथ्य और कर्मस प्रत्ययोंकर यहाँ भयाय है । इतना ही भेद है सम्यक् कहीं और
कोइ भेद नहीं है ।

चतुस, पंचम और छठी पृथिवीमें इसी प्रकार जानना चाहिये । विशेषता केवल यह
है कि इन पृथिवियोंमें तीर्थंकर प्रकृति नहीं है ॥ ५४ ॥

शुद्ध—तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध यहाँ क्यों नहीं होता ?

समाधान— इस शब्दक जालपर उत्तर देते हैं कि जिस प्रकार तीर्थंकर प्रकृतिका
बांधनबाल सम्पद्यदृष्टि जीव मिथ्यात्वको प्राप्त होकर तीर्थंकर प्रकृतिकी सत्ताके साथ
द्वितीय व तृतीय पृथिवियोंमें उत्पन्न हाते हैं वैसे इस पृथिवियोंमें उत्पन्न नहीं हाते । इसी
कारणसे ही मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्राप्त्यनुपूर्वीको मिथ्यादृष्टि साम्तर बांधते हैं ।
और कोई भेद नहीं है ।

सातवीं पृथिवीक नारकियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दमनावरणीय, साता और
असाता वेदनीय, बारह कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, दुगुप्ता,
पंचत्रियजाति, औदारिक वैजय व कर्मण शरीर, समचतुरससंस्थान, औदारिकशरीरामोपांग,

लियसरीरअगोवग-वज्जरिसइसघडण वण्ण गंध-रस-फास-अगुरुवल्लहुव
उवघाद परघाद-उत्सास पमत्यविहायगइ-तस-चादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-
यिराधिर [सुहा] सुह-सुगम-सुस्सर आदेज्ज-जसकित्ति णिमिण-पच
तराइयाण को वधो को अवधो? ॥ ५५ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्टिद्विष्टि जाव असजदसम्मादिट्ठी वधा । एदे वधा,
अवधा णत्थि ॥ ५६ ॥

एदेण देसमाप्तिपसुत्तेण सुह-रस-पुरुषण कस्मानो— एत्थ उदयादो वधा पुनं
पञ्च वा बोधिममो ति विचारो णत्थि, एत्थ तस्म मसंभवो । पचणाणावरणीय-अठईसणा-
वरणीय-परिधियमादि-तंवा-कम्मइय-वण्ण गंध-रस-फास-अगुरुवल्लहुव-तस-चादर-प-जत्त विरा-
धिर सुमासुम अजसकित्ति णिमिण पंचतराइयाण सोदमो वधो, एदेसिं सुबोदयत्तादा । विरा-
पयत्त-सत्तामाद-आसकत्ताम-इत्थ-वि-अदि-सोग मय-हुगुछाण सोदय-परोदमो वधो, अज्जो-
दयत्तादा । उवघात्-परघाद-उत्सास-पत्तेयसरीराण मिच्छाद्विष्टिं सोदय परोदमो वधो । सेसेत्तु

पञ्चमसंहनन, वधं, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुत्व, उपपात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायो
गति, व्रस, चादर पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमग, सुस्सर, आदेय,
यसकित्ति, निर्माण और पांच वन्तराय, इनका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥५५॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्याधृष्टि लेकर असयतममम्यधृष्टि तक वन्धक है । ये वन्धक हैं, अवन्धक नहीं
हैं ॥ ५६ ॥

इस देशामर्शक सूत्रके द्वारा सूचित अर्थको प्रकटना करते हैं— यहाँ उदयसे
वन्ध पूर्वमे या पश्चात् प्युत्तिउत्त होता है यह विचार नहीं है, क्योंकि यहाँ उसकी
सम्भावना नहीं है । पांच आनावरणीय आर आनावरणीय पंचेन्द्रियमाणि तज्जस व
काम्मज शरीर, अर्थ गन्ध रस स्पर्श अगुरुत्वपु वत्त चादर, पर्याप्त स्थिर, अस्थिर,
शुभ अशुभ अयशस्वीति निर्माण और पांच वन्तराय इसका स्वादय वन्ध होता है,
क्योंकि, ये सुबोदयी प्रकृतिपां हैं । मित्रा प्रवृत्ता सता व असता वृत्तीय आरव कपाय
हास्य एति अरुति शोक, मय और सुगुप्ताक स्वोदय परोदय वन्ध होता है क्योंकि,
ये अशुभावयी प्रकृतिपां हैं । उपपात परघात उच्छ्वास और प्रत्येकशरीर, इसका मिथ्या-

सोदभो देव, तेसिमेव अपन्नजतकृते अमावासे । पुरिसवेद भोरालियसरीर समचउरससंअण
भोरालियसरीरभंगोषण-वन्नरिसहसपडण-पसस्यविहायगइ-सुमग-सुस्सर-आदेन्न असकितीण
परादभो धंधो, एदेसिसुस्यस्स एत्थ विरोहादो ।

पंचपापपरणीय छदसपावरणीय-यसहकसाय मय-दुगुंछा-पंचिदियजादि-भोरालिय-
तेजा-कम्मइयसरीर भोरालियसरीरभंगोषण-वण्णचउकम अगुरुवल्लुव-उवधाद-परधाद-उत्सास-
तस-बादर-पन्नजत-पत्तेयसरीर-पिमिण-पचतराइयाणं गिरतरो बधो, एत्थ धुवपंचिदादो । सादा-
साद-हम्म-रदि भरदि-सोग-यिराधिर-सुमासुम-असकिचि-अजसकितीणं सतरो धंधो, सव्वगुण
हापेसु एदासिमगाणेगसमयवचसमवाओ । पुरिसवेद-समचउरससंअण-व-अगिमहसंपडण-पसस्य
विहायगइ सुमग सुस्सर आदन्नजाण मिच्छानिद्धि-मामणमम्मादिहीसु सतरो धंधो, एगाणेग
समयवचसंमवाओ । सम्मामिच्छदिद्धि-असंजदसम्मादिहीसु गिरतरो बधा, पडियक्खपयणीणं
धंधामावाओ ।

एदामो पयसीभो पंचंतिमिच्छादिहिस्य मूलपञ्चया चत्तारि । पाप्मामयउत्तरपञ्चया

एदि गुणस्थानमें स्वाक्षय परोक्ष वण्ण होता है । दाय गुणस्थानोंमें स्वाक्षय ही वण्ण होता
है क्योंकि मिच्छादिहिका छोड़कर दाय गुणस्थान यहाँ अपपाप्मतामें नहीं होते ।
पुरुषपद भौतिककारीर, समचतुरन्नमस्थान भौतिककारीरगोषांग पञ्चपयसइमम,
प्रज्ञास्वविहायोगति सुमग सुस्सर, आक्षय भार यशकीर्ति प्रदितियोंका पराक्षय वण्ण होता
है क्योंकि, इसका उद्देश्य यहाँ विरोध है ।

पांच पापापरणीय छह द्वापापरणीय बारह कथाय मय सुगुप्ता पंचन्द्रि
जाति भौतिक तैजस प कामज शरीर, भौतिककारीरगोषांग बजादिक चार, अगुरु
सधु उपघात परघात उच्छ्रयाम भम बादर, पर्याप्त प्रायश्चारीर, निर्माण और पांच
अमराय इसका निरन्तर वण्ण होता है क्योंकि, ये प्रदितियाँ यहाँ ध्रुववर्धी हैं । ज्ञाना प
अज्ञाना पक्षीय हाम्य रति भरति शाक, स्थिर अस्थिर, शुभ अशुभ यशकीर्ति
भीम अयशकीर्ति प्रदितियोंका सामान्य वण्ण होता है क्योंकि, सब गुणस्थानोंमें इसका एक
और अनेक समय तक वण्ण सम्मय है । पुरुषपद समचतुरन्नमस्थान पञ्चपयसइमम
प्रज्ञास्वविहायोगति सुमग सुस्सर और आक्षय इस प्रदितियोंका मिच्छादि य पाप्माइन
सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें आन्तर वण्ण होता है क्योंकि यहाँ इसका एक मनक समय तक
वण्ण सम्मय है । सम्यग्मिच्छादि और समयनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उनका निरन्तर
वण्ण होता है क्योंकि, यहाँ इसकी प्रतिपक्ष प्रदितियों वण्णका अभाव है ।

इस प्रदितियोंको पांचमयान मिच्छादि नाशक मूल प्रायश्चार जाना समय

एकैक्यं चाम । एतसमस्यमहण्युक्तस्मयपचया दस भक्तारम् । सामयमम्मादिद्विस्त्र मृत्यवर्षा
विजिज्ज, पापसुमयउत्तरपचया चउवेत्तालीस, एतमयमहण्युक्तस्मयपचया दस सत्तारम् ।
सम्माभिष्ठादिद्वि-भसंभदसम्मादिद्विस्त्र मृत्यवर्षा निजिज्ज, उत्तरपचया चालीस, एतममम-
अहण्युक्तस्मयपचया जव सोत्तम् ।

एवमो सभ्यपयदीओ मिष्ठाद्वि-सामयमम्मादिद्विस्त्रो च तिरिक्खगत्तसंभुत्तं वंभंति,
सम्माभिष्ठादिद्वि-भसंभदसम्मादिद्विस्त्रो मणुग्गाइसंभुत्तसुमयम अण्णगइलं वंभामावादो ।
नेइया मामी । वंभद्वालं ववविज्जइद्वालं च सुगमं । पंथणालावरणीय-छदमपावरणीय-वातसं
कमाय-मय-दुगुंछा तेआ-कम्मइय-वण्ण-गर रम-फलय-अगुरुवत्तहुअ-उवपाद विमिज्ज-वंभंत्त-
इयापं मिष्ठाद्विद्वि चउत्थिदो पंपो, पुनवंभित्तादो । संमगुणद्वापेसु पुनवंभं वरिज्ज,
वंभवाप्येदमकुपमावसासमादीजममावादो । अउसेमालं पयईलं वंभा सभ्यगुणद्वापेसु सारि
वदुवां, वदुववंभित्तादो ।

सम्पन्धी उत्तर प्रत्यय इत्याक्षत तथा एक समय सम्पन्धी अक्षय्य च उत्तर प्रत्यय इत्याक्षत
महात्त हात है । सासात्तमसम्पन्धिक मूस प्रत्यय तीन नामा समय सम्पन्धी उत्तर प्रत्यय
ववासीत्त भार एक समय सम्पन्धी अक्षय्य च उत्तर प्रत्यय इत्याक्षत महात्त हात है ।
सम्पन्धिकारि भीर असपत्तमम्पन्धिक गुणस्थानाम मूळ प्रत्यय तीन उत्तर प्रत्यय
वासीत्त तथा एक समय सम्पन्धी अक्षय्य च उत्तर प्रत्यय वा भीर सोत्त हात है ।

इह सब प्रकृतिपाठे मिष्ठाद्वि भीर सासात्तमसम्पन्धिक तिर्यगगतिसे संभुत्त
वांछते है, तथा सम्पन्धिकारि भीर असपत्तमम्पन्धिक मनुष्यगतिसे संभुत्त वांछते है,
क्योंकि दोनों जगह मध्य गतिपाठे वन्धन्य अभाव है । नारदी जीव इनके वन्धन्ये स्वासी
है । वन्धाप्याव भीर वन्धपित्तप्रस्थान सुगम है ।

पांच धालावरणीय छह वर्तनावरणीय बाह्य कपाय भय जुगुप्सा तीव्रस च
अर्मेज शरीर, वरं गन्ध रस स्पर्श अगुरुमधु, उपधात निर्माण भीर पांच अन्तःपय
इत्याक्ष मिष्ठाद्वि गुणस्थानमें बाटो प्रकटवन्ध वन्ध होता है क्योंकि, ये ध्रुववन्धी प्रकृतिपाठ है ।
दोय गुणस्थानमें ध्रुव वन्ध नहीं है क्योंकि, इनके वन्धम्युच्छेदकी न करनेवाले सासात्तम
सम्पन्धिक आदिषीय अभाव है । शय प्रकृतिपाठ वन्ध सब गुणस्थानामें सारि भीर
अधुव होता है क्योंकि ये प्रकृतिपाठ अधुववन्धी है ।

गिहाणिहा-पयलापयला-यीणगिदि-अणताणुवंधिकोधे-माण
माया-लोभ इतिवेद-तिरिक्खगइ चउसठाण-चउसघडण-तिरिक्खगइ-
पाओग्गाणुपुब्बी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुमग-दुस्सर अणादेज्ज-
णीचागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ ५७ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी वधा । एदे वधा, अवसेसा
अवधा ॥ ५८ ॥

एदस्स बत्थो उच्चदे—अणताणुवधिकउपक्कस्स वधेदया सम वोच्छिण्णा, सासणे
वेष दोणव वोच्छेदुवत्तमादो । अप्पसत्थविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाण पुब्ब
वेषो पच्छ उच्चो वोच्छिज्जदि, सासणसम्मादिट्ठिदि वधे वोच्छिण्णे संते पच्छ असंजद
सम्मादिट्ठिदि उच्चवोच्छेदुवत्तमादो । यीणगिदितिय-इतिवेद-तिरिक्खगइ-चउसठाण-चउ

निद्रानिद्रा, प्रपत्तप्रचत्त, स्त्यानगृदि, अनन्तानुबन्धी क्लेश, मान, माया, लोभ,
क्रीवेद, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उपोत्त, अप्रशस्त
विहायोगति, दुमग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इन प्रकृतियोंका कौन बन्धक और कौन
अवन्धक है ? ॥ ५७ ॥

यइ सुख सुगम है ।

मिप्पाघटि और सासादनसम्पग्घटि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, तब जीव अवन्धक
है ॥ ५८ ॥

इस सुत्रका अर्थ कहते हैं—अनन्तानुबन्धियत्तुक्कच्च बन्ध और उच्च वानो साय
व्युच्छिन्न हात हैं क्योंकि सासादन गुणस्थानमें ही वानोका व्युच्छिन्न पाया जाता है ।
अप्रशस्तविहायांगति दुमग दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र इनका पूर्वमें बन्ध और
पश्चात् उच्च व्युच्छिन्न होता है क्योंकि, सासादनसम्पग्घटि गुणस्थानमें बन्धक व्युच्छिन्न
हो जानेपर तत्पश्चात् असंयतसम्पग्घटि गुणस्थानमें उच्चका व्युच्छिन्न पाया जाता है ।
स्थानगृदि आदि तीन क्रीवेद नियमगति चार संस्थान चार संहनन नियमगतिप्रायो

संवत्सर-तिरिक्त्वमहपात्रो गगानुपुष्पी-उन्मोवात्र पुष्य पञ्चम वषट्त्वोदयोऽष्टोदविचरो ऋषिः,
एदासिमेत्वं उदयामावाधो ।

अर्पतागुर्बन्धिचउक्कस्स सोदय-परोदएण वंघो, अद्वोदयसादो । अप्सरत्तविहावगद
हुस्सराणं मिच्छाद्विदिहि सोदय-परोदएण वंघो, अप अत्तकत्ते एदासिमुदयामावाधो । सासणे
सोदयएव वंघो, तस्सेत्थ अपअत्तकत्तमावाधो । वुमग-अपादेन्ज-पीचायोवाणं सोदएव
वंघो, पुवोदयसादो । धीमगिदितिय-इतिवेद-तिरिक्त्वमह-चउसंउज्ज-चउसंपठम तिरिक्त्वमह
पात्रो गगानुपुष्पी-उन्मोवात्र परोदएव वंघो । कुरो ? विस्ससादो ।

धीमगिदितिय-अर्पतागुर्बन्धिचउक्क-तिरिक्त्वमह-तिरिक्त्वमहपात्रो गगानुपुष्पी-पीचा-
योवात्र विस्तरो वंघो । कुरो ? एत्थ पुवबन्धिदो । सेसणं सत्तरो, एत्तमएण हि वंघोऽन्ते-
हुवर्त्तमाधो । पञ्चया चठहाणपयडिपञ्चयसमा । एदात्रो सम्पपयीत्रो तिरिक्त्वमहसंउरे
वन्ति । मेरुया सामी । वंघदामं वंघविपट्टहाणं च सुगमं । धीमगिदितिय-अर्पतागुर्बन्धि-
चउक्कत्तम मिच्छाद्विदिहि चठमिहो वंघो, पुवबन्धिदो । सासणमि सादि-अद्वो । सेसणं

गगानुपुष्पीं भीर उद्योत इत्येकं पूर्वमे वा पश्चात् वषट्त्वोदयमुच्छेद इत्येकं विचार नहीं है
क्योंकि, यहाँ इनके उदयका अभाव है ।

अनन्तानुबन्धितुष्कका स्वोदय-परोदयसे वन्ध होता है क्योंकि, वे अद्वोदयी
हैं । अमहास्वविहावगति भीर दुस्वरका मिच्छाद्वि गुणस्थानमें स्वात्प परोदयसे वन्ध
हाता है क्योंकि अपर्याप्तकालमें इनका उदय नहीं रहता । सासात्रम गुणस्थानमें
स्वोदयसे ही इनका वन्ध हाता है क्योंकि इस गुणस्थानका यहाँ अपर्याप्तकालमें अभाव
है । दुर्मग अनादय भीर नीचगोत्र इनका स्वात्पस ही वन्ध होता है क्योंकि, वे प्रकृतिवा
सुवोदयी हैं । स्यावपुदि धार्मिक तीन कीर्ति निर्गमति चार संस्थान चार संहमन
तिर्यग्गतिप्रापोन्वानुपुष्पीं भीर उद्योत इनका परोदयसे ही वन्ध होता है । इसका कारण
स्वभाव ही है ।

स्थानपुदि धार्मिक तीन अनन्तानुबन्धितुष्कका तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्रापोन्वानु
पुष्पीं भीर नीचगोत्र इनका निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि, यहाँ वे अद्वोदयी हैं । शेष
प्रकृतियोंका अन्तर वन्ध हाता है क्योंकि, एक समयम इनका वन्ध-मुच्छेद पाया जाता है ।
प्रत्यपुष्पी प्रकृति चतुर्ध्यात्मिक प्रकृतियोंका समाव है । इन सब प्रकृतियोंका तिर्यग्गतिके
संयुक्त बांधव है । भारती जीव इनका वन्धक स्वामी हैं । वन्धकाल भीर वन्धितप्रकृति
सुगम हैं । स्यावपुदि धार्मिक तीन भीर अनन्तानुबन्धितुष्कका मिच्छाद्वि गुणस्थानमें
चार प्रकारका वन्ध हाता है क्योंकि वे अद्वोदयी प्रकृतिवा हैं । सासात्रमगुणस्थानमें

पत्तनं च धा मय्य माणि मय्या, मय्यपिपत्तदा ।

मिच्छत्त णचुमयवेत्-तिरिक्खाउ हुडमठाण-अमपत्तमेवट्टमरीर-
मघटणणामाण को चधो को अचधो ? ॥ ५० ॥

मुगमं ।

मिच्छाट्टी यथा । ण्ठे चधा, अवमेमा अचधा ॥ ६० ॥

एदम्म वरगाने निग्गारग्गमनिंररग्गान्तुमं । पत्ति निग्गारग्गमन्तुमं वरदि
नि यत्तमं ।

मणुमगड मणुमगट्टपाआग्गाणुपुत्ती उच्चागोत्तण को चधो को
अचधो ? ॥ ६१ ॥

मुगमं ।

सम्मामिच्छादृष्टी अमजदसम्मादृष्टी उधा । एदे वधा, अबसेसा
अवधा ॥ ६२ ॥

एदस्स वरधो वुप्पदे— एत्थ वधादा उदमा पुण्यं पण्यं वा वाप्पिण्यो वि
विचारो पत्ति, एदस्सिमेष उदयामावादा । एदस्सि परदण्वं वधो, निरयगदीए उदया-
मावादा । भित्तो वधो, एतसमण्य वधुकरमावादा । पण्यया अउट्टणियपयडिपण्ययत्तुत्थ ।
ममुमगइसत्तसं सम्मामिच्छादृष्टि-असजदसम्मादृष्टिणो वधति । जेरइया सामी । वधइत्थं
वधविअइत्तसं च सुगमं । सादि अदुववधो, अदुववधविचादो सम्मामिच्छादृष्टि-असजदसम्मा
इद्विपिण्ययत्तुवगमे विपमदो वा ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पचिंदियतिरिक्खा पचिंदियतिरिक्ख-
पज्जत्ता पचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु पचनाणावरणीय-छदसणावर-
णीय-सादासाद-अट्टकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि अरदि-सोग भय-दुगुंछ
वेवगइ-पचिंदियजादि-वेउव्विय तेजा-कम्मइयसरीर-समवउरससअण

सम्मामिच्छादृष्टि और अर्धपतसम्पगद्वि बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष गुणस्वानवर्ती
बन्धक हैं ॥ ६२ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— बन्धसे उदय पूर्वमें व्युत्पिच्छ होता है या पश्चात् यह
विचार पहा नहीं है क्योंकि, इनका पहा उदय नहीं है । इनका परोक्षपत ही बन्ध होता
है क्योंकि, नरकपतिमें हमक उदय अमाव है । बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि, एक
समयसे इसके बन्धक विग्राम नहीं होता । इनके मलय अनुस्थानिक प्रकृतियोंके मलयकोके
समान हैं । सम्मामिच्छादृष्टि और अर्धपतसम्पगद्वि अनुपगतिसे संयुक्त बांधते हैं ।
कारण स्वामी हैं । बन्धावस्थान और बन्धविनश्रुस्थान सुगम हैं । सादि य अदुव बन्ध होता
है क्योंकि वे अनुपगन्धी हैं । अथवा सम्मामिच्छादृष्टि और अर्धपतसम्पगद्विओंके
मुक्तिगमनमें निबन्ध होनेसे भी सादि य अनुप बन्ध होता है ।

तिर्यग्गतिये तिर्यक्, पंचेन्द्रिय तिर्यक् पंचेन्द्रिय तिर्यक् पयाप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यक्
योनिप्रतियोगि पांच ज्ञानावरणीय, छह दशनावरणीय, सप्ता व अष्टम्य वेदनीय, नाठ कषाय
पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, मय, सुगुप्ता, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैकल्पिक वैजय

वेठवियसरीरअगोवग-वण्ण गध-रम-फास-देवगदिपाओग्गाणुपुब्बी-
अगुरुवलहुव उवघाद-परघाद-उत्ताम पसत्यविहायगड-तस-चादर-
पज्जत्त-पत्तेयसरीर [थिरा] थिर-सुहासुह सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जस
कित्ति अजसकित्ति णिमिण-उच्चागोद पचतराइयाण को वधो को
अवधो ? ॥ ६३ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्टिपुहुडि जाव सजदासजदा वधा । एदे वधा, अवधा
णत्थि ॥ ६४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अरथो पुब्बदे— देवगइ-वठवियसरीर वेठवियसरीरअगोवग-देवगइ-
पामोम्माणुपुब्बि उच्चागोदाण तिरिक्खेसु उदयामावादो पुब्ब पच्चा बघोदयवोच्चेदविच्चाणे
णत्थि, सतासंताण सण्णिकसन्निरोद्दादो । अवसेसपयहीसु वि एस विचारो णत्थि, अरयगदीण
एदासि बघोदयवोच्चेदमावादो । पंचप्पाणत्तरणीय चहुदसणावरणीय-वेठविय-तेजा-कम्मइय
सरीर-वण्ण-गंध-रम-फास-अगुरुवलहुव [थिरा] थिर-सुमासुम णिमिण-पचतराइयाण सोदधो

य कर्मज शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरगोपांग, बज, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगति
प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, ठपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, चादर,
पयाप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यत्नक्रीति,
अयत्नक्रीति, निर्माण, उच्छगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अपन्धक
है ? ॥ ६३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे ठेकर संयतामयत तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, अपन्धक नहीं
हैं ॥ ६४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— देवगति वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरगोपांग
देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्छगोत्र इनका निर्ययोर्मे उच्छ म इनसे बन्धादपन्धकपुच्छेदकी
पूर्वापरताका विचार नहीं है क्योंकि सन् और यत्नकी समानताका विरोध है । राय
ग्रहणियोंमें भी यह विचार नहीं है क्योंकि अथगतिये इनके बन्धोदयपुच्छेदका समाप है ।

पांच ग्रामावरण और दशमावरण वैक्रियिक तैजस य कर्मज शरीर, यत्न गन्ध
रस स्पर्श, अगुरुलघु स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ निर्माण और पांच अन्तराय
४ ६ १५.

बन्धो, ध्रुवोदयच्छरो । मित्रा-पयस्य-सादासाद-अष्टकसाय पुरित्वेद-हस्त-रश्मि-मरिचि सोग मन्-
दुगुल्ल-समन्तउरमसंश्रय-पसत्यविह्वलगाइ-सुम्भराणं सव्यद्वारेषु सोदय-परोदयो बन्धो । वरि
जोषिणीसु पुरिमवदबन्धो परादयो । उवपादबन्धो मिच्छादिदि सामजसम्मादिदि-असंजदसम्मा-
दिदीषु सोदय परोदया, विग्गहयदीप उवपादस्तुदयामावाधो । सम्मामिच्छादिदि-संजद-
संजदय सोदयो धेव, तसिमप-असकत्तामावाधो । परपादुस्यास-यत्तेपसरीराण मिच्छादिदि-
सासकसम्मादिदि-असंजदसम्मादिदीसु सोदय-परोदयो, एदासिमपञ्चकाले उदयाभावाण ।
ससदोगुणद्वारेषु सोदयो बन्धो । वरि जोषिणीसु असंजदसम्मादिदी एदायो सोदयक
बन्धदि, तत्वेदस्य मप-असकत्तामावाधो । तस भाद पञ्चत पश्चिदियजादीयो मिच्छादि
सोदय-परोदय बन्धइ, पडिबस्तपयदीप उदयसंभवाधो । अवसेसा सादणेष, तस्य पडि
धस्तपयदीपमुदयामावाधो । पश्चिदियतिरिक्त-पश्चिदियतिरिक्तपञ्चत-पश्चिदियतिरिक्त
जोषिणीसु सोदयण सव्यगुणद्वारेषु बन्धो, एत पडिबस्तपयदीपमुदयामावाधो । वरि
पश्चिदियतिरिक्तसु मिच्छादिदीपं पञ्चतस्य सोदय-परोदयो बन्धो तस्य पडिबस्तपयदीप
उदयसंभवाधो । सुमगादेज्ज असंजितीयं मिच्छादिदि-सासकसम्मादिदि-सम्मामिच्छादिदि-

इतका सोदय बन्ध होता है क्योंकि वे सुभाषी प्रकृतियाँ हैं । मित्रा प्रथमा साता व
अमाता धेनुनीय भाठ कयाय पुरपवेद हास्य रति भरति शाक मय दुगुल्ला समन्त
रमसंस्थान महात्मपिहापागति और सुखर, इतका सब गुणस्थानोंमें स्त्रोदय परोदय
बन्ध होता है । विशय इतमा है कि यामिमर्गः तिर्य्योमें पुरपवेदका पन्थ परोदयसे होता
है । उपपानका पन्थ मिच्छादि सामाजनसम्मादिदि और असंजतसम्मादिदि जीर्णके
स्त्रोदय परोदय होता है क्योंकि, विमहर्गतिमें उपपानका उदय नहीं होता । नर्यमिच्छा
दिदि भार संयतार्णयताक स्त्रोदय ही बन्ध होता है क्योंकि, उनके मपयसकसक अमाय
है । परपान उदयान भार प्रत्यक्षारीरका पन्थ मिच्छादि सामाजनसम्मादिदि और
असंजतसम्मादिदि गुणस्थानोंमें स्त्रोदय परोदय होता है क्योंकि, इन प्रकृतियोंका मपयान
काममें उदय नहीं होता । शय वा गुणस्थानोंमें स्त्रोदय बन्ध होता है । विनयता यह है कि
यामिमर्गामें असंजतसम्मादिदि जीय इहै स्त्रोदय ही बांधता है क्योंकि, यामिमर्गमें
मपयानकाकमें असंजतसम्मादिदि गुणस्थानका अमाय है । अम बाद, पर्याप्त भार पंच-
मित्र आति इतका मप्यादि जीय स्त्रोदय परोदय बांधता है क्योंकि यहाँ इतकी
प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदय सम्भव है । शय गुणस्थानपर्याप्त स्त्रोदय ही बांधता है क्योंकि
उन गुणस्थानोंका प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदयका अमाय है । पंचमित्र तिथेय पंचमित्र
तिथेय वचन और पंचमित्र तिथेय यामिमर्गोंमें स्त्रोदय ही सब गुणस्थानोंमें बन्ध
होता है क्योंकि, इनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदयका अमाय है । विनयता यह है कि
पंचमित्र तिथेयोंमें मिच्छादिदिदि पर्याप्त प्रकृतिका स्त्रोदय परोदय बन्ध होता है क्योंकि
यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय सम्भव है । सुमग, भादय और पराक्षीयिका बन्ध मिच्छा-

मंसंभद्रसम्मादिहीसु यवो सोदयपरोदभो, एतय पडिवक्खसुदयदसणादो । संजदासंजदेसु सोदभो
 चेव, तत्तय पडिवक्खसुअणमुदयामावादो । मिच्छादिहि-सासणसम्मादिहि-सम्मामिच्छादिहि-
 मसंजदसम्मादिहीसु मज्जसकिटीए भंघो सोदय-परोदभो, एतय पडिवक्खसुदयदसणादो । संजदा-
 सजदेसु परोदभो, तत्तय पडिवक्खपयहीए चेव उदयईसणादो । देवगदि-वेउत्थियसरीर
 वेउत्थियसरीरभंगोवग-देवगदिपामोगाणुपुष्पी-उच्चागोदाण परोदभो यवो, एदासिमेतय उदय-
 विरोहादो ।

पञ्चणाणावरणीय-छद्मणावरणीय मट्टकसाय-भय-हुगुछा तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गण
 रस-फ़स भगुम्माठहुव-उवचाद-गिमिण-पचतरादयाण गिरंतो यवो, पुवपचित्तादो । सादासाद
 हम्म रदि-जदि-सोग-यिगविर-सुभासुम-जसकित्ति मज्जसकिटीण सान्तो यवो, एगसमएण
 षुवगमईसणादो । सुरिसवेदम्म मिच्छादिहि-सासणेसु सांतो गिरंतो च यवो, पम्म-मुक्क
 छेम्मिएसु गिरंतरवचदसणादो । सेसगुणहणेसु गिरंतो, पडिवक्खपयडिर्वचामावादो । पणिं

इदि सासात्तनसम्यगइदि, सम्यगिमियाइदि च सम्ययतसम्यगइदि गुणग्यानोंमें स्त्रोदय परोदय
 हाता है क्योंकि, इन गुणस्यानोंमें प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंका उदय देखा जाता है । संयतासंपत्तोंमें
 इनका स्त्रोदय ही वण्य हाता है क्योंकि उनमें प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंका उदयका अभाव है ।
 मिष्याइदि साम्मात्तनसम्यगइदि सम्यगिमियाइदि और असंयतसम्यगइदि गुणग्यानोंमें
 अपराधीर्निष्ठा वण्य स्त्रोदय परोदय होता है क्योंकि इन गुणस्यानोंमें उनका प्रतिपक्ष
 प्रवृत्तिभी उदय देखा जाता है । सम्यतासंपत्तोंमें उनका परोदय वण्य हाता है क्योंकि,
 उनमें प्रतिपक्ष प्रवृत्तिका ही उदय देखा जाता है । वृगति बैदियिकसरीर, बैदियिक-
 सरीरसंगोपांग वृगतिप्राप्याग्यापुर्बी और उच्चोच इनका परोदय वण्य होता है क्योंकि,
 तियनोंमें इनका उदयका विरोध है ।

पांच भाजावरणीय छह दर्शनावरणीय आठ जगप भय हुगुप्सा तैजस व कामज
 शरीर, वज गण रस रुद्रा भगुम्माठ उपपल निमाण और पांच अन्तराय इनका
 निम्नतर वण्य हाता है क्योंकि, ये भ्रमवन्धी प्रवृत्तियाँ हैं । साता घ अमाता येदनीय,
 हास्य रति मरति शोक स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ यशस्वीर्नि और अपराधीर्नि इनका
 साम्तर वण्य होता है क्योंकि, एक समयमें इनका वण्यका विधाम क्या जाता है ।
 पुरगवेदका मिष्याइदि और साम्मात्तनसम्यगइदियोंने साम्तर व निरम्तर वण्य हाता है
 क्योंकि, पद्म और शुक्ल सद्गवाचम औषोंमें निरम्तर वण्य क्या जाता है । दोय गुण
 स्यानोंमें निरम्तर वण्य हाता है क्योंकि, बर्हा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके वण्यका अभाव है ।

दिय-तस-वाहर-प-व्रत-पत्तेयसरीराय यषो मिच्छाद्दृष्टिन्दि मातर-भिरंतरो, तेउ-यम्म-सुक्क-
 स्वेस्सियसु भिरंतरवधईसपादो । सेसुरिमिगुणहाणेसु भिरंतरो, तत्थ पडिवन्धरमडिबेधामावादो ।
 समभउरसमैत्रावत्स यषो मिच्छाद्दृष्टि-सामनेसु सातर-भिरंतरो, असखे-बवाम्माउएसु तउ-यम्म-
 सुक्कस्वेस्सियसंखेज्जवासाउएसु य भिरतरवधईसपादो । उपमिगुणेसु भिरंतरो, तत्थ पडि-
 वन्धवपडिबेधामावादो । परपाडुस्सासाय मिच्छाद्दृष्टिन्दि सातर-भिरंतरो यषो, अपगजत्तसंढव-
 वेधामावादो तेउ-यम्म-सुक्कस्वेस्सियसु संखे-ववासाउएसु असंयेज्जवाम्माउएसु य भिरतर-
 वधईसपादो । उवरिमिगुणसु भिरंतरो यषो, तत्थ अपगजत्तसु ववामावादो । पसरवधिसम-
 यईए मिच्छाद्दृष्टि-सामनेसु सातर-भिरंतरो, सुहनिस्सियसंखेज्जवाम्माउएसु भिरंतर-
 वधईसपादो । उवरिमिगुणसु भिरंतरो, पडिवन्धरमडिबेधामावादो । सुम-सुस्सर प्राप्तेज्जवा-
 मिच्छाद्दृष्टि-सामनेसु सातर-भिरंतरो, सुहस्सिस्सियसंखे-ववासाउएसु भिरतरवध-
 ईसपादो । उवरि भिरंतरो, पडिवन्धरमडिबेधामावादो । देवमदिदुग-नेउन्विपडुय-

पंचेन्द्रिय वस बहुर, पर्याप्त और प्रत्यक्षरहित, इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सार्वत्र-
 निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि तेज पद्म और शुक्ल छेद्यावाले जीवोंमें इनका निरन्तर
 बन्ध देखा जाता है। दोष उपरिम गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि वहाँ
 प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। समवतुरससंस्थानका बन्ध मिथ्यादृष्टि और
 साक्षात्तसम्यग्दृष्टियोंमें सार्वत्र निरन्तर होता है क्योंकि, असत्प्रातर्वायुके और
 तेज पद्म एवं शुक्ल छेद्यावाले त्रिपक्षोंके इन गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध देखा जाता है।
 अपरिम गुणस्थानोंमें वसका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके
 बन्धका अभाव है। परपक्ष और उच्छ्वास प्रकृतियोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सार्वत्र
 निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि अपर्याप्तके बन्धसे संयुक्त इनके बन्धका अभाव होनेसे
 तेज पद्म एवं शुक्ल छेद्यावाले संख्यातवर्षायुके और असंख्यातवर्षायुकोंमें निरन्तर
 बन्ध देखा जाता है। उपरिम गुणस्थानोंमें दोनों प्रकृतियोंके निरन्तर बन्ध होता है
 क्योंकि, इनमें अपर्याप्तके बन्धका अभाव है। प्रशस्तविहायोगतिष्ठा मिथ्यादृष्टि और
 साक्षात्तसम्यग्दृष्टियोंमें सार्वत्र निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, शुभ तीव्र छेद्यावाले
 संख्यातवर्षायुके और असंख्यातवर्षायुकोंमें निरन्तर बन्ध देखा जाता है। उपरिम
 गुणस्थानोंमें उच्छ्वास निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका
 अभाव है। शुभ सुस्वर और वाक्प प्रकृतिवर्षा मिथ्यादृष्टि और साक्षात्तसम्यग्दृष्टियोंमें
 सार्वत्र निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, शुभ तीव्र छेद्यावाले संख्यातवर्षायुके और
 असंख्यातवर्षायुकोंमें निरन्तर बन्ध देखा जाता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि,
 वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। देवगति देवगतिप्राप्तोत्पादुपूर्णा वैश्विक-

उन्वागोदाण मिष्साइहि सासपेसु सांतर गिरतरो वंचो, सुइतिलिस्सियसंखेज्जासखेज्जवासाउण्णु
भिरंतरपंथुवळमादो । उवरि भिरंतरो वंचो ।

तिरिक्खेसु मिआदट्टीण मूलपच्चया वत्तारि । उत्तरपच्चया तेववास, वेठविय
वेठवियमिस्सपच्चयागममात्रादो । पवरि देवगइचउक्कत्स पक्कवपास पच्चया, वेठविय
वेठवियमिस्स भेराळियमिस्स-कम्मइयपच्चयागममात्रादो । एगसमयजइण्णुक्कत्सपच्चया दस
अठारस । सासणस्स मूलपच्चया तिण्णि, उत्तरपच्चया अट्टेत्तालीस । वेठविय
चउक्कत्स छाएत्तालीस, पुण्वित्थण चेवामावादो । एगसमयजइण्णुक्कत्सपच्चया
दस सत्तारस । सम्मामिन्हाइहि असजइसम्मादिट्टीण मूठोपपच्चया चेव । पवरि सम्मामिन्हा
इहिहि वेठवियकयजोगो असजइसम्मादिट्टिहि वेठविय-वेठवियमिस्सजोगा अवपे
दव्वा । सजइसजइ ओषपच्चया चेव । एव चउव्विहाण पच्चयपरूवणा कइ । पवरि
पंचिदियतिरिक्खजोषिणीसु पुरिस-पुत्तंसयपच्चया अवपेदव्वा । असजइसम्माइहिहि ओराळिय
मिस्स-कम्मइयपच्चया अवपेदव्वा ।

छापर, वैक्रियिकशरीरान्गोवांग और उक्कवांगका मिष्साइहि एवं सासादनसम्पददियौमें
सांतर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि शुभ तीन क्षेत्रापासे संपातवर्षायुक्त और
असंपातवर्षायुक्तोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है ।

तिर्येबोंमें मिष्साइहियेके मूल प्रत्यय चार हातें हैं । उत्तर प्रत्यय तिरपन होने हैं
क्योंकि, यहां वैक्रियिक और वैक्रियिकमिध प्रत्ययोंका समाज है । विरोध इतना है कि
व्यगतिचतुष्कक इत्यादि प्रत्यय होते हैं क्योंकि, वैक्रियिक वैक्रियिकमिध औदारिक
मिध और कामय प्रत्ययोंका समाज है । एक समय सम्पन्धी जघम्य व उक्कट प्रत्यय
क्रमसे बजा और अठारह होते हैं । सासादनसम्पददिये मूल प्रत्यय तीन और उत्तर
प्रत्यय अठ्ठासीस हाते हैं । वैक्रियिकचतुष्कके उत्तर प्रत्यय द्वासीस हाते हैं क्योंकि,
पूर्वक प्रत्ययोंका ही समाज रहता है । एक समय सम्पन्धी जघम्य व उक्कट प्रत्यय क्रमसे
बजा और सत्तरह होते हैं । सम्पत्तिमिष्साइहि और असंपत्तिसम्पददिये मूलोप प्रत्यय ही
हाते हैं । विरोधता यह है कि सम्पत्तिमिष्साइहि गुणस्थानमें वैक्रियिककाययोग और असंपत्त
सम्पददिये वैक्रियिक और वैक्रियिकमिध योगोंको कम करना चाहिये । संपत्तासंबन्ध
गुणस्थानमें बाध प्रत्यय ही होते हैं । इस प्रकार चार प्रकारके तिर्येबोंके प्रत्ययोंकी प्रकल्पना
की है । विरोधता यह है कि पंचेन्द्रिय तिर्येब यानिमित्तियोंमें पुदयवद् और मपुंसकवेद्
प्रत्यय कम करना चाहिये । असंपत्तिसम्पददिये गुणस्थानमें औदारिकमिध और काम्य
प्रत्ययोंको कम करना चाहिये ।

पंचजापत्वरणीय-सर्दसणावरणीय अष्टकसाय-अरदि-सोम भय-दुगुल्ल-पश्चिरियजह्मि-
 तेजा-कम्माइयसीर-अङ्ग-गण-रस-कास मगुल्लल्लुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-वाडर-पन्न-
 पत्तेयमरीर विमिज-संबंतउइयामं मिच्छाइही चउगइसंहुत्ताणं, सासणो विरयगईय विज्जा तिगइ
 संहुत्ताण, सेमा देवगइसंहुत्ताण वंधया । साद्वेदणीय-इस्स-ररीओ मिच्छाइही सासणो च विरय
 यईय विजा तिगइसंहुत्त, सेमा देवगइसंहुत्त वंधंति । एवं असक्किंति पि वंधंति, विसेसामत्ताओ ।
 अमावस्येदणीय अन्नसकिंतीओ मिच्छाइही चउगइसंहुत्त, सासणो तिगइसंहुत्त, सेमा देवमइसंहुत्त ।
 पुस्मिन्दे मिच्छाइही सामणो च विरयगईय विजा तिगइसंहुत्त, सेमा देवगइसंहुत्त वंधंति ।
 समभउरससंठाय-पसरयविहायगइ सुभग सुम्मर आदे-आणमेव वेव वत्तथं । देवगइ देव-
 गदिपामोम्माणुप्पीओ सध्वे देवगइसंहुत्त वंधंति । [वेठणियसरि] वेठणियसीर
 अणोवंगाणि मिच्छाइही देव-विरयगइसंहुत्त, सेमा देवगइसंहुत्त । विर-सुभाज सादमो ।
 अविर-असुहाज अस्समभो । उच्छागोदं मिच्छाइहि सासणसम्माइहिओ देव मगुसमइसंहुत्त,
 सेमा देवगइसंहुत्त वंधंति ।

पांच सामानरणीय छह वर्जनावरणीय आठ कराय अरति शोक भय दुगुल्ल
 पश्चिश्च याति तेजस ब कामेज शरीर वर्ज गन्ध रस स्पर्श अगुल्लमु उपपात
 परपात उच्छवास नम बादर पर्वाज प्रत्यक्षशरीर, निर्माण और पांच मत्तराय इव
 प्रवृत्तिवर्गे मिच्छादृष्टि चारों गतिवर्ग संयुक्त सामानसम्यग्दृष्टि नरकगतिके बिना
 तीन गतिवर्ग संयुक्त और राय जीव देवगति संयुक्त नग्यक है । सातावर्णीय हास्य
 और दृष्टिके मिच्छादृष्टि एवं सामानसम्यग्दृष्टि नरकगतिके बिना तीन गतिवर्ग संयुक्त
 तथा राय जीव देवगति संयुक्त बांधने हैं । इसी प्रकार पश्चिर्वर्गके भी
 बांधने हैं पर्याप्त, इसक कार विज्ञापता नहीं है । अमावस्येदनीय और अपशष्टैतिक
 मिच्छादृष्टि चारों गतिवर्ग संयुक्त सामान तीन गतिवर्ग संयुक्त और राय जीव
 देवगति संयुक्त बांधने हैं । पुस्मिन्देके मिच्छादृष्टि और सामानसम्यग्दृष्टि नरकगतिके
 बिना तीन गतिवर्ग संयुक्त और राय जीव देवगति संयुक्त बांधने हैं । समभउरस
 संस्थान प्रान्तविहायगति सुभग सुम्पर और अतोष प्रवृत्तिवर्ग गतिबंधोक्त भी इसी
 प्रकार कहना चाहिये । देवगति और देवगतिप्रायानुपूर्वको सब देवगति संयुक्त
 बांधने हैं । [पश्चिर्वर्ग] और पश्चिर्वर्गशरीरोंगतांगका मिच्छादृष्टि इव प नरकगति संयुक्त
 तथा राय देवगति संयुक्त बांधने हैं । स्थिर और शुभ प्रवृत्तिवर्ग गतिबंधोक्त
 सामान देवगति संयुक्त । अम्बिर और अगुल्ल प्रवृत्तिवर्ग गतिबंधोक्त अमावस्येदनीयक
 सामान है । उच्छागावच्छ मिच्छादृष्टि और सामानसम्यग्दृष्टि इव ब अनुप्य गति संयुक्त
 तथा राय निर्बल देवगति संयुक्त बांधने हैं ।

सम्भासिं पयडीण पधस्स तिरिक्खा चेव सामी । यधद्वाण वधविणट्टवाण च सुगमं ।
पंचणापावरणीय छद्मपावरणीय अट्टकमाय भय-दुगुल्ला-तेजा-कम्मइय-वण्ण-गध-रस-फास-
मणुसलहुव-उवषाद-णिमिण पचतरइयाण मिच्छाइडिन्दि चउध्विहो बधो, ससेसु तिविहो,
पुषामावादो । अवसेसाण पयडीणं सादि भद्दुवो ।

गिराणिहा-पयलपयला-थीणगिद्धि-अणताणुवधिकोध-माण-
माया-लोम-इत्थिवेद तिरिक्खाउ मणुमाउ तिरिक्खगइ मणुसगइ ओरा
लियसरीर-चउसठाण ओरालियसरीरअगोवग-पचसघट्टण-तिरिक्खगइ
मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी उज्जोव अप्पसत्यविहायगइ-दुभग-दुस्सर-
अणादेज्ज णीचागोदाण को वधो को अयधो ? ॥ ६५ ॥

सुगममेद ।

मिच्छाइट्ठी सासणमम्माइट्ठी उधा । एदे वधा, अवसेसा अनधा
॥ ६६ ॥

अथ प्रकृतियोंके बन्धक तिर्यक्ष ही क्यामी हैं । वग्धाभ्यान् भीर यधविणट्टम्यान् सुगमं है । पांच घानायरणीय छह वर्जितावरणीय आठ कपाय भय दुगुल्ला तेजस य कामय गरीर यण गन्ध रस स्पर्श मणुस्सपु उपघात मिमाय भीर पांच धम्मराय इनका मिच्छादष्टि गुणम्यान्मो चारों प्रकारका बन्ध होता है । शय गुणम्यान्मो तीन यधरका बन्ध होता है क्योंकि, उनमें भय बन्धका समाप है । शय प्रकृतियोंका साहि य यधव बन्ध होता है ।

निगुनिद्रा, प्रयत्नप्रसन्न, स्थानगृद्धि, अनन्तानुपधी श्लेष, मान, माया लोम, श्रीवद, तिर्यगायु, मनुष्यायु नियगति मनुष्यगति, भौदारिक्खरीर, चार संम्भान, भौदारिक सरीरागोषांग, पांच मंदनन, नियम्मानिप्रापाम्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रापाम्यानुपूर्वी, उघात, अत्रस्तविहययोगि, दुभग, दुस्सर, अनादय य नीयगोत्र, इनका कौन बन्धक और कौन अप-पक है ? ॥ ६५ ॥

यद मय सुगम है ।

मिच्छादष्टि और सासादनसम्पदष्टि बन्धक हैं । य बन्धक है, शय चार अप-पक है ॥ ६६ ॥

एवम् सुहृत्वाप पत्न्यत्रा कीरदे - श्रीपतिद्वितीय-शिवद-तिरिक्ताउ-तिरिक्त-
गद् भोरात्रियमरि चउमय्यम भारात्रियमरीश्रगोवग पंचमय्यद्व-तिरिक्तागद्भाभोगाशुपुत्री-
उ-मोय अप्यसम्भविहापगद् दुमर-श्रीपागोदार्ण तिरिक्तागद् उदयवोच्छेदा नृपि, सप्तम
वपवोच्छेदा चैव । नरि तिरिक्तागद्भाभोगाशुपुत्रीए पुन्यं पदो बोधिच्छेदो पञ्चम उदयो,
मंसजदसम्मादिदिग्दि उदयवोच्छेदा । अत्रेतापुनंविषयउत्कम्प बंधोदया समं बोधिच्छेद,
सामयसम्मादिदिग्दिचरिममपमि उमपवाच्छेदसपादो । मनुसाउ-मनुमगद्भाभोगाशुपुत्रीं
तिरिक्तागद् उदयो चैव नृपि, त्रिहादो । तपशसि बंधादयाए पुन्यं पञ्च वाच्छेद
विषयो नृपि । दुमग अत्रादे-मार्ण पुन्यं पदो बोधिच्छेदपि पञ्च उदयो, सासय वाच्छेद-
बंधाए मज्जसम्मादिदिग्दि उदयवाच्छेदसपादो ।

श्रीपतिद्वितीय अमतापुनंविषयउच्छेद इत्येव चउमय्यम-बंधमपद्व-उच्छेद अप्यसम्भ-
विहापगद् दुमग दुमर अत्रादे-मार्ण सोदय-वोच्छेदपि पदो । नरि तिरिक्तागोविपीसु इति
वेदम् सेवपण्य बंधा । तिरिक्ताउ-तिरिक्तामद् श्रीपागोदार्ण मोदयेव बंधा । मनुसाउ

इमं ज्ञात सुचित मयोक्ती प्ररूपणा करत ई- स्थापनपुद्धि आदिक् तीम
स्त्रीपिद्वि तिर्यगापु तिर्यग्गति श्रीपतिरुशरीर, नार संस्थान श्रीपतिरुशरीरगोपांग
पांच सहनन तिर्यगतिप्राय त्यागपूर्वी उपात भयशान्ताविहावागति तुमर भीर श्रीपतिगोत्र
इमं तिर्यगतिमि उदयपुच्छेद नहीं है । साम्प्रतगुणस्थानमै केवल पञ्चपुच्छेद ही है ।
विशेष इतना है कि तिर्यगतिप्रायत्यागपूर्वीय पूर्वमै बन्ध पुच्छिन्न होता है पश्चात्
उदय पूर्वोक्ति [साम्प्रतगुणस्थानमै बन्धके मर हो जानेपर तत्पश्चात्] अमयतसम्प्रदादि
गुणस्थानमै उदयपुच्छेद होता है । अनन्तानुरग्निपञ्चपुच्छेद बन्ध भीर उदय दोनो
साथमै पुच्छिन्न होता है क्योंकि, साम्प्रतसम्प्रदादिं नारम समयमै दोनोका पुच्छेद
देला जाता है । मनुष्यापु भीर मनुष्यगतिप्रायत्यागपूर्वीय तिर्यगतिमै उदय ही नहीं है
क्योंकि, यहाँ इमं उदयका विषय है । इन्ही कारण इमके बन्ध भीर उदयके पूर्व वा
पश्चात् पुच्छेद होनेका विचार नहीं है । तुमग भीर मन्त्रादेयका पूर्वमै बन्ध पुच्छिन्न
होता है पश्चात् उदय क्योंकि साम्प्रतगुणस्थानमै इमं बन्धक मर हो जानेपर नसंपत
सम्प्रदादिमै उदयपुच्छेद देला जाता है ।

स्थापनपुद्धि आदिक् तीम अमन्तानुरग्निपञ्चपुच्छेद, स्त्रीपिद्वि नार संस्थान पांच
सहनन उपात भयशान्ताविहावागति तुमग तुमर भीर भयशेष इमका लाक्ष्य परोक्षपसे
बन्ध होता है । किन्तु विशेष इतना है कि तिर्यक् बोधिमतिपीमै स्त्रीवेदका लोक्षपसे ही
बन्ध होता है । तिर्यगापु, तिर्यग्गति भीर श्रीपतिगोत्रका लोक्षपसे ही बन्ध होता है ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बीण पराएण्व वधो । ओरात्थियसीरभगोवगाण
सोत्थ-परोदएण वधो, विग्गहगदीए उत्थामावाधो । तिरिक्खगणिपाओग्गाणुपुब्बीण वि सोदय
परोदएण वधो, विग्गहगदीए विजा अणत्थ उदयामावाधो ।

वीणगिद्धितिय अणत्ताणुवंचिचउक्कण भिरंतरो यधो, धुववधित्थो । इत्थिवेइ
मणुसगइ-चउत्तएण-वचसवण मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बी-उज्जेव-अप्पमत्थविहायगइ-दुमग-
दुस्सर भणदेन्नाणं सान्तरो यधो, एगसमएण वंधुवरमदसणाधो । तिरिक्खाउ-मणुस्साउआणं
गिरंतरो वधो, जहण्ण वि एगसमयवचाजुवळमाधो । तिरिक्खगइ भोरात्थियदुग-तिरिक्ख-
गइपाओग्गाणुपुब्बी-पीचागोदाणं सान्तर-भिरंतरो, तेउ-वाउकाइयाण तेउ-वाउकाइय-सत्तम
पुडवगिरण्हितो आगतूण पंचिदियतिरिक्ख-त्तण्णवत्त-ओपिपीसु उप्पण्णणं सणक्कुमारदि
देव-ओदएण्हितो तिरिक्खेसुप्पण्णण च भिरंतरवधदसणाधो । जवरि सासणे सान्तरो येव, तस्स
तेउ-वाउकाइएमु भमावाधो सत्तमपुडवीधो तग्गुणेण गिगमभाभावाधो च । भोरात्थियदुगस्स

मनुष्याय मनुष्यगति भीर मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परादयन वण्य होता है ।
भीरारिक्खसीर भीर भीरारिक्खसीरपंगोपांगका स्वादय परोदयमे वण्य होता है क्योंकि,
विग्रहगतिमें इनका उदय नहीं रहता । तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका भी स्वादय परोदयसे
वण्य होता है क्योंकि, विग्रहगतिकका लाङ्कन भण्यर उसका उदयका प्रमाण है ।

स्थानपूर्विकय भार समस्तानुबन्धितुक्कण निरन्तर वण्य होता है क्योंकि ये
धुववन्धी हैं । स्त्रीपद मनुष्यगति भार सस्थान पांथ संहमन मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी
उपोल भण्यरस्वविहायोगति धुमग दुम्यर भीर अनोदय इनका सात्तर वण्य होता है
क्योंकि एक समयमें इनके वण्यका विधाम हुआ जाता है । त्रियगायु भीर मनुष्यायुका
निरन्तर वण्य होता है क्योंकि, अण्णमे भी इनका एक समय वण्य नहीं पाया जाता ।
तिर्यगति भीरारिक्खिक, तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी मीर भीरगात्र इनका सात्तर-निरन्तर
वण्य होता है क्योंकि, तज्जकयिक य वायुकायिकोंके तथा तेज्जकयिक वायुकायिक व सज्जम
पृथिवीक मारकिपोंमें आकर एवेओत्थि त्रियेय मीर उसका पर्याप्त व यामिमतिपोंमें उत्तर
दुए जीवोंके भार सज्जमगादि देव व मारकिपोंमें त्रियेयोंमें उत्तर दुए जीवोंके भी इनका
निरन्तर वण्य द्वारा जाता है । पित्तगा यह है कि सामाज्य गुणस्थानमें सात्तर ही वण्य
होता है क्योंकि, यह गुणस्थान तेज्जकयिक भार वायुकायिक जीवोंमें होता नहीं है तथा
सज्जम पृथिवीय इन गुणस्थानक साथ निर्गमन भी नहीं होता । भीरारिक्खिकका

१ वायदा तिरिक्खगदीय ज-वायदा तिरिक्खगदीय इति वादः ।

२ त्रिगु उपायता योगविकसितेनरीय वपणुवादि इति वादः ।

संतिर-मिरतो ।

एवासि पञ्चया सञ्चगुणसु पञ्चद्वानियपयडिपञ्चएहि तुस्त । पञ्चरि तिरिक्त्त
मनुस्साउभार्थ मिच्छाद्विदिह कम्मइयपञ्चभा मरिपि । पञ्चिदियतिरिक्त्तपञ्च-पञ्चिदिय
तिरिक्त्तभाविणीसु ओत्तालियमिस्स-कम्मइयपञ्चया मरिपि । अउत्थिदमु तिरिक्त्तसु सामन
ओत्तालियमिस्स कम्मइयपञ्चया मरिपि, अपञ्चत्तकत्ते तस्माउभधामावादा ।

धीजमिदितिय अणत्ताजुबपिचउत्तकत्त मिच्छाद्विदिह अउगइमहुत्त, मयमो तिग्ग
संहुत्तं बंधो । इत्थिपेदं निरयगइए बिणा तिग्गइमहुत्तं, मनुमाउ-मनुमगइपाओगाणुपुप्पीआ
मनुसगइसंहुत्त, तिरिक्त्ताउ-तिरिक्त्तगइपाओगाणुपुप्पी उन्नेवावि तिरिक्त्तगइमहुत्तं, ओत्ता
लियमरि-चउत्तकत्त-ओत्तालियमरिओत्तं-पञ्चसचइमावि तिरिक्त्त-मनुमगइमहुत्त, अप्सत्त
विद्वयमइ-दुमग दुस्सर-मणादन्व-धीपाओत्तावि देवगदीए बिणा तिग्गइमहुत्तं बंधंति । एवमि
पञ्चधीवं बंधत्त तिरिक्त्ता सामी । बंधत्तावं बंधविमहुत्ता च सुगमं । धीजमिदितिय
अणत्ताजुबपिचउत्तकत्त मिच्छाद्विदिह अउत्थिदो बंधो । सासणे दुविदो, अपादि-पुषा-

सात्तर-मिरत्तर बन्ध होता है ।

इन प्रकृतियोंके प्रत्यय सब गुणस्थानोंमें पञ्चस्थानिक प्रकृतियोंके समान हैं ।
विशेषता केवल यह है कि तिर्ययायु और मनुष्यायुके मिच्छाद्वि गुणस्थानमें कर्मज प्रत्यय
महीं होता । पञ्चमिदिय तिर्यक् पर्याय और पञ्चमिदिय तिर्यक् पालिमितियोंमें औदारिकमिद
ब कर्मज प्रत्यय नहीं होते । आर प्रकारके तिर्यकोंमें साक्षात्त गुणस्थानमें औदारिकमिद
और कर्मज प्रत्यय महीं होते क्योंकि, अपर्याप्तकालमें उसके आयुका बन्ध नहीं होता ।

स्वामपुष्टिबध और मन्ताजुबपिचउत्तके मिच्छाद्वि आरों गतियोंसे संयुक्त
और साक्षात्तसम्पद्वि तीन गतियोंसे संयुक्त बन्धक है । अविद्वक्कं नरकगतिके बिना
तीन गतियोंसे संयुक्त मनुष्यायु एवं मनुष्यगतिप्रत्ययानुपूर्वको मनुष्यगतिसं संयुक्त
तिर्ययायु, तिर्यगतिप्रत्ययानुपूर्व और उद्यमके तिर्यगगतिसे संयुक्त, औदारिकगति,
आर संस्थान औदारिकगतिरामोपांग और पांच संवत्तके तिर्यगति ब मनुष्यगति
संयुक्त, तथा अवशास्त्रविहायोगति दुर्मग दुम्बर अमाद्वय और मीचगोत्रके देवगतिके
बिना तीन गतियोंसे संयुक्त बंधते हैं । इन प्रकृतियोंके बन्धके तिर्यक् स्वामी हैं ।
बन्धाज्जाल, और बन्धविमद्वस्थान सुगम है । स्वामपुष्टिबध और मन्ताजुबपिचउत्त
मिच्छाद्वि गुणस्थानमें आरों प्रकारके बन्ध होता है । साक्षात्त गुणस्थानमें दो प्रकारका
बन्ध होता है क्योंकि वहां मन्तावि और उद्य बन्धके अभाव है । शेष प्रकृतियोंका

१ त्रिपु इत्थिपेद इति पाठ ।

२ त्रिपु अपञ्चत्त इति पाठ ।

मावाणे । सेम्पयडीण वयो सान्नि-अदुवो, अदुवधंविच्छो ।

मिच्छत्त णचुमयवेद-णिरयाउ-णिरयगह-एइदिय-चीइदिय-तीई-
दिय-चउरिंदियजादि-हुडसठाण-असपत्तसेवट्टसघडण-णिरयगहपाओ-
ग्गाणुपुब्बि आदाव थावर-सुहुम-अपज्जत्त साहारणमरीरणामाण को
वधो को अवधो ? ॥ ६७ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी वधा । एदे वंधा, अवसेमा अवधा ॥ ६८ ॥

एदस्स अत्थो सुप्पदे— मिच्छत्त-एइदिय-चीइदिय-तीईदिय चउरिंदिय आदाव
थावर-सुहुम अप-जत्त-साहाग्गाणं वंधादया मम वोच्छिण्णा, मिच्छाइट्ठी मोत्तप्पदामि उवरिमेसु
उदयामावादा । णचुमयवद-हुडमअण अमपत्तसेवट्टमपडणा वधवोच्छदो वेव जोदयस्स,
सम्पगुत्तमुदयदमणा । मिग्गाउ निरयगहपाओग्गापुब्बीण निरिक्त्वादीय उदयामावादा पुब्बं
पच्छं वंधादयवोच्छदविचारो णग्धि ।

वध मादि य अमुय होता है क्योंकि य अमुयबन्धी है ।

मिप्पात्त, नपुंसकवद, नारकयु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरि-
न्द्रिय ज्ञाति, हुण्डमस्थान, अमपत्तमपान्तिक्काग्गीरमहनन, नरकगतिप्राप्याप्यानुपूर्वी, आनाप,
रथावर, सुम्भ, अपपात्त और मापात्तमग्गीर नामकमोक्ष केन पन्थक और केन अपन्थक
है ? ॥ ६७ ॥

यह मूल सुगम है ।

मिप्पात्त वधक है । ये वधक हैं, वेव निर्वध अपपात्त है ॥ ६८ ॥

इसका अर्थ कहत हैं— मिप्पात्त एकन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय
आनाप क्पात्त मूलम अपपात्त और मापात्त इनका वध और उदय वामों साथ
सुविच्छ होत हैं क्योंकि मिप्पात्त शुद्धमयानका छाडकर उपरिम शुद्धमयानोंमें इस
महनिर्वाके उदयका अभाव है । नपुंसकवद हुण्डमस्थान और अमपत्तमपान्तिक्काग्गीरमहनन
इसके वधका ही सुविच्छ है उदयका नहीं । क्योंकि यह शुद्धमयानोंमें इनका उदय इसका
आता है । नारकयु और नरकगतिप्राप्याप्यानुपूर्वीका निवर्गनिर्गमे उदय न होने
इसके पूर्व या पश्चात् वंधादयसुविच्छ इनका विचार नहीं है ।

मिच्छत्तस्स सोदएण्वे, भिरयाउ-भिरयगइ-भिरयगइपाओम्मानुपुष्पीण परोदएण्व,
 सेसाम्प सोदय-परोदएहि बंधो । पवरि पंधिदियतिरिक्खत्तिपम्मि एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउ
 रिंदियवादि-आदाय-आवर-सुहुम-साहमणार्ण परोदएण बंधो । पंधिदियतिरिक्ख-[पञ्च]-
 ओणिपीसु अपञ्जत्तस्स परोदएण बंधो । ओणिपीसु जवुंमयवेदस्स परोदएण बंधो । मिच्छत्त-
 भिरयाऊम् भिरतोरे बंधो, एगसमण्ण बंधस्सुवरमामावाओ । मेसपयईणि बंधो सांतोरे, एयम्मएव
 बंधकरमंडसवाओ । मिच्छत्त-जवुंसयवेद-हुइसत्तण असपत्तयेवइत्तंभइण-भिरयगइ-भिरयगइ-
 पाओम्मानुपुष्पी-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय आदाय-आवर-सुहुम अपञ्जत्त-साहमणार्ण
 तेवण्ण पच्चया । ओणिपीसु एककवण्ण पच्चया । भिरयाउजस्स तिरिक्ख-पंधिदियतिरिक्ख
 पंधिदियतिरिक्खपउजत्तएसु एककवण्ण पच्चया । पंधिदियतिरिक्खओणिपीसु एगूणबंधास
 पच्चया । मिच्छत्त चउगइसंजुत्तं, जवुंसयवेद-हुइसत्तणानि तिगइसत्तुत्तं, भिरयाउ-भिरयगइ
 भिरयगइपाओम्मानुपुष्पीओ भिरयमइसंजुत्तं, एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-आदाय-
 आवर-सुहुम-साहमणे तिरिक्खगइसंजुत्तं, असपत्तयेवइत्तंभइणमप-जत्तं च तिरिक्ख-मजुंसय
 संजुत्तं मिच्छइइी बंधेति । एदामि पयईणी बंधस्स तिरिक्खा सामी । पंधयान्ण बंधविणइइण्णं

मिथ्यात्वका स्वीकृत्य ही, नारकयु नरकगति और नरकगतिमायोम्मानुपुष्पीका
 परोक्षपक्ष ही, तथा हाथ प्रकृतिपक्षोंका स्वीकृत्य परोक्षपक्ष ही बन्ध होता है । विशेषता यह
 है कि पंचेन्द्रियार्थिक तीन प्रकारके निषेधोंमें पंचेन्द्रिय हीन्द्रिय बीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय
 आदि आताप स्वावर सूक्ष्म और साधारण प्रकृतियोंका परोक्षपक्ष बन्ध होता है । पंचेन्द्रिय
 तिर्यक् पर्याप्त और योनिमतिपक्षोंमें अपर्याप्तका परोक्षपक्ष बन्ध होता है । योनिमतिपक्षोंमें
 नपुंसकवक्त्र परोक्षपक्ष बन्ध होता है । मिथ्यात्व और नारकयुक्त निरन्तर बन्ध होता है
 कर्पोरि, एक समयमें इनके बन्धका विधाम नहीं होता । हाथ प्रकृतिपक्ष बन्ध सान्तर होता
 है क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धका विधाम देखा जाता है ।

मिथ्यात्व नपुंसकवक्त्र हुइसत्तस्यान बन्धमाप्त्तसुपादिकासंहमन नरकगति नरक
 गतिमायोम्मानुपुष्पी पंचेन्द्रिय हीन्द्रिय बीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय आताप स्वावर, सूक्ष्म
 अपर्याप्त और साधारण इनके तिर्यक् प्रत्यक्ष हाथ हैं । योनिमतिपक्षोंमें इक्यावन प्रत्यक्ष
 होते हैं । नारकयुके तिर्यक् पंचेन्द्रिय तिर्यक् और पंचेन्द्रिय तिर्यक् पर्याप्तोंमें इक्यावन
 प्रत्यक्ष हाथ हैं । पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमतिपक्षोंमें उभेबास प्रत्यक्ष हाथ हैं ।

मिथ्यात्व तिर्यक् मिथ्यात्वका चारों गतिपक्ष संयुक्त नपुंसकवक्त्र व हुइस-
 तस्यानको तीन गतिपक्षोंसे संयुक्त नारकयु नरकगति और नरकगतिमायोम्मानुपुष्पीको
 नरकगतिसे संयुक्त, पंचेन्द्रिय हीन्द्रिय बीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय आताप स्वावर, सूक्ष्म
 और साधारण इनका तिर्यक्गतिसे संयुक्त, तथा बन्धमाप्त्तसुपादिकासंहमन और
 अपर्याप्तको तिर्यक्गति व नपुंसकगतिसे संयुक्त बांधने हैं । इन प्रकृतिपक्षोंके बन्धके तिर्यक्

प सुगम । मिच्छत्तस्स सादिओ अपाणिओ धुवो भट्ठो सि चउप्पिहो वधा । सेसाण सादि-
अदुवो, अदुवपंभित्ताने ।

अपच्चक्खाणकोध माण माया लोमाण को वधो के अवधो ?

॥ ६९ ॥

सुगम ।

मिच्छाडट्टिप्पहुडि जाव अमजदमम्मादिट्ठी वधा । एदे वधा,
अवमेसा अवधा ॥ ७० ॥

एदेण मगाहिदत्त्याण पयामो करेदे—एदामि पधादया सम बाष्णिष्णा, दोण्हम
मज्झमम्मादिट्ठिहि विणामुवत्तमाणा । मोदय-परदण्ण वेधो, अदुवादयत्ता । भिरतेणे, धुव
पंभित्ताने । पच्चया निरिक्खणं पचट्ठाणियेकपण्णिपच्चण्हि तुत्तम । मिच्छाट्ठी चउगड
मेवुत्त, सामणमम्मादिट्ठी तिगडमेवुत्त, मम्मामिच्छाणिट्ठी असंवदमम्मादिट्ठी देवगडमेवुत्त

ब्रामी है । बग्याप्पान और पण्णचिनइस्वान सुगम है । मिच्छान्यका सादिक, अनादिक,
धुव और अदुव खागे प्रकटका बग्य होता है । जय प्रकृतिपोंका सादि य अदुव बग्य होता
है क्योंकि, य अदुवपण्णी है ।

अप्रम्याग्यानावरण ज्ञप, मान, माया और तेमकर केन पचक और केन अपचक
है ॥ ६९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिच्छाट्ठिमे ठेकर असंयतमम्यगट्ठि तक पचक है । य पचक है, जय अपचक
है ॥ ७० ॥

इस सूत्रक ज्ञाप मरुदीन अयोका प्रकटन करत है—इस खागे प्रकृतिपोंका बग्य
और उदय खागे साय धुप्पिउग्र हात है क्योंकि, असंयतमम्यगट्ठि गुणव्याप्तमे खागेका
विमान पाया जाता है । इसका व्याख्य परादयम बग्य होता है क्योंकि य अमुपादयी
है । निरमल बग्य होता है क्योंकि धुपण्णी है । इसका प्रत्यय निपेक्कि ऐकव्याजिक
प्रकृतिपोंक समान है । मिच्छाट्ठि नियण इन्दे खागे गतिपोंम संयुक्त सामादकमम्यगट्ठि
हीन गतिपोंम संयुक्त तथा नम्यगिरयाट्ठि य असंयतमम्यगट्ठि इयगतिम संयुक्त

वधति । तिरिक्षा सामी । वधद्यापं वधविषदृष्ट्यापं च सुगमं । मिच्छाद्विद्धि वधविषो ।
सेसगुणेषु तिविधो, भुवामात्रो ।

देवाउमस्त को वधो को अवधो ? ॥ ७१ ॥

सुगमं ।

मिच्छाद्विद्धि सासणसम्माद्विद्धि असजदसम्माद्विद्धि सजदासेजदा
वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ७२ ॥

यदस्तरयो वुच्यते— वधादयापमेव पुन्यं पञ्चमं वोष्पेद्विषतो जस्वि, तिरिक्ष-
गर्ह्य देवाउमस्त उदयामात्रो । फोदएण वधो, वधादयापमककमण उत्तिविरोदादो ।
किंतो, एगसमएण वधुवरमामात्रो । तिरिक्ष-वधिदियतिरिक्ष-वधिदियतिरिक्षपञ्चमसु
मिच्छाद्विद्धि-सासणसम्माद्विद्धि असजदसम्माद्विद्धि-सजदासेजदा वधाकमेव एकवचन-अवध-
वधुव-सजदासेजदा वधा होति । ओमिषीसु एगएववत्स वधेवालीस वालीस पवतीस
एववत्स । सेसं सुगमं । सव्यं देवगर्ह्यसंयुतं वधति । तिरिक्षा सामी । वधद्यापं वधविषदृष्ट्यापं
च सुगमं । देवाउमस्त को वधो सव्यं सावि-अश्वो, अश्ववधिसादो ।

वांचते हैं । तिर्यञ्च जीव इनके स्वामी हैं । वध्याप्याज और वधविषदृष्ट्याप सुगम
हैं । मिच्छाद्विद्धि शुक्लस्यात्मने वधो प्रकाशका वध होता है । शेष शुक्लस्यात्मने तीन
प्रकाशका वध है क्योंकि उनके पुत्र वधका समाज है ।

देवायुक्त कौन वधक और कौन अवधक है ? ॥ ७१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिच्छाद्विद्धि, सासणसम्माद्विद्धि, असजदसम्माद्विद्धि और सजदासेजदा वधक हैं । ये
वधक हैं, शेष तिर्यञ्च अवधक हैं ॥ ७२ ॥

इसका अर्थ यह है— यहाँ वध और उदयका पूर्व या पश्चात् वुच्यते होनेका
विचार नहीं है क्योंकि तिर्यगात्मने देवायुक्त उदयका समाज है । देवायुक्त परेदपसे
वध होता है, क्योंकि, उसके वध और उदय दोनोंके एक साथ अस्तित्वका विरोध है ।
वध विरुद्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे वधविधायक समाज है । तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय
तिर्यञ्च और पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च पर्याप्त्यर्थमे मिच्छाद्विद्धि, सासणसम्माद्विद्धि, असजद
सम्माद्विद्धि और सजदासेजदोंके पर्याप्त्यर्थ एकपात्र छयालीस व्यालीस और सतीस
प्रत्यय होते हैं । पश्चिमतिथीमें उदयका वधासीस वालीस और पतीस प्रत्यय होते हैं ।
शेष प्रत्ययप्रकाशका सुगम है । सव्यं तिर्यञ्च देवायुक्त देवगर्ह्यसे संयुक्त वांचते हैं । तिर्यञ्च
स्वामी हैं । वध्याप्याज और वधविषदृष्ट्याप सुगम हैं । देवायुक्त वध सर्वत्र सावि व
अश्व होता है क्योंकि वह अश्ववधकी प्रकृति है ।

पचिदियतिरिक्त्वअपञ्चत्ता पचणाणावरणीय णवदसणावरणीय
सादासाद मिच्छत्त-सोलमकमाय-णवणोकसाय तिरिक्त्वाउ-मणुस्साउ-
तिरिक्त्वगह-मणुस्मगह-एइदिय-वीइदिय-तीइदिय-चउरिदिय-पचि-
दियजादि ओरालिय-तेजा-कम्महयसरीर-छसउण-ओरालियसरीर-
अगोवग-छमघडण-चण्ण-गध-रम-फाम-तिरिक्त्वगह-मणुसगहपाओ-
ग्गाणुपुब्बी-अगुरुगलहुग उवधाद परधाद उस्सास-आदाउज्जोव-दो-
विहायगह-त्तस यावर-चादर-सुहुम-पज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिरा-
थिर-सुहासुह सुगम [दुमग] सुस्सर-दुस्सर आदेज्ज अणादेज्ज-जस
कित्ति-अजसकित्ति णिमिण-णीत्तुच्चागोद पचतराइयाण को वधो को
अन्नधो ? ॥ ७३ ॥

सुगम ।

सत्त्वे एदे वधा, अवधा णत्थि ॥ ७४ ॥

वीणगिद्धितिय-मणुस्माउ-मणुस्मगह-एइदिय-वीइदिय-तीइदिय-चउरिदियजादि-हुंठ-

पचेन्निय तियच्च अपयाप्तामे पांच ज्ञानावरणीय, नौ इन्द्रावरणीय, माता व अमाता
वेदनीय, मिथ्यात्व, मोहक कषाय, नौ नोकषाय, तियगायु, मनुष्यायु, तियग्गति, मनुष्यगति,
एकेन्निय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचेन्निय जाति, औदारिक तेजस व क्रमण शरीर,
छह सम्पत्ति, आदिरिक्त्वगह-मणुस्माउ-मणुस्मगह-एइदिय-वीइदिय-तीइदिय-चउरिदियजादि-हुंठ-
मनुष्यगति प्रयोस्यानुपूर्वी, अगुरुम्भु, उपपात, परपात, उम्भ्याम, ज्ञानाप, उचोत, दा
विहायगतिपां, श्रम, म्यावर, चादर, सुहुम, पयात्त, प्रत्यक, साधारणशरीर, मियर, वसिय,
सुम, अशुम, सुमग, [दुमग] सुस्सर, दुस्सर, चादय, अनादय, यत्तकित्ति, अयत्तकित्ति,
निमाण, नीचगोद, ऊंचगोद और पांच भन्नाय, इनकर कौन पचक और कौन अपचक
है ? ॥ ७३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

य मय पंचेन्निय निर्यय अपयाज्य वचक है, अपचक नहीं है ॥ ७४ ॥

रूपातपृष्ठिजय मनुष्यायु मनुष्यगति पचन्निद्य द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय

सट्ठणविरहिदपचसंठण-अमपसमवद्वमपडवविरहिदपंचसुघडण-मणुसुगइपाजागाजुपुष्पी-पर-
पादुसासाइसु-जेव-रोविहमगइ-वावर-सुहुम-प-अच-साहरण-सुमग-सुस्मर-दुस्मर-आद-अ-
-अयकिटि उच्छामोद इति-पुसिसदाणमप-अत्तएसु^१ उदयामात्रो अवमेमामे पवडीचपुरव
बोच्छदामात्रो च पुंषं पच्छ बघादयबोच्छेदविचारो मत्ति ।

पंचपावावरणीय-च उच्छंभावरणीय-मिच्छत्त-जनुंसयबंद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खाह-तेअ-
कम्मइयसरी-अअ-गोव-रस-अस जगुरुजलदुज-तस-वात्त अपज्जत्त-थिराधिर-सुमसुम-दुमम-
अअदेअ-अअसकिति-थिमिण-पंचेतराइय-पीभागाद्वारे सोदएजेव बंधो । विहा-अपत्त-सप्प-
सत्त-सोत्तकमाय-अप्पकसायामं सोदय-परोदएजेव बंधो, अदुवायत्तयो । ओरात्तियसरी
हुइसंठण ओरात्तियसरीअगोवंग अंसपससंवद्वसंभण उवघाद-पत्तेयसरीरामं संहय-परत्तएव
बंधो, विग्गहगदीए एदसिमुदयामात्रो । तिरिक्खागण्णिअओगाजुपुष्पीए वि सोदय-परोदएव
बंधो, विग्गहगदीए जेव उदयत्तो । अम्मपयडीय परोदएजेव बंधो, एअ एदसिमुदयामात्रो ।

जाति हुइसंस्थानसे रहित पांच संस्थान असमाप्तस्वपाटिकासंहनसे रहित पांच
संहनन मनुष्यगतिमायोन्पानुपूर्वी परमात्त उच्छपास, भाताप उद्योत वा
विहायोगतिथो स्थापट, सुअम पर्याप्त साधारण सुमग सुस्वर, दुस्वर, मत्तव
बघाधीर्त्ति उच्छगोव स्वविह मीर पुरयजेव इनका अपयात्तोमं उच्च न हानसे तथा
शय प्रकृतिवोका उच्छम्बुच्छत्त न होनसे यहाँ अअ मीर उच्चके पूर्व या पश्चात् स्पुच्छेव
होनअ विचार नहीं है ।

पांच आनावरणीय चार दर्शनावरणीय मिच्छात्त जनुंसकबद निषगासु
तिर्यग्गति ठेअस व कामज शरीर बरी मत्त एअ एअ अगुस्ससु अस, वादट,
अपघाज स्थिर, अस्थिर, शुम अशुम दुर्मग अमाअय अयशाअर्त्ति निर्माज पांच
अत्तराय मीर औचणोव इनका स्वात्पस ही व च हाता है । जिहा प्रचअ, माता व
असमा अनीय साअह अयाय मीर छह नाअयाय इनका ओअय परोदयम ही अअ
हाता है क्योंकि, व अअओवपी प्रकृतिवां हैं । औत्तरिक्काशरीर, हुइसंस्थान औत्तरिक्
शरीरांगताम असमाप्तस्वपाटिकासंहनन अपघात मीर अत्तकशरीर, इनका स्वात्त
परोदयम ही अअ हाता है क्योंकि, विमहगनिमं इनक उच्चका अमाअ है । तिर्यग्गति
मायापानुपूर्वीअ मी स्वात्तय-परत्तयमे ही अअ हाता है क्योंकि, अमका विमहगनिम
ही उच्च रहता है । अम्य प्रकृतिवोका परोदयम ही अअ हाता है क्योंकि, यहाँ उनक
उच्चका अमाअ है ।

१ अति-पुसिसदा जनुंसयज्जत्त इति वात् ।

२ अति-एत्तिपुरवमात्रो इति वात् ।

पञ्चणागावरणीयं षडदसणावरणीयं मिच्छत्त सोलमकस्सायं मयं दुगुळा-तिरिक्ख-मणु-
स्साठ मोरात्थि-त्तेवा कम्मइयसरीर-वण्णं गध-रसं पत्तसं अगुरुअलहुअ उयवाद्-णिमिण-पवंतरा-
इयाणं पिरतरो पधो, धुवधधित्तादो एगसमएणं वंभुवग्गमात्तादो प । तिरिक्खगइ तिरिक्ख
गइपाओमाणुपुब्बि-वीणागोदाणं सांतर-पिरंतरो पधो, सेउक्कत्तइयं वाउक्कत्तइयं हिंत्तो पचिदिय
तिरिक्खअपञ्जत्तएसुप्पण्णाणं मत्तेसुहुत्तकाठं भित्तरं वंभुवत्तमादो, अण्णत्थं सांतरत्तदसणादो ।
अवसेसायं पयडीणं सान्तेरा पधो, एगसमएणं वंभुवत्तमादो ।

एत्थं सप्पकम्माणं वादाठं पञ्चया, वेउम्बिय-वेउम्बियमिस्स-इत्थि-गुरिसोरात्थि-मण
वचिओगाणममावादो । अवरि तिरिक्ख-मणुस्साउआणमिगिदार्त्तं पञ्चया, कम्मइयकय
ओगेणं सहं चोइसण्णं पञ्चयाणममावादा । संसं सुगमं ।

तिरिक्खाठ-तिरिक्खगइ-एइत्थि-वीइत्थि-तीइत्थि-पउत्तिदियआदि-तिरिक्खगइ-
पाओमाणुपुब्बी मादाउञ्जेव-वावर-सुहुम-माहारणाणि तिरिक्खगइसत्तुत्तं वञ्छति । मणुस्साउ
मणुसगइ-मणुसगइपाओमाणुपुब्बी-उप्पागोदाणि मणुसगइसत्तुत्तं वञ्छति । कुट्ठो ? सामावि
थानो । अवसेसाओ पयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसत्तुत्तं वञ्छति । मज्झिमं पयडीणं वधम्म

पांच आनावरणीयं ना दशमावरणीयं मिष्यात्प माळह कयायं मयं दुगुळा
थियगापु मनुष्यापु वीदार्त्तिकं तेजसं च कामयं दारीरं, वणं गन्धं रसं स्पृशं अगुरुमपु
उपपातं निर्माणं औच पांचं अन्तरायं इनत्तं निरन्तरं वण्णं हाता है कयाकि ये भुववग्गी
प्रकृतिपां हैं तथा एक समयमें इनका वण्णधियां भी नहीं जाता । तिष्यगति तिष्यगति
प्राप्येयानुपूर्वी और नीचगोचका साम्तर-निरन्तर वण्णं हाता है क्योंकि तेजकायिक
और वायुकायिक जीवोंमें वण्णधियं नियंत्रण अथवा प्रत्ययोंमें उत्पन्न हुए जीवोंक अन्तर्मुद्रित
कारण तब इनका निरन्तर वण्ण पाया जाता है तथा अन्तर साम्तर वण्ण वृत्ता
जाता है । दोष प्रकृतियोंका साम्तर वण्ण हाता है क्योंकि, एक समयमें उनका वण्णक
विभ्राम पाया जाता है ।

यहां सब कमीकं प्र्यालीन प्रत्यय हैं, क्योंकि वैद्वियिक, वैद्वियिकमिधं स्वीयत्
पुरुषेव् औत्तरिककायगा आर मम और आर वचन पाया प्रत्ययोंका समाव है । विहापता
यह है कि तिष्यगापु और मनुष्यापु इकतालीस प्रत्यय हात हैं क्योंकि, कामयं वययागक
साथ यहां चौदह प्रत्ययोंका समाव है । शयं प्रत्ययप्रकपया सुगम है ।

तिष्यगापु तिष्यगति एकत्रिय द्वीत्रिय त्रीत्रिय चतुर्वित्रिय जाति तिष्यगति
प्राप्येयानुपूर्वी आताप उपात स्थावर सूक्ष्म और नापारण्य ये प्रकृतियां नियंत्रणनिस
संयुक्त बधती हैं । मनुष्यापु मनुष्यगति मनुष्यगतिप्राप्येयानुपूर्वी और उच्छगाप
प्रकृतियां मनुष्यगतिसं संयुक्त बधती हैं । इसका कारण स्पष्ट ही है । शयं प्रकृतियां
तिष्यगति च मनुष्यगतिसे संयुक्त बधती हैं । सब प्रकृतियोंक वण्णक नियंत्रण वधामी है ।

तिरिक्ता सामी । बंधद्वय बंधविषद्वयं च सुगम । पंचाभावरणीय-बन्धसमावरणीय-
मिच्छस-सोत्सकस्याय-मय दुगुह्य-तेजा कम्पयसरीर-वण्यचउक्क-अगुरुवटहुव ठवध्द-
प्रिमिण-बंधतराह्यायं चउप्रिहो बंधो, पुवबंधिच्छदो ।

मणुसगदीए मणुम मणुसपज्जत्त मणुसिणीसु ओघ णेयव्व जाव
तित्ययरेसि । णवरि विसेसो, वेद्वणे अपच्चक्खाणावरणीय जभा
पर्विदियतिरिक्खभगो ॥ ७५ ॥

एदस्सत्थो बु चदे— बोधमि जासि पयडीयं जे बंधया पक्खिहा ते बंध तस्मिं
पयडीयं बंधया एव वि होति चि बोधमिदि उचं । सप्यहामेसु बोधत्ते सपत्ते तस्मिंसेहं
वेद्वणियपयडीयं अपच्चक्खाणावरणीयस्स च पर्विदियतिरिक्खभगो चि पक्खिद । एदेव
देसमासिएण सुद्धत्थपक्खयं कस्सामो । त बहा— पंचाभावरणीय चउदसपावरणीय-
क्कसक्ति-उच्छागोद-बंधतराह्यायं गुणगयबंधसामिपेण, बंधादयाम पुव्व पच्छा बाधेव
विचारेण, सोदय-फोदय-सांतर-निंतरबंधविचारणाय, बंधद्वयं बंधविषद्वयं च सामि-बादि

बन्धाध्यान और बन्धविमर्शस्याय सुगम है । पांच ज्ञानावरणीय माहर्षीमावरणीय मिच्छास-
सोत्सक कथाय मय दुगुह्यता तेजस व कर्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुवटु उपघात
निर्माण और पांच अन्तराय इनका चारों प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, सुबबन्धी है ।

मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त एवं मनुष्यनिर्णयमें तीर्णकर प्रकृति तक जोपके
समान ज्ञाना चाहिये । विशेषता इतनी है कि हिम्बानिक प्रकृतियों और अप्रत्याभ्यास-
वरणीयकी प्रकृष्टता पंचेन्द्रिय तिर्यणोंके समान है ॥ ७५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— बोधमें जिन प्रकृतियोंके जो बन्धक कह गये हैं वे
ही इन प्रकृतियोंके बन्धक यहाँ भी हैं इसीलिये सूत्रमें बोधके समान ऐसा कहा है ।
सब स्थानोंमें बोधबन्धके प्राप्त होसंपर उसके निषेधार्थ हिस्थानिक प्रकृतियों और
अप्रत्याभ्यासवरणीयकी प्रकृष्टता पंचेन्द्रिय तिर्यणोंके समान है ऐसा कहा है । इस
वेदात्मर्शक सूत्रसं सूचित अर्थकी प्रकृष्टता करते हैं । यह इस प्रकार है— पांच ज्ञान-
वरणीय चार माहर्षीमावरणीय पदाकीर्ति उच्छागोद और पांच अन्तराय इनका गुणस्थानगत
बन्धस्वाप्रित्य बन्ध और उच्छाग पूर्व या पश्चात् ध्युच्छेद होनेका विचार, स्वेवप
परोक्ष बन्धका विचार सांतर निरन्तर बन्धका विचार, बन्धाध्यान और बन्धविमर्शस्याय

विचारेषु वि ओचादो पत्ति मेदो । अत्यति त परवेमो — मिच्छाद्विस्स तेवण्ण पच्चया,
सासणे भट्टेत्तालीस, सम्मामिच्छादिद्विहि पाएत्तालीस, असज्जदसम्मादिद्विहि पोदालीस,
वेठवियदुग्गमावादो । मणुसिणीसु एव भेव । पवरि सव्वगुणद्वारेषु पुरिस-पुंसुसपयेदा,
असज्जदसम्माद्विहि ओरात्थियमिस्स कम्मइया, अप्पमत्ते आहारदुग्ग पत्ति । मिच्छाद्वि चउ
गइसज्जत्त, सासणो तिगइसज्जत्त, उवरिमा देवगइसज्जत्त मणुसगइसज्जत्तं च बंधंति ।

पिदापिदा-पयत्तपयत्त-भीषगिदि-अपत्तापुबंधिचउ-इरियवेद तिरिक्खाउ-मणुसाउ
तिरिक्खगइ-मणुसगइ ओरात्थियसरीर-चउसउअ-ओरात्थियसरीरवंगोअ-पचसवइण-तिरिक्खगइ-
मणुमगइपाओग्गापुपुब्बि-उज्जोव-अप्पसत्यविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अपादेज्ज-पीणागोदाणि सि
एदामो एत्थ वेठणपयडीओ । ओपयेठणपयडीहितो जेण मणुस्साउ मणुसदुग्ग-ओरात्थियदुग्ग
वज्जरिसइसपइयेहि अयियाआ तेण पच्चिदियतिरिक्खपेठणमंगो सि जुत्तं ।

एत्थ भीषगिदितिय-इत्थियवेद-मणुस्साउ-मणुसगइ-ओरात्थियसरीर-चउसउअ-ओरा-
त्थियसरीरवंगोअ-पचसवइण-मणुमगइपाओग्गापुपुब्बि-अप्पसत्यविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अपा-
देज्जाणं पुब्बं वंधो योच्छिण्णो पच्छ उदओ । अपत्तापुबंधिचउकम्मस वंधोदया समं बोधि-

तथा सादि आदि बन्धक विचारोंमें भी ओपसे कोई भेद नहीं है । जहां भेद है उसे कहते हैं—
मिष्पाद्वि के तिरपन प्रत्यय साक्षात्तनमें मनुसाहीस सम्यग्मिष्पाद्विमें ध्याहीस और
असंपतमम्यगद्वि गुणस्थानमें अवाहीस प्रत्यय होते हैं क्योंकि यहां वैश्वियिक व
वैश्वियिकमिथ प्रत्यय नहीं होते । मनुष्यमियोंमें इसी प्रकार प्रत्यय होते हैं । विशेष इतना
है कि सय गुणस्थानोंमें पुरुष व मनुष्य के असंपतमम्यगद्वि गुणस्थानमें औदारिकमिथ
व कामज तथा अममत्त गुणस्थानमें आहारद्विक प्रत्यय नहीं होते । मिष्पाद्वि चारों
गतिपोंमें संयुक्त साक्षात्तनम्यगद्वि नरकगतिके विना तीस गतिपोंस संयुक्त और उपरिम
जीव ब्रह्मगतिसे संयुक्त व मनुष्यगतिस संयुक्त बांधते हैं ।

मित्रानित्रा प्रथमाप्रथमा स्थापयद्वि ममत्तानुपगच्छतुष्क, क्रीवेद तिर्यगायु,
मनुष्यायु तिर्यग्गति मनुष्यगति औदारिकशरीर, चार संस्थान औदारिकशरीरपंगोपांग
पांच संहनन तिर्यग्गतिमायायानुपूर्वी मनुष्यगतिमायायानुपूर्वी उद्योत अमशस्त
विहायोगति दुर्मग दुस्सर, अमदेय और नीकपाक ये यहां द्विस्थानिक प्रकृतियां हैं ।
ओपद्विस्थान प्रकृतियास चूंकि यहां मनुष्यायु मनुष्यगति मनुष्यगतिमायायानुपूर्वी
औदारिकद्विक और मज्जरमसंहनन प्रकृतियोंस अधिक हैं अत एव वंशेन्द्रिय तिर्यगोक्षी
द्विस्थान प्रकृतियोंस समान प्रकृति हैं ऐसा कहा है ।

यहां स्थानपुद्गल क्रीवेद मनुष्यायु, मनुष्यगति औदारिकशरीर, चार संस्थान,
औदारिकशरीरपंगोपांग पांच संहनन मनुष्यगतिमायायानुपूर्वी अमशस्तविहायोगति
दुर्मग दुस्सर और अमदेय इनका पूर्वमें बन्ध स्पष्टिष्ठ होता है, पश्चात् उद्भव । ममत्तानु

बन्धति, सासने दोषमुच्छेददमपादो । तिरिक्खात [तिरिक्खगइ] तिरिक्खगइपात्राग्मागु-
पुष्पी-उ-ओवाणं मनुस्सेसुदयामावादो बंधादयाज पुष्पं पच्छा वोच्छेदविचारेण मयि । बीजा-
गोदस्म पुष्पं बंधा पच्छ उदओ वोच्छिओ, बंध मासजमि जठे मने पच्छ संजदामजदमि
उदयवोच्छेददमपादो ।

मनुस्याउ मनुस्मगइओ सोदएयेव बंधति । तिरिक्खात-तिरिक्खगइ-तिरिक्खग-
पात्राग्मागुपुष्पी-उ-ओवाणं परोदएणेव, मनुस्सु एदमिसुदयामावादो । बंधमपाओ पपदीओ
सोदय-सोदण बन्धति, उदुवादयत्ताओ कओ विमाइगदीण उदयामावादा क नि
तरंबुदयादो ।

भीषसिद्धितिय अर्पताजुबंधिषठन्स्त्रं निरतरो बंधो, धुबंधविचारे । [मनुस्याउ]
तिरिक्खातार्थं पि निरतरो, एगमएण बंधुवरमामावादो । मनुस्मगइपात्राग्मागुपुष्पी-ओउत्ति-
सरी-ओउत्तिमसिद्धिगोषणं मांतर भिंतरो, सप्परव सांतरस्म एवमिं पवम्म भाजदएि

पश्चिमतुष्कका बन्ध और उदय जाना साथ स्पुच्छिच हात है क्योंकि, सासनाप
शुभस्थानमें हमोय स्पुच्छिच देखा जाता है । तिर्यंगासु [तिर्यंगति] तिर्यंगतिप्रायोग्यानु-
पूर्वी और उद्योत इसके बंधि मनुष्योंम उदय जाता नहीं है मन् । इसके बन्ध और उदयके
पूज या पश्चात् स्पुच्छिच होनेका यहाँ विचार नहीं है । नीचगोत्रका पूर्वमें बन्ध और
पश्चात् उदय स्पुच्छिच होता है क्योंकि, सासनात्मक बन्धक मय हो जानेपर पश्चात् संयत-
संयतमें उदयका स्पुच्छिच देखा जाता है ।

मनुष्यासु और मनुष्यगति स्वादयस ही बंधनी है । तिर्यंगासु तिर्यंगति तिर्यंगति
प्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत मनुष्यां परादयस ही बंधती है क्योंकि मनुष्योंम इसके
उदयका समाप्त है । हाथ मनुष्यां ओदय परादयस बंधनी है क्योंकि ये मनुष्योत्तरी
हैं तथा किन्हीं विप्रहगतिम उदयका समाप्त है ता किन्हींका यहाँ ही उदय रहता है ।

स्वयानुचिन्तय और मनुष्यानुचिन्तयमनुष्कका निरन्तर बन्ध हाता है क्योंकि, ये
धुबन्धी मनुष्यां ह । [मनुष्यासु] और तिर्यंगासुका भी निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि,
एक समयमें इनके बन्धका विग्राम नहीं हाता । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर
और औदारिकशरीरांगप्राणका सन्तर निरन्तर बन्ध हाता है क्योंकि इसके बन्धके
सर्वत्र सन्तर होनेपर भी आन्तरिक बन्धमें मनुष्योंमें उदय हुए औदारिक अन्तर्मुहूर्त

देवेहिंतो मणुस्सेसुप्पण्णाजमतोसुहुत्तकलं भिरतरतुवलमात्थे । भवसेसाभो सात्तर बन्धंति,
पगसमएण बधुवरमदसपत्थे ।

एदासि पच्चया दोसु वि गुणद्वयेसु तिरिक्खमेद्वाभियपयडिपच्चएहि तुत्थ । भीष-
गिद्धितिय अपैताणुबधिचठकक च मिच्छाईही चठगाइसंहुत्तं, इत्थिवेद दो वि भिरयगईए
विणा तिगइसंहुत्तं, तिरिक्खाठ-तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओम्माणुपुम्भी-उन्नेवाणि तिरिक्ख-
गइसंहुत्तं, मणुस्साठ-मणुस्सगइ-मणुस्सगइपाओम्माणुपुम्भीमो मणुसगइसंहुत्तं, ओरास्मिसरीर-
चठसत्थण-ओरास्मिसरीरगंगोवंग-पंचसपडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसंहुत्तं अपसत्थविहायगइ
हुमग-दुस्सर मणदेव्व-णीपागोदाणि देवगईए विणा मिच्छाईही तिगइसंहुत्तं, सासभो तिरिक्ख-
मणुसगइसंहुत्तं वंधंति ।

सम्वासि पयडीण बधस्स मणुमा मामी । बधद्वाप वंधविणदृष्टत्वं सादि-आदिविचारो
वि ओपतुत्थे ।

विहा-पयलापं पुर्व्वपञ्चपधोदयवोन्नेद-सोदयपरोदय-सांतरभिरतरं वंधद्वापं वंध-
विणदृष्टत्वं सादि आदिवंधपरिक्खा ओपतुत्थ । पच्चया मणुसगईए परुविइपच्चयत्तुत्थ ।
मिच्छाईही चठगाइसंहुत्तं, सामजसम्मादिही तिगइसंहुत्तं, सेमा देवगइसंहुत्तं वंधंति ।

काठ ठक्क भिरत्तरता पायी जाली है । राप प्रकृतिपां सात्तर बंधती हैं क्योंकि, एक
समयमें उनके बन्धका विधाम देखा जाता है ।

इनके प्रत्यय दोनों ही गुणस्थानोंमें तिर्य्यञ्चोक्षी मिस्थानिक प्रकृतियोंके प्रत्ययोंके
समान हैं । स्थानगृहित्रय और अनस्तानुबन्धिचतुष्कको मिथ्यादृष्टि चारों गतिपोंसे
संयुक्त स्त्रीबद्धको मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्पदृष्टि दोनों ही मरकगतिके बिना तीन
गतिपोंसे संयुक्त; तिर्य्यगगति तिर्य्यगगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको तिर्य्यगगतिसे
संयुक्त; मनुष्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको मनुष्यगतिसे संयुक्त;
बीभारिकशरीर, चार संस्थान बीभारिकशरीरगंगोपांग और पांच संहनन इनको
तिर्य्यगगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त तथा मयशास्तविहायागति बुर्मग दुस्सर, अनत्थेय
और नीचगोरको मिथ्यादृष्टि बद्धगतिके बिना तीन गतिपोंसे संयुक्त व सासादन
सम्पदृष्टि तिर्य्यगति एवं मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधत हैं । सब प्रकृतियोंके बन्धके मनुष्य
स्वामी हैं । बन्धाच्छान बन्धविनयस्थान और सादि आदिकक्य विचार भी ओपके समान है ।

निद्रा और प्रकळाका पूर्व या पश्चात् इमबासा बन्धोदय-मुच्छेद स्वोदय परोदय
बन्ध सात्तर भिरत्तर बन्ध बन्धाच्छान बन्धविनयस्थान और सादि-आदि बन्धकी परीक्षा
ओपक समान है । प्रत्यय मनुष्यगतिके कोइ रूप प्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि चारों
गतिपोंसे संयुक्त सासादनसम्पदृष्टि तीन गतिपोंसे संयुक्त और राप गुणस्थानबद्धी देव-

मनुष्या सामी ।

सादावदधीयपरिक्रमा वि मूलेषतुत्त्र । जवरि पण्ययभेदा सामिमेवो च नायम्भो ।
मिष्यमह्नी सामयसम्माह्नी सादावेदणीयं विरयग्राए विना तिग्रासजुष, उवरिमा देवग्रासंजुषं
बभंति । एवं सम्भपदेसु पण्ययमजुषमामिषमदो चैव । सां नि सुगमो । भण्यन्व मूलेष
पेच्छिदूष न केच्छि मेदो भरिष सि न पुरुविन्दे । जवरि पचिदिय-तस-वाटराणं पयो
मिष्यमह्निमि सोदभो सांतर-भिरंतो । मनुमपज्जत्तण्णु अप-ज्जत्तंघो परोदभो । एवं
मनुसिनीसु वि बत्तप्य । जवरि उवपाद-परपाद-उस्मस-पत्तेयसरीराणमसंज्जमम्माणिहिमि
सोदभो बंधो । पुरिसं जलुमयवेदानं सम्भत्थ परोदभो । इन्धिपेदम्भ सोदभो । खदगसेहम्भ
तिरवपरस्स जत्थि बंधो, इन्धिपेदेण सह खदगसेहिमारोहणे समवामावादो ।

मनुसअपज्जत्ताण पचिदियतिरिक्खअपज्जत्तभगो ॥ ७६ ॥

एवं ब्रह्ममाणपयडिसंयाए समाजत पन्थिय पचिदियतिरिक्खअपज्जत्तभगो' सि
जुष । पञ्चवट्टियणए अवलंथिज्जमाने भेदा उवठम्भे । तं जहा— पञ्चजाजावरणीय-अवदंसजा-

गतिसे संयुक्त बांधते हैं । मनुष्य स्वामी हैं ।

सातावेदनीयकी परीक्षा भी मूलोपक्रम समान है । विशेष यह है कि प्रत्ययभेद च
कामिमंद् आबसा आहिय । मिष्याहृदि बीर सामादानसम्पगाहृदि सातावेदनीयको मरक
गतिक विना तीन गतियोंमें संयुक्त तथा उपरिम जीव स्वगतिसे संयुक्त बांधते हैं ।
इस प्रकार सब पक्षोंमें प्रत्ययसंयुक्त स्वामित्वभेद ही है । यह भी सुगम है । भण्यत्र
मूलोपकी अपेक्षा बीर कुछ भद् नहीं है इसीलिये उसकी यहाँ प्रकृपणा
महीं की जाती । विशेषता यह है कि पंचमित्रिय बस बीर वाटरका बन्ध मिष्याहृदि
गुणस्वात्ममें स्वेत्य बीर साम्तर निरन्तर होता है । मनुष्य पर्याप्तकोंमें अपर्याप्तका
बन्ध परोदबसे होता है । इसी प्रकार मनुष्यनियोंमें भी कहना चाहिये । विशेषता
केवल यह है कि उपपात परपात उष्णतास बीर प्रवेकहाटीर, इनका असंयतसम्पगाहृदि
गुणस्वात्ममें स्वेत्य बन्ध होता है । पुरुषबद् बीर मनुष्यकेबद्का सर्वत्र परोदब बन्ध
होता है । क्षीरबद्का स्वेत्य बन्ध होता है । क्षपकधर्मीमें तीर्थेकरका बन्ध नहीं होता,
अर्थात् तीर्थेके साथ क्षपकधर्मी बहनेकी सम्भावना नहीं है ।

मनुष्य अपर्याप्तकी प्रकृपणा पंचेन्द्रिय तिर्यक् अपर्याप्तके समान है ॥ ७६ ॥

यह बण्यमान प्रकृतियोंकी [१०५] सेप्यास समानताकी अपेक्षा करके पंचेन्द्रिय
तिर्यक् अपर्याप्तोंके समान है ऐसा कहा गया है । पर्यापार्थिक मयका व्यवहृतन करने
पर भेद पाया जाता है । वह इस प्रकार है— पांच कामावरणीय नौ दशमावरणीय सत्ता

सोऽसक्तसाय पवनेऽसक्तसाय तिरिक्त्वाऽऽ मनुस्माऽऽ तिरिक्त्वाऽऽ मनुसगऽऽ एहदिय-पेहदिय-
 तीहदिय-चठरिदिय-पचिदियजादि अत्रास्त्रि-तेवा कम्मइयमरी छमत्रण ओरास्त्रिरीरजंगो-
 वंग-छमपडण वण्ण-गघ-रस फस तिरिक्त्वाऽऽ मनुसगऽऽपाओमाणुपुष्ठी-मगुरुवटडुव-उवभाद-
 परघाद-उस्सास-आदाठजोव दोविहायगऽऽ-तस-भावर-यादर सुहुम पञ्च-अपञ्च-पतेय साधारण
 सरीर [धिरा-]धिर-सुहासुह सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेअ-अपादेअ-असक्किअ-अजसक्किअ-
 पिमिअ-पीपुच्चागोद-पचतरादयाणि ति एदाओ एत्थ पञ्चमापयणीओ । एत्थ वीणगिदि
 तिय-इत्थि-गुरिमवेद-तिरिक्त्वाऽऽ-तिरिक्त्वाऽऽ-एहदिय-पीहदिय-तीहदिय-चठरिदियवादि हुह-
 सत्रणविरिहदपचसत्रण अमपत्तसेवइयदिरिक्त्वाऽऽ-चस-वडण-तिरिक्त्वाऽऽपाओमाणुपुष्ठी-परघादु-
 स्सास-आदाठजोव-दोविहायगदि भावर-सुहुम-पञ्च-साधारण-सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेअ-
 अजसक्किअ-उच्चागोण उदयामात्राओ वंदोदयाण मतामताण सण्णिकासामात्राओ पुष्पं पञ्च
 वंदोदयवोन्हेदपरिक्त्वा ण कीरेदे । सेमपयणीण पि वचमेव एत्थ उदयस्स वोन्हेदामात्राओ
 ण कीरेदे ।

पचपाणावरणीय चतुदसपावरणीय-मिच्छत-वर्तुमयवेद मनुस्माऽऽ मनुसगऽऽ-पंचिदिय-
 जादि-तेजा-कम्मइय-वण्णचठनक मगुरुवटडुव-तस-यादर मपञ्जस-धिराधिर-सुहासुह-दुभग-

य मसता ब्रह्मीय मिष्यात्वं सोऽह कपाय मी मोरुपाय तिर्यगाय, मनुष्याय,
 तिर्यगाय मनुष्यगति एकैस्त्रिय द्वीस्त्रिय त्रीस्त्रिय चतुस्त्रिय य पञ्चस्त्रिय
 जाति औदारिक तैजस व कर्मण शरीर, छह संस्थान औदारिकशरीरंगो
 पांग छह संहृतन वर्ज गन्ध रस स्पर्श तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी मनुष्य
 गतिप्रायोग्यानुपूर्वी मगुरुवट, उपपात परपात उच्छ्वास आताप उघात दो
 विहायोगतियां अतः स्थावर वायु, सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर,
 स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुभग दुर्भग सुस्वर, दुस्वर, भाव्य अभाव्य पञ्चकीर्ति अवश
 कीर्ति निर्माण सीधगोत्र ऊचगोत्र और पांच अन्तराय ये यहाँ वर्ण्यमान प्रवृत्तियाँ हैं। इनमें
 रूपामराक्षत्रय कृत्विज पुरुषेव तिर्यगायु, तिर्यगति एकैस्त्रिय द्वीस्त्रिय त्रीस्त्रिय
 चतुस्त्रियजाति दुष्पसंस्थानसं रहित पांच संस्थान मसमाप्तधृष्टादिक्वाहनको
 छोड़कर शेष पांच संहृतन तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी परपात उच्छ्वास आताप उघात
 दो विहायोगतियां स्थावर, सूक्ष्म पर्याप्त साधारण सुभग सुस्वर दुस्वर, भाव्य
 अभाव्य पञ्चकीर्ति और उच्छ्वागोत्र इनमें उच्यमाना होनेसे विद्यमान गन्ध और अविद्यमान उच्यमें
 समानता म होनेके कारण पूर्व या पश्चात् होनेवाले बन्धोदयसुच्छेदकी परीक्षा नहीं की
 जाती है। शेष प्रवृत्तियोंके भी वर्ण्यक समान यहाँ उच्यका सुच्छेद न होनेसे उक्त परीक्षा
 नहीं की जाती।

पांच कामावरणीय चार वर्तुणावरणीय मिष्यात्वं नपुंसकवेद मनुष्याय,
 मनुष्यगति पंचस्त्रियजाति तैजस व कर्मण शरीर, वर्णादिक चार, मगुरुवट, अतः,

अनादय-अजस्रकृति-विमिष-वीषाणाद-वंचतराद्याणां सादृशा यथा । विहा-पयन्-मादमात्र-
वीमकसाय-भोरास्त्रियमरीर-हुंडसत्रण-भारास्त्रियमरीरभंगावग-अमपत्तमवृत्तमपडव-मनुमप-
वाभोम्याजुपुष्पि-उवपाद पतेयसरीराण सादृश-परादण्य यथा, अद्वयादयत्तादा, कसि च विमाद-
मरीर उदयामावादे एनिक्रमे विगाहगदीना यथा उदयत्तादा । अवमेसाभा परदण्य-
यन्ति ।

पञ्चाभावरणीय-अवर्दमभावरणीय मिच्छत सांत्त्यकमाय-अय-दुर्गुण-निरिच्छ-मनु-
स्मात्-भोरास्त्रिय-सेवा-कम्मपयमरीर वण-गोप रस-पन्न-मगुरुवृत्त-उवपाद-विमिष-पर्वत-
इयाव विरंतो यथा, एव पतेय वृत्तव्यादो । अवममाय सांत्त्य यथा, एवममण्य यथा-
विरामर्दसणादो । [निपग-तिपग-इयाव-गानुपुष्पी] वीषाणाद-अय-सांत्त्य-विमिष-
क्रिय उच्छेद ? अ, तेउ-वाठकपयार्थं सत्तमपुडवपयार्थं च मनुमपुष्पी-अमादो ।

वाह, अपर्याप्त स्थिर, अमिषा इमं अमुमं दुर्गुणं अनादय अवशर्कति निमात्र
नीचगात्र भीर पांच अमराय इमं स्वोदय वन्ध होता है । निमात्र प्रचष्टा जाता है
असाता वेदनीय बीस कराय भीरादिकशरीर, दुर्गुणसंस्थान भीरादिकशरीरोंगोपाय
असंमत्ताद्युपादिकसंज्ञक मनुष्यगतिप्राप्तेयानुपूर्वी उपपात भीर प्रत्येकशरीर, इमं
स्वोदय परोदयसे वन्ध होता है, क्योंकि, ये मनुष्यादी प्रवृत्ति हैं । तथा किन्हीं
विमलपतिमें उदय नहीं रहता भीर एकका विमलपतिमें ही उदय रहता है । हाय प्रवृत्ति
परोदयसे ही वंचती है ।

पांच अभावरणीय भी दर्शनावरणीय मिच्छात्मा सांत्त्य कराय अय दुर्गुणा
तिपगाय मनुष्याय, भीरादिक तेजस च कामज शरीर, वर्य गन्ध रस स्वाद अगुरुमधु,
उपपात निर्मात्र भीर पांच अमराय इमं निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि, वन्ध
अपेक्षा ये प्रवृत्ति हैं । हाय प्रवृत्तिमें सांत्त्य वन्ध होता है क्योंकि, एक समय
उनका वन्धका विमलपति होता है ।

अंश—[निपगति-तिपगतिप्राप्तेयानुपूर्वी भीर] नीचगात्रके वन्धमें सांत्त्य
विराजता क्यों नहीं रहता ?

समाधान—अभी कहते क्योंकि तेजःप्रयिक च पापुप्रयिक और्ध्वी सांत्त्य
पुष्पीक-आदिकमें समान मनुष्यमें तत्त्विका अमात्र है ।

तिरिक्खमपञ्चत्तम व पचया परूवेदम्मा । तिरिक्खाठ तिरिक्खगइ-पंचदिय-पंचदिय-तीरदिय-
पञ्चदियजादि तिरिक्खगइपाभोगाणुपुव्वी-मादावुमेव-मावर-सुद्धुम-साहारपसरीरणि तिरिक्ख
गइसंभुत्त वञ्चति । मणुस्साठ-मणुसगइपाभोगाणुपुव्वी-उच्चगोदाणि मणुसगइसंभुत्त वञ्चति ।
अवसेसामो पयसीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंभुत्त वञ्चति । मणुस्सा मामी । पंचदियं पंच
विषद्वद्वाण मादिमादिपरूवणा च पंचदियतिरिक्खअपञ्चत्तपरूवणाए तुत्थ ।

देवगदीए देवेषु पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-सादासाद-
धारसकसाय-पुरिमवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग भय-दुगुछा-मणुसगइ-
पंचदियजादि ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-ओरा-
लियसरीरअगोवग-चज्जरिमहसघढण-वण्ण-गध-रस-फास-मणुसाणु-
पुव्वि-अगुरुअलहुव उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-त्तस-
वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर थिराथिर-सुहासुह-सुमग-सुस्सर-आदेव-जस
कित्ति अजमकित्ति णिमिण-उच्चगोद पंचतराइयाण को वधो को
अवधो ? ॥ ७७ ॥

प्रत्ययोंकी प्रकृपणा नियम अपयत्तोंके समान करना चाहिये । तिर्यगाणु, तिर्यगति
पञ्चन्द्रिय छिन्द्रिय त्रिन्द्रिय चतुर्न्द्रिय जाति तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी आताप
उपोत स्वाधर, सूक्ष्म और साधारणशरीरको तिर्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । मनुष्यासु
मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रको मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । शेष प्रकृतिपौको
तिर्यगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । मनुष्य स्वामी है । बन्धाव्वाज बन्धविनष्टस्यान
और छादि आदिषु प्रकृपमा पंचन्द्रिय तिर्यक् अपयत्तोंकी प्रकृपणाक समान है ।

देवगतिमें देवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दशनावरणीय, साता व असाता वेदनीय,
बारह कृपाय, पुरुषवेद, ह्यम्य, रति, अरति, शोक, भय, अशुप्ता, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति,
बौद्धारिक, वैजस व क्रमण शरीर, समचसुरससंस्थान, बौद्धारिकशरीरागोपांग, वज्रपमसंहनन,
वज, गज, रघ, स्पश, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुद्धु, उपपात, परपात, उच्छ्वास, प्रशस्त
विहायोगति, वस, वादर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमय, सुस्वर,
आदेय, यशस्वीर्ति, अयशस्वीर्ति, निमाय, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका क्षेत्र पञ्चक
और क्षेत्र अचञ्चक है ? ॥ ७७ ॥

सुममेवेत् ।

मिच्छाद्विष्टिपुष्टि जाव अमजदसम्माद्विष्टि वधा । एदे वधा,
अवधा णत्थि ॥ ७८ ॥

देसामासियसुत्तमर्, तणदम सइदयपरुण कस्सामो— मसुसमइ आगल्लि
सुरि-भमोवर्ग वज्जरिमहसपण-अणुमगाइपात्राम्माणुपुप्पी अजसकिट्ठीणमुद्रयाभावाद्दो वेषो-
इयाण पुप्प पण्ण वोप्पेदपरिक्खा ण करिदि । न मेमाणे पि, वधस्स उइयम्म
वोप्पेदामावाद्दो ।

१) पंचशाखावरणीय-चतुर्दशधावरणीय पंचविद्ययादि-तेजा-कम्मदयमर्ग-वज्र-गंध-रम
पद्म-अणुसुवसहु-तप्त-पाद-पञ्च-विराधिर-सुमसुम-सुमग आदेव्व जमकिट्ठि-प्पिप्पि
सुव्वमोद-पंचतण्डुलार्थ मोदपणव वषो । मिश्र-मयत्ता सादासाह-भारमकसाय पुरिसवद-इस्म
रदि-अरि-सोग मय हुगुण्णं सादय-परोदपण वषो, अद्वयोदयत्तो । समचउरसंअण-

पह एक सुगम है ।

मिष्याद्विष्टि लेकर अमयतसम्पददि तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अवन्धक नहीं
हैं ॥ ७८ ॥

पह सूत्र वेशामर्शक है इसलिये इसमें सुचित मयकी प्रकृषया करते हैं— मनुष्य
गति औदारिकशरीर, औदारिकशरीरगोपांग वज्रपमसेहनन मनुष्यगतिमायेभयातु
पूर्वी और अयशकीर्ति इनके उदयका अभाव होनाभ बन्ध और उदयक पूर या पदार्थ
व्युत्पन्न होमकी परीक्षा नहीं की जाती है । शेष प्रकृतियोंकी भी यह परीक्षा नहीं की जाती
क्योंकि, बन्धक समान उनके उदयके व्युत्पन्न अभाव है ।

पाँच शाखावरणीय चार वर्गशाखावरणीय पंचविष्टि जाति तज्जस व कम्मच शरीर
वर्ग गणव रस स्पष्ट अणुरससु वन वादर पर्याप्त स्थिर, अस्थिर सुम अणुम
सुमग मत्तप पश्याकीर्ति निमल उद्यगाय और पाँच अस्तव्य इनका स्वात्पय ही
बन्ध होता है । मिश्र प्रथमा क्षमा व असाता वज्रीन बारह कपाय पुरुषवद हास्य
रति जल्लि शाक, मय और सुगुग्गा इनका स्वात्पय परादपण बन्ध होता है क्योंकि,
वे अणुवेषकी प्रकृतियाँ हैं । समचउरसंअण- प्रत्येकशरीर मात्र उदयका स्वात्प

१ शरीर औदारिकशरीरमेव इति वाच ।

२ इति अणुरो अणुरोवत्तरी इति वाच ।

पचैयसरीर उवषादाप सोदय-परोदएण पचो, विमाहगदीए उदयाभावादो । परषादुस्सासं पसत्थविहायगदि-सुस्सरपे सोदय परोदएण पचो, अपन्जतकाले उवयामावे वि पचदंसणादो । पचरि सम्मामिच्छाद्विस्म एदामि सोदएण पचो । मणुसुगइ ओरात्तिसरीर ओरात्तिसरीरभंगो-वंग-व-अरिसदसचडण मणुस्साणुपुञ्ची-अजसकितीण परोदएण पचो, तन्पेदेसिमुदयविरोहदा ।

पचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-धारसकसाय मय दुगुछ ओरात्तिय तेजा-कम्मइय सरीर बण गच-रस-फस-अगुरुमलजुअ उवषाद उस्सास-वाद्र-पन्जत-पचैयसरीर भिमिण-पचं वराइयापं मिरंतरो पचो, देवगदीए पचविरोहामावादो । साउसाद-इस्स-दि-अरि-सीग-विगवि-सुमामुम-असकितीण सांतरो पचो, एगसमएण पचविगमुवळमादो । पुरिसवेद-सम-चउरसमण-यन्जरिसदसचडण-पसत्थविहायगइ-सुमग-सुस्सर-आदेन्नुच्चागोणं मिच्छाद्वि-सासजसम्माइदीसु सांतरो पचो, एगसमएण पचविगमदंसणादो । सम्मामिच्छाद्वि-असजद-सम्माइदीसु भिरतरो, तस्य पडिवक्खपयडीण वचामावादो । पंभिदियजादि-मणुस्सगइ मणुस्साणुपुञ्ची-ओरात्तियसरीरअगोयग-त्तसापं मिच्छाद्वि-सांतरो-भिरतरो । सासजसम्मादिद्वि-सम्मामिच्छाद्वि-असजदसम्मादिदीसु भिरतरो, पडिवक्खपयडीण वचामावादो । पचरि

परोदयसे वण्य होता है क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव है । परघात, उच्छ्वास, प्रान्स्थविहायोगति और सुम्बर इनका ज्योत्स्न परोदयसे वण्य होता है क्योंकि वषपाप्यकालम इनका उदयका अभाव होनेपर भी वण्य होता जाता है । विहायता यह है कि सम्यग्मिष्याद्विह इनका स्वादयस वण्य होता है । मनुष्यगति और भौतिकदारीर, भौतिकदारीरगापांग पञ्चमसंज्ञन मनुष्यानुपूर्वी और मनुष्यगति इनका परोदयसे ही वण्य होता है क्योंकि वेचोम इनके उदयका विरोध है ।

पांच सामावरणीय छह ज्ञानावरणीय वादक काय मय सुगुप्ता भौतिक, तेजस्य व कर्मण दारीर वर्ण गण्य रस, स्पष्ट अगुरुमय उपघात उच्छ्वास वादक, पचाप्य प्रत्येकदारीर निर्माण और पांच भन्तराण इनका निरन्तर वण्य होता है क्योंकि, वेच गतिमें इनका निरन्तर वण्यका विरोध नहीं है । साता व ममाना वेदनीय हास्य रति, मपति दोक स्थिर कश्चित्, शुभ अशुभ और पक्षार्ति इनका साम्तर वण्य होता है क्योंकि, एक समयमें इनका वण्यका विधान पाया जाता है । पुण्यवद् समयगुरुममस्यान वज्रम संज्ञन प्रज्ञस्तविहायगति सुमग सुस्सर, आदय मार उवणाप इनका मिष्याद्वि व सामाद्विमम्यगद्वि गुणस्थानमें साम्तर वण्य होता है क्योंकि, एक समयमें इनका वण्यका विधान होता है । सम्यग्मिष्याद्वि और ममपतमम्यगद्वि गुणस्थानमें निरन्तर वण्य होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिपक्ष वण्यका अभाव है । पचमिदय जानि, मनुष्यगति मनुष्यानुपूर्वी भौतिकदारीरगापांग और ज्ञान इनका मिष्याद्वि गुणस्थानमें साम्तर निरन्तर वण्य होता है । सामाद्विमम्यगद्वि, सम्यग्मिष्याद्वि और असंयतसम्यगद्वि गुणस्थानमें इनका निरन्तर वण्य होता है । पचमिदय जानि, प्रतिपक्ष प्रकृतिपक्ष वण्यका अभाव है । विहाय इतना है कि मनुष्यद्विक सासादन गुणस्थानमें

मनुष्यस्य सासपन्नि सांतर-विरतो ।

मिच्छाद्विष्टस्य वापण, सासपन्स्य सचेष्टत्वेन, असद्वदसम्मादिद्विष्टस्य तेष्टात्वेन रवेष्ट
पञ्चया, वेषपञ्चयसु वृत्तस्यवेदगालियदुगायममावादे । सम्मामिच्छाद्विष्टस्य एतेष्टत्वेन
पञ्चया, वेषपञ्चयसु वृत्तस्यवेदोराठ्येकत्रययोगाजममावादे । सेस सुगम ।

प्रथमो सप्यपयद्भीमो सम्मामिच्छाद्विष्ट असद्वदसम्मादिद्विष्टो मनुस्यगदसंज्ञक वपेति,
तस्य तिरिक्त्वयद्म पथामावादे । मनुस्यगद मनुस्यगुपुत्वी-उत्पन्नोत्पन्नि मनुस्यगदसंज्ञक,
वपसंज्ञावो पयद्भीमो मिच्छाद्विष्ट-सामणसम्माद्विष्टो तिरिक्त्व-मनुस्यगदसंज्ञक वपेति, वपि
रोद्धादे । सप्यपयद्भीमं वपम् दत्ता सामी । वपद्वारं वपविज्ञातो च सुगम । पयपात्रारक्ष्य
छदस्यवावरीय-वारमकम्पाय मय-दुग्धं-तेजा-कम्पद्वयस्य-वप्य गध-रस-पयस्य अयुरुभल्लुभ-
उषमाद विमिष-वर्तव्यत्वाय मिच्छाद्विष्टि चउविहो वपे । भप्यत्य निविहो, चउविह-
मावादे । वपसेसार्थं पयद्भीमं सप्यगुपेसु सादि भद्वपे ।

मान्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

इहाँमें मिथ्याद्विष्ट वापन सासाद्विष्टक सेनाधीन और असंयतसम्बन्धविष्ट
तेष्टात्वेन प्रत्यय होते हैं क्योंकि, वहाँ आद्यप्रत्ययम मनुस्यकवद् और औदारिकविष्टक
भ्रमाव है । सम्मामिच्छाद्विष्ट इच्छात्वेन प्रत्यय होते हैं क्योंकि, उन्मक मोप प्रत्ययोंमें
वृत्तसंज्ञक और औदारिक कपपायका भ्रमाव है । शय प्रत्ययमकपय सुगम है ।

इस सब प्रकृतियोंका सम्मामिच्छाद्विष्ट और असंयतसम्बन्धविष्ट मनुस्यगदसंज्ञक
संयुक्त बाँधते हैं क्योंकि इस गुणस्थानमें तिर्यक्गतिश्च बन्ध नहीं होता ।
अनुप्यगति मनुष्यासुपूर्वा और उच्छवाजश्च अनुप्यगतिसे संयुक्त बाँधते हैं । शेष
प्रकृतियोंकी मिथ्याद्विष्ट और सासपन्सम्बन्धविष्ट तिर्यग्गति च मनुस्यगतिसे संयुक्त बाँधते
हैं, क्योंकि, इसमें कार्य विरोध नहीं है ।

सर्वे प्रकृतिर्योक्त बन्धके द्वेष्ट स्वामी हैं । वप्याप्याम और वप्यविज्ञात सुगम है ।
पांच ज्ञातावरणीय छद्म वर्त्तमानवरणीय वारह कपाय भव मनुष्या तिर्यक् च वार्मक
शरीर, वर्म, वन्ध रस स्पर्श अशुद्धाभु, उपधात निर्माण और पांच मन्तराव इनका
मिथ्याद्विष्ट गुणस्थानमें वारो प्रकारका बन्ध होता है । भन्ध गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका
बन्ध होता है, क्योंकि, वहाँ मूच वप्यका भ्रमाव है । शय प्रकृतियोंका सब गुणस्थानोंमें
सादि च मनुष्य बन्ध होता है ।

१ कर्ता वप्यविज्ञातरी वापनी वप्यविज्ञातरी । वप्यी वप्यविज्ञातरी
है वप्य ।

मिहाणिदा-पयलापयला धीणगिद्धि-अणताणुवधिकोध-माण-
माया-लोम हत्थिवेद तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसठाण चउसघडण-
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुन्नी-उब्बोव-अप्पसत्यविहायगइ दुमग दुस्सर-
अणादेज्ज-णीचागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ ७९ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी वधा । एदे वधा, अवसेमा
अवधा ॥ ८० ॥

अण्णताणुवधिषडक्कस्स बंधोदया सम वोच्छिन्नज्जति, सासणम्मि उमयामावदसाणादो ।
इधिवेदस्स पुण्यं बंधो पच्छम उदयो वोच्छिन्नज्जति, सासणम्मि वोच्छिज्जपधिविवेदस्स
असंजदसम्मादिट्ठिहि उदयवोच्छेददंसणादो । अचधा, देवगदीए बंधो येव वोच्छिज्जज्जि
पोदयो, तदुदयविरोहिणुण्णहाणामावादो । एदमप्यपदमप्यरत्तं वि जोजेयम्यं । धीणगिद्धितिय

निगानिगा, प्रचत्थप्रचत्त, स्थानगुद्धि, अनन्तानुपन्नी कोव, मान, माया, लोम,
संवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार सम्भान, चार सहनन, तिर्यग्गतिप्रायोम्यानुपूर्वी, उघोत,
अप्रभन्तविहायोगति, दुर्मग, दुस्सर, अनादेय और नीचगात्र, इनका कौन बन्धक और कौन
अबन्धक है ? ॥ ७९ ॥

यह सब सुगम है ।

मिप्पाएटि और सासादनसम्पगटि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक
हैं ॥ ८० ॥

अमन्तानुबन्धिषडक्कस्स बन्ध और उदय दानों एक साथ व्युत्पिठ्य होता है, क्योंकि
सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव होता जाता है । अविद्वक्त्त पूर्वमें बन्ध और
पश्चात् उदय व्युत्पिठ्य होता है क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें अविद्वक्त्त बन्धके व्युत्पिठ्य
हा जानेपर असंप्रतसम्पगटि गुणस्थानमें उदयके व्युत्पिठ्य होता जाता है । अथवा,
देवगानिमें बन्ध ही व्युत्पिठ्य होता है उदय नहीं । क्योंकि, देवगतिमें उक्त प्रकृतियोंका
उदयके विरोधी गुणस्थानोंका अभाव है । इस अर्थपरही अन्त्य भी योजना करना चाहिये ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खमइ-उठसंखण-उठमवडण-तिरिक्खगइपाओमाणुपुप्पी-उज्जोइ-अप्पसत्त-
विहायगइ-हुमम-हुस्सर-अण्णदेज्ज-वीचमोदार्णं वेषेसुदयाभावाद्दो वेषेत्तयाभं पुप्पं पच्छ
वोच्छेदपरिक्खा न करिरे ।

अनेतानुबन्धितकिरिबेदे सोदय-परोदण, अवसेसामो पयडीओ परोदणव
वन्ति । धीमिच्छितिय-अपेत्तपुबंनिषठकक तिरिक्खाउभाण गिरत्ते वेषो । वसुधामि
सांते, एगसमएण वंजुवरमुत्तमादो । कयापि दो तिग्गिममययादिकत्ताडिबद्धवंपईममादो
सांत-भित्तरवचा किण्ण उच्छेदे ? न, एदासु पयडीसु गिरत्तरवंचवियमाभावाद्दो । एदासि
पयडीणं पच्छया देवगद्धउड्डाक्कयडिपच्छयतुत्थ । अपरि तिरिक्खाउअस्स पुप्पित्तमप्यसु
वेठमियमिस्स कम्मइयप चया अवसेदम्भा । तिरिक्खाउ-तिरिक्खमइ-तिरिक्खगइपाओमाणु
पुप्पी-उज्जोवाणि तिरिक्खगइसुत्तं, अवसंसाओ पयडीओ मिच्छाद्वी सामसममाइवी तिरिक्ख
मणुसगइसुत्त वंषंति, अविरोहद्दो । दया सामी । वंषद्दार्णं वंषविमट्टद्दार्णं च सुगम । वीच-

स्वाम्यपुच्छिय तियमायु तिर्यगाति याग संख्यान चार संहनन तिर्यगातिमायायाणुपुप्पी,
उद्योत अमशस्तविहायागति हुमम हुस्सर अनत्तेय धीर वीचयोव इनका बेओम
उद्यामाय हामम वण्ण धीर उद्यक पूर्व या पञ्चान्ण्युच्छेद होमेकी परीक्षा नहीं की
जाती ।

अनन्तानुबन्धितपुक्क मीर श्रीवेद म्भोदय परोदयसे तथा हाय प्रकृतिपां परो-
दयस ही वंषर्ता है । स्वाम्यपुच्छिय अनन्तानुबन्धितपुक्क मीर तिर्यगायुक्क गिरत्तर वण्ण
होता है । हाय प्रकृतिपाय स्वाम्य वण्ण होता है क्योंकि, एक समयमें उनके वण्णका
विधाम पाया जाता है ।

श्रृंक्ष—कदाचित् हा तीन समयोंमें कर्मस संबद्ध वण्णक दृष्ट आनेसे
साततर गिरत्तर वण्ण क्यों नहीं कहत ?

समाधान—वहाँ कहत क्योंकि इन प्रकृतियाम गिरत्तर वण्णके नियमका
अभाव है ।

इन प्रकृतियोंक प्रत्यय देवयानिकी वस्तुस्थानीक प्रकृतियोंक प्रत्ययोंक समान हैं ।
विश्रुताकेवम यह है कि नियमायुक् पूर्वोक्त प्रत्ययोंमें वैशिष्ट्यमिश्र धीर कर्मय प्रत्ययोंको
कम करना चाहिये । तिर्यगायु तिर्यगति तिर्यगतिमायायाणुपूर्वी धीर उद्यात इनको तिर्य
गतिम संयुक्त तथा हाय प्रकृतिप को मिच्छाद्वि व सासाइजमप्यहदि तिर्यगति धीर
मयुत्पतनिय संयुक्त बोधने हैं क्योंकि इनमें कोई विशेष नहीं है । दृष्ट होमी है । वण्णायाम

मिदितिय-अमताणुषविषउक्काणं' मिच्छाद्विद्दि चउत्विहो वंधो । ससणे दुविहो, अणादि
धुवत्तामावाधो । अवमेमाणं पयईलं वधो सादि-अरुवो, अरुववधिसादो ।

मिच्छत्त णवुसयवेद एहदियजादि-हुइसठाण-असपत्तसेवट्टसघ-
ढण-आदाव-थावरणामाण को वधो को अवधो ? ॥ ८१ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विद्दी वधा । एदे वधा, अवमेसा अवधा ॥ ८२ ॥

एहस्स अण्यो वुवेदे — मिच्छत्तस्म वधेत्त्या मम वाञ्छितंति, मिच्छाद्विद्दि वध
तदुमपमुपलंमिय उव्वी तदशुवत्तमादा । णवुसयवेद एहंनियजादि-हुइसठाण असपत्तसेवट्टसप
इण आदाव थावरणमेयुदयामावाधो वंधोदयाण पुव्वापुम्बवोच्छदपरिक्खा ण कीरेदे । मिच्छत्तं
सादएण, अण्णामो पयईवो पयेदएणव पम्भति, तहोवत्तमादा । मिच्छत्तं गिरत्तं पम्भइ,
धुववंधिसादो । अवराभो सानरं पम्भति, एणसमएण वधुवसुवत्तमादो । एणमिं पक्कया

धीर वधविनयस्थान सुगम है । स्थानसुविनय धीर मनस्तानुषधिचतुष्पका मिथ्याद्वि
गुणस्थानमें वारी प्रकाशका वध होता है । सामान्य गुणस्थानमें वा प्रकाशका वध होता
है क्योंकि, वही अनारि भार धुव वधका समाप है । धीर प्रकृतियोंका वध नादि व
अधुव होता है क्योंकि ये अधुववधधी प्रकृतियाँ हैं ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवद, एकत्रिय ज्ञानि, हुण्डमंस्थान, अमशान्तपुष्पात्मिकमंजनन,
आनाप और त्याग नामकमोका कौन पधर और कौन अवधक है ? ॥ ८१ ॥

एह सत्त सुगम है ।

मिथ्याद्वि वन्धक है । य वन्धक इ, गुण दव अवधक है ॥ ८२ ॥

इसका अर्थ बहुत है— मिथ्यात्वका वध भार उदय ज्ञानों नागमें धुवितुष
हान है क्योंकि, मिथ्याद्वि गुणस्थानमें ही मिथ्यात्वका वध भार उदय ज्ञानों पाप जान
है ऊपर व वही पाप जान । नपुंसकवेद एकत्रिय ज्ञानि हुण्डमंस्थान अमशान्तपुष्पादि
मंजमत ज्ञानाय जार स्थापर इस उदयका वही अमाव हानत वध और उदयक पूर
या पक्कान धुवितुषकी परीक्षा नहीं की जाती । मिथ्यात्व प्रकृति व्यापक और अम
प्रकृतियों वपदयस ही वधनी है क्योंकि, पैमा पाप जाना है । मिथ्यात्व प्रकृति निरम
वंधनी है क्योंकि, धुववधनी है । अन्य प्रकृतियों कावत्त वंधनी है क्योंकि, एक समयमें

तिरिक्खाठ-तिरिक्खगाइ चउमंदाय-चउसपइण-तिरिक्खगाइपाओग्गानुपुण्णी-उ-ओव नपसत्त-
विहायगाइ हुमग-हुस्सर अवादेन्न-भीवागोदाणं देवेसुदयामावाणो वंवेत्तयाणं पुण्णं पण्ण
योण्णपरिक्खा न करिदे ।

अर्णतापुबंभिचउत्तिरिक्खिवेदा सोत्तय-परोदण्ण, अबसेसाओ पयडीओ परोदण्ण
कम्भति । पीण्णगिदिसिय-अर्णतापुबंभिचउत्तक तिरिक्खाठमाण विरंत्ता वंघो । अबसेसाओ
सांत्ते, पगसमएव वंघुवरमुवळंमाओ । कयावि दो विम्मिममयादिकत्तमाडिबद्धवधंसमओ
सांत्त-विंत्तरवंघो किम्भ ठप्पदे ? न, एदासु पयडीसु विंत्तरवंघवियमामावाओ । एदासि
पयडीणं पण्णया देवगाइचउत्ताअपयडिपण्णयत्तुत्तम् । अवरि तिरिक्खाठअस्स पुण्णित्तपण्णयत्तु
वेठ्ठिअपमिस्स कम्मइयपण्णया अवसेइण्णा । तिरिक्खाठ-तिरिक्खगाइ-तिरिक्खगाइपाओग्गानु
पुण्णी-उओवाणि तिरिक्खपइसंहुत्तं, अवसेमाओ पयडीओ मिण्णइही सामअस्माइही तिरिक्ख
मसुसगइसहुत्तं वंघति, अविणेइओ । देवा समी । वंघट्ठाणं वंघविण्णइहाअ य सुगमं । पीण-

स्वातयुद्धिअप तिर्यंगासु, तिर्यग्गति याग संस्थान आर संहपन तिर्यग्गतिमायाग्यानुपूर्वी,
उद्योत अग्रहास्तविहायोगति दुर्मग दुल्हर ममात्तय और नीचगेन इनअ देवोंमें
उद्गामाय हामसे बन्ध और उद्गयक पूर्व या पश्चात् ग्युच्छेत्त होलकी परीक्षा नहीं की
जाती ।

अनन्तानुबन्धिअतुण्ण और क्रीवेइ स्त्रोत्रय-परोत्रयसे तथा होय प्रकृतिवों परे-
इचसे ही वंघती है । स्वातयुद्धिअप अनन्तानुबन्धिअतुण्ण और तिर्यंगासुअ निरन्तर बन्ध
होता है । होय प्रकृतिवोंअ सात्तय बन्ध होता है क्योंकि एक समयमें उनके बन्धका
विग्राम पाया जाता है ।

ईश्वर—कदाचित् दो तीन समयोंके कामसे संघट्ट बन्धके देखे असेसे
सात्तय निरन्तर बन्ध क्यों नहीं कहते ?

समाधान—यहाँ कहते क्योंकि इन प्रकृतिवोंमें निरन्तर बन्धके विषयमें
अभाव है ।

इस प्रकृतिवाक्य प्रत्यय देवगतिवों अतुस्थानिक प्रकृतिवाक्य प्रत्ययोंके समान हैं ।
विशेषता केवक यह है कि तिर्यंगासुके पूर्वोक्त प्रत्ययोंमें वैकिकिकमिअ और काम्य प्रत्ययोंको
कम करना चाहिये । तिर्यंगासु तिर्यग्गति तिर्यग्गतिमायाग्यानुपूर्वी और उद्योत इनअ तिर्य-
ग्गतिसे संयुक्त तथा होय प्रकृतिवोंके मिच्छावादि अ सात्तयसम्पदादि तिर्यग्मासी और
मनुष्यगतितसे संयुक्त बाँधते हैं क्योंकि इसमें कोई बिरोध नहीं है । देव स्वामी हैं । बन्धायत्तल

गिदितिय-अगतापुर्वधिचउक्कज्जे' मिच्छाइद्विहि चठमिहो वधो । सासणे दुविहो, अणादि
वुवत्तामावाधो । अयमेवाण पयइणे वधा सादि-अदुवा, मदुवपधित्थणे ।

मिच्छत्त णवुमयवेद-एइदियजादि-हुठसठाण-अमपत्तसेवट्टसघ-
ढण-आत्ताव-यावरणामाण को वधो को अवधो ? ॥ ८१ ॥

सुगम ।

मिच्छाइटी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ८२ ॥

एदस्स अन्धो बुधेद — मिच्छत्तस्स वधोदया सम वाच्छिज्जेति, मिच्छाइद्विहि वध
तदुमयमुवर्त्तमि उअरि तदपुवत्तमाणा । णवुमयवद एइदियजादि-हुठसठाण अमपत्तसेवट्टमं
इण आदाय यावरणमेत्थुइयामावाणे वधात्थ्याणं पुण्यापुण्योच्छ्रयपरिकत्ता व कसिदे । मिच्छत्तं
मादएण, अणाआ पयइओ पगेइएणव पज्जति, तहोवत्तमादा । मिच्छत्त गित्तर वज्जइ,
वुवपधित्थणा । अवराओ मानं पज्जति, एगममाणं पवुवरमुवत्तमादा । एत्थमि पन्थया

धीर वधपविनयस्याप्त सुगम है । स्थानगृह्णित्य भाग भनस्तानुवधियचमुक्कज्ज मिध्यादि
गुणस्थानमें वार्गे प्रक्षारक वध होता है । सामान्य गुणस्थानमें ही प्रक्षारक वध होता
है क्योंकि वही धनार्थी धीर भव पश्यता समाप्त है । शय प्रकृतियोंका वध नादि व
अधप होता है क्योंकि व अधपवध्नी प्रकृतियों हैं ।

मिध्यात्व, नपुंसकवद, एकत्रिय जानि, हुण्डसुस्थान, अमप्राप्तपुण्यक्रियमहनन,
आताप और त्याग नामकमोक्ष कर्तन पथक और कर्तन अपथक है ? ॥ ८१ ॥

यद सूत्र सुगम है ।

मिध्यादि वधक है । य वधक है, शय वध अवधक है ॥ ८२ ॥

इतथा मय कटन है— मिध्यावध वध भाग उद्व दानों नागमें स्पुच्छिज
हान है क्योंकि, मिध्यादि गुणस्थानमें ही मिध्यावध वध भाग उद्व दानों पाप जान
है ऊपर व नहीं पाप जान । नपुंसकवेद एकत्रिय जानि हुण्डसुस्थान अमप्राप्तपुण्यक्रिय-
महनन आताप धीर त्यागर इत उद्व वधा वही समाप्त हानम वध भाग उद्व व पूव
या पश्चात् स्पुच्छिज्ज परीक्षा नहीं की जाती । मिध्यावध प्रकृति व्यावयव और अन्य
प्रकृतियों पश्यवत्त ही वधनी है क्योंकि, वेसा पापा जाता है । मिध्यावध प्रकृति निरन्तर
वधनी है क्योंकि, पुववध्नी है । अन्य प्रकृतियों आतत वधनी है क्योंकि, एक समयमें

देवचतुष्टायपयद्विपञ्चयतुष्टय । मिच्छत-वतसवेद-हुङ्संठण-भसंपसेवहुंसंपडजापि तिरिक्ख-
मणुसगाइसंठण, एइंदियजादि आदाव-बावराणि तिरिक्खगाइसंठणं भव्वति, सामाविपादो ।
देवा सामी । बंनद्धापं बंनविनद्धठणं च सुगमं । मिच्छतस्स पपो वतप्पिहो, पुव्वंविच्छरो ।
सेवाय सादि भदुवो, भदुववंपिच्छादो ।

मणुस्ताउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ ८३ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी अमजदसम्माइट्ठी वधा । एदे
बंधा, अवसेसा अवधा ॥ ८४ ॥

यदस्स भवो वुप्पदे— इवेसु मणुस्ताउअस्स उइयामावादां बपाइयाण पुब्बावर
वोप्पेइपरिक्खा नत्थि । परोदण्णं वंवेति, मणुस्ताउअस्स इवेसु उदयमानविरोइण ।
मिंतरो वंधो, एगसमएण वंधुकरमानावादां । मिच्छदिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असमइमम्मा
दिट्ठिं अइकमेव पंचास पंधेवात्थिस [एडेवात्थिस] पण्णया, सम-सयोगपण्णयसु बोअत्थि-

अनक्य बन्धविधाय पाप्मा जाता है । इस प्रकृतिवर्द्धि प्रत्यक्ष देवोंकी वस्तुस्थानिक प्रकृतिबोध
प्रत्ययोंके समान है । मिष्प्यात्थं ननुमककं हुङ्संठणं और भसंमप्राप्तसुपादिकसंठणं
य तिर्यग्माति च मणुप्पगतिस्स संयुक्त तथा एकेभिन्नपञ्चासि आताप और स्वावर, ये तिर्य
ग्गतिस संयुक्त बंधती हैं क्योंकि, पन्ना स्वभाव है । देव स्वामी हैं । बन्धाज्जाल और बन्ध-
विनष्टस्थान सुगम है । मिष्प्यात्थं बन्ध द्वारा प्रसार होता है क्योंकि, वह सुबबन्धी है ।
यह प्रकृतिबोधा बन्ध साति च मणुव होता है क्योंकि, ये मणुवबन्धी हैं ।

मनुष्यायुक्क केन बन्धक भौं केन अबन्धक हे ? ॥ ८३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिष्पाएट्ठि, सासाइनसम्मएट्ठि और असंयतसम्मएट्ठि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, सेव
देव अबन्धक हैं ॥ ८४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— देवोंमें मनुष्यायुक्क उद्भव व हासस पूर्व या पश्चात्
बन्धोद्भवयुक्कउद्भव परीक्षा नहीं है । मनुष्यायुक्के परोक्षपक्ष बांधते हैं क्योंकि देवोंमें
मनुष्यायुक्के उद्भवका विरोध है । बन्ध उसका निरन्तर होता है क्योंकि एक समयमें
बन्धविधायक समान है । मिष्पाएट्ठि, सासाइनसम्मएट्ठि और असंयतसम्मएट्ठि
देवोंक पक्षक्रममें पञ्चास पंधाईस [और इच्छाईस] प्रत्यक्ष इति हैं क्योंकि, अपने अपने
बोधप्रत्ययोंमें यहाँ धीनारिक, धीनारिकमिध्र वैधिमिध्रमिध्र कार्यक और ननुसकमेव

जेतास्सिमिस्सन्वेठम्मियमिस्स-कम्मइय-वाउंमयवेदपञ्चयाणमभावाद्दो । मणुसगहमंहुत्तं । देवा
सामी । वंधद्वान् वंधाभावद्वान् च सुगमं । सम्मामिच्छत्तगुणेण जीवा किम्प मरति ? तन्पाठमस्म
पथामावादो । मा वंधत आठम, पुण्ड्रमण्यगुणद्वान्मिह आठमं पथिय पन्छ सम्मामिच्छत्तं
पडिवम्मिय तेज गुणेण पूण क्खत्तं करेदि ? ज, जेण गुणेणाउबंधो समवदि तेजेव गुणेण
मरदि, ज अण्णगुणेजेति परमगुरूखदेसादो । ज उवसामगेहि अजेयंतो, सम्मत्तगुणेण आठम
वधविरोहिणा पिस्सरणे विरोहामावादो । सादि मद्दुखो पथो, मद्दुवपंथितादो ।

तित्ययरणामकम्मस्स को वधो को अवधो ? ॥ ८५ ॥

सुगम ।

असजदमम्माइट्ठी वधा । एदे वधा, अवमेसा अवधा ॥ ८६ ॥

सम्यथोका अभाव है । मनुष्यापुत्र मनुष्यगतिस्स संयुक्त बांधत है । वध स्वामी है ।
वन्धवारान् और वन्धविनष्टस्थान सुगम है ।

शुक्र—सम्यग्निध्यात्वं गुणस्थानकं साध जीव क्यों नहीं मरत ?

समाधान—भूँति इस गुणस्थानमें आयुक्त वन्धका अभाव है अतएव जीव यहाँ
मरत नहीं करत ।

शुक्र—यहाँ आयुवन्ध भस् हो न हा फिर भी पहिल भग्न गुणस्थानमें आयुको
बांधकर और पश्चात् सम्यग्निध्यात्वंक प्रान्तकर उस गुणस्थानक साध तो निश्चयतः मरण
कर सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि जिस गुणस्थानक साध आयुवन्ध सम्मय है उसी
गुणस्थानक साध जीव मरता है भग्न गुणस्थानक साध नहीं परा परमगुरुक उपदेश है ।

इस नियममें उपशामकोंक साध भूमिकांतिक रूप भी सम्मय नहीं है क्योंकि,
आयुवन्धके विरोधी सम्यक्त्वगुणक साध निश्चयमें कोई विरोध नहीं है । (वक्तो
जीवस्थान-वृत्तिका ९, सूत्र १३० की टीका) ।

मनुष्यापुत्र वन्ध सादि व अमृष होता है क्योंकि, यह अमृषवन्धी है ।

तीर्थकर नामकमक फेन बांधक और फेन अबांधक है ? ॥ ८५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अमंपतसम्पगट्ठि देव वन्धक है । ये बांधक हैं, जेव देव अबांधक है ॥ ८६ ॥

१ प्रतिपु आठमविध इति वाउ ।

२ अस्सीं वदेसीं । वा वन्धो वदवन्धो इति वाउ ।

देवचतुष्टयमपविष्ययत्तुह । मिच्छत-जठंस्त्यवेद-मुंडसंस्त्य-वसपत्तेवहसंषडपाणि तिरिक्ष-
मजुसगसंस्त्य, परादियवादि-आशय-वावराणि तिरिक्षगाइसंस्त्य वक्षंति, स्याद्विवादो ।
देवा सामी । वंशद्वयं वंशविजहृद्वयं च सुगम । मिच्छतस्तु वंधो वउत्विहो, पुवपविहो ।
समार्षं सारि भद्रो, अद्रुवबंधितादो ।

मणुस्साठमस्म को वंधो को अवधो ? ॥ ८३ ॥

सुगमं ।

मिच्छाद्विष्टी सासणसम्माद्विष्टी अमजदसम्माद्विष्टी वधा । एद
बंधा, अवसेसा अवधा ॥ ८४ ॥

एदस्म वत्थां वुच्छदे— देवेषु मणुस्साठमस्म उदयामावादो वधादयान पुम्भार
वोम्भेरपरिक्षा जत्ति । परादयण वंधेति, मणुस्साठमस्म देवेषु उदयमानविरोहलो ।
निरंतरा वंधो, एगममय वंधुवरमामावादो । मिच्छाद्विष्टि सासणसम्माद्विष्टि-असंभरसम्मा-
द्विष्टिं जहृकमेज पंधास पंधेताविस [एहेताविस] पच्छया, सग-समोपपच्छयसु ओरात्ति-

उक्तं वक्ष्यविधाय पाया जाता है । इन प्रकृतियोंके प्रत्यय देवोंकी वस्तुस्थानिक प्रकृतियोंके
प्रत्ययोंके समान हैं । मिच्छात्वं मनुष्यकक्षे वृद्धसंख्याय और असंप्राप्तसुपाधिकसंज्ञन
व नियमगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त गया एकस्त्रिकजाति भाताप और स्वावर, ये तिर्य-
गगतिसे संयुक्त बंधती हैं क्योंकि ऐसा समझा है । देव स्वामी है । वक्ष्याध्यान और वक्ष्य-
विजयस्थान सुगम है । मिच्छात्वंका वक्ष्य वारों प्रकार होता है क्योंकि, वह वृक्षवर्णी है ।
यार प्रकृतियोंका वक्ष्य सारि व मज्जुव जाता है क्योंकि ये मज्जुवर्णी हैं ।

मनुष्यायुक्त कैन वन्धक और कैन अपन्धक है ? ॥ ८३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिच्छाद्विष्टि, सामादनसम्परद्विष्टि और अमंयनसम्परद्विष्टि वन्धक हैं । ये वन्धक हैं, क्षा
देव अपन्धक है ॥ ८४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— देवोंमें मनुष्यायुक्त उदय न जानस पूव वा पश्चात्
वक्ष्यावक्ष्यकक्षकी परीक्षा नहीं है । मनुष्यायुक्त परीक्षणसे बांधत हैं क्योंकि, देवोंमें
मनुष्यायुक्त उदयका विराध है । वक्ष्य उक्तका निरन्तर होता है क्योंकि एक समयमें
वक्ष्यविधायका समझा है । मिच्छाद्विष्टि, सामादनसम्परद्विष्टि और अमंयनसम्परद्विष्टि
देवोंका वधाक्रमम पश्चात् ईतासीम [और इकनासीस] प्रत्यय होते हैं क्योंकि जपने भरणे
ओचयत्पर्यंमें यहाँ धौरारिक, धीर्द्वीरकमिध बंधियिकमिध कामेज और मनुष्यकक्षे

मात्रादो । पंचिदिय-तसण्णामाओ मिच्छादिद्विदि सांतरं बन्धु, एइदिय-यावरपडिवक्खपयडीपं संमवाओ । मनुसगइ-मणुसगइपाओगाणुपुब्बीओ मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्विओ सांतरं पंथति । आरात्मियसरीरअंगोवंगं मिच्छादिद्विओ सातरं पंथति । एतो भेदो सतो वि ण कहिओ । एवविधं भेदं संतमकअंतम्मं क्व सुसमाओ ण फिट्ठे ? ण एस दोसो, देसामासियसुत्तेसु एवंविहमावाविरोहाओ ।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवाण देवभगो ॥ ८८ ॥

एदस्स ब्रह्मो—जवा देवोवम्मि सव्वपयडीओ परुविदामो तहा एत्थ वि परुवे-इत्थाओ । एदमप्पणसुत्तं देसामासियं, तेज्जेण सुइदयो उच्चदे—पंचिदिय-तसण्णामाओ मिच्छादिद्वि देवोवम्मि सांतर-णितंतरं पंथति, सणक्कुमारादिसु एइदिय-यावरपंधामावेण विरं तरबवोक्खमाओ । एत्थ पुण सांतरमेव पंथति, पडिवक्खपयडिमाव' पडुच्च एगसमएण

और ब्रह्म नामकम मिच्छादिद्वि गुणस्थानमें सात्तर बांधते हैं क्योंकि, उक्त देवोंके इस गुणस्थानमें एकेन्द्रिय जाति भीर स्थावर रूप प्रतिपक्ष प्रकृतियोंकी सम्भावना है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायाग्यामुपूर्वीका मिच्छादिद्वि ष सासणसम्यग्गदि सात्तर बांधते हैं । औदारिकशरीरतंगोपांगको मिच्छादिद्वि सात्तर बांधते हैं । यद्यपि ब्रह्ममात्र प्रकृतिभेदक साथ यह भेद भी है तथापि देशामर्शक होनेसे यह सूत्रमें नहीं कहा गया ।

शुद्ध—इस प्रकारके भेदक होनेपर भी उक्त न करनेवासे पाक्यका सूत्रत्व क्यों नहीं नष्ट होता ?

समाधान—यह कहा था नहीं क्योंकि, वनामशक सूत्रोंमें इस प्रकारके स्वरूपका कार्य विरोध नहीं है ।

सौभर्म व इज्ञान कल्पवामी देवोंकी प्ररूपणा सानान्य दयोंके समान है ॥ ८८ ॥

इस सूत्रका अर्थ—जिन प्रकार नामात्म्य देवोंमें सब प्रकृतियोंकी प्ररूपणा की गई है उन्ही प्रकार यहां भी प्ररूपणा करता चाहिये । यह प्ररणामूम देशामर्शक है इसलिये इसके द्वारा सूचित अर्थको कहते हैं—पंचन्द्रिय जाति भीर वस नामकमका मिच्छादिद्वि देश देवाओंमें सात्तर निरन्तर बांधते हैं क्योंकि सनक्कुमारादि देवोंमें एकेन्द्रिय और स्थावर प्रकृतियोंके सम्पन्न अभाय हान्य निरन्तर बन्ध पाया जाता है । परन्तु यहां उन्हे सात्तर ही बांधते हैं क्योंकि प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके सम्भावकी अपेक्षा करके

एतन् भवोदयबोधोदयविचारो नृत्तिः, उदयामावाहो । तेनैव करमेव^१ परोक्षं बन्धः ।
 भिन्नतो तिरस्करभयो, एतत्समप्यं बहुवरमात्रादो । दंसपविमुञ्चदा-स्त्रिदिसवेगसम्परा-
 नरुद्विहसिय-बहुसुद-प्रयपममतीजो तिरस्करकम्मस्य विमेषपञ्चया । सेस सुयमं । मनुसा
 संतुष्टो भवो । देवा समी । बंधद्वानं सुगमं । एतत् पधविजामो नृत्तिः । सादि-भद्रुवो भवो,
 नृत्तिदि धुवमात्रेण भवद्विदकरमात्रादो ।

भवनवासिय-वाणवैतर जोदिसियदेवाण देवभगो । नवरी
 विसेसो तित्ययरं नृत्ति ॥ ८७ ॥

एतेन सुतेन देसामासिएण 'तित्ययर नृत्ति' ति बन्धमात्रपयडिभेदो वेव
 परुविदो पुहसुप्पारणा^१ । समवउरममंउण उवपात्-परपाद उम्मात्त-पत्तेयसरि-यमत्त्वविद्या
 मदि-सुत्तरनामाभो अमंउदसम्मादिदिमिदि सोदणमेव बन्धंति । वेठधियमिस्स कम्मइवपञ्चया
 नसंबदसम्मादिदिमिदि अवबेदय्वा, भवनवासिय वाणवैतर-जोदिसिएसु सम्मादिद्वीजमुववादा-

यहां तीर्थंकर नामकर्मक बन्धोदयव्यञ्जकका विचार नहीं है क्योंकि यहाँमें
 इसका उदयक अभाव है । इसी कारण वह परोक्षसे बंधती है । तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध
 निरुत्तर होता है क्योंकि एक समयमें इसका बन्धविधायकता अभाव है । यहीनिबुद्धता,
 मन्विष्यवेगसम्पन्नता अरुह्यतमकि भावार्थमकि बहुभुतमकि और प्रवचनमकि व
 तीर्थंकर कर्मक विहाय प्रत्यय है (जो सूत्र ४१ में विस्तारमें कहा जा चुके है) ।
 शेष प्रत्यय सुयम है । मनुष्यगणिस संयुक्त बन्ध होता है । इस स्वामी है । बन्धप्राप्त
 सुयम है । यहां बन्धविनाश नहीं है । सादि व भद्रुव बन्ध होता है क्योंकि अनादि व
 सुव रूपसे अवशिष्ट रहनेके कारणोंका अभाव है ।

भवनवासी, नानम्यन्तर और ज्योतिषी दोनोंकी प्ररूपका सामान्य दोनोंक समान है ।
 विक्षेपता केवल यह है कि इन दोनोंके तीर्थंकर प्रकृतिक बन्ध नहीं होता ॥ ८७ ॥

इस वेद्यामर्शक सूत्रके द्वारा तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध नहीं हाना इस पूर्व
 उच्चारणासे केवल बन्धमाम प्रकृतियोंका मेव ही कहा गया है । समवउरममंउपाव
 वपवात् परपात् उच्चावात् मत्तेयसादीर, प्रकृतिविहायामति और सुत्तर नामक
 अर्त्तवत्तसम्पन्नादि गुणस्वात्ममें श्लोदयसे ही बंधते हैं । वैदिकिकमिभ और कर्मिक
 प्रत्ययोंको अर्त्तवत्तसम्पन्नादि गुणस्वात्ममें कम करमा चाहिये क्योंकि, भवनवासी
 वाक्यम्यन्तर और ज्योतिषी दोनोंमें सम्पन्नादिबोधो उत्पत्तिका अभाव है । पंचमित्रय ज्ञाति

१ क-नृत्तिवो नृत्तिन नृत्तिवो नृत्तिवो इति पाठ ।

२ मरुद्विह नृत्ति इतिवर ॥ यो क १११ मिनहीनो ज्ञातु अवन-जो न कर्मज १ ११

३ मदि पदपञ्चमपात् इति पाठ ।

मावाधो । पंचिदिय-तसणामाओ मिच्छादिट्ठिम्हि सांतरं पन्हाइ, एइंदिय-भावरपडिवक्खपयडीर्णं संभवाधो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गणुपुव्वीओ मिच्छादिट्ठि-मासणसम्मादिट्ठिओ सांतरं वंपंति । आणसियसरीरभंगोवंग मिच्छाइट्ठिओ सांतरं वंपंति । एसो भेदो सतो वि म कइदो । एवंविधं भेदं संसमकइतस्स कथं सुत्तमाओ न पिट्ठे ? न एस दोसो, देमामासियसुत्तेसु एवंविहमावाधिरोहाधो ।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवाण देवभगो ॥ ८८ ॥

एदस्स अत्थो— जथा देवोपमि सम्पपयडीओ परुविदाओ तइ एत्थं वि परुवे वप्पाओ । एदमप्पणामुत्तं देमामासियं, तेषेदेण सुइदत्थो उच्चदे— पंचिदिय-तसणामाओ मिच्छाइट्ठि देवोपमि सांतरं भिरंतं वचति, सणक्कुमारदिसु एइंदिय-भावरसंपामावेण भिरं तरसंपोवठमाधो । एत्थं पुणं सांतरमेव वंपंति, पडिवक्खपयडिभार्यं पट्ठस्स एगसमएण

भीरं भनं मामकमं मिच्छादृष्टिं शुणस्वानमं साग्नरं वचते इं कयोकि उक्तं द्योकि इत्थं शुणस्वानमं एकेन्द्रियं ज्ञातिं भीरं स्वापरं कयं प्रतिपत्तं महनिषोक्कीं सम्माचला इ । मनुष्यगतिं भीरं मनुष्यगतिप्रायागवागुपूर्वाकरं मिच्छादृष्टिं व सामावत्तसम्पदृष्टिं साग्नरं वचते इ । आवागिकशरीराणाणांका मिच्छादृष्टिं साग्नरं वचते इ । यद्यपि बन्धमानं महनिमक्कं सायं यहं भवति इत्थं तथापि दशमशाकं दानेसं यहं सूचमं महीं कहा गया ।

शुक्र—इत्थं प्रकारकं भवति हामपरं भी उक्तं म कइतं पाद पाकयकां मृत्तव कयो महीं तथं हाता ।

समाधान—यहं कइतं दानं महीं जयाकि दशमशाकं सूचामं इत्थं प्रकारके मृत्तवकं कारं विरांथ महीं इ ।

मौपमं व इत्थं कप्पवामी देवोक्कीं प्ररूपणां सामान्यं द्योकिं ममानं इ ॥ ८८ ॥

इत्थं मृत्तवकं अर्थ— अत्र प्रकारं सामान्यं द्योकिं मयं महनिषोक्कीं प्ररूपणां वी गरी इ उम्मी प्रकारं यहाँ भी प्ररूपणां वचनां ग्राहिय । यहं अर्थणाम्बु दशमशाकं इ इत्थं मयं इत्थं द्वारा मृत्तवकं अर्थको कहत इ— पंचन्द्रियं ज्ञातिं भीरं भनं मामकमंका मिच्छादृष्टिं व देवापमं स्वागतं मिग्नरं वचते इ कयोकि मन्त्रमुमारादि द्योकिं एकेन्द्रियं भीरं स्वापरं महनिषोक्कं बन्धकं भमापं हान्तं मिग्नरं वचं पाया जाता इ । परम्बु यहाँ उम्मी साग्नरं वी वचते इ कयोकि, प्रतिपत्तं महनिषोक्कं मृत्तवकं भवता करक

ननु चरमं संपादो । मिच्छादिद्वि-सात्तपसम्मादिद्विषो मज्झसंगहदुगं देवोपमि सांतर-वित्तं
 नपंति, सुक्कल्लेस्सिएसु मज्झसंगहदुगस्स विरंतरनपदसंपादो । एत्थ पुन सांतरः नपंति,
 मज्झसंगहदुगविरंतरनपककरणामावात्तो । बोराळियसत्तिरनंगोवरं देवोपमि-मिच्छाद्वी संज
 विरंतरं नपंति, सक्कल्लुमारदिसु विरंतरनपुवळमादो । एत्थ पुन सांतरमेव, नावरनपकल्ले
 नंगोवंगस्स नवामावात्तो चि ।

सणस्कृमारप्यद्भुदि जाव सदर-सहस्तरकप्यवासियदेवाण पढ
माए पुढवीए णेरइयाण भगो ॥ ८९ ॥

[illegible]

एक समयसे बन्धविधायक देखा जाता है। मिथ्यादृष्टि और साक्षात्बसम्बन्धि मनुष्यगतिद्विकल्प दोषोंमें साम्प्रत निरन्तर बांधते हैं, क्योंकि, शुक्लछेद्यावातमें मनुष्यगतिद्विकल्प निरन्तर बन्ध देखा जाता है। परन्तु यहाँ साम्प्रत बांधते हैं क्योंकि मनुष्यगतिद्विकल्प निरन्तर बन्धके कारणोंका भ्रमाव है। औद्योगिकघातीयमोपायका दोषोपमे मिथ्यादृष्टि साम्प्रत निरन्तर बांधते हैं क्योंकि सनत्सुमापत्ति दोषों निरन्तर बन्ध पाया जाता है। परन्तु यहाँ साम्प्रत ही बांधते हैं क्योंकि, स्यात्बन्धकायमें भागीप्राप्तका बन्ध नहीं होता।

सनत्कुमारसे लेकर क्षतार-साइसर तक कल्पवासी देवोंकी प्ररूपणा प्रथम शशिपुर्की नाकियोंके समान है ॥ ८९ ॥

विशेष इतना है कि यहाँ पुरुषकेन्द्रका स्वीकृति बन्ध होता है क्योंकि अन्ध
 वेदक उद्देश्य अभाव है। नपुंसकपदका प्रथम पृथिवीमें स्वीकृति बन्ध होता है। परन्तु
 यहाँ उभय परादपस बन्ध होता है। प्रत्यक्षमें नपुंसकपदको श्रीकृष्ण साधन बन कर
 आदि। नासात्मसम्प्राप्ति शुभस्थानमें यहाँ वैधिविधमिध और कर्म बन्धनोंको
 जोड़ना चाहिये क्योंकि नारदी सासात्मसम्प्राप्तिमें उभय अभाव है। नासा
 नदकाग्न्यवासी वैश्वोमिधमिध और नासात्मसम्प्राप्ति मनुष्यमतिद्विकको उत्तर-
 निरुत्तर बाँधते हैं क्योंकि, उन कर्मोंमें भुक्मवेदवाचन वैश्वोमिध मनुष्यमतिद्विकको

वचामावासे ।

आणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेषु पचणाणावरणीय
छदसणावरणीय-सादासाद-चारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-
दुगुछा-मणुसगइ-पच्चिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-सम-
चउरससंठण-ओरालियसरीरअगोवग-वच्चरिसहसघटण-वण्ण-गध-रस-
फास मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद उस्ताम-
पसत्थविहायगइ-तस-वादर पच्चत्त-पत्तेयसरीर यिरायिर-सुहासुह सुमग-
सुस्सर आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति णिमिण पचतराहयाण को वधो
को अवधो ? ॥ ९० ॥

सुगममेव ।

मिच्छाइट्ठिण्हुडि जाव असजदसम्मादिट्ठी वधा । एदे वधा,
अयधा णत्थि ॥ ९१ ॥

एवेष सुहदत्थे भणिस्यामो— मणुसगइ-ओरालियमरीगंगोत्तंग-वच्चरिसहसपटण

छादकर निर्वर्गगतिष्ठिकके वन्धक अभाव है ।

ज्ञानत कल्पसे लेकर नव प्रवेयक तक विमानवाप्ती देवमें पांच ज्ञानावरणीय, छद
दर्शनावरणीय, साता व असाता बन्दीय, चारइ कथाय, पुरसवेद, हास्स, रति, मय, दुगुप्सा,
मनुष्यमति, पंचन्मिय ज्ञाति, औदारिक, तेअस व कामण शरीर, ममचतुरससस्यान, औदारिक
अरीरगोपांग, वज्रधममंइनन, वण, गन्ध, रस, स्पृश, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुत्तु,
उपपात, परपात, उप्पवाम, प्रशस्तविहायोगति, वस, वादर, पर्याप्त, प्रत्यकअरीर, स्थिर,
अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमग, सुस्वर, आदेय, यशकित्ति, अयशकित्ति, निमाण और पांच
अन्तराय, इनका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ९० ॥

यह सब सुगम है ।

मिप्पाद्येहिमे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक वन्धक है । ये वन्धक हैं, अवन्धक नहीं
हैं ॥ ९१ ॥

इस सूत्रके द्वारा सूचित अर्थोंको कहते हैं—मनुष्यगति औदारिकअरीरगोपांग,

मनुष्यानुपूर्वी-अवसकिचीणमुदयामावाहो सेसपयदीन उदययोच्छेदामावाहो च वेवेदयनं
पञ्चम-अवेच्छेदपरिक्खा न करिरे ।

पञ्चपात्रावरणीय चतुर्दशपात्रावरणीय-पुरिसवेद-पंचिदियजादि-तेजा-कम्मवयसरी-पञ्च-
गण रम-अस्र अगुणवल्गुव-सस-बादर-पञ्च-बिराबिर-सुमासुम-सुमा-अदेव-असकिचि-मिमि
उवायेद-पंचतरायइयां सोदएजेव वेवो, धुवोदयच्छेदो । निहा-पयस-सारासादे-बारसकसो
हस रवि-अरि-सोग-मय-दुगुण-सोदय-परोदएण ववो, अदुवोदयच्छेदो । समचतरससक-
उवपाद परपाद-उस्स-पस-पिहायग-पयेयसरी-मुस्सरपामाभो मिच्छाद्वि-सासवसम्मा-
द्वि-असंबदसम्मादिद्विमां सोदय परदएण ववति । सम्मामिच्छाद्विमां सोदएजेव ववेति,
तेसिमप-असकसमावाहो । मनुमग-ओराळियसरी-ओराळियसरीजगोषग-पञ्चरिसइसंपद-
मनुष्यानुपूर्वी-अवसकिचीणं परोदएजेव वेवो, इवेसु एदसिं ववोदयामवकस्सेव उचि-
चिरेहो ।

पञ्चपात्रावरणीय-चतुर्दशपात्रावरणीय-बारसकसाय-मय-दुगुण-मनुमग-पंचिदियजादि-

अवसंभजन मनुष्यानुपूर्वी भीर अयशकीर्ति इत्येव उच्यते तथा शेष
प्रकृतियों के उद्भवपुच्छेत्वा अभाय हतेने पहां पञ्च भीर उच्यते पूर्व या पश्चात् पुच्छेत्
इत्येव परीक्षा नहीं करी जाती है ।

पांच ब्रह्मावरणीय चार वीरनावरणीय पुरुषयवेद पञ्चमित्र आति तेजस व
कर्मण शरीर, वरं गन्ध रस स्पर्श अगुणवल्गु, अस वायु, पर्षात् स्थिर, अस्थिर,
शुभ अशुभ सुमग भार्य पशुकीर्ति निर्माण उच्छयो वीर पांच अस्तराय इव
स्वावयव ही बन्ध होता है क्योंकि ये प्रवृत्तियों हैं । मित्रा प्रवृत्ता सत्ता
व असत्ता वही पञ्च बारह कथाय हास्य एति मरति शौर मय भीर अगुणा इत्येव
स्वावयव परोदयनं बन्ध होता है क्योंकि, ये अगुणोदयी प्रकृतियां हैं । समचतुरासंस्थान
उपपात परपात उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति प्रत्येकशरीर जीव सुस्वर नामकर्मो
मिच्छाद्वि, सासवसम्माद्वि मां भसवतमम्माद्वि स्तोदय परोदयस ववेति ।
पञ्चमित्राद्वि इय स्तोदयनं ही ववेति है क्योंकि, उनके अपर्षात्स्वावयव अभावे ।
मनुष्यगति वीरारिजशरीर वीरारिजशरीरायापाग अजर्जरसंभजन मनुष्यानुपूर्वी
भीर अयशकीर्ति परोदयस ही बन्ध होता है क्योंकि, वेवोम इव प्रकृतियोंके बन्ध
भीर उच्यते एव साय अस्तिरज्ज्वा विरोध है ।

पांच ब्रह्मावरणीय चार वीरनावरणीय बारह कथाय मय अगुणा मनुष्यगति,

ओरात्तिप-तेजा-कम्मइयसरी ओरात्तिपसरीर-अंगोवंग-बण्ण-गघ-रम-फ़स-ममुमगइपाभोगाणु-
पुम्भी-अगुरुअल्लुअ उवघात्-परघाद् उम्माम-त्तम-यात्-पन्नत्-पत्तयसरीर-निमिण-पचत्ताइयाण
गिरतेरा वंभो, एरय धुवधचित्तादा । सादत्तात्-इम्म-रदि-अरदि-माग-धिगधिर सुमामुम-अम
कित्ति-अजसकिछीण मन्तिगे, एगममण्ण पंधविरामदमणादा । पुगिसयत् समचउग्ममअण-धम्मिरे
सहमधइण-पसत्पविहायगद्-सुमग-मुम्मर ओ-हुच्चागाणाणि मिच्छाणि-मायणसुग्मादिद्विणो
सुन्तरे वधति, एगममण्ण वधविगमुवत्तभादा । सुम्मामिच्छादिद्वि असज्जदमग्मादिद्विणो गिरंतेर
वधति, पड्वित्तपयईण पधामायादा ।

एदामि पण्णया देवाधपच्चयतुत्त । जवरि मज्ज-य इत्थिवेदपच्चओ अवणेदब्बो ।
मध्ये सप्ताभो पयडीभो मणुमगइसज्जते पधति, अण्णगईण पधामाताओ । देवा मामी ।
पधदाम पंधविणइणाण य सुगम । पचणाणावरणीय छदसणावरणीय चारसफ़माय मय
दुगुंअ-तेजा कम्मइयसरीर यण्ण-गघ-रम फ़स-अगुरुअल्लुअ-उवघाद्-निमिण पंधतराइयाण
मिच्छाइन्दि पठध्विहा वंधो । अण्णरय तिविहा, धुवामाताओ । अयमेमाण पयडीण पधा
मज्जगुणइणेषु सादि अद्भवो, अद्भवधित्ताओ ।

पेपम्पिअकालि भौत्तारिक नज्जम य कामण दारीर भौत्तारिक-नरीत्तागापांग वण गग्घ रम
रगई मनुप्यगतिमायम्यानुपूर्वी अगुरुअल्लु उवघात् परघाद् उप्पूषाम ग्रन् पादुर पयाम
ग्रन्थकदातीर निमाण भौर पांथ अण्णराय इमका निरम्तर वग्घ हाता ह कयोकि यहाँ
य प्रहृत्तयो प्रयत्न्यो हैं । माला य ममाला वेदनीय हास्य गति भरति दाक स्थिर
मस्थिर सुम अमुम यदादीनि भौर मयणाकीनि इमका माल्तर वग्घ हाता है कयोकि
एक समयम इमका वग्घधियमान देखा जाता है । पुग्गयेद् समयतुरत्तमेस्थाम यज्जम
महात्त प्रदात्तविहायागति सुमग सुम्पर मात्तय भौर उवघात् इमका मिध्याददि
एवं सामाज्यममग्घाददि माल्तर बांधत है कयोकि एक समयम इमका वग्घधियमान
पाया जाता है । मययमिध्याददि भौर समयतमग्घाददि इहें निरम्तर बांधत है कयोकि
उनक प्रतिपत्त प्रहृत्तयोकि वग्घका ममाय है ।

इम प्रहृत्तयोके मयय इयाय मययोकि समान है । पिण्यता वधम इतनी ह कि
मव जगद स्त्रीयद् मययका कम वग्घा थाइय । उक्त मय इय मय प्रहृत्तयोका
मनुप्यगतिम संयुक्त बांधत है कयोकि उनक मय गतियोके वग्घका ममाय है । इय
स्यामी है । वग्घाज्जान भौर वग्घविमएस्थान सुगम है । पांथ मालावरणीय छद हाता
वरणीय चारह कयाय मय अगुंअ नज्जम य कामण दारीर, वण गग्घ रम रग
अगुरुअल्लु उवघात् निमाण भौर पांथ अण्णराय इमका मिध्याददि गुलक्कात्तमे थारो
प्रकारका वग्घ होता है । मयय गति प्रवाक्ता वग्घ हाता ह कयोकि यहाँ मयवग्घका
ममाय है । एव प्रहृत्तयोका वग्घ मय गुलक्कात्तमे मालि य मयुय हाता है कयोकि
वे मयुयवग्घी है ।

णिहाणिहा-पयलापयला-धीणगिद्धि अणताणुबधिकोप-मात्र-
माया-लोम-हृत्विवेद-चउसठाण-चउसघडण अप्पसत्यविहायगइ-दुमग-
दुस्सर अणादेज्ज-णीचागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ १२ ॥

सुगम ।

मिच्छाहृष्टी सासणसम्माहृष्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा
॥ १३ ॥

एदस्स अरथो सुवचरे—अणताणुबधिकउत्कलस्य वधोदया समं वोच्छिन्नंनि,
सम्पन्नमि तदुमयवोच्छेदमवाधो । अवससाण वधोदयवाच्छेदपरिकम्पा मस्यि, तस्मिन्नि-
दयाभावात् । अणताणुबधिकउत्कलस्य सादय-परोदण वधो, अदुबोदयवधो । अवसेसाण
पयडीण परोदणवधेव, एतन्नामि वधेपुदयस्य अवद्वन्द्वविरोधात् । धीणगिद्धित्व-अपेक्षात्
वधिवत्कलस्य निरंतरा वधा, पुनर्वधित्ववधो । सेमात्र सांतरो, एवमप्यत्र वधविरामोदयवधो ।
पञ्चपाणं सहस्रसारमंग्र । सपे सन्ध्यामो पयडीओ मनुसगाइमहत्वं वधेति । देवा सप्ती ।
वधद्वयं वधविजृम्भकं च सुगमं । धीणगिद्धित्व-अणताणुबधिकउत्कलस्य मिच्छाहृष्टिस्स

निद्रानिद्रा प्रचलप्रचल, स्थानगुद्धि, अनन्ताणुबन्धी वध, मान, माया, लोम,
व्यतिरेक, चार संस्थान, चार मदनन, अशुभविहाययोगति, दुमग, दुस्सर, अनादय और
नीचगोत्र, इनका कौन वधक और कौन अवधक है ? ॥ १२ ॥

यह सब सुगम है ।

मिच्छापथि और सासणसम्पन्नपथि वधक हैं । ये वधक हैं, सेव द्य अवधक
हैं ॥ १३ ॥

इसका अर्थ कहत हैं—अणताणुबधिकउत्कलस्य वध और अवध दोनों साथ
व्युत्थित होते हैं क्योंकि सासाण गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युत्प्रेक्ष्य देखा जाता है ।
राय प्रकृतिपथि वधोदयव्युत्प्रेक्ष्य ही परीक्षा नहीं है क्योंकि, वहाँ उनके उद्भवका
अभाव है । अनन्ताणुबधिकउत्कलस्य वधोदयपरवधसं वध होता है क्योंकि,
व मनुष्योदयी है । राय प्रकृतिपथि वध परोदयसं ही होता है क्योंकि वहाँ उनके
वधक माय उद्भवक अवस्थावध विरोध है । स्थानगुद्धिप्रव और अनन्ताणुबधिक
उत्कलस्य निरन्तर वध होता है क्योंकि वृद्धवन्धी है । होय प्रकृतिपथि वध
होता है क्योंकि, एक समयसे उनका वधविधायक देखा जाता है । प्रत्ययप्रकृति
देवोंका समाप्त है । इतना सब देख सब प्रकृतिपथि मनुष्यगतिसे संयुक्त पायेते हैं । हेम
स्वामी हैं । वधप्रज्ञान और वधविमलहस्याव सुगम है । स्थानगुद्धिप्रव और अनन्ताणु

पठयिहो बंधो । बभस्य इविहो, बभसि-धुवामावसाहो । सेसापं पयडीगं सादि-अदुहो,
अदुवधपिचाहो ।

मिच्छत्त-गवुसयवेद-हुडसठाण-असपत्तसेवट्टमघडणणामाण को
वधो को अवधो ? ॥ १४ ॥

सुगमं ।

मिच्छाहट्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १५ ॥

पदस्स बत्थो सुभेदे— मिच्छत्तस्स बधोदया सम घोष्मिज्जति, मिच्छाहट्टिन्दि
तदुममामावदसणहो । अवसेसापं बधोदयवोष्मदपरिक्खा पालि, एत्थेयंतेपेद्रासिमुदयामावाहो ।
मिच्छत्तं सोदण्ण बम्भइ । कुदो ? सामावियाहो । अवसेसाभो पयडीमो परोदण्ण । मिच्छत्तं
भिरत्तरं बम्भइ, धुवधपिचाहो । अवसेसाभो सांतरमदुवधपिचाहो । पच्छया सहस्सारपचयतुह्य ।
मणुमगाइसुत्तं बन्धति । देवा सामी । बंधद्वारं बधविजह्वाण च सुगम । मिच्छत्तस्स बंधो

बन्धितुच्छका मिष्याद्यष्टि चारो प्रकारका बन्ध होता है । अग्न्यश्च वा प्रकारका बन्ध
होता है क्योंकि वहाँ अनादि और ध्रुव बन्धका समाव है । शेष प्रकृतिपोंका साक्षि
च अग्न्यश्च बन्ध होता है क्योंकि, ये अग्न्यश्चबन्धी प्रकृतियां हैं ।

मिष्यात्त्व, नपुंसकवेद, हुण्डर्सस्यान और भर्तृप्राप्तमुपाटिक्रसंहनन नामकमौल्य
कौन बन्धक और कौन बन्धक है ? ॥ १४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिष्याद्यष्टि बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष देव बन्धक हैं ॥ १५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— मिष्यात्त्वका बन्ध और उदय होमों साय ध्युष्मिज्ज
हाते हैं क्योंकि, मिष्याद्यष्टि शुभस्यानमें उन शक्तोंका समाव देखा जाता है । शेष
प्रकृतिपोंके बन्धोदयध्युष्मोदकी परीक्षा नहीं है क्योंकि, वहाँ मिथमस इनके उदयका
समाव है । मिष्यात्त्व प्रकृति स्वोदयसे बंधती है । इनका कारण स्वभाव है । शेष
प्रकृतियां परोदयसे बंधती हैं । मिष्यात्त्व प्रकृति निरन्तर बंधती है क्योंकि ध्रुवबन्धी
है । शेष प्रकृतियां सांतर बंधती हैं क्योंकि, ये अग्न्यश्चबन्धी हैं । प्रत्ययप्रकरण साहकार
वेबोंके प्रसंगोंके समान है । मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । देव स्वामी हैं । बन्धाध्यान
और बन्धीविजहस्यान सुगम है । मिष्यात्त्वका बन्ध चारों प्रकारका हाता है क्योंकि,

णिहाणिहा-पयलापयला-धीनगिद्धि अणताणुबधिकोप-मान-
माया-लोभ इत्यिवेद-चउसठाण-चउसघडण अप्ससत्यविहायगड-दुमग-
दुस्तर अणादेज्ज-णीचागोदाण को उधो को अणधो ? ॥ १२ ॥

सुगम ।

मिच्छाहृटी सामगमम्माहृटी वधा । एदे वधा, अवसेमा अवधा
॥ १३ ॥

एदस्स भस्सो पुच्छेदे—अणताणुबधिकोपकस्य बधोदवा समं वोच्छिम्भंति,
सामगमि नदुमयवोच्छेदसमाधो । अवसमाव बधोदयवोच्छेदपरिभन्ना वप्ति, ताम्मिणु-
दयमावधो । अणताणुबधिकोपकस्य सादय-परोदण वधा, भद्रवोदयसाधो । अवसेसाय
पयडीव परोदणैव, एत्थ तामि बधेपुडयस्य अवद्वान्निरोहरो । धीनगिद्धितिव-अणताणु-
बधिकोपकस्य निरंतरा बधो, धुवबधिको । सेमाव सांतेरो, एगसमएव बधविग्रहसमाधो ।
पप्पयानं सहससारमंगा । सयं सप्पाभो पयडीओ मज्जुमगइसंहुत्तं वधति । इवा समी ।
वधद्वानं वधविग्रहद्वान य सुगमं । धीनगिद्धितिव-अणताणुबधिकोपकस्य मिच्छाहृटिस्स

निगानिहा प्रवत्प्रवत्स, स्थानगुद्धि, अनन्ताणुबन्धी बध, मान, माया, लोभ,
र्यावद, चार संस्थान, चार मेहनन, अग्रसमविहायोगति, दुर्मग, दुस्तर, अनारय और
नीचमोत्र, इनका कौन बन्धक और कौन अवधक है ? ॥ १२ ॥

यह सब सुगम है ।

मिष्पाधि और मासादनमम्यधि बन्धक है । ये बन्धक हैं, उन दस अवन्धक
हैं ॥ १३ ॥

इसका अर्थ कहत हैं—अणताणुबधिकोपकस्य बन्ध और उद्वह दोनों साथ
पुच्छिष्ठ हात हैं क्योंकि, साक्षात्त गुणस्थानमें उन दोनोंका पुच्छेद होता जाता है ।
शाय प्रकृतिपोक बन्धोदयपुच्छेदकी परीक्षा नहीं है क्योंकि, यहाँ उनके उदयका
अभाव है । अनन्ताणुबधिकोपकस्य बन्धोदय परावृत्त बन्ध होता है क्योंकि,
य प्रवोदकी है । शाय प्रकृतिपोक बन्ध परोदयस ही होता है क्योंकि, यहाँ उनके
बन्धक साथ उदयक अवस्थानका विरोध है । स्थानगुद्धिबध और अनन्ताणुबन्धि
बन्धक निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि प्रवबन्धी है । शाय प्रकृतिपोक सान्तर बन्ध
होता है क्योंकि, एक समयसे उनका बन्धविग्रह होता जाता है । प्रत्ययप्रकृति सहाकार
केबन्धि समाप्त है । उक्त सब दस प्रकृतिपोक प्रतुप्यपत्तिसे संयुक्त पावते हैं । वेत
स्वामी हैं । बन्धान्तर और बन्धविग्रहस्वाय सुगम हैं । स्वान्तरगुद्धिबध-और अनन्ताणु

पठविहो बंधो । भण्यम्ब दुविहो, वगादि-धुवामावत्तादो' । सेसाय पयडीय सादि-भद्रुवो, भद्रुवबधिसादो ।

मिच्छत-णवुसयवेद-हुडसठाण-असपत्तसेवट्टमघडणणोमाण को वधो को अवधो ? ॥ १४ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १५ ॥

एदस्स अरयो सुबेद— मिच्छत्तम्म बंधोदया समं वोच्छिञ्चति, मिच्छाहट्टिहि तट्टमयामावर्दसणादो । अवसेसारं वधोदयवोच्छेदपरिक्खा गत्थि, एत्थेयतेपेदासिमुदयामावादो । मिच्छत्तं सोदण्ण वच्छह । कुदो ? सामावियादो । अवसेसाओ पयडीमो परोदण्ण । मिच्छत्तं पितरं वच्छह, धुवबधिसादो । अवसेसाओ सांतरमद्रुवबधिसादो । पण्णया सहस्सरपययत्तुत्त । ममुमगाहसमुत्तं वच्छति । देवा मामी । बंधट्ठाणं वधविणट्टट्ठाणं च सुगम । मिच्छत्तम्म बंधो

वधिवधगुण्डका मिध्याहट्टिकु वारो प्रकरका वध होता है । मन्थत्र को प्रकरका वध होता है क्योंकि, वहाँ ममादि और ध्रुव वधका समाप है । शेष प्रकृतियोंका सादि व भद्रुव वध होता है क्योंकि वे भद्रुवबध्नी प्रकृतियाँ हैं ।

मिध्यात्व, नपुमकवेद, हुडसस्यान और असंप्राप्तवृत्ताधिकमहनन नामकमोका कैम वन्धक और कैम वधन्धक हैं ॥ १४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिध्याहट्टि वन्धक है । ये वधक हैं, येप देव वधन्धक हैं ॥ १५ ॥

इम सूत्रका अर्थ कहत हैं— मिध्यात्वका वध और उदय होमो साध ध्युच्छिन्न हात हैं क्योंकि, मिध्याहट्टि गुणस्थानमें उन वानोका समाप देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंके वधोदयध्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है क्योंकि, वहाँ नियमम इनके उदयका समाप है । मिध्यात्व प्रकृति स्वादपत्त वधती है । इसका कारण स्वभाव है । शेष प्रकृतियाँ परोदयमे वधती हैं । मिध्यात्व प्रकृति निरन्तर वधती है क्योंकि, ध्रुवबध्नी है । शेष प्रकृतियाँ सांतर वधती हैं क्योंकि, वे भद्रुवबध्नी हैं । प्रत्ययप्रकरण सहकार्य वेपकि प्रत्ययोंके समान हैं । मद्रुप्यगतिसे संयुक्त बांधन हैं । देव स्वामी हैं । वध्यात्मान और वधविणट्टट्ठाण सुगम हैं । मिध्यात्वका वध वारो प्रकरका हाता है क्योंकि,

वदन्तिहो, ब्रह्मविद्याहो । ससाय सादि-ब्रह्महो, ब्रह्मवर्षविद्याहो ।

मणुस्साउअस्स को वधो को अवंधो ? ॥ ९६ ॥

सुगमं ।

मिच्छाहृष्टी सासणसम्माहृष्टी असंजदसम्माहृष्टी वधा । एवे
बंधा, अवसेसा अवधा ॥ ९७ ॥

एदस्स बरयो—बोधोदयार्थं बोधोदयपरिक्रिया एव्यं बन्धि, उदयमात्राहो । परोदय
बन्धो, बंधुदयस्स एव्यं अवध्तावविरोधाहो । विरततो बंधो, एगसमएव बंधुवर्षमात्राहो ।
मिच्छाहृष्टिस्स एगुजवचास, सासणस्स वउएत्तालीस, असंजदसम्माहृष्टिस्स बालीस पण्यया ।
मणुसगइसहृषं । देवा सामी । बंध्यायं बंधविजहृष्टाय व सुगमं । सादि-ब्रह्महो बंधो,
ब्रह्मवर्षविद्याहो ।

तित्थयरणामकम्मस्स को वधो को अवंधो ? ॥ ९८ ॥

सुगमं ।

ब्रह्मवर्षी है । शेष प्रकृतिपौका सति व अमुक बन्ध होता है क्योंकि, वे अमुकवर्षी हैं ।

मनुष्यायुक्क कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ९९ ॥

यह सब सुगम है ।

मिप्पायि, सासादनसम्पगदि और असंपतसम्पगदि बन्धक हैं । वे बन्धक हैं,
शेष देव अवन्धक हैं ॥ ९७ ॥

इसका अर्थ—बन्ध और उदयकं व्युच्छेदकी परीक्षा यहां नहीं है क्योंकि,
मनुष्यायुके उदयका बंधोमं समाप्त है । वह परोदयसे बंधती है क्योंकि, यहां उसके
बन्धक साथ उदयकं अवस्थानका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक
समयसे उसके बन्धविधायक समाप्त है । मिप्पायिसे उर्मकास सासादनसम्पगदिक
बन्धासीस और असंपतसम्पगदिके बालीस प्रत्यय होता है । मनुष्यगणसे संयुक्त बन्ध
होता है । देव स्वामी हैं । बन्धाप्यान और बन्धयितसम्पान सुगम है । सति व अमुक
बन्ध होता है क्योंकि, वह अमुकवर्षी प्रकृति है ।

तीवकर नामकर्मक कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ९८ ॥

यह सब सुगम है ।

असजदसम्मादिट्ठी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ ९९ ॥

एदस्सरा बुन्धदे— बंधोदयाणं बोधोदविचारो णत्थि, सतासंताप सत्पिपास विरोहदो । परोदएण बंधो, सञ्चत्य तित्थपरकम्मबंधोदयाणमनन्तमेण उच्चिरोहदो । विरंतरो बंधो, संखेज्जावलिआदिकस्सेण विआ एगसमएण बंधुवरमाभावादो । एदस्स पन्चपा देवोप पन्थयतुह । उत्तरोत्तरपन्थया पुण भरहवाहरिय-बहुसुद-पवमणमत्ति-अदिसंवेगसंपत्ति-रसव विमुद्धि-पवमणप्पहावणादो । मणुसगससुत्तो बंधो । देवा सामी । धवद्दार्ग बंधविणहद्दार्ग प सुगमं । सादि मद्धो बंधो, मद्धवधितादो ।

अशुदिस जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु पचणाणावरणीय छदसणावरणीय-सादासाद-धारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग भय दुगुछा-मणुस्साउ-मणुसगइ-पांचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसह-संघढण-वण्ण-गध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-

असंयतसम्यग्दृष्टि बन्धक है । ये बन्धक हैं, सेव देव बन्धक है ॥ ९९ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— बन्ध और उदयके व्युत्पत्त्य विचार यहां नहीं है क्योंकि सत् और असत् बन्धोदयकी समानताका विरोध है । परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, सर्वत्र तीर्थंकर कर्मके बन्ध और उदयक एक साथ रहनेका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, संप्र्याप्त भावही भावि काष्ठके बिना एक समयसे उसके बन्धविघ्नानका समाध है । इसके प्रत्यय द्वयोप प्रत्ययोंक समान हैं । परन्तु इसके उत्तरोत्तर प्रत्यय भरहवाहरिय भावापमत्ति बहुभुतमत्ति प्रवचनमत्ति सत्पिपेयसम्यग्दृष्टि दशमविमुद्धि और प्रवचनप्रमापमत्ति हैं । अनुप्यगतिसे संयुक्त इसका बन्ध होता है । एव स्वामी हैं । यन्पाखान और बन्धविमलस्थान सुगम हैं । सादि-अशुद बन्ध होता है क्योंकि, यह अशुदबन्धी प्रवृत्ति है ।

अशुदियोसे ठेकर सवार्थसिद्धि तकके विमानगामी देवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, सत्ता व असत्ता वेदनीय, बारह कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, रुगुप्ता, मनुष्यायु, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, ओराकि, वैजस व कर्मण धर्म, समचतुराष्टसंस्थान, औदारिक-अभिर्लोपांम, बज्रपेमसहनन, धर्म, गन्ध, रस, स्पर्श,

बडपिहो, सुवर्षिच्छो । सैसारं सारि-अदुवो, अदुवपिच्छो ।

मणुस्ताउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ ९६ ॥

सुगमं ।

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी असजदसम्माहट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ ९७ ॥

एहस्स अत्थो—बंधोदयार्ण बोधेरपरिक्खा एत्थ पत्ति, सद्धवामावाहो । परोएण बज्झइ, बिज्झइयस्स एत्थ बज्झणविरोहादो । भित्तये बंधो, एगसमएण बंधुवरमामावाहो । मिच्छाहट्ठिस्स एगुणवचास, सासणस्स चउएत्थीस्स, असंजदसम्मादिट्ठिस्स चात्थीस्स पण्णया । मणुसगइसंहरं । देवा सामी । बंधद्वानं बंधविपट्टहाय च सुगमं । सारि-अदुवो बंधो, अदुवबंधिच्छो ।

तित्थयरणामकम्मस्स को वधो को अवधो ? ॥ ९८ ॥

सुगमं ।

ब्रह्मचर्या है । होय प्रकृतियोंका सारि च मनुष्य बन्ध होता है, क्योंकि, ये ब्रह्मचर्या हैं ।

मनुष्यामुख्य कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ९६ ॥

यह सत्य सुगम है ।

मिष्याधि, सासादनसम्यग्धि और असंयतसम्यग्धि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं ॥ ९७ ॥

इसका अर्थ—बन्ध और उदयक ध्युच्छंखकी परीक्षा वहां नहीं है क्योंकि, मनुष्यायुके बन्धक देवीमें समाप्त है । वह परोक्षमे वधती है क्योंकि, वहां उसके बन्धके साथ उदयके अवस्थामका विरोध है । मिरत्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे उसके बन्धविधामका समाप्त है । मिष्याधिके वर्जवास सासादनसम्यग्धिके ब्रह्मचर्य और असंयतसम्यग्धिके चात्थीस प्रत्यय होत हैं । मनुष्यगतिस्स संयुक्त बन्ध होता है । देव सामी हैं । बन्धाप्याव और बन्धविनष्टस्याव सुगम हैं । सारि च मनुष्य बन्ध होता है क्योंकि, वह ब्रह्मचर्या प्रकृति है ।

वीथकर नामकर्मकर कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ९८ ॥

यह सत्य सुगम है ।

पान्सकस्याय-हस्त-रदि-सोग-मय-दुग्ध-मय सोदय-परोदयण बंधो, अद्भुतोदयत्वादो । परपादुत्सास-
पसत्त्वविहायगह-सुस्तराणं सोदय-परोदयण बंधो, अपञ्चसकृते उदयामावे वि बंधुबलमादो ।
समचतरससंयुज्जपाद-यत्तेयसरीराणं पि सोदय-परोदयण बंधो, विगहगदीए उदयामावे वि
बंधदसमादो । मनुसाउ-मनुसगह-भोरात्त्रियसरीर-भोरात्त्रियसरीरभंगोबंग-वन्जरिसहसंयुज्ज-
मनुस्सगहपाभोमाणुपुष्पी-अजसकिप्पि-तित्थयराण परोदयण बंधो, एत्वेदासिमुदयामात्वादो ।

पंचपात्रावरणीय-स्रग्दसपात्रणीय-वारसकस्याय-पुरिसवेद-मय-दुग्ध-मय-मनुसाउ मनुसगह
पर्विदियआदि-भोरात्त्रिय-नेजा-कम्माइयसरीर-समचतरससंयुज्ज-भोरात्त्रियसरीरभंगोबंग-वन्जरिसह-
संयुज्ज-वज्ज-गध-रस-यत्तस-मनुसगहपाभोमाणुपुष्पि-अगुरुवत्तुप-उवपाद-परपाद-उत्सास-
पसत्त्वविहायगह-त्तस-बादर-पञ्चच-यत्तेयसरीर सुभग-सुस्सर-भादेन्न-पिमिण-तित्थयरुद्धातोद-
पधंतराइयाण भिरंतरो बंधो, एवासिमेवासमएण बहुवरमात्वादो । सादत्साद-हस्त-रदि-अरदि
सोग-पिराभिर-सुहासुह-असकिप्पि-अजसकिप्पीण सांतरो बंधो, एगसमएण बहुवरमादो ।

बेहनीय बारह कपाय हास्य रति शोक, मय भीरु दुग्धका स्वेदय-परोदयसे बन्ध
होता है क्योंकि, ये अद्भुतोदयी प्रकृतिर्पा है । परपात उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति
भीरु सुस्वरका स्वेदय-परोदयसे बन्ध होता है क्योंकि, अपर्पातकायमें उदयका अभाव
होनेपर भी इनका बन्ध पाया जाता है । समचतुरस्रसंस्थान उपपात भीरु मत्थेकशरीरका
भी स्वेदय-परोदयसे बन्ध होता है क्योंकि, विग्रहगतिमें उदयके अभावेक हासपर भी
बन्ध देका जाता है । मनुष्याय मनुष्यगति औदारिकशरीर, औदारिकशरीरगोपाय
बद्धर्ममसंहनन मनुष्यगतिमायोम्यानुपूर्वी अयशकीर्ति भीरु तीर्थकरका परोदयसे बन्ध
होता है क्योंकि यहाँ इनके उदयका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय छह वर्धनावरणीय बारह कपाय पुरुषबह मय दुग्धका
मनुष्याय मनुष्यगति ऐवेत्त्रिय आति औदारिक तैजस व कर्मण शरीर, समचतुरस्र
संस्थान औदारिकशरीरगोपाय बद्धर्ममसंहनन वर्ध गन्ध रस स्पर्श मनुष्यगति
मायोम्यानुपूर्वी अगुरुवत्तु, उपपात परपात उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति अत बादर,
पर्पात मत्थेकशरीर, सुभग सुस्वर, भादेय निर्माण तीर्थकर, उच्छ्वासा भीरु पांच
अन्तराय इनका विरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, इनके एक समयसे बन्धविधायका
अभाव है । साता व असाता बेहनीय हास्य रति अरति, शोक, स्थिर अस्थिर, ध्रुम
अध्रुम यशकीर्ति भीरु अयशकीर्ति इनका सान्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे
इनका बन्धविधाय है ।

उवघाद-परघाद उस्तास-पसत्यविहायगह-तस घादर-पञ्जत-पत्तेयसरीर
 यिरायिर-सुहासुह-सुमग-सुस्तर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति
 णिमिण-तित्ययर उन्चागोद पंचतराहयाण को वधो को अबधो ?
 ॥ १०० ॥

सुगम ।

असंजदसम्पादिट्ठी वधा, अयधा णत्थि ॥ १०१ ॥

एहस्स अत्थो पक्खिन्वदे— मणुसाउ-मणुसगइ भोरत्थियसरीर भोरत्थियसरीरंभोभंग-
 वन्नरिसइसंबडण-मणुसगइपाभोगाणुपुप्पी-अजसकित्ति-तित्ययराय उदयामावाहो अबसेमाणं
 प पयडीणमुदयभोप्पेदामावाहो 'पंचाहो उदयस्स किं पुणं किं वा पण्ण भोप्पेहो हो' ति
 एत्थ परिकखा पत्थि ।

पंचपायावरणीय-चतुस्रपाकरणीय-गुरिसवेद-पंचिन्द्रियत्राहि-तेजा-कम्माइमसरि-वण-
 मेध-रस-फ़स-अगुरुमलदुग्ध-तस-वाहर-पन्धस-भिराभिर-सुहासुह-सुमगादेज्ज-असकित्ति-
 विमिसुच्चागोद-पंचतराहयाणं सोदभो बंधो, एत्थ पुत्रोदयत्ताहो । निरा-पयत्त सदासाह

मनुष्यगतिप्राप्तोन्मात्रपूर्वी, अगुरुमल, उपपात, परपात, उपप्लास, प्रसस्ताविहायोमति, तस,
 वाहर, पर्याप्त, प्रत्येकसरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमग, सुस्तर, आदेय, यसकित्ति,
 अजसकित्ति, निर्माण, तीक्ष्ण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका क्षेत्र बन्धक और
 क्षेत्र बन्धक है ? ॥ १०० ॥

यह सुख सुगम है ।

असंयतसम्पत्ति बन्धक है, बन्धक नहीं है ॥ १०१ ॥

इसके अर्थकी प्रकल्पना करते हैं— मनुष्यायु, मनुष्यगति जीवार्थिकशरीर,
 जीवार्थिकशरीरानुपांग चतुर्वर्गसंज्ञक मनुष्यगतिप्राप्तोन्मात्रपूर्वी अयहाकीर्ति और
 तीक्ष्ण, इनके उच्चपाद समाप्त होनेसे तथा शेष मंडितियोंके उच्चपादोच्चपाद समाप्त
 होनेसे बन्धसे उच्चपाद क्या पूर्वमे वा क्या पश्चात् भुज्येह होता है इस प्रकारकी
 यहाँ परीक्षा नहीं है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार चतुर्पाकरणीय पुरुषवेद पंचिन्द्रियत्राहि तैजस व
 कार्यम शरीर, सर्व सम्पत्त रस स्पर्श अगुरुमल, तस वाहर, पर्याप्त स्थिर, अस्थिर,
 शुभ अशुभ सुमग, आदेय यसाकीर्ति निर्माण उच्चगोत्र और पांच अन्तराय इनका
 क्षेत्रोप क्षेत्र होता है क्योंकि ये यहाँ भुज्येयी हैं । निरा प्रकटा साता व अज्ञाता

पात्सकसाय-हृस्स-रदि-सोग-मय-हुगुंछा-मोदय-परोदय-बंघो, अरुबोदय-मोदो । परपाहुस्सास-
पसत्यविहायगह-सुस्सर-मोदय-परोदय-बंघो, अपन्त्रतन्त्रे उदयामावे वि बंधुवर्त्मनादो ।
समचतरसंस्रम्वपाद-पत्तेयसरीराण पि मोदय-परोदय-बंघो, विग्वहगदीए उदयामावे वि
बंधसंपादो । मणुसाठ-मणुसगह-ओरात्मियसरीर-ओरात्मियसरीर-अंगोवय-वन्त्ररिसहसंधरण
मणुस्यगहपाभोग्गाजुपुष्पी-अवसक्ति-तित्वयराज परोदय-बंघो, एत्थेदासिमुदयामावादा ।

पचपाणावरणीय-अदसपावरणीय-वारसकसाय-पुरिसवेद-मय-हुगुंछा-मणुसाठ मणुसगह
पंषिदिय-आदि-ओरात्मिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचतरसंस्रम्व-ओरात्मियसरीर-अंगोवय-वन्त्ररिसह-
संधरण-वन्त्र-मंघ-रस-पन्नस-मणुसमहपाभोग्गाजुपुष्पि मणुसुवत्तुव-उवपाद-परपाद-उस्सास-
पसत्यविहायगह तस-वाटर-पन्त्रत-पत्तेयसरीर मुमग-सुस्सर-आदेज-पिमिण-तित्वयराजगोद-
पंषतराहपाणं विरंतरो बघो, एदासिमगसमएण बंधुवरमामावादो । सादासाद-हृस्स-रदि-अरदि
सोग-विशमिर-मुहासुह-असक्ति-अवसक्ति-संतरो बंघो, एसमएण बंधुवरमामावादो ।

बेवनीय, पाण्ड कपाय हास्य रति शोक मय और हुगुप्ताका स्थाय-परोदयसे बन्ध
होता है क्योंकि, वे मणुबाह्यी प्रकृतियां हैं । परमात उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति
और सुस्वरका स्थाय-परोदयसे बन्ध होता है क्योंकि, मणुपांशकात्म्यं उच्छ्वास अमात्र
होनेपर भी हमका बन्ध पाया जाता है । समचतुरकसंस्थान उपमात और प्रत्येकशरीरका
भी स्थाय-परोदयसे बन्ध होता है क्योंकि, विमहगतिमें उच्छ्वास अमात्रके होनेपर भी
बन्ध देखा जाता है । मनुष्याय मनुष्यगति औदारिकशरीर, औदारिकशरीर-गोपांग
वत्सर्पमसंहनन मनुष्यगतिमायोग्यानुपूर्वी मणुशकीर्ति और तीर्थकरका परोदयसे बन्ध
होता है क्योंकि, यहां इनके उच्छ्वास अमात्र है ।

पांच ज्ञानावरणीय छह दर्शनावरणीय पाण्ड कपाय पुरुषवेद मय हुगुप्ता
मनुष्याय, मनुष्यगति पंचेन्द्रिय जाति औदारिक, वैजस व कामज शरीर, समचतुरक-
संस्थान औदारिकशरीर-गोपांग वत्सर्पमसंहनन बर्ष गन्ध रस स्पर्श मनुष्यगति
मायोग्यानुपूर्वी मणुशकीर्ति, उपमात परमात उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति वस वादर,
पर्याप्त प्रत्येकशरीर, मुमग सुस्वर, आदेय निर्माण तीर्थकर, उच्छ्वास और पांच
अन्तराय इनका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, इनका एक समयसे बन्धविधायका
अमात्र है । साता व असाता बेवनीय हास्य रति अरति शोक, स्थिर अस्थिर, शुभ
अशुभ यशस्कीर्ति और अयशस्कीर्ति इनका सात्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे
इनका बन्धविधायक है ।

उवधाद-परधाद उस्सास-पसत्यविहायगह-सम वादर-यज्जत-पतेयसरीर
यिरायिर-सुहासुह-सुमग-सुस्तर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति
णिमिण-तित्थयर उच्चागोद पचतराइयाण को बधो को अवधो ?
॥ १०० ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिट्ठी वंधा, अवधा णत्थि ॥ १०१ ॥

एदस्स अत्थो परुविस्मये— मनुसाठ-मनुसागइ ओरात्थियसरीर-ओरात्थियसरीरभंगोत्तम-
वज्जरिसइसंपहम-मनुसागइपाओम्मात्तुपुम्भी-अजसकित्ति-तित्थयरत्थं उदयायात्ताओ वज्जेत्थये
अ पयडीअमुदययोत्थेयमात्ताओ 'वज्जाओ उदयस्स किं पुम्भं किं वा पप्पम वोत्थेदो होदि' वि
एत्थ परिकखा णत्थि ।

पंचपञ्चावरणीय-वत्तइसपावरणीय-पुरिसकेइ-पंचिदियज्जाति-तेजा-कम्मवसरीर-वज्ज-
यंभ-रस-फस्स-अगुस्सत्तुज-तस-वावर-पञ्चत-यिरायिर-सुहासुह-सुमगाइअ-जसकित्ति-
णिमिणुच्चागोद-पंचतराइयाण सोदओ वंधो, एत्थ पुत्रोदयघाओ । विहा-ययत्थ सादासअ

मनुष्यगतिप्राप्तोम्मात्तुपूर्णी, अगुस्सत्तु, उपपात, परपात, उप्पत्ताम, प्रशस्तविहायोगति, व्रत,
वावर, पर्णात, प्रलेकअरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमम, सुस्तर, आदेय, यज्जकित्ति,
अजसकित्ति, निमान, तीर्णकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन कन्धक और
कौन अवन्धक है ? ॥ १०० ॥

बह सज सुगम है ।

असंयतसम्पगट्ठि वन्धक हैं, अवन्धक नहीं हैं ॥ १०१ ॥

इसके अर्थकी प्रकृषणा करते हैं— मनुष्यायु, मनुष्यगति जीवन्मुक्तादी,
औरारिकशरीरोंगोपांग वज्जर्पमसंहनन मनुष्यगतिप्राप्तोम्मात्तुपूर्णी अजसकित्ति और
तीर्णकर, इनके अवन्धक जमाव होमेसे तथा होय प्रकृतियोंके अवपप्पुत्थेयका जमाव
होमेसे वज्जेत्थे अवन्धक क्या पूर्वमे या क्या पश्चात् व्युत्पन्न होता है इस प्रश्नरूपी
यहां परीक्षा नहीं है ।

पांच ज्ञानावरणीय और वरीणावरणीय प्रकृषकेइ पंचिदियज्जाति तेजस व
कम्मव सरीर, वज्ज गज्ज एत एतरी अगुस्सत्तु वत्त वावर, पर्णात स्थिर, अस्थिर,
शुभ अशुभ सुमम, आदेय पञ्चकित्ति निर्माण वज्जगोत्र और पांच अन्तराय इनका
पुत्रोदय जन्म होता है, कर्पोत्ति, ये यहाँ सुचोदयी हैं । विहा प्रकटा साता व अत्ता

मनुस्साठ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियआदि-ओराटिय
 तेजा-कम्मइयसरीर-छसट्ठण-ओराटियसरीरअंगोवग-छसट्ठण-वण्ण गध-रस-फ़स-तिरिक्खगइ-
 मणुस्सगइपाओगाणुपुब्बी-अगुरुवठहुष उवपाइ-परपाइ-उस्सास-आदावुओव-दोविह्वायगइ-तस-
 चावर-बाइर-सुहुम-पउजसापमच पत्तेयसरीर-साइरण-विरायिर-सुहासुइ-सुमग-डुमग-सुस्सर-
 दुस्सर-आदेज-अणदेज-असकिंति-अवसकिंति-गिमिण-पीबुच्चागेइ-पंचंतराइयपयडीओ एत्थ
 चच्छमाणिआओ । एइंदियमस्सिदूण एदासिं पकूवणं कस्सामो— इत्थि-पुरिस्सवेद-मणुस्साठ
 मणुसगइ-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियआदि-अर्धतिमपचसंटाण-ओराटियसरीरअंगोवग-
 छसंघइण-मणुसगइपाओगाणुपुब्बी-दोविह्वायगइ-तस सुमग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज-उच्चागेइपां
 उदयामावदो सेसाप्पुइयवोच्छेदामावदो ' उदयदो वधो किं पुब्बं वोच्छिम्मादि किं पच्छ
 वोच्छिम्मादि ' ति विचारो वत्थि, संतासताण सण्णियासविरोह्वादो ।

पंचपाप्पावरणीय-चउरसुपावरणीय मिच्छत्त-अणुसयवेद-तिरिक्खाठ-तिरिक्खयइ-एइ
 दियआदि-तेजाकम्मइयसरीर-वण्ण गध-रस-फ़स अगुरुवठहुग-चावर-विरायिर-सुहासुइ-डुमग

मनुप्पायु, तिर्धमाति मनुप्पगति एकेन्द्रिय त्रीन्द्रिय त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय
 जाति औदारिक सैजस व कर्मज शरीर, छह संस्थान औदारिकशरीरतंगोपांग छह संस्थान
 बर्ण गन्ध रस स्पर्श, तिर्धगतिमायोग्यानुपूर्वी मनुप्पगतिमायोग्यानुपूर्वी, अगुरुवठहु
 वपघात परघात उच्छ्वास आताप उपोत दोनो विहायोगतिपां वस स्यावर, बाइर
 सुखम पर्माण्व अपघात, प्रत्येकशरीर, साधारण स्थिर, अस्थिर, शुभ अधुम सुमग
 दुर्मग सुस्वर, दुस्वर, आवेय अमावेय पञ्चाक्षीतिं अयशाक्षीतिं निर्माण बीज व उच्च गोत्र
 और पांच कस्तारय महुतिपां यहाँ वप्यमाम महुतिपां हैं । एकेन्द्रिय जीवका आशय
 करके इनकी प्रकृषया करते हैं— आवेद पुरुषवेद मनुप्पायु मनुप्पगति त्रीन्द्रिय
 त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय जाति अन्तिम संस्थानको छोड़कर पांच संस्थान
 औदारिकशरीरतंगोपांग छह संस्थान मनुप्पगतिमायोग्यानुपूर्वी दो विहायोगतिपां वस
 सुमग सुस्वर, दुस्वर, आवेय और उच्छ्वागोत्र इनके उच्छ्वा अभाव होनेसे तथा दोन
 महुतिपांके कय्यभ्युच्छेदका अभाव होनेसे यहाँ उच्छ्वास वण्ण क्या पूर्वमें ध्युच्छिन्न
 होता है या क्या पश्चात् ध्युच्छिन्न होता है यह विचार महीं है क्योंकि सत् और
 अस्तकी समानताका विरोध है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार इन्द्रावरणीय मिथ्यात्व, नपुंसकवद तिषयायु
 तिर्धगति एकेन्द्रिय जाति सैजस व कर्मज शरीर, बर्ण गन्ध रस स्पर्श, अगुरुवठहु,

एतत्तु सर्वसंज्ञासम्प्राप्तिर्हि हि वाप्यस्तुतिः पञ्चया, ओषध्यापञ्चयसु ओषध्यापञ्चयसु
 ननुसमवेदपञ्चयापञ्चमावाहो । सेसं सुगमं । एतासि पयवीं पञ्चो मनुसमवेदसंज्ञा । देवा
 सामी । पञ्चज्ञानं सुगमं । पञ्चविद्यासो एतत्तुतिः । पञ्चजापान्वरीय-सर्वसंज्ञावरीय वास-
 कसाय-मय-दुग्ध-तैला-कम्प-रस-पत्र-मगु-स्फुट-मृद-ठव-धातु-मिषि-पञ्च-
 तरु-वर्ण-तिविद्वा पञ्चो, पुत्रावावाहो । सेसत्तु पयवीं सावि-अनुवो, अनुवर्णविद्याहो ।

इदियाणुवादेण एहंदिया वादरा सुहृमा पञ्जत्ता अपञ्जत्ता
 बीहदिय-तीहदिय-चउरिंदिय-पञ्जत्ता अपञ्जत्ता पञ्चिंदिय-अपञ्जत्ताणं
 पञ्चिंदियतिरिक्त्व-अपञ्जत्तभंगो ॥ १०२ ॥

एतदप्यजासुत्त देवामासिय, वन्धमानपयवीं संस्थमेवित्तय अवहिरताहो ।
 तथेदेव सुहृदप्यपञ्चवर्ण कस्तामो । त वाह — एतत्तु पञ्चमानपयविभिरेसं कस्तामो ।
 पञ्चजापान्वरीय-अवर्दसपान्वरीय-सावरास्य मिष-सोत्सकसाय-अपञ्चकसाय-तिरिक्त्वा-उ-

यहां सर्वपञ्चसंज्ञासंज्ञा गुणस्थानमें आसीस प्रत्यय होते हैं क्योंकि, ओषध्यापञ्चयसो
 औषधिरिक्त्व, स्त्रीवेद् और ननुसंज्ञावेद् प्रत्ययोंका समाव है । ओष प्रत्ययप्रकरण सुगम
 है । इन प्रकृतियोंका वन्ध मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है । देव स्वामी हैं । वन्ध्यापञ्च सुगम
 है । वन्धविद्या यहाँ है वही । पांच ज्ञानावरीय छह दर्शनावरीय बारह कषाय
 मय अगुप्ता तैलस व कम्पस्य पारीर, वर्ण रस स्पर्श धनुस्फुट, मृदधातु निर्माज
 और पांच धातुताय इनका तीस प्रकरणका वन्ध होता है क्योंकि सुव वन्धका समाव
 है । ओष प्रकृतियोंका सावि व मनुष्य वन्ध होता है क्योंकि, वे मनुष्यवन्धी हैं ।

इन्द्रियमार्गानुसार एकेन्द्रिय, वादर, सुहृ, इनके पर्याप्त व अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय,
 त्रीन्द्रिय, चतुर्न्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त तथा पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्त अथवा प्रकृत्या पञ्चेन्द्रिय
 तिर्यक् अपर्याप्तोंके समान है ॥ १०२ ॥

यह अपर्याप्तपञ्चदेवामर्शक है क्योंकि, वन्धमान प्रकृतियोंकी [१०१] संख्याकी अपेक्षा
 करके धारित है । इसी कारण इसने स्मृति अर्थकी प्रकृत्या करते हैं । वह इस प्रकार
 है— यहाँ पहिले वन्धमान प्रकृतियोंका निर्देश करते हैं । पांच ज्ञानावरीय भी दर्शना-
 वरीय साता व अज्ञाना वेदनीय मिष्यात्व सोलह कषाय भी ओषध्याव तिर्यमाहु,

१ अर्थात् पञ्चैन्द्रियमार्गों अपर्याप्त पञ्चेन्द्रियमार्गों अपर्याप्त वादरी पञ्चेन्द्रियमार्ग-
 पञ्चपात्र । अर्थात् पञ्चेन्द्रियमार्गों अपर्याप्त इति वाद ।

२ अर्थात् अपर्याप्त । अर्थात् अपर्याप्त इति वाद ।

मनुस्साउ-तिरिक्खगइ-मनुसगइ-एइदिय-बीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय पंविंदियवादि-भोरात्तिव
 तेजा-कम्मइयसरीर-ससंयण-भोरात्तिमसरीरअंगोवग-उत्तमइण-वण्ण गंध-रस-फस-तिरिक्खगइ
 मनुस्सगइपाओगाणुपुब्बी-अगुरुवल्लुव-उववाद-परपाद-उत्तसस-आदाबुमोव-दोविहायगइ-तस-
 थावर-वावर-सुहुम-पञ्चपापञ्च पत्तेयसरीर-साहारण विराविर-सुहामुइ-सुमग-हुमग-सुस्सर-
 दुस्सर-आदेज्ज-अपदेज्ज-असकित्ति-अवसकित्ति-मिम्मि-भीसु-चागोद-पंचंताराइयपयीमो एत्थ
 पच्छमापियामो । एइदियमस्सिदण एदासिं पक्खपं कत्तामो— इत्थि-गुरिसवेद-मनुस्साउ
 मनुसगइ-बीइदिय-तीइदिय चउरिंदिय-पंचिंदियवादि-अवतिमपचसंयण-भोरात्तिमसरीरअंगोवग-
 उत्तमइण-मनुसगइपाओगाणुपुब्बी-दोविहायगदि-तस सुमग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-उत्तचागोदार्ण
 उइयामावादो सेसाणमुदयवोप्पेक्षामावादो ' उदयादो वधो किं पुब्बं वोप्पिञ्जदि किं पच्छ
 वोप्पिञ्जदि ' ति विचारो पत्थि, सतासंतार्णं सज्जियासविग्रहादो ।

पंचपागावरणीय-चउदसपावरणीय मिच्छत-मनुसयवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइ
 दियवादि-तेजाकम्मइयसरीर-वण्ण गंध-रस-फस अगुरुवल्लुव-थावर-विराविर-सुहामुइ-हुमग

मनुष्यायु, तिर्यग्गति मनुष्यगति एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय, चतुर्दिन्द्रिय पंचेन्द्रिय
 जाति भौतिक, तीजस व कर्मज शरीर छह संस्थान भौतिकशरीरतंगोपांग छह संहनन,
 वर्ष गण्य रस स्पर्श तिर्यग्गतिप्रायोगानुपूर्वी मनुष्यगतिप्रायोगानुपूर्वी, अगुरुकणु
 वपमात परमात उच्छ्वास आताप लघोत दोमो विहायोगनियां, अस स्यावर, वावर,
 सुहम पर्षात अपर्षात मत्पेक्षशरीर, साधारण स्थिर, अस्थिर, शुभ मधुम सुमग
 हुमग सुस्वर, दुस्वर, आदेय अनदेय पञ्चकीर्ति अवशकीर्ति निर्मोच नीच व उच्च गोन
 और पांच क्खराय प्रकृतिपां यहाँ वर्यमान प्रकृतिपां हैं । एकेन्द्रिय जीवका आत्म्य
 करते इनकी प्रकृतिपां करते हैं—जीवेइ उदयवेइ मनुष्यायु मनुष्यगति द्वीन्द्रिय
 त्रीन्द्रिय चतुर्दिन्द्रिय पंचन्द्रिय जाति अन्तिम संस्थानको छोड़कर पांच संस्थान
 भौतिकशरीरतंगोपांग छह संहनन मनुष्यगतिप्रायोगानुपूर्वी दो विहायोगतिपां अस
 सुमग सुस्वर, दुस्वर आदेय और उच्छ्वागोन इनके उदयवेद समाप्त होनेसे तथा शय
 प्रकृतियोंके उदयव्युच्छेदका समाप्त होनेसे यहाँ उदयसे वर्य क्या पूर्वमें व्युच्छिन्न
 होता है या क्या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है यह विचार नहीं है क्योंकि, सत् और
 असत्की समानताका विरोध है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार वृत्तावरणीय मिथ्यात्व ननुसकवेइ तिथगायु,
 तिर्यग्गति एकेन्द्रिय जाति तीजस व कर्मज शरीर वर्ष गण्य रस स्पर्श, अगुरुकणु,

अपदेन्य-मिमिज-बीजागोद-यंचतराद्यापं सोदभो बंधो, एरथ एरसिं धुसोरसंरुण्यो ।
 सादसाद-सोत्सकसाय-सम्पाकसाय मादाबुन्वाय बादर-मुहुम-पम्पस-अपम्पस-पतेय-सस-
 रम्पसरीर-असक्ति-अनसक्तिपीवं मोदय-परोदयो बंधो, मद्बोधदयसाधो । भोदसिपति-
 हुडसंरुण-उबवादाय पि सोदय-परोदभो बंधो, निगहगदीए उदयामावे नि बंधुसंरुण्यो ।
 तिरिक्खगद्वाभोग्मात्तुपुष्पीए पि सोदय-परोदभो, गद्दिदसतिमु उदयामावे नि बंधुसंरुण्यो ।
 पराहुत्सासापं पि सोदय-परोदभो बंधो, अपम्पसदय उदयामावे नि बंधुसंरुण्यो ।
 अनेमापं परोदभो बंधो, एरथ तामि सप्यो उदयामासाधो ।

पंचपापारणीय-अवदंसगावरणीय मिच्छत-सोत्सकसाय-अय-हुगुंछ-तिरिक्ख-सं-
 स्साउ भोदसिप-सेवा-कम्मइयमरीर-बन्ध-यंच-रस-पस-अगुलगतहुग-उबपाद-मिमिज-यंच-र-
 इयापं भित्तो बंधो, एरसमएय अगुवरमावावहो । सादासाद-सत्तयोकसाय-अगुसम-पुंरि-
 पीरिदिय-पीरिदिय-अउरिदिय-यंचिदिय-अदि-असेरुण-भोदसिपसरीर-अंगोत्तम-असंरुण-अगुस-

स्वावर, स्थिर, अस्थिर, हुम अहुम हुमंय अनतेय निर्माण नीलपोद नीर पांच
 मन्तराय इनका स्वेत्य बन्ध होता है क्योंकि इनका भुय वक्ष्य देखा जाता है ।
 साता व असाता वेदनीय सोदइ कयाय छह मोकपाय आताय उघात बादर,
 एरथ पर्याप्त अपर्याप्त प्रत्येक, सात्वारय घटीर, यहाकीर्ति नीर अचहाकीर्ति इनका
 लाय परोदय बन्ध होता है क्योंकि ये मनुबोधपी मङ्कटिया हैं । भौदरिक्खारीर,
 हुडसंरुण नीर उपपातका भी स्वेत्यपरोदय बन्ध होता है क्योंकि, विग्रहगतिमें
 इनके उदयका अभाव होनेपर भी बन्ध पाया जाता है । तिर्यग्गतिमात्तुपुष्पीका भी
 स्वेत्यपरोदय बन्ध होता है, क्योंकि, त्रिज बीर्त्तोंमें घटीर ग्रहण करकिपा है इनके
 तिर्यग्गतिमात्तुपुष्पीके उदयका अभाव होनेपर भी बन्ध देखा जाता है । परपात नीर
 अपरपातका भी स्वेत्यपरोदय बन्ध होता है क्योंकि, अपर्याप्तकाजमें उदयामावे
 होनेपर भी उदयका बन्ध देखा जाता है । शय मङ्कटियोका परोदय बन्ध होता है क्योंकि,
 वहां इनके उदयका सर्वदा अभाव है ।

पांच अमावरणीय भी अर्धावराणीय मिच्छात्त सासइ कयाय अय सुगुप्ता
 तिर्यगायु मनुष्यायु, जीवारीक, तेजस व कर्मय घटीर बंध बन्ध एरथ स्वर्ग मनुस्सु,
 उपघात निर्माण नीर पांच मन्तराय इनका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समबसे
 इनके बन्धविधायक अभाव है । साता व असाता वेदनीय सात मोकपाय मनुष्ययति
 पंचेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय अतुतिन्द्रिय पंचेन्द्रिय जाती छह संस्वान जीवारीक

पाभागानुपूर्वी आडावु जोव-नविहायगइ तम यावर-सुनुम-भय-अत साहारणमरीर-भिराधिर-
सुमामुम-सुमग-दुभग-सुस्मर-दुस्मर-आदे-अ-भयदे-अ-अयकिरि-अ-असकिरि उरुचसोदान
संतरा बधो, एगममाण पंधुवरमदेमपादे । निरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाभोगानुपूर्वी
पीचागादाय सानर-भितर बधो, मध्येइदिणु सानरवाणमेदामि तठ-आठकाइएसु भिरंतर
पंधुवर्तमाने । परघादुम्माम-याद-य-अत-पसपमरीरण बधो मानर गितरो । कथं गिरंतरे ?
एइदिएसुपुण्णमेवाणमेतासुनुसकलं गितरवपदेमगादे ।

एइदिएसु मिच्छतमंजम-कम्याय जोगभदेण चत्तारि मूलयच्चया । पचमिच्छतपच्चया ।
कुदा ? पचमिच्छतदि सह णामामुम्माणमेइदिएसुपुण्णण पचमिच्छतुवर्तमाने । एगो
एइदियासंजमो, छपाणासजमा, कम्याया सोलस, इत्थि-पुरिसवददि विजा ओकसाया सत्त,
भोरत्थियदुग-कम्मइयमिदि तिप्पि जागा, एदे सम्म पि अट्टीस उत्तरपच्चया । पवरि
तिरिक्ख मणुम्माउमार्ज कम्मइयपच्चण विजा मत्तसीस पच्चया । एककम्म अट्टरस

गरीरंगापांग छह सहजम मनुप्पगनिपायापुपूर्वी आताय उपाय हा विहायागतयां
अस क्यावर, सुखम मपर्याय साधारणगरीर स्थिर, अस्थिर काम अशुभ सुभग
दुर्मग सुखर, दुस्वर मादय अमादय, पशकीरि मय-पकीरि और उच्चगात्र नमका
साम्तर बन्ध हाता है क्योंकि एक समयमे इनका बन्धविग्राम वेला जाता है ।
तियत्तति निर्यत्तनिपायोग्यापुपूर्वी मार नीचगोत्र इनका साम्तर-निरन्तर बन्ध हाता
है क्योंकि मय एकत्रियोंमे साम्तर बन्धबामी इन प्रकृतियोंका तजकायिक य पापु
कायिक जीवोंमे निरन्तर बन्ध पाया जाता है । परन्तात -बन्धबाम वादर, पर्याय और
प्रत्यक्षगरीर प्रकृतियोंका बन्ध साम्तर निरन्तर हाता है ।

शुक्र—इमका निरन्तर बन्ध कैस होता है ?

समाधान—क्योंकि एकत्रियोंमे उत्पन्न हुए द्वाक अन्तमुहत्त कास तक इनका
निरन्तर बन्ध रहता है ।

एकत्रियोंमे मिष्यात्थ असेयम कयाय और पागक मयम आग मूक प्रत्यय
हाता है । उत्तर प्रत्ययोंमे पांच मिष्यात्थ प्रत्यय क्योंकि पांच मिष्यात्थोंके साथ
एकत्रियोंमे उत्पन्न हुए जाना मनुष्यों पांच मिष्यात्थ प्रत्यय पाये जाते हैं । एक
एकत्रियासेयम छह प्राणि असेयम सांखर कयाय श्री और पुरुष केके बिना सात
नोक्काय तथा हा भीकारिक ब कामेज ये तीन योग य सब ही मइतीस उत्तर प्रत्यय
एकत्रियोंमे हाते हैं । बिरोधता कह्य यह है कि निबगापु य मनुष्यापुके कामेज प्रत्ययके
बिना सीतीस प्रत्यय हाते हैं । स्मारद य अटारद एक समय सम्मणी अयय और अकप

पाभामाणुपुष्पी-आणु-जोत्र-विद्वापगइ तस-यावर-सुह्रम धपज्जत साहारज्जगीर-गिराधिर-
सुमासुम-सुभग-सुभग-सुम्भ-सुम्भ आदञ्ज-अपादञ्ज-जसकित्ति-जजसकित्ति-उष्माणोदान
सातर घघो, णममण पघुवमदंमणादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाभोगाणुपुष्पी
णीवागोदान सांतर-गिरतर घघो, मम्भेदण्णिणु सांतरपवाणमेदसिं तेठ-वाठकाइएसु गिरतर
पघुवतमादो । परपादुम्मास-पाइर-प-ज्जत-पत्तपसरीरण घघो मांतर-जिंतरे । कध गिरतरं ?
एइदिएसुप्यण्णदेवाणमतोसुहुत्तकलं गिरतरपघदमणादो ।

एइदिएसु मिच्छतामजम-कमाय जागमदेण चत्तारि मूलपञ्चया । पंचमिच्छतपञ्चया ।
कुदा ? पंचमिच्छतेहि सइ पाभामणुम्माणमेइदिएसुप्यण्णार्ण पंचमिच्छतवलेमादो । एगो
एइदियासजमो, सण्णापासजमा, कम्मापा सोत्तम, इत्थि-पुरिसवेदहि विणा भोक्साया सत्त,
ओरात्थियदुग-कम्मइयमिदि तिण्णि जागा, एदे सव्वे वि भट्टसीस उत्तरपञ्चया । गवरि
तिरिक्ख मणुस्साठआण कम्मइयपञ्चण्ण विणा मत्तसीस पञ्चया । एककारम अट्टारस

घासीरंगपांग छह सहमन मनुष्यगणिमायाणानुपूर्वां जाताप उघात वा पिहायांग। तथा
जस स्वाधर, सूक्ष्म मपर्याप्त साधारणशरीर स्थिर मस्थिर शुभ भद्रम सुभग
कुर्मण सुम्भर दुम्भर भाइय भनायेप यशस्वीति वयशस्वीति और उद्योगोत्र इनका
साम्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविधायक देखा जाता है ।
तिर्यग्गतति तिर्यग्गतिमायोम्यानुपूर्वां और जीवगोत्र इसका साम्तर-निरन्तर बन्ध होता
है क्योंकि सब एकत्रियोगे साम्तर बन्धबाली इन प्रकृतियोंका तजकतयिक व पायु
कायिक जीवोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है । परघात अज्जबाम वाइर, पर्याप्त और
प्रत्यक्षशरीर प्रकृतियोंका बन्ध साम्तर निरन्तर होता है ।

शुक्ल—“मअ निरन्तर पन्ध कैसे होता है ?

समाधान—“न्योंकि एकत्रियोगे उत्पन्न हुए दयोंक मन्तमुद्धत कास तह इनका
निरन्तर बन्ध देखा जाता है ।

एकत्रियोगे मिध्यात्व मसंयम कपाय और पागक भेदस्य आर मूळ प्रत्यय
हान है । उत्तर प्रत्ययोंमें पांच मिध्यात्व प्रत्यय क्योंकि पांच मिध्यात्वोंके साथ
एकत्रियोगे उत्पन्न हुए भाजा मनुष्योंक पांच मिध्यात्व प्रत्यय पाए जात हैं । एक
एकत्रियासंयम छह प्राप्ति मसंयम सोलह कपाय श्री और पुरुष वेदके विना सात
नोकपाय तथा दो जीवदिक व कर्मण ये तीन योग ये सब ही मट्टसीस उत्तर प्रत्यय
एकत्रियोगे होते हैं । विशेषता कथक यह है कि त्रिपाणु व मनुष्यायुके कर्मण प्रत्ययके
विना सीसीस प्रत्यय हात है । पारह व मट्टाह एक समय सम्भन्धी अमन्य और उत्कृष्ट

एरासमाइयजहण्युत्कस्सपञ्चया ।

तिरिक्खाट [तिरिक्खगइ] तिरिक्खगइपाओम्याणुपुष्पी-आत्तापुम्भी-वावर-सुम्भ-
साहाणपसरीणि तिरिक्खगइसंभुत्तं वन्धति । मणुस्साट-मणुस्सगइ-मणुस्साणुपुष्पी ठाणोदाणि
मणुयगइसंभुत्तं वन्धति । अवसेमाओ पयडीओ तिरिक्खगइ मणुसगइसंभुत्तं वन्धति, दुगइहि
विरोहामावाहो । एइदिया सामी । वघज्जाणं सुगमं । वंघवोप्पेदो वत्ति । पय्यावावरणीय
वयदंसजावरणीय-मिच्छत्त-सोत्तसकसाय-मय दुगुंठा-तेजा-कम्मइयसरीर-वज्जवत्तक-अणुस
छत्थ-उववाद्-मिच्छत्त-पंथतरइयायं वत्तव्विहो वयो । अवसेसानं सादि-अद्दो ।

एवं वादरएइंदियाय । जवरि वादर सोदएण पञ्चवि । सुहुमस्स परेदओ षंथो ।
 वादरएइंदियपञ्चएण वादरेइंदियमंगो । जवरि पञ्चस्स सोदओ, अपञ्चस्स परेदओ षंथो ।
 वादरएइंदियअपञ्चएण पि वादरएइंदियमंगो । जवरि बीणगिणितिय-परधाहुस्सास्स मादाहुवाय
 पञ्चअ-असक्तिंणं परेदओ षंथो । अपञ्चअ-असक्तिंणं सोदओ । परधाहुस्सास्स-वादर

प्रत्यय इति हि ।

तिर्बंगायु [तिर्यंगगति] तिर्यंगगतिप्रायोग्यानुपूर्वी जाताप उपगत स्थावर, सूक्ष्म और साधारणशरीरको तिर्यंगगतिसे संयुक्त बांधते हैं। मनुष्यायु मनुष्यगति मनुष्यायु पूर्वी और उच्छ्वगतोच्छ्व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं। शाय प्रकृतिपौके तिर्यंगगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधत हैं, क्योंकि दोनों गतिपौके साथ उनके बन्धका विशेष नहीं है। एकेन्द्रिय जीव स्वामी हैं। बन्धाध्यात सुपम है। बन्धामुच्छेद है नहीं। पाँच ज्ञानावरणीय बी बर्जितावरणीय मिष्यत्व साहचर्याय अप जुगुप्सा हैवत व कामंश शरीर, वर्णादिहृत्कार, अगुरुक्षु उपगत निर्माज और पाँच अस्तयय इनका साथ प्रकृतिपौका साथ व अग्रय बन्ध होता है। शाय प्रकृतिपौका साथ व अग्रय बन्ध होता है।

इसी प्रकार बाहर एकत्रिय जीबोंकी भी प्ररूपणा है। विशेष इतना है कि हमक बाहर नामकर्म स्त्रोत्रयस बंधता है। एहम प्रकृतिअ बन्ध परोदधसे होता है। बाहर एकत्रिय पयाप्त जीबोंकी प्ररूपणा बाहर एकत्रियोंके समान है। विशेषता केवक इतनी है कि उनके पर्याप्त प्रकृतिअ स्त्रोदध नीर अपर्याप्त प्रकृतिअ परोदध बन्ध होता है। बाहर एकत्रिय अपर्याप्त जीबोंकी भी प्ररूपणा बाहर एकत्रियोंके समान है। विशेष यह है कि स्त्रयानुविचय परधात उच्छ्वास माताप बघोत पर्याप्त नीर वशकीर्तिका उनके परोदध बन्ध होता है। अपर्याप्त नीर अपर्याप्तकीर्तिका स्त्रय बन्ध होता है। परधात,

पञ्चस-पत्तयसरीराभेइदिएसु सांतर-पिरंतो वषो । एत्य पुष सांतो वेष, अपञ्चत्तेसु देवाणमुप्यतीष अमावासे । भौरात्रियकयवोगपञ्चमो णत्थि । सुहुमेइंदियाणं एइदियमंगो । णवरि परपादुस्सास-बादर पञ्चत्त-पत्तयसरीराणं सांतो वषो, सुहुमेइंदिएसु देवाणमुपवादा-मावासे । बादर आदाउन्जोव-वसकितीष परोदमो वषो । सुहुमेइदियपञ्चत्ताणं [सुहुमेइंदिय-मंगो । णवरि पञ्चत्तस्स सोदमो, अपञ्चत्तस्स परोदमो वषो । सुहुमेइदियअपञ्चत्ताणं] सुहुमेइदियप-नत्तमंगो । णवरि वीणगिदितिय-परपादुस्सासपञ्चत्ताणं परोदमो वषो । अपञ्चत्तनामस्स सोदमो । पञ्चणसु भौरात्रियकायवोगपञ्चमो अवणेदमो ।

संपाधि बीइदियाणं मणामो— इरिय-पुरिसवेद मणुस्साउ-मणुसगइ-एइदिय तीइदिय-वउरिदिय-पंदिदियआदि-अर्णतिमपंचसंअण-पंचसचइण-मणुमगइपामोमाणुपुम्भी-आदाव-पसत्यविहापगदि-मावर-सुहुम-साहारणसरीर-सुमग-सुस्सर-आदेवज उन्जोगोदाणमुदया-मावासे सेसपयडीणं चोइयवोम्भेदामावासे वेइदिएसु पंदिदियतिरिक्कअपञ्चत्तएदि

उच्छ्वास बादर पर्याप्त भीर प्रत्येकदारीर, इसका एकेन्द्रियोंमें साम्तर मिरस्तर वण्ण होता है । परन्तु यहाँ उनके साम्तर ही वण्ण होता है क्योंकि अपर्याप्तकोंमें देखोसी उत्पत्तिक्रम ममाव है । यहाँ प्रत्यक्षोंमें भौतिक कप्रयोग प्रत्यक्ष नहीं है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रियोंकी प्ररूपणा एकेन्द्रियोंके समान है । बिशेषता यह है कि परंपात उच्छ्वास बादर पर्याप्त भीर प्रत्येकदारीरकर उनके साम्तर वण्ण होता है क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें इहाँकी उत्पत्तिक्रम ममाव है । बादर आताप उद्योत भीर यशस्वीतिक्रम परोक्ष वण्ण होता है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तोंकी प्ररूपणा [सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके समान है । बिशेष इतना है कि उनके पर्याप्त प्रकृतिक्रम व्याप्य भीर अपर्याप्त प्रकृतिक्रम परोक्ष वण्ण होता है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा] सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके समान है । बिशेष इतना है कि क्स्यानगुद्विजय परंपात उच्छ्वास भीर पर्याप्त प्रकृतियोंका परोक्ष वण्ण होता है । अपर्याप्त सामकर्मका स्वाक्ष वण्ण होता है । प्रत्यक्षोंमें भौतिककप्रयोग प्रत्यक्षके कम करना चाहिए ।

अब द्वीन्द्रिय जीवोंकी प्ररूपणा करते हैं— द्वाँवद पुण्यपद मनुप्यासु मनुप्य गति एकेन्द्रिय बीन्द्रिय अतुरित्त्रिय पंचन्द्रिय जाति अन्तिम संस्थानको छोड़ दोष पांच संस्थान अन्तिम संस्थानको छोड़ दोष पांच संस्थान मनुप्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी आताप प्रशस्तविहायोगति स्थावर, सूक्ष्म साधारणदारीर, सुमग सुम्यर, जाव्य जीव उच्छ्वासा इनके उद्भवका ममाव होमसे तथा दोष प्रतिपोंके उद्भवमुच्छ्वासा ममाव होमसे पंचन्द्रिय

१ अर्थात् सुदुपेरादिकापि वेदिरमंगो अर्थात् सुदुवण्णदिरमंगि वेदिरमंगो अर्थात् सुदुवे रदिकानि वेदिरमंगो इति वाच ।

२ अत्रिदु दारिद्रीरारिद्रीरारिद्रीर इति वाच ।

यगसमभ्यजदङ्गुलकस्तपश्चया ।

तिरिक्खाठ [तिरिक्खगइ] तिरिक्खगइपाभोमाणुपुष्पी-आदासुम्माव-पावर-सुद्धुम
साहारणसरीराणि तिरिक्खगइसंभुत्तं वञ्चंति । मणुस्साठ-मणुस्सगइ-मणुस्साणुपुष्पी उवागोदाणि
मणुसगइसंभुत्तं वञ्चंति । अवसेसाभो पयडीओ तिरिक्खगइ मणुसगइसंभुत्तं वञ्चंति, दुर्गादि
विगृह्यमावासे । एइदिया सामी । वपइएणं सुगमं । वधवोप्पेदो जत्ति । पंक्कण्णवरणीय
ववत्तंसावरणीय-मिच्छत्त-सोत्तकसाय-मय् दुर्गंज-तेजा-कम्मइयसरीर-वणवत्तक-अमुक्क-
ल्लुम्भ-उववाद्-णिमिण-पंपंतरइयाणं वटम्बिहो वधो । अवसेसायं सादि-अद्दुवो ।

एवं वादरएइदियाम् । पवरि वादरं सोदण्ण वञ्चदि । सुद्धुमस्स पण्डवो वधो ।
वादरएइदियपन्नत्ताम् वादरेइदियमंगो । पवरि पञ्चत्तस्स सोदवो, अपन्नत्तस्स परोदवो वधो ।
वादरएइदियमपन्नत्तामं पि वादरएइदियमंगो । पवरि धीमगिदितिय-परघाडुस्सास-आदल्लुवोव
पन्नत्त-असकिणीं परोदवो वधो । अपन्नत्त-असकिणीं सोदवो । परघाडुस्सास वादर

प्राप्य हाते हैं ।

तिर्यंगाणु [तिर्यंगाति] तिर्यंगातिप्रायोगानुपूर्वीं आताप उघात स्वावर, सूक्ष्म
भीर साधारणशरीरके तिर्यंगातिसे संयुक्त बांधते हैं । मनुष्याय मनुष्यगति मनुष्याणु
पूर्वीं भीर वज्रगोत्रके मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । शेष प्रकृतिपौंड्रके तिर्यंगति
व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, वानों गतिपौंड्र नाथ उनके वज्रका विशेष
मर्त्य है । एकेन्द्रिय जीव स्त्री है । वज्राध्वान सुगम है । वज्रगुच्छद है नहीं । पांच
घानावरणीय मी वशोनावरणीय मिथ्यात्व सोझइ कयाय मय लुगुप्सा है वज्र व
कार्मण्य शरीर, पर्यायिक वाट, अगुरसमु उपजात निर्माण और पांच अन्तराय इनका
बाते प्रकारका वज्र होता है । शेष प्रकृतिपौंड्र सादि व अजुय वज्र होता है ।

इसी प्रकार वादर एकन्द्रिय जीवोंकी मी प्रकृति है । विशेष इतना है कि इसका
वादरनामकर्म स्वादयस संयता है । सूक्ष्म प्रकृतिका वज्र परोदयसे होता है । वादर
एकेन्द्रिय पर्याय जीवोंकी प्रकृति वादर एकन्द्रियोंके समान है । विशेषता केवल इतनी
है कि उनके पर्याय प्रकृतिवज्र स्वादय भीर अपर्याय प्रकृतिवज्र परोदय वज्र होता है ।
वादर एकन्द्रिय अपर्याय जीवोंकी मी प्रकृति वादर एकन्द्रियोंके समान है । विशेष यह
है कि स्वावगुच्छदय परघात अजुवास आताप उघात पर्याय और पराकीर्तिवज्र इनके
परोदय वज्र होता है । अपर्याय भीर अपराकीर्तिवज्र स्वादय वज्र होता है । परघात,

पञ्चसप्तपत्तयसरीराणामेह्येषु सान्तर-पिरंतरो षषो । एतत् पुन सान्तरो षष, अपञ्चत्तेसु
 देवाणमुपत्तीए ममावाणे । ओराटियकयजोगपञ्चभो णत्ति । सुहुमेइदियाण ण्दियमंगा ।
 णवरि परपादुस्मास पादर पञ्चसप्तपत्तयसरीराणं सान्तरो षषो, सुहुमेइदियसु देवाणमुपरादा
 भावादे । पादर माणाउज्जोव-जमकिटीण परोदओ षषो । सुहुमेइदियप नत्ताण [सुहुमेइदिय
 भयो । णवरि पञ्चत्तम्स सोदओ, अपञ्चत्तम्स परोदओ षषो । सुहुमेइदियमपञ्चत्ताणं]
 सुहुमेइदियप नत्तमगो । णवरि धीणगिद्धितिय-परपादुस्मासपञ्चत्ताण परोदओ षषो ।
 अपञ्चत्ताणामम्स सोदओ । पञ्चत्तम्स ओराटियकयजोगपञ्चभो अवपेद्व्यो ।

मपि भीरुदियाण ममाओ— इत्थि-सुरिमवद मणुम्साउ-मणुमगड-ण्दिय
 तीरुदिय षउत्तिय-पत्तियजानि-मणत्तिमपचसंत्तण-पचमपडण-मणुमगइपाओमाणुपुत्थी-
 भादाव-पसम्पविहायगदि-भावर-सुहुम-साहारणमरीर-मुमग-सुस्सर मादंज उम्पाओदानमुदया-
 मावाणे मेमपयईत्थि सोदयवाप्पेदामावादे इह्येषु पत्तियनिगिरमपञ्चत्तणहि

उत्थाम पादर पयात्त भीर प्रत्यक्षणीर, इनक पक्षिद्रियोमं साम्तर गिरम्तर वग्घ हाता
 हे । परम्सु पहां इनक साम्तर ही वग्घ हाता हे कयोकि अपयात्तकोमं द्योर्षी उम्पत्तिहा
 ममाप हे । पहां प्रत्यक्षोमं भौतारिक कापयाण प्रत्यक्ष महीं हे ।

मूढम पक्षिद्रियोमं प्ररूपणा पक्षिद्रियोमं समान हे । विचारता यह हे कि
 परयात्त उच्छ्रयाम पादर पयात्त भीर प्रत्यक्षणीरक्य उनक साम्तर वग्घ हाता हे
 कयोकि, मूढम पक्षिद्रियोमं द्योर्षी उम्पत्तिहा ममाप हे । पादर माताए उद्यात भीर
 पक्षिद्रियोमं परादय वग्घ हाता हे । मूढम पक्षिद्रिय पयात्तोंकी प्ररूपणा [मूढम पक्षिद्रिय
 जीयोमं समान हे । विचार इतना हे कि उनक पयात्त प्ररूपिता म्हादय भाए अपयात्त
 प्ररूपिता परादय वग्घ हाता हे । मूढम पक्षिद्रिय अपयात्तोंकी प्ररूपणा] मूढम पक्षिद्रिय
 पयात्त जीयोमं समान हे । विचार इतना हे कि म्हादयपक्षिद्रिय परयात्त उच्छ्रयाम भीर
 पयात्त प्ररूपितोंका परादय वग्घ हाता हे । अपयात्त नामकमेका म्हादय वग्घ हाता हे ।
 प्रत्यक्षोमं भौतारिककापयाण प्रत्यक्ष का करना सादिय ।

अथ भीमिद्रिय जीयोमं प्ररूपणा करत हे— इतिथ पुराणपद मनुष्यासु मनुष्य
 गति पक्षिद्रिय भीमिद्रिय अनुशित्त्रिय पंचमिद्रिय ज्ञानि मत्तिम संख्यामका छादु इत्य पांथ
 संख्यात मत्तिम संख्यामका छादु इत्य पांथ संख्यात मनुष्यगतिमायापानुपुत्ती भाताए
 प्रज्ञातमविहायगति म्हादय, मूढम मायापानुपुत्तीर मुमग मुम्पर म्हादय भाए उच्छ्रयाम
 इनके उच्छ्रय ममाप हातने तथा इत्य प्ररूपिते उच्छ्रयपुम्परका ममाप हातने पंचमिद्रिय

१ अर्थात् दृष्टान्तद्वारेण वैदिकमते । अर्थात् दृष्टान्तद्वारेण वैदिकमते । अर्थात् दृष्टान्तद्वारेण वैदिकमते ।

२ इति । इति । इति । इति । इति ।

यच्छमावययदीभो वषमाणेसु ' यथाहो उदयो किं पुन्यं किं वा पञ्चम बाष्पिण्यो ' ति विचारो बरिष ।

पंचपात्रावर्णीय-चउदसमावर्णीय मिच्छत-चपुंगयवेद-तिरिक्ताड-तिरिक्ताड-
वीहृदियबादि-तेजा-कम्महयसरिष वषण-गव-रम-फाय-अगुस्वत्तुम-तस-बादर विराविर-सुमा
सुम-दुमग-वषादेज-विमिष-पीत्रगोद-यवतरायइयावं सोत्थो वषो, एरथ एदामि पुषेदयत्
इसबादे । विहाणिहा-ययत्तययत्त-मादामाद-सोत्तमकमाय छत्रेकमाय-य-वत्तय-वत्त यय
वत्तमकिरीष सोदय-सराइभो वषो, उमयया कि वषम्य विरोहामावाणो । वातठियसरि
हुंडसत्तय-भासालियमरीरअगोवग असपत्तमेवइमचइण उवषाद-वत्तयसरीरापं वि सोत्तय-परोइभो,
विम्यहयरीए उदयामावे वि वंजुवत्तमादा । तिरिक्तागदिपाभागागुपुष्पीण वि मादय-परोइभो
वंधो, विगहगदीणो वषणत्त उदयामाव [वि] वंधदमजादा । फसादुम्मासुमोय वषसरवविहाय
गइ-वुस्मराण वि सोदय-परोइभो वषो, अपक्कत्तत्तत्ते उदयामाव वि वंजदसमाथो, उमेवस्म
उ-जोवावयविरिहाविरिहदेसु वंजुवत्तमादा । इरिष-सुरिस-मजुस्माउ-मजुमगाइ-यइदिय तीरिर्वि

तियेव अययत्ताक ठारा वष्यमान प्रकृतिपात्रा बांधमपाल ईमिन्द्रिय जीवाम वष्यम उदय
कया पूर्वमे या कया पश्चात् स्पुष्टिजन होता है यह विचार नहीं है ।

पांच पात्रावर्णीय चार दर्शमावर्णीय मिच्छायान्न लपुंगयवेद निर्यंगाया त्रियं
यानि ईमिन्द्रिय जाति तैजस य कामय शरीर, वषं गन्ध रस स्पर्श अगुस्वत्तु, वष
वाक्क स्थिर, अस्थिर शुभ अशुभ पुमंत ममादय निर्माण नीचगात्र और पांच
अवस्थाप इनका स्वभाव वष्य होता है क्योंकि, यहाँ इनका मुख उदय देखा जाता है ।
मित्राभिद्रा प्रवत्ताप्रवत्ता साता व समता वरुणीय मोमह कपाय छह नाकपाय
पर्याप्त अयपर्याप्त यथावर्ति और अयज-ईति इनका स्वभाव परादयस वष्य होता है
क्योंकि, बायें प्रकाशस मी इनका वष्यका विरोध नहीं है । अंतर्गतिशरीर, पुण्यसंस्वान
वीहृदियवर्णीयगोपांग असंमाणसुपादिकार्थहजन उपपन्न और प्रत्यक्षशरीर इनका
मी स्वभाव परादय वष्य होता है क्योंकि विमहगतिमें उदयका अभाव होमेपर मी इनका
वष्य पाया जाता है । तिर्यगगतिप्राधान्यानुपूर्वीक मी स्वभाव परादय वष्य होता है, क्योंकि
विमहगतिका छेदकर अव्यय उसका उदयामाव होमेपर मी वष्य देखा जाता है ।
पंचाल उच्छ्रवांस उद्योत अमघसत्तविहापांगति और बुद्धरका मी स्वभाव-परोइय वष्य
होता है । क्योंकि अयर्वातकाछर्म इनका उदयामाव होमेपर मी वष्य देखा जाता है तथा
उद्योतका उद्योतके उदयस रहित और उसमे सहित जीवाम उसका वष्य पाया जाता है ।
अग्निह बुधयवेद मनुष्यायु, मनुष्यगति पञ्चमिन्द्रिय जीवित्य वज्जित्तिर्यय वंजमिन्द्रिय जाति

चतुर्दिश पश्चिदिशप्रादि-भयतिमर्षस्य-पञ्चस्य-मणुसगृह्याभोग्मापुष्पी-आदाव-
पश्यतिहायग-वावर-मुहुम-साहस्रसरीर-सुभग-सुम्भर आदेन्नुष्वागोदाप परोदधो पथो ।

पञ्चमाणावरणीय-पञ्चदशजावरणीय-मिच्छन्-सोत्सुकमाय-मय-दुर्गुह्य-तिरिक्त्वा-मणु-
स्साउ भोरालिय-तोबा-कम्मइयसरीर-वण-गोष-रम-फ़स-अगुस्वत्सुय-उवषा-मिषि-पंचतरा-
इयाप भित्तरो बंधो, एगसमएण पधुवरमाभादो । दोष्पमाठशार्ण भित्तरो, एगसमएण
वोष्पेदामाभादो । सादासाद-सत्तपोकसाय-मणुमग-पश्चिदिश-पश्चिदिश-तीर्थदिश चतुर्दिश
पश्चिदिशप्रादि-छस्य-ओरालियसरीरभोग्वंग-अपचण-मणुसगृह्याभोग्मापुष्पी परपादु-
म्मास-आदाठज्जोष-ओविहायग-तम-आवर-आदर-मुहुम-पञ्चस्यपञ्चत-पथेय-साहस्रसरीर-
पिराभिर-मुहासुह सुभग-दुभग-सुस्वर-दुस्वर आदेन्व अण्दन्व-असकिप्ति-उष्वागोदाप सांतरो
पथो, एगसमएणद्विषि पधुवरमर्षमभादो । परपादुस्मास-आदर-पञ्चत-पथेयमरीरणमेह्विपसु
व सांतर-भित्तरो बंधो किम्प पद्विदो ? ग, देवाभेह्विपसु व विगलिपिपसु तववाभाभादो ।

अग्निम संस्थामग्ने छाद्भृश पांच संस्थान पांच संहनन मनुष्यगतिप्राप्तयेयानुपूर्वी
मानाय प्रशस्नविहायोगति स्थावर मूलम साधारणदायीर, सुभग सुम्भर आदेय भीर
उक्तगोष इनक्ष परोदय बन्ध होता है ।

पांच ब्रह्मावरणीय भी ब्रह्मावरणीय मिष्यान्व सोत्सह कयाय मय अगुह्य,
निर्वगायु मनुष्यायु औदारिक, निजम व कर्मण शरीर बर्ष बन्ध रस सरा मणुकलपु
उपपात निमाण भीर पांच मन्तरय इनक्ष निम्नर बन्ध होता है क्योंकि एक समयमे
इनके बन्धविधायक अभाव है । दो आयुर्घोष निम्नर बन्ध होता है क्योंकि एक
समयमे इनके बन्धमुच्छेदना अभाव है । साता व अमाता वेदनीय सात भोज्याय
मनुष्यगति एकत्रिय द्वीत्रिय त्रैत्रिय चतुर्विधिय पंचत्रिय ज्ञानि छह संस्थान
औदारिकदायीरांगोपांग छह संहनन मनुष्यगतिप्राप्तयेयानुपूर्वी परपात उच्छ्वास
मानाय उपोत दो विहायोगतिपां जस स्थावर पादर, मूलम पयाज मयपाज
प्रत्येक व साधारण दायीर स्थिर, अस्थिर शुभ अधुम सुभग दुभग सुस्वर, दुस्वर
आदय अमादय पदाकीर्ति सात उच्छ्वाय इनक्ष मान्तर बन्ध हाता है क्योंकि एक
समयमे इनक्ष बन्धविधायक अभाव जाता है ।

शुक्ल—परपात उच्छ्वास बाइर पयाज भीर प्रत्येकदायीरक्ष एकत्रिय और्ध्व
समान मान्तर निम्नर बन्ध क्यों नहीं कहा गया ?

समाधान—एकत्रियोंका समान विषयत्रियोंमें देवोंकी उत्पत्ति व दावेसे यहां
उक्त प्रकृतियोंका मान्तर निम्नर बन्ध नहीं कहा गया ।

ब्रह्माण्डपयसीभो षण्मासेषु 'षण्मासे ऋओ किं पुष्यं किं वा षष्ठ्य सोमिष्ठ्यभो' ति विशासे गतिः ।

पंचप्राणावरणीय-पञ्चदशमावरणीय मिच्छन्त-जबुमयवद् निरिक्काउ-निरिक्कमह-
बीहदियमादि-तेजा-कम्माइयमरिण वण्ण-गंध रस पत्रम जगुम्बत्तुअ-सम-भादर विराधिर-सुभा-
सुम-दुमग-जनादेव-भिमिअ-गीषागोद पर्वतगायइयाण मोदभो पंधो, पस्स एदामि पुबो यत्त-
इंसणतो । विराणिहा-ययत्तपस्य-मादामा-सम्ममकमाय-यणोक्कमाय-य-अत्ताप-अत्त जय
जजसकित्तीण सोदय-परोदभो पंधो, उमयमा वि पयम्म विराइमाअणो । अत्ताडियमरिण
हुइमट्ठप मेत्ताडियमरिअगावग अमंपससेवहुमचइअ उवचाट-यत्तेयमरिणपि मोदय-परोदभो,
विग्गाहगदीए उदयामाव वि पंधुवत्तमादा । निरिक्कगविपाओग्गाणुपुब्धीए वि सोदय परोदभा
अपो, विग्गाहगदीओ अण्णय्थ उदयामाव [वि] पयदमपाव । पग्गाहुम्मासुमेअ अप्पमरविइय
गइ-हुस्सराण पि मोदय-परोदभा पंधो, अप-अत्तकण्ठ उदयामाव वि पंधइंसणाओ, उम्मेवस्स
उम्मावेत्तवविउहिदाविउहिदेसु पंधुवत्तमादा । इप्पि-पुरिस मणुम्माउ-मणुमगइ-यइदिय तीहिदिये

नियम अपर्याप्तता द्वारा वध्यमान प्रवृत्तियों का बाधनपात्र ईश्वरिय औचित्य वध्यम उक्त कथा पूर्वम या कथा पश्चात् स्पुष्टिउक्त होता है यह विचार नहीं है।

पांच ज्ञानाधारणीय चार इक्षमाधारणीय मिथ्यात्व अनुसक्तवद् तिर्यंगाया तिर्य
मानि शीघ्रिप्र ज्ञानि निरुद्ध व क्षमण शरीर वर्ण गन्ध रस स्वा मगुणत्वपु व्रत
बाह्य स्थिर, अस्थिर, शुभ मशुभ दुर्मग भनादय निमात्र मीचगात्र मीर पांच
अस्तगुण इनका स्वीकृत्य वन्ध होता है क्योंकि यहाँ इनका भुव वक्ष्य इत्ता जाता है।
मिश्रपनिद्रा प्रबलप्रबलता सला व मसाला पदनीय मोमह क्षयाय छह माकपाव
पथात अपर्णाज पक्षाकीर्ति और अपक्षाकीर्ति इनका स्वेत्य परत्यपस वन्ध होता है
क्योंकि इत्ता प्रकाश मी इनक वन्धका बिरोध नहीं है। भावार्थिकशरीर, दुष्कृतस्वात,
मीश्वारिकशरीरसंगोपांग प्रसंमाणमृपाष्टिकासंजन उपपात और प्रात्यक्षशरीर इनका
मी स्वातय परत्यप वन्ध होता है क्योंकि मिश्रहगतिम उद्यका जमाव इत्तेपर मी इनका
वन्ध पाया जाता है। तिर्यगतिप्राप्तयानुपूर्वीक मी स्वेत्य परत्यप वन्ध होता है, क्योंकि
मिश्रहगतिम छेदकर जन्मक उमक उद्यपामाव इत्तेपर मी वन्ध देखा जाता है।
परपाल उच्छ्वास उपात जमशस्वविहापागति मीर दुस्करका मी स्वेत्य परत्यप वन्ध
होता है क्योंकि अपर्णातकर्म इनका उद्यपामाव इत्तेपर मी वन्ध देखा जाता है तथा
उपातक उपातक उद्यवस रहित मीर उससे सहित बीर्भेम उसका वन्ध पाया जाता है।
श्रीविद् पुण्यवेद मनुष्यायु, मनुष्यगति पक्षिन्ध्र शीघ्रिप्र वज्रिन्ध्र पंचेन्द्रिप्र ज्ञानि

पञ्चत्तामस्स सोदधो, अपञ्चत्तामस्स परोदधो बंधो । एवमपञ्चत्ताप पि वत्तम् ।
 पत्तिरी मीनगिदितिय-परघादुत्सास उन्नेव-अप्पसस्यविहायगइ-पञ्चत्त-नुत्तर-जसकित्तिपि परो
 दधो बंधो । अपञ्चत्त-अजसकित्तिपि सोदधो । अपञ्चत्तापमट्ठसीस पञ्चया, ओरात्तिम
 क्कयासुञ्चमोसवविजोगापमभावादो ।

तीर्हदियाणं तीर्हदियपञ्चत्तापञ्चत्ताप च बीर्हदिय-बीर्हदियपञ्चत्त-बीर्हदियअपञ्चत्त-
 मगो । पत्तिरी घात्तिदिएण सह तेर्हदियपञ्चत्तापमेक्केत्तालीस पञ्चया । अपञ्चत्तापमेगुण
 चात्तीस, ओरात्तिमक्कयासुञ्चमोसवविजोगापमभावादो । तीर्हदियणमस्स सोदधो बंधो ।
 बवसेसिंदियणामाण परोदधो ।

चठरिदियाणमेवं चैव वत्तम् । पत्तिरी चठरिदियआदिषधो सोदधो । सेसिंदियआदि
 बंधो परोदधो । आदात्तिमुत्तरपञ्चया, चत्तिस्सदियणवेसादो । अपञ्चत्तापे चात्तीम पञ्चया,

उनके पर्याप्त नामकर्मका स्वोदय और अपर्याप्त नामकर्मका परोदय बन्ध हुआ है । इसी
 प्रकार इन्द्रिय अपर्याप्तोंका भी कथन करना चाहिये । विशेष यह है कि स्थानगुद्विजय
 परघात उच्छ्वास उद्योत अग्रशस्तविहायोपपत्ति पर्याप्त दुम्बर और यशस्वीर्तिका
 परोदय बन्ध होता है । अपर्याप्त और अग्रशस्वीर्तिका स्वोदय बन्ध होता है । अपर्याप्तोंके
 मट्ठसीस प्रत्यय होते हैं क्योंकि औद्यारिक काययोग और असत्य मूया वचनयोगका
 उनके समाव है ।

मीन्द्रिय मीन्द्रिय पर्याप्त और मीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्रकृषणा इन्द्रिय
 इन्द्रिय पर्याप्त और इन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके समान है । विद्यापता इतनी है कि प्राण
 इन्द्रियके साथ मीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके इकतासीस प्रत्यय होते हैं । अपर्याप्तोंके
 उनतासीस प्रत्यय होते हैं क्योंकि, उनके औद्यारिक काययोग और असत्य मूया वचनयोगका
 समाव है । मीन्द्रिय नामकर्मका स्वोदय बन्ध होता है । शय इन्द्रिय नामकर्मोंका परोदय
 बन्ध होता है ।

अतुट्तिन्द्रिय जीवोंका भी इसी प्रकार ही कथन करना चाहिये । विद्यापता इतना है
 कि उनके अतुट्तिन्द्रिय आतिका सादय बन्ध होता है । शय इन्द्रिय आतियोंका बन्ध परोदय
 होता है । यहाँ अतुट्तिन्द्रियका प्रवेद होमसे प्यासीन उत्तर प्रत्यय होते हैं । अपर्याप्तोंके

१ आदती ओत्तिमिवअवत्तपणम इति पाठ ।

२ अट्टिउ तीर्हदियाण तीर्हदियपञ्चत्ताप तीर्हदियअपञ्चत्ताप चत्तिदिय-बीर्हदियपञ्चत्त मत्ती
 तीर्हदियाण तीर्हदियअपञ्चत्तापञ्चत्ताप च बीर्हदियपञ्चत्त इति पाठ ।

३ अट्टिउ ओत्तिमिवअवत्तपणम इति पाठ ।

तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुष्वी-वीणागोत्ताणं सत्तर-भित्तरो बंधो । कपं भित्तरो ।
न, तेउ-वाउकाइएहिंतो बीईदिएसुप्पण्णमंतोसुहुसकस्सेवामि भित्तरबंधुवर्त्तमानो ।

एवमिं मूलपञ्चया चत्तारि । पंच मिच्छस, दोईदियासंजमा, छप्पावसजमा, सोत्त
कसया, सस जोकसया, चत्तारि जेया, सव्वेदे बीईदियम्सुं चात्थीसुत्तरपञ्चया । वस्ति
तिरिक्ख-मज्झिमाउमानं कम्मइयपञ्चएण विजा एगुपचात्थीम पञ्चया । एक्कमम बहुरस
पयसमइयमइयुक्कसपञ्चया ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एईदिय-बीईदिय-सीईदिय-चउत्तिदियवादि-तिरिक्खगइपाओ-
ग्गाणुपुष्वी-वाउसुओव-वावर-सुहुम-साहारमानं तिरिक्खगइसत्तुछे बंधो । मज्झिमाउ-मज्झिमा
मज्झिमाउपाओग्गाणुपुष्वी-उप्पागोत्ताणं मज्झिमाइसत्तुछे बंधो । सेसाय पयवीनं तिरिक्ख-मज्झि
सगाइसत्तुछे बंधो । कुटो ? दोईद मरीहि सह विरोहामावाओ । वचयानं सुगमं । बंधोओओ
वत्ति । पुवियाय चउत्तिदो बंधो । अवसेसार्णं सादि बद्धो । एवं पग्गत्ताण । वस्ति

तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्राप्त्योपानुपूर्वी और बीचगोत्रका मालार-निरन्तर बन्ध
होता है ।

श्रृंखला — निरन्तर बन्ध कैसे जाता है ?

सम्राजान — यह श्रृंखला सीक नहीं क्योंकि, तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमेंसे
हीन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंक धन्तमुहूर्त काम तक इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इनके मूल प्रकय बार होते हैं । पांच मिष्पान्ध हो हीन्द्रियासंयम छह प्राणि
भर्मयम सोखह कपाय सान शोकपाय और बार योग ये सब हीन्द्रिय जीवोंक बाधीत
उत्तर प्रकय होते हैं । विशेषता केबल इतनी है कि तिर्यगाणु व मनुष्याणुके कर्मेज प्रत्ययके
बिना बनताहीन प्रत्यय होते हैं । गवारह व मवारह क्रमसे एक समय सम्बन्धी जपण
और उरुण प्रत्यय होते हैं ।

तिर्यगाणु तिर्यग्गति एक्किच्च हीन्द्रिय बीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय ज्ञाति तिर्यग्गति
प्राप्त्योपानुपूर्वी जाताय उद्योत क्पावर सुहम और साधारण इनका तिर्यग्गतिसे
संबुद्ध बंध होता है । मनुष्याणु मनुष्यमति मनुष्यगतिप्राप्त्योपानुपूर्वी और उरुणगोत्रका
मनुष्यगतिसे संबुद्ध बन्ध होता है । शेष मज्झिमाओका तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संबुद्ध
बन्ध होता है क्योंकि, दोनों गतिवोंके साथ उनके बन्धक्य विरोध नहीं है । बन्धाव्याय
सुगम है । बन्धमुच्छेद नहीं है । कुछ मज्झिमाओका चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष
मज्झिमाओका सावि व मज्झिमा बन्ध होता है ।

इसी प्रकार हीन्द्रिय पर्याय जीवोंकी प्रकयता है । विशेषता केबल इतनी है कि

पञ्चतन्त्रमस्तु सादृशो, अपञ्चतन्त्रमस्तु पराङ्मया यथा । एवमपञ्चतन्त्रं हि वक्तव्यम् ।
 पञ्चरि धीर्जगदिदित्य-परभादुस्तथा उन्मोक्ष-अपञ्चतन्त्रविद्यायगद्-पञ्चतन्त्र-कुस्तर मसक्तिर्त्तमं परो
 दमो यथो । अपञ्चतन्त्र-अपञ्चतन्त्रमसक्तिर्त्तमं सोदमो । अपञ्चतन्त्रमदृष्टीस पञ्चया, भोरात्य
 क्रयामपञ्चमोसैवधिजेगापमभादो ।

तीर्हदियाण तीर्हदियपमत्तापमत्ताण च तीर्हदिय-पीर्हदियपञ्जस-पीर्हदियभप-जस
मगा । अवरि पार्णिदिण सद् तेर्हदियपञ्जसाणमेक्केतात्थिस पक्खया । अप-जत्तापमेगूण
पात्थिस, ओराठियक्खयासन्धमोसैयविजोगाणमभावाटो । तीर्हदियणामस्स सादभो बंधो ।
अवसेसिदियणामाणं परोदभो ।

चउत्तिदियाप्येव येन वतत्तं । पक्खि चउत्तिदियाज्जिद्वेषो सोद्वमो । सेसिदियाज्जि
द्वेषो पगेद्वमो । बादात्थिसुत्तपप्पवया, चत्तिदियाप्येवमाश । अपज्जत्ताप चात्थिस पप्पवया,

उनके पर्याप्त नामकर्मका स्वादुय और अपर्याप्त नामकर्मका परादुय बन्ध होता है। इसी प्रकार द्वैतद्विषय अपर्याप्तोंका भी कथन करना चाहिये। पिताय यह है कि स्व्यामपुत्रिषय, परपात उच्छ्वास उद्यत भ्रमदास्त्विहायोगति पर्याप्त दुस्वर और यशस्वीर्तिका परादुय बन्ध होता है। अपर्याप्त और अपर्याप्तोंका स्वीदुय बन्ध होता है। अपर्याप्तोंके अद्वैतस प्रत्यय हाल है क्योंकि भीष्मिक कथयोग और भ्रमस्य भूया धननयोगका उनके अभाप है।

जीमिन्द्रिय जीमिन्द्रिय पर्वान्त और जीमिन्द्रिय अर्धपर्वान्त जीमिन्द्रिय प्ररूपणा जीमिन्द्रिय जीमिन्द्रिय पर्वान्त और जीमिन्द्रिय अर्धपर्वान्त जीमिन्द्रिय समान है। बिनापता इतनी है कि प्राण इन्द्रियके साथ जीमिन्द्रिय पर्वान्त जीमिन्द्रिय इन्द्रियात्मिक प्रत्यय प्राप्त है। अर्धपर्वान्तके उन्नतस्तीक्ष्ण प्रत्यय प्राप्त है क्योंकि, उनके भौतिक उपयोग और अमृत्य श्रुता वस्तुपादकता प्रमाण है। जीमिन्द्रिय नामकमकर स्थाप्य बन्ध होता है। दाया इन्द्रिय नामकमिन्द्रिय पराद्वय बन्ध होता है।

अनुसिद्ध्य जीर्णोक्ता श्री इमी प्रकाश ही कथन करना चाहिये । बिनाय इनका है कि उनका अनुसिद्ध्य आत्मिका आद्य बन्ध दाना है । राय इन्द्रिय आठिपौक बन्ध पराद्वय होता है । पहां अनु इन्द्रियका प्रवेश दानम प्यासीम उत्तर प्रम्यय दान है । अपर्याप्तोक्त

१. कायनी ओगाडिबधरुत्तममोड हदि बाहः ।

[illegible]

१. गणित, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, इति च ।

भोरत्तियस्त्रयामप्यमामवशिजागममावाश ।

पंचिदियभपञ्चसाण भणिम्सामा — एत्थ वञ्चमाणपयद्दीओ पंचिदियनिरिन्त्र-
अपञ्चतहि वञ्चमाणोओ वव, न अण्णाओ । एत्थ एद्वसि उदयाओ ववा पुर्व पञ्च न
वोच्छिज्जो ति विषयो वरिष, संतामत्ताणं पपोदयाणमथ वोच्छेदमावाशे ।

पंचभाषावरणीय च उदमजावरणीय-मिच्छत-जुंमयवद पंचिदियमादि-तेना कम्मएव
सरीर-वण्य-मेष-रम-फम-अगुरुजठुम-तम-वाद्दर अप-वत्त-धिगबिर-मुहासुह-जुमग अण्णद्व-
अजसकिवि मिमिन्न-भीघागोद-पंचतराद्याण सादमो पंचो, पुबोदयताओ । मिहा पयत्त-सारा-
साद सोत्तसकसाय-ऊणोक्कमाय-निरिक्काठ-मणुम्साउ-तिरिन्त्रगह-मणुमगइपाओगापुपुचीन
सादय-पराद्वो पंचा, उदएण विजा वि, संत वि उदए वजुवत्तमाओ । भोरत्तियमरि-जुं-
म-अण-भोरत्तियसरीरमंगोवण-वमपत्तमवद्वमयइव उवपाद पत्तयमरीराण मोदय-परोद्वो पंचा,
विमाहगदीए उदवामाणे वि अण्णम उदए संते वि पंचदममाद । भीजगिदिनिय-इन्नि-
पुरिसव-एद्विदिय-भीद्विदिय-तीद्विदिय-चउतिद्विदिय-पंचमपइव-परपादुस्साम-अद्वानुजो-
वेविहायवग् पाव-सुदुम-पञ्चत-माहारजसरीर सुमग सुम्पर-दुस्सर मादेव जनकिसि उवपा-

वल्लीस प्रत्यक्ष होने है क्योंकि उनका भौतिक कायपाग और अमत्य मृदा पचनपागका
समाव है ।

पंचमित्रप अपर्णात्तोक्की प्रकृपणा करत है— यहाँ वर्यमान प्रकृतिपा पंचमित्र
तियव अपर्णात्तो ह्राप बांधी जानेवाली ही है अम्य नहीं है । यहाँ इनका वद्वयस वण्य
पूर्वमे वा पम्मात्तु स्पुच्छिन्न हाता है वह विचार नहीं है क्योंकि, सत् और अमत्
वण्योदयके स्पुच्छिन्नका यहाँ समाव है ।

पांच जालावरणीय चार वर्शमावरणीय मिच्छाण्य जणुसकवद पंचमित्रपजाति
तैजस व कर्मज शरीर, वर्य गण्य रस स्पर्श अगुरुजठु, वस वाद्दर, अपर्णात्त स्थिर
वस्थिर, जुम अजुम जुमग अनादेव अजसकीर्ति मिमीय भीजगाव और पांच
अन्तराप इनका लोदय वण्य हाता है अर्थात्, वे सुबोद्वी प्रकृतिपा हैं । मित्रा प्रचका
साता व अस्तता वेदनीय सोमह कपाय कइ लोकपाय तिर्बगासु मजुप्यासु और
निर्यमाणि व मजुप्यगतिप्राप्पोप्यानुपूर्वी इनका लोदय परोद्व वण्य होता है क्योंकि,
उद्वके विना भी तथा वद्वके होनेपर भी इनका वण्य पाया जाता है । भीवारिकशरीर,
जुण्डसंस्थान भौतिकशरीरपंगोपांग अमप्रान्तयुपादिकासंहनन वपयात और प्रत्यक्ष-
शरीरका लोदय परोद्व वण्य होता है क्योंकि विमहगतिमे उवामावके होनेपर भी
तथा अम्यव उद्वके होते हुए भी इनका वण्य देखा जाता है । स्थानपृथिव्य वीवि-
पुद्ववेद एकेमित्रप भीमित्रप भीमित्रप चतुर्मित्रप जाति पांच संस्थान पांच संहनन
परयात वण्यवास जाताव वयोत्त दो विहायोगतिवां स्थावर, सूत्र पर्याप्त साधारण
शरीर, सुमग, सुत्तर, दुस्तर, मादेव, वराकीर्ति और उव्यगोव, इनका परोद्वयसे वण्य

गोदाण परोदण बवो, ण्हसिमरय उदयविरोहादा ।

पंचपाणावरणीय-जवदसपावरणीय मिच्छत्त-सोत्तसकसाय मय-दुगुळा-तिरिक्ख-मणु-
स्माठ भोत्तात्थिनेआ-कम्मइयसरीर-वण्ण-गघ-रस-फस अगुरुवठहुम-उवपाद-जिमिण-पवंतय-
इयान् भिरतरो बंधो, एत्थ एदमि धुव्वभित्तादो । सादासाद-सत्तणोकसाय मणुसगइ-एइदिय
भीइदिय-तीइदिय-अउरिदिय-पचिदियजदि-उत्तअण-भोत्तात्थिसरीरअगोवग-उत्तपडण-मणुसगइ
पाभोगाणुपुब्बी-परपादुस्मास आदाठयेव-वोविहायगइ-तस-यावर-वाटर-सुहुम-पञ्जत्तापञ्जस-
पत्तय-साहारणसरीर पिराविर-सुहासुह-सुमग-ठुमग सुस्सर-दुस्सर-अदेन्ज-अणदेन्ज-असक्ति-
अअसक्ति-उन्नागोदाण सांतरो बवो, एगसमएणदासिं वधुवरमईसणादो । तिरिक्खगइ
तिरिक्खगइपाभोगाणुपुब्बी-भीचगोदाणं सांतर-भिरतरो बवो । कभं भिरतरो ? अ, तेठ-वाठ
कइएइतो पंचिदियअपन्नञ्चएणुण्णायमत्तोसुहुवकत्तमेदासिं भिततरबंधुवठमादो ।

पंचिदियअपन्नञ्चमेदामो पयईमो बंधमाणाण पंच मिच्छत्ताणि, पारम असज्ज,

हाता ई कयोंकि, यहाँ इनका उद्भवका विरोध है ।

पांच आनावरणीय भी दशनावरणीय मिष्यान्व, सोलह कयाय मय जुगुप्सा
तिर्यगायु, मनुष्यायु भीहारिक तैजस व कामय शरीर, वर्ण गन्ध रस स्पर्श
अगुरुलघु उपधात निमाण और पांच अन्तराय इनका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि,
यहाँ ये छहबन्धी हैं । सात्ता व असात्ता वेदनीय सात भोक्तृयाय मनुष्यगति एकेन्द्रिय
द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुर्विन्द्रिय पंचेन्द्रिय जाति छह सस्यान भीहारिकशरीरान्गोपांग
छह संहमन मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी परधात उच्छवास आताप वयोव हो
विहायगतिपां अस म्यावर वाटर, सुहम पर्याप्त अपर्याप्त मत्त्येक, साधारण शरीर
स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग दुर्मग सुस्वर, दुस्वर आदय अनादय पञ्चकीर्ति
अयशकीर्ति और उच्छवगोत्र इनका सात्तर बन्ध होता है क्योंकि एक समयसे इनका
बन्धविग्रहाम होता जाता है । निर्यगति तिपगगतिप्रापयानुपूर्वी आंग नीचगात्रका
सात्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शुक्र—निरन्तर बन्ध कैसा होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं क्योंकि, तज्जायिक और वायुजायिक जीवोंमें
पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंमें उन्वय हुए जीवोंक अन्तर्मुहुरत काम तक इनका निरन्तर बन्ध
पाया जाता है ।

इन प्रवृत्तियोंका धांघनयान पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंक पांच मिष्यान्व बाह्य

१ अतिशु बवसास इति पाठः ।

सातम कस्याय, सत पोकमाय दोष्मि जाग ति बागार्थस पञ्चया ह्येति । निरिक्ख-मज्झिमाउ
आण एक्केनात्थिम पञ्चया, कम्मइयपञ्चयामावादा । ममे सुगम ।

निरिक्ख्वाउ-निरिक्खगइ-एण्हिय-पीण्हिय-तीण्हिय-चउण्हियआदि-निरिक्खगइ-
पात्रागाणुपुण्णी आराउ-बोव-यावर-सुहूम-माहुरपमगीणं निरिक्खगइमंजुत्ता वपो । मज्झिमाउ
मज्झिमइ-मज्झिमइपात्रागाणुपुण्णी-उप्पागोदाण मज्झिमइमंजुत्ता । सेमाणं पयइय वपो
निरिक्ख-मज्झिमइमंजुत्ते । पंचिंदियमप-त्रस्य मामी । पंचद्वय सुगमं । पंचवोच्छेदो परिब ।
पंचात्मावरणीय-अवर्तमावरणीय-मिच्छत-मोत्तमकमाय मय-दुगुल्ल-सजा-कम्मइयमरी वज्ज-
गध-रम-अय अगुल्लतहुव उपपाद-विमिज-पंचतराह्याणं चउप्पिहा वंषा, पुवचंरिच्छदा ।
सेसाम सादि बद्धवो ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपञ्जत्तएसु पचणाणावरणीय-चउदसणावर
णीय-जसक्कित्ति-उच्चागोद पचतराह्याण को वधो को अवंधो ?
॥ १०३ ॥

एवं पुष्पमुत्त देसामासिरं, तपेरेण सुहृत्त्वाय पक्वणा करिरे । तं जहा — किं

मर्सयम साकह कपाय सात वाकपाय बीर वा पाग इस प्रकार ध्यासीस प्रत्यय इति
हैं । तिर्यगायु बीर मज्झिमायुक्त इकतासीस प्रत्यय इति हैं क्योंकि, उनके कर्मण प्रत्ययका
नमाम है । दोष प्रत्ययप्रकरण सुगम है ।

तिर्यगायु तिर्यगति एकत्रिय द्वीत्रिय त्रीत्रिय चतुत्रिय आति तिर्यगाति
प्रायाणापुण्णी अस्ताय उपोत स्वावर, सुहम बीर साधारण शरीर, इनका तिर्यगातिसे
संयुक्त बन्ध होता है । मज्झिमायु, मज्झिमायु मज्झिमायुप्रायाणापुण्णी बीर उप्पागोदया
मज्झिमायुतिसे संयुक्त तथा दोष प्रकृतिपौत्र बन्ध तिर्यगति व मज्झिमायुतिसे संयुक्त
होता है । पंचेन्द्रिय मपर्याप्त जीव स्वामी है । बन्ध्यावान सुगम है । बन्ध्यानुच्छेद यहाँ
है यहाँ । पांच ज्ञानावरणीय बी दर्शनावरणीय मिच्छात्य सोलह कपाय मय दुगुल्ल
तिष्ठत व कामज शरीर, बर्ष गण्य एत स्यदा अगुल्लममु उपघात निमाण बीर पांच
अन्तराय इनका चार प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि व भुवचन्वी है । दोष प्रकृतिपौत्र
सादि व भद्रुच बन्ध होता है ।

पंचेन्द्रिय बीर पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय,
यस्यस्ति, उप्पागोद बीर पांच अन्तराय, इनका क्षेत्र बन्धक बीर क्षेत्र मय-बन्धक है ।
॥ १०३ ॥

यह पृच्छासुख देशामर्शक है इसलिये इसके द्वार सुचित नवीन प्रकरण

मिष्मइष्टी वंघओ किं सासओ वंघओ किं सम्मामिष्मइष्टी वंघओ किंसजदसम्माइष्टी वंघओ
किं संजदासंजदो किं पमओ किमपमतो किमपुवो किमणियष्टी किं सुहुमसांपराइयओ किमुप-
संतकसाओ किं खीणकसाओ किं सजोगिजिओ किमजोगिमइआओ वंघओ सि एवमेसो
एगसजोगो । संपधि एसु दुसंबोगाईहि अक्खसंघार करिय सोलहसहस-तिणिसय-तेवा
सीदि-पण्णमगा उप्पाएयन्ना । किं पुव्वमेदसि वघो वोच्छिन्नइदि किमुदओ किं दो वि सर्म
वोच्छिज्जति एवमेसु तिण्णि मगा । किं सोदएण वंघो किं परोदएण किं सोदय-परोदएण
एसु वि तिण्णि मगा । किं सांतरो वघो किं भिरंतरो [किं] सांतर-गिरंतरो सि एतु वि
तिण्णिव मगा । एदासि किं मिच्छत्तप-वघो वघो किंसंजमपच्चओ किं कसायपच्चओ किं
जोगपच्चओ वंघो ति पण्णारस मूलपच्चयपण्हमंगा' हवति । एयंत-विवरिय-मूह-सिदिह
अप्पाजमिच्छत्त-चक्खु-सोद भाज-जिप्पा-पास-मज-पुइणीकइय आउकइम-तेउकइय-भाठ-
कइय-वणप्पइकाइय-तसकइयासजम-सोत्तकसाय-अवणोकसाय-पण्णारसजोगपच्चए इविय

करत हैं । यह इस प्रकार है— क्या मिष्पाइदि बन्धक है क्या सासावनसम्माइदि
बन्धक है क्या सम्मामिष्पाइदि बन्धक है क्या किंसजदसम्माइदि बन्धक है, क्या
संपतामपत क्या प्रमत्त क्या अप्रमत्त क्या अपूर्णकरण क्या अनिबृत्तिकरण क्या
सुखसाम्यराधिक क्या उपशान्तकराय क्या हीनकराय क्या सयोगी जिन या क्या
अयोगी महारक बन्धक हैं इन प्रकार ये एकसंयोगी मंग हैं । अब यहाँ द्विसंयोगादिकोंके
द्वारा अक्षसंभार करके सोमइ हजार तीन सौ तेरासौ प्रदममंग उत्पन्न कराना चाहिये ।
क्या पूर्वमे इनका बन्ध व्युत्पिच्छ होता है क्या उच्च या क्या दोनों एक साथ व्युत्पिच्छ
हाते हैं इस प्रकार यहाँ तीन मंग हाते हैं । क्या स्योदयसे बन्ध होता है क्या परोदयसे
या क्या स्योदय-परोदयमे इस प्रकार यहाँ भी तीन मंग हाते हैं । क्या साम्तर बन्ध
होता है क्या निरम्तर बन्ध होता है या क्या साम्तरनिरम्तर, इन प्रकार यहाँ भी तीन
ही मंग हाते हैं ।

इनका बन्ध क्या मिष्पात्यप्रत्यय है क्या असयमप्रत्यय है क्या कपायप्रत्यय है
या क्या योगप्रत्यय बन्ध है इन प्रकार पण्डुह मूम प्रत्यय निमित्तक प्रदममंग होते हैं ।
एकान्त विपरीत मूह [यिनय] सम्मइ और मज्झन रूप पांच मिष्पात्त, वज्जु, धोव
प्राण जिह्वा स्पर्श मन वृत्तिबीज्याधिक, अज्ज्याधिक तेजज्याधिक, पायुकाधिक, वनस्पति
काधिक और वसतकाधिक, इनक निमित्तमे हानेपास बारह अर्सयम, सोसइ कपाय मौ

सोऽस कस्या, सप्त षोडशस्य दोषिण जोगेति वादस्तीति पञ्चया इति । तिरिक्ख-मणुस्मात्
आयं एककेनातीस पञ्चया, कम्मइयपञ्चयामायाओ । सप्त सुगम ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइदिय-वीइदिय-तीइदिय-चउरिंदियवादि-तिरिक्खम-
पाभागाणुपुष्पी-मादाउ जेव-पावर-सुहुम-साहारणसगीरणं तिरिक्खगइसंहुतो बधो । मणुस्मात्
मणुसगइ-मणुसगइपाबोम्याणुपुष्पी-उच्चागोदाव मणुसगइसंहुतो । सेसाव पयदीनं बधो
तिरिक्ख-मणुसगइसंहुतो । पंचिंदियमपञ्चस्य सामी । बंधदायं सुगमं । बंधबोप्पेओ पतिव ।
पंचात्मावरणीय-अवर्दमपानरणीय-मिच्छत-सोत्सुकसाय-मय-दुगुण-तेजा-कम्मइयसरी बन्ध-
गय-रस-अस जगुस्सत्तुव उववादि-विमिक्ख-पंचतराहयाणं चउत्थिहो बधो, पुवबंधिअदा ।
सेसानं सादि अदुवो ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपञ्जत्तएसु पंचणाणावरणीय-चउदसणावर
णीय-जसकित्ति-उच्चागोद पंचतराहयाण को बधो को अवंधो ?
॥ १०३ ॥

एवं पुष्पसुत देवामासिय, तेजरेन सुखत्वायं परुवणा कीरे । तं जहा — किं

असंयम सांख्य कथाय मात मोक्षयाय और दो पाप इस प्रकार प्यासीस प्रत्यय होते
हैं । तिर्यगायु और मनुष्यायुक्त इच्छाहीन प्रत्यय होते हैं क्योंकि, उनके कर्मय प्रत्ययवा
जमाव है । शेष प्रत्ययप्रकृति सुगम है ।

तिर्यगायु तिर्यगाति ऐच्छिद्वय इच्छिद्वय भीच्छिद्वय अनुरिच्छिद्वय साति तिर्यगाति
प्रायमपानुपुष्पी माताय उपात स्वावर, सूक्ष्म और साधारण शरीर, इनका तिर्यगातिसे
संयुक्त बन्ध होता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति मनुष्यगतिप्रायमपानुपुष्पी और उच्चागात्रक
मनुष्यगतिसे संयुक्त तथा शेष प्रकृतिषोध्य बन्ध तिर्यगाति व मनुष्यगतिसे संयुक्त
होता है । ऐच्छिद्वय मपर्याय जीव स्वामी है । बन्धावधान सुगम है । बन्धनुच्छेद बहा
है नहीं । पांच ज्ञानावरणीय बी दर्शनावरणीय मिथ्यात्व सोऽह कथाय मय दुगुणा
तैजस व कर्मय शरीर, सर्व गन्ध रस स्पर्श जगुस्सत्तु उपपन्न निर्माय और पांच
अन्तराय इनका चार प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, व प्रबन्धी है । शेष प्रकृतिषोध्य
सादि व अजुब बन्ध होता है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय,
यशस्वीर्ति, उच्चागोद और पांच अन्तराय, इनका क्षेत्र बन्ध और क्षेत्र अचक्षक है ?
॥ १०३ ॥

एवं पुष्पासुत देवामयं हि हसतिव हसक ज्ञाय सुचित अयोनी प्रकृतिवा

पञ्चा उद्बो वोष्मिन्नादि, सुहुमसांपराइयचरिमसमयमिह षड्वर्षाणमेवास्ति स्त्रीकसायचरिम समयमिह उद्बयोष्मेदुर्बलेमादो । असकितीए उच्चागोदस्स य पुंश्च षो पञ्चा उद्बो वोष्मिन्नादि, सुहुमसांपराइयचरिमसमयमिह षड्वर्षाण अजोगिचरिमसमयमिह उद्बयोष्मेदुर्बलेमादो ।

पञ्चाणावरणीय-चउर्दसणावरणीय-पञ्चतराइयाणं सोद्बो षो । असकितीए मिष्साइट्ठिप्पहुडि जाव असज्जदसम्माइडि सि सोदय-परोदएण षो, एदेसु अजसकितीए वि उद्बयर्दसणादो । उवरि सोदएणैव, पडिवक्खुदयामावादो । मिष्साइट्ठिप्पहुडि जाव संज्जा सज्जो [सि] उच्चागोदस्स सोदय परोदएण षो, एदेसु बीजागोदस्स वि उद्बयर्दसणादो । उवरि सोद्बो, पडिवक्खुदयामावादो ।

पञ्चाणावरणीय चउर्दसणावरणीय-पञ्चतराइयाणं भिरतरो षो, सम्पगुणहाजेसु वि एगसमएण षेवबोष्मदामावादो । असकितीए सांतर भिरतरो षो, मिष्साइट्ठिप्पहुडि जाव पमसर्मज्जो सि सांतरो षो, एदेसु पविक्खपयडिवचर्दसणादो उवरि भिरतरो, पडिवक्खु ।

अन्तरायका पूर्वमे बन्ध और पश्चात् उद्बय व्युत्पिन्न होता है क्योंकि, सूक्ष्मसाम्प्रदायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमे बन्धक मष्ट हो जानेपर स्त्रीकसाय गुणस्थानके अन्तिम समयमे उत्तक उद्बयव्युत्पेद पाया जाता है । वराक्षीति और उच्चगोत्रका पूर्वमे बन्ध और पश्चात् उद्बय व्युत्पिन्न होता है क्योंकि, सूक्ष्मसाम्प्रदायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमे बन्धक मष्ट हो जानेपर मयोगिकेवकीके अन्तिम समयमे इसका उद्बयव्युत्पेद पाया जाता है ।

पांच ब्रह्मावरणीय चार ब्रह्मावरणीय और पांच अन्तरायका स्त्रोद्बय बन्ध होता है । वराक्षीतिक मिष्याइडिसे लेकर मसंयतसम्यग्दृष्टि तक स्त्रोद्बय परोद्बयसे बन्ध होता है क्योंकि इन गुणस्थानोंमे मघराक्षीतिक भी उद्बय देखा जाता है । ऊपर इसका स्त्रोद्बयमे ही बन्ध होगा है क्योंकि, वहां मघराक्षीतिक उद्बयका अभाव है । मिष्याइडिसे लेकर संयतासंयत तक उच्चगोत्रका स्त्रोद्बय परोद्बयस बन्ध होता है क्योंकि इन गुणस्थानोंमे बीजगात्रका भी उद्बय देखा जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमे उत्तक स्त्रोद्बयस बन्ध होता है क्योंकि वहां बीजगोत्रक उद्बयका अभाव है ।

पांच ब्रह्मावरणीय चार ब्रह्मावरणीय और पांच अन्तरायका भिरस्तर बन्ध होता है क्योंकि सब गुणस्थानोंमे ही एक समयसे इनके बन्धव्युत्पेदका अभाव है । वराक्षीतिक सात्तर-भिरस्तर बन्ध होता है क्योंकि, मिष्याइडिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक इनमे मनिपस मङ्गलिका बन्ध देले जानमे सात्तर बन्ध होता है और इससे ऊपर

चोदससदएकेतासीसकोडाकोडी-पम्मारसलभस-अङ्गारससहस्रम् अङ्गसय-सतकेडी-अङ्गववास-
 ठस-बंभबंवाससहस्रम् अङ्गसय एकहृतिठसपन्चयपम्भमगा ठप्पाएदम्भा १४४११५
 १८८ ७५८५५८७१ । किं विरयगाइसंहुत वन्धति किं तिक्किस्सगाइसंहुत किं मजुस्सगाइसंहुत
 [किं देवगाइसंहुत] इदि एत्थ पण्णारस पण्हमंगा ठप्पाएदम्भा । अङ्गारमयपमार्भ सुमम् ।
 किम्पिदगुणैङ्गाम्मादि ए मग्गे भेति बंधो वोच्छिम्भदि ति एकेककग्गिह मुण्डाणे तिप्पि
 तिप्पि मंगा ठप्पाएदम्भा । सम्भवपवोच्छेत्तपण्हसमासो वापत्तात्मीम् । किं सादिभो बंधो
 किम्मादिभो किं धुवो किम्भुवो ति एत्थ पण्णारस पण्हमगा ठप्पाएदम्भा ।

मिच्छाइट्टिण्हुडि जाव सुहुमसापराइयसुद्धिसंजदेसु उवसमा
 स्ववा धधा । सुहुमसापराइयसुद्धिसजदद्वाए चरिमममय गतूण बंधो
 वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेमा अवधा ॥ १०४ ॥

एदम्भ अग्गो उच्छेदे— पञ्चपातावरणीय-चउदममावरणीय-बंधंतराव्याप्तं पुन्य बंधो

माकताय भौट पण्ह पाग इम प्रत्ययोंक्य स्थानि कत बीइह सी इकतासीम् कंकायाही
 पण्ह लाल अङ्गारह इङ्गार, भाठ सी लाल कटोइ मङ्गलम माळ पञ्चमम इङ्गार, भाठ सी
 इकता उत्तर प्रत्यय मिमित्तक प्रहर्मग उत्पद्य करत्ता चाहिये । १४४११५/८०४५८५५८७१ ।

य क्या मरकगतिम् संयुक्त बंधन है क्या निर्पगगतिम् संयुक्त बंधन है क्या
 अनुप्यगतिम् संयुक्त बंधन है, [या क्या देवगतिम् संयुक्त बंधन है] इम प्रकार यही
 पण्ह प्रहर्मग उत्पद्य करत्ता चाहिये । यन्माप्तालक्य मंगप्रमाज सुमम् है । क्या विवर्तिन
 शुक्लमाजक्य मादिमं मय्यमं वा भन्तमं पन्थ प्पुच्छिय हला है, इस प्रकार एक एक
 शुक्लमाजमं तीन तीन मंग उत्पद्य करत्ता चाहिये । वन्धप्पुच्छियक्य प्रहर्माविपयक्य सर्व
 मंगोंक्य पाग प्पासीस हाता है । क्या मादि क्या अवादि क्या मुच और क्या अङ्गुच वन्ध
 हाता है इम प्रकार यही पण्ह प्रहर्मग उत्पद्य करत्ता चाहिये ।

मिप्पाएद्विमे सेकर सुम्माम्पायिकमुद्धिसंयतकठके अन्तिम समयके जाकर पन्थ प्पुच्छिय होत है । ये
 वचक है, सेव अचवचक है ॥ १०४ ॥

इस मूलक्य अर्थ कहत है— पाँच ज्ञानावरणीय चार दर्शनावरणीय और पाँच

१ इति ८८ वरुणरी इति वरु ।

इति वचन वचनमय इति वरु ।

२ अवादी- विवर्तिनपुन्य वचनी विवर्तिनपुन्य इति वरु ।

पञ्च उदयो वोष्णिञ्जदि, सुहुमसांपराइयचरिमसमयमिदं षड्विंशतमेदसि स्त्रीषकस्याचरिम समयमि उदयवोष्णेदुक्तमादो । असकिटीए उवागोदस्स य पुंषं षो पञ्च उदयो वोष्णिञ्जदि, सुहुमसांपराइयचरिमसमयमि षड्विंशतं अनोगिचरिमसमयमि उदय वोष्णेदुक्तमादो ।

पञ्चपात्रावरणीय-चउदसपावरणीय-यचंतराइयाण सोदयो षो । असकिटीए मिष्साइट्टिप्पहुडि जाव असजदसम्माइडि ति सोदय-परोदण षो, एदेसु असकिटीए वि उदयदंसपादो । उवरि सोदयएव, पडिवक्खुदयामावादो । मिष्साइट्टिप्पहुडि जाव संजदा संजदो [ति] उवागोदस्स सोदय परोदण षो, एदेसु वीवागोदस्स वि उदयदंसपादो । उवरि सोदयो, पडिवक्खुदयामावादो ।

पञ्चपात्रावरणीय चउदसपावरणीय-यचंतराइयाण भिरंतरा षो, सध्वगुणहायेसु वि एगसमएण षोवोष्णेदामावादो । असकिटीए सांतर भिरंतरो षो, मिष्साइट्टिप्पहुडि जाव पमत्तमंइदो ति सांतरो षो, एदेसु पविक्खपयडिबंभदंसपादो, उवरि भिरंतरो, पडिवक्ख

अन्तरायक पूर्वमे बन्ध और पश्चात् उदय व्युत्पन्न होता है क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्यात्मके अन्तिम समयमे बन्धक नष्ट हो जानेपर क्षीणकयाय गुणस्यात्मके अन्तिम समयमे उसका उदयव्युत्पन्ने पाया जाता है । यथाकीर्तिक और उच्चगोत्रका पूर्वमे बन्ध और पश्चात् उदय व्युत्पन्न होता है क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्यात्मके अन्तिम समयमे बन्धक नष्ट हो जानेपर अयोगिकेबलीके अन्तिम समयमे इसका उदयव्युत्पन्ने पाया जाता है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायक स्वोदय बन्ध होता है । यथाकीर्तिक मिष्साइट्टिसे छेकर असंयतसम्पगच्छि तक स्वोदय परोदयसे बन्ध होता है क्योंकि, इन गुणस्यात्मोमे मयशाकीर्तिक भी उदय देखा जाता है । ऊपर इसका स्वोदयसे ही बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ मयशाकीर्तिक उदयका ममाव है । मिष्साइट्टिसे छेकर संयतासंयत तक उच्चगोत्रका स्वोदय परोदयस बन्ध होता है क्योंकि, इन गुणस्यात्मोमे नीचगोत्रका भी उदय देखा जाता है । उपरिम गुणस्यात्मोमे उसका स्वोदयस बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ नीचगोत्रके उदयका ममाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तरायक विरन्तर बन्ध होता है क्योंकि सब गुणस्यात्मोमे ही एक समयसे इसके बन्धव्युत्पन्नेका ममाव है । यथाकीर्तिक साम्तर विरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, मिष्साइट्टिसे छेकर प्रमत्तसंयत तक इनमे मनिपक्ष मङ्गलिक बन्ध दूखे जानमे साम्तर बन्ध होता है और इससे ऊपर

पयडीण वधामावाहो । उत्पामोदस्म मिच्छाद्वि-सामभेसु सान्तर-विरतये । असंख्येनैवासाउभ-
तिरिक्त्वा-ममुस्तेसु, संख्येनैवासाउभमुदित्वेस्मिन्सु विरतरवचंसपाहो । उपरिममुभ-
विरतये, पवित्रकउपयडीण वधामावाहो । पञ्चपार्श्व मूत्रेयमंगो । गङ्गामुखादि उपरि
जापिय वत्तम् ।

णिहाणिहा-पयलापयल-यीणगिदि-अणताणुवधिकोध-माण-
माया-ल्लेम-इत्येवेद-तिरिक्त्वाउ तिरिक्त्वागह-चउसठाण-चउसघटण-
तिरिक्त्वागहपाओग्गाणुपुब्बी उब्बोव अप्पसत्यविहायगह-दुमग-दुस्सर-
अणादेज्ज-णीचागोदाण को वंधो को अबधो ? ॥ १०५ ॥

सुपमं ।

मिच्छाद्वि सासणसम्माद्वि वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा
॥ १०६ ॥

प्रतिपक्ष प्रकृतिके वधका अभाव होनेसे उसका निरन्तर वध होता है । उत्पयोदका
मिच्छाद्वि और सासणसम्यग्द्वि गुणस्थानीमें सात्तर निरन्तर वध होता है क्योंकि,
यहाँ अत्यन्तवर्षायुष्क निर्बन्ध व मनुष्योंमें तथा सर्वथातर्षायुष्क नील शुभ सेइया
बाळोंमें असंख्य निरन्तर वध देखने जाता है । उपरिम गुणस्थानीमें निरन्तर वध
होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके वधका अभाव है । मत्पयोकी प्रकृष्टता मूत्रेयके
समल है । पतिसमुत्तारि उपरिम पृच्छार्थोंके विषयमें आनन्द कहमा चाहिये ।

निग्राणिग्रा, प्रवत्तप्रवत्त, स्त्यानणदि अनन्तानुबन्धी श्रेष्ठ, मान, माया, ल्लेम,
कीमेद, तिर्यगासु, तिर्यमाति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यमातिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत,
अप्रसत्ताविहायमति, दुर्मग, दुस्सर, वनादेय और नीचगोत्र, इनका कौन वन्धक और कौन
अवन्धक है ? ॥ १ ५ ॥

वह सब सुगम है ।

मिच्छाद्वि और सासणसम्यग्द्वि वन्धक हैं । ये वन्धक हैं, छेप अवन्धक हैं
॥ १ ६ ॥

एदस्स अत्थां पुञ्चदे—धीमहिदितियस्स पुञ्च बवो पञ्च उदमा वोच्चिञ्जदि,
सासणसम्मादिहि पमत्संअदेसु जहासखाए बवोदयवोच्छेददसणादो । अपत्ताणुपेधिरउक्कस्स
दो वि समं वोच्चिञ्जति, सासणे तदुमयामवदंसणादो । इत्थिवेदस्स पुञ्च बवो पञ्च
उदमो वोच्चिञ्जदि, सासणाणियहीसु जहासखाए बवोदयवोच्छेदुवत्तमादो । तिरिक्खाउ
तिरिक्खगइ-उज्जोव-णीघायोदाण पुञ्च बवो पञ्च उदमो वोच्चिञ्जदि, सासणसम्मादिहि-
सज्जदसंजवेसु तेसिं दोण्ण वोच्छेदुवत्तमादो । अउसत्ताणपं पुञ्च बवो पञ्च उदमो वोच्चि-
ञ्जदि, सासण-सजोगीसु तेसिं दोण्ण वोच्छेदुवत्तमादो । एव अउसत्तपणपं वि वत्तव्वं,
सासण पिट्ठपघाणमण्णमजुवत्तत्तकसाएसु पढम-विदियसंघट्ठगदुगोदयवोच्छेदवत्तमादो । एवं
तिरिक्खगइपाजोगाणुपुत्थी दुमग-अपादेज्जापं वत्तव्वं सासण-असंजदसम्मादिहीसु बवोदय
वोच्छेदवत्तमादो । एवमण्यसत्यविहायमइ-दुस्सरपं वत्तव्वं, सासण-सजोगीसु बवोदयवोच्छेद
वत्तमादो ।

इस सूत्रका अर्थ कहत है— स्थापनपुच्छिन्नपक्ष पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय
पुच्छिन्न होता है क्योंकि, सासादनसम्पन्नद्वि और प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें यथाक्रमसे इसके
बन्ध व उदयका प्युच्छेद देखा जाता है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों
एक साथ प्युच्छिन्न होते हैं क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका समाव देखा जाता
है । तीर्थेदक पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय प्युच्छिन्न होता है क्योंकि, सासादन और
अभिहितकरण गुणस्थानोंमें यथाक्रमसे उसके बन्ध व उदयका प्युच्छेद पाया जाता है ।
तिर्यगायु, तिर्यग्गति उद्योत और नीचगोच इनका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय
प्युच्छिन्न होता है क्योंकि सासादनसम्पन्नद्वि और संयतासंयत गुणस्थानोंमें क्रमशः इन
दोनोंका प्युच्छेद पाया जाता है । चार संस्थानोंका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय
प्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादन और सयोगकेबली गुणस्थानोंमें उन दोनोंका
प्युच्छेद पाया जाता है । इसी प्रकार चार संस्थानोंका भी पूर्व पश्चात् बन्धोदयप्युच्छेदको
कहना चाहिये क्योंकि सासादन गुणस्थानमें बन्धके मध्य हो जानेपर अग्रमत्त व
उपशान्तकपाय गुणस्थानोंमें क्रमसे उक्त चार संस्थानोंके प्रथम व द्वितीय पुगसके
उदयका प्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार तिर्यग्गतिप्रयोगानुपूर्वी दुर्भग और
मनोदेयके भी कहना चाहिये क्योंकि, सासादन व असंयतसम्पन्नद्वि गुणस्थानोंमें
क्रमशः इनके बन्ध व उदयका प्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार अग्रशान्तविहायोगति
और तुस्वरके भी कहना चाहिये क्योंकि, सासादन और सयोगकेबली गुणस्थानोंमें
इनके बन्ध व उदयका प्युच्छेद देखा जाता है ।

वयदीय वधामावाधो । उष्मागोदस्स मिच्छाद्वि-सासणेसु सांतर-भिरतरो । वससेन्वैवासाउक्-
तिरिक्ख-अणुस्सेसु, संखेय्यवासाउक्कसु इति वेस्मिणसु भिरतरवधसंज्ञादो । उपरिमणुस्से
भिरतरो, पडिक्खत्तपयदीय वधामावाधो । पञ्चपात्र मूत्रेपसंगो । गइसइच्छदि उपरि
आभिय वत्तम् ।

णिदाणिदा-पयलापयला-धीणगिद्धि-अणताणुवधिकोध-मान-
माया-लोम इत्येवेद-तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-चउमअण-चउसंघडण-
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बी-उब्बोव अप्पसत्थविहायगइ-दुमग-दुस्सर-
अणादेज्ज-णीचागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ १०५ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्टी सासणसम्माद्विष्टी वधा । एदे वंधा, अवमेसा अवधा
॥ १०६ ॥

प्रतिपक्ष प्रकृतिके वधवत्त समान होनेसे उसका भिन्नतर वध होता है । उष्मगोदका
मिच्छाद्विष्टी और सासणसम्पन्नद्विष्टी शुक्लस्थानोंमें सांतर भिरतर वध होता है क्योंकि,
यहाँ जलन्यातवधायुष्क निर्वेध व मनुष्योंमें तथा संख्यातवधायुष्क नील शुभ सेवका-
बाहोंमें समक भिरतर वध होता आता है । उपरिम शुक्लस्थानोंमें भिरतर वध
होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिक वधवत्त समान है । प्रत्ययोंकी प्रकृष्टता मूलापक
समान है । पतिसंयुद्धादि उपरिम पृच्छाओंके विषयमें जानकर कहना चाहिये ।

निदानिडा, प्रवत्तप्रवत्त, स्त्यानगुद्धि, अनन्ताणुवधी क्रोध, मान, माया, लोम,
मीनद, विषाणु, विषमाति, चार संस्थान, चार संहनन, नियगतिप्रायोम्याणुपूर्वी, उद्योत,
अप्रशस्तविद्ययोगति, दुमग दुम्बर, वनदेय और नीचगोत्र, इनका कौन वधवत्त और कौन
अवधवत्त है ? ॥ १०५ ॥

यह सब सुगम है ।

मिच्छाद्विष्टी और सासणसम्पन्नद्विष्टी वधवत्त है । ये वधवत्त हैं, येय अवधवत्त हैं
॥ १०६ ॥

णिदा-पयलाण को वधो को अवधो ? ॥ १०७ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्टिपट्टि जाव अपुव्वकरणपविट्टसुद्धिसज्जदेसु उव
समा खवा वधा । अपुव्वकरणसज्जदद्वाए सस्सेज्जदिम भाग गतूण
वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १०८ ॥

एदम्स अत्थो उच्चदे—वधो एदस्मिं पुण्ण बोधिसज्जदि पच्छा उदयो, अपुव्व
खीणकसाएसु कमेण पयोदयबोच्छेदसपादो । सोदय-परोदण सम्बगुणहाणेसु वधो,
अदुबोदयत्तादो । पितरे, पुत्रवधित्तादो । पच्छया सम्बगुणहाणेसु बोधपच्छयतुत्त्व ।
मिच्छाद्विष्टि चठगइसत्तुत्त, सासणो तिगइसत्तुत्त, सम्मामिच्छाद्विष्टि असज्जदसम्माद्विष्टि दुगइसत्तुत्त,
सेसा देवगइसत्तुत्त । गइसमित्तादण-वधवाच्छेदकपाणि सुगमाणि । मिच्छाद्विष्टि चठ
विष्टो वधो । सेसेसु तिविष्टा, पुत्रतामात्रो ।

सातावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ १०९ ॥

निद्रा और प्रपञ्चक कैन बन्धक और कैन अबन्धक है ? ॥ १०७ ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि लेकर अपूर्वकरणप्रविष्टिशुद्धिसंयतोमि उपशमक व क्षयक तक बन्धक
है । अपूर्वकरणसंयतकालके संत्यातवें माग जाकर बन्धव्युच्छेद होता है । ये बन्धक हैं,
शेष अबन्धक हैं ॥ १०८ ॥

इस सूचक अर्थ कहत हैं— इसका बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है और उदय
पश्चात् क्योंकि अपूर्वकरण व खीणकपाय गुणस्थानोंमें हमसे इनके बन्ध और उदयका
व्युच्छेद देखा जाता है । सब गुणस्थानोंमें इनका बन्ध लोच्य पराक्षसे होता है क्योंकि
वे समुबोध्यो हैं । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, भुवबन्धी हैं । प्रत्यय सब गुणस्थानोंमें
बोधप्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि चारों गतिपोंसे संयुक्त सासाहमसम्पत्ति तीन
गतिपोंसे संयुक्त सम्पत्तिमिथ्यादृष्टि और असंयतसम्पत्ति दो गतिपोंसे संयुक्त तथा शेष
गुणस्थानवर्ती देवगतिसे संयुक्त बांधते हैं । गतिस्वामित्व सम्मान और बन्धव्युच्छेदस्थान
सुगम हैं । मिथ्यादृष्टिके चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका
बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ भुव बन्धका समाव है ।

सातावेदनीयस्स कैन बन्धक और कैन अबन्धक है ? ॥ १०९ ॥

वीजमिदितियादीनां स्रज्यासिं पयडीन बंधो संख्य-परोक्षो, उभयथा वि विरोध-
मात्रा । धीजमिदितिय-मपतापुनविचठक-तिरिक्खाठभाष विरंतरो बंधो, एगसमएन
बंधुकरमावायो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइयाभोग्मागुपुष्पी-बीजागाइयां संतर-विरंतरो बंध ।
कथं विरंतरो ? न, तेउ-वाठकइयचरपविदियमिच्छइइसु सत्तमपुइवीमिच्छइइ-सम-
सम्माइइवेइएसु पिरतरबंधुवत्तमायो । सेसए संतरो बंधो, एगसमएन बंधुकरमदंमवायो ।
पञ्चया बोधपञ्चयतुत्त । तिरिक्खाठ तिरिक्खगइयाभोग्मागुपुष्पी-उ-जोनावि हो वि
तिरिक्खगइसंतुत्तं, इतिवेइं गिरयगइए विना तिगइसंतुत्तं, चठसंअण चठसंपइयावि हो वि
तिरिक्ख-मनुसगइसंतुत्तं, जणसरबनिहायगइ-जुमग-जुस्सर जणवेज्ज-बीजागोइयि मिच्छइइ
तिगइसंतुत्तं बंधइ देवगइए विना, सासयो तिरिक्ख-मनुसगइसंतुत्तं । मसाओ पयडीया
मिच्छइइ चठगइसंतुत्तं सामणा तिमइसंतुत्तं । सेस विनिध वत्तम् ।

स्थानपूजिष्य मासिक सब प्रकृतिबोका बन्ध स्वादय परादय होता है, क्योंकि,
बातों प्रकारसे मी उक्त बन्धक विरोध नहीं है । स्थानपूजिष्य धनतापुनविचठक
और तिर्यगायुका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे इसके बन्धविग्रामका
समाप्त है । तिर्यगति तिर्यगतिप्रत्योस्यानुपूर्वी और बीजागोत्रका सात्तर निरन्तर बन्ध
होता है ।

संक्षेप—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह शंका ठीक नहीं क्योंकि तत्कालिक व वायुकायिक जीवोंमें
माकर पंचन्द्र मिष्यादिषोमें उत्पन्न हुए जीवों तथा सज्जम पृथिवीके मिष्यादि व
सासात्तसम्प्रादि नादिकोंमें उक्त प्रकृतिबोका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

शेष प्रकृतियोंका सात्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे उक्त बन्धका
विग्राम होता जाता है । मत्तबोधी प्रकृति जोषप्रत्ययोंके समान है । तिर्यगायु, तिर्यगति
प्रत्योस्यानुपूर्वी और उपोत्तका दोनों ही गुणस्थानकी जीव तिर्यगतिसे संयुक्त
बांधते हैं । लीबकके नरकगतिके बिना तीन गतिबोके संयुक्त बांधते हैं । बा
संस्थान और बा संज्ञनको होती है । तिर्यगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं ।
अप्रहास्तविहायोगति जुमग जुस्सर, मनादेव और बीजयोगके मिष्यादि देवगतिके
बिना तीन गतिबोके संयुक्त बांधते हैं तथा सासात्तसम्प्रादि तिर्यगति व
मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । शेष प्रकृतियोंके मिष्यादि बाते गतिबोके संयुक्त
और सासात्तसम्प्रादि तीन गतिबोके संयुक्त बांधते हैं । शेष विचार कर करना चाहिये ।

णिह्वा-पयलाण को वधो को अवधो ? ॥ १०७ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्टिपट्टि जाव अपुव्वकरणपविट्टसुद्धिसज्जदेसु उव समा सवा वधा । अपुव्वकरणसज्जदद्वाए ससेज्जदिम भाग गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १०८ ॥

एदस्स अरथो उच्चदे—वंधो एदासि पुत्र बोधिज्जदि पच्छा उदयो, अपुव्व सीपकसाएसु क्रमेण वंधोदयवोच्छेदसणादो । सोदय-परोदयण सव्वगुणद्वारेसु वंधो, अद्भवोदयणादो । मित्तरो, धुव्वविद्यादो । पच्छया सव्वगुणद्वारेसु ओपपच्चयतुत्थ । मिच्छाद्विष्टी षठ्ठाइसंभुत्त, सासणो तिगइसंभुत्त, सम्मामिच्छाद्विष्टी असज्जदसम्माद्विष्टी दुगाइसंभुत्त, सेसा देवगाइसंभुत्त । गइसामित्तद्वाण-वधवोच्छेदद्वाणाणि सुगमाणि । मिच्छाद्विष्टिस्स षठ्ठ-म्विहो वंधो । सेसेसु तिविहा, धुव्वतामावादो ।

सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ १०९ ॥

निद्रा और प्रसन्नकर कौन बन्धक और कौन वधन्धक है ? ॥ १०७ ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे उत्तर अपूर्वकरणप्रविष्टिमुद्धिसंयतोमें उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरणसंयतकरलके संख्यातवें माग आकर बन्धव्युच्छेद होता है । ये बन्धक हैं, शेष वधन्धक हैं ॥ १०८ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहत हैं— इनका बन्ध पूर्वमें व्युच्छिद्य होता है और उदय पश्चात् क्योंकि, अपूर्वकरण व सीपकसाय गुणस्थानोंमें कमसे इनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । सब गुणस्थानोंमें इनका बन्ध श्लोदय परोदयसे होता है, क्योंकि वे मनुबोधयी हैं । मित्तर वन्ध होता है क्योंकि, धुव्वबन्धी हैं । प्रत्यय सब गुणस्थानोंमें आद्यप्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि आर्ये गतिपोंसे संयुक्त सासात्तनसम्पददि तीन गतिपोंसे संयुक्त सम्पत्तिमिथ्यादृष्टि और असंयतसंगघटाए दो गतिपोंसे संयुक्त तथा शेष गुणस्थानवर्ती देवगतिसे संयुक्त बंधते हैं । गतिरनामित्थ अरवान और बन्धव्युच्छेदस्थान सुगम है । मिथ्यादृष्टिके आर्ये प्रकारका बन्ध होता है । शेष गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि वहाँ सब बन्धका समान है ।

सादावेदनीयस्स कौन बन्धक और कौन वधन्धक है ? ॥ १०९ ॥

सुगम ।

मिच्छादृष्टिपुण्ड्रि जाव सजोगिकेवली यथा' । सजोगिकेवल्लि
अद्वाए चरिमसमयं गतूण बंधो वोच्छिन्नजदि । एदे वधा, अवसेसा
अवधा ॥ ११० ॥

एदस्म अत्सो उच्छेदे— वधा पुण्य पन्था उद्बजो वाप्तिष्णा, सजोगिकेवलि-
अजोगिकेवलीसु अज्ञानमेण बंधोदयवोच्छेदसंज्ञादो । सोदय-परोदयस बंधो, सध्यमुपग्राप्तेसु
अद्बोदयज्ञादो । मिच्छादृष्टिपुण्ड्रि जाव फलसंबन्धो ति संतरो बंधो, एगसमयस बंधुबन्ध-
दसंज्ञादो । उपरि विरतरो, पडिबन्धसम्बन्धो वधामावादो । पन्थया सध्यगुणद्वयसु बोधसम्ब-
तुस्स । मिच्छादृष्टि-सासकसम्मादिष्टिबो तिगइसंज्ञुत्तं, विरयगइण सह सादबंधामावादो । संस
सध्यमोपतुस्तं ।

असादवेदणीय-अरदि-सोग अथिर-असुह-अजसकित्तिणामाण
को बंधो को अवंधो ? ॥ १११ ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं । सयोगकेवलिकृतके अन्तिम
समयके जाकर बन्धमुच्छेद होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ ११ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— सातावेदनीयका बन्ध पूर्वमें और उदय पश्चात्
प्युच्छिद्य होता है क्योंकि, सयोगकेवली और अयोगकेवली गुणस्वामीमें क्रमसे उच्छेद
बन्ध और उदयस्य प्युच्छेद देखा जाता है । सादय परादयसे बन्ध होता है क्योंकि,
यह सब गुणस्वामीमें अद्बोदयी है । मिथ्यादृष्टिसे संकर प्रमत्तसंयत तक सात्तर
बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ एक समयसे उत्पत्ता बन्धविग्राम देखा जाता है ।
प्रमत्तसंयतसे ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका
अभाव है । प्रत्यय सब गुणस्वामीमें बोधप्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि और सासात्तन
सम्यग्दृष्टि तीन गतिधर्मोंसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि, नरकगतिसे साय सातावेदनीयका
बन्ध नहीं होता । शेष सब प्रकृष्टा बोधक समान हैं ।

असातावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अमशकीर्ति नामकर्मका कौन
बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १११ ॥

१ शरीर वधा इति पाठ ।

२ अ-वन्धनीय वधा इति पाठ ।

[सुगमे ।]

मिच्छाहृष्टिपहुडि जाव पमत्तसजदो ति वधा । एदे वधा,
अवसेसा अवधा ॥ ११२ ॥

असादावेदणीयस्स पुण्व पधो पच्छ उदलो बोधिमणो, पमत्त-अजोगिकिवलीसु जहा-
कमेण बधोदयवोच्छेदुवर्त्तमादो । एवमरदि-सोगाण वत्तव्य, पमत्तपुण्वकरणेसु बधोदयवोच्छेद-
दसगादो । एवं धेव अघिर असुहाणं वत्तव्य, पमत्त-अजोगिकिवलीसु बधोदयवोच्छेदुवर्त्तमादो ।
अजसकितीए पुण्वमुदलो पच्छा बंधो बोधिमणो, पमत्तसजद-असजदसम्मादिहीसु पधोदय
वोच्छेदुवर्त्तमादो ।

असादावेदणीय-अरदि-सोगाण सोदय-परोदएण सध्वगुणद्वारेसु पधो, परावत्तजोदय
सादो । अघिरासुभाणं सध्वत्थ' सोदएण पधो, पुबोदयसादो । अजसकितीए मिच्छाहृष्टिपहुडि
जाव असजदसम्मादिहि ति सोदय परोदएण बंधो, एदेसु पश्चिदसोदएण वि बंधुवर्त्तमादो ।

[यह सब सुगम है ।]

मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, जेप जीव अवबन्ध
है ॥ ११२ ॥

असादावेदणीयका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युत्पिन्न होता है क्योंकि
प्रमत्तसंयत और अयोगकबली गुणस्थानोंमें यथाक्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्युत्पेद
पाया जाता है । इसी प्रकार अरदि और शोकक कहना चाहिये क्योंकि, प्रमत्त और
अपर्यकरण गुणस्थानोंमें क्रमशः इनके बन्ध और उदयका व्युत्पेद देखा जाता है । इसी
प्रकार ही अस्थिर और मशुमक भी कहना चाहिये क्योंकि प्रमत्त और सयोगकबली
गुणस्थानोंमें उनका बन्ध और उदयका व्युत्पेद पाया जाता है । अयत्ताधीनिक पूर्वमें
उदय और पश्चात् बन्ध व्युत्पिन्न होता है क्योंकि, प्रमत्तसंयत और असंयतसम्पदहि
गुणस्थानोंमें क्रमसे बन्ध और उदयका व्युत्पेद पाया जाता है ।

असादावेदणीय अरदि और शाकका सब गुणस्थानोंमें स्वादय-परोदयस
बन्ध होता है क्योंकि इनका उदय परिपलनशील है । अस्थिर और मशुमका सर्वत्र
स्वोदयस बन्ध होता है क्योंकि, ये सुबोदयी हैं । अयत्ताधीनिक मिथ्यादृष्टिसे लेकर
असंयतसम्पदहि तक स्वादय-परोदयस बन्ध होता है क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें अनिपक्ष
प्रकृतिके उदयका साथ ही उदयका बन्ध पाया जाता है । इसका ऊपर पदपदसे

उपरि परोक्ष, असकिर्षी चैव तथोदयदसपादो । एदासि छन्द पवहीन सांतरो वधो,
दो-तिग्गिसमसादिक्कल्लमिद्विद्वन्धनिसमामावादो । पञ्चमा सुगमा । एदाओ छप्पवधीओ
मिच्छाह्दी चउमइसद्धत्तं, सासणो तिगइसद्धत्तं, सम्मामिच्छाह्दी अमंजदसम्माह्दी दुगइसद्धत्तं,
उपरिमा देवगइसद्धत्तं वंथंति । उवरि चोपमंगो ।

मिच्छत्त-णसुसयवेद-णिरयाउ णिरयगइ एइदिय-वीइदिय-तीइ-
दिय-चउरिंदियजादि-हुइसठाण-असपत्तसेवट्टसघडण-णिरयाणुपुब्बी-
आदाव यावर-सुद्धम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाण को वधो को
अवधो ? ॥ ११३ ॥

सुगम ।

मिच्छाह्दी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ११४ ॥

‘ एदे वधा ’ ति णिरेसो अणग्गमो, भवगदट्टपकूवणादो । प एस हेसो,

बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ यथाकौतिल्य ही उदय वधा जाता है । इन छह प्रकृतियोंका
सांतर बन्ध होता है क्योंकि, दो-तीन समयादि रूप काकसं सम्बन्ध इनके बन्धके
मिथमक्य अभाव है । प्रत्यय सुगम है । इन छह प्रकृतियोंको मिथ्यादि चार गतियोंमें
संयुक्त सासादनसम्पददि तीस गतियोंमें संयुक्त सम्मग्गिमिथ्यादि च असेवतसम्पददि
दो गतियोंमें संयुक्त तथा उपरिम जीव देवगतिमें संबन्ध बाँधते हैं । उपरिम प्रकृष्टा
जीवके समान है ।

मिथ्यास्व, नपुंसकवेद, नारक्यु, नारकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय,
चतुरिन्द्रिय जाति दुग्धमंस्थान, असंप्राप्तसुपाटिकसहनन, नारकानुपूर्वी, आताप, स्वात्तर,
सुक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणछरीर नामकर्मक कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ?
॥ ११३ ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्यादि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अप अबन्धक हैं ॥ ११४ ॥

सूक्त— ये बन्धक हैं यह निर्देश आवश्यक है, क्योंकि, यह ज्ञात अर्थका
प्रकरण करता है ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, मेधावर्जित अर्थात् मूर्ख अर्थोंके

मेहावन्जियवणापुगहट्टं तप्पिरेसादो । मिच्छत्त-अपन्नत्ताण पंचोदया समं वोच्छिन्नजति,
मिच्छाद्विद्धि चैय तदुमयवोच्छेददसणादो । एइदिय-वीइदिय-तीइदिय-चठरिदियनादि
आदाव-यावर-सुद्धुम-साहारणाणमेस विचारो पत्थि, पंचिदियसु तेसिमुदयामात्रादो । अवरि
पंचिदियपञ्चतण्डु अपन्नत्तस्स वि एसो विचारो पत्थि पि वत्तव्व । पवुसयवेदस्स पुव्वं पंचो
पन्ना उदमो वोच्छि-जदि, मिच्छाद्विद्धि-अपिपत्तिगुणेषु पंचोदयवोच्छेददसणादो । एव
पिरयाठ-गिरयगह-गिरयापुपुव्वीण वत्तव्वं, मिच्छाद्विद्धि असंजदसमादिहीसु पंचोदयवोच्छेददस
णादो । एवं दुइसंठापम्म अत्तव्वं, मिच्छाद्विद्धि-सज्जोगिकेवलीसु पंचोदयवोच्छेददसणादो ।
एवमसपत्तसेवइसंयइमस्स वि वत्तव्वं, मिच्छाद्विद्धि-अप्पमत्तेसु पंचोदयवोच्छेदुवत्तमादो ।

मिच्छत्तस्स मोदण्ण बवो, पुव्वोदयत्तादो । पवुमयवेद अप-जत्ताण सोदय-परोदमो,
अदुवोदयत्तादो । अवरि पंचिदियपञ्चतण्डु अपन्नत्तस्स परोदमो पंचो, तत्प तदुदयामात्रादो ।

अनुग्रहके सिधे यह निवेदा किया गया है ।

मिथ्यात्व और अपयान्तक बन्ध व उदय दोनों एक साथ व्युत्पिन्न होते हैं क्योंकि मिथ्याद्वि गुणस्थानों में ही उन दोनोंका व्युत्पन्न देखा जाता है । एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय जात भूताप स्थावर, सूक्ष्म और साधारण इन प्रकृतिपोंके यह विचार नहीं है क्योंकि, एकेन्द्रिय जीवोंमें उनके उदयका अभाव है । विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय पयान्तकोंमें अपयान्त प्रकृतिके भी यह विचार नहीं है एसा कहना चाहिये । नपुंसकबेदा पूर्वेमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युत्पिन्न होता है क्योंकि, मिथ्याद्वि और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानोंमें क्रमशः उसके बन्ध और उदयका व्युत्पन्न देखा जाता है । इसी प्रकार नारकयु, नरकगति और नरकमुपूर्वके कहना चाहिये क्योंकि, मिथ्याद्वि और असंयतसम्यग्द्वि गुणस्थानोंमें क्रमसे इनके बन्ध और उदयका व्युत्पन्न देखा जाता है । इसी प्रकार बुद्धसंस्थानके भी कहना चाहिये क्योंकि, मिथ्याद्वि और स्यागकबली गुणस्थानोंमें इसके बन्ध व उदयका व्युत्पन्न देखा जाता है । इसी प्रकार संसृष्टसुपादिक संहरणके भी कहना चाहिये क्योंकि, मिथ्याद्वि और अग्रमत्त गुणस्थानोंमें इसके बन्ध व उदयका व्युत्पन्न पाया जाता है ।

मिथ्यात्वका स्वेदपदे बन्ध होता है क्योंकि यह प्रबन्धी है । नपुंसकबेद और अपयान्तक स्वेदप-परोदय बन्ध होता है क्योंकि ये अनुबन्धी हैं । विशेष इतना है कि एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें अपयान्तका परोदय बन्ध होता है क्योंकि, उनमें अपयान्तके

हुहसद्व्यज-भसंपत्तेवहसंधजान सोदय-परोदयो पंचा, विमाहगदीण उदयायने वि
 वंघइसंजाहो सभ्येति तदुदयधियमाभावाद्वा वा । गिरयाउ-गिरयागइ-पइदिय-धीइदिय-सीइदिय-
 नउतिदियवादि गिरयागुपुष्पी-वादाव यावर-सुहुम-साह्वरणां परोदयो वंधो, पंथिदिएसु
 एवासिमुदयविरोदाहो उदएण सह वंधस्स उतिविरोदाहो ।

मिच्छत-गिरयाउभावे गिरितो वंधो, एगममएण वंधुवरमामावाहो । सेसाण पवडीपं
 सांतरो, गिरितरवधे धियमामावाहो । पण्णया सुगमा । मिच्छत नउगाइसंजुत्ते, नउसयपेइ
 हुहसद्व्यजानि तिगइसंजुत्त, अप-जतासपत्तमेवहसंधजानि तिरिक्क-मणुमगइसंजुत्ते वन्धति ।
 गिरयाउ गिरयागइ-गिरयागुपुष्पीभो गिरयागइसंजुत्ते, सेमाओ सम्मपवडीभो तिरिक्कगइसंजुत्ते ।
 ससमोप ।

अपञ्चनस्त्रणावरणीयकोध-माण-माया-लोम मणुसगइ-ओरा
 लियसरीर ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसह्वहरणारायणसरीरसध
 ढण मणुसगइपाओगगाणुपुष्पीणामाण को धधो को अयधो ? ॥ ११५ ॥
 सुगमं ।

उदयका अभाव है । हुहसस्थान और भसंप्राप्तस्वपादिकासंहतनका स्त्रोत्र परोक्ष रूप
 होता है क्योंकि विमाहगतिमें उनका उदयमात्र होनेपर भी रूप देखा जाता है, जबवा
 सब पंचेन्द्रियोंके उदय उदयका नियम भी नहीं है । नारकायु मरकगति पंचेन्द्रिय
 हीन्द्रिय बहिन्द्रिय अतुरिन्द्रिय जाति मरकानुपूर्वी माताय स्वावर, सुहम और साधारण
 इत्येव परोक्ष रूप होता है क्योंकि पंचेन्द्रियोंमें इनके उदयका विरोध होनेसे
 उदयके साथ उनका रूपक कथनका विरोध है ।

मिष्यत्व और नारकायुका गिरितर रूप होता है क्योंकि एक समयसं इसके
 रूपविधामका अभाव है । होय प्रकृतिवैक्य सात्तर रूप होता है क्योंकि गिरितर
 रूपमें विषमका अभाव है । मत्पव सुगम है । मिष्यत्वको चारों गतियोंसे संयुक्त वसुसक-
 वेत् और हुहसस्थानको देवगति बिना तीन गतियोंमें संयुक्त तथा अपर्याप्त और
 भसंप्राप्तस्वपादिकासंहतनको तिर्यमाति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । नारकायु,
 मरकगति और मरकानुपूर्वीको मरकगतिसे संयुक्त तथा होय सब प्रकृतिवैक्ये तिर्यमातिसे
 संयुक्त बांधते हैं । होय प्रकृता जोयक समान है ।

अप्रयास्थानावरणीय श्रेय मान, माया श्रेय मनुष्यगति, बौद्धिकशक्ति,
 बौद्धिकशक्तिशोभा, अर्पणवज्जरणावधिसंहतन और मनुष्यगतिप्राप्तोन्मादुपूर्वी नामकर्म,
 इनका कौन कबक और कौन अपनक है ? ॥ ११५ ॥

यह सब सुगम है ।

मिच्छाद्विष्टिपुद्गि जाव असजदसम्मादिद्वी वधा । एदे वधा,
अवसेसा अवधा ॥ ११६ ॥

मणुस्साणुपुष्ठी-अपञ्चकत्ताणचउपकाण पपोदया सम वोच्छि-जति, असजदसम्मा
दिद्विष्टि तदुभयाभावइसणादो । मणुमगइए पुर्वं यो पञ्च तदमो वोच्छिज्जो, असजद
सम्मादिद्वि जजोगिकेयलीसु यवेत्तयवोच्छेदइसणादो । ओराटियसरीर ओराटियसरीरभगोवंग
वञ्जरिसइवइरपाणयणसरीरसंघट्टणपमय येव वत्तं, अमजदसम्मादिद्वि-सजोगीसु यपोदय
वोच्छेदुवत्तमादो । अपञ्चकत्ताणचउपकादीण सोदय-परोदण यपो, अद्वोदयत्तादो । अपञ्च
कत्ताणचउदस्स यपो निरंतरा, धुवपचित्तादो । मणुमगइ-मणुमगइपाभोमाणुपुष्ठी-ओराटिय
सरीर ओराटियसरीरभगोवगार्ण मिच्छादिद्वि सामणसम्मादिद्वीसु यपो सातर-निरंतरे, तिरिक्ख-
मणुस्सेसु सांतरस्स आपदादिदेवेसु निरंतरसुवत्तमादो । सम्मामिच्छादिद्वि असजदसम्मादिद्वीसु
निरंतरो, एगसमएण तस्य पधुवरमामावादो । वञ्जरिसइवइरपाणयणसरीरसंघट्टणस्स मिच्छाद्वि

मिष्पाद्येमे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक कन्धक है । ये कंधक है, अप अकंधक
है ॥ ११६ ॥

मनुष्यासुपूर्वा और अमत्स्याकयानावरणचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साधमें
धुच्छिद्य हाते हैं क्योंकि असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका समाप दया जाता
है । मनुष्यगति का पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय धुच्छिद्य होता है क्योंकि असंयत
सम्यग्दृष्टि और अयोगकयमी गुणस्थानोंमें क्रमशः उनका बन्ध और उदयका धुच्छिद्य होता
जाता है । औदारिकारीर, औदारिकदारीरंगोपांग और पञ्चमबज्जनाराचारीरमंहननक
भी इसी प्रकार हा कहना चाहिये क्योंकि, असंयतसम्यग्दृष्टि और अयोगकयमी गुण
स्थानोंमें क्रमशः उनका बन्ध और उदयका धुच्छिद्य पाया जाता है ।

अमत्स्यारपाचरणचतुष्पादिकोंका बन्ध उदयसे बन्ध होता है क्योंकि ब
अमुपादयी प्रकृतियां हैं । अमत्स्यारपाचरणचतुष्कका बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि,
प्रयपण्यी है । मनुष्यगति मनुष्यगतिमायोग्यानुपूर्वी औदारिकारीर और औदारिक
दारीरंगोपांगका बन्ध मिष्पाद्ये प मामाद्वनमस्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें मान्तर-निरन्तर
होता है क्योंकि यह नियत प मनुष्यामें मान्तर हाकर भी मानतादि बंधोंमें निरन्तर
पाया जाता है । सम्यगिमिष्पाद्ये और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उनका निरन्तर
बन्ध होता है क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें एक समयमें इनका बन्धविग्रामका समाप है ।
पञ्चमबज्जनायचदारीरमहननका मिष्पाद्ये और सामाद्वन गुणस्थानोंमें मान्तर बन्ध

हुंइसंयम-असंपत्तेष्वहसंपद्व्याजं सोदय-परोक्षो धंधा, विग्गह्गदीए उदयामावे वि
वयदसंवाहो सप्पेसिं तदुदयणियमामावाहो वा । पिरयाउ-भिरयगइ-एइदिय-वीइंदिय-तीइंदिय-
चउसिंदियजादि पिरयाउपुग्गी-आदाय भावर-सुहुम-साहागणां परोक्षो धंधो, पंथिदिप्पु
पदामिमुदयविरोहाहो उदयम सह वयस्स उचिक्खिरोहादा ।

मिच्छत्त-पिरयाउआणं पिरंतो धंधो, एगममण्य वधुवरमामावाहो । सेसाज पयवीं
सांतो, पिरंतरवधं वियमामावाहो । पच्छया सुगमा । मिच्छत्तं चउगइसंहुत्तं, पउंसनेइ
हुइसंयमपि तिगइसंयुत्तं, वप जत्तासंपत्तेष्वहसंपद्व्याजि तिरिक्ख ममुमगइसंयुत्तं वयंति ।
भिरयाउ-भिरयगइ-भिरयाउपुग्गीमो भिरयगइसंयुत्तं, सेसाओ सम्पयवीमो तिरिक्खमइसंयुत्तं ।
सेसामपं ।

अपञ्चनस्त्राणावरणीयकोध-माण-माया-लोभ मणुसगइ-ओरा
लियसरीर ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसह्वइरणारायणसरीरसध
हण मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बीणामाण को वधो को अवधो ? ॥ ११५ ॥
सुगमं ।

उदयक्य अमाव है । हुणइसंस्थान और असंमात्तवृषाटिकासहननक्य स्त्रोदय परोक्ष वय्य
हाता है कयाक, विग्रहगतिमें उनक्य उदयामाव हलेपय भी वय्य देखा जाता है, अथवा
सब पंचमित्र्योक्त उमक उदयक्य नियम भी महीं है । नारक्यायु मरकगति एकेत्रिय
तीमित्र्य तीमित्र्य चतुर्तिमित्र्य जाति मरकानुपूर्वीं अताय इयावर, सुहम और साधारण
इतक्य परोक्ष वय्य हाता है क्योंकि, पंचमित्र्योक्तें इनके उदयक्य विरोध हय्येस
उदयके साथ उमक वय्यक कपनक्य विरोध है ।

मिष्यात्व और नारक्यायुका निरन्तर वय्य होता है कयाकि एक समयसे इनके
वय्यविधामक्य अमाव है । शय मरुतिष्योक्त्य सान्तर वय्य होता है क्योंकि निरन्तर
वय्यमें नियमका अमाव है । प्रपय सुगम है । मिष्यात्वक्य चारों गतियोंसे संयुक्त मनुष्यक
वेद और हुणइसंस्थानक्य देवगति बिना तीन गतियोंसे संयुक्त तथा अपर्याप्त और
असंमात्तवृषाटिकासहननक्य तिर्यगति व मनुष्यगतिस संयुक्त बांधते हैं । नारक्यायु
मरकगति और मरकानुपूर्वीं मरकगतिस संयुक्त तथा शय सब मरुतिष्योक्त्य तिर्यगतिस
संयुक्त बांधत है । शय प्रकण्ठा आधक्य समाव है ।

अप्रत्यात्मनानारणीय क्यध मान, माया, उम मनुष्यगति औदारिकशरीर,
औदारिकशरीरगोपण, वज्रपमवज्रनाराचशरीरमहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीं नामकर्म,
इतक्य केन वय्यक और केन अवय्यक है ? ॥ ११५ ॥

वद मय सुगम है ।

मिच्छाद्विष्टपहुडि जाव असजदसम्मादिट्ठी वधा । एदे वधा,
अवमेसा अरंधा ॥ ११६ ॥

मनुष्याणुपुष्पी-अपञ्चकत्वापञ्चकत्वा पञ्चोदया समं योच्छिञ्जति, असंजदसम्मा-
दिट्ठिम्हि तदुभयमावदंसादो । मनुमगइए पुप्य पञ्चो पच्छा उदयो योच्छिञ्जो, असंजद
सम्मादिट्ठि अजोकिवत्तिसु पञ्चोदयवोच्छेदंसादो । भोरालियसरीर भोरालियसरीरभगोवंग
वन्जरिमहवहरणारायणसरीरसपञ्चपणमव चैव पञ्चन, असंजदसम्मादिट्ठि-संजोमीसु पञ्चोदय
योच्छेदुवर्त्तमादो । अपञ्चकत्वापञ्चकत्वादीण सोदय परादण्य पञ्चो, मदुवोदयत्तादो । अपञ्च
कत्वापञ्चकत्वा पञ्चो भिरतरो, धुवचचित्तादो । मनुमगइ-मनुमगइपाओगाणुपुष्पी-भोरालिय
सरीर भोरालियसरीरभगोवंगण मिच्छादिट्ठि सामणसम्मादिट्ठीसु पञ्चो सांतर-भिरतरो, तिरिक्ख-
मनुस्सेसु सांतरस आणददिदेवेसु भिरतरोत्तमादो । सम्मानिप्पदिट्ठि असंजदसम्मादिट्ठीसु
भिरतरो, एगसमएण तत्त पञ्चुवरमासादो । वज्जिमहवहरणारायणसरीरसपञ्चपणसु मिच्छादिट्ठि

मिच्छादिष्टि लेक असपतसम्पगदि तक पन्थक है । ये पन्थक है, श्रुप अपन्थक
है ॥ ११६ ॥

मनुष्याणुपूर्वी भौर अमरपालयामावरणचतुष्कका बन्ध भौर उदय दोनों सायमे
स्पुच्छिउय हाते हैं क्योंकि, असंयतसम्पगदि गुणस्थानमें उन दोनोंका समाप दया जाता
है । मनुष्यगति का पूर्वमे बन्ध भौर पञ्चात् उदय स्पुच्छिउय हाता है क्योंकि असंयत
सम्पगदि भौर अयागकपली गुणस्थानोंमें क्रमशः उमक बन्ध भौर उदयका स्पुच्छिउय दया
जाता है । भौतिकशरीर, भौतिकशरीरतांगापांग भौर पञ्चमपञ्चनाराचारीरसहनमक
भी इसी प्रकार ही कहना चाहिये क्योंकि, असंयतसम्पगदि भौर अयागकपली गुण
स्थानोंमें क्रमसे उमक बन्ध भौर उदयका स्पुच्छिउय पाया जाता है ।

अमरपालयारणचतुष्कादिकोंका स्वादय परादयस बन्ध हाता है क्योंकि, व
अभुपादपी मरुतियां हैं । अमरपालयारणचतुष्कका बन्ध निरन्तर हाता है क्योंकि,
धुवचचि है । मनुष्यगति मनुष्यगतिमायाग्याणुपूर्वी भौतिकशरीर भौर भौतिक
शरीरतांगापांगका बन्ध मिच्छादिष्टि य सामान्यसम्पगदि गुणस्थानोंमें साम्तर निरन्तर
हाता है क्योंकि, यह निर्णय य मनुष्योंमें साम्तर हाका भी आमतानि दोनोंमें निरन्तर
पाया जाता है । सम्पगिमिच्छादिष्टि भौर असंयतसम्पगदि गुणस्थानोंमें उनका निरन्तर
बन्ध हाता है क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें एक समयस एकक बन्धविधामध्य समाप है ।
पञ्चमपञ्चनाराचारीरसहनमका मिच्छादिष्टि भौर सामान्य गुणस्थानोंमें साम्तर बन्ध

साम्येषु सान्निधे यवो । उवरि निरंतर, पडिवन्तउपयर्द्धय बंधामावादे । पञ्चमा सुगमा ।
उवरि मूलेषमगो ।

पञ्चवन्माणावरणकोध-माण-माया-लोभाण को बंधो का
अवधो ? ॥ ११७ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्यहुडि जाव सजदासजदा वधा । एदे वधा,
अवसेसा अवधा ॥ ११८ ॥

एदं पि सुगम ।

पुरिसवेद-कोधसंजलणाण को वधो को अवधो ? ॥ ११९ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्यहुडि जाव अणियद्विवादरसांपराइयपविट्टवसमा
सवा वधा । अणियद्विवादरद्दाए सेसे सखेज्जाभागे' गतूण बंधो
वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १२० ॥

होता है । ऊपर उसका निरन्तर पन्थ होना है क्योंकि, वहाँ प्रतिपन्न प्रकृतिर्येक वन्धक
अभाव है । अन्त्य सुगम है । उपरिम प्रकृति मूलोपक समाव है ।

प्रत्याक्षानावरण क्रोध, मान, माया और लोभक केन बन्धक व केन अवन्धक
है ? ॥ ११७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिष्पाद्येहि लेक संयत्तार्थक तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, अथ अवन्धक
है ॥ ११८ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

पुरिसवेद और संयत्तनयबक केन बन्धक और केन अवन्धक है ? ॥ ११९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिष्पाद्येहि लेक अनिष्टित्तरणपादरसाम्परापिकप्रतिष्ठ उपपन्नक व कृपक तक
बन्धक है । अनिष्टित्तरणपादरकलके दोषों संख्यात बहुमात्रोंके भीत जानेपर बन्ध
प्राप्ति होता है । ये बन्धक हैं, अथ अवन्धक हैं ॥ १२० ॥

(अति उच्छेद माने एति वा ।

एव सि सुगम ।

माण माया-सजलणण को वधो को अवधो ? ॥ १२१ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्णुहुडि जाव अणियट्टी उवसमा सवा वधा ।
अणियट्टिवादरद्दाण सेमे सेमे सस्वेज्जे भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि ।
एदे वधा, अवमेमा अवधा ॥ १२२ ॥

सुगम ।

लोभसजलणस्म को वधो को अवधो ? ॥ १२३ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्णुहुडि जाव अणियट्टी उवसमा सवा वधा ।
अणियट्टिवादरद्दाण चरिमममय गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा,
अवमेमा अवधा ॥ १२४ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

मन्वन्त मान और मायाकर केन बन्धक और केन बन्धक है ? ॥ १२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादर्शित लेकर अनिष्टवृत्तिरूप उपशमक व क्षयक तक बन्धक है । अनिष्ट-
वादरद्दाण रूप शेष र्ममयान बहुभाग जाकर पाप पुच्छिद्य होता है । ये बन्धक हैं,
शेष बन्धक हैं ॥ १२२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मन्वन्त लोभक और केन बन्धक और केन बन्धक है ? ॥ १२३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादर्शित लेकर अनिष्टवृत्तिरूप उपशमक व क्षयक तक बन्धक है । अनिष्ट-
वादरद्दाण रूप शेष र्ममयान बहुभाग जाकर पाप पुच्छिद्य होता है । ये बन्धक हैं, शेष
बन्धक हैं ॥ १२४ ॥

सासमेसु संतरेषु बंधो । उवरि पिरंतरो, पडिवकसुपयडीण बंधामावादा । पञ्चया सुम्मा ।
उवरि मूलेषमंगो ।

पञ्चनखाणावरणकोध-माण-माया-लोभाण को बंधो को
अबंधो ? ॥ ११७ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्यद्बुद्धि जाव संजदासजदा बंधा । एदे बंधा,
अवसेसा अबंधा ॥ ११८ ॥

एदं पि सुगम ।

पुरिसवेद-कोधसजलणाण को बंधो को अबंधो ? ॥ ११९ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्यद्बुद्धि जाव अणियद्विवादरसांपराइयपविट्ठवसमा
स्त्वा बंधा । अणियद्विवादरद्दाए सेसे सखेज्जाभागे गतूण बंधो
वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२० ॥

होता है । ऊपर उसका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंक बन्धका
अभाव है । प्रत्यक्ष सुगम है । उपरिम प्रकृपणा मूलेषमे समान है ।

प्रत्याम्पानावरण कोध, माण, माया और लोभक कौन बन्धक व कौन अबन्धक
है ? ॥ ११७ ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्याधिमे लेकर संयतासंयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक
है ॥ ११८ ॥

यह सब भी सुगम है ।

पुरुषवेद और संभवत्तनक्रोधक कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ११९ ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्याधिमे लेकर अनिशुचित्करणवादरसांमपराइयपविट्ठ उपशमक व क्षपक तक
बन्धक हैं । अनिशुचित्करणवादरकसुके शेषमें संख्यात बहुभागोंके भीत जानेपर बन्ध
म्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १२० ॥

देवाउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ १२९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी असजदसम्माहट्ठी सजदासजदा
पमत्तसजदा अप्पमत्तसजदा वधा । अप्पमत्तद्वाए सस्वेज्जदिम भाग
गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १३० ॥

सुगमं ।

देवगइ-पंचिन्द्रियजादि-चेउब्बिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-
मठण-चेउब्बियसरीर-अगोवग-चण्ण गध-रस-फास-देवगइपाओग्गाणु-
पुब्बी अगुरुत्तल्लहुव उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-
वादर-पज्जस-पत्तेयसरीर धिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-
णामाण को वधो को अवधो ? ॥ १३१ ॥

सुगमं ।

देवायुक्क क्केन बन्धक और क्केन अबन्धक है ? ॥ १२९ ॥

यह सख सुगम है ।

मिप्पाद्ये, सासादनसम्पद्ये, असंयतसम्पद्ये, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और
अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं । अप्रमत्तकालके संस्मरणसे माय जाकर बन्ध व्युत्पन्न होता है ।
ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १३० ॥

यह सख सुगम है ।

देवमति, पंचेन्द्रियमति, वैमिश्रिक, वैश्रस व क्लमण शरीर, समचतुरससंस्थान,
वैमिश्रिकशरीरगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुत्तल्ल, उपघात,
परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, अस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ,
सुभग, सुस्सर, आदेय और निर्माण नामक, इनके क्केन बन्धक और क्केन अबन्धक है ?
॥ १३१ ॥

यह सख सुगम है ।

सुगमं ।

इत्स्तरदि भय दुगच्छाण को वधो को अवंधो ? ॥ १२५ ॥

सुगमं ।

मिच्छाहृष्टिपुट्टि जाव अपुव्वकरणपविट्टवसमा ख्वा वधा ।
अपुव्वकरणद्वाए चरिमसमय गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा,
अवसेसा अवधा ॥ १२६ ॥

एदे पि सुगमं ।

मणुस्साउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ १२७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाहृष्टी सासणसम्माहृष्टी असजदसम्माहृष्टी वधा । एदे
बंधा, अवसेसा अवधा ॥ १२८ ॥

सुगमं ।

यह सूत्र सुगम है ।

इत्स्य, रति, भय और दुगुप्साका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १२५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिच्छाहृष्टि लेकर अपूर्वकरणपविट्ट उपसमक व क्षपक तक वन्धक हैं । अपूर्वकरण-
कक्षक अन्तिम समयमें जाकर वन्ध व्युत्थित होता है । ये वन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं
॥ १२६ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

मणुप्पासुका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १२७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिच्छाहृष्टि, सासादनसम्पन्नादि और असंपत्तयसम्पन्नादि वन्धक हैं । ये वन्धक हैं,
शेष अवन्धक हैं ॥ १२८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

देवाउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ १२९ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी असजदसम्माहट्ठी संजदासंजदा
पमत्तसजदा अप्पमत्तसजदा वधा । अप्पमत्तद्वाए सस्सेज्जदिम भागं
गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ १३० ॥

सुगम ।

देवगह-पंचिदियजादि-वेउव्वियत्तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-
संठाण-चेउव्वियसरीरअंगोवग-वण्ण गध-रस-फास-देवगहपाओग्गाणु-
पुव्वी अगुरुवल्लहुव उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगह-तस-
वादर-पज्जस-पत्तेयसरीर थिर-सुम-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-
णामाण को वधो को अवधो ? ॥ १३१ ॥

सुगम ।

देवायुक्क क्खेन बन्धक और क्खेन अबन्धक हे ? ॥ १२९ ॥

यह खूब सुगम है ।

मिप्पाट्ठि, सासाइनसम्पट्ठि, असंपतसम्पट्ठि, संपतासंपत, प्रमत्तसंपत और
अप्रमत्तसंपत बन्धक हैं । अप्रमत्तसंपतके संस्थापकें माग जाकर पांच प्युच्छिन्न होता है ।
ये बन्धक हैं, छेप अबन्धक हैं ॥ १३० ॥

यह खूब सुगम है ।

इवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैश्वियिक, वैजस व क्षमण शरीर, समचतुरससंस्थान,
वैश्वियिकसरीरगोपांग, वर्म, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुल्लु, उपपात,
परघाद, उप्पवास, प्रसत्तविहायोगति, त्रस, वादर, पयात्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, श्रुय,
सुमम, सुस्सर, आदेय और निर्माण नामक, इनका क्खेन बन्धक और क्खेन अबन्धक हे ?
॥ १३१ ॥

यह खूब सुगम है ।

मिच्छाद्विष्णुहि जात्र अपुव्वकरणपहहुउवसमा स्ववा बधा ।
अपुव्वकरणदाए संसेज्जे भागे गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा,
अवसेसा अवधा ॥ १३२ ॥

एदस्मत्तो दु बदे— देवगह-वेउम्भियसरीर अंगोवंग देवगहपाभोग्गानुपुष्पीण पुष्प
मुदणा पप्पम बंधो वोच्छिज्जा, अपुव्वकरणपासंज्जमम्मादिहीसु पंधादयधोच्छेदुबलभादो ।
पंधिदियजाति-तस-भादर-पम्पत-सुमग-भादे-बाध पुष्प बंधो पन्ना उदयो वाच्छिज्जदि,
अपुव्वकरणपासोगीसु बंधोदयपाच्छेदुबलभादो । तेजा-कम्मइय-समचउरसमंछण-वज्ज-नीव-रस-
फस-अगुस्सत्तुव-उदयाद-परयाद-उत्सास-पमत्तविहायगह-पत्थेयसरीर-पिर-सुम-सुस्सर-
मिमियजामाप्पेमं नेव वत्तय, अपुव्वकरण-सजोगीसु बंधादयपाच्छेदुबलभादो ।

देवगह-वेउम्भियसरीर-वेउम्भियसरीरअंगोवंग-देवगहपाभोग्गानुपुष्पीण परोदयो बंधो,
उदए सते एदासि बधविरोहदो । पंधिदिय-तजा कम्मइयसरीर-वज्ज-नीव-रस-फस-अगुस्स
त्तुव तस भादर-पम्पत-विर-सुह-मिमियाण सोदएनेव बधो, धुवोदयछदो । परयादुत्सास

मिथ्यापक्षिसे लेकन अपुव्वकरणमविद्ध उपशमक व क्षयक तक पन्धक है ।
अपूर्वकरणकलेके सस्यात बहुभावा जाकर बन्ध म्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, जेव
अबन्धक हैं ॥ १३२ ॥

इस सूत्रका अर्थ यह है—व्यगति वैशिष्ट्यकशरीर, वैशिष्ट्यकशरीरोंवापांग
और वृत्तगतिवापांगानुपूर्वीका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध म्युच्छिन्न होता है क्योंकि,
अपूर्वकरण और अनेकतमम्पगहादि गुणस्थानोंमें क्रमशः उमक बन्ध व वृत्तक म्युच्छिन्न
पाया जाता है । पंधेन्द्रियजाति अम बादर, पर्याप्त सुमग और भादेय इनका पूर्वमें
बन्ध और पश्चात् उदय म्युच्छिन्न होता है क्योंकि, अपूर्वकरण और अनापकेबद्धी
गुणस्थानोंमें क्रमसे इनके बन्ध और उदयका म्युच्छिन्न पाया जाता है । तेजस व कर्मज
शरीर, समचतुरकसस्यान अर्थ गन्ध रस स्पर्श अगुस्सपु अघात परयात
उच्छिन्नत प्रशस्तविहायोगति मत्त्वकशरीर, स्थिर, सुम सुस्वर और निर्माण नामक
इनके भी बन्ध व उदयका म्युच्छिन्न इसी प्रकार बहवा आदिय क्योंकि अपूर्वकरण
और सयोगकबद्धी गुणस्थानोंमें इनके बन्ध व उदयका म्युच्छिन्न पाया जाता है ।

व्यगति वैशिष्ट्यकशरीर, वैशिष्ट्यकशरीरोंवापांग और वृत्तगतिवापांगानुपूर्वीका
परादय बन्ध होता है क्योंकि, उदयक होनपर इनके बन्धका विरोध है । पंधेन्द्रियजाति
तेजस व कर्मज शरीर, अर्थ गन्ध रस स्पर्श अगुस्सपु अघात, पर्याप्त स्थिर,
सुम और निर्माण नामकर्मका स्वीकृत्ये ही बन्ध होता है क्योंकि, ये म्युच्छिन्नी हैं । परयात

पसत्पविहायगद् सुस्तर आदेन्नाप सोदय परोदयो बधो, अपन्मत्तक्रेते सदयामावे पि
 पञ्चवर्त्तमादो, पसत्पविहायगद्-सुस्तराणमद्भुवोदयत्तदसणादो, आदेन्नाम मिष्माइष्टिपहुडि
 जाव भसन्नदसम्मादिष्टि ति उदयस्म भयणिन्नत्तवर्त्तमादो, उत्तरि सन्मत्तव पुवांदयत्त
 र्दसणादो च । समचउरसमंत्तपुवपाद-पत्तयसुरिगणमेवं चव वत्तव्वं, विग्गाहयर्दम् उदया
 मावे वि वत्तवर्त्तमादो, समचउरसमंत्तपुवपादयस्म भयणिन्नत्तदसणादो च । एवं सुभग
 पन्नात्तपि वत्तव्वं, पश्चिदियसु पडिवक्खपयडीण उदयदमणादो । पवमि पश्चिदियपञ्चत्पसु
 पन्नात्तस्स मोदण्णेव बधो, तम्भ पडिवक्खपयडीण उदयामावादो । एवमेदं मिष्माइष्टिप
 पकूविदं । सप्तपमम्मादिष्टि भमंत्तवसम्मादिष्टिपमेवं चव पक्खेदम्भ । पवमि पञ्चत्तस्म मोदण्
 णव र्धवा । एवं मम्मामिष्माइष्टिमाणि उत्तरिमगुणहृत्ताण पि वत्तव्वं । पवमि उवपाद-पग्पाद
 उत्ताम पञ्चत्त-पत्तयसुरिगण पि मोदण्णेव बधो, तस्म भपन्नात्तकत्तमावादो ।

तेजा-कम्मइय-वग्ग-गव-रम-पम्भ-भगुरुअल्लुव उवपाद-पिमिणाण सव्वगुणहृत्ताणसु

उच्छ्वास प्रशस्तिविहायामाणि सुस्तर भीर भाव्य इनअ स्वाद्य परोदय बन्ध होता
 है क्योंकि, अपर्याप्ततामें उदयके न हानपर भी इनअ बन्ध पाया जाता है प्रशस्त
 विहायामाणि भीर सुस्तर प्ररुमियाका भध्वाद्य दत्ता जाता है तथा मिष्माइष्टिस मंकर
 भर्मयत्तमम्पगद्विष्टि तत्त भाव्यका उदय भजनीय भयात् विकल्पम पाया जाता है भीर इसमें
 ऊपर सर्वत्र भुवाद्य दत्ता जाता है । समचतुरस्रस्थान उपघात भीर प्रत्यक्षशरीरके भी
 इसी प्रकार कहना चाहिय क्योंकि विमहगनिमें उदयके न हानपर भी बन्ध पाया जाता
 है तथा समचतुरस्रस्थानका उदय भजनीय दत्ता जाता है । इसी प्रकार सुभग भीर
 पयाजके भी कहना चाहिय क्योंकि पंचगित्रयोम प्रतिपन्न प्रकृतिका उदय दत्ता जाता
 है । विहाय इतना है कि पंचात्त्रय पर्याप्तकोंमें पयाज प्रकृतिका स्वाद्यम ही बन्ध होता
 है क्योंकि, उन्नम प्रतिपन्न प्रकृतिक उदयका समाप्त है । इस प्रकार यह मिष्माइष्टिपोंकी
 प्रकृष्टता हुई । सामाज्यमम्पगद्विष्टि भीर भर्मयत्तमम्पगद्विष्टिपोंकी भी प्रकृष्टता इसी प्रकार
 करना चाहिय । विहायता यह है कि पर्याप्तका स्वाद्यम ही बन्ध होता है । इसी प्रकार
 मम्पमिष्माइष्टि भावि उपरिम गुणस्थानाक भी कहना चाहिय । विशेष इतना है कि
 उपघात परघात उच्छ्वास पयाज भीर प्रत्यक्षशरीरका भी स्वाद्यम ही बन्ध होता
 है क्योंकि, उन्न गुणस्थानोंमें अपयाजकालका समाप्त है ।

तैजस व कपमज शरीर वर्ण रम्भ रम म्भो भगुरुअसु उपघात, भीर

भिरन्तरं वेधो, पुनर्वेधिसाधो । पर्विदियज्यादीण मिच्छाद्दृष्टिस्तु सांन्तर-भिरन्तर । कर्षं भिरन्तरो ? न, सजक्कुमादादिद्वेषेसु नरूपसु असंस्मृज्यासाठव-सुहृन्तिस्मियतिरिक्त्वा मनुस्सेसु न भिरन्तरं पुनर्वेधमाधो । सामप्रादीसु भिरन्तरो वेधो, तत्त्व एवदियजादिज्यादीषं वेधामावाधो । एवं परधादुम्यस-तस-नादर-यम्बस-यधेवसरीराणं पि वत्तन्, वेधामावाधो । समचउरसंउत्तव पसरविविहायगइ-सुभग-सुस्मर-मदेज्याषं मिच्छाद्दृष्टि-सासनेसु सांन्तर-भिरन्तरो वेधो । कर्षं भिरन्तरो ? न, असंस्मृज्यासाठवसु एवमि भिरन्तरं पुनर्वत्तमाधो । उवरि भिरन्तरो पडिवक्खपयडिणं वेधामावाधो । भिर-सुभाषं मिच्छाद्दृष्टिपुडि जाव पमत्तसंजरो पि सांन्तरो, पडिवक्खपयडिणं वेधसंभमाधो । उवरि भिरन्तरो । वेवगइ-वेउन्वियसरी-वेउन्वियसरीरंभोत्तम-वेवगइपाभोम्यापुपुवीणं मिच्छाद्दृष्टि-सासनेसु सांन्तर-भिरन्तरं सुहृन्तिस्मियतिरिक्त्वा मनुस्सेसु भिरन्तरं पुनर्वत्तमाधो । उवरि भिरन्तरो । पन्थया सुगमा । मेस भोपमगो ।

निर्माण इत्यत्र सब शुभस्थानां भिरन्तरं बन्ध होता है क्योंकि भुववर्ध्या है । पंचेन्द्रिय जातिषा मिच्छादृष्टिर्षोम सांन्तर भिरन्तर बन्ध होता है ।

शंका — भिरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान — यह ठीक नहीं क्योंकि, नात्तकुमादादि एवं मारकी असंस्मृतवर्षा युष्क और शुभ तीन वेदवाक्य नियम प मनुष्यों में भिरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

सासात्नसम्यग्दृष्टि भादि उपरिम शुभस्थानां भिरन्तर बन्ध होता है क्योंकि इन शुभस्थानों में पंचेन्द्रियजाति भादिकोंका बन्ध नहीं होता । इसी प्रकार परमात्त वत्तवाम तस बाहर पर्याप्त और प्रत्यक्षगरीरके भी कड्ढा बाहिय क्योंकि, इनके कोई विशेषता नहीं है । समचतुरवर्गमन्त्रात्त प्रशस्तिविहायोगति सुभग सुत्तर और मदेयका मिच्छादृष्टि व नात्तात्नसम्यग्दृष्टि शुभस्थानों में सांन्तर भिरन्तर बन्ध होता है ।

शंका — भिरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान — यह ठीक नहीं क्योंकि असंस्मृतवर्षायुष्कों में इनका भिरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

उपरिम शुभस्थानों में इत्यत्र भिरन्तर बन्ध होता है क्योंकि प्रतिपक्ष प्रकृतिबन्धि बन्धव्य वहां भयाव है । स्थिर और शुभव्य मिच्छादृष्टिसे छेकर प्रमत्तसंयत तत्त्व नात्तर बन्ध होता है क्योंकि वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिव्य बन्ध सम्भव है । इससे ऊपर भिरन्तर बन्ध होता है । वेवगति वैदिकिकगरीर, वैदिकिकगरीरगोपांग और वेवगतिमायाम्बापु पूर्वादि मिच्छादृष्टि और सासात्नसम्यग्दृष्टि शुभस्थानों में सांन्तर भिरन्तर बन्ध होता है क्योंकि शुभ तीन वेदवाक्ये तिर्यक् व मनुष्यों में भिरन्तर बन्ध पाया जाता है । इससे ऊपर भिरन्तर बन्ध होता है । प्रत्यक्ष सुगम है । शेष प्रकृति जोबके समान है ।

आहारमरीर आहारअगोवगणामाण को वधो को अवधो ?
॥ १३३ ॥

सुगम ।

अपमत्तसजदा अपुत्रकरणपट्टुवसमा स्ववा वधा । अपुत्र
करणदाए मस्तेज्जे भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा,
अवसेसा अवधा ॥ १३४ ॥

सुगम ।

तित्थयरणामाण को वधो को अवधो ? ॥ १३५ ॥

सुगम ।

असजत्सम्मादिट्ठिण्हुडि जाव अपुत्रकरणपट्टुवसमा स्ववा
वधा । अपुत्रकरणदाए मस्तेज्जे भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि ।
एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १३६ ॥

आहारकशरीर और आहारकजरीगंगापांग नामकमोक्ष करन वन्धक और करन
अवधक है ? ॥ १३३ ॥

यह मूल सुगम है ।

अपमत्तमयत और अपुत्रकरणप्रविष्ट उपशमक व धपक पायक है । अपुत्रकरण
कष्टके संख्यात बहुमाग जाकर पाप प्युच्छिन्न होता है । ये वन्धक है, अथ अवधक है
॥ १३४ ॥

यह मूल सुगम है ।

तीर्थंकर नामकमोक्ष करन वन्धक और करन अवधक है ? ॥ १३५ ॥

यह मूल सुगम है ।

अपमत्तमयतमयत और अपुत्रकरणप्रविष्ट उपशमक और धपक तक वन्धक है ।
अपुत्रकरणकष्टके संख्यात बहुमाग जाकर वन्ध प्युच्छिन्न होता है । ये वन्धक है, अथ
अवधक है ॥ १३६ ॥

निरन्तरो वषो, ध्रुववर्षादिभ्यो । परिद्विज्यादीषु मिच्छाद्दृष्टीषु सांतर-निरन्तरो । कर्षं निरन्तरो । य, सप्तकुमारारिदेवेभ्यो भेदेषु असंख्यवासात्तन्मुहूर्तिभेदिस्यतिरिक्त्वा मनुस्तेषु च निरन्तरवषुवर्षमाहो । सप्तज्यादीषु निरन्तरो वषो, तत्र पश्चिम्यादिज्यादीषु वषामात्राहो । एवं परपादुस्सास-तप्त-बाह्य-पञ्चसप्त-पञ्चमसुरीयानां च वत्सर्गं, मेदामात्राहो । समचतुर्सर्गसप्त-सप्तपञ्चदश्यास-सुमग-सुस्तर-आदेवार्ण मिच्छाद्दृष्टी-मात्रेषु सांतर-निरन्तरो वषो । कर्षं निरन्तरो । य, असंख्यवासात्तत्पुण्यं एवासि निरन्तरवषुवर्षमाहो । उवर्षि निरन्तरो, पञ्चदशपयसीषु वषामात्राहो । विर-सुमार्ण मिच्छाद्दृष्टीषु ज्ञानं पञ्चसप्तमाहो चि सांतरो, पञ्चदशपयसीषु वषसंमगदो । उवर्षि निरन्तरो । देवगद-यउभियसरीर-वेठभियसरीरमगोवम-देवमगदामोमगदुपनीष मिच्छाद्दृष्टी-मात्रेषु सांतर निरन्तरो मुहूर्तिभेदिस्यतिरिक्त्वा मनुस्तेषु निरन्तरवषुवर्षमाहो । उवर्षि निरन्तरो । पञ्चया सुमग । मेसं मगमगो ।

निर्माण इत्यत्र सप्त गुणस्वात्मोर्नि निरन्तर वक्ष्यं होता है क्योंकि ध्रुववर्षा है । पञ्चदशपयसीषु मिच्छाद्दृष्टीषु सांतर निरन्तर वक्ष्यं होता है ।

श्रुतम्—निरन्तर वक्ष्यं कैम होता है !

समाधान—यह ठीक नहीं क्योंकि मानसकुमारारि देव मारुत असंख्यातवर्षा युक्त और शुभ तीन संख्यावाले विषय व मनुष्योंमें निरन्तर वक्ष्य पाया जाता है ।

सासप्तजनसम्पददृष्टिं ज्ञानं उपरिमं गुणस्वात्मोर्नि निरन्तर वक्ष्यं होता है क्योंकि इस गुणस्वात्मोर्नि एकत्रियपञ्चाति जादिकर्मका वक्ष्य नहीं होता । इसी प्रकार परमात्मा वक्ष्यवास वस वात्स, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरके भी कहना चाहिये क्योंकि, इनके कोई विशेषता नहीं है । समचतुर्सर्गस्वात् प्रजास्तविद्यायोगि सुमग सुस्तर और आदेवका मिच्छाद्दृष्टि व सासप्तजनसम्पददृष्टि गुणस्वात्मोर्नि सांतर निरन्तर वक्ष्य होता है ।

श्रुतम्—निरन्तर वक्ष्यं कैमे होता है !

समाधान—यह ठीक नहीं क्योंकि, असंख्यातवर्षायुष्योर्नि इत्यत्र निरन्तर वक्ष्य पाया जाता है ।

उपरिमं गुणस्वात्मोर्नि इत्यत्र निरन्तर वक्ष्यं होता है क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतिकर्मा वक्ष्यका वहाँ जमाव है । शिर और शुभका मिच्छाद्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंज्ञक तक सांतर वक्ष्य होता है क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिक वक्ष्य सम्भव है । इससे ऊपर निरन्तर वक्ष्य होता है । देवगति वैश्विकशरीर, वैश्विकशरीरसंगोपांग और देवपतिप्राप्तावु-पूर्वका मिच्छाद्दृष्टि और सासप्तजनसम्पददृष्टि गुणस्वात्मोर्नि सांतर निरन्तर वक्ष्य होता है क्योंकि, शुभ तीन संख्यावाले विषय व मनुष्योंमें निरन्तर वक्ष्य पाया जाता है । इससे ऊपर निरन्तर वक्ष्य होता है । प्रत्यय सुमग है । दोष प्रकृष्टा ओषके सम्भव है ।

पञ्चणाणावरणीय च उद्मणावरणीय मिच्छत-गठसुयवेद-तिरिक्त्वाठ-तिरिक्त्वागः
 पश्चिदिय-मजा-कम्मइयसरी-पञ्च-गंध रम-पञ्चम अगुरुअत्तुम-भावर-धिराधिर-सुहसुह-
 हुमग भणदिञ्च निमिष पीचागो-पञ्चतराइयाण सोदभो पधो, एय एयमि धुवेदयत्तादो ।
 इत्थि-पुरिमवेद मणुस्साउ-मणुम्मगद-भीईदिय-तीईदिय-चउंरिदिय-पंचिदिय-पंचसंअण-
 ओरात्तियसरीअंगेवंग-छसपडण-मणुमगइपाभोग्गाणुपुष्पी-साहारण-दोविहायगद-तस-मुभग-
 मुम्मर-दुम्मर-आदग्गुप्पागोदान परोदभो पधो, एयमिमन्ध उदयविराहादो । पंचदंसा
 वरणीय-मादामाद-सोत्तमकमाय छोत्तमाय-पादर सुहम पञ्चत्तपञ्चत्त-अमकिसि-अमस-
 कितीण मोदय परादभा पधो, अदुवोदयत्तादो । ओरात्तियसरी-हुंइसअण-उवपाद-पत्तेय
 सरी आदावुज्जोषाण पि मादय-परादभो, विग्गइगदीण उदमाभावादा अदुवादयत्तादो
 य । परपादुस्सासाण पि सोदय-परादभो पधा, एयमिमुदयाणुदयमहिदपञ्चत्तपञ्चत्तामु
 पचदंमजादा । तिरिक्त्वागइपाओग्गाणुपुष्पीए मोदय-परादभो पधो, मादयाणुदयविग्गइविग्गह
 गदीमु पधुवत्तादो ।

पञ्चणाणावरणीय-पचदंमजावरणीय-मिच्छत-सोत्तमकमाय-मय-दुग्गुअ तिरिक्त्वा-मणु-

पांच ज्ञानावरण आर दृशमावरण मिष्याप्य मनुमक्यद त्रियगासु त्रियगगति,
 एकस्मिन् ज्ञानि तेजस्य च कामज शरीर एव गन्ध रस रूपा मगुरुत्सु व्यापार
 स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ पुर्ण अभाज्य निर्माण मीषगात्र भीर पांच भल्लग्य
 इमका व्याज्य बन्ध हाता हे कयोकि यदा य प्रवृत्तियो ध्रुवावृत्ती हे । त्वीयद पुरुषपद,
 मनुष्यासु मनुष्यगत ईश्वरिण्य भीश्वरिण्य अशुचिभ्रिण्य पंचश्वरिण्य ज्ञानि पांच संख्यात
 भीश्वरिण्यशरीरगोपांग छद मंहनन मनुष्यगतिमायाग्यानुपूर्वी साधारणशरीर, १।
 विहायागतियो अम सुभग सुम्मर दुम्मर आदय भीर उच्छगात्र इमका परादयम
 बन्ध हाता हे कयोकि यदा इतक उदयका पिपय हे । पांच दृशमावरणीय ज्ञाना
 य भसाता यद्वीय तामह कयाय छद सावयाय पादर म्हम पयाज अयपाज,
 यार्जानि भीर अयार्जानिका व्याज्य परादय बन्ध हाता हे कयोकि य मधुयावृत्ती
 हे । भीश्वरिण्यशरीर दृक्कर्तव्याम उपपात प्रत्यक्षशरीर ज्ञानाय भीर उच्छातय मी
 व्याज्य परादय बन्ध हाता हे कयोकि विमलहनिर्मे इतक उदयका अमाय हे तथा य
 मधुयावृत्ती मी हे । पण्यात भीर उच्छातयमका मी व्याज्य परादय बन्ध हाता हे कयोकि
 जमनाः इतक उदय भीर अनुदय ग्राहेत पयाज य अयपाज जालोमे उमका बन्ध दृशा ज्ञाना
 हे । त्रियगतिमायाग्यानुपूर्वीका व्याज्य परादय बन्ध हाता हे कयोकि, जमनाः अयम उदय
 य अनुदय ग्राहेत विमल य अविमल गतियोमे उमका बन्ध पाया ज्ञाना हे ।

पांच ज्ञानावरणीय भी दृशमावरणीय मिष्याप्य तामह कयाय मय, दुग्गुअ

एवं पि सुमम ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-वणप्फदिकाइय णिगोद जीव-वादर-सुहुम पज्जत्तापज्जत्ताण वादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीर पज्जत्तापज्जत्ताणं च पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तमगो ॥ १३७ ॥

एवमापन्नासुप्तं देसामासिय, तन्नेदेण सुइदत्तानं पकूवणा क्षिणे— तत्र तत्र पुढविकाइयाणं मज्जमाणे पञ्चजाणावरणीय जयदंसणावरणीय-साक्षासद-मिच्छत्त-सोत्तमज्जमा-ज्जमाकमाय तिरिक्खाउ मज्जुस्साउ-तिरिक्खगइ-मज्जुस्सगइ-एइदिय-बीइदिय-सीइदिय-वउरि दिय-पंचिंदियजादि भोरास्सिय-तेजा कम्मइयसरीर-छमंटाण भोरास्सियसरीरजंगोवण छमइण वण-गंध-रस-मज्ज-तिरिक्खगइ मज्जुम्माइपाभोम्माणुपुव्वी-अगुरुत्तुव उवपाद-परपाद उम्माय भावामुओव-रोविहापगइ-सम-वावर-वादर-सुहुम-य जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साक्षरजसरीर-विगारि सुहसुह-सुमग [इमेय] सुस्म-हुस्सर-आइज्ज-अपाइज्ज अमक्खिति-अमसक्खिति-भिम्मिष मीउप्पागोद-पंचंताराइयपयडीजा पुढविकाइएइ बज्जमापाभो उवदप्पा । एत्थ वंसाइयवोप्पेइ विचारो जारि, तदुमयवोप्पेइशामावाधो ।

यह सूत्र भी सुमम है ।

अप्यमर्मानुसार पृथिवीक्रयिक, अक्रयिक, वनस्पतिक्रयिक और निगोद जीव वादर सूक्ष्म पयोत्त अपयोत्त तथा वादर वनस्पतिक्रयिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त अपयोत्त जीवोक्ति पराप्ता पंचेन्द्रिय तिर्यग् अपयोत्तोक्ति ममान है ॥ १३७ ॥

यह अर्पणामत्र दशामर्शक है अत एव इत्यस्य सूचित अर्थोक्तौ प्रकल्पना कर्तव्यं—उक्तमे पदस्य पृथिवीक्रयिक जीवोक्ती प्रकल्पना कर्तव्यं समग्र पांच जाणावरणीय मी वदनावरणीय सत्ता व अमाना केवलीय मिच्छात्त्व सोलह कपाय मी मोकपाय तिर्यंगाणु मनुष्याणु निर्वन्मणि मनुष्यगति एकस्मिन्न बीमिन्न बीमिन्न चतुरिन्मिन्न पंचान्मिन्न आनि मीनारिक, मैत्रस व काम्येण शरीर छह संस्थाव मीनारिकशरीरांगोपाव छह संहसम बर्षे गण्य सन स्पष्टी निर्वन्मणि व मनुष्यगतिमायाणानुपूर्वी अगुरुमपु, उपपत्त परपत्त उच्छ्रयाम भाताप उच्छ्रय वा विहावागनिर्वा वम स्वावर, वावर, सूक्ष्म पर्याप्त अपयोत्त प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, स्थिर अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग [इमेय] सुस्मर सुस्मर आदेय जनाइय यशोकीर्ति भयशोकीर्ति निर्माण मीयमाण ऊचगाव और पांच मन्तराम मन्तरिका पृथिवीक्रयिक जीवा ठारा ब्रह्ममाल स्थापित करना चाहिये । वहां बन्ध और उद्वेक म्युच्छेदक विचार नही है क्योंकि, शर्मोके म्युच्छेदका यहां अभाव है ।

पंचपात्रावरणीय षडर्हसपावरणीय मिच्छत्त-पठसयवद्-तिरिक्खात्-तिरिक्खगद्
 एइदियजादि-तत्ता-कम्मइयसरीर-वण्ण-नीध रस-फ़ास अगुरुअल्लुम-भावर-विराविर-सुहासुह-
 हुमग भषादेन्न-भिमिण पीबागोद्-पचतराइयाण सोदभो बंधो, एस्व एदासि धुवोदयत्तादो ।
 इत्थि-पुरिमयेद्-मणुम्मात्-मणुम्मगद्-बीइदिय-तीइदिय-षट्ठिदिय-पंचिदियजादि-पंचसंअण-
 ओरात्थिसरीरअंगोवग छसपठण-मणुसगाइषाभोगाणुपुष्पी-साहारण-दोविहायगद्-तस-सुमग-
 मुम्सर-दुस्सर-आदन्नुच्चायोदाप परोदभो बंधो, एदासिमैत्थ उदयविरोहादो । पंचदसपा
 वरणीय-सादासाद-सोत्तमकम्माय-अणोक्तसाय-आदर मुहुम पन्नत्तापन्नत्त-असक्ति-अयस-
 किस्सीण सोदय-परोदभो बंधो, अदुवोदयत्तादो । ओरात्थिसरीर-हुइसंअण-उवपाद्-पत्तेय
 सरीर आदावुन्जोषाणं पि सोदय-परोदभो, विग्गाहगदीए उदयाभावोदो अदुवोदयत्तादो
 च । परषादुस्सासायं पि सोदय-परोदभो बंधो, एदासिमुदयाणुदयसहिदपन्नत्तापन्नत्तदासु
 पंचदसपादो । तिरिक्खगइषाभोगाणुपुष्पीए सोदय-परोदभो बंधो, सेदयाणुदयविग्गाहाविग्गाह
 गदीसु पधुवत्तादो ।

पंचपात्रावरणीय षडर्हसपावरणीय-मिच्छत्त-सोत्तमकम्माय-मय-दुगुछा-तिरिक्ख-मणु-

पांच ज्ञानावरणं चार ज्ञानावरणं मिष्याम्य मनुसकषेद् निर्पगायु, निर्पगति
 एकस्मिन् ज्ञाति त्रैजस य क्षमण शरीर, बर्ण गन्ध रस स्पर्श अगुरुमयु, स्थावर,
 स्थिर अस्थिर, शुभ अशुभ दुर्भग अनार्य निर्माण मीषगात्र और पांच अमतराय
 इनका स्पर्शय बन्ध होता है क्योंकि, यहां य प्रकृतियां ध्रुवोदयी हैं । मीषाद्, पुरुषयद्
 मनुष्यायु मनुष्यगति त्रैमिष्य मीमिष्य अमुदिमिष्य पचमिष्य ज्ञाति पांच संख्याम
 मीश्रिरिक्खशरीरंगापांग छह संहमन मनुष्यगतिप्रायाग्यानुपूर्वी साधारणशरीर, दो
 विहायागनियां बन्ध सुमग मुम्सर दुम्सर आदय और उच्चगोत्र इनका परादयस
 बन्ध होता है क्योंकि, यहां इनका उदयय विरोध है । पांच ज्ञानावरणीय ज्ञाना
 य अज्ञाना यक्षीय सासह कयाय छह साकयाय पादर मूहम पर्याप्त अययात्त
 यशस्वीर्णि और अयदाकीर्तिश्च स्वादय परादय बन्ध होता है, क्योंकि य अमुषादयी
 है । मीश्रिरिक्खशरीर हुइसंख्याम उपपात प्रत्यक्षशरीर, आनाय और उपातक्य भी
 स्थादय परादय बन्ध होता है क्योंकि विग्रहगतिमें इनका उदयय अभाय है तथा य
 अमुषादयी भी है । परयात्त और उच्छायासक्य भी स्थादय-परादय बन्ध होता है क्योंकि,
 क्रमशः इनका उदय और अमुदय सहित पयात्त य अययात्त कसोमें उमक्य बन्ध होता जाता
 है । निर्पगतिप्रायाग्यानुपूर्वीका स्थादय परादय बन्ध होता है क्योंकि, क्रमशः अयम उदय
 य अमुदय सहित विग्रह य अविग्रह गतियोंमें उमक्य पन्ध पाया जाता है ।

पांच ज्ञानावरणीय मी ज्ञानावरणीय, मिष्याम्य स्थाह कयाय, मय, दुगुन्हा,

स्नात ओरात्तिय-सेवा-कम्माइयसरीर-वण-नीव-रस-प्लम अगुरुतदुअ ठवपाइ-निमिष-पंचेन
इयां पिरंतरो बंधो, एगसमएण पंचुवरमाभादो धुववंधितादो थ । सादासद-सत्तयोक्काम-
मज्झमाइ-एइरिय-वीइरिय-वीइरिय-चउरिदिय-पंचिदिय-वादि छसंअण ओरात्तियसरीरबंधो-
छसंअण-मज्झमाइयाभोगाजुपुष्पी-आदाठ-ओव-देविहायमइ-तस वायर मुहुम-अप-उत्त-सदा-
रसरीर-पिरपिर-मुमासुम-सुमग दुमग सुस्सर-दुस्सर-आदेउअ वमकिरि वमकिरि-उत्त-
गोदां सतिरो बंधो, एगसमएण पंचुवरमइमपादो । तिरिक्खगाइ-तिरिक्खगाइयाभोगाजुपुष्पी-
वीचामोदां सतिर-पिरंतरो । कवं पिरंतरो ? न, तेठ-वाठक्कइएहिओ पुवकिइएमुपण्णवं
जितरबंधुबलंमदो । परयादुस्मास-वादर-प-नठ पत्तवसरीराण पि सतिर-पिरंतरो बंधो । कवं
पिरंतरो ? न, देवाण पुवकिइएमुपण्णाय मुहुत्तस्सति पिरंतरबधुबलंमदो ।

एदेसि पण्णया पइदियपण्णपहि समा । तिरिक्खाउ तिरिक्खगाइ एइरिय-वीइरिय-

—

तिर्यंगाणु मनुष्याणु औदारिक, तैजस य कर्मज इहिर, बर्ण गन्ध रस स्पर्श अगुरुणु,
उपधान निर्माण और पांच अन्तराय इवञ्च निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक
समयसे इनके बन्धविधामका अभाव है तथा य भुवबन्धी भी हैं । छाता व असला
केवलीय छात नोकपाय मनुष्यगति एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय
पंचेन्द्रिय जाति छह संख्यात औदारिकशरीरामोपांग छह संख्यत मनुष्यगति-
प्रत्यंगानुपूर्वी आताप उपांत हो बिहायोगतिपां वस स्थावर, सूक्ष्म अपर्यांत
वाय्वारकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग दुर्मग सुखर, दुःखर आक्षेप
वशाकीर्ति अवशाकीर्ति और उद्योगोवञ्च सान्तर बन्ध होता है क्योंकि एक समयसे
इतका बन्धविधाम इला जाता है । तिर्यगति तिर्यगतिप्रायोगानुपूर्वी और मौखयोगवञ्च
सान्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

सूत्र—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं क्योंकि तब व यापु अपिच्छोमसे पृथिवीकाधिकर्म
उत्पद्य हुए जीवोंके निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

परमात उच्छ्वास वादर, पर्यांत और प्रत्येकशरीरवञ्च भी सान्तर निरन्तर
बन्ध होता है ।

सूत्र—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं क्योंकि, पृथिवीकाधिकर्म उत्पद्य हुए देवोंके
अन्तमुद्धत तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इम मङ्कतिपोक प्रत्यय एकेन्द्रियप्रत्ययोंके समान हैं । तिर्यंगाणु, तिर्यगति

तीर्णद्विज-चतुर्द्विज-तिरिक्खगइपाभोग्गाणुपुब्बी-आत्तावुजोव-थावर-सुहुम-साहारणसरीराणि
तिरिक्खगइसंजुत्तं वन्धंति । मणुसाठ-मणुसगइ-मणुसगइपाभोग्गाणुपुब्बी उच्चागोशणि मणुस
गइसंजुत्तं वन्धंति । सेसामो पयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तं । तिरिक्खा सामी । बपद्धानं
सुगम । एत्थ बधवोप्पेदो मत्थि । धुवबंधीण चउत्थिहो बंधो । सेसार्गं सादि भद्दुवो ।

बादरपुब्बविकइयाणमेव चेव वत्तथ्य । जवरि बादरस्स सोइएण बंधो, सुहुमस्स
परोइएण । बादरपुब्बविकइयपब्बज्जाणं पि एवं चेव वत्तथ्य । जवरि पब्बजत्तस्स सोइओ,
अपब्बजत्तस्स परोइओ बंधो । बादरपुब्बविकइयअपब्बज्जाणं पि बादरपुब्बविकइयमंगो । जवरि
पब्बजत्त-धीणगिदित्थि पण्णादुस्सास-आशवुग्गमेव-अमक्कित्तीणं परोइओ, अपब्बजत्त-अजसक्कित्तीणं
सोइओ बंधो । परणादुस्सास-तस-बादर-पब्बजत्त-पत्तेयसरीराणं सान्तरो बंधो, अपब्बजत्तपसु
देवाम्मुववत्तामावाओ । पच्चया सत्तत्तीस, ओरात्थिकयजोगपच्चयस्सामावाओ ।

सुहुमपुब्बविकइयाण पुब्बविकइयमंगो । जवरि बादर-आदाठ-जोव जसक्कित्तीणं
परोइओ, सुहुम-अजसक्कित्तीणं सोइओ बंधो । परणादुस्सास बादर-पब्बजत्त-पत्तेयसरीराणं सान्तरो

एकेन्द्रिय द्विन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुर्दिन्द्रिय आति तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी आताप उद्योत,
स्वावर, सूक्ष्म और अघातशरीर, इनको तिर्यगातिसे संयुक्त बांधते हैं । मनुष्याणु,
मनुष्यगति मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रको मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं ।
द्वेष प्रकृतियोंको मनुष्य व तिर्यग्मतिसे संयुक्त बांधते हैं । तिर्यक् स्वामी हैं । बन्धाब्धान
सुगम है । यहां बन्धपुच्छेद है नहीं । भुवबन्धी प्रकृतियोंका आरो मकारका बन्ध
होता है । द्वेष प्रकृतियोंका सादि व अमृष बन्ध होता है ।

बादर पृथिवीकाधिकोंकी भी इसी प्रकार प्ररूपणा करना चाहिये । बिशेष
इतना है कि बादरका स्वेद्य और सूक्ष्मका परोक्षसे बन्ध होता है । बादर पृथिवीकाधिक
पर्याप्तोंकी भी इसी प्रकार प्ररूपणा करना चाहिये । बिशेषता इतनी है कि पर्याप्तका
स्वेद्य और अपर्याप्तका परोक्ष बन्ध होता है । बादर पृथिवीकाधिक अपर्याप्तोंकी
भी प्ररूपणा बादर पृथिवीकाधिकोंके समान है । बिशेषता यह है कि पर्याप्त स्थान
पृथिव्य परघात उच्छ्वास आताप उद्योत और पशुकीर्तिका परोक्ष, तथा अपर्याप्त
और अपशुकीर्तिका स्वेद्य बन्ध होता है । परघात उच्छ्वास जल बादर, पपात्त
और मत्पकशरीरका सात्तर बन्ध होता है क्योंकि अपर्याप्तोंमें देवोंकी उत्पत्ति नहीं
होती । मत्पय सीटीस होते हैं क्योंकि उनके औदारिककाययोग मत्पयका समाव है ।

सूक्ष्म पृथिवीकाधिकोंकी प्ररूपणा पृथिवीकाधिकोंके समान है । बिशेष यह
है कि बादर, आताप, उद्योत और पशुकीर्तिका परोक्ष, तथा सूक्ष्म और अपशुकीर्तिका
स्वेद्य बन्ध होता है । परघात, उच्छ्वास, बादर, पपात्त और मत्पकशरीरका सात्तर

बंधो, सुहृन्नेद्विपसु देवाभ्यमुबबादामावाशे भित्तरपंचामावा । सुहृमपुत्रविक्रयप जलपनं
 चेव वत्तम् । ववरि पञ्चत्तस्स सोदभो, अपञ्चत्तस्स परोदभो बंधो । सुहृमपुत्रविक्रयप-
 ञ्चत्तमेवं चेव वत्तम् । ववरि अपञ्चत्तस्स सोदभो, पञ्चत्त-भीषणिद्विप-परपादुस्सामावं
 परोदभो बंधो । सप्पमात्तकइयाणं जहापप्पानप्पपुत्रविक्रयपमंगो । ववरि आदात्तम्
 परोदभो बंधो, पुत्रविक्रयप मोक्षं अण्णम् आदात्तसुदयामावाशे ।

पंचभाषावरणीय-जवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्-सोत्तसकमाय बंधनकमा-
 तिरिक्खाउ-मनुस्माउ तिरिक्खगइ-मनुसगइ-पंचनादि-भोएत्थि-तेवा-कम्मइमसीर-असद्व-
 भोएत्थि-सरीरभंगोत्थ-उसपइण-अण्णवउत्तक-तिरिक्खगइ-मनुसगइ-पाभागाजुपुप्पी-अगु-
 त्थुवचठक्क आदाजुग्गोव-भोविहायगइ तस-बावर-बादर-सुहृम पञ्चत्ताप-अस-पत्तेय-सादाव-
 सीर भिपारि-सुइसुइ-सुमग-जुमग-सुस्सर-दुस्सर आदेन्ज-अपादे-ज-अत्तकि-मज्जमकि-
 धिमि-भीषु-बागोद-अचत्तइयपयडीभो एविय वणप्पदिक्खइयाणं पक्खवा कीरे-
 पधोदयाणं पुत्थापुत्तकत्तायवोप्पेदपरिक्खा पत्ति, पधोदयाणमेव बोद्धेदामावाशे ।

बन्ध होता है क्योंकि, सुहृम परेत्थिपोंमें देवोंकी उत्पत्ति न होनेसे वहां निरन्तर बन्धका
 समाप्त है । सुहृम पृथिवीकाधिक पर्याप्तोंकी इसी प्रकार ही प्रकृपणा करना चाहिये ।
 विहायता इतनी है कि पर्याप्तका स्वेत्थ और अपर्याप्तका परेत्थय बन्ध होता है । सुहृम
 पृथिवीकाधिक अपर्याप्तोंकी भी इसी प्रकार ही प्रकृपणा करना चाहिये । विशेष इतना
 है कि अपर्याप्तका स्वेत्थ और पर्याप्त स्थानपृथिवी परमात्त व उच्छ्वासका परेत्थय
 बन्ध होता है । सब अन्धकारिकोंकी प्रकृपणा अपनी अपनी मत्स्यामतिके अनुसार
 पृथिवीकाधिकोंके समान है । विहायता यह है कि आनापका परेत्थय बन्ध होता है,
 क्योंकि, पृथिवीकाधिकोंको छोड़कर अन्यत्र आताप कर्मका उदय नहीं होता ।

पांच जलावरणीय और इक्ष्मावरणीय सत्ता व असात्ता देवकीय मिथ्यात्व
 सोदइ कराय भी नोदराय तिर्यगायु, मनुप्यायु, तिर्यगति मनुप्यगति पांच जातिवां
 जीवारिक, त्रिजस व कामज हाटीर, अह संस्याम जीवारिकहाटीरंगोपांग अह संज्ञन
 वर्त्तादिक बार, तिर्यगतिमाबोन्पाजुपूवी मनुप्यगतिमाबोन्पाजुपूवी अगुक्कपु बारिक
 बार आताप उद्योत हो विहायोगतिपां अस स्यावर, वत्तर, सुहृम पर्यात्त अण्ण पत्त
 प्रत्येक व साधारण हाटीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ मशुमं शुभगं दुर्मगं सुस्वर, दुस्वर
 आदेय अक्षेय पश्यामीति अक्षकाकीति निर्माण मीक्षगोव उच्छवोव और पांच अतत्ताप
 प्रकृतिवोंको स्थापित कर कस्यपतिअधिकोंकी प्रकृपणा करते हैं— बन्ध और उदयके पूर्व
 व अपूर्व कासयत मुच्छेत्तकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहां बन्ध और उदयके मुच्छेत्ता
 समाप्त है ।

पञ्चाषाढावरणीय चतुर्दशणावरणीय-मिच्छत-मनुस्यवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-
 णइदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुवत्तुव-यावर पिराधिर-सुहासुह-दुभग-
 जणादेज्ज-मिणिण ग्रीचागोद-पचतराइयाणं सोदओ वधो, अत्यगईय धुवोदयत्ताओ । इति
 पुरिसवेद-मणुसाउ मणुसगइ-बीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-पईदियजादि पंचसत्थण-ओराठिय
 सरीरभोगोवग-सस्यवण्ण मणुसगइपाओगानुपुब्बी अत्ताव-दोविहायगइ-तस सुभग-सुस्सर दुस्सर
 अदेज्ज-जागोदाणं परोदओ वधो । पचदसणावरणीय-सादासाद-सोत्तसकसाय-छण्णोकसाय
 हुंइसत्थण-ओराठियसरीर-तिरिक्खाउपुब्बी-उवपाद-सपादुत्तासुज्जोव-बादर-सुहुम-प जता-
 पज्जत-पतेय-साहारणसरीर-असक्किषि-अजसकिचीणं सोदय-परोदओ वधो ।

पञ्चाषाढावरणीय मिच्छत-सोत्तसकसाय-मय-दुगुंछ-तिरिक्ख मणुसाउ ओराठिय-तेजा
 कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुवत्तुव-उवपाद-मिणिण-पचतराइयाणं पिरंतरो वधो । सादासाद
 सत्तोकसाय-मणुसगइ-णइदिय-बीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-पईदियजादि-सत्थण ओरा-
 ठियसरीरभोगोवग-सस्यवण्ण-मणुसगइपाओगानुपुब्बी-बादपुज्जोव-दोविहायगदि-तस-यावर-
 सुहुम-अपज्जत-साहारणसरीर-पिराधिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-दुस्सर-अदेज्ज-जणादेज्ज-

पांच ज्ञानावरणीय चार ब्रह्मणावरणीय मिथ्यात्व मनुसकयेइ तिर्यगायु, तिय
 गति एकस्मिन्ना जाति तैजस व कर्मण्य शरीर बर्णादिक चार अगुरुवत्तु, स्यावर, स्थिर,
 अस्थिर, शुभ अशुभ पुर्णम अनादेय निर्माण बीजगोत्र और पांच अन्तरायका स्वोदय
 बन्ध होता है क्योंकि अर्थापत्तिसे ये प्रकृतियां प्रोक्तव्यी हैं । स्त्रीवैद पुत्रवैद मनुष्यायु,
 मनुष्यगति त्रिभिन्न्य बीभिन्न्य चतुर्भिन्न्य पंचभिन्न्य जाति पांच संस्थान भौतारिक
 शरीरगोपांग छह संहनन मनुष्यगतिप्राप्त्यनुपूर्वी माताप दो विहायोगतियां अस
 सुभग सुस्वर दुस्वर, मात्सेय और उच्छगोत्र इनका परोदय बन्ध होता है । पांच
 ब्रह्मणावरणीय साता व असाता वेदनीय सोसइ कयाय छह लोकपाय हुंइसत्थान
 भौतारिकशरीर, तिर्यगानुपूर्वी उपपात परपात उच्छवास उपोत बादर, सुहम
 पयात्त अपयात्त मत्पेकशरीर, साधारणशरीर, यशक्रीर्ति और मयशक्रीर्तिका स्वोदय
 परोदय बन्ध होता है ।

पांच ज्ञानावरणीय मिथ्यात्व सोसइ कयाय मय सुगुप्ता तिर्यगायु, मनुष्यायु
 भौतारिक, तैजस व कर्मण्य शरीर, बर्णादिक चार, अगुरुवत्तु, उपपात निर्माण और
 पांच अन्तरायका सिरत्तर बन्ध होता है । साता व असाता वेदनीय सात लोकपाय,
 मनुष्यगति एकस्मिन्न्य त्रिभिन्न्य बीभिन्न्य चतुर्भिन्न्य पंचभिन्न्य जाति छह संस्थान
 भौतारिकशरीरगोपांग छह संहनन मनुष्यगतिप्राप्त्यनुपूर्वी माताप उपोत दो
 विहायोगतियां अस स्यावर, सुहम अपयात्त साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ
 सुभग, पुर्णम, सुकर, दुस्वर, मात्सेय अनादेय, यशक्रीर्ति, मयशक्रीर्ति और उच्छगोत्रका

बधो, सुहुमेइदिपसु देवाभमुबवादाभावाद्दो भिततरपधामावा । सुहुमपुड्विकइयपन्जत्तपमवं
 भेव वत्तत्वं । भवरि पञ्चत्तस सोदभो, अपञ्चत्तस पत्तदभो बंधो । सुहुमपुड्विकइयप-
 न्जत्तपमेवं चेव वत्तत्वं । भवरि अपञ्चत्तस सोदभो, पञ्चत्त-भीपगिडिडिय-परपादुसासां
 परोदभो बंधो । मन्वभातस्सयाणं जहापन्नासण्णपुड्विकइयमंगो । भवरि भादत्तस
 पत्तदभो बंधो, पुड्विकइय मोत्तुन अण्णत्थ भादत्तसुदयामावाद्दो ।

पंधणात्तावरणीय-पवदसणावरणीय-साक्षात्साद-मिच्छत-सोत्तमकम्यय कर्त्तव्यकम्यय-
 तिरिक्खात-मनुस्मात-तिरिक्खगइ-मणुमगइ-पचजादि-भोरत्तिय-तेजा-कम्मइयसीर-असत्त-
 भोरत्तियसीरजंगावंग-अमपडप-वण्णवठत्त-तिरिक्खगइ-मणुमगइपाओगाणुपुष्पी-मगुस
 ठवुवठत्तक भादत्तु जीव-देविहायमइ-तस-बावर-बादर-सुहुम पन्जत्तप जत्त-पत्तय-साहाज-
 सीर विरासि-सुइसुइ-सुमग-दुमग-सुस्सर-दुस्सर भादे-न-अपादेअ-असकिति-अवगति-
 भिमिअ-वीपुष्पाओर-पचत्तइयपयईओ ठविय वण्णपड्विकइयप पड्वण्ण कीरे-
 बधोदयत्तं पुष्पापुष्पकत्तमयवोच्छेदपरिक्खा पणि, बधोदयामेत्तव वोच्छेदामावाद्दो ।

बन्ध होता है क्योंकि, सूक्ष्म पृथिवीकायोंमें वेबोंकी उत्पत्ति न होसक वहां निरन्तर बन्धका
 समाप्त है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंकी इसी प्रकार ही प्ररूपणा करना चाहिये ।
 विशयता इसकी है कि पर्याप्तका स्वात्स्य और अपर्याप्तका परोक्ष्य बन्ध होता है । सूक्ष्म
 पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंकी भी इसी प्रकार ही प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इसका
 है कि अपर्याप्तका स्वात्स्य और पर्याप्त स्थापनपृथिव्य परपात व उच्छेदासका परोक्ष्य
 बन्ध होता है । सब अपर्याप्तिक बीबोंकी प्ररूपणा अपनी अपनी प्रत्यासत्तिके अनुसार
 पृथिवीकायिकोंके समान है । विशयता यह है कि आतापका परोक्ष्य बन्ध होता है,
 क्योंकि, पृथिवीकायिकोंका छोड़कर अन्यत्र आताप कर्मका उद्भव नहीं होता ।

पांच ज्ञानावरणीय मौ बंधावरणीय सत्ता व असत्ता वैश्वीय मिश्रान्त
 सोखइ कयत्त भी मोक्षपाप निर्गमायु, मनुष्यायु, तिर्बगति मनुष्यगति पांच आतिवा
 जीवारिक, ठिअत्त व कर्मण शरीर, उइ संस्थाव भीवारिकशरीरपंगोपांग छइ संज्ञन
 बर्षाधिक बार, तिर्बगतिप्रायोगयानुपूर्वी मनुष्यगतिप्रायोगयानुपूर्वी अगुच्छसु मादिक
 बार आताप उद्योत हो बिहायोगतिपां वत्त स्यावर, वत्तर, सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त
 प्रत्येक व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग दुर्मग सुखर, दुखर
 भादेव जनादेव पशुकीर्ति मयराजीर्ति निर्माण बीजगोत्र, उच्छेदगोत्र और पांच अतपाव
 प्रवृत्तियोंको स्थापित कर बमस्यतिअधिक्यकी प्ररूपणा करते ह— बन्ध और उद्भवके पूर्व
 व अपूर्व कस्यगत म्पुच्छद्वयी परीक्षा नहीं है क्योंकि यहां बन्ध और उद्भवके म्पुच्छेदका
 समाप्त है ।

पञ्चत्तापञ्चत्ताणं वणप्पदिक्कइयमगो । जवरि पत्तेयमरीरस्स परोदओ सांतरो वधो । तस्स
पादर पञ्चत्त-परपादुम्मासाण वंधो सांतरो । साहारणमरीरस्स सोदय-परोदओ । वादरवणप्पदि
क्कइयपत्तेयसरीरपञ्चत्तापञ्चत्ताणं पि एव चेत्य वत्तथ । जवरि साहारणमरीरस्स परोदओ वधो,
पत्तेयसरीरस्स सोदय-परोदओ वंधो ।

तेजकाइय-चाउकाइय-चादर सुहुम पञ्चत्तापञ्जाण सो चेत्य भगो ।
जवरि विसेसो मणुस्साउ मणुसगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुन्वी-उध्वागोद
णत्थि ॥ १३८ ॥

एदमप्यजामुत्तं देसामामियं, तेजदण सुइदरमपरूवणा कीरदे— परपादुस्सास-चादर
पञ्चत्त-पत्तेयसरीरणं सांतरो वधो, देवाण तेज-बाउञ्जण्यसु उववादाभावादो । तिरिक्खगइ
तिरिक्खानुपुन्वी भीषागोदणं विरंतरो वधो सोदओ चेत्य । जवरि तिरिक्खानुपुन्वीए वधो
सोदय-परोदओ । भाउउञ्जोवाण परोदओ वधो । होदु णाम बाउकाइयसु अत्तावु-वोवाण

उत्तरके बादर मूलम पर्याप्त य अपर्याप्तोक्ती प्ररूपणा धनस्पतिक्रायिकोंक समान है । विशेष
यह है कि प्रत्यक्कादीरका परादय य साम्बर वन्ध होता है । अतः बादर, पर्याप्त पर्याप्त
और उच्छ्वासका साम्बर वन्ध होता है । भाउउञ्जण्यसरीरका वधोदय परादय वन्ध होता
है । बादर धनस्पतिक्रायिक प्रत्यक्कादीर पर्याप्त य अपर्याप्तोक्ती भी इसी प्रकार ही
बहना चाहिये । विशेषता यह है कि स्वाधारण्यसरीरका परादय वन्ध होता है । प्रत्येक
दीरका वधोदय-परादय वन्ध होता है ।

तेजकायिक और बाउकायिक बादर सूक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्तोक्ती प्ररूपणा भी
बंधनिय अपर्याप्तोक्ती समान है । विशेषता केवल यह है कि मनुष्यासु, मनुष्यगति,
मनुष्यगतिप्राप्त्यानुपूर्वी और उच्छ्वास प्रकृतिपां इनके नहीं हैं ॥ १३८ ॥

यह मर्यादाय देनामर्शक है इमीनिय इसल सुचित भयोक्ती प्ररूपणा करत
है— पर्याप्त उच्छ्वास बादर, पर्याप्त और प्रत्यक्कादीरका साम्बर वन्ध होता है क्योंकि,
वयोक्ती लज्जायिक भार वायुकायिक जीवोंमें उत्पत्ति नहीं होती । निषगगति निर्बगानु
पूर्वी और नीषगायका वन्ध निरन्तर य बादय ही होता है । निषगगति यह है कि
निषगानुपूर्वीका वन्ध बादय परादय होता है । भाउउ और उच्छ्वास परादय वन्ध
होता है ।

शेष— वायुकायिक जीवोंमें भाउउ और उच्छ्वास समान भंड ही है, वयोक्ती,

असक्तिरिति अत्रमक्तिरिति-उष्णमोदान् सांतरो बधो, एगसमएष वंशुवरमुवर्तमादो । तिरिक्ताप्य
तिरिक्ताग्राहपाजोगागुपुष्की-भीबागोदाप सांतर-भिरंतरो । कुदो ? तेठ-वाठकग्रहणितो वषप्पदि
कग्रहणमुपपन्नाप मुहुत्तस्तो' भिरंतरवंधुवर्तमादो । परपादुत्तास-बादर-पन्जत्त-वसेयसमिअं
सांतर-भिरंतरो बधो । कथं भिरंतरो ? ज, दबहिंतो वषप्पदिकग्रहणमुपपन्नाप मुहुत्तस्तो
भिरंतर वंधुवर्तमादो । पन्जया मुगमा । गहसंजुत्तादिठवरिमेइंदिययरूपजातुत्त्य ।

एष पादरवणप्पदिकग्रहण च वक्ष्य । पवति बादरम्म सोदओ बंधो, मुहुत्तस्स परो-
दओ । बादर-[वषप्पदि] पन्जत्तपं बादरवणप्पदिभगो । पवति पन्जत्तस्स सोदओ, वषत्तस्स
परोदओ बंधो । पादरवणप्पदिकग्रहणं बादरेइंदियवणत्तमगो । मुहुत्तवणप्पदिपञ्चपवत्तपं
मुहुत्तेइंदियप-वत्तपवत्तमगो' । तसजपन्जत्तपं पंधिंदियवणत्तमगो । पवति पीइंदिय-
तीइंदिय-वठरिंदिय-पंधिंदियपं सत्तय-परोदओ बंधो । भिगोइभीषाण तेसि बादर-मुहुत्त-

वत्तमर वण्य होता है क्योंकि इनका एक समयस बन्धविधाम पाया जाता है । निर्वगाती
निर्वगानिप्राथम्यानुपूर्वी और मीषगोवक्ष्य सत्तयर निरन्तर वण्य होता है क्योंकि तब
व बापु क्कपिअमम वत्तमनिक्कपिअमम उत्पन्न हुए जीवाके भन्तमुहुत्त तक निरन्तर वण्य
पाया जाता है । परपाल उच्छवास बादर, पर्याज और प्रत्येकशरीरका सत्तयर निरन्तर
वण्य होता है ।

शुंक्क—निरन्तर वण्य कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं क्योंकि, देषामेसे वक्ष्यनिकायिकोम उत्पन्न हुए
जीवोंके भग्नमुहुत्त तक निरन्तर वण्य पाया जाता है ।

प्रत्यय मुगम है । गानसंजुक्ता भावि अपरिम प्रकणजा एकस्मिन् प्रकणजाके
समान है ।

इसी प्रकार बादर वत्तमनिकायिकोंके भी कहना चाहिये । विशेषता केयस
इतनी है कि बादरका स्वात्म वण्य होता है और सुहमञ्च परोक्ष । बादर वत्तमगो
वत्तमिक पञ्चान्तोभी प्रकणजा बादर वत्तमनिकायिकोंके समान है । विशेषता यह है कि
पञ्चान्तका स्वात्म और अपपान्तका पञ्चव वण्य होता है । बादर वत्तमनिकायिक
अपपान्तका प्रकणजा बादर एकस्मिन् अपपान्तोंके समान है । सुहम वत्तमनिकायिक
पञ्चान्त व अपपान्तोंके प्रकणजा सुहम पक्षेस्मिन् पञ्चान्त व अपपान्तोंके समान है । वत्त
अपपान्तोंके प्रकणजा पक्षेस्मिन् अपपान्तोंके समान है । विशेषता यह है कि जीस्मिन्
जीस्मिन् वत्तमिन् और पक्षेस्मिन्का स्वात्म परोक्ष वण्य होता है । निगाह जीम व

मुदयामावा, तस्य तदपुत्रतमदो । न तेउक्ताइएसु तदमावो, पम्पकसुपुत्रतममावतो ।
 प्रथम परिहार सुस्पष्ट — न ताव तेउक्ताइएसु आशमो अस्मि, उण्हण्हए सत्यामावादा ।
 तद्वहि वि उण्हण्हमुनठमइ प्पे उवठम्मउ पाम, [व] तस्य आदाववण्णमा, किं
 तेवामण्णा, “ मूत्तप्पवती प्रमा तेव, सवागम्माप्पुण्वती प्रमा माता, उप्पवत्ति
 प्रमोषेता, ” इति निण्ढं मेरोवत्तमादो । तम्हा न उवोवो वि तत्त्वहि, मूत्तप्पु आवास
 तेववण्णमादा । एविवा चेव मरो, व भण्णरथ कथ वि । पणरि सप्पासि पवडीके
 विरिक्खगइसद्धवा पवो ।

तसकाइय तसकाइयपज्जत्ताणमोघ णेदव्व जाव तित्थपरे ति

॥ १३९ ॥

एवं देसामामियवण्णमुत्तं, तथेव सुइदत्थपरुवणा करिदे — बीईदिय तीईदिय

उभयें वह पाया नहीं जाता । किन्तु तेजकायिक जीवोंमें उन दोनोंका उद्यामात्र सम्भव
 नहीं है क्योंकि, यहाँ उभय उद्य प्रत्यक्षमें देखा जाता है ।

समाधान — यहाँ उक्त दोकाका परिहार करते हैं — तेजकायिक जीवोंमें आनापना
 उद्य नहीं है क्योंकि यहाँ उण्य प्रमाका समाप है ।

शंका — तेजकायमें भी ता उण्वता पायी जाती है फिर वहाँ आनापका उद्य
 क्यों न माना जाय ?

समाधान — तेजकायमें भल ही उण्वता पायी जाती है परन्तु उसका नाम आनाप
 [नहीं] हा सज्जा किन्तु तेज संज्ञा होगी। क्योंकि मूलमें उण्ववती प्रमाका नाम तेज
 सवागम्मायी उण्ववती प्रमाका नाम आनाप, और उण्वता रहित प्रमाका नाम उपाग है
 इस प्रकार तीनोंक सब पाया जाता है ।

इसी कारण वहाँ उपाग भी नहीं है क्योंकि, मूत्तप्प उपागका नाम नव है [व
 कि उपाग] । कज्ज इतना ही सब है और वही भी कुछ सब नहीं है । विशेष इतना है कि
 सब मूत्तपिपाका नियम्मानि संयुक्त बन्ध होता है ।

असत्यिक और प्रेमरायिक पयात्तोंके तीर्बकर प्रकृति तद आपके समान
 उ जाना चाहिये ॥ १३९ ॥

यद इतामन्तक भर्तृजाम्बु दे इत्यस्मि इत्थं सूचित अधप्री प्रकपना करत

१ मन्तु इदमावताप इति वक्त ।

१ वृत्त एता कप्यो वाप्यो ईति उक्तविक्रता । आत्मा हीन उक्तवता इ उज्जोरो ॥
 श्री ५. १३. १ अन्तामो - इत्यन्ताप इति वक्त ।

चतुर्दिश-पंचिन्द्रियाण सोदय-परोदयो बंधो । तस-बादराण सोदयो चेष । पञ्चदिश-पात्र-
सुहुम-साहारणादावाण परोदयो चेष बंधो । अवसेसार्थं पञ्चिन्द्रिय-पंचिन्द्रियपञ्चत्वाण उचि-
विहाणेण वक्तव्य ।

जोगाणुवादेण पचमणजोगि-पचवचिजोगि-कायजोगीसु ओष
णेयन्वं जाव तित्ययरेत्ति ॥ १४० ॥

ओषमि उतसुवारसण्हं सुत्ताणमत्तो ससुत्तो एत्थ पिरवयथा वत्तम्भो, मेदामाविदो ।
पवरि पचयगदो मेदो अरिप तं परुवेमो— मणजोगे पिरुद्धे छापात्तात्थिस एवेत्तात्थिस सचत्तीस
[सचत्तीस] चत्तीस उप्पवीस सत्तास सत्तास एक्कसरस दस णव अट्ठ सत्त छ पंच
[पंच चत्तारि चत्तारि] दोणिमि मन्नाइद्विप्पहुदिसव्वगुणहाणाण जहाकमेण एवे पचय
हंति । अण्णो वि विसेसो मणजोगे पिरुद्धे सति अरिप— चतुवादि चत्तारिमाणुपुम्भी-
आदाव-पात्र-सुहुम-मपञ्चस-साहारणाण परोदपण, उवपाद-परपादुत्साम-तस-बादर-पञ्चत्त-
पकेयसरीर-पञ्चिन्द्रियजारीयं सोदएण बंधो ति वक्तव्य । एवं चेष चतुण्हं मणजोगार्थं परवणा

है— द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुर्दिन्द्रिय और पंचेन्द्रियका लोह्य परोह्य बन्ध होता है । जिस
और बादरका स्पर्श है बन्ध होता है । पंचेन्द्रिय स्थावर, सूक्ष्म साधारण और
आत्मापका परोह्य ही बन्ध होता है । शाय प्रकृतियोंके पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्यायोंकी
प्रकृपणाक अनुसार कहना चाहिये ।

योगमार्गानुसार पांच मनोयोगी, पांच नभनयोगी और काययोगियोंमें तीर्थकर
प्रकृति तक ओषके समान जानना चाहिये ॥ १४० ॥

ओषमें कइ रूप सत्तरह (५ में सूत्रसे ३८ में सूत्र तक १७+१७=३४) सुखोंका
अर्थ ससूत्र यहाँ सपूर्ण कहना चाहिये क्योंकि ओषसे यहाँ विशेषताका अभाव है ।
विशेष यह है कि प्रत्येकगत जो कुछ भइ है उसे यहाँ कहते हैं— मनोयोगके निकट
होमे अथात् उसका आश्रित व्यापान करनेपर व्याप्रीस इकनासीस सत्तीस [सत्तीस]
चत्तीस उप्पीस सत्तरह सत्तरह ग्याह दस मी माठ सात छह पांच [पांच बार,
बार] और दो इस प्रकार ये मन्त्रसे सिध्दाएणि आदि सब गुणस्वानोंके प्रत्यय होत हैं ।
मनोयोगके निकट हमेपर और मी विशेषता है— बार आतिमां बार आनुपूर्वी आत्माप
स्थावर, सूक्ष्म अयपान्त और साधारण इका पराह्यस तथा वपयात परपात
उच्छ्वास अस बादर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर और पंचेन्द्रिय आतिम लोह्यसे बन्ध
होता है ऐसा कहना चाहिये । इसी प्रकार ही बाण मनोयोगोंकी प्रकृपना करना चाहिये ।

१ मत्ति सत्तास इति पाठः ।

२ वच-वचनसंगे न हि तद्विनिर्दिष्टं न वाच्यमुच्यते । पृ २१

कयय्या । यद्वि एतन्मिह मज्जोगे विरुद्धे अवसेससम्पन्नजोगा मूलेषुत्तरपञ्चपसु वक्येदम्मा ।
अवसेसा विरुद्धमज्जोगीण पञ्चया होति । तन्नि अम्पस्य कञ्च वि विसेसो ।

वचिजोगीणमवं चेव वत्तवं, सांतर-पिरंतर-सोदय-परोदय-सामित्ताञ्चपारंभी
मज्जोगीणहितो वचिजोगीणं मेदमात्रादो । यद्वि बीहदिय-त्तीहदिय-अउत्तिदिय-यंविदिय-
सोदय-परोदजो वचो सि वत्तं । अस-च-मोसवचिजोगीणं वचिजोगिमगो । यद्वि सन्तमुत्तं
उत्तरपञ्चपसु अमप्य-मोसवचिजोगं मोत्तु ससम्पन्नजोगा अवसेदम्मा । सञ्च-मोस-सम्पन्न-
वचिजोगीण सञ्च-मोम-सम्पन्नमोसमज्जोगिमगो, विसेसामात्रादो ।

कम्पजोगीणं पि आपभेगो चेव । यद्वि सञ्चगुणप्राप्तमोपपञ्चपसु मज-वचिजोगा
पञ्चया अवसेदम्मा । सञ्जागिपञ्चपसु दारोमज-वचिजोगपञ्चया अवसेदम्मा । तन्नि अम्प
विसेसो । मोपमि पुत्तुत्तं सत्तासमुत्तु सत्तासमुत्तमि मेदपदुप्यायज्जुत्तरसुत्त मज्जि—

सादवेदणीयस्स को घघो को अवधो ? मिच्छाहट्ठिणहुडि जाव
सजोगिकेवली घंधा । एदे घंधा, अवधा णत्थि ॥ १४१ ॥

विशयता यह है कि एक मनोयोगक विरुद्ध होनेपर दोन सब पागोंका मूल्य उत्तर
प्रत्ययोंमें कम करना चाहिये । इस प्रकार दोन यह निरुद्धमनायोगोंक प्रत्यय होते हैं ।
अल्प और बहुत विशयता नहीं है ।

पञ्चमयोगियाक भी इसी प्रकार ही कहना चाहिये क्योंकि सात्तर निरुद्ध
स्वात्थ्य परात्थ्य, स्वात्थ्य और प्रत्ययार्थिच्छेदी अपक्षा मनोयोगियों पञ्चमयोगियों
काई भेद नहीं है । विशय इतना है कि द्विष्टिय अतिष्टिय अतिष्टिय और पंचिष्टिय
आतिष्ठ स्वोदय-परोदय कथ्य होना है ऐसा कहना चाहिये । असत्पमुपावचनयोगियों
प्रकृष्टा पञ्चमयोगियाक समान है । विशयता यह है कि सब गुणस्वानोंके उत्तर
प्रत्ययोंमें असत्पमुपावचनयोगका छाडकर दोन सब पागोंको कम करना चाहिये ।
सत्य भूया और असत्पमुपावचनयोगियों प्रकृष्टा सत्य भूया और असत्पमुपावचन
योगियों समान है क्योंकि, काई विचारता नहीं है ।

आवयोगियों भी प्रकृष्टा आपक समान ही है । विशय इतना है कि सब
गुणस्वानोंके आप प्रत्ययोंमें याद मनायाग और याद पचनयाग इस प्रकार का
प्रत्ययोंका कम करना चाहिये । अल्प विशयता नहीं है । आपमें पूर्ण गलतर
स्वोत्तम अनुरूप एवं भव प्रकृष्टार्थ उत्तर एवं कहन है—

मात्रा केनीयस्स कान वपक और केन वच्यक है ? मिप्पाट्ठिण ठेन
सपामोत्तरी तक वच्यक है । य वच्यक है, वच्यक नहीं है ॥ १४१ ॥

भोचम्मि 'अवसेसा भवसा' ति उतं । एत्थ पुण 'अयंथा पत्थि' ति वत्तव्वं,
जोगण्णपादो । ण च सवेगेसु अनोगा होति, विप्पडिसेदादो । जदि एत्थियमेत्थे पेव भेदो
तो एत्थियस्सेव गिरेसो किम्प कदो ? ण एस दोसो, 'धूठपुडीय' पि सुहमाद्वयं
तपोवदेसदो ।

ओरालियकायजोगीण मणुसगइमगो ॥ १४२ ॥

पंचपाणावरणीय-चतुर्दसपावरणीय-पंचतराश्रमाय बधेदयबोच्छेदो मणुसगदीदो पत्थि
विसेसो, विसेसकसणामावादो । असक्कि-उत्तपागेत्थेसु विसेसो अत्थि, तेस्मिंस्सुदयबोच्छेदा-
मावादो । मणुसगदीए पुण उदयबोच्छेदो अत्थि, अनोगिपरिमिसमए मणुसगदीए सह
एदास्सिमुदयबोच्छेदसणादो । सोदय-पर्येदय-सांतर भिरंतरपरिक्खामु अत्थि भेदो, भेदकार
वाजुवत्तमादो । परचणसु अत्थि भेदो, ओरात्थियमिस्स-कम्माइय-वेठम्भियदुग-अदुमय
अधिप-अपदि विना मिच्छाइडिहि सासणे च अहकस्सेण तेदात्थि-अद्वत्थिसप-अपदसणादो,

भोचम्मं अवशेष अवशेषक ईं ऐसा कहा गया है । परन्तु यहां अवशेषक कोई
नहीं है ऐसा कहा जाहिय क्योंकि, यहां योगकी प्रधानता है । और सवेगियोंमें
अयोगी होते नहीं हैं क्योंकि ऐसा होनेमें विरोध है ।

शुद्ध—यदि केवल इतनी मात्र ही विशेषता थी तो इतनेका ही निर्देश क्यों
नहीं किया ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि स्पृक्षवृद्धि शिष्योंके भी सुकपूषक
ग्रहण हो एतदर्थ उक्त प्रकार उपदेश किया गया है ।

औदारिकप्रययोगियोंकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है १४२ ॥

पांच जामावरणीय चार वर्णनापरणीय और पांच अन्तराय इन प्रकृतियोंके
बन्धोव्यप्युच्छेदमें मनुष्यगतिके कोई विशेषता नहीं है क्योंकि, विशेष कारणोंका
यहां अभाव है । यथाकीर्ति और उद्योगोत्थमें विशेषता है क्योंकि यहां उक्त उद्भव
स्पृक्षवृद्धि अभाव है । परन्तु मनुष्यगतिके इनका उद्भवस्पृक्षवृद्धि है क्योंकि, अभागकेवसी
गुणस्थानके अन्तिम समयमें मनुष्यगतिके साथ इनका उद्भवस्पृक्षवृद्धि देखा जाता है ।
स्वास्थ्य पर्येदय और अन्तर भिरन्तर बन्ध की परीक्षामें कई विशेषता नहीं है क्योंकि
यहां विशेषताके उन्पादक कारणोंका अभाव है । प्रत्ययोंमें विशेषता है क्योंकि औदारिक-
मित्र अमण वैदिकविक्रिक, चार मनोयोग भ र चार पञ्चनपाग प्रत्ययोंका विना मिच्छा
इति और सासात्तन गुणस्थानमें यथाकमस तत्वानीय और अवतीन् प्रत्यय द्योते जात है

अवस्था । पर्वरि एकस्मिन् मन्त्रयोगे निरुद्धे अवसेससम्प्रयोगा मूलेषु उत्तरपञ्चमसु अवतरन् ।
अवसेसा निरुद्धमन्त्रयोगीन् पञ्चया ह्येति । अस्मिन् व्यप्यत्वा कल्प वि विसेसो ।

वचिजोगीजमेवं चेष वत्सर्गं, सांवर-परितर-सोदय-परोदय-सामितपञ्चमपरि
मन्त्रयोगीहिंते वचिजोगीन् मेदामावादो । पर्वरि बीर्दिश्य-तीर्दिश्य-वर्तर्दिश्य-वर्तिरिवा
सोदय-परोदयो वयो सि वत्सर्गं । अस-मोसवचिजोगीन् वचिजोगिमगो । पर्वरि सम्प्रगुण
उत्तरपञ्चमसु अवपञ्च-मोसवचिजोग मोतूष सेससम्प्रयोगा अवपेदध्या । सम्प्र-मोस-सम्प्रमोस-
वचिजोगीन् सम्प्र-मोस-सम्प्रमोसमन्त्रयोगिमगो, विसेसामावादो ।

कर्मयोगीन् वि ओषमंगो चेष । पर्वरि सम्प्रगुणद्विजापमोपपञ्चमसु मन्त्र-वचिजोग
पञ्चया अवपेदध्या । सजोगिपञ्चमसु दोहोमन्त्र-वचिजोगपञ्चया अवपेदध्या । पर्वरि कर्मन्त्र
विसेस । ओषमि पुश्वर्तसम्प्रसमुत्तेसु पठत्यमुत्तमि मेदपदुप्यायपट्टमुत्तमुत्तं मन्त्रि—

सादावेदणीयस्त को वधो को अवधो ? मिच्छाहृष्टिपट्टि जाव
सजोगिकेवली वंधा । एदे वंधा, अवंधा न्त्यि ॥ १४१ ॥

विशेषता यह है कि एक मन्त्रयोगके निरुद्ध होमेपर दोष सब योगोंको मूलोप उत्तर
प्रत्ययोंमेंसे कम करना चाहिये । इस प्रकार दोष यह निरुद्धमन्त्रयोगियोंके प्रत्यय होते हैं ।
अन्त्य और कहीं विशेषता नहीं है ।

वचनयोगियोंकी भी इसी प्रकार ही कहना चाहिये क्योंकि साम्प्रतिरितर,
सोदय-परोदय, स्वामितर और प्रत्ययान्तिष्वेत्ती अपेक्षा मन्त्रयोगियोंसे वचनयोगियोंके
कहीं भेद नहीं है । विशेष इतना है कि त्रीन्द्रिय बीन्द्रिय अतुन्द्रिय और पंचेन्द्रिय
जातिका सोदय-परोदय वन्ध होता है ऐसा कहना चाहिये । असत्यमृगवचनयोगियोंकी
प्रकृषा वचनयोगियोंकी समान है । विशेषता यह है कि सब गुणस्थानोंके उत्तर
प्रत्ययोंमेंसे असत्यमृगवचनयोगको छोड़कर दोष सब योगोंको कम करना चाहिये ।
सत्य मृगा और सत्यमृग वचनयोगियोंकी प्रकृषा सत्य मृगा और सत्यमृग वचन-
योगियोंके समान है क्योंकि, कहीं विशेषता नहीं है ।

काव्ययोगियोंकी भी प्रकृषा आपके समान ही है । विशेष इतना है कि सब
गुणस्थानोंके आप प्रत्ययोंमेंसे चार मन्त्रयोग और चार वचनयोग इस प्रकार आठ
प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । अन्त्य विशेषता नहीं है । ओषमे पूर्वोक्त सत्तर
स्थानोंमेंसे अतुर्ग मृगमें भेद प्रकृषावर्ध उत्तर मृग कहते हैं—

साता वदनीयस्त क्वेन वन्धु और क्वेन अवन्धु है ? मिथ्यायस्मि ठेकर
सयोगकेवली तक वन्धु है । ये वन्धु हैं, अवन्धु नहीं है ॥ १४१ ॥

जोषमि 'अवसेसा अवेसा' ति उच । एत्य पुन 'अपया अति' ति अतप्पे,
जोगणपादो । न च सवेगेसु अजोगा होति, विप्राविसेहादो । अदि एतियमेत्थे चैव भेदो
तो एतियस्सेव विदेत्थे किण्ण करो ? न एस दोसो, 'मूलमुदीर्ण' पि सुहम्मइण्डे
तपोवेदसादो ।

ओरालियकायजोगीण मणुसगइमगो ॥ १४२ ॥

पचपाणाकरणीय-चउदंसणावरणीय-पचंतउइयाण बधोदयवोच्छेदो मणुसगदीदो अत्थि
विसेत्थो, विसेसकमणामादो । असकिंवि-उन्नागोदेसु विसेसो अत्थि, तेसिमिअदयवोच्छेदा-
मादो । मणुसगदीए पुन उदयवोच्छेदो अत्थि, अजोगिचरिमिसमए मणुसगदीए सह
एदास्सिउदयवोच्छेदंसपादो । सोदय-परोदय-सांतर भिरंतरपरिक्खासु अत्थि भेदो, भेदकर
आजुवत्तमादो । पचपयसु अत्थि भेदो, ओरालियमिस्स-कम्माइय-वेठभियदुग-अदुमण
अधिपचपदि विणा मिच्छाइदिमि सासणे च महाकमेण तेदावीस-अदुत्तीसपचपयदसपादो,

मोघमें अवशेष अवशेष हैं ऐसा कहा गया है । परन्तु यहां अवशेष कहें
नहीं है ऐसा कहना चाहिए क्योंकि, यहां योगकी प्रधानता है । और सयोगियोंमें
अयोगी होते नहीं हैं क्योंकि ऐसा होनेमें विरोध है ।

शुक्र—यदि केवल इतनी मात्र ही विशेषता थी तो इतनेका ही निर्वेच क्यों
नहीं किया ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि, स्पृष्टबुद्धि शिष्योंके भी सुखपूर्वक
ग्रहण हो एतदर्थ उक्त प्रकार उपदेश किया गया है ।

औदारिकप्रययोगियोंकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है १४२ ॥

पांच ज्ञानावरणीय चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय इन प्रकृतियोंके
बन्धनप्युच्छेदमें मनुष्यगतिके कोई विशेषता नहीं है क्योंकि, विशास कारणीय
यहां अभाव है । यदाकीर्ति और उच्चगोत्रमें विशेषता है क्योंकि, यहाँ उनके उच्च
प्युच्छेदका अभाव है । परन्तु मनुष्यगतिके इनका उच्चप्युच्छेद है क्योंकि, अयोगकेसही
गुणस्थानके अन्तिम समयमें मनुष्यगतिके साथ इनका उच्चप्युच्छेद होता जाता है ।
स्वोदय परोदय और सात्तर निरंतर बन्ध की परीक्षामें कोई विशेषता नहीं है क्योंकि,
यहाँ विशेषताके उत्पन्नकारणोंका अभाव है । प्रत्ययमें विशासता है क्योंकि औदारिक
मित्र कर्मण वैधियिकद्विक, चार मनायोग म र चार बचनपाण प्रत्ययोंके बिना मिच्छा
इदि और सासात्तन गुणस्थानमें यथाक्रममें ततालीस और अठतीस प्रत्यय दृष्ट जात हैं

सम्पामिच्छादिति-असंबदसम्पारिद्धिषु बोधीसपञ्चयदंस्मादो, उवरिमगुपद्यावप्यसु नि
 बोत्तत्पिक्रयबोर्ग मोत्तुण सेसमेगपञ्चयावममावादो । उवरिपरिक्खत्तु वि परिष विसेमे ।
 पवरि मिच्छादिति-सासजसम्मादिति-सम्पामिच्छादिति-असंबदसम्मादिति-संज्ञासंबदा तिरिक्खत्तु
 मनुसमइगद्विद्धि सा मि ति वत्तम् । एसो पढमसुत्तमिमेदो । एत्थ उच्चपञ्चय-म
 गयसामिचमेजो सम्बसुत्तेसु दइम्वा । पवरि विष्ठाणियपयडीसु तिरिक्खत्त-तिरिक्खत्त
 । तिरिक्खत्तगइपाभोम्मात्तुपुष्पी उन्नेवावण पपो मनुसगईए परोत्तमो, एत्थ पुण सोदय-परोत्तमो
 ति वत्तम् । पवरि तिरिक्खत्तगइपाभोग्गात्तुपुष्पीए परोत्तमो भेव बंधो, बोत्तत्पिक्रयमेये
 विसे उदयामावादो । तिरिक्खत्तगइ तिरिक्खत्तुपुष्पीं मनुसगईए सांतरो बंधो, एत्थ पुण
 सांतर-भिरत्तो । एवं भेव पीचागोइस्स वि वत्तम् । मनुसाउ मनुसगईं मनुसगईए
 सोदमो बंधो, एत्थ पुण सोदय-परोत्तमो । [बोत्तत्पिक्रयरोर्ग] मनुसगइपाभोग्गात्तुपुष्पीं
 सांतर-भिरत्तो मनुसगईए बंधो, एत्थ पुण सांतरो । मनुसगइपाभोग्गात्तुपुष्पीए मनुसगईए
 सोदय-परोत्तमो, एत्थ पुण परोत्तमो । बोत्तत्पिक्रयस्स मनुसगईए सोदय-परोत्तमो बंधो,
 एत्थ पुण सोदमो । बोत्तत्पिक्रयस्स मनुसगईए सांतर-भिरत्तो, एत्थ वि सांतर-भिरत्तो

सम्पामिच्छादिति और असंपत्तसम्पगद्वि गुणस्यात्मैर् बीतीस प्रत्यय द्वेये ज्ञाते ई तथा
 अपरिम गुणस्याम प्रत्ययैर्मे मी बीद्वारिक्रययोगको छोड़कर होय योग प्रत्ययोका जमाव
 है । अपरिम परीक्षाओंमें मी कोई विशेषता नहीं है । केवल इतना बिशेष है कि मिच्छाद्वि,
 सासाहमसम्पगद्वि, सम्पामिच्छाद्वि असंपत्तसम्पगद्वि और संयतासंबत तिर्यग्गति व
 मनुष्यगतिके आश्रित होकर स्वामी है, ऐसा कहना चाहिये । यह प्रथम सूत्रस्थित मेव
 है । वहाँ पूर्वोक्त प्रत्यय और गतिगत स्थामित्वमेव सत्र सूत्रोंमें देखा जा चाहिये । बिशेष
 इतना है कि द्विस्वाधिक प्रकृतिशक्तिमें तिर्यग्गानु, तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और
 जघोतका बन्ध मनुष्यगतिमें परोक्ष्य होता है । परन्तु वहाँ इनका बन्ध स्त्रोक्ष्य परोक्ष्य
 होता है ऐसा कहना चाहिये । बिशेषता यह है कि तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोक्ष्य ही
 बन्ध होता है क्योंकि बीद्वारिक्रययोगमें उसका उद्भवका जमाव है । तिर्यग्गति और
 तिर्यग्गानुपूर्वीका मनुष्यगतिमें सात्तर बन्ध होता है किन्तु वहाँ इनका बन्ध सात्तर
 निरन्तर होता है । इसी प्रकार ही बीजयोगिक मी कहना चाहिये । मनुष्यानु और
 मनुष्यगति मनुष्यगतिमें स्त्रोक्ष्य बन्ध होता है परन्तु वहाँ स्त्रोक्ष्य परोक्ष्य बन्ध होता
 है । [बीद्वारिक्रयपीरतापांग] और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध मनुष्यगतिमें
 सात्तर निरन्तर होता है परन्तु वहाँ सात्तर होता है । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मनुष्य
 गतिमें स्त्रोक्ष्य-परोक्ष्य बन्ध होता है, परन्तु वहाँ परोक्ष्य बन्ध होता है । बीद्वारिक्र-
 यपीरका मनुष्यगतिमें स्त्रोक्ष्य परोक्ष्य बन्ध है परन्तु वहाँ स्त्रोक्ष्य बन्ध होता है ।
 बीद्वारिक्रयपीरका मनुष्यगतिमें सात्तर निरन्तर बन्ध होता है वहाँ भी सात्तर निरन्तर

चेव । एसा वेद्याणिसुतद्वियभेदो ।

एन्द्रिय-र्षाद्विद्य-तीर्द्विद्य चतुर्द्विद्य पंचिद्विद्यआदि आदाव-मावर-सुहुम-साहारणाण मणुमगइए परोदओ बभो, एत्थ पुण सोदय-परोदओ । अपन्वत्तस्स मणुमगइए सोदय-परोदओ, एत्थ पुण परोदओ । एसो एगद्याणियसुतद्वियभेदो ।

सपधिय अण्णमुत्तेसु भेदामावादो ताणि मोत्तुण भट्टद्याणियमुत्तद्वियभेदो उप्पदे— मिच्छादिद्वि-सासणसम्मदिद्वि-असज्जसम्मदिद्वीसु उवपाद-परपाद-उत्सास-अप-वत्तापं मणुमगइए सोदय-परोदओ, एत्थ पुण सोदओ चेव । पंचिद्विद्यआदि-तस पादराणं मणुमगइए सोदओ, एत्थ पुण सोदय-परोदओ । वेपेद देसामासियमप्यणामुत्त तेपेदे मय्यविसेसा एत्थुवत्तमेति । अण्ण पि भेददमणद्वमुवरिममुत्तं मणदि—

णवरि विसेमो सादावेदणीयस्स मणजोगिभगो ॥ १४३ ॥

ओरात्थियकपयोगीसु अर्षभगामावादो ।

ओरात्थियमिस्सकायजोगीसु पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय
असादावेदणीय-चारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग भय

ही हाता है । यह द्विरूपानिक सूत्रस्थित भेद है ।

एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुर्द्विन्द्रिय पंचाग्नय आनि माताए स्थावर, सूक्ष्म धीर साधारणका मनुष्यगतिमें पराद्वय बन्ध हाता है परन्तु यहाँ स्थाव्य-पराद्वय बन्ध होता है । अपवाजका मनुष्यगतिमें स्वाद्वय पराद्वय बन्ध होता है परन्तु यहाँ पराद्वय बन्ध हाता है । यह एकस्थानिक सूत्रस्थित भेद है ।

इस समय अग्य पूर्वोंमें भद न जानस उग्हें छाड़कर अष्टस्थानिक सूत्रस्थित भेदका कहत है— मिच्छाद्वि सामाज्यसम्यग्द्वि आर अमयतसम्यग्द्वि गुणस्थानोंमें उपधात परधात उच्चापास धीर अपवाजका मनुष्यगतिमें स्वाद्वय पराद्वय बन्ध हाता है परन्तु यहाँ स्वेद्वय ही हाता है । पंचाग्नय आनि बस धीर बादरका मनुष्यगतिमें स्थाव्य बन्ध हाता है परन्तु यहाँ स्थाव्य पराद्वय बन्ध हाता है । अर्चि यह अण्णामूत्र दानामनक है मत एष य सब चित्तवर्तार्थ यहाँ पायी जाती है । अग्य भी भद दिग्गजानक मिय उपरिम सूत्र कहत है—

विशेषता यह है कि साना वेदनीयसी प्ररूपना मनोपागिपोंके समान है ॥ १४३ ॥

क्योंकि, धीराधिकपयगतिपोंमें माना वेदनीयके अर्षभगोका अमाय ह ।

धीराधिकमिभ्रकपयगिपोंमें पाँच ज्ञानागणीय, छह दृशनागणीय, ममाना वेदनीय, बारह कयाय, पुरपवेद, दाम्य, रति, भग्नि, शोरु, मय, जुगुप्पा, पंचन्द्रिय आनि, तेजस

दुर्गन्ध-परिचिदियजादि-तेजा-कम्महयसरीर-समचउरससठण-वण्ण-गघ-
रस-फास अगुरुअल्लहुअ उवघाद परघाद-उस्मास-पसत्थविहायगइ-तस-
वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-धिराधिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-
जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पचत्तराइयाण को वधो को अवंधो ?
॥ १४४ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी असजदसम्माहट्ठी वधा । एदे वंधा,
अवसेसा अवधा ॥ १४५ ॥

परपाहुस्मास-पसत्थविहायगइ-सुस्सरणमेत्थुदयामावादा वंधोद्वारा पुष्पावरकठ-
संभविबोम्भेदविचारो परिध । अवसेसाय पयहीने वधोदया सम बोझिज्जति, अवसेदसम्मा
विहिन्दि तद्धमयामावदसमादो ।

पंचपापावरणीय-पठइसपावरणीय-तेजा-कम्महयसरीर-वण्ण-गघ-रस-फास-अगुरु-
अल्ल-उवघाद-धिराधिर-सुहासुह विमिण-पंचत्तराइयाण सोदवो वंधो, एत्थ सुवोदयवाधो ।

५ कर्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्मान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपपात, परपात,
उष्णश्लेष्म, प्रशस्तविहययोगनि, श्रम, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, सुभ, अशुभ,
सुभग, सुम्बर, आदेय, यशस्विर्ति निमाप, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन कन्धक
और कौन अवन्धक है ? ॥ १४४ ॥

यह सुख सुगम है ।

मिप्प्यादधि, सासणसम्पगधि और असंयतसम्पगधि कन्धक है । ये पन्धक है,
शेष अवन्धक है ॥ १४५ ॥

परपात उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगनि और सुस्सरका यहाँ उदयामाव होनेसे
बन्ध य वधक पूर्व और मपर कास सम्पत्ती व्युत्प्रेक्षका विचार यहाँ है । शेष
प्रकृतिपौवा बन्ध और वध वानों साथ व्युत्प्रेक्ष होने हैं क्योंकि, अवसेदसम्पगधि
शुण्डत्याजमें उन वानोंका अभाव देखा जाता है ।

पांच पापावरणीय चार दशपावरणीय तेजस ५ कर्मच शरीर, वर्ण गन्ध
रस स्पर्श, अशुभसुख उपपात स्थिर अस्थिर, सुभ अशुभ निमाप और पांच अन्तराय
इत्यादि काव्य बन्ध होना है क्योंकि यहाँ ये सुवोदयी हैं । मित्रा प्रकृति चार वपाय,

मिहा-पयत्न-वारसकसाम-हस्त-रदि-भरदि-सोग मय दुर्गच्छा-असादवेदनीय उष्वागोत्राणं सोदय परोदयो बंधो । कथमुष्वागोदयो सम्मादिद्वीसु परोदयो ? न, तिरिक्तेसु पुष्पाउवधधसेपुष्पणसह्यसम्मादिद्वीसु परोदणुबागोदस्स वंजुलमादो । पुरिसवेद-समचठ रससंयण-सुमगादेज्ज-वसकिचीण मिष्मदिद्वि-सासणेसु सोदय-परोदयो । असंजदसम्मादिद्वि-सोदयो । पथिदियजादि-तस-चादर पज्जत्त-पत्तेयसरीणं मिष्मदिद्वि-सोदय-परोदण बंधो । सासणसम्मादिद्वि-असंजदसम्मादिद्वीसु सोदण । परपादुस्सास-पसत्वाविहायगइ-अणसत्थ-विहायगइ-सुस्सरणं तिसु वि गुणद्वयेसु परोदण बंधो । अजसकिचीण मिष्मदिद्वि-सासणसम्मादिद्वीसु सोदय-परोदण बंधो, असंजदसम्मादिद्वीसु परोदण ।

पथपाणावरणीय-छइसजावरणीय-वारसकसाम-मय-दुर्गच्छा-तेजा-कम्मइयसरीर वण गंध-रस-फास-अगुरुवल्लुव-उवधाद-पिमिण-यंथतरायाण भिरंतो बंधो । असाद-हस्त-रदि भरदि-सोग-वसकिचि-अजसकिचि-पिराधिर-सुमासुमाण सांतो बंधो, तिसु वि गुणद्वयेसु एगसमण वजुवरमंसजादो । पुरिसवेद-समचठरससंयण-सुमगादेज्ज-उष्वागोद-पसत्वाविहाय

हास्य एति भरति शोक मय दुर्गच्छा असाता वेदनीय और उष्वागोत्रका स्वोदय परोदय बन्ध होता है ।

संदेह—सम्यग्दृष्टियोंमें उष्वागोत्रका परोदय बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह शक्य ठीक नहीं क्योंकि, पूर्व आयुक्रमके वशासे तिर्यक्षोंमें उत्पन्न हुए साधिकासम्यग्दृष्टियोंमें परोदयसे उष्वागोत्रका बन्ध पाया जाता है ।

पुरुषवेद समचतुरस्रसंस्थान सुमग ज्ञेय और यशस्वीर्तिका मिथ्यादृष्टि व सासात्मसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें इनका स्वाक्ष्य बन्ध होता है । पथेमेव आति जस बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है । सासात्मसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदयसे बन्ध होता है । परयात बन्धवास प्रशस्तविहायोगति अपशस्तविहायोगति और सुस्वरका तीनों ही गुणस्थानोंमें परोदयसे बन्ध होता है । अपशस्वीर्तिका मिथ्यादृष्टि व सासात्मसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदयसे और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें परोदयसे बन्ध होता है ।

पथ ज्ञानावरणीय छइ दर्शनावरणीय बादर कयाय मय दुर्गच्छा ऐजस व कामज शरीर, बर्ष गन्ध रस स्पर्श अगुरुलघु, उपधात निर्माण और पथ अन्तराय, इनका मिश्रित बन्ध होता है । असाता वेदनीय हास्य एति भरति शोक, यशस्वीर्ति अपशस्वीर्ति स्थिर, अस्थिर, शुभ और अशुभका साक्षर बन्ध होता है क्योंकि तीनों ही गुणस्थानोंमें इनका एक समपक्षे बन्धविग्राम देका जाता है । पुरुषवेद समचतुरस्र संस्थान सुमग ज्ञेय, उष्वागोत्र, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका मिथ्यादृष्टि व

दुग्धा-पर्णिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-वण्ण-गध-
रस-फास अगुरुअलहुअ उवघाद परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-त्तस-
वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-पिरायिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-
जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पचतराहयाणं को वधो को अवधो ?
॥ १४४ ॥

सुगम ।

मिच्छाहृष्टी सासणसम्माहृष्टी असजदसम्माहृष्टी वधा । एदे नंधा,
अवसेसा अवंधा ॥ १४५ ॥

परपाठुस्सास पसत्थविहायगइ-सुस्सराम्मेत्तुदयामावाधो वधोदयायं पुम्मावरकठ
संपंविवाप्पेद्विषायो पत्थि । अवसेसार्थं पयदीपं वधोदया समं योच्छिज्जंति, असंयत्तसम्प-
दिद्विहिं तदुमयामावदंसणादो ।

पंचजात्रावर्णीय-पठदंसपावर्णीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गध-रस-फास-अगुरु-
अलहु-उवघाद-पिरायिर-सुहासुह-णिमिण-पंचतराहयाणं सोदयो पंधा, एत्थं ध्रुवोदयसरो ।

य कर्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपपात, परपात,
उष्णत्वान्ध, प्रशस्तविहायोगति, प्रस, वादर, पयाप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,
सुभग, सुम्भर आदय, यशस्वीर्ति निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन कन्धक
और कौन अवन्धक है ? ॥ १४४ ॥

बह सुख सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासतदनसम्यग्दृष्टि और असंपत्तसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं,
येप बन्धक हैं ॥ १४५ ॥

परपाठ उच्छिज्जाम प्रशस्तविहायागति और सुस्सरक्य यहाँ उदयामाव होनेसे
बन्ध य उदयक पूर्ण और अपर काम सम्बन्धी व्युत्प्रेक्षक विचार नहीं है । शेष
प्रकृतियोंका बन्ध और उदय होनेसे नाय व्युत्प्रेक्ष्य होने हैं क्योंकि, असंपत्तसम्यग्दृष्टि
शुचत्त्वानर्मे उन दोनोंका अभाव क्या जाता है ।

पांच जात्रावर्णीय और दशजात्रवर्णीय तेजस य कर्मण शरीर, वर्ण गन्ध
रस स्पर्श अगुरुलघु, उपपात स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ निर्माण और पांच अन्तराय
इनका स्वरूप बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ य ध्रुवोदयी हैं । निद्रा प्रवृत्ता वादर कषाव,

तिरिक्ख-मणुम्मा सामी । वधदाण पवविण्णट्ठदाणं च सुगमं । पंचणाषावरणीय छर्दसणावरणीय-पारसकसाय-मय-दुगुल्ल-तेजा-कम्मइय-वण्णत्तउक्क-अगुल्लत्तुव-उवघाद निमिष-पंचंतराह्याणं मिच्छाइत्तिहिं' चउत्तिहो वधो । यमेसु तिषिहा, धुवपधामावादो । अवसंसाणं सव्वपयडीण तिसु वि गुणहाणसु वधा मात्ति अद्दुवो ।

णिदाणिहा-पयलापयला-यीणगिद्धि-अणताणुवधिकोध-भाण माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगड मणुसगह-ओरालियमरीर चउसठाण-ओरालियसरीरअगोवग-पचसघट्ठण तिरिक्खगड मणुसगहपाओग्गाणु पुव्वी-उच्चोव अप्पसत्यविहायगह-दुमग-दुस्सर-अणादेव्व णीचागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ १४६ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठी सासणमम्माइट्ठी वधा । एदे वधा, अवमेसा अवधा

॥ १४७ ॥

निर्येकं य मनुष्य भवामी है । वन्धाध्यान और वन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । पांच कानावरणीय छह दर्शनावरणीय बारह कपाय मय जुगुप्सा तज्जम य कर्मण शरीर पार्श्विक चार, अगुल्लसु उपधान निमाण और पांच भस्मराय इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका वन्ध होता है । शय हा गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका वन्ध होता है क्योंकि वहाँ भय वन्धका समाप है । तब सब मरुतिषोंके वन्ध तीनों ही गुणस्थानोंमें सादि य अग्रुप होता है ।

निद्रानिद्रा, प्रसन्नप्रसन्न स्थानशुद्धि, अनन्तानुषन्धी व्रथ, मान, माया, त्रम, श्रीवेद, तियगति, मनुष्यगति, आदारिकशरीर, चार संस्थान, आदारिकशरीरगोपांग, पाच संदनन, तियगति, मनुष्यगतिप्रायोम्यानुषीं, उषोत, अप्रश्रुतविहायागति, दुमग, दुस्सर, अनदेय और नीचगोत्रका कैम वन्धक और कैम अवधक है ? ॥ १४६ ॥

यह स्रुप्त सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और मासदहनसम्यग्दृष्टि वन्धक है । य वधक है, शेष अवधक है ॥ १४७ ॥

गह-सुस्रपणं मिष्मदिष्टि-सासपसम्मादिष्टीसु सन्तिरे वधो, असज्जदसम्मादिष्टिम्हि विरंतरे ।
 पंचिदिय-तस वादर-पञ्चध-पतेपसरीर-परघादुस्सासां मिष्मदिष्टीसु सन्तिर-विरंतरे वधा ।
 कथं विरंतरे ? तिरिक्ख-मज्जुसुण्णसपसकुमारदिदेवाणं गेरहमाणं च विरंतरवेषुवत्तमा ।
 सासपसम्मादिष्टि-असज्जदसम्मादिष्टीसु विरंतरे ।

मिष्मदिष्टिस्म वैश्वीस पञ्चया, बोधपञ्चणमु ओराठिवमिस्सकययोगवदिरिक्ख-
 वारसजोगापमभावादो । सामणस्स बह्वीस, असज्जदसम्मादिष्टिस्म पत्तिस पञ्चया; तेषि
 च जोगापमभावादो असज्जदसम्मादिष्टीसु त्पी पञ्चसमधेदेहि सह वारसजोगापमावदो ।
 एतामो सम्पपयद्दीमो असज्जदसम्मादिष्टिणो ववगहसंजुसं वंधेति । मिष्मदिष्टि-सासपसम्मा-
 दिष्टिणा उप्पयाद मज्जुसगहसंजुस, सेसामो सम्पपयद्दीमो तिरिक्ख-मज्जुसगहसंजुस वंधेति ।
 वव-विरयगहो मिष्मदिष्टि-सासपसम्मादिष्टिणो किण्ण वंधेति ? न, अपन्नप्रतट्ठाए तस्मि
 वधामानादो ।

सासादनमग्गदहि गुणस्सालोमे सान्तर बन्ध होता है असंयतसम्पददहि गुणस्सालोमे
 निरन्तर बन्ध होता है । वैश्वीस वस वादर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर परघात और
 उप्पवासका मिष्पादहिणोमे सान्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

शंकर—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि नियम व मनुष्योंमें उत्पन्न हुए सातकुमारवि देवों और
 नारीकबोके निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

सासादनमग्गदहि वार असंयतसम्पददहि गुणस्सालोमे निरन्तर बन्ध होता है ।

मिष्पादहिणे ततालीस प्रत्यय होते हैं क्योंकि बोध प्रत्ययमेंसे उसके बीस
 रिक्खीस ववयागक छाहकर अन्य बारह योगोंका समावेश है । सामानसम्पददहि
 बह्वीस और असंयतसम्पददहि वर्यास प्रत्यय होते हैं क्योंकि, उन्हीं योगोंका यहाँ भी
 समावेश है वृत्ति असंयतसम्पददहिणोमे त्पी और मज्जुसक वैश्वीस साध बारह योगोंका समावेश
 है । इन सब प्रकृतियोंका असंयतसम्पददहि ववगणिस संयुक्त बोधन है । मिष्पादहि व
 सामानसम्पददहि उक्कगावक मनुष्यगणिस संयुक्त तथा दोष सार प्रकृतियोंको
 नियगणिस और मनुष्यगणिस संयुक्त बोधन है ।

शंकर—ववगणिस व मरकगणिक मिष्पादहि वार सामानसम्पददहि कबों नहीं
 बोधन ?

समाधान—नहीं बोधन क्योंकि, अपर्याप्त वासमें उनका बन्ध नहीं होता ।

तिरिक्ख-मणुस्सा सामी । बधदाण वधविणट्टुदाणं च सुगम । पंचणाजावरणीय छत्रं सजावरणीय-चारसकसाय-मय दुगुल्ल-तेजा-कम्मइय-वण्णचउक्क-अगुल्लुव-उबधाद भिमिष-यचतराइयाण मिच्छादिनिहिं चउप्पिहो बधो । मंसु तिचिहो, पुवबधाभावादे । अवसेसात्थ सम्भपयणीण तिसु वि गुणट्टाणेषु बधो सादि भदुवो ।

णिद्वाणिद्वा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणताणुवधिकोध-माण माया-लोम-इत्थिवेद तिरिक्खगइ मणुसगइ-ओरालियसरीर चउसठाण-ओरालियसरीरअगोवग-यचसघहण तिरिक्खगइ मणुसगइपाओग्गाण पुव्वी-उज्जोव अप्पसत्यविहायगइ दुभग-दुस्सर-अणादेज-णीचागोदाण को बंधो को अवधो ? ॥ १४६ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विटी सासणसम्माद्विटी उधा । एदे वधा, अवसेसा अबधा ॥ १४७ ॥

तिर्येक व मनुष्य सामी है । बन्धाप्याप्त और बन्धविमलस्थान सुगम है । पांच ज्ञानावरणीय छत्र इष्टमावरणीय चारु कपाय मय दुगुल्ल तज्जम्ब ब कम्मण गरीर धर्मादिक चार, मणुससु, उपपात मिमाप और पांच भस्तराय इनका मिष्पाद्वि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । शय या गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि वहाँ प्रत्य बन्धका अभाव है । शय सब प्रकृतिपौत्र बन्ध तीनों ही गुणस्थानोंमें छादि य समुच्च होता है ।

निग्राणिग्रा, प्रचत्तप्रचत्त स्थानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी कन्ध, मान, माया, लम, बीवेद, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, चार सस्यान, औदारिकशरीरापांग पांच संदनन, तिर्यग्गति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उषोत, अप्रभन्तविहायगति, दुभग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्रक केन पचक और केन अवन्धक है ? ॥ १४६ ॥

यह सूच सुगम है ।

मिष्पाद्वि और सामादनसम्यग्द्वि बन्धक है । य पचक है, उप अवन्धक है ॥ १४७ ॥

एदस्स ज्ञयो उच्छेदे— अर्पताणुबंधिचटक्क—रपीवेद—चउसत्थण—बंधसपडण—दुमय-
अण्णदेवज-वीचागोदाअं बधोदया सासणसम्माहट्ठिहि सम वोच्छिज्जंति, न मिच्छाहट्ठिहि
अणुवत्तमादो । अजमेमाणं पयडीणमेत्थुदयभोच्छेदो ण्वि, उवरि तदुवत्तमादो । केवले एव
बधवोच्छेदो वेव, तस्म दंसणादो ।

धीमगिद्धितिय-तिरिक्खगइ मणुमगइपाओगाणुपुष्पी उओव-अणसत्थविहायगइ-दुस्स-
राण परोदवो बंधो, अण्णत्थणसु एदासिमुदयामात्रादो । ओरात्थिसरीरस्स सोदवो बंधो,
एव पुनोदयत्तादो । ओरात्थिसरीरअंगत्वात्तस्म मिच्छाहट्ठिहि सोदय-परोदवो बंधो, सासणे
सोदवो । अर्पताणुबंधिचटक्क-इत्थिवद-तिरिक्खगइ-मणुमगइ चउसत्थण-बंधसपडण-दुमय-
अण्णदेवज-वीचागोदाअं दोसु वि गुणद्वयेसु सोदय-परोदवो बंधो, अणुवत्तमादो ।
धीमगिद्धितिय-अर्पताणुबंधिचटक्क-ओरात्थिसरीराण विरतये बंधो, एव पुनबंधिचो ।
इत्थिवेद-चउसत्थण-बंधसपडण उओव अणसत्थविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अण्णदेवजाअं सांतये
बंधो, एवसमएण बंधुवरमंसणादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओगाणुपुष्पी-वीचागोदाअं

इस मुखका मय कहते हैं— अमन्तानुबन्धिचतुष्क स्त्रीवेद चार संस्थान पांच
संहमन दुर्मग अमत्थेय और नीचगोत्रका बन्ध व उदय दोनों सासत्तनसत्तमगदि
गुणस्थानम एक साथ वपुच्छिद्य हात हैं मिष्पाद्यदि गुणस्थानमें नहीं क्योंकि वहां इनका
प्युच्छेद पाया नहीं जाता । शेष प्रकृतियोंका यहां उदय-पुच्छेद नहीं है क्योंकि, ऊपर
उनका उदय पाया जाता है । उनका यहां कबल बन्धप्युच्छेद ही है, क्योंकि, वह यहां
देखनेमें जाता है ।

स्थानपृष्ठिचय तिर्यग्गति व मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत अमरास्त
विहायोगति और दुस्वरका परोदय बन्ध होता है क्योंकि, अपर्णाओंमें इनके उदयका
अभाव है । औदारिकशरीरका स्वेत्यय बन्ध होता है क्योंकि, यहां वह जुबोदपी है ।
औदारिकशरीरार्गापांगका मिष्पाद्यदि गुणस्थानमें स्वेत्यय परात्थय बन्ध होता है,
सासाहममें स्वेत्यय बन्ध होता है । अमन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद तिर्यग्गति मनुष्यगति
चार संस्थान पांच संहमन दुर्मग अमत्थेय और नीचगोत्रका दोनों ही गुणस्थानोंमें
स्वेत्यय-परोदय बन्ध होता है क्योंकि ये मनुबोदपी हैं । स्थानपृष्ठिचय अमन्तानुबन्धि
चतुष्क और औदारिकशरीरका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहां ये जुबबन्धी हैं ।
स्त्रीवेद चार संस्थान पांच संहमन उद्योत अमरास्तविहायोगति दुर्मग दुस्वर
और अमत्थेयका सान्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समपसे इनका बन्धविभाग देखा
जाता है । तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका बन्ध मिष्पाद्यदि

मिच्छाद्विद्भिः' बंधो सांतर-भिरंतरो । कथं भिरंतरो ? न, तेठ-बोठ-बोठ-इत्यसु सत्समुपवीयं
तिरिक्खेसुप्पण्येसु च भिरंतरबंधवत्तमादो । सासणसम्मादिद्विद्भिः सांतरो, तस्य
तेसिमुपवात्तामादो । [मणुसगइ] मणुसगइपाभोग्गाणुप्पवीयं सांतर-भिरंतरो । कथं
भिरंतरो ? भाणदादिदेवेसु मणुसेसुप्पण्येसु दुविहगुप्पेसु सुहुत्तसतो भिरंतरबंधवत्तमादो ।
बोत्तात्थिसरीरबंधोवंगस्स मिच्छाद्विद्भिः बंधो सांतर-भिरंतरो । कथं भिरंतरो ? न,
सणक्कुमात्तादिदेव-भेरसु तिरिक्ख-मणुस्सुप्पण्येसु वंतोसुहुत्तं भिरंतरबंधवत्तमादो ।
सासणसम्मादिद्विद्भिः भिरंतरो ।

मिच्छाद्विद्भिः तेदात्थीस, सासणे अट्ठीसीमुत्तरपञ्चया । सेसं सुगम । तिरिक्खगइ
[तिरिक्खगइ] पाभोग्गाणुप्पवी-उत्थोवाण तिरिक्खगइसुत्तं । [मणुसगइ] मणुसगइपाभोग्गाणु-

शुणस्थानमें सांतर-भिरंतर होता है ।

शुंक्क—भिरंतर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं है क्योंकि, तेज न वायुकापिकोंमें तथा तिर्यकोंमें उत्पन्न
हुए सप्तम धृतिबीके मादिक्योंमें उनका भिरंतर बन्ध पाया जाता है ।

सासाधनसम्पगइ शुणस्थानमें सांतर बन्ध होता है क्योंकि, वहां उनको
उत्पन्न बंधा है । [मनुष्यगति और] मनुष्यगतिमायोग्यानुपूर्वीका सांतर भिरंतर
बन्ध होता है ।

शुंक्क—भिरंतर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि मनुष्योंमें उत्पन्न हुए सामान्यविक बंधोंमें दोनों शुणस्थानोंमें
अन्तर्मुहूर्त तक भिरंतर बन्ध पाया जाता है । भौतिकशरीरगोपांगका बन्ध मिच्छाद्वि
शुणस्थानमें सांतर भिरंतर होता है ।

शुंक्क—भिरंतर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं क्योंकि, तिर्यक न मनुष्योंमें उत्पन्न हुए सामान्यविक
बन्ध और मादिक्योंमें अन्तर्मुहूर्त तक उसका भिरंतर बन्ध पाया जाता है ।

सासाधनसम्पगइ शुणस्थानमें उसका भिरंतर बन्ध होता है ।

मिच्छाद्वि शुणस्थानमें तेदात्थीस और सासाधन शुणस्थानमें अट्ठीसी उत्तर प्रत्यय
होते हैं । दोष प्रत्ययरूपका सुगम है । [नियगति] नियगतिमायोग्यानुपूर्वी और उपात्तका
तिर्यगतिसे संयुक्त [मनुष्यगति] और मनुष्यगतिमायोग्यानुपूर्वीका मनुष्यगतिसे संयुक्त,

एवम् अतो उत्पद्ये— अर्पताशुर्बविषयक-स्वीवेद-चतस्रस्य-पंचसंपद-दुर्म-
अपदेव-बीजागोदानं बंधोदया सासपसम्माद्विद्मि समं वोपिच्छन्ति, य मिच्छाद्विद्मि
अनुवर्तमानो । नवसेषाण पयडीयमेरुद्वयबोधेदो पति, उवरि तदुवर्तमानो । केनये एव
पंचबोधेदो वेद, तस्य ईसनादो ।

बीजगिदितिय तिरिक्खगइ मनुसगइपाजोग्गापुप्पी उमोव-अप्पसत्तविहायगइ-दुस्स-
एयं परोदमो बंधो, अप-अत्तएमु एरासिसुदयामावादो । जेतुत्तियसरीरस सोदमो बंधो,
एव धुबोदयच्छरो । जेतुत्तियसरीरबंगोत्तंगस मिच्छाद्विद्मि सोदय-परोदमो बंधो, सस्ये
सोदमो । अर्पताशुर्बविषयक-स्वीवेद-तिरिक्खगइ-मनुसगइ-चतस्रस्य-पंचसंपद-दुर्म-
अपदेव-बीजागोदानं दोमु वि गुणशेषेसु सोदय-परोदमो बंधो, अदुबोदयच्छरो ।
बीजगिदितिय-अर्पताशुर्बविषयक-जेटुत्तियसरीरसं निरतरो बंधो, एव धुवबधिच्छरो ।
इतिवेद-चतस्रस्य-पंचसंपद-उमोव-अप्पसत्तविहायगइ-दुर्म-दुस्स-अपदेव-संतरो
बंधो, एवसमएव अनुवरमईसनादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाजोग्गापुप्पी-बीजागोदानं

इस सूत्रक मयं कहत हैं— अनन्तानुबन्धितुष्क, स्वीवेद चार संस्थान पांच
संहवन दुर्मग अनन्तेय बीर नीचगोत्रका बन्ध व उदय दोनों सासपसम्माद्वि
गुणस्थानमें एक साथ उपविष्ट होत हैं मिच्छाद्वि गुणस्थानमें नहीं क्योंकि, वहां इनका
सुच्छेद पाया नहीं जाता । छेप प्रकृतिपांका वहां उदयसुच्छेद नहीं है क्योंकि, ऊपर
उनका उदय पाया जाता है । उनका वहां केवल बन्धसुच्छेद ही है क्योंकि वह वहां
देहान्तमें जाता है ।

स्थानपुद्गल्य तिर्यगाति व मनुष्यगति प्राप्तेयानुपूर्वी बघोत अयसत्त
विहायगति बीर दुस्वरक परोदय बन्ध होता है क्योंकि अपर्णात्तोंमें इनके उदयका
अभाव है । बीहारिकशरीरक स्वेदय बन्ध होता है क्योंकि वहां वह सुबोदयी है ।
बीहारिकशरीरपंगोपांगक मिच्छाद्वि गुणस्थानमें स्वेदय परोदय बन्ध होता है
सासादनमें स्वेदय बन्ध होता है । अनन्तानुबन्धितुष्क स्वीवेद तिर्यगाति मनुष्यगति
चार संस्थान पांच संहवन दुर्मग अनन्तेय बीर नीचगोत्रका दोनों ही गुणस्थानोंमें
स्वेदय-परोदय बन्ध होता है क्योंकि ये मनुष्यवर्गी हैं । स्थानपुद्गल्य अनन्तानुबन्ध
तुष्क बीर बीहारिकशरीरक निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहां वे अनुवर्तयी हैं ।
स्वीवेद चार संस्थान पांच संहवन बघोत अयसत्तविहायगति दुर्मग दुस्वर
बीर अनन्तेयक सासप बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविग्राम देखा
जाता है । तिर्यगाति तिर्यगातिप्राप्तेयानुपूर्वी बीर नीचगोत्रका बन्ध मिच्छाद्वि

वैधामात्रादौ । मिच्छादृष्टि-सासणसम्मादृष्टि-असंजदसम्मादिदृष्टिषु ब्रह्मकमेण तेदस्तीस-बहुत्तीस-
बत्तीसपञ्चया । सज्जोगिन्दि एक्के चेव बोसठ्ठियमिस्सकयजोगपञ्चयो । सेसं सुगमं ।
मिच्छादृष्टि-सासणसम्मादिदृष्टिषो दुगइसज्जुत्तं, असंजदसम्मादिदृष्टिषो देवगइसज्जुत्तं, सज्जोगिन्दिणा
अगइसज्जुत्तं वर्धति । तिरिक्ख-मणुसगइमिच्छादृष्टि-सासणसम्मादृष्टि-असंजदसम्मादिदृष्टिषो
मणुसगइसज्जोगिन्दिणा सामी । वधद्वान् वधविषद्वान् च सुगमं । सादवेदमीपस्स वेवो
सम्परत्थं सादि अद्दुवो, अद्दुववधिपादो ।

मिच्छत-णउसयवेद तिरिक्खात् मणुसात्-चदुजादि-हुहसठाण-
असपत्तसेवट्टमधदण आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साद्वारणसरीर-
णामाण को वधो को अवधो ? ॥ १५० ॥

सुगमं ।

मिच्छादृष्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १५१ ॥

एदस्म अरयो वृष्पदे— वधोदयागमेत्य बोम्भेदो पत्वि, उवठंभातो । अथवा,

पण्य हाता है क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धक अभाव है । मिष्यादृष्टि आसादन
सम्पगदृष्टि और असंयतसम्पगदृष्टि गुणस्थानोंमें यथाक्रमसे तेताहीस अद्वीस और बत्तीस
प्रत्यय होते हैं । सयोगकेबत्ती गुणस्थानमें एक ही मीहारिकमिध-रूपयोग प्रत्यय होता है ।
होय प्रत्ययमकरूपका सुगम है । मिष्यादृष्टि और आसादनसम्पगदृष्टि दो पक्षियोंसे संयुक्त
असंयतसम्पगदृष्टि वेषपक्षिसे संयुक्त और उपयोगी जिन अणुतिसंयुक्त बांधते हैं ।
तिपगति व मनुष्यगतिके मिष्यादृष्टि, आसादनसम्पगदृष्टि और असेयतसम्पगदृष्टि, तथा
मनुष्यगतिक संपात्नी जिन स्वामी हैं । बन्धायाम और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं ।
साता वेदमीपका पण्य सर्वथं साक्षि व मणुष होता है क्योंकि, वह अमुचबन्धी है ।

मिष्यात्, नपुंसकवेद, तिर्यगायु, मनुष्यायु, चार जातिवां, हुहसस्थान, असेप्राप्त
सुपाटिकासंजनन, आत्माप, स्वात्तर, सुत्स, अपयाप्त और साधारणशरीर नामकमका कौन
बन्धक और कौन अन्धक है ? ॥ १५० ॥

यह सब सुगम है ।

मिष्यादृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १५१ ॥

इस सबका अर्थ कहते हैं— बन्ध और उद्वेगका यहाँ व्युत्पन्न नहीं हैं क्योंकि,

पुष्पीर्ष मनुसगइसद्धतो, संसारं तिरिक्ख-मनुसगइसद्धतो वधा । तिरिक्ख-मनुसमिच्छइ-
सासणसम्मादिदिणो सामी । वंधद्वारं वंधविषहइत्थं च सुगमं । भीणगिस्सितिय-अवतामुप्पि-
चउक्कणं मिच्छइत्तिहि वंधो चउप्पिहो । सत्तप्पे दुविहो, जणादि-पुवत्तामात्ता । सेत्थं
पयडीपे सम्बत्थ सादि अट्टो ।

सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ १४८ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी मासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली
वधा । एदे वधा, अवधा णत्थि ॥ १४९ ॥

सादावेदणीयस्स वधादा उदओ पुष्प पम्भ [वा] वोप्पिण्णो चि विचारो वत्थि, वडु
गुणहाप्पेसु तदुमयवोप्पेदाप्पुत्तमादो । मिच्छइत्ति-सासणसम्माइत्ति-असजदसम्माइत्ति-सजोगि
बंधो सेदय-परोत्तओ, परावत्तामुप्पयत्तादा । मिच्छइत्ति-सासणसम्माइत्ति-असजदसम्माइत्ति
बंधो सत्तरो, पगममण्य बंधुवामदंसवादो । सजोगिसु गिरतरो, पडिक्कसपयडीप

तथा शय प्रकृतियोंका तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसं संयुक्त बन्ध होता है । तिर्यक् और
मनुष्य मिथ्याएँ एव सासादनसम्यग्गति सामी है । बन्धाच्छाल और बन्धविनष्टस्याल
सुगम है । सम्भासुत्तिरय और अमत्तामुपनिषत्तुत्तका बन्ध मिथ्याएँ गुणस्यालमें
आरों प्रत्यक्ष होता है । सासादन गुणस्यालमें दो प्रकारका होता है क्योंकि वहाँ
अमर्षी और भुव बन्धका भेदाव है । शय प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र सादि और अमुव
होता है ।

साता वेदनीयक कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १४८ ॥

एह सून सुगम है ।

मिथ्याएँ, सासादनसम्यग्गति, असंयतसम्यग्गति और सयोगिकेवली बन्धक है । ये
बन्धक हैं, अवन्धक नहीं है ॥ १४९ ॥

साता वेदनीयका उदय बन्धसं पूषम वा पम्मात् प्युत्तिउत्त होता है यह विचार
महाँ है क्योंकि, आरों गुणस्यालमें एक वोलोका प्युप्पेइ पावा महाँ जाता । मिथ्याएँ,
सासादनसम्यग्गति असंयतसम्यग्गति और सयोगिकेवली गुणस्यालमें श्लोक्ष परव्य
बन्ध होता है क्योंकि वहाँ परिबर्तित होकर अन्धका मी उदय होता है । मिथ्याएँ सासा
दनसम्यग्गति और असंयतसम्यग्गति गुणस्यालमें साता वेदनीयका सत्तर बन्ध होता है
क्योंकि, एक समयसे महाँ उसका बन्धविधाम देखा जाता है । सयोगिकेवलीमें गिरत्तर

वधामावाहो । मिच्छाद्वि-सासणसम्माद्वि-असज्जदसम्मादिद्विस्तु अहाकमेण तेरात्थीस-बहत्थीस
वत्थीमपञ्चया । सज्जोगिम्हि एकके चेन ओरात्थियमित्तकमजोगपञ्चयो । सेसं सुगमं ।
मिच्छाद्वि-सासणसम्मादिद्विपो दुगइसत्तुत्त, असज्जदसम्मादिद्विपो देवगइसंत्तुत्त, सज्जोगिजिणा
अगइसंत्तुत्तं वधति । तिरिक्ख-मणुसगइमिच्छाद्वि-सासणसम्माद्वि-असज्जदसम्मादिद्विपो
मणुसगइसज्जोगिजिणा सामी । वधद्वाण वधविणट्ठहानं च सुगमं । सादत्वेदणीयस्स वधो
सम्पत्त्य सदि-अदुवो, मद्दुववधिचाहो ।

मिच्छत्त-णउसयवेद तिरिक्खाउ मणुसाउ-चदुजादि हुहसठाण-
असपत्तसेवट्टसघटण-आदाव थावर-सुहम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-
गामाण को वधो को अवधो ? ॥ १५० ॥

सुगम ।

मिच्छाद्वि वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १५१ ॥

एदस्स अण्णो बुच्चदे— ववोदपाणमेत्थ वीण्णोदो पत्ति, उवत्तमादा । अथवा,

वग्ग हाता हे कयोंकि यहाँ प्रतिपत्त मरुतिके वग्ग-अ अभाव है । मिथ्याद्वि सासादन
सम्पत्तद्वि और असपत्तसम्पत्तद्वि गुणस्थानोंमें यथाक्रमसे ततालीस अङ्गीस और वत्थीस
प्रत्यय होते हैं । सयोगकेवसी गुणस्थानमें एक ही भौतिकमिथ्याकषयाग प्रत्यय होता है ।
दोय प्रत्ययप्रकृपा सुगम है । मिथ्याद्वि और सासादनसम्पत्तद्वि दो पतिपोंसे सयुक्त
असपत्तसम्पत्तद्वि द्वेपगतिसे संयुक्त और सपागी जिन अगतिसंयुक्त बाधत हैं ।
तिपगति व मनुष्यगतिके मिथ्याद्वि, आसादनसम्पत्तद्वि और असपत्तसम्पत्तद्वि तथा
मनुष्यगतिक सपागी जिन स्थानी हैं । वग्गस्थान और वग्गभिनट्टस्थान सुगम हैं ।
साणा देवमीयका वग्ग सर्वत्र सादि व अमुच होता है कयोंकि, यह अमुचवग्गी है ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, निर्धगायु, मनुष्यायु, चार जातिपां, हुहमंस्थान, अर्धप्राप्त-
मृणाटिकमंदनन, आताप, स्वावर, सुम्म, अपपाप्त और मापारणसरीर नामकमक्क कैन
वन्धक और कैन अपवचक है ? ॥ १५० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्याद्वि वन्धक है । ये वन्धक हैं, सप अवन्धक है ॥ १५१ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहत हैं— वग्ग और उवत्त यहाँ मनुष्यक नहीं हैं, कयोंकि,

मिच्छत-बहुभादि-बावर-सुहुम-अपञ्च-साधारणसंज्ञाभेद-संवेदया समं बोधिज्ज्ञा, न
संज्ञा पयडीर्णं पुण्यं वधो पञ्च उदयो बोधिज्ज्ञा । आदावस्त एव उदयो नति वध ।
मिच्छतस्त सोदयो वधो । आदावस्त परोदयो, अपञ्चतन्त्रे आदावस्तुदयामावाधो । न
सपवेद-तिरिक्त-मनुमाठ-बहुभादि-हुंइसंज्ञा-असंपत्तिसंज्ञा-बावर-सुहुम-अपञ्च-साधार-
ण्यार्णं सोदय-परोदयो वधो । मिच्छत-तिरिक्त-मनुमाठ-बावर वधो विरंतो । नकसेसार्णं
संतो, एगसमपण बहुवसुवर्त्तमाधो । पञ्चया सुगम । तिरिक्ताठ-बहुभादि-आदाव-बावर-
सुहुम-साधारण्यं तिरिक्ताठसंज्ञा, मनुमाठवस्त मनुमाठसंज्ञा, सेसार्ण तिरिक्त-मनु-
माठसंज्ञा वधो । हुंइमिच्छादृष्टी सामी । वधार्ण वधविपदव्याप न सुगम । मिच्छतस्त
बहुविधो वधो, धुवविपदा । सेमाण सादि-अदुवो ।

देवगह-चेतव्यसरीर-चेतव्यसरीर-अगोवग-देवगहपाओग्गाण
पुब्बी तित्थयरणामाण को वधो को अवधो ? १५२ ॥

सुगम ।

वे दोनों पापे होते हैं । अथवा मिष्ठात्त और आतिपा स्थावर, सूक्ष्म अपर्याप्त और
साधारणघटीर, इनका वन्ध और उदय दोनों वहां साधमें व्युत्पन्न होते हैं । शेष
प्रकृतियोंका पूर्वमें वन्ध और पश्चात् उदय व्युत्पन्न होता है । आताप प्रकृतिका उदय वहां
है ही नहीं । मिष्ठात्त प्रकृतिका स्वेदय वन्ध होता है । आतापका वन्ध परोक्ष होता है
क्योंकि, अपर्याप्त काष्ठम आतापके उदयका समाव है । मनुष्यके तिर्यगाय मनुष्यायु,
आर आतिपा हुंइसंज्ञा असंमाप्युपादिकसंज्ञा स्थावर सूक्ष्म अपर्याप्त
और साधारण इनका स्वेदय परोक्ष वन्ध होता है । मिष्ठात्त तिर्यगाय और मनुष्यायुका
वन्ध विरन्त होता है । शेष प्रकृतियोंका सान्तर वन्ध होता है क्योंकि, एक समबसे
इसका वन्धविशाम पाया जाता है । मत्पच सुगम है । तिर्यगाय और आतिपा आताप
स्थावर, सूक्ष्म और साधारण इनका तिर्यगायसे संयुक्त मनुष्यायुका मनुष्यगतिये
संयुक्त तथा शेष प्रकृतियोंका तिर्यगाय व मनुष्यगतिये संयुक्त वन्ध होता है । तिर्य-
व मनुष्य दो गतियोंके मिष्ठात्त सामी हैं । वन्धात्त और वन्धविमलस्थान सुगम
है । मिष्ठात्तका वन्ध आरों प्रकरका होता है क्योंकि वह मृचरामी है । शेष प्रकृतियोंका
वन्ध सादि व मनुष्य होता है ।

इवयति, वैक्रियकठरीर, वैक्रियकठरीरागाणां, देवगतिमायोम्यानुपूर्वी और तीर्थकर
नामकर्मका केन वन्धक और केन अवन्धक है ? ॥ १५२ ॥

यह सब सुगम है ।

असजदसम्मादिद्वी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥१५३॥

एदस्सलो बुन्धे — एत्थ वधो उदमो वा पुब्बं पन्ना वा वोप्पिग्गदि ति
परिक्षा पति, उदयामावादे । गवरि तित्थपरस्स पुब्ब वधो पन्ना उदमो वोप्पिग्गदि ।
एदामो वध वि पयडीओ परोदण वन्धति, भेरत्तिपमिस्सकाययोगमि एदामिमुदमविरोदादे ।
गिरितो वधो, पडिक्खपयडीपि वधामावादे । असजदसम्मादिद्विदि एदसि वधस्स
वतीमुत्तरप चया, ओषपन्वएस्स वारसजोगिति अतुसमवेदापममावादे । सेस सुगमं । चउणं
पयडीपं तिरिक्ख-मणुमगइ-असजदसम्मादिद्वी सामी । तित्थपरस्स मणुसा चेव, तिरिक्खेसु
उप्पज्जागं तत्थुप्पपिपायोगसम्माद्वीप तित्थपरस्स वधामावादे । गइसजुत्तममणिय
मिमिदि सामिधं परुविदं ? न, देवगइसजुत्त वन्धति ति अनुत्तसिदीदे । वधद्वारणं
वधविणद्वारणं च सुगमं । सादि-अदुवो पधो, जदुवधविचादे ।

वेजन्वियकायजोगीण देवगईए' भगो ॥ १५४ ॥

असंपतसम्पदधि वन्धक है । ये वन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ १५३ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— यहाँ वन्ध व उदय पूर्वमें अथवा पश्चात् व्युत्पन्न होता
है यह परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहाँ उन प्रकृतियोंके उदयका अभाव है । विशेष इतना
है कि तीर्थंकर प्रकृतिका पूर्वमें वन्ध आर पश्चात् उदय व्युत्पन्न होता है । ये पाँचों ही
प्रकृतिपां परंपरसे वधनी हैं क्योंकि औदारिकमिधकाययोगमें इनके उदयका विशेष
है । मित्तर वन्ध इतना है क्योंकि इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वन्धका यहाँ अभाव
है । असंपतसम्पदधि गुणस्थानमें इनके वन्धक बर्तीस उत्तर प्रत्यय हैं क्योंकि,
ओष्प्रात्ययोंमेंसे बाह्य योग सर्वत्र और अपुंसकवेदका अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपका
सुगम है । आर प्रकृतियोंके तीर्थंकर व मनुष्यगतिके असंपतसम्पदधि सामी हैं । तीर्थंकर
प्रकृतिके मनुष्य ही सामी हैं क्योंकि, तीर्थंकोंमें उत्पन्न हुए वहाँ उत्पत्तिके योग्य
सम्पदधियोंके तीर्थंकर प्रकृतिका वन्ध नहीं होता ।

शंका—गतिसंयुक्तताको न कहकर स्वामित्वकी प्ररूपणा क्यों की गयी है ?

समाधान—कृति उक्त प्रकृतियां देवगतिसे संयुक्त वधनी हैं यह बिना कह
ही सिद्ध है अतः गतिसंयोगकी प्ररूपणा नहीं की ।

वन्धाध्यान और वन्धवित्तपस्थान सुगम हैं । सादि व अमुव वन्ध होता है
क्योंकि, वे अमुववन्धी प्रकृतियां हैं ।

वैत्रियिकत्रययोगियोंकी प्ररूपणा देवगतिके समान है ॥ १५४ ॥

एदमप्यणामुत्त देसामासिय, तणदण सुहदरयपरुवणा करिदे— पचपात्रवरीय-
 उदंसपात्रवीय माद्रामाद-बारमकमाय पुरिमवेद हस्म-रदि-जरीदि-सोग मय-सुगुप्ता-मनुमग-
 पचिदियजादि त्रैसलिय तेजा-कम्मइयमरीर-समचउरममंछण-ओरलियसरीरजगोवग वज्जिरिह
 मयइण-वणवचठकक-मनुसापुपुप्पी-अगुरुमलदुमचउकक-यस्यविहामग-तसचउक-भिरिह
 मुहामुह-सुमग-सुस्वर-भादेइअ अम्भित्ति-अजमकित्ति विमिपुष्पागोद-पचतराइयपपीओ एत्त
 चउमु गुणइमेमु पंचपात्रोम्माजा । एत्त पुप्प वंनो उदमो वा वाच्छिओ ति विपत्ता पत्ति,
 मनुमग-आरलियसरीर भारलियमरीरमगोवग-वज्जिरिहमयइण मनुमग-मनुमग-पचामा-
 पुप्पी अजमगिणीपुदयामावादा मेसापं पयणीप्रमुदयवोच्छेत्तामावादी च ।

पंचपात्राकर्णीय चउदंसपात्रणीय-पचिदियजादि-तंजा-कम्मइयसरीर-वज्ज-गंघ-रय-
 प्पम-अगुरुमलदुम-उवपाद-परपादुस्साम-तम बाहर-पञ्चस पतेयसरीर गिराधिर-मुहामुह-
 विमिष-पंचतराइयानं साइमो वंघो, वेठम्भियकम्मजोगाहि एत्तमि धुवोदयपचउसपादो । अरि
 सम्भामिच्छादि मोक्ष वज्जय उम्मासम सोदय-परोदमो वंघो, सरीरपञ्चवैय

यह वर्णनामक इनामर्थाक है इसमिय इसम सुचित अथवा प्रत्यय करत
 है— पांच इनामर्णीय छह इनामर्णीय साता व असाता परणीय बारह इनाम
 पुदयवद हास्य रति करति हाक मय सुगुप्ता, मनुप्यगति पंचत्रिय जाति
 बीहारिक, तैजस व अजय शरीर, समचतुस्समस्याम बीहारिकशरीरगायांग वज्जयम
 मंदनन वणादिक बार, मनुप्यानुपुप्पी अगुरुपु भादिक बार, प्रशस्तविहापागति
 वम भादिक बार, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग सुस्वर, भावेच पदाधीनि
 वपराधीनि निर्माण उदयमात्र बार पांच अम्भराय मरुतिपां यहाँ बार गुणस्थानामे
 वज्जय पाय है । यहाँ पूर्वमे वज्ज या उदय सुप्पिछ हाता है यह विचार मही है
 कवीरि, मनुप्यगति बीहारिकशरीर बीहारिकशरीरगायांग वज्जयममंदनन मनुप्यगति
 मनुप्यगतिप्रापापानुपुप्पी और अयराधीनि इनका उदयामात्र तथा शाय मरुतिपौक
 उदयपुप्पुछका अमाय है ।

पांच इनामर्णीय बार इनामर्णीय पंचत्रिय जाति तैजस व अजय शरीर
 वजं पाय रत कर्मा अगुदमय उवपात परपात उदयवाम वम बाहर पचात्र
 प्रत्ययशरीर स्थिर अस्थिर वम अशुभ निर्माण और पांच अम्भराय इनका इनाम
 वज्य हाता है कवीरि, पैरिपिक्कायपागमे इनका अयावद इना आता है । निराय
 इना है कि सम्भामिच्छादिहा छारकर अयव उदयवामका इनाम परादय वज्य

पञ्चसत्सु बंतेसुदुसं गंतुष आयापापपठञ्जीए पञ्चस्यइस्स उस्सासस्सोदयदसपादो ।
 पिरा-ययत्त-सादासाद बारसकसाय-सत्तपोकसाय-समचउरससंठण-पसत्थविहायगइ-सुमग-
 सुस्सर भदेन्ज-असक्किंति अजसक्किंति-उच्चागोदायं सोदय-परोदो पंषो, अमुह्णं पेत्तएसु
 उदयदसपादो । ममुसगइ ओरलियसरीरवगोवग-वज्जरिसहसपइण-मणुसगइपाभोणापुप्पीण
 परोदो पंषो, वेठम्बियक्कयजोगम्मि एदासिमुदयविरोहादो ।

पंचपापावरणीय-छद्मपावरणीय-बारसकसाय-मय-दुगुल्ल-ओरलिय-तेजा-कम्मइय
 सरीर-वण्ण-गंव-रस-फास-अगुरुवल्लुव-उवपाद परपादुस्सास-बादर-पञ्चसत्तपत्तेयसरीर-
 विमिष-पंचतरइयापं पित्तरो वषो, एत्थ धुवपंचिच्छादो । सादासाद-इस्स-उदि-अरदि-सोग-
 पिराविर-सुहसुह-असक्किंति-अजसक्किंतीयं सारो वषो, एगसमएण वसुवरमदसपादो ।
 पुरिसवेद-समचउरससंठण-वज्जरिसहसपइण-पसत्थविहायगइ सुमग-सुस्सर-भदेन्ज-उच्चागोदायं
 मिन्हाइडि-सासपसम्मादिहीसु सारो वषो, पडिवक्कपपडिववसमवादो । सम्मामिन्हाइडि-
 असंभदसम्मादिहीसु पित्तरो, पडिवक्कपपडिववामावादो । पंचिदियआदि-ओरलियसरीर

होता है क्योंकि, शरीरपर्याप्तिते पर्याप्त रूप जीवके अन्तर्मुहूर्त जाकर आसमापपर्याप्तिते
 पर्याप्त होनेपर उच्छ्वासका बन्ध देखा जाता है । सिद्धा प्रच्छा साता व असाता
 वेदनीय बारह कपाय सात लोकपाय समचतुरस्रसंस्थान प्रशस्तविहायोमति, सुमग,
 सुस्सर, जादेय यशस्वीति अयशस्वीति और उच्छगोत्र इनका स्वोदय परोदय बन्ध
 होता है क्योंकि, नारिकेलमें अगुम प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । ममुप्यगति
 औदारिकशरीरपंगोपांग-वज्जरमसंहमन और ममुप्यगतिप्रायेतपापुपूरीक परोदय बन्ध
 होता है क्योंकि, वैदितिकहापयोममें इनके उदयका विरोध है ।

पांच जानावरणीय छह बर्हतावरणीय बारह कपाय भय पुगुप्ता औदारिक,
 वैजस व कर्मज शरीर, बर्मे गन्ध रस स्पर्श अगुरुल्लु उपघात परघात
 उच्छ्वास बादर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध
 होता है क्योंकि, यहाँ ये भुवमन्थी हैं । साता व असाता वेदनीय हास्य, रति, मरुति
 शोक, स्थिर, अस्थिर शुभ अशुभ यशस्वीति और अयशस्वीति का सन्तर बन्ध होता है,
 क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविधाम देखा जाता है । पुरुषवेद समचतुरस्रसंस्थान
 वज्जरमसंहमन प्रशस्तविहायोमति सुमग सुस्सर, जादेय और उच्छगोत्रका मिष्यादि
 व सासत्तनसम्पगदि शुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ इनकी प्रतिपत्त
 प्रकृतियोंका बन्ध सम्मम है । सम्पमिष्यादि और असयत्तसम्पगदि शुणस्थानोंमें
 निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि यहाँ प्रतिपत्त प्रकृतियोंके बन्धका समाप है । पंचेन्द्रिय
 क. द. २८

सासप्तसम्मादिद्विष्टो तिरिक्त्वा मनुसगर्हसंज्ञं, सम्मामिच्छादिद्विष्ट-असप्तसम्मादिद्विष्टो मनुसगर्हसंज्ञं वधति ।

देव-भिरुपासामी । वधद्वयं सुगम । वधविनासो जायते । पंचपात्रपरणीय छंदसपात्रपरणीय-भारसकसाय मय-दुर्गुल्ल-तेजा-कम्मइय-वधचठक-अगुरुभल्लुअ-उवपाद-भिभिज-पंचतराव्यापं मिच्छाद्विष्टिद्विष्ट चठव्विद्वो वंधो । अण्णत्थ तिदिद्वो, धुवधविच्छमात्तादो । ऐससव्वपयणीमो सव्वत्थ सादि-अद्वुवाओ ।

बीजमिद्विष्टि-अर्थातुपविचठक-इतिवेद-तिरिक्त्वाउ-तिरिक्त्वाग-चठसव्वप-चठसव्वप-तिरिक्त्वाग-भोगाजुपुथी-उग्गोव अण्णत्थविद्वामग-दुमग-दुस्सर-अण्णत्थ-नीचगोदाभि वेदविपयणीमो । एदासु अर्थातुपविचठकत्तस वंधोदया समं वोद्विच्छमा, सासप्तमि तदुमवामावदसपादो । इतिवेद अण्णत्थविद्वामग-दुमग-दुस्सर-अण्णत्थ-नीचगोदापं पुण्णं वंधो पण्ण उदमो वोद्विच्छदि, सासप्तसम्मादिद्विष्ट-असप्तसम्मादिद्विष्टु वंधोदमवोद्विच्छदसपादो । अवसेसाय ऐसा परिक्त्वा जायते, उदयामात्तादो ।

सब प्रकृतियोंको मिथ्याहृदि य साक्षात्तसम्पत्तिरिति तिर्यग्गति एव मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा सम्पत्तिमिथ्याहृदि भीर अमपतसम्पत्तिरिति मनुष्यगतिसे संयुक्त वधते हैं ।

ऐस भीर नारकी स्वामी हैं । पञ्चाध्याय सुगम है । वधविनाश है नहीं । पांच पात्रापरणीय छंद दर्शनापरणीय पात्र कथाय मय दुर्गुल्ल तेजा कम्मइय चठक मय दरीय, वधविद्विष्टा, अगुरुभल्लु उवपाद मिर्माज भीर पांच अण्णत्थका मिथ्याहृदि गुणस्यात्मने वारो प्रकारका वध होता है । अण्ण गुणस्यात्मने उनका तीन प्रकारका वध होता है क्योंकि, यहां इमक गुण वधका अभाव है । दोष सब प्रकृतियों सर्वत्र सावि य अण्णत्थ वधवाली हैं ।

स्थानपुच्छिअय अनन्तातुबन्धिचतुष्क कीवेद तिपगायु तिर्यग्गति वार संस्थान, वार संज्ञन तिर्यग्गतिमायोग्यानुपूर्वी उद्योत अमरास्तविहायोगति तुर्मग, दुस्सर, अनन्तेय भीर नीचगोत्र य द्विस्थानिक प्रकृतियां हैं । इममें अनन्तातुबन्धिचतुष्कका वध भीर उदय होमो सायमे व्युत्तिष्ठ होते हैं क्योंकि साक्षात्त गुणस्थानमें उन होमोका अभाव देखा जाता है । कीवेद अमरास्तविहायोगति तुर्मग दुस्सर अमराय भीर नीचगोत्रका पूर्वमें वध भीर पञ्चाह उदय व्युत्तिष्ठ होता है क्योंकि, साक्षात्तसम्पत्तिरिति भीर असंपत्तिसम्पत्तिरिति गुणस्यात्मने अमरा इमक वध भीर उदयका व्युत्तिष्ठ देखा जाता है । दोष प्रकृतियोंक यह परीक्षा नहीं है क्योंकि, उनका उदयमात्र है ।

अंगोवंग-ससभामां मिच्छादिदिग्धि सांतर-विरतरो । कथं विरतरो ? न, वेरइएसु सपन्नु-
मादिदेवेसु च विरतरंभुवलेमादो । साम्भसम्मादिदि-सम्भामिच्छादिदिग्धि असंभदसम्मादिदिग्धि
विरतरो, पडिवक्खपयडिबभामावादो । मनुसगइ मनुसगइपाओगाणुपुप्पीअ मिच्छादि-
सासन्नसम्मादिदिग्धि सांतर विरतरो । कथं विरतरो ? न, आपदादिदेवेसु विरतरंभुवलेमादो ।
सम्भामिच्छादि-असंभदसम्मादिदिग्धि विरतरो, पडिवक्खपयडिबभामावादो ।

मिच्छादिदी एवमो पयडीमो तेदाकीसपन्नएदि, सासन्नो अट्ठसीसपन्नएदि,
सम्भामिच्छादि-असंभदसम्मादिदिग्धि चोत्तीसपन्नएदि वंथेति, मूत्तेपपन्नएसु वारसगोप
पन्नवामावादो । सेसं सुगमं ।

मनुसगइ-मनुसगइपाओगाणुपुप्पी-उत्तरागोशानि मिच्छादि-सासन्नसम्मादि-
सम्भामिच्छादि-असंभदसम्मादिदिग्धि मनुसगइसमुत्तं । अथसेससम्भपयडीमो मिच्छादि

जाति औदारिकपरीतोपोपांग और अस मासकर्मका मिच्छादि गुणस्थानों सन्तर
निरन्तर बन्ध होता है ।

शंकर—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—महाँ क्योंकि नारकियों और सन्नरुमायादि देवोंमें इनका निरन्तर
बन्ध पाया जाता है ।

सासात्नसम्भगदि, सम्भमिच्छादि और असंयतसम्भगदि गुणस्थानोंमें
निरन्तर बन्ध पाया जाता है क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिषोंके बन्धका अभाव है ।
मनुष्यगति और मनुष्यगतिमायोगानुपूर्वीअ मिच्छादि च सासात्नसम्भगदि
गुणस्थानोंमें सन्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

शंकर—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—महाँ क्योंकि मासतादि देवोंमें इनका निरन्तर बन्ध देखा
जाता है ।

सम्भमिच्छादि और असंयतसम्भगदि गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है
क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिषोंके बन्धका अभाव है ।

मिच्छादि इन प्रकृतिषोंको ठेठाकीस प्रत्ययोंसे सासात्नसम्भगदि अट्ठसीस
प्रत्ययोंसे तथा सम्भमिच्छादि और असंयतसम्भगदि बीतीस प्रत्ययोंसे बांधते हैं ।
क्योंकि, मूत्तेप प्रत्ययोंमें बाण्ड घोम प्रत्ययोंका यहाँ अभाव है । शेष प्रत्ययभरपया
सुखम है ।

मनुष्यगति मनुष्यगतिमायोगानुपूर्वी और उत्तरागोत्रके मिच्छादि, सासात्न
सम्भगदि, सम्भमिच्छादि और असंयतसम्भगदि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । शेष

सासणसम्मादिष्टिणो तिरिस्स मणुसगइसंहुत्त, सम्मामिच्छदिष्टि-असंजदसम्मादिष्टिणो मणुसगइसंहुत्तं पंचति ।

देव-भेरया सामी । पंचद्वारा सुगमं । पंचविजासो पारिषि । पंचपाणावरणीय छंदसपावरणीय-बारसकसाय मय-हुगुम्भ-तेजा-कम्मइय-अण्णचठक्क-अगुरुमत्तुम-उवपाद-णिमिण-पंचतण्डयाणं मिच्छइष्टिदि चठप्पिहो षो । अण्णस्य तिपिहो, धुवंपिच्छमावाहो । सेससप्पयणीमो सवत्थ सादि अद्दुवाओ ।

धीमगिद्विषिय-अर्णताणुपविचठक्क-इत्थिवेद-तिरिस्साठ-तिरिस्सगइ-चठसंदाण-चठसचइण-तिरिस्सगइपाओगाणुपुत्थी-उन्धोव अण्णसत्थविहायगइ-हुमग दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि वेढापियपयणीमो । एदासु अर्णताणुपविचठक्कत्तस पंचोदया समं वोच्छिण्णा, सासणम्मि तद्दुमयामावेदसपाओ । इत्थिवेद अण्णसत्थविहायगइ-हुमग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं पुवं पंचो पण्ण उदमो वोच्छिज्जदि, सासणसम्मादिष्टि-असंजदसम्मादिष्टीमु पंचोदयवोच्छदसपाओ । अवसेमाणं ऐसा परिक्खा गरिष, उदयामावाहो ।

सब प्रकृतियोंको मिथ्याहृदि व साक्षात्तसम्यग्दृष्टि तिष्ठति एवं मनुष्यगतसे संयुक्त, तथा सम्यग्मिथ्याहृदि भीर असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं ।

वृष भीर मारकी स्वामी हैं । पन्थाप्याण सुगम है । पन्थयित्ता है महीं । पांच ज्ञानावरणीय छह वर्त्तमावरणीय बारह कपाय मय हुगुम्भा तैजस व कर्मण शरीर, वर्णाश्रित्य पार, अगुरुमत्तु उपपात निर्माण भीर पांच अन्तरायका मिथ्याहृदि शुचस्थानमें वारों प्रकारका बन्ध होता है । अन्य शुचस्थानोंमें उनका तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, यहां हमका भुव बन्धका अभाव है । शेष सब प्रकृतियों सबका सादि व अद्दुप बन्धवासी है ।

स्थानशुद्धिद्वय अनन्तानुबन्धितुष्क स्वीयेद तिर्यगायु, तिर्यगति पार संस्थान पार संहनन तिर्यगतिमापाग्यानुपूर्वी उद्योत अमरास्तविहायोगति भुमंग दुस्वर, अनादय भीर नीचगोत्र ये द्विर्यामिक प्रकृतियां हैं । हममें अनन्तानुबन्धितुष्कका बन्ध भीर वृद्ध दोनों मायमें व्युत्पिउन्न होते हैं क्योंकि, साक्षात्त शुचस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । स्वीयेद अनन्तानुबन्धितुष्क भुमंग दुस्वर अनादय भीर नीचगोत्रका पूर्वमें बन्ध भीर पन्थात् उद्दय व्युत्पिउन्न होता है क्योंकि, साक्षात्तसम्यग्दृष्टि भीर असंयतसम्यग्दृष्टि शुचस्थानमें कर्मशा हमका बन्ध भीर उद्दयका व्युत्पिउन्न दृग्ग जाता है । शेष प्रकृतियोंका यह एतीक्षा नहीं है क्योंकि, उनका उद्दयामाव है ।

अर्चतापुर्णविषयक इतिविवेद-अप्यसत्त्वविहायग-दुर्मग दुस्तर-अपानेन्य श्रीवा-
गोदायं सेदय-परोक्षो बंधो, वेउत्थियकयजोगमि पञ्चिकस्तुदयसपादो॥ अवसेसार्थं
पयडीयं परोक्षो बंधो, तासिमेल्युदयविरोद्धादो । श्रीमगिदितिय-अर्चतापुर्णविषयक-
तिरिक्ताठबायं निरंतरो बंधो, एगसमएय यपुवरमामावदो' । तिरिक्ताग-तिरिक्ताग-
शान्तेम्यापुपुष्पी-श्रीवागोदाय सतिर-निरंतरो बंधो । कथं निरंतरो ? न, सत्समपुर्णविरोद्धसु
निरंतरं पुनर्बलमादो । अवसेसार्थं पयडीयं बंधो सतिरो, एगसमएय यपुवरमससपादो ।
पञ्चया सुगम । तिरिक्ताठ-तिरिक्ताग-तिरिक्ताग-शान्तेम्यापुपुष्पी-ठन्नेवापि तिरिक्ताग-
संस्तुतं, सेससम्पपयडीओ तिरिक्ता-मगुसगसंस्तुतं यंति । देव-मेरइया सामी । बंधार्थं
बंधविषयद्वयं च सुगम । सत्समं पुनपयडीयं मिष्ठागद्विदि चतुर्विधो बंधो । सत्समं
दुविधो बंधो ।

मिष्ठा-कृतुमयवद-एइदियवादि-कुंडमटाय-असंपत्तेनद्वयद्वय-मादाव-वासर-
कवडीयो मिष्ठागद्विदि पञ्चमाधियाधो । एतय मिष्ठासस बंधोदया सत्समं बोधिम्यति,

अनन्तानुबन्धितुष्क अविद्य अमहास्वविहायोगति दुर्मग दुस्तर, अनन्तय और
नीचगोबन्ध स्वेत्य परोक्ष बन्ध होता है, क्योंकि, वैकल्पिककाययोगमें इनकी प्रतिपत्त
प्रकृतिपौष्ठा उदय बेदा जाता है । रोप प्रकृतिपौष्ठा परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि वहां
जनक उदयका विरोध है । एवाप्तपुष्टिय अमन्तानुबन्धितुष्क और तिर्यगापुष्ठा
निरन्तरबन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविधामका अभाव है । तिर्यगापि
तिर्यगातिप्रायोगानुपूर्वी और नीचगात्रका सात्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

संक्षेप—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान —यह शंका हीन नहीं क्योंकि, सत्सम पूर्विके मारकियेमें उनका निरन्तर
बन्ध पाया जाता है ।

रोप प्रकृतिपौष्ठा बन्ध सात्तर होता है क्योंकि, एक समयसे उनका बन्ध
विधाम बेदा जाता है । मत्स्य सुगम है । तिर्यगापु तिर्यगापि तिर्यगातिप्रायोगानुपूर्वी
और उपांतका तिर्यगातिसंयुक्त तथा चाप सब प्रकृतिपौष्ठा तिर्यगापि च मनुष्यगतिसं
संयुक्त बांधते हैं । दय न मारकी स्थामी हैं । बन्धापवाज भार बन्धविषयद्वयसुगम हैं ।
सात पुष्ठाप्रकृतिपौष्ठा मिष्ठागद्वि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सासाधनमें
हो प्रकारका बन्ध होता है ।

मिष्ठाग कृतुसकयय मन्त्रियजति कुंडसंस्थाव असंपातएवादिवासंजन
आताप और स्थावर च मिष्ठागद्विद्व आता बन्धमान प्रकृतिपौष्ठा हैं । यहां मिष्ठागद्वि
बन्ध और उदय बान्धो मिष्ठागद्वि गुणस्थानमें सात ही प्पुष्टिद्व होते हैं क्योंकि, उपरिम

उत्तरिमगुणेषु तदुभयापुवत्तमादौ । जनुंसमवेद-हुंडसंश्रमाजं पुर्वं बधो-पच्य उदभो
 वोच्छिन्नदि, मिच्छाद्वि-असंजदसम्मादिद्वीसु तदुभयाभावदसणादौ । सेमासु एमो विचारो
 प्रत्यि, उदयामावादौ । मिच्छत्तस्स सोदपण, जनुंसयवेद-हुंडसंश्रमाजं सोदय-परोदभो,
 अवसेसाण परोदभो बंधो । मिच्छत्तस्स बधो निगतो, अवसेसाण सांतो । पच्यमा सुगमा ।
 प्रवरि एरुदियवादि-आदाव-आवराण जनुंसयवेदपच्यमो अवसेदम्भो, भेरुपसु पदासि
 बंधामावादौ । मिच्छत्त-जनुंसयवेद-हुंडसंश्रमाज-असंपत्तवेदसंश्रमाजि तिक्कित्त-मणुसगइसंश्रुतं,
 अवसेसामो पयडीमो तिक्कित्तगइसंश्रुतं बन्धति । एरुदियवादि-आदाव-आवराण बंधस्स
 देवा सामी, अवसेसाण बधस्स देव-पेरुइया सामी । बंधद्वारं बधविजइहण म सुगमं ।
 मिच्छत्तस्स चउम्भियो-बंधो, अवसेसाण सादि-भद्वो ।

मणुसाउभस्स बंधो उदयदो' पुच्य पच्य वा वोच्छिन्नदि चि पचि [विचारो], संता-
 संताणं सप्पियासविरोहादौ । परोदमा बधो, वेउम्भियकयजोगमि मणुसाउभस्स उदयविरोहादौ ।
 निगतो बंधो, प्रगसमएण बंधुवरमामावादौ । मिच्छाद्वि-सासजसम्माद्वि-असंजदसम्मादिद्वीपं

गुणस्थानोंमें बंधनों पाये नहीं जाते । जनुंसकवेद और हुण्डसंस्थानका पूर्वमें बन्ध और
 पच्यत् उदय व्युत्पिष्ठ होता है क्योंकि, मिथ्याद्वि और असंपत्तसम्यग्द्वि गुणस्थानमें
 कमसे उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंमें यह विचार नहीं है क्योंकि,
 उनका उदयामाव है । मिथ्यात्वका स्वरूपसे मणुसकवेद और हुण्डसंस्थानका स्वरूप
 परोदयसे तथा शेष प्रकृतियोंका परत्नयसे बन्ध होता है । मिथ्यात्वका बन्ध निरुत्तर
 और शेष प्रकृतियोंका सात्तर होता है । प्रायः सुगम है । विशेष इतना है कि एकस्त्रिय
 जाति आताप और स्वावरक प्रत्ययोंमें जनुंसकवेद प्रायःबधो कम करना चाहिये क्योंकि,
 मारुक्तियोंमें इनके बन्धका अभाव है । मिथ्यात्व जनुंसकवेद हुण्डसंस्थान और
 असंपत्तसुपादिकप्रसङ्गनन विषयगति व मनुष्यगतिस मनुष्य, तथा शेष प्रकृतियों
 तिर्यगगतिस मनुष्य-अपत्ता है । एकस्त्रियजाति आताप और स्वावरक बन्धके-द्वेय स्वामी
 हैं । शेष प्रकृतियोंके-बन्धके-द्वेय व मारुक्ती स्वामी हैं । बन्धापान और बन्धविनष्टस्थान
 सुगम है । मिथ्यात्वका बन्ध-आपे प्रकारका तथा शेष प्रकृतियोंका सादि व मनुष्य
 होता है ।

मनुष्यापुका बन्ध उदयसे पूर्व या पच्यत् व्युत्पिष्ठ होता है यह विचार यहां नहीं
 है क्योंकि सन् (बन्ध) और असन् (उदय) की मुक्तताका विरोध है । यद्वय बन्ध होता है
 क्योंकि वैकल्पिकवाययोगमें मनुष्यापुके उदयका विरोध है । निरुत्तर बन्ध होता है, क्योंकि,
 एक समयसे इसका बन्धविभाजक अभाव है । मिथ्याद्वि, सासजसम्यग्द्वि और असंपत्त

तेदानीं च—अहोस—चोटीसपञ्चया । मनुस्यसंस्तुतं । देव—भरण्या सामी । अद्यां
मिथ्यादिदि—सासजसम्मादिदि—असजदसम्मादिदि ति । अविद्यासो पतिव । सादि अद्युषो षो ।

तिर्यक्तरस्य षोडशबोधेदसग्नियासो पतिव, संतासंताणं सग्नियासविरोहो ।
परोदयो षो, मनुस्यगई मोतृषम्मत्तुदयाभावादो । निरंतरो षो, एगसमएव ननुकरमाभादो ।
पञ्चया सुगमा । मनुस्यगईसंस्तुतं । देव—भरण्या सामी । असजदसम्मादिदी अद्यां । अविद्यासो
पतिव । सादि अद्युषो षो ।

वेतव्यमिस्सकायजोगीणं देवगहमगो' ॥ १५५ ॥

एदस्स देसाम्मासियवण्णामुत्तस्स अरयो तुप्पदे । तं जहा — पञ्चापारणीय-
असजावरणीय-सादसाद-असकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-मय-दुगुं—मनुस्य-
पंचिदियजादि-भोराडिय-तेजा-कम्मइयसरि-समभउरससंस्तुत-भोराडियसरिअगोवै—व-
रिसहसंभण-वण्णपठक-मनुस्सगुप्पि-अगुरुकत्तुप-उपपाद-एपादुस्सास-पसत्तविहमगा

सम्यग्बुद्धिके क्रमसे तेताहीस अहोस च चोटीस प्रत्यय होते हैं । मनुष्यगतिसे संयुक्त
बन्ध होता है । देव व मारकी स्वामी है । बन्धाध्याम मिथ्यादि, सासाजसम्मादि व
असजपतसम्मादि तक है । बन्धविद्या है नहीं । सादि व अद्युष बन्ध होता है ।

तीर्थंकरप्रकृतिके बन्ध व उदयके मनुक्रेवकी सदृशता नहीं है क्योंकि, सत् और
असत्की तुलनाका विरोध है । परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि मनुष्यगतिसे छोड़कर
बृहदी अगह तीर्थंकरप्रकृतिके उदयका अभाव है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि एक
समयसे उसके बन्धविग्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध
होता है । देव व मारकी स्वामी हैं । बन्धाध्याम असजपतसम्मादि शुद्धस्थान है । बन्ध
विद्या है नहीं । सादि व अद्युष बन्ध होता है ।

वैकिप्पिमिअकयवोगिणोकी प्ररुपणा देवगतिके समान है ॥ १५५ ॥

इस देशामशक अर्पणासूत्रका अर्थ करते हैं । यह इस प्रकार है— पाँच
आजावरणीय छह आजावरणीय साठा व अघाता वेदनीय बाण्ड कपट पुरणवेद
हास्य एति अष्टौ शोक, मय नुगुण्ठा मनुष्यगति पंचमिथ्याजाति बीभारिक, तैजस व
कर्माज शरीर, समभउरससंस्तुत बीभारिकशरीरतापांग अर्जवमसंहमत अर्थात्
आर, मनुष्यानुपूर्वी, अगुरुकत्तु, उपपात परपात अष्टबास प्रशस्तविहायोगति अस

१ अ-आक्रमो देवनाथ मेवो इति पाठ ।

२ अगदी इतुगव इति पाठ ।

३ अतिव भोराडिकवरे भोराडिकवरेलोपेव इति पाठ ।

तस बादर-पञ्चत्-पसेयसरीर-भिराभिर-सुमासुम-सुमग सुस्तर-भवेज्ज-असक्ति-असक्ति-
मिणि उञ्चागोद पंचतराइयपयहीओ तीहि गुणहावेहि वन्समाभियाओ हविष परवण
कीरदे— बंधोदय-बोन्नेमिचारे पस्थि, बंधेणुदपुमणहि वा निरुद्धिगुणहाणापमुषरि
अनुवलेभाओ ।

पंचपाणावरणीय षट्ठसजावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-यंध-रस-
फस अगुस्वत्तुव उवभाइ-तस बादर-पञ्चत् पसेयसरीर भिराभिर सुहासुह निमिज-पंचतराइयाण
सोदओ बओ, एत्थ जुवोदयत्तओ । पिहा-पयत्त-सात्तासाद-बारसकसाय-अणोक्कसाय-पुरिसवेदाण
बओ सोदय-परोदओ, उभयया वि बचविरोहामावाओ । समचतरससंछाप-सुमगादेज्ज
असक्ति-उञ्चागोदाण बओ मिञ्जइहि असजदसम्मादिठ्ठीसु सोदय-परोदओ । सासमे
सोदओ, अपञ्चत्तदाए पेइएसु सासपाणममावाओ । मनुसगाइ भोरात्थियसरीर-भोरात्थियसरीर-
अंगोवग-वज्जरिसहसंघडण-मनुस्सापुण्ड्रि-परपाडुस्सास-पसत्थविहायगाइ-सुस्तराणं परोदओ
बओ, एत्थ एवास्मिदयविरोहाओ । असक्तिपीए मिञ्जइहि-असजदसम्मादिठ्ठीसु सोदय

बादर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग सुस्वर, भावेय
पशक्कीर्ति अयशक्कीर्ति निर्माण उञ्चगोत्र और पांच अन्तराय इन तीन गुणस्थानकर्त्ता
वैदित्तिककल्पयागियोंके द्वारा बन्धमाम प्रकृतियोंको स्थापित कर प्रकृपणा करते हैं— इनके
बन्ध व उद्बन्धके प्युच्छेदका पिचार यहाँ नहीं है क्योंकि बन्ध उद्बन्ध वा दोनोंसे रहित
गुणस्थान ऊपर पाये नहीं जाते ।

पांच ज्ञानावरणीय चार दर्शनावरणीय पंचिंदियजाति वैजस व कर्मण शरीर,
वर्ष गन्ध रस स्पर्श अगुदलपु उपधात ब्रह्म बादर पर्याप्त प्रत्येकशरीर, स्थिर,
अस्थिर, शुभ अशुभ निर्माण और पांच अन्तराय इनका स्वरूप बन्ध होता है क्योंकि,
यहाँ ये भुवोद्भूति हैं । निम्ना प्रकृष्टा साता व असाना वेदनीय बादर कपाय छह
मोक्षपाय और पुरुषवेदका बन्ध स्वरूप परोक्ष होता है क्योंकि, दोनों प्रकृष्टसे मी
इमके बन्धविरोधका अभाव है । समचतुरस्रस्थान सुमग भावेय पशक्कीर्ति और
उञ्चगोत्रका बन्ध मिथ्याइहि और असंघटसम्पगहि गुणस्थानोंमें स्वरूप परोक्ष
होता है । सासाद्वन गुणस्थानमें स्वादय बन्ध होता है क्योंकि, अपर्याप्तकासमें
भारकियोंमें सासाद्वन गुणस्थानका अभाव है । मनुष्यगति औदारिकशरीर, औदारिक
शरीरगोपोग बज्जर्यमसहनन मनुष्यानुपूर्वी परपात उञ्चवास मग्नस्तविहायोगति
और सुस्वरका परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ इमके उद्बन्ध विरोध है । अयश
कीर्तिक मिथ्याइहि और असंघटसम्पगहि गुणस्थानोंमें स्वरूप परोक्ष बन्ध होता

तेरावीस-अष्टासीस-चोटीसपञ्चषा । मनुसमग्रसङ्घर्ष । देव-भेरव्या सानी । ब्रह्मण
मिष्मदिष्टि-सासकसम्मादिष्टि-असंखदसम्मादिष्टि चि । भवविपासो जति । सादि मद्रुवो बपो ।

वित्पयस्स भवोदयवोष्पेदसग्निवासो जति, सतासताणं सग्निवासविरोहासो ।
परोदयो बपो, मनुसगई मोतुपण्णत्तुदयामावासो । पिरित्तो बपो, पगसमपण वपुवरमामावासो ।
पञ्चषा सुयमा । मनुसगईसङ्घर्ष । देव-भेरव्या सानी । असंखदसम्मादिष्टी ब्रह्मण । भवविपासे
जति । सादि मद्रुवो बपो ।

वेतव्वियमिस्सकायजोगीण देवगइभगो' ॥ १५५ ॥

एदस्स देसाम्पत्तियवप्पवासुतस्स जग्घो पुप्फदे । तं जहा-पंचभावावरणीय
असंख्यवरणीय-सायसाह-वारसकसाम-पुरिसवेद-हस्स-उदि-अरदि-सोम-मय-दुग्गुह-मनुसमग्र-
पंचिदियवादि-भोरत्तिय-तेजा-कम्महयसरी-समचत्तरससअण-भोरत्तियसरीभंगोवगै-वन्न-
रिसइसंपहण-वण्णवठक-मनुसगइपुप्वि-अगुस्सत्तुव-उपघाद परघादुस्सास-पसत्तविहायगइ

सम्प्रादृष्टिके क्रमसे तेरावीस अष्टासीस व चोटीस प्रत्यय होते हैं । मनुष्यगतिसे संयुक्त
बन्ध होता है । देव व मारकी स्वामी है । बन्धाप्याम मिष्पादृष्टि, सासकसम्प्रादृष्टि व
असंखतसम्प्रादृष्टि तक है । बन्धविनाश है नहीं । सावि व अद्रुव बन्ध होता है ।

तीर्थंकरप्रकृतिके बन्ध व उदयके पुष्पज्येष्ठी सङ्घाता नहीं है क्योंकि, सत् और
असत्की तुलनाका विरोध है । परोदय बन्ध होता है क्योंकि मनुष्यगतिको छत्रकर
हूसरी जगह तीर्थंकरप्रकृतिके उदयका समाव है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि एक
समयसे उसके बन्धविधामका समाव है । प्रत्यय सुगम है । मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध
होता है । देव व मारकी स्वामी हैं । बन्धाप्याम असंखतसम्प्रादृष्टि गुणस्थान है । बन्ध
विनाश है नहीं । सावि व अद्रुव बन्ध होता है ।

वैविध्यिकमिदमकययोमिप्योक्ती प्ररूपणा देवगतिके समान है ॥ १५५ ॥

इस देशामर्शक अर्पणासूत्रका अर्थ कहत हैं । यह इस प्रकार है- पांच
जालावरणीय छह दार्शनिकवरणीय जाला व जसाला वैदनीय बारह कपाय पुरुषवेद
हास्य रति भरति शोक, मय सुगुप्ता मनुष्यगति पंचेन्द्रियजाति जीवारीक, तेजस व
कर्मय छाटीर, समचत्तरससंस्थान जीवारीकछाटीरपांशपांश वज्रपंचमसंहमन वर्णाधिक
चार, मनुष्यानुपूर्वी अगुस्सत्तु, उपघात परघात वज्रवास मशस्तविहायगति अस

१ व जगत्सो देवर्षि मेनो इति वाच ।

२ कप्पी इत्यण इति वाच ।

३ इति भोरत्तिसरीर भोरत्तिसरीरयोर्वच इति वाच ।

तस बादर-पञ्चत-पत्तयसरीर-विश्वविर-सुमासुम-सुमग सुस्सर-अदेव-वसक्ति-अवसक्ति-
मिमिष-उन्वागोद-पंचतपइयपयबीभो तीहि गुणद्विणेहि वन्समागियाभो द्विय पकूषण
धरदे— बधोदय-बोच्छेदविचारो पार्थि, बधेणुदणुमणहि वा विरहिदगुणद्वानाणमुवरी
अणुवर्तमादो ।

पंचजाणावरणीय-चतुर्गुणवरणीय-पंचिदियवादि-तेवा-कम्मइयसरीर-वण-गोचर-स-
फाम अगुरुवठहुव उवपाद-तस बादर-पञ्चत-पत्तयसरीर-विश्वविर-सुमासुम-सुमग सुस्सर-अदेव-
वसक्ति-उन्वागोदार्थ बधो पत्थ पुवोदयत्तदो । मिहा-पयत्त-सादासाद-भारसकसाय-अणोक्ताय-पुरिसवदार्थ
बधो सोदय-परोदभो, उभयया वि बचविरेव्हामावादो । समचउरससंयण-सुमगादेव
वसक्ति-उन्वागोदार्थ बधो मिच्छाद्वि असंजदसम्मादिहीसु सोदय-परोदभो । सासपे
सोदभो, अपञ्चतदाय गेरइएमु सासपाणममावादो । मणुसगइ भोराटियसरीर-भोराटियसरीर-
अगोवग-वन्सरिसइसंघण-मणुसगणुपुब्बि-परषादुस्साय-पसप्यविहायगइ-सुस्सरार्थ परोदभो
बधो, एत्थ पइसिमुदयविराहादो । अवसक्तिप मिच्छाद्वि-असंजदसम्मादिहीसु सोदय

बादर, पपाज प्रत्येकदारीर, स्थिर, अस्थिर शुभ अशुभ सुमग सुस्सर, भादेय
पराधीति अयथाधीति निमाज उच्छगात्र और पांच अन्तराय इन छान गुणस्थानबर्ती
वैदिकिकक्रमपाशियोंके छान वध्यमान प्रकृतियोंके स्थापित कर प्रकृषण करते हैं— इनके
बन्ध व उदयके म्युच्छेदका विचार यहां नहीं है क्योंकि बन्ध उदय वा क्षान्त रहित
गुणस्थान ऊपर पाये नहीं जात ।

पांच ज्ञानापरणीय बार वदनावरणीय पंचमिषजाति कैलम व कामय दारीर,
अप बन्ध रस स्वरा अगुरुसमु, उपपात वस बादर, पपाज प्रत्येकदारीर, स्थिर,
अस्थिर, शुभ अशुभ निमाज भार पांच अन्तराय इनका स्वादय बन्ध होता है क्योंकि,
यहां ये प्रकाशपी हैं । मित्रा प्रकृता, सता प अमाता वेवनीय बारह कपाय छह
माकपाय और पुदयवेदका बन्ध स्वोदय परोदय होता है क्योंकि, क्षान्त प्रकृतेय भी
इनक बन्धविरोधका अभाव है । समचउरससंयण सुमग भादेय पराधीति और
उच्छगोवका बन्ध मिच्छाद्वि और असंजदसम्माद्वि गुणस्थानोंमें स्थादय परोदय
होता है । सामाज्य गुणस्थानमें स्वादय बन्ध होता है क्योंकि, अपपाजकाममें
मादिकियोंमें सामाज्य गुणस्थानका अभाव है । मनुष्यगति बीदरिकदारीर, बीदरिक
दारीरंगार्पाण बजर्यमसंहनन मनुष्यानुपूर्वी परपात उच्छपास प्रकृतिविहायोगति
और सुस्सरका परोदय बन्ध होता है क्योंकि, यहां इनक उदयका विचार है । अपदा
वीतिक मिच्छाद्वि और असंजदसम्माद्वि गुणस्थानोंमें स्वादय परोदय बन्ध होता

परोक्षो । सप्तमे परोक्षो, देवगदीए तिस्रे उदयामात्रो ।

पंचांगमावरणीय छह ब्रह्मावरणीय बारह कपाय मय दुर्गुण औरालिय तेजा कम्माइवसरी बज्ज-गंध-रस-स्पर्श-अगुरुमलदुःख-उपपाद-परपातुस्सास-बाहर-पञ्चस-पंचेयसरीर-विभिन्न-पंचतण्डयार्थ भित्तरो बंधो, एत्थं धुववधिच्छादो । सादासत्त्व-इत्थ-रदि-[अरदि] सोम-विधिभि सुहासुह-वसकिटि-वजसकिटिभं सांतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमदंसमादो । पुरिसवेह-समवत रससंलग्न वज्जरिसहसंपहन-पसत्पविहायगह-सुमग-सुस्वर भादेज्जुष्णामोदणं मिच्छादि सासत्त्वसम्मादिद्वीसु बंधो सांतरो । अंसजदसम्मादिद्वीसु भित्तरो, पडिवक्खपयडीयं बंधा-भावादो । पंचिदियआदि मोएत्थिसरीरबंधोबंम-ससपामाणं मिच्छादिद्वि सांत-भित्तरो । कथं भित्तरो ? व, सप्तकुमारादिदेवेषु भेदेषु च भित्तरबंधुवत्तमादो । सासत्त्वसम्मादिद्वि-अंसजदसम्मादिद्वीसु भित्तरो, पडिवक्खपयडीयं बंधामावादो । मनुसमह-मनुस्रजुपुष्पी

हैं । सासत्त्वम गुणस्थानमें परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि देवगतिमें उसका उदयका नभाब है ।

पंचांगमावरणीय छह ब्रह्मावरणीय बारह कपाय मय दुर्गुणा औरालिक, तैसस बंधार्थक शरीर, बर्ज गन्ध रस, स्पर्श अगुरुमल, उपपात परपात उच्छ्वास बाहर पर्वीय मल्लेकशरीर, निर्माण और पांच अणुपण इतका भित्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ ये प्रवर्णनी हैं । साता व मसाता वेदनीय हास्य एति-[अरति] लोक-स्वित्, मस्थिर, शुभ मशुभ वशाकीर्ति और अपशाकीर्तिक सात्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समवसे इतका बन्धविग्राम इका जाता है । पुठरमेह समवतुरसंसंस्याव पञ्चम-संहवन प्रयास्तविहायोगति शुभग सुस्वर, भावेय और वज्जपोष इतका मिच्छादि और सासत्त्वसम्मादि गुणस्थानोंमें सात्तर बन्ध होता है । असंबतसम्मादिधर्मोंमें भित्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष महतिपौके बन्धका नभाब है । पंचेन्द्रव जाति भीदरीकशरीरपंगोपांग और वस ब्रह्मकर्मका मिच्छादि गुणस्थानमें समवत-भित्तर बन्ध होता है ।

शुंक्क—भित्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—वहीं क्योंकि सप्तकुमारादि देवों और नाटकीयोंमें उनका भित्तर बन्ध पाया जाय है ।

सासत्त्वसम्मादि और असंबतसम्मादि गुणस्थानोंमें भित्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष महतिपौके बन्धका नभाब है । मनुष्यपति और मनुष्यगति

मिथ्याह्नि-सामनसम्मादिह्यसु मन्तर-निरुत्तरे । कथं निरुत्तरे ? प, मानसदिदेवेषु निरुत्तरपशुवृत्तादौ । असदसम्मादिह्यसु निरुत्तरे, पशिवक्त्रनयनीयं पशामावादे ।

मिथ्याह्निस्स तेदादीस पञ्चपा, भोपपञ्चपसु षड्भुवन-वधि-कयजोमपञ्चपानम मावादे । सामनस्य सप्तर्षीमुत्तरपञ्चपा, मिथ्याह्निपञ्चपसु पंचमिन्धस-गर्तुस्यवेदानममावादे । असदसम्मादिह्यसु वेत्तीस पञ्चपा, मिथ्याह्निपञ्चपसु पंचमिन्धत्तापेनानुवधिषडभिक्रित्व वेदानममावादे । सेवे सुगम ।

मनुष्यान्-मनुष्यानुपूर्वी-उच्चावोदा । मनुष्यान्सदुत्तरे, अवसेसत्वं पयसीन वदो मिथ्याह्नि-सामनसम्मादिह्यसु विरिक्त्व-मनुष्यान्सदुत्तरे, असदसम्मादिह्यसु मनुष्यान्सदुत्तरे । मिथ्याह्नि-असदसम्मादिह्यसु देव-पेरह्या सानी । सामनसम्मादिह्यसु देवा चेव सानी ।

प्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्याह्नि और सामानसम्मादिह्यसु स्थानांमि सामन्तर-निरुत्तर बन्ध होता है ।

शुद्धा—निरुत्तर बन्ध कैसे होता है ।

समाधान—यही, क्योंकि, मानतादिक देवोंमें उक्त बन्ध निरुत्तर बन्ध पाया जाता है ।

असदसम्मादिह्यसु निरुत्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिपक्ष बन्धका अभाव है ।

मिथ्याह्निके तेतालीस प्रत्यय होते हैं क्योंकि, भोपप्रत्ययोंमें यहाँ चार अनायोग चार वक्त्रयोग और चार कययोग प्रत्ययोंका अभाव है । सामानसम्मादिह्यसु तीस उत्तर प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, मिथ्याह्निक प्रत्ययोंमेंसे यहाँ पाँच मिथ्याह्निक और नपुंसकदेवका अभाव है । असदसम्मादिह्यसु तीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, मिथ्याह्निके प्रत्ययोंमेंसे यहाँ पाँच मिथ्याह्निक, अमन्तानुवधिषडभिक्रित्व और स्त्रीबन्ध प्रत्ययोंका अभाव है । दोष प्रत्ययप्रकल्प सुगम है ।

मनुष्यगति मनुष्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रका बन्ध मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा तत्र प्रकृतिपक्षका बन्ध मिथ्याह्निक एवं सामानसम्मादिह्यसु स्थानांमि विरगति ब मनुष्यगतिसे संयुक्त, और असदसम्मादिह्यसु मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है । मिथ्याह्नि और असदसम्मादिह्यसु देव व नारकी स्वामी हैं । सामानसम्मादिह्यसु देव ही स्वामी हैं । बन्धा-

ब्रह्मज्ञानं सुगमं । ब्रह्मसोपेन्द्रो जस्य । येषं पुत्रपयसीनं मिच्छाद्विद्भिर्ब्रह्मविद्भिः ।
अथर्व तिविद्भिः, धुवासावात् । मेमां पयसीनं येषां मादि ब्रह्मसो, भद्रुयवर्तिता ।

वीणागिदितिय-अमतागुणविचरितिक्रियवद्-निगिरगद्-चउसगद्-चउमंगद्-
तिरिक्खगद्भाभोग्मागुणवि-उच्च-अणमग्गविहायगद्-दुमग-दुम्म-अणमग्ग वीणागद्भाभोग्ग
परुवमा करिदे— अमतागुणविचरितिक्रियवद्भाभोग्ग मग्ग बाण्डिअणि सामणगुणद्वय, व
अणमग्ग; मिच्छाद्विद्भिर्ब्रह्मविद्भिः तद्विचरितमादो । दुमग-अमदे-अ-वीणागादां पुत्रं येषो पग्ग
उद्भो वोण्डिअदि, उवरिमग्गसंजग्गमादिद्विगुणमि येषं यिणा उच्चस्मग्ग दमगादा ।
अवसेसग्गमेमो विषातो जस्य, येषस्मेरुमग्गवत्तमा ।

अमतागुणविचरितिक्रियवद्भाभोग्ग माग्ग-पग्गद्भो, उमयपग्गि अतिरुद्भा ।
दुमग-अमदे-अ-वीणागादां मिच्छाद्विद्भिर्ब्रह्मविद्भिः मोक्ष-पग्गद्भा । सामण पग्गद्भो, जग्ग
अप-ब्रह्मद्भा तदमावादा । सेमसात्सपयसीनो परादणव वग्गन्ति, तामिमेरुद्वयविद्भिः ।

पद्मा सुगमं है । अथर्वसुपेन्द्रो मही है । अथर्व भुवमरुतिपाका मिच्छाद्विद्भिर्गुणस्थानमे
कारो मकरका बन्ध होता है । अथर्व गुणस्थानमे तम मकरका बन्ध होता है क्योंकि
यहाँ भुव मकरका बन्ध है । तम मरुतियोंका बन्ध सावि व मधुप होता है स्वावि वे
मधुबन्धी है ।

स्वामिपुत्रिजय अमतागुणविचरितिक्रियवद्भाभोग्ग, त्रिविद् त्रिपगति कार स्वामि कार
संहम त्रिपगतिमाप्यानुपूर्वी उद्यां अमतागुणविहायगति दुमग दुस्वद्, अमादय
वीर नीचगोत्रका मरुपना करने हैं— अमतागुणविचरितिक्रियवद्भाभोग्ग और त्रिविद्का बन्ध व उच्च
होनों सासात्त गुणस्थानमे साय द्युच्छिन्न हात है अथर्व नहीं क्योंकि मिच्छाद्विद्भिर्गुणस्थानमे
उमदे विच्छेदका बन्ध है । दुमग अमादय और नीचगोत्रका पूर्वमे वन्ध और
पद्मा उच्च द्युच्छिन्न होता है क्योंकि उपरिम अमपतसम्यग्द्विगुणस्थानमे वन्धक बिना
केवल उच्च ही देखा जाता है । तम मरुतियोंका यह विचार नहीं है क्योंकि उमका
केवल एक वन्ध ही यहाँ पाया जाता है ।

अमतागुणविचरितिक्रियवद्भाभोग्ग और त्रिविद्का बन्ध स्वादय परादय होता है क्योंकि
होनों ही मकरके कोई विरोध नहीं है । अथर्व अमादय और नीचगोत्रका मिच्छाद्विद्भिर्गुणस्थानमे
स्वोच्च परादय बन्ध होता है । सासात्त गुणस्थानमे परादय बन्ध होता है
क्योंकि नादिक्योंम अपर्याप्तकाळमे सासात्त गुणस्थानका बन्ध है । शेष सेमह
मरुतिपों परादय ही बंधती है क्योंकि, यहाँ उमक उच्चका विरोध है ।

धीष्णिगिदितिय-अगताशुबधिचउफकन पिंरंतरो बंधो, धुवबंधितादो । इत्थिदेद चउसअण-चउसषडण उज्जेव अपसरयविहामगइ-दुमग-दुस्सर अणादेच्चापं सांतरो बंधो, पडिक्खपयडिबंधदसगादो । तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाभोग्गाणुपुम्भि-धीचागोद्याण मिच्छा-इद्धिन्दि सांतर-पिरंतरो । कंध पिंरंतरो ? सत्तमपुडविभेदइएसु पिंरंतरबंधुवठमादो । सासणे सांतरो, अपगजत्तद्याए सत्तमपुडविद्धियसासणाणुवठमादो ।

पचया सुगमा । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाभोग्गाणुपुम्भी-उज्जेवाणि तिरिक्खगइसंहरं, अवसेसाभो तिरिक्ख-मणुस्सगइसंहरं बंधति । मिच्छाइद्धिदेव-भेदइया, सासणा देवा सामी । पचद्याण पचविगट्टद्याण च सुगम । सत्तह धुवबंधपयठंम मिच्छाइद्धिन्दि बंधो चउत्थिहो । सामणे दुबिहो, अणादि-धुवामादादो । सेसाण सम्परय सादि अदुवो ।

मिच्छत-गुणसुपवेद-एइदियआदि-हुंइसअण-असंपत्तसेवइसंपडण-आदाव-बावरणं परूवणं कस्समो— मिच्छतस्स बंधेदया समं पोच्छिज्जा, उवरि तदुमयाणुवठंमादो । जणुसय-

स्थानएइअत्र भीर अगताशुबधिचउफकन निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वे धुवबन्धी हैं । त्र्येद्वि चार संस्थान चार संहजन उद्यात अमशस्तविहायोगति दुर्मग सुस्वर भीर अगताशुका सान्तर बन्ध होता है क्योंकि इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतिपौका बन्ध देखा जाता है । निर्यगति तिर्यगतिमायाग्यासुपूर्वी भीर नीचगोत्रका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

क्षेत्र—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, सत्तम पृथिवीके मातृकियोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

सासाधन गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है क्योंकि, अपर्याप्तकाष्ठमें सत्तम पृथिवीस्थ सासाधनसम्पदइति मातृकियोंका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम हैं । निर्यगति तिर्यगतिमायाग्योसुपूर्वी भीर उद्योतको तिर्यगतिसे संयुक्त तथा दोष प्रकृतिपौको निर्यगति व अनुपपगतिसे संयुक्त पांघते हैं । मिथ्यादृष्टि देव व मातृकी तथा सासाधनसम्पदइति देव कर्माती हैं । बन्धायमान भीर बन्धविमलस्थान सुगम है । सात भुवबन्धी महातपौका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सासाधन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि वहाँ अनादि व धुव बन्धका अभाव है । दोष प्रकृतिपौका सर्वत्र सादि व समुच्च बन्ध होता है ।

मिथ्यात्प मर्पुमकबन्ध एकेन्द्रियमाति इण्डसंस्थान अर्धमातृपाटिकसंहजन माताप भीर क्वावर प्रकृतिपौकी प्ररूपणा करत हैं— मिथ्यात्पका बन्ध भीर उद्वय दोनों [मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें] साथ ही स्पुच्छिज्ज हात हैं, क्योंकि, मिथ्यात्प गुणस्थानसे ऊपर



वेद-हुंइसंज्ञानं पुण्यं बंधो पञ्च उदयो बोधिरिन्द्रादि, मिच्छादृष्टि-असंभूतसम्मादिहीसु कमेय
बंधोदयबोधेदसंज्ञादो । अवसेसासु एवो विचारो पत्ति, बंधस्तेनस्तेन वंसादो ।

मिच्छातस्तु सोदय, पञ्चमयवेद हुंइसंज्ञानं सोदय-सोदय, अवसेसानं परोदय
बंधो । मिच्छातस्तु गिरतो । अवसेसानं पयस्वीनं संज्ञो, बंधगच्छायसंज्ञायिमापुवर्त्तमादो ।
पञ्चया सुगमा । जवरि एंडिय-आदाय-आवरणं बंधुसंज्ञेदपञ्चमो जति ति हुगममेव
समेदयं । एंडिय-आदाय-आवरणं तिरिच्छागदसंज्ञं, सेसानो तिरिच्छा मनुसंगदसंज्ञं
धनंति । एंडिय-आदाय-आवरणं देवा सामी । सेसानं देव-पेरया । बंधुसंज्ञं बंधविनिर्मुक्त्यं
यं सुगमं । मिच्छातस्तु बंधो चठ्ठिहो । सेसानं सादि मनुवो ।

तित्थपरस्तु बंधोदयबोधेदविचारो पत्ति, बंधमिच्छादृष्टिपादो । परोदयो बंधो,
संज्ञो गिरतो मोक्षं तित्थपरस्तुसंज्ञादयामादो । गिरतो बंधो, एगसमयं बंधुवर्मा-

ने जानो पाये नहीं जाते । मनुसंज्ञेद और हुंइसंज्ञानका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय
व्युत्पिच्छ होता है क्योंकि मिच्छादृष्टि और असंभूतसम्पदृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके
बन्ध और उदयका व्युत्पिच्छ देखा जाता है । दोष प्रकृतिपोंमें यह विचार नहीं है क्योंकि,
उनका केवल एक बन्ध ही देखा जाता है ।

मिच्छात्वका स्वादयसे मनुसंज्ञेद य हुंइसंज्ञानका स्वादय-परोदयसं तथा
दोष प्रकृतिपोंका परोदयसे बन्ध होता है । मिच्छात्वका गिरतो बन्ध होता है । दोष
प्रकृतिपोंका सान्तर बन्ध होता है क्योंकि बन्धककालमें उनकी सत्ताका विषय पाया नहीं
जाता । प्रत्यय सुगम है । विद्योय इत्यादि कि एकस्मिन्प्रजाति आताय और स्वावरका
मनुसंज्ञेद प्रत्यय नहीं है इस दुर्गम बातका स्मरण रक्षना चाहिये । एकस्मिन्प्रजाति
आताय और स्वावर प्रकृतियों तिर्यग्गतिसे संयुक्त और दोष प्रकृतियों तिर्यग्गति से
मनुसंज्ञागतिसे संयुक्त बंधती हैं । एकस्मिन्प्रजाति आताय और स्वावर प्रकृतियोंके देव
स्वामी हैं । दोष प्रकृतियोंके देव य नारदी स्वामी हैं । बन्धान्धान और बन्धविनिर्मुक्त्यं
सुगम है । मिच्छात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है । दोष प्रकृतियोंका सादि य मनुव
बन्ध होता है ।

तीर्थंकर प्रकृतिके बन्ध य उदयके व्युत्पिच्छका विचार नहीं है क्योंकि, उनका
एक बन्ध ही होता है । परोदय बन्ध होता है क्योंकि, सयोगी महात्माके धातुक मन्व
तीर्थंकर प्रकृतिके उदयका समान है । गिरतो बन्ध होता है क्योंकि एक समयसे

मावादे । पञ्चया सुगमा । मनुसगर्भमन्त्रो वधो । देव-भिरुद्यमसञ्जदसम्मादिह्रीं सामी ।
 वधद्वापं वधविषद्वद्वाणं च सुगमं । सादि-अद्भुतो वधो । पयडिषवगयविसेमपकृवणद्वमुत्तर
 सुत मणदि—

णवरि विसेसो वेद्वाणियासु तिरिक्खाउअ णरिय मणुस्साउअ
 णरिय ॥ १५६ ॥

कुदो ? देव-भिरुद्याणमपञ्चत्तद्वाए आठववधविरोहादे ।

आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगीसु पचणाणावरणीय
 छदसणावरणीय—सादासाद—चदुसजलण—पुरिसवेद—इस्स-रदि-अरदि
 सोग भय-दुगछा-देवाउ-देवगह-पचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइय—
 सरीर-समचउरससठाण-वेउव्वियसरीरअगोवग-चण्ण गध-रस-फास देव-
 गइपाओग्गाणुपुब्बी अगुरुवलहुव उवघाद-परघादुस्मास-पसत्यविहाय—
 गइ-त्तस-चादर-पञ्जत्त-पत्तेयसरीर—धिराधिर—सुहासुह—सुभग—सुस्सर—
 आदेअ-जसकित्ति-अजसकित्ति णिमिण—तित्थयर—उच्चागोद—पचत्त—
 राइयाण को वधो को अवधो ? ॥ १५७ ॥

वन्धविधामका अभाव है । मत्पय सुगम है । मनुष्यगतिसे संयुक्त वन्ध होता है । देव व
 मारुक्खी अस्सपत्तसम्पद्दि सामी है । वन्धाय्वाण और वन्धयित्तइस्थान सुगम है । सादि व
 अद्भुत वन्ध होता है । मण्डितिवन्धगत विद्यायके प्रकृपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

विशेषता केवल इतनी है कि द्विस्त्रानिक प्रकृतियोंमें तियगायु नहीं है और मनुष्यायु
 नहीं है ॥ १५६ ॥

इसका कारण यह है कि वध व मारुक्खीके अययामकालमें आयुवन्धका वितोष है ।

आहारस्ययोगी और आहारमिस्सकाययोगियोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह दशनावरणीय,
 सात्त्व व असत्ता वेदनीय, चार संवत्तन, पुरुषवेद, हास्य, एति, अरति, शोक, भय, लुगुप्पा,
 देवासु, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, बैक्खियिक, तेजस व कम्मम शरीर, समचतुरससस्थान,
 बैक्खियिकशरीरांगोपांग, वन, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यात्तपूर्वी, अगुरुत्तु, उपघात,
 परघात, उन्मूवास, प्रशस्तविहायेगति, व्रस, चादर, पचात्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर,
 शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकित्ति, अयशकित्ति, निर्माण, तीर्षकर, उच्चगोत्र
 और पांच अन्तराय, इनका कौन पन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १५७ ॥

सुगमं ।

पमत्तसजदा वधा । एदे वंधा, अवधा णत्थि ॥ १५८ ॥

एदस्सत्थो उप्पदे — एत्थ वधो उद्वो वा पुण्यं वोच्छिन्नो ति विचारो णत्थि, पक्कगुणहान्तामि पुप्फावरमात्तामात्तो । पंचपाप्मावरणीय-चउदसपाप्मावरणीय-सुरिसवेद-पचिदियवादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससअण-वण्णचउक्क-अगुरुवडुवचउक्क-पसत्त-विहायगइ-तमचउक्क-धिरापिर-सुहासुइ-सुमग-सुस्सर-अदे व जसकिंति विमिज-उम्मागेद-पंचंतउहायणं सोदवो वंधा । जिहा-पयत्त-सादासाद-चउसजलण-उण्णोक्कमायाणं सोदय-फोदवा वंधो, उभयवावि वंधविरोहावात्तो । देवाउ-देवगइ-वेठभियसरीर-वेठभियसरीरंगेत्तंग देवगइवाभोगाणुपुम्मी-अजसकिंति तिस्ययणं फोदवो वधो, आहारकयजोगीसु एवामिसुदय विरोहात्तो ।

पंचपाप्मावरणीय-उदसपाप्मावरणीय-चउसजलण-सुरिसवद् मय दुगुहा-देवाउ-देवगइ-पचिदियवादि वेठभिय तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससअण-वेठभियसरीरंगेत्तंग-वण्णचउक्क-देवगइवाभोगाणुपुम्मी अगुरुवडुवचउक्क-पसत्त-विहायगइ-तमचउक्क-सुमग-सुस्सर अदेव

यद् एव सुगमं है ।

प्रमत्तसजदा वन्धक है । ये वन्धक हैं अवन्धक नहीं हैं ॥ १५८ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहत हैं— यहाँ वन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है या उद्भव यह विचार नहीं है। क्योंकि एक शुचस्यात्मन पूर्वापरमात्रका समाव होता है। पांच पाप्मावरणीय चार दशमावरणीय पुरुषपद पंचत्रिंशज्जालि तैजस व कामंज शरीर, समचतुरवर्णस्थान वर्णादिक चार, अगुरुमय आदिक चार, प्रसास्ताविहायोगति त्रसादिक चार, विषद, अविषद, सुम अशुम सुमग सुस्वर, भाव्य यशस्वीर्नि निर्माण उच्छवमोच और पांच चमत्ताय इनका स्थातृच वन्ध होता है। जिहा प्रथमा माता व अमाता बह्मीय चार सज्जमन और उह नो कयापीअ दशव्य पयव्य वन्ध होता है क्योंकि, बान्नी ही प्रकरत वन्ध इत्तेम कर विरोध नहीं है। इवापु देवगति वैकिपिकशरीर, वैकिपिक शरीरंगपांग इवगतिमायोग्यानुपूर्वी अवशस्वीर्नि और तीर्थकरका पयव्य वन्ध होता है क्योंकि, आहारकायपांगिर्गोमे इनक उद्भवका विरोध है ।

पांच पाप्मावरणीय उह दशमावरणीय चार संत्यमन पुरुषवद् मय जुगुप्ता देवापु इपगति पंचत्रिंशज्जालि वैकिपिक तैजस व कामंज शरीर, समचतुरवर्णस्थान वैकिपिकशरीरंगपांग वर्णादिक चार, इवगतिमायोग्यानुपूर्वी अगुरुमय आदिक चार, प्रसास्ताविहायोगति त्रसादिक चार, सुमग सुस्वर, भाव्य निर्माण तीर्थकर, उच्छवगात्र

णिमिष तित्ययर उच्चागोद-यर्षतराह्याण-मिरितरो वधो, एगसमएण षंघुवरमाभावादो । सादासाद-हस्स-रदि भरदि-सोग-यिरायिर सुहासुह-असकिचि भमअकिणीणं सातरो वधो, एगसमएण षंघुवरमदमणादो ।

बद्धमञ्जल-पुरिसवेद-हस्स-रदि भरदि-मोग मय-दुगुळा आहारकयजागेदि बारस-पञ्चएदि एशाआ पयडीओ पम्भति । सेस सुगमं । एशसि वधो देवगदिसंभुत्तो । मज्झिमा सामी । वषट्कार्णं सुगम । यंघवोच्छेदो गतिथि । धुवपपयडीण तिविहो वंघो, पुवाभावादो । भवसेसाम सादि अद्दवो ।

एवमाहारमिस्सकयजोगीणं पि वत्तव्यं । गवरि परषादुस्सास-यसस्यविहायगइ दुस्सराणं परोदभो वधो । पुण्णमेताडियसरीरस्स उदए सत्ते एशसि संतोदयाण कभमेरव अकारमेण उदयवोच्छेदो होज्ज ? अ, मोरास्त्रियमपिउदएणोदइत्त्यणं तदुदयामायेगेदासिमुदया मावस्स पाह्यसादो । पण्णसु आहारकयजोगमवणेदूण आहारमिस्सकयजोगो पक्खिदिदम्भो । एविओ चेव मेदो, गरिव अण्णत्थ कय्य वि ।

भार पांच अन्तरात्त इतका निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे इतक वन्ध विभामध्य समाप्त है । साता य भसाता वधमीय हास्य रति भरति शोक स्थिर अस्थिर, शुभ अशुभ पशकालिं भौर भयशकालिंका सन्तर वन्ध होता है, क्योंकि एक समयसे इतका वन्धविभाम देना जाता है ।

ये प्रवृत्तियां चार सन्धसन्त पुण्ययद् हास्य रति भरति शोक, मय सुगुप्ता और आहारकययाग इत बारह प्रत्ययोंस वंघनीं हैं । शय प्रत्ययप्रकरण सुगम है । इनका वन्ध स्वगतिसं संयुक्त होता है । अनुप्य स्थामी है । वन्धायाम सुगम है । वन्धप्युत्तं महीं है । अथप्रवृत्तियोंका तीन प्रकारका वन्ध होता है क्योंकि, भुववन्धक समाप्त है । ये प्रवृत्तियोंका सादि य अन्ध वन्ध होता है ।

इसी प्रकार आहारमिभकाययोगियों भी कहना चाहिये । विरागता कय्य इतनी है कि इनके परधात उच्छ्रयाम प्रान्णविहायगति और दुस्परत्त परोक्ष वन्ध होता है ।

संक्षेप—चूंकि पूर्वमें औदारिकगरीरक उदयक इतपर इतका उदय या अतएव सब यही उनका निष्कारण उदयानुत्प्रेष क्यों हो जाता है ?

मनाधान—एसा नहीं है क्योंकि, औदारिकगरीरक उदयक साध उदयका प्राज्ञ ज्ञानधामी इन प्रवृत्तियोंका उमक उदयका समाप्त होनेस उदयामाध व्यापयुक्त है ।

प्रत्ययोंमें आहारकाययागका क्रम करक आहारमिभकाययोगका आहवा चाहिये । कय्य इतना ही भव है और वहीं कुछ भव नहीं है ।

कम्मइयकायजोगीसु पचणाणावरणीय-छदमणावरणीय-असादा
वेदणीय-चारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि मोग भय-दुगुछा
मणुसगह-पुचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समघउरस
संठण ओरालियसरीरअंगोवग-वज्जरिसहसघहण-वण्ण गध-रस-फास
मणुमगइपाओग्गाणुपुब्बी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास पसत्थ-
विहायगइ-तस-चादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-यिराधिर-सुहासुह-सुभग-
सुत्सर आदेवज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराहयाण
को वंधो को अवधो ? ॥ १५९ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी वंधा । एदे वधा,
अवसेसा अवधा ॥ १६० ॥

एदस्सरवो सुचद— एरव वधो उदमो वा पुम्भं बोधिम्वो चि पत्ति विषाण,
एरव ओरठिपदुग-समघउरससंठण-वज्जरिसहसंघहण-उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ

कम्मणकम्मयोमिषोमें पांच ज्ञानावरणीय, छद ईशनावरणीय, असादावेदनीय,
पारह कपाय, पुरिसवेद हस्स, रति, अरति, शोक, भय, दुगुप्सा, मनुष्यगति वंशिन्यजति,
औदारिक, तेजस व कम्मण शरीर समचतुरस्रसंज्ञान, औदारिकशरीरगोपांग, वज्रपमसहनन,
वध, गध रस स्पर्श मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी अगुरुत्तु, उपघात, परघात, उष्णता,
प्रशम्यविहायोगति वस, चादर, पचात, प्रत्येकशरीर, स्मिर, अस्मिर, सुभ, अशुभ, सुभग,
सुत्सर, मात्थेय यशस्विनि, अयशस्विनि, निमाण, उच्छगोत्र और पांच अन्तराय, इन सब कर्म
कारक और कर्म अवधक है ? ॥ १५९ ॥

एद वध सुगम है ।

मिष्यादष्टि सामादनमम्भगदष्टि भार अर्मपनमम्भगदष्टि वन्धक है । ये वधक है,
अथ अपन्धक है ॥ १६० ॥

एरव अर्थ कहते हैं— यहाँ वध वा उदय पूर्वमें स्फुटिछत्र दाता है यह विषाण
वरी है क्योंकि यहाँ औदारिकशरीर समचतुरस्रसंज्ञान वज्रपमसहनन उपघात

पचपसरीर-सुस्तराणमेयतेण उदयामावाधो, सेस्राणमुदयसमवाधो च । पचपाणावरणीय
 चउदंसणावरणीय-तेबा-कम्मइयसरीर-वण्णपठक-अगुरुल्लहुव-पिराधिर-सुहासुह-मिमिज-
 पंचतराइयाण सोदओ बओ, एत्यवणसन्धगुणहाणेसु पियमेणुदयदंसणाधो । पिहा-पयत्त-
 असत्तवेदणीय-वारसकसाय-इत्थ-रदि-अरदि-सोग-मय-दुगुछा-पुरिसवेद-सुमगादेन्न-असन्ति-
 उच्चगोदाण सोदय-परोदओ बओ । मणुसगाइ-मणुसगाइपाओगाणुपुष्पीणं मिच्छइडि-
 सासणसम्मादिहीसु सोदय-परोदओ बओ, उभयया वि बवविरोहामावाधो । असंभइसम्मादिहीसु
 परोदओ, मणुस्सअसज्जदसम्मादिहीणं मणुवडुगस्स बंधविरोहाधो । पंचिदिय-तस-बादर-पच्चत्तमं
 मिच्छइडिहि सोदय-परोदओ बओ, पडिबक्खुदयसंभवाधो । सासणसम्मादिहि-असज्ज-
 सम्मादिहीसु सोदओ, विगल्लिदिपसु एदेसिं दोण्णं गुणहाणाणं अमावाधो । ओरात्थिमसरीर
 समसउरससंअण-ओरात्थियसरीरअंगोवग-यच्चरिसइसभइण-उवपाद-परपाद-उत्सास-पसस्य-
 विहायगइ-पचैयसरीर-सुस्तराणं परोदओ बओ, विगाहगरीय एदासिमुदयामावाधो ।

पंचपाणावरणीय-सुदसणावरणीय-वारसकसाय मय-दुगुछा-ओरात्थिय-तेबा-कम्मइय-
 सरीर-वण्ण-गंध-रस-फस अगुरुल्लहुव उवपाद-पिमिज-पचतराइयाण पिरंतरो बओ, एत्य

परपात उच्छ्वास प्रज्ञस्त्विहायोगति प्रत्येकशरीर और सुस्वरका नियमसे उदयामाय
 है तथा दोय प्रकृतिपौक उदयका सम्भावना है । पांच कामावरणीय चार दर्शनावरणीय
 ठैजस व कर्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुल्लहु स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ निर्माण
 और पांच अन्तराचक्र स्वाक्षय बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ सब गुणस्थानोंमें इनका
 नियमसे उदय देखा जाता है । निद्रा प्रच्छा असातायेदनीय बाह्य कणाय हास्य रति
 अरति शोक, मय सुगुप्ता पुण्यवेद सुमग भाक्षय पशार्थति और उच्चगोत्रका
 स्वाक्षय परोक्षय बन्ध होता है । मनुष्यगति व मनुष्यगतिप्रायाग्यानुपूर्वीक मिथ्यादृष्टि
 और साक्षात्तसम्पगदृष्टि गुणस्थानोंमें स्वाक्षय परोक्षय बन्ध होता है क्योंकि, दोनों प्रकारसे
 ही बन्ध हममें कोई बिरोध नहीं है । असपतसम्पगदृष्टियोंमें पण्यय बन्ध होता है क्योंकि,
 मनुष्य असंयतसम्पगदृष्टिपौक मनुष्यद्विकके बन्धका बिरोध है । पंचिदियजाति अस
 बाह्य और पयात्तका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वाक्षय परोक्षय बन्ध होता है, क्योंकि,
 यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिपौक उदय सम्भव है । साक्षात्तसम्पगदृष्टि और असपतसम्पगदृष्टियोंमें
 स्वाक्षय बन्ध होता है क्योंकि, बिचमेंद्विपोंमें इन दोनों गुणस्थानोंका अभाव है ।
 औद्गारिकशरीर, समसयुक्तसंस्थान औद्गारिकशरीरअंगोपांग अजर्पमसंहमन उपपात
 परपात उच्छ्वास प्रज्ञस्त्विहायोगति प्रत्येकशरीर और सुस्वरका पण्यय बन्ध होता
 है, क्योंकि, निद्रागतिमें इनका उदयका अभाव है ।

पांच कामावरणीय छह दर्शनावरणीय बाह्य कणाय मय सुगुप्ता औद्गारिक
 ठैजस व कर्मण शरीर, बन्ध बन्ध रस स्पर्श अगुरुल्लहु उपपात निर्माण और पांच

कम्मइयकायजोगीसु पचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादा
वेदणीय-चारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग भय-दुगुछा
मणुसगइ-प्रविंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस
सठण ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसंधवण-वण्ण गध-रस-फास
मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघादुस्सास पसत्य-
विहायगइ-तस-चादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-यिरायिर-सुहासुह-सुभग-
सुस्सर-आदेवज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पर्वतराइयाण
को बंधो को अवधो ? ॥ १५९ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी वधा । एदे यथा,
अवसेसा अर्बधा ॥ १६० ॥

एदस्सत्थो बुष्णदे— एरव यथो उदजो वा पुब्ब बोधिम्यो ति पत्ति विचार,
एत्थ बोधत्तिमदुग-समचउरससंस्थान-वज्जरिसहसंधव-उवघाद-परघादुस्सास-पसरयविहायगइ

कर्मकर्मयोरगियेमे पांच ज्ञानावरणीय, छद दर्शनावरणीय, असातावेदनीय,
चारह कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, मय, दुगुप्सा, मनुष्यगति पंचेन्द्रियगति,
बौद्धरिक, तैजस व कर्मण शरीर, समचतुरससंस्थान, बौद्धरिकशरीरगोपांग, वज्रपर्मसंज्ञन,
वर्ष, गन्ध, रस स्पर्श मनुष्यगतिप्राप्त्योम्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपपत्त, परपत्त, उष्णतास
प्रशस्तविहयोमति, त्रस, चान्दर, पर्वाप्त, प्रवेकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमम,
सुस्सर, अदेव यश्चकित्ति, अयश्चकित्ति, निर्माण, जण्णगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन
बन्धक और कौन अवधक है ? ॥ १५९ ॥

यह सब सुगम है ।

मिप्पादट्ठि सामादन्सम्यग्दट्ठि और असंयतसम्यग्दट्ठि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं,
श्रेय बन्धक हैं ॥ १६० ॥

एतथा अर्थ कहते हैं— यहाँ बन्ध वा अवध पूर्वमे व्युत्पिद्य होता है यह विचार
महीं है क्योंकि यहाँ बौद्धरिकद्विक, समचतुरससंस्थान वज्रपर्मसंज्ञन उपपत्त

शुक्लविद्यारो। असादवेदणीय-इत्य-उदे-अदि-सोम-विश्वि-सुहासुह-असक्ति-असक्ति-
 सान्तरो बभौ, एगसमएण चवुवरमदसणादा। पुरिसवेद-समपठरससंयम-वन्त्ररिसहसंभन-
 प्सस्यविद्यारो-सुस्तर-सुमपादेव उच्छगोत्राण मिष्यादृष्टि-सासपेसु सान्तरो बभौ। असंनद
 सम्मादिद्वीसु भिरंतरो, पडिबकपपडीन पंचामावायो। [मनुसगह] मनुसगहपात्रोम्यानु
 पुर्वीणि मिष्यादृष्टि-सासपेसु बभौ सान्तर-भिरंतरो। कथं भिरंतरो ? न, आनदादिदेवेहितो
 विमहादीए मनुमेसुप्यप्याण मनुसगहदुगस्त भिरंतरंभुवलंमादो। असंनदसम्मादिद्वीसु
 भिरंतरो बभौ, विमहादीए मनुवदुगंभपामोमसम्मादिद्वीगमप्यगहदुगस्त पंचामावायो।
 पंचिदिय-ओरात्तिसरिभगोवगस्त-मादर पात्रस-परपाहुस्सास-पसेयसरीणे बभौ मिष्याद्वीसु
 सान्तर-भिरंतरो। कथं भिरंतरो ? न, सगकुमारादिदेव-भेदपद्वीहितो तिरिक्त-मनुस्सेसुप्यप्याण

अन्तरात् इतन्म भिरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहां प प्रबन्धार्थी प्रकृतिपाई है। असाता-
 वेदनीय इत्य उदे अरति होक, विश्व, भस्वि, शुभ मनुम यथाकृति और अयशाकृति
 सात्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समपसे इतका बन्धविद्याम बन्धा जाता है। पुत्रपद
 समपतुरकससद्यान वज्रमसहमन प्रदास्तविद्यायोगति सुम्बर, सुमग आद्य और
 उच्छगोत्रक मिष्यादृष्टि प सासपममम्यगदृष्टिपोंम सात्तर बन्ध होता है। असंनदसम्यगदृष्टि
 पोंम निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां उन्मथ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है।
 [मनुप्यगति] और मनुप्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विक मिष्यादृष्टि न सासपममम्यगदृष्टि
 शुभस्यानोम सात्तर-निरन्तर बन्ध होता है।

श्रुत्य—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान— नहीं क्योंकि आनतादिक बन्धमेंसे मनुप्योंम इत्यत्र हुए
 जीवोंके विप्रहगतिमें मनुप्यगतिद्विकक निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

असंनदसम्यगदृष्टिपोंम निरन्तर बन्ध होता है 'क्योंकि विप्रहगतिमें मनुप्यद्विकके
 बन्धके योग्य सम्यगदृष्टिपोंके बन्ध वा गतिपोंक बन्धका अभाव है। पंचविप्रपत्रप्रति
 भीकारिकद्वीरंगोपांग वस मादर, पर्याप्त परपात उच्छवास और प्रत्येकद्वीरक
 बन्ध मिष्यादृष्टिपोंम सात्तर निरन्तर होता है।

श्रुत्य—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सगकुमारादि देव न नादिकोंमेंसे तिरिबों न

णिदाणिदा-पयलापयला थीणगिद्धि-अणताणुवधिकोध-माण-
माया-लोभ-इत्यिवेद तिरिक्खगइ-चउसठाण-चउसघट्टण' तिरिक्खगइ-
पाओग्गाणुपुव्वि-उज्जोव-अप्पमत्यविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज
णीचागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ १६१ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी वधा । एदे वधा, अवमेसा
अवधा ॥ १६२ ॥

एदस्मरणे बु-चदे—अणताणुवधिकउत्तिक्रियेवेट्ठाण संबोदया सम बोम्भिण्णा,
सामणसम्मादिट्ठिहि तदुमयामावदमणादो । एवमणपयइजी अणिय वत्तन्व ।

थीणगिद्धितिय-चउसठाण-चउसघट्टण-उज्जोव-अप्पसत्त्वविहायगइ-दुस्सराण परोदयो
वधो, विग्गहगदीए एदामिसुदयामत्वादो । अणताणुवधिकउत्तिक्रियेवेट्ठाण-तिरिक्खगइ
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाण सोदय-परोदयो वधो, एदामिमेव

निगानिद्रा, प्रसन्नप्रसन्न, स्थानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ,
श्रीवेद, नियगति, चार सम्मान, चार संहनन, नियगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत,
अप्रशन्नविहायोगति, दुभग, दुस्तर, अनादेय और नीचगोत्रक केन बन्धक और केन
बन्धक है ? ॥ १६१ ॥

यह सब सुगम है ।

मिप्पाएटि और मासादनमम्यगटि बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष अमन्धक
हैं ॥ १६२ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहत हैं—अनन्तानुबन्धिबन्धुज्ज और श्रीवेदका बन्ध य उद्य
शानों साथमें ध्युच्छिद्य हात हैं क्योंकि, मासादनमम्यगटि गुणस्थानमें उन शानोंका
अभाव इत्यादि जाता है । इसी प्रकार अन्य प्रकृतियोंका पूव या पश्चात् इतिवृत्त्यादि बन्ध य
उद्यका ध्युच्छिद्य जानकर कहना चाहिये ।

स्थानगृद्धिप्रसन्न चार संस्थान चार संहनन उद्योत अप्रशन्नविहायोगति और
दुस्तरका परोदय बन्ध होता है क्योंकि निद्राहगतिमें इनका उद्यका अभाव है ।
अनन्तानुबन्धिबन्धुज्ज, श्रीवेद नियगति नियगतिप्रायोग्यानुपूर्वी दुभग अनादय
और नीचगोत्र इनका स्वादय-परोदय बन्ध होता है क्योंकि यहाँ इनका उद्यका

मनुसगाइपाओम्माणुपुव्वीओ सधे मनुसगाइसंतुतं वषति, सामाविमादो । ओरात्थिसरीर ओरात्थिसरीरवंगोवंग-वन्मरिसहसंपड्ढाणि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिओ तिरिक्ख-मनुस-गाइसंतुतं, असंजदसम्मादिट्ठिओ मनुसगाइसंतुतं वषति, एदासिमण्णमईहि सह निरोद्धो । उप्पागोद मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिओ मनुसगाइसंतुतमदेसिमप-वत्तकत्त उप्पागोदा-विणामाविदिवगई वषामात्तादो । असंजदसम्मादिट्ठिओ देव-मनुसगाइसंतुतं वषति, तस्स मयत्त वषसंमवदसपादो ।

मनुसगाइ-मनुसगाइपाओम्माणुपुव्वी-ओरात्थिसरीर-ओरात्थिसरीरवंगोवंग-वन्मरिसह-संपड्ढाणि वत्तगाइमिच्छादिट्ठि-तिगइसासणसम्माइट्ठि-देवपेरइयमसंजदसम्माइट्ठिओ सामी । वषसेसायं पयडीणं वत्तयइमिच्छाइट्ठि असंजदसम्माइट्ठिओ तिगइसासणसम्माइट्ठिओ व सामी । वषदायं सुमम । एदेसिमत्त वषविमासो पत्थि । पंचाणावरणीय-सुदंसणावरणीय-वारस कसाय-मय-बुगुं-तेजा-कम्मइयसरीर-वणवत्तक-अगुरुमत्तुन-उवपाद-णिमिप-पंचतरा-पालं मिच्छाइट्ठिहि वत्तमिहो वषो । जणत्तव तिविहो, धुववचामावादो । वषसेसाय पयडीणं वषो सधत्त सदि-मदुओ, मदुववत्तदो ।

हे । मनुष्यगति और मनुष्यगतिमायोग्यानुपूर्वीके सब मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि, देसा स्वामाधिक है । औदारिकशरीर औदारिकशरीरगोपाय और वज्रपर्मसंहमनके मिथ्यादृष्टि और साक्षात्तसम्पददृष्टि तिर्यमाति व मनुष्यगतिसे संयुक्त तथा असंपत्त सम्पददृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि इनका वण्य गतियोंके साथ बिरोध है । उच्छवगोत्रके मिथ्यादृष्टि और साक्षात्तसम्पददृष्टि मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं, क्योंकि, इनके अपर्वात्तकालमें उच्छवगोत्रकी अधिमामाधिनी देवगतिसे वण्यका समाव है । असंपत्तसम्पददृष्टि देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि, उच्छवगोत्रके वण्यकी सम्मावना उक्त दोनों गतियोंके साथ देखी जाती है ।

मनुष्यगति मनुष्यगतिमायोग्यानुपूर्वी औदारिकशरीर, औदारिकशरीरगोपाय और वज्रपर्मसंहमनके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, तीन गतियोंके सामाहिनसम्पददृष्टि, तथा देव व मारकी असंपत्तसम्पददृष्टि स्वामी हैं । दोष प्रकृतियोंके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि व असंपत्तसम्पददृष्टि, तथा तीन गतियोंके साक्षात्तसम्पददृष्टि स्वामी हैं । वण्यप्राय सुगम है । इनका यहाँ वण्यविवादा नहीं है ।

पांच ज्ञानावरणीय छह वर्णावरणीय बारह कपाय भय जुगुप्सा वैजस व कार्यव शरीर, वर्णादिक बार, अगुरुबुध, उपघात निर्माज और पांच मन्तराधका मिथ्यादृष्टि शुद्धस्थानमें चारों प्रकारका वण्य होता है । जन्म व तीन प्रकारका वण्य होता है क्योंकि, यहाँ जुववण्यका समाव है । दोष प्रकृतियोंका वण्य सर्वत्र माति व अशुद्ध होता है, क्योंकि, वे अशुद्धवन्नी हैं ।

णिदाणिद्वा पयलापयला-थीणगिद्धि-अणताणुवधिकोध-माण-
माया लोभ-इत्थिवेद तिरिक्खगइ-चउसठाण-चउमघडण' तिरिक्खगइ-
पाओग्गाणुपुत्थि-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अणादेज्ज
णीचागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ १६१ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी वधा । एदे वधा, अवमेसा
अवधा ॥ १६२ ॥

एदस्सत्थो सुच्चदे—अणताणुवधिकउत्थिवेदाण पधोदया समं बोच्छिण्णा,
सासणसम्मादिट्ठिहि तदुभयामावर्दसणादो । एवमप्पपयडीणं जाणिय वत्थम् ।

वीणगिद्धिनिय-चउसठाण-चउमघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सरणं परोदओ
पधो, विमाइगदीए एदासिमुदयामावादो । अणताणुवधिकउत्थिवेद-तिरिक्खगइ
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुत्थि-दुमग-अणादेज्ज-णीचागोदाणं सोदय-परोदओ पधो, एदासिमग्घ

निद्रानिद्रा, प्रचलप्रचल, स्नानशुद्धि, अनन्तातुङ्गधी श्रेष्ठ, मान, माया, लोभ,
अभिद, निर्धगति, चार सत्थान, चार सहनन, त्रियगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उघोत,
अप्रसत्थविहाययोगनि, दुमग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्रक कैन वन्नक और कैन
अवन्धक है ? ॥ १६१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिप्पाघट्ट और सासादनमग्घघट्टि पाचक है । ये पाचक है, शेष अपचक
है ॥ १६२ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहत है—अणतानुवधिकउत्थिवेदाण पधोदया समं य उदय
दानों मायमें स्पुच्छिण्ण हति है क्योंकि, सामान्यमग्घघट्टि शुभम्यानिमें उन दानोंका
अमाय वरता जाता है । इसी प्रकार अग्घ मरुतिषोक्क पूव या पध्यान् दानेदामा अग्घ व
उदयध स्पुच्छिण्ण जानकर कहना चाहिय ।

स्नानशुद्धिच चार संख्यास चार संदमन उपास अमशान्नादिहाषागानि और
दुस्सरका परोदय अग्घ होता है क्योंकि त्रियगतिमें इनका उदयका अमाय है ।
अमशान्नादिहाषागानि, निर्धगति त्रियगतिप्रायोग्यानुपूर्वी दुमग अनादय
आर नीचगात्र इनका स्वादय-परादय अग्घ होता है क्योंकि यही इनका उदयक

उद्यमियमात्रादो । धीमतिदितिय-अनंताशुर्बधिरककाज निरंतरो बंधो, पुनर्बधिरादो ।
तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाभोमाणुपुष्पी-धीचागोदाण मिच्छइहिंदि सन्तर-निरतरो बंधो । कर्षं
निरतरो ? सतमपुद्धविपरइइहिंतो तेठ-वाठककइइहिंतो च कयविग्गइण निरतरबधंसपादो ।
सासजसम्माइहिंदि सन्तरो, तपो विधिगयसासजसम्माइइण समबामावादो । अबसेसाणं
पयडीयं सज्जत्य सन्तरो बंधो, अणियमेण पंपुवरमंसपादो । पच्चया सुग्गमा । तिरिक्खगइ
तिरिक्खगइपाभोमाणुपुष्पी-उज्जेवाणि तिरिक्खगइसत्तुसमवसेसाजो पयडीजो तिरिक्ख
मत्तुसमइसत्तुयं बंधति । षट्ठगइमिच्छइइहिं तिग्गसासजसम्माइहिंनो च सामी । बंधइण
बधविणइहाण च सुगमं । धीमतिदितिय मर्गताशुर्बधिरककाजं मिच्छइहिंदि षट्ठमिदो
बधो । सासजे इविदो, जपाइ-धुवामावादो । अबसेसाणं पयडीयं सज्जत्य बंधो सारि
भदुदो ।

सादावेदणीयस्स को बधो को अयंधो ? ॥ १६३ ॥

सुममं ।

नियमक्य जमाय है । सत्यानपुष्टिबध और अनन्ताशुर्बधिरककाज निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, ये भुवबन्धी हैं । तिर्यग्गति तिर्यग्गतिपाभोण्यानुपूर्वी और धीचगोदक मिच्छादृष्टि गुणस्यात्ममें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

ईक्य—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि सत्यम पुष्टिबधे वाटकियों और तेजकायिक व वायुकायिकों मेंसे विमहक्य करनेवाळ जीवोंके निरन्तर बन्ध देखा जाता है

सासात्मसम्पदृष्टि गुणस्यात्ममें इनका सान्तर बन्ध होता है क्योंकि जहाँसे निकले हुए सासात्मसम्पदृष्टिबोली सम्मावना नहीं है । होय प्रकृतिबोळ सर्वत्र सान्तर बन्ध होता है क्योंकि अल्पिमसे उभय बन्धविधाय देखा जाता है । प्रत्यय सुगम है ।

तिर्यग्गति तिर्यग्गतिपाभोण्यानुपूर्वी और बधोतये तिर्यग्गतिये सज्जक, तथा होय प्रकृतिबोळ तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संजुक्त बांधते हैं । चारों गतिबोळ मिच्छादृष्टि और तीन गतिबोळ सासात्मसम्पदृष्टि स्वासी हैं । बन्धाभ्यास और बन्धविनष्टस्याव सुपम है । सत्यानपुष्टिबध और अनन्ताशुर्बधिरककाज मिच्छादृष्टि गुणस्यात्ममें चारों प्रकारक्य बन्ध होता है । सासात्म गुणस्यात्ममें दो प्रकारक्य बन्ध होता है, क्योंकि, बहो जमाय व हुए बन्धक्य जमाय है । होय प्रकृतिबोळ सर्वत्र सादि व जजुब बन्ध होता है ।

सादावेदनीयक्य कौन बन्धक्य और कौन अबन्धक्य है ? ॥ १६३ ॥

बह सज सुगम है ।

मिच्छाद्विती सामणसम्माद्विती असजदमम्माद्विती सजोगिकेवली
वधा । एदे वधा, अवधा णत्थि ॥ १६४ ॥

साद्वेदपीयम्प पधो उदओ वा पुव्व बोच्छिण्णो किं पच्छ बोच्छिण्णो ति एत्थ
परिक्खा णत्थि, तदुमपबोच्छेदमात्रादो । सोदय-परोदओ पधो, अद्वोदयसादो । सजोगि
केवल्लिन्दि भित्ता पधो, पडिवस्सुपपहीए पधामात्रादो । अण्णन्व सोत्ते । पच्छया सुगमा ।
एत्थरि सजोगिकेवल्लिन्दि कम्मइयकायजोगपच्छओ एक्के चेव । मिच्छाद्वि-सासणसम्मा
द्विण्णो तिरिक्ख-मनुमगइमदुत्त असजदसम्माद्विण्णो इव-मनुमगइसंजुत्त वधति । समण
केवली भगइमदुत्त । चउगइमिच्छाद्वि-अमंजदसम्माद्विण्णो विगइसासणसम्माद्विण्णो
मनुमगइमजागिकेवल्लिण्णो च सामी । पधद्वान सुगम । एत्थ वधोच्छेदो णत्थि । सादि
अद्वो पधो, परियत्तमाणपधो ।

मिच्छत्त णवुसयवेद-चउजात्ति हुडमठाण असपत्तमेवद्वमघट्टण-
आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाण को वधो को
अयधो ? ॥ १६५ ॥

मिप्पाट्टि, मामादनसम्पगट्टि, अमंयत्तमम्पगट्टि और-सयोगिकेवली-अन्धक ई । य
अन्धक ई, अयधक नहीं ई ॥ १६४ ॥

सातापदनीयका बन्ध अयथा उदय पूर्वमे व्युच्छिन्न होता है या क्या पश्चात्
व्युच्छिन्न होता है इसकी यहाँ परीक्षा नहीं है क्योंकि उन दोनों व्युच्छिन्नका यहाँ
अभाव है । स्वात्म्य परात्म्य बन्ध होता है क्योंकि यह अनुबाधपी प्रवृत्ति है । सत्याग
कर्मणी गुणस्थानमें निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ गतिपक्ष प्रवृत्तिक बन्धका अभाव
है । अन्यत्र स्वात्म्य बन्ध होता है । प्रत्यय सुगम है । बिना इतना है कि सयोगिकेवली
गुणस्थानमें एक ही कर्मण्यवस्था प्रत्यय है । मिप्पाट्टि-य स्वात्म्यनसम्पगट्टि
नियगति य मनुष्यगतिमें संयुक्त तथा अस्वयत्तमम्पगट्टि रूप य मनुष्य गतिमें संयुक्त
वांचन है । सत्यागकर्मणी गतिस्वयत्तम रहित वांचन है । धारो गतिबोध मिप्पाट्टि-य
अस्वयत्तमम्पगट्टि, तीन गतियोंका स्वात्म्यनसम्पगट्टि तथा मनुष्यगतिनि सत्यागकर्मणी
स्वामी है । वगधात्तान सुगम है । यहाँ वगधव्युच्छिन्न नहीं है । सादि य अयध बन्ध-होता
है क्योंकि उसका बन्ध परिचयनशील है ।

मिप्पात्त, मनुष्यवेद, धार जानियां, हुण्डसंस्थान, अस्वयत्तमपात्रिकसंस्थान,
अनाप, स्थावर, सूक्ष्म, अपवाय और साधारणप्रति नामकमस केन वधक व केन
अवधक है ? ॥ १६५ ॥

उदयस्त्रियमाभावाद्दे । भीमगिदितिय अर्जुनापुत्रं चित्तकर्म चिरंतरो बंधो, ध्रुवबंधित्वाद्दे । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपात्रोम्माणुपुब्बी-थीचगोदानं मिष्मइद्विम्हि सत्तर-चिरंतरो बंधो । कप चिरंतरो ? सत्तमपुब्बविणेरइएद्वितो तेउ-वाठन्कइएद्वितो च कपविम्माहाण चित्तरबंधं सत्तमद्दे । सत्तवसम्माइद्विम्हि सत्तरे, तत्ते विणिग्गयसासणसम्माइद्वीज संमवामावाद्दे । अवसेसारं पयडीयं सम्बरं सत्तरे बंधो, अविपमेजं अनुवरमर्दसम्माद्दे । पणपया सुगमा । तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपात्रोम्माणुपुब्बी-उन्नेवापि तिरिक्खगइसत्तमवसेसामो पयडीयं तिरिक्ख मनुसाइसत्तं बंधंति । चठगइमिष्मइद्वी तिगइसासणसम्माइद्विम्हि च सत्ती । बंधयाण बंधविणद्वहाणं च सुगमं । भीमगिदितिय अर्जुनापुत्रं चित्तकर्म मिष्मइद्विम्हि चठव्दिद्दे बंधो । सत्तये द्रुविद्दे, अभाइ-सुवामावाद्दे । अवसेसारं पयडीयं सम्बरं बंधो सत्ति बद्धो ।

साक्षादेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ १६३ ॥

सुगमं ।

विषयस्य अभावः है । स्वात्मपुद्गलश्च और अजगत्पुद्गलश्चानुपुद्गलका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, ये सुवचन्धी है । तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्रायोप्यानुपूर्वी और जीवयोपेक्ष मिथ्याइदि गुणस्थानमें सत्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

संक्षेप—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, सत्तम पृथिवीके गतिकों और तेजकापिक व वायुकापिकों मेंसे विमहको करयेबाछ जीवोंके निरन्तर बन्ध होता जाता है

साक्षात्तनसम्पगइदि गुणस्थानमें हमका सत्तर बन्ध होता है क्योंकि वहांसे बिकछे हुए साक्षात्तनसम्पगइदियेकी सम्भावना नहीं है । दोष प्रकृतियोंका सर्वत्र सत्तर बन्ध होता है, क्योंकि अविषयसं उक्त बन्धविधायक होता जाता है । प्रत्यय सुगम है ।

तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्रायोप्यानुपूर्वी और बधोतको तिर्यग्गतिसे संपुक्त, तथा दोष प्रकृतियोंके तिर्यग्गति व अनुपपत्तिसे संपुक्त बांधते हैं । चारों गतियोंके मिथ्याइदि और तीन गतियोंके साक्षात्तनसम्पगइदि स्वामी है । बन्धाभ्याम और बन्धविनष्टत्वात् सुगम है । स्वात्मपुद्गलश्च और अजगत्पुद्गलश्चानुपुद्गलका मिथ्याइदि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । साक्षात्तन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहां अजगत् व द्रुव बन्धका अभाव है । दोष प्रकृतियोंका सर्वत्र धादि व अद्रुव बन्ध होता है ।

साक्षादेदनीयस्य केन कन्धक नौर केन अवन्धक है ? ॥ १६३ ॥

यह सब सुगम है ।

आदाव-धातराणं निगडमिच्छादृष्टी सामी, गिरयगडमिच्छादृष्टिम्हि तासिं वधामाशरो । श्रीन्द्रिय
तीन्द्रिय चउरिन्द्रिय-मुग्ध अपग्धत्त-माहारणाणे निगिष्ठ मजुमगडमिच्छादृष्टी सामी, देव-गेरह
एसु प्दासिं वधामावादा । वधदाण पवधिपट्टकाणं न सुगमं । मिच्छत्तम्सु वधो चठम्हिहो ।
ममार्णं सादि अद्धवा ।

देवगह-वेउत्रियमरीर-वेउत्रियसरीरगोवग देवगहपाओग्गाणु-
पुन्वि-तित्ययरणामाण को वधो को अवधो ? ॥ १६७ ॥

सुगमं ।

असजदमम्मादिष्टी वधा । एदे वधा, अवेससा अवधा ॥ १६८ ॥

किं वधो पुण्यं पच्छा वा वोष्ठिगो वि पग्ध विचारो जत्थि, एकस्मिन् तदसंमवाधो ।
पदासिं पचण्डं पि परोग्धा वधो, मोदण मह मगनंघम्म विरोहादो । गिरतो वधो,
जियमेजाणममपधंमंमणा । विगहगदीण दोण्ड ममयाण रुधमगेववणमो ? न, गग
मोत्तुवुरियमपमंराण अगेमरपपुत्तीदो । पचया सुगमा । गवरी मजुमयवेदपक्वओ

विगय नही ह । एकस्मिन्त्रय मज्जाय भीर क्थायर प्रट्ठित्योक्क नीन गनियोक्क मिच्छादृष्टि
व्यामी हि वयोकि मग्धगतिमे मिच्छादृष्टि गुणव्यानम उनक्क पन्धक्क ममाय है । द्वीन्द्रिय
त्रीन्द्रिय चउरिन्द्रिय मूदम भवपान भार साधारण प्रट्ठित्योक्क निर्गमति य मजुप्य
गतिक्क मिच्छादृष्टि व्यामी हि वयोकि द्वय य मारक्योमे इनक्क पग्धक्क ममाय है ।
वग्धापान भीर वग्धवित्तपुग्धाव सुगम है । मिच्छावग्धा वग्ध वारो प्रकारका हाता है ।
दाय प्रट्ठित्योक्क सादि य गधुन वग्ध हाता है ।

देवगति, वैकियिकअगी, वैकियिक्कागीरंगोपांग देवगतिप्रापाग्यानुपूर्वी भीर तीर्थकर
नामरुमरु कीन पन्धक्क और वरन अपन्धक्क ह ? ॥ १६७ ॥

यह नृप सुगम है ।

ममयनमपग्धटि वन्धक्क है । य वन्धक्क ह, गेय मपन्धक्क है ॥ १६८ ॥

यवा वग्ध उदयन पृथम वा पथात् प्पुच्छिअ हाता है यह विचार यही नहीं है
वयोकि एक गुणव्यानमे उनक्क विद्या सम्मय नहीं है । इन वयोकि प्रट्ठित्योक्क परादय वग्ध
होता है वयोकि इनक्क मज्ज उदयक्क गाय वग्ध इनक्क विद्या है । निग्मर वग्ध हाता है
वयोकि, निवमम इनक्क इनक्क ममय लक्क वग्ध वरन हाता ह ।

गुंरु—विग्रहगतिमे वा ममयाक्क नाम मज्ज ममय केम हा मक्का ह ?

ममापान—नहीं वयोकि एकका छादका ऊपरकी यह मंतयामे मज्ज
दाग्धा मयूति ह ।

ममय सुगम है । गिरन इनमा ह कि यही मजुमयवेद प्रपय नहीं है वयोकि

सुगमं ।

मिच्छाद्दृष्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १६६ ॥

एस्य पुन्यं पञ्च वा ऋषो वोष्णिज्यो^१ सि विचारो जसि, एतत्पुन्यवृत्तमि तद् संमवाधो । मिच्छत्स्य सोदभो ऋषो, अण्णद्वा ऋषाभुवर्तमाधो । अतुंसयवेद-चतुर्वादि-बावर सुहुम-अपन्वत्तजामाण ऋषो सोदय-परोदभो, विम्बद्वयदीए उदयजियमामावाधो । हुण्डस्य अतंसपत्तेवत्सपडण-आदाव-साहस्रजसरिजामाण परोदभो ऋषो, विगाहगदीए गियमेजिह्मि उदयामावाधो । मिच्छत्स्य ऋषो विरतो । अरसेसाण पयझिण सांतरो, जिययेज एगसमय वेधदंसजाधो । पञ्चया सुगमा । मिच्छत्स-अतुंसयवेद-हुण्डस्य अतंसपत्तेवत्सपडण-अपन्वत्तज तिरिक्ख मकुसगइसंस्तुतो, चटुजदि-आदाव-बावर-सुहुम-साहारणां तिरिक्खगइसंस्तुतो ऋषा, अण्णगइहि सह एरासिं वेधविरोहाधो । मिच्छत्स-अतुंसयवेद-हुण्डस्य अतंसपत्तेवत्सपडण-अतंसपत्तेवत्सपडणां चतुर्वादिमिच्छाद्दृष्टी सामी, चतुर्वात्तदण सह एरासिं वेधस्स विरोहामावाधो । एइदिय-

पह सुव सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष बन्धक हैं ॥ १६६ ॥

वहाँ उदयसे पूर्वमें अथवा पीछे बन्ध व्युत्पिठ्य होता है यह विचार नहीं है क्योंकि एक गुणस्थानमें वह सम्मत् ही नहीं है । मिथ्यात्वका स्वरूप बन्ध होता है, क्योंकि, अपन उदयके बिना इसका बन्ध पापा नहीं जाता । अतुंसकवेद चार आतियां स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्त नामकर्मका बन्ध स्वरूप परोक्ष होता है क्योंकि विमलगतिमें इनके उदयका नियम नहीं है । हुण्डस्यस्थान अतंसपत्तिसूपादिकसंहनन आताप और साधारणघटीर नामकर्मका परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि, विमलगतिमें नियमसे इनका उदयका अभाव है ।

मिथ्यात्वका बन्ध निरन्तर होता है । शेष प्रकृतियोंका सन्तर बन्ध होता है क्योंकि, उनका नियमसे एक समय बन्ध देखा जाता है । प्रत्यय सुगम हैं । मिथ्यात्व अतुंसकवेद हुण्डसंस्थान अतंसपत्तिसूपादिकसंहनन और अपर्याप्तक सिर्यगति व अनुप्यगतिसे संयुक्त तथा चार आतियां आताप स्थावर, सूक्ष्म और साधारणक सिर्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि अन्य गतियोंके साथ इनके बन्धका विरोध है । मिथ्यात्व अतुंसकवेद हुण्डसंस्थान और अतंसपत्तिसूपादिकसंहननके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि सामी हैं क्योंकि चारों गतियोंके उदयके साथ इनका बन्धका

इत्थिवेदस्म ताव ह्युच्यते— एतत् उदयादा शेषो पुन्यं पञ्च वा योच्छिण्यो ति विचारो ऽपि, पुरिषवेदस्म एतत्तेजुदयामावादे सेषाणं च पयसीणं बभौदयवोच्छेदामावादे ।

पंचपात्रावरणीय-चउदयसनावरणीय-पंचतराव्याणं च सोदयो बभौ, ध्रुवोदयवादे । पुरिषवेदस्म परोदयो बभौ, इत्थिवेदे उदिष्यं पुरिषवेदस्सुदयामावादे । सादावेदपीय चदुसंजठणां सोदय-परोदयो बभौ, उदयण परावचनपयडितादे । असक्तिपीप मिष्यइद्वि ष्यहुडि जाव अमज्जसम्मापिडि ति सोदय-परोदयो, एदेसु पडिपस्सुदयसंमवादे । उवरी सोदयो शेष, पडिपस्सुदयपीप उदयामावादे । उन्मागोदस्म मिष्याइद्विष्यहुडि जाव संजठामज्जदा ति बभौ सोदय-परोदयो, एतेसु पीषागोदुदयसंमवादे । उवरी सोदयो शेष, पीषागोदस्सुदयामावादे ।

पंचपात्रावरणीय चउदयसनावरणीय-चउमज्जठम-पंचतराव्याण निरंतरो बभौ, ध्रुवबंशि छादे । सादावेदपीय वमक्तिपीप मिष्याइद्विष्यहुडि जाव पमत्तमज्जदे ति सारंतरो बभौ, पडिपस्सुदयपीप संजुषठमादे । उवरी निरंतरो, विष्यडिपस्सुदयादे । पुरिषवेदुन्मागोदयादे

पहम मंत्रेदेईके विषयमें कहते हैं— यहाँ उदयसे बग्य पूर्वमें या पश्चात् प्लुच्छिष्य होता है यह विचार नहीं है क्योंकि नियमम यहाँ पुरुषपदक उदयक्य अभाष है तथा नाय प्रकृतियोंके बग्य भीर उदयक प्लुच्छिष्यका अभाव है ।

पंच पात्रावरणीय चार द्वातावरणीय भीर पांच अमरायक्य स्वादय बग्य होता है क्योंकि ये प्रयादयी हैं । पुण्यपदक्य परादय बग्य होता है क्योंकि, स्वीपदक्य उदय दामेपर पुण्यपदके उदयक्य अभाष है । सादावेदपीय भीर चार संजठमक्य स्वादय परादय बग्य होता है क्योंकि उदयकी अपक्षा ये प्रकृतियों पंचिमेनशील हैं । यशस्वीनिष्ठा मिष्याइद्विष्य अक्षर संमपतामज्जदाइतक स्वादय परोदय बग्य होता है क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें उत्तरी प्रतिपत्त प्रकृतिका उदय सम्मप है । उपरिम गुणस्थानोंमें उत्तका स्वादय ही बग्य होता है क्योंकि, यहाँ प्रतिपत्त प्रकृतिक उदयक्य अभाव है । उच्छगावक्य मिष्याइद्विष्य अक्षर संपतासंयत गुणस्थान तक स्वादय-परोदय बग्य होता है क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें मीषगावका उदय सम्मप है । संयतासंयतस ऊपर स्वादय ही बग्य होता है क्योंकि यहाँ मीषगावक उदयका अभाव है ।

पांच पात्रावरणीय चार द्वातावरणीय चार अमरायक्य भीर पांच अमरायक्य निरंतर बग्य होता है क्योंकि ये प्रयादयी हैं । मातावरणीय भीर यशस्वीनिष्ठा मिष्या इद्विष्य मेव प्रमत्तमेयत तक माता बग्य होता है क्योंकि, यहाँ उत्तरी प्रतिपत्त प्रकृतियोंका बग्य पाया जाता है । ऊपर उत्तका निरंतर बग्य होता है क्योंकि यहाँ इनका बग्य प्रतिपत्त प्रकृतियोंके बग्यम रहित है । पुण्यपद भीर उच्छगावक्य मिष्याइद्वि एवे

असि, विगाहगरीय बद्धमानपेरूपसंभरसम्मादिष्टीसु वेउभियचउककस्स बंधामावाधो । तित्थपरस्स पुण त चेव तेत्तीस पचपा, तस्य षडुंसयवेदपचपदमावाधो । वेउभियचउककस्स देवगाइसंहुत्थो, तित्थपरस्स देव-मज्झिमागसंहुत्थो बंधो । वेउभियचउककस्स तिरिक्ख मज्झिममज्झसम्मादिष्टी सामी । तित्थपरस्स तिगाइसंभरसम्मादिष्टी सामी, तिरिक्खगाइमं जदसम्मादिष्टीसु तित्थपरबंधामावाधो । बंधद्वान पचपाच्छरद्वान च सुगमं । । पदार्थि पचा सादि भद्वो, धुवबंधिचामावाधो ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद पुरिसवेद णवुसयवेदएसु पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय-सादावेदणीय-चदुसजलण पुरिसवेद जमकित्ति उच्चा-
गोद-पंचंतराहयाण को बंधो को अवंधो ? ॥ १६९ ॥

सुगमं ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुट्ठि जाव अणियट्ठिउवसमा खवा बधा । एदे
बधा, अवधा णत्थि ॥ १७० ॥

विमहागतिम वनमान मारजी असंयतसम्पदद्विष्योमं बैकिपिकचतुष्कक बन्धक अमाय ह । डिप्पु तीर्थकर प्रहृत्तिके ब ही तेत्तीस प्रपथ ह अपोकि, हममें नर्तुमकच प्रपथ जाता जाता है । बैकिपिकचतुष्कक देवगतिम संपुक्त और तीर्थकर प्रहृत्तिका देव एवं मनुष्य गतिसे संपुक्त बन्ध होता है । बैकिपिकचतुष्कक बन्धक नियोज य मनुष्य असंयतसम्पदद्विष्योमं सामी है । तीर्थकर प्रहृत्तिक ताल गतिषोक्त असंयतसम्पदद्विष्योमं है अपाकि तिर्यगगतिम असंयतसम्पदद्विष्योमं तीर्थकरक बन्धका अमाय है । बन्धारण्य और बन्ध प्युच्छित्तिरूपान सुगम है । इनका बन्ध सादि और प्रपथ होता ह अपोकि य अवधणी मही है ।

वेदमार्गजानुमार आग्नेयी, पुरुषरी और नर्तुमकचद्विष्योमं पांच ज्ञानावरणीय, चार दृष्टानावरणीय मानानरणीय चार संयजन, पुरुषवेद, यष्टीर्त्ति, उच्छगोत्र और पांच अन्तरप, इनका कौन बंधक और कौन अवंधक है ? ॥ १६९ ॥

यह सब सुगम है ।

मिष्याद्विष्योम तैर अनिशुत्तिकण उपमरु भार धारु तक बंधक है । ये बंधक है, अवंधक नहीं है ॥ १७० ॥

इत्थिवेदस्स ताव तुम्हरे— एत्थ उदयादो षो पृथ्वं पञ्च वा वोष्मिण्यो सि विचारो परिध, पुरिसवेदस्स एवतेणुदयामावादो सेसार्थं च पयडीर्णं षोदयवोष्मेदामावादो ।

पंचपात्रावरणीय चतुर्दशपात्रणीय-चतुर्दशपात्राण च सोदजो षो, पुषोदयचादो । पुरिसवेदस्स परोदजो षो, इत्थिवेदे उदिग्णे पुरिसवेदस्सुदयामावादो । सादावेदणीय चतुर्दशपात्राण सोदय-परोदजो षो, उदएण पण्यत्तणपयडिचादो । जसकिचीए मिच्छाद्विप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिद्वि सि सोदय-परोदजो, एदेसु पडिवक्खुदयसंमवादो । उवरि सोदजो चैव, पडिवक्खपयडीए उदयामावादो । उच्चगोदस्स मिच्छाद्विप्पहुडि जाव सज्जदासज्जदा सि षो सोदय-परोदजो, एदेसु पीचागोदुदयसंमवादो । उवरि सोदजो चैव, पीचागोदस्सुदयामावादो ।

पंचपात्रावरणीय चतुर्दशपात्रणीय-चतुर्दशपात्राण गिरतरो षो, पुषोदयचादो । सादावदणीय जसकिचीण मिच्छाद्विप्पहुडि जाव पमसमज्जो सि सांतरो षो, पडिवक्खपयडीए चतुर्दशपात्राण । उवरि गिरतरो, पिप्पडिवक्खचादो । पुरिसवेदुच्चगोदाण

—

पहले लीयेरके विषयमें कहते हैं— यहाँ उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युत्पिच्छ होता है यह विचार नहीं है क्योंकि, नियमसे यहाँ पुण्यवेदक उदयका अभाव है तथा शेष प्रकृतियोंके बन्ध और उदयक व्युत्पिच्छका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार दशपात्रावरणीय और पांच अन्तरायक स्वादय बन्ध होता है, क्योंकि ये प्रुपात्रणी हैं । पुदयबन्धका परोदय बन्ध होता है क्योंकि, लीयेरका उदय होनेपर पुदयवेदके उदयका अभाव है । सादावेदणीय और चार अन्धसन्धका स्वादय परोदय बन्ध होता है क्योंकि उदयकी अपेक्षा ये प्रकृतियाँ परिवर्तनशील हैं । यशस्वीतिका मिथ्याद्विप्प संकर संसृतासंयत तक स्वादय परोदय बन्ध होता है क्योंकि इन गुणस्थानोंमें उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिक उदय सम्भव है । अतएव गुणस्थानोंमें उसका स्वादय ही बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिक उदयका अभाव है । उच्चगोदका मिथ्याद्विप्प संकर संसृतासंयत गुणस्थान तक स्वादय-परोदय बन्ध होता है क्योंकि इन गुणस्थानोंमें नीचगोदका उदय सम्भव है । संसृतासंयतसे ऊपर स्वादय ही बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ नीचगोदक उदयका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार दशपात्रावरणीय चार अन्धसन्ध और पांच अन्तरायक निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि ये प्रुपात्रणी हैं । ज्ञानावरणीय और यशस्वीतिका मिथ्या द्विप्प संकर अमसंयत तक सात्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । ऊपर उसका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि वहाँ इनका बन्ध प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है । पुदयवेद और उच्चगोदका मिथ्याद्वि एवं

मिथ्यादिद्वि-सासणसम्मादिद्वीसु सान्तर-विरतरो वषो । कथं विरतरो ? न, पम्-सुषुप्तेस्तिपसु तिरिक्त्स-मनुस्सेसु पुरिसवेदुच्चागोशणं विरतरवेषुवत्तमादो । उवरि विरतरो, पडिक्त्स पयदीमं वेषामावादो ।

सम्बगुणज्ञानभावोपपञ्चपसु पुरिस-पुत्रसयवदसु अवर्णदिसु अवससा एव परासि पञ्चया ह्येति । नवरि पमत्तसत्रेदसु आहार-आहारमिस्सकयजोगपञ्चया अवपेद्व्या, इत्थिवेदोद्वत्त्प तदसंभवादो । असबदसम्मादिद्वीसु ओरालिय-वेठवियमिस्स-कम्माइयकय-जोगपञ्चया अवपेद्व्या, तत्र असंजइसम्मादिद्वीपमप-जत्तकत्त्वमावादो । सस सुगमं ।

पंचपञ्चावरणीय-चठदमआवरणीय-चहुसंजठक-पंचतण्ड्यायं मिथ्याद्वी चउगइ समुत्त । सासणसम्माद्वी तिगइसमुत्त, पिरयगईए अभावादो । सम्मामि अविद्वि-असंजइसम्मा दिद्विओ वेध-मनुसगइसमुत्त । उवरिमा देवगइसंजुपं अगइसंजुत्त च वषति । सादावदवीच पुरिसवेद जसकिदीओ मिथ्यादिद्वि-सासणसम्मादिद्विओ तिगइसमुत्त, सम्मामिथ्यादिद्वि-असंजइ

सासादनसम्पगद्वि गुणस्यामोमं सास्तर-निरम्तर बन्ध होता है ।

शुक्र — निरम्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—सही क्योंकि पद्म और शुक्र भेदभावके तिरिक् व मनुष्योंमें पुरुषके और उच्छगोवका निरम्तर बंध पाया जाता है ।

ऊपर उक्त निरम्तर बन्ध होता है क्योंकि, वही प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धन समान है ।

सब गुणस्यामोके औपम्ययामें पुरुषवद् भार मनुष्यवद्भयो कम करनेपर शेष यही इन प्रकृतियोंके प्रत्यय होते हैं । विशेषता इतनी है कि प्रमत्तसंपत्तोंमें आहारक और आहारकमिथ्य औपयोगप्रत्ययोंको कम करना चाहिये क्योंकि, अग्निदेके वक्ष्य युक्त जीवोंके वे शर्मोप्रत्यय सम्भव नहीं हैं । अर्जुनसम्पगद्वियोंमें औपचारिकमिथ्य वैधिविक्रमिथ्य और अर्जुन काययोग प्रत्ययको कम करना चाहिये क्योंकि, स्वविद्वियोंमें असंयत सम्पगद्वियोंके अपवाप्तकालका समान है । शेष प्रकृति शुभ है ।

पांच आभावरणीय चार इशंआवरणीय चार संयोजन और पांच अन्तरावधे मिथ्याद्वि चार गतिपोंसंयुक्त तथा सासादनसम्पगद्वि तीन गतिपोंसे संयुक्त बांधते हैं क्योंकि सासादनसम्पगद्वियोंमें नरकगतिके बन्धका समान है । सम्पमिथ्याद्वि और अर्जुनसम्पगद्वि ब्रह्मणि य मनुष्यमत्तिसंयुक्त बांधते हैं । उपरिम स्त्रीवेदी जीव ब्रह्मणिसंयुक्त और गतिसंयागम रहित बांधते हैं । आभावेदनीय पुरुषवद् और पञ्चवीर्णिक मिथ्याद्वि य सासादनसम्पगद्वि तीन गतिपोंसंयुक्त, सम्पमिथ्याद्वि

सम्मादिद्विषो देव-मणुसगइसजुत्त, उवरिमा दवगइसंजुत्तमगइसजुत्त च वर्धति । उन्नागोद सये देव-मणुसगइसजुत्तमगइसंजुत्त च वर्धति ।

तिगइमिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वि-सम्मादिद्वि-असज्जसम्मादिद्विषो सामी, पिरयगदीए इत्थिवेदस्सुदयामावाओ । दुगइसंजदासबदा सामी, देव-पेरइएस्सु अणुअइए ममावाओ । उवरि मणुस्सा येय, अणत्थुवरिमिगुणामावाओ । पघट्ठाण सुगमं । पघवोअओ पारि । पणणाणारणीय चउदसणावरणीय-चउसज्जण-पणतराइयाणं मिच्छाइट्ठीस्सु चउअिहो पघो । मण्णएव निविहो, पुयामावाओ । सेसपयणीं सादि मद्दुवो, मद्दुववणित्ताओ ।

वेट्ठाणी ओघ ॥ १७१ ॥

पेट्ठाणी मिच्छाद्वि-सासणसम्माइट्ठीसु पंधपाभांगभावेण भवद्विदामि ति उत होदि । तेसिं परूवणा ओघ होदि ओघतुत्तेसिं बं उत होदि । एदमण्णामुत्तं देसामासिय, ओपाओ एदमिहो वीवमेदुवठेमाओ । तं मण्णमाणमुत्तरणेण सह सिस्साणुगहट्ठ परूवेमो—धीणगिद्वितिय

मीर असंघतसम्यग्द्वि देवगतिं च मनुष्यगतिसे समुत्तः तथा उपरिम जीव देवगतिसे समुत्त मीर गतिसंपागसे रहित बांधत है । उच्छरात्रका सब स्त्रीपत्नी जीय देव च मनुष्य गतिसे संमुक्त तथा गतिमयोगम रहित बांधत है ।

तीन गतिपोंक मिष्पाद्वि, सासणनसम्यग्द्वि सम्यग्मिष्पाद्वि मीर असंघत सम्यग्द्वि स्वामी है क्योंकि, नरकगतिमें स्त्रीवैरक उच्छरात्र अभाव है । जो गतिपोंके संयत्तासंघत स्वामी है क्योंकि देव-भारतियोंमें अणुमनियोंका अभाव है । उपरिम गुणस्यानर्थों मनुष्य ही स्वामी है क्योंकि अणु गतिपोंमें उपरिम गुणस्यानोंका अभाव है । बंधाअन सुगम है । पण्णसुक्कइ है मही । पांच प्राजापरणीय चार वृक्षमावरणीय चार मंग्रमन मीर पांच अस्तपयोंका मिष्पाद्वियोंमें चारों प्रकारका बण्य होता है । अणु गुणस्यानोंमें तीन प्रकारका बण्य होता है क्योंकि वहां प्रथम बण्यका अभाव है । दोष प्रवृत्तियोंका नाहि च अणुय बण्य होता है क्योंकि, ये अणुवरणी है ।

द्विस्थानिक प्रवृत्तियोंकी प्रकृपणा ओपके समान है ॥ १७१ ॥

द्विस्थानिक अर्थ मिष्पाद्वि मीर सासाणनसम्यग्द्वि गुणस्यानोंमें बण्यकी योग्यतासे अवास्तव प्रवृत्तियां हैं । उनकी प्रकृपणा भाष है अथान् ओपके समान है यह समिप्राय है । यह अणुयाम्ब वृक्षमात्रक है क्योंकि अणुय इसमें योद्धा भद्र पाया जाता है । प्रमुक्त मूत्रक अथक साथ शिष्योंक अनुमदाय उक्त भेदकी प्रकृपणा करते हैं—

मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वीसु सातर-भिरन्तेरे षणो । कथं विरन्तेरे ? न, एम्म-सुक्कत्तेस्सिएसु
तिरिक्ख-मनुस्सेसु पुरिसवेदु-धम्मोदाण विरन्तेरेधुवत्तमाणे । उवरि विरन्तेरे, पडिबस्स
एयदीपे वेधामात्राणे ।

सम्पगुणवृत्तापमोषपञ्चपसु पुरिस-मनुस्यवेदेसु अवधिदेसु अवसेमा एस्स एदासिं
पञ्चया होति । अवरि पमत्तसंजदेसु आहार माहारमिस्सन्नयजोगपञ्चया अवसेदप्पा,
इरिसेदोदइस्सअपं तवसंमवादे । असंजदसम्मादिद्वीसु ओराठिय-वउत्थियमिस्स-कम्मइयन्नय
जोगपञ्चया अवसेदप्पा, तस्स असंजदसम्मादिद्वीपमत्तवत्तत्तमावादे । ससं सुगमं ।

पंचपाप्मावरणीय-चतुर्दशपाप्मावरणीय-चतुर्दश-पञ्चतण्डियाणं मिच्छाद्वी चतुर्दश
समुत्त । सासणसम्माद्वी तिगइसमुत्तं, मियगईए अमावादे । सम्मामिच्छादिद्वि-असंजदसम्मा-
दिद्विपो देव-मनुसगइसमुत्त । उवरिमा देवगइसंजदं अगइसंजदं च पंचति । सादावेदणीम
पुरिसवेद-असक्तिदीप्पो मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्विपो तिगइसमुत्तं, सम्मामिच्छादिद्वि अमंजद

सासाधनसम्पगद्वि गुणस्यालोमें सातर-भिरन्तर वण्य होता है ।

शुद्ध—भिरन्तर वण्य कैसे जाता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि पहले और शुद्ध अर्थात्वाछे तियब व मनुष्योंमें पुरुषवेद
और उच्छवगोत्रका भिरन्तर व घ पाया जाता है ।

ऊपर उक्ता भिरन्तर वण्य होता है क्योंकि यहां प्रतिपक्ष प्रकृतिबोके वण्यका
अभाव है ।

मर गुणस्यालोमें मोक्षप्रत्ययमें पुरुषपर और मनुष्यकवेदको कम करनेपर होय
यहां हम प्रकृतियोंके प्रत्यय होते हैं । विशेषता इतनी है कि प्रमत्तसंघर्षमें आहारक
और आहारकमिथ अययोगप्रत्ययोंको कम करना चाहिये क्योंकि श्रीकृष्ण उक्त युक्त
जीबोंके वे दोनों प्रत्यय सम्मय नहीं हैं । अमंजदसम्पगद्विपोमें भीक्षारकमिथ वैश्वियकमिथ
और कर्मण कापपाण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये क्योंकि, श्रीवदियोंमें मर्त्यत
सम्पगद्विपोमें अपर्वात्तकालका अभाव है । होय प्रकृता सुगम है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार दर्शनावरणीय चार संन्यस्त और पांच अस्तपयको
मिच्छाद्वि चारों गतिपोंसे संयुक्त तथा सासाधनसम्पगद्वि तीन गतिपोंसे संयुक्त
बांधते हैं क्योंकि सासाधनसम्पगद्विपोमें नरकगतिके वण्यका अभाव है । सम्पगिच्छाद्वि
और मर्त्यतसम्पगद्वि देवगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते हैं । उपनिम श्रीवेदी जीव
देवगतिसे संयुक्त और गतिसंयोगसे रहित बांधते हैं । सातावेदनीय पुरुषवेद और
पञ्चवर्तिको मिच्छाद्वि व सासाधनसम्पगद्वि तीन गतिपोंसे संयुक्त सम्पगिच्छाद्वि

सासणमि सांतरो, तसो तेमिमुववादासावादो । अवमेसाणं पयडीणं धधो सांतरो, अणियमपेग-
समययधुवळमादो । एमा परुषणा ओघादो धधेण वि ण विरुन्छदि, समाणत्तवळमादो ।

पञ्चया ओधपञ्चयतुत्थ । णवरि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीण जहाकमेण
तेवण्णट्ठेत्तात्थीमुत्तरपञ्चया, पुरिस-णर्धुमयवेदपञ्चयाणममावादो । तिरिक्खाउअस्स मिन्छादिट्ठि
सासणसम्मादिट्ठीसु कमेण पंचास पंचेतत्थीस पञ्चया, भोराठिय-वेउच्चियमिस्स-कम्मइयकय
जोग-पुरिस-णत्तुसयवेदपञ्चयाणममावादो । तदभावो वि इत्थिवेदोदइत्थणमपज्जत्तफले
धाउअकम्मस्स वचामावादो ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाभोत्ताणुप्पि-उच्चोत्ताणि मिच्छादिट्ठि-सासण
सम्मादिट्ठिणो तिरिक्खगइमत्तुत्त वंथति । अण्णसत्तविहायगदि-दुमग-दुस्सर-अण्णदेज्ज-णीचा-
गोदाणि मिच्छादिट्ठिणो तिगइसत्तुत्त वंथति, देवगइण वचामावादो । सासणसम्मादिट्ठिणो तिरिक्ख
मणुसगइसत्तुत्त वंथति, देव गिरयगइण सह वचामावादो । अउसत्तण-वउसंपइयाणि तिरिक्ख
मणुसगइसत्तुत्त वंथति, एदासिं भित्त-देवगइहि सह वचामावादो । पीणगिद्धित्तिय अणत्ताणु-

पाया जाता है । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सास्तर बन्ध जाता है क्योंकि, उस
गुणस्थानस उक्त जीवोंके उत्पत्तिका अभाव है । शेष प्रवृत्तियोंका बन्ध सास्तर होता है
क्योंकि, बिना नियमके उनका एक समय बन्ध पाया जाता है । यह प्ररूपणा ओषसे घोड़ी
भी बिरुद्ध नहीं है क्योंकि, समाजता पायी जाती है ।

प्रत्यय ओषप्रत्ययोंके समान हैं । विरोधता इतनी है कि मिथ्यादृष्टि भार
सासादनसम्यग्दृष्टियोंके यथाक्रमम निरपन और अदृतासीम उत्तर प्रत्यय हैं क्योंकि
उनके पुण्यकद् और नपुंसकयैद् प्रत्ययोंका अभाव है । तिर्यंगाणुके मिथ्यादृष्टि और
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें क्रमस पचास और पतामीम प्रत्यय हैं क्योंकि उनके
वीरारिकमिध बैन्धियिकमिध कामनकाययोग पुरुषकद् और नपुंसकयैद् प्रत्ययोंका अभाव
है । उनका अभाव भी श्रुतिनाश्व युक्त जीवोंके अयथातकालमें आयु कर्मके बन्धका
अभाव हानेस है ।

तिर्यंगाणु त्रियमाति नियगतिशयायानुपूर्वीं भार उघातक्य मिथ्यादृष्टि य
सासादनसम्यग्दृष्टि जीव नियगतिम सयुक्त बांधन हैं । अमराहन्विहायगति दुर्मग
दुस्वत्, अमारेण और नीचगोत्रका मिथ्यादृष्टि जीव तीन गतियोंस सयुक्त बांधत हैं
क्योंकि उनक देवगतिके व पचा अभाव है । सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यगति य प्रतुप्य
गातस सयुक्त बांधत हैं क्योंकि, उनक देव व नरक गतिक साथ उनका बन्ध नहीं होता ।
भार संस्थान और भार संहननका नियगात य प्रतुप्यगतिम सयुक्त बांधन हैं क्योंकि,
इसका मरकगति व देवगतिक साथ बन्ध नहीं होता । स्थानगुहिय और अमराहन्

अमृतापुर्वविचउत्किरिष्वेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-अउसंअण-अउसंअण-तिरिक्खगइपाओ-
गापुप्वि उन्नेव अणसत्त्वविहयगइ-दुमग-दुस्सर अणदेन्ज-भीषागोदाणि वेद्याभियाणि ।
एदेसु अमृतापुर्वविचउत्कस्स अणोदया सम वोप्पिप्पया । अणपयस्सिण सव्वासि पि पुर्व
अणो पप्पम उदमो वोप्पेदुमुवगमो । कुदो ? तपोत्तलंमादो ।

भीषागिद्विसिय-अमृतापुर्वविचउत्क-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-अउसंअण-अउसंअण-
तिरिक्खापुप्वि-उ-नेव-अणसत्त्वविहयगइ-दुमग-दुस्सर-अणदेन्ज-भीषागोदाणि अणो सोदय-
परोदमो, उमयया वि अंघाविरोहसो । इत्थिवेदस्स सोदयपेव अंघो, तदुदयमादिकिप्प
परुवपापरंमादो । ओषादो एत्थ विससो एसो, तत्थ सोदय-परोदपहि अंघोवेदसदो ।

भीषागिद्विसिय अमृतापुर्वविचउत्क-तिरिक्खाउभागं अणो भित्तये । तिरिक्खगइ
तिरिक्खगइपाओगापुप्वी-भीषागोदानं मिप्पाइद्विदि सांतर-भित्तये, सत्तमपुर्वीभेरइएहितो
तेठ-वाउक्खइएहितो च पिप्पिइद्विद्विद्विद्वेदसुप्पण्णमं मुहुत्तस्सवो भित्तंअंघुत्तलंमादो ।

स्वप्नपुष्टिप्रय अमृतापुर्वविचउत्क-उत्तिरेव तिर्यगायु तिर्यमाति चार संस्थान
चार संस्थान तिर्यगायुपूर्वी उद्योत अमृतास्तविहायोगति दुर्मग दुस्वर,
अनायेय और भीषागोच ये द्विस्थानिक प्रकृतियां हैं । हममें अमृतापुर्वविचउत्कका वण्य
और उदय दामो साथ वृद्धिउत्त होते हैं । अन्य सब ही प्रकृतियाका पूर्वमें वण्य और
पश्चात् उदय वृद्धिउत्तको प्राप्त होता है क्योंकि वेसा पाया जाता है ।

स्वप्नपुष्टिप्रय अमृतापुर्वविचउत्क, तिर्यगायु, तिर्यमाति चार संस्थान चार
संस्थान तिर्यगायुपूर्वी उद्योत अमृतास्तविहायोगति दुर्मग दुस्वर अनायेय और
भीषागोचका वण्य उदय परोदय होता है क्योंकि दोनों प्रकारसे ही उदयके वण्यके
विरोधका समाज है । उदयउदय स्वादयसे ही वण्य होता है क्योंकि उसके उदयका
अधिकार करके हम प्रकृत्यत्थ प्रारम्भ हुआ है । अघसत पहा पहा विशेष है क्योंकि वहां
स्वोदय-परोदयसे वण्यका उपवेश है ।

स्वप्नपुष्टिप्रय अमृतापुर्वविचउत्क और तिर्यगायुका वण्य निरन्तर होता है ।
तिर्यमाति तिर्यमातिप्रारम्भानुपूर्वी और भीषागोचका वण्य मिप्पाइद्वि शुणस्थानमें सान्तर
निरन्तर होता है क्योंकि, सत्तम पृथिवीक नारदियोंमेंने तथा तेजस्वयिक व वायुकायिक
जीवोंमेंसे निष्कटकर अविनिर्द्योमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्मुहूर्त कम तक निरन्तर वण्य

१ अति वण्यमयवीन इति वाच ।

२ अति सुखदविनिष्प इति वाच ।

एतिभो येव विममो, पण्थि अण्णय कन्ध वि । तेण दण्णद्वियणय पण्ण च ओघमिदि वुत्तं ।

असादावेदणीयमोघ ॥ १७३ ॥

असादवेदणीयमिच्छेदण पयडिजिदेसो प कदो, किन्तु असादवेदणीय-अरदि-सोग
अधिर-अमुह-अजमकिचि ति छप्पयडिपडिओ असाददड्ढओ असादवेदणीयमिदि पिडिहो । जहा
सच्चहामा मामा, भीमसेणो सेणो, बलदेवो देवो पि । एवासिं छण्ण परूवणा ओघ-
तुत्तम् । पवरि णस्य वि पन्थयविममो सामित्तविममो च पायप्पो ।

एककट्टाणी ओघ ॥ १७४ ॥

एकस्मि मिच्छाद्विगुणट्टाण जाआ पयडीओ पंधपाआग्गा हादूण चित्रंति तासिमेगट्टाणि
सि सण्णा । तिस्रे एक्ककट्टाणीण परूवणा ओघतुत्तम् । तं जहा — मिच्छत्तम् पधोदया सम
योच्छिण्णा । णुमयवेद-भिरयाठ-भिरयगइ-भिरयगइ-भोत्ताणुपुत्ती एइदिय पीइदिय-त्तीइदिय
चउरिदियआदि-आदाव-यावर-सुहुम अपग्गच-साहारणाण पंधोदयवोच्छदविचारो पणिय,

विशयता है अन्त्यम भीतर कहीं भी शिनायता नहीं है । इसीप्रकार प्रध्यायिक मयकी अपेक्षा
कर ओघक समान है यन्मा कहा गया है ।

अमातावेदनीयकी प्ररूपणा ओघक समान है ॥ १७३ ॥

अमातावेदनीय इस प्रकार प्ररूपणा निर्देश नहीं किया है किन्तु अमातावेदनीय
भरति शाक अस्थिर अणुम और अयणावधिगत इन छह प्ररूपियोंमें सम्बन्ध अमातावेदक
अमातावेदनीय पररूप निर्दिष्ट किया गया है । जैसे सत्यमाभाका 'मामा भीमसेनको
सम' और पदवचका 'वय पररूप निर्दिष्ट किया जाता है । इन छह प्ररूपियोंकी प्ररूपणा
आपक समान है । शिनायकता है कि यहाँ भी प्रत्ययमद और व्याप्तियमद जानना चाहिये ।

एकस्थानिह प्ररूपियोंकी प्ररूपणा आपके समान है ॥ १७४ ॥

एक मिध्याहारि गुणस्थानमें आ प्ररूपियों सम्बन्धपूर्ण शाक स्थित है उसकी
एकस्थानिक समान है । उन एकस्थानिकाकी प्ररूपणा आपके समान है । यह इस प्रकार
है — मिध्याहारका वच्य और उदय दाना माय प्युच्छिद्य दान है । मयुगकपद नारकायु,
मरवगति मरवगतिमायायानुपूर्वी एवमिन्द्रिय ईन्द्रिय अगिन्द्रिय अगिन्द्रिय अगिन्द्रिय अगिन्द्रिय अगिन्द्रिय
आतार स्थानर मत्तम अययान्ज और मायायान्ज इसका वच्य और उदयक प्युच्छदक विचार

ब्रह्मिषडभक्तमि मिच्छादिदिष्टो अउगइसंजुत, सामभसम्मादिदिष्टो तिगइसंजुत बंधति,
गिरयगईए अमावाशे ।

सम्भासि पयडीण तिगइमिच्छादिदिष्ट-सामभसम्मादिदिष्टो समी, गिरयगईए इतिबेदु
दयामावाशे । बंधद्वान् ब्रह्मविषदृष्टान् च सुगम, सुचुरिदृष्टादो । सत्तण्हे भुवपयडीणं मिच्छ
इदिमिदं चउत्तिहो बंधो । सामभ दुविहो पंधो, अणाइ-धुवामावाशे । भवसेसामं सम्भर
सादि भदुवो, भदुवपविच्छादो ।

गिहा पयला य ओघ ॥ १७२ ॥

परासि दोम्ह पयडीण जहा भोपमि परूवणा कदा तहा कयग्या । जवरी पम्पयसु
पुरिस जनुमपवेदपम्पया अवपग्या । जवरी असजइसम्मादिदिष्टिदि ओरात्तिप-वेउत्तिपमिस्स
कम्मइयकयजेणा च, इतिबवदादिपसदो । पमतसजदग्धि पुरिस जनुमपवेदेदि सह बाहुरदुम
च अवपेदम्भ, भयसरयवेदोदइत्तज्जममाहारसरीरस्सुदयामावाशे । तिगइमिच्छादिदिष्ट-सामभसम्मा-
दिदिष्ट-सम्भामिच्छादिदिष्ट-भयजइसम्मादिदिष्टो समी, गिरयगईए इतिबेदोदइत्तज्जममावाशे ।

ब्रह्मिषडभक्तमि मिच्छादिदिष्ट आर गतिवासे संयुक्त बांधते हैं । सामाद्वनसम्पददि तीव्र
गतिपोंस संयुक्त बांधते हैं क्योंकि इनके नरकगतिका बन्ध नहीं होता ।

सब प्रकृतियोंके तीन गतिपोंके मिच्छादिदिष्ट और सामाद्वनसम्पददि स्वामी हैं
क्योंकि नरकगतिके लोभके उदयका समाप्त है । ब्रह्माग्नि और ब्रह्मपितृस्थान
सुगम हैं क्योंकि वे स्वयं ही निर्दिष्ट हैं । सात भुवप्रकृतियोंके मिच्छादिदिष्ट गुणस्थानमें आरो
प्रकारका बन्ध होता है । सामाद्वन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता क्योंकि, यहाँ
जनादि च जह बन्धका समाप्त है । सात प्रकृतियोंका सर्वत्र सादि च समुप बन्ध होता है
क्योंकि, वे सबब्रह्मधी हैं ।

निद्रा और प्रचक्ष प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओपके समान है ॥ १७२ ॥

इस ही प्रकृतियोंकी जैसे ओपमें प्ररूपणा की गई है वैसे करना चाहिये । बिनाय
यह है कि प्रत्ययमें पुण्यवेद और मनुमकवद प्रत्ययोंका काम करना चाहिये । इतनी और
भी बिनायता है कि भयंयतसम्पददि गुणस्थानमें भीदारिकमिध ब्रह्मिषडभक्तमिध और कर्मज
कायकाग प्रत्ययका भी काम करना चाहिये क्योंकि स्वीकृता अधिकार है । प्रमत्तमंयत
गुणस्थानमें पुण्य और मनुमक वदक साथ आहारकण्टिकको भी काम करना चाहिये
क्योंकि, भयंयत वेदादय पुण्य जीवोंके आहारकण्टीरक उदयका समाप्त है । तीन
गतिपोंके मिच्छादिदिष्ट सामाद्वनसम्पददि सम्पमिच्छादिदिष्ट और भयंयतसम्पददि स्वामी
हैं क्योंकि नरकगतिके लोभके उदय पुण्य जीवोंका समाप्त है । कयस इतनी ही भाषण

एचिओ चव विसमो, पन्थि अण्णय कृत्य वि । तेण दय्यद्वियणयं पडुण्य ओपमिदि सुत्तं ।

असादावेदणीयमोघ ॥ १७३ ॥

असादावेदणीयमि चेदण पयडिणिदेसो ण कट्ठो, किन्तु असादावेदणीय-अरदि-सोग भविर-असुह-अजसकिंति' ति छण्णयडिपडिओ असादावेदणीयमिदि भिदिहो । जहा सच्चदामा मामा, मीमसेणो सेणो, यत्तवेवो देवो ति । एदासिं छण्ण परूवणा ओप तुत्त । पवरि पत्त यि पच्चयविसमो सामिधविसेसो च पायओ ।

एककट्टाणी ओघ ॥ १७४ ॥

एकमि मिच्छाद्विगुणद्वारे जाओ पयडीओ वंधपाओग्गा हादण चिद्वंति तासिमेगहाभि ति सम्भा । निम्मे एककट्टाणीण परूवणा ओपतुत्त । त जहा — मिच्छत्तस्स वंधोदया सम वोच्छिण्णा । णवुमयवेद-भिरयाउ गिरयगइ-भिरयगइपाभोग्गाणुपुत्री एइदिय भीइदिय-तीइदिय चठरिंदियजादि-आदाव-माधर-सुहुम अपन्नमस-साहारणाप वंधोदयवोच्छदविचारो णरिध,

विनयता है अम्यत्र भार कहा मी विनयेता महीं है । इसीसिय द्रव्याधिक नयकी अपेक्षा कर ओघक समान है ऐसा कहा गया है ।

असादावेदनीयकी प्ररूपणा ओपके समान है ॥ १७३ ॥

असादावेदनीय इस पदस्य प्ररूपिका निर्देश महीं किया है किन्तु असादावेदनीय अरति शोक भस्मिन् अशुभ भार भयदाक्रीति इन छंद प्ररूपितोस्य सम्यक् असादावेदनीय पदस्य निर्दिष्ट किया गया है । जैसे मत्पमामाकर 'मामा' मीमसन्तको सम भीर पन्नरूपका 'व्य पदस्य निर्दिष्ट किया जाता है । इन छंद प्ररूपितोकी प्ररूपणा ओघक समान है । विनय इतना है कि यहाँ मीमस्यवमन् भार स्थापितवमन् आपना चाहिये ।

एकस्यानिरु प्ररूपितोस्य प्ररूपणा आपके समान है ॥ १७४ ॥

एक मिथ्याद्वि गुणरूपानमो जा प्ररूपितो वच्यवाग्य हाकर स्थित है उसकी एकस्यानिक सदा है । उन एकस्यानिकोकी प्ररूपणा ओघक समान है । यह इस प्रकार है— मिथ्यापदका पद्य भार उद्भव दाना साध स्पृष्टिप दान है । मनुमकचइ मारकापु मरकगति नरकगतिमापाग्यानुपूर्वी एवमिन्द्रिय व्रीमिन्द्रिय त्रीमिन्द्रिय चतुर्दिन्द्रिय आनि मानाद ग्यापय गृहम भययत्त आगनापात्त इनक पद्य भार उद्भव स्पृष्टदवा विपार

मिच्छत चउगइससुचं वंघइ । पउसयवेद-हुंठसउणाणि तिगइसहुच, देवगईए सह
 वषामावादो । भिरयाउ [भिरयगइ] भिरयगइपामोग्गाणुपुष्ठीओ भिरयगइसंहुचं वंघइ । कुरो ?
 सामावियादो । अपञ्जत्तासपत्तसेवइमषइणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसहुचं, गिरय-देवगईदि सह
 वषामावादो । अवससाओ पयडीओ तिरिक्खगइसहुचं, तस्य ताण गियमइसपादो । मिच्छत-
 पउसयवेद-एइदियादाव-भावर-हुंठसउण-असंपत्तसेवइसपइणाण तिगइमिच्छाइही सामी,
 गिरयगईए इत्थिवेहुदयामावादो । गिरयाउ-भिरयगइ-पीइदिय-तीइदिय चउरिदियमादि
 भिरयाणुपुष्ति-सुहुम-अपञ्जत्त-साहाएणाणि तिरिक्ख-मणुस्सा सामी । वचइणं वंघविणइइण
 च सुगमं । मिच्छतस्स चउव्विहो वंघो । सेसाण सादि-अद्दओ ।

अपञ्चक्खाणावरणीयमोघ ॥ १७५ ॥

एतथ वि पुत्थ व परूवेदप्वं । अहवा अपञ्चक्खाणावरणीयपहाणो दइओ अपञ्चक्खाणा-
 वरणीयमिदि मण्णइ । अहा गिंभ-कयम-जणु-जंवीरयणमिदि । अपञ्चक्खाणचउक्क-मणुसगइ
 ओरात्थिसरीर ओरात्थिसरीरभंगोवग-वज्जरिसहवइरभारत्यजसरीरसपइण-मणुसगइपामोग्गाणु-

मिष्यात्त्वका चारो गतियोंसे संयुक्त बांधता है । मनुसकबद और हुण्डसंस्थानको
 तीन गतियोंसे संयुक्त बांधता है क्योंकि वृक्षगतिके साथ उनके वन्यक भ्रमण है । नारकायु,
 [नरकगति] और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वको नरकगतिके संयुक्त बांधता है क्योंकि ऐसा
 स्वभाव है । अपर्याप्त और असंप्राप्तसुपाटिकासहननको तिर्यग्गति और मनुष्यगतिके
 संयुक्त बांधता है क्योंकि नरकगति और वृक्षगतिके साथ इनके वन्यका भ्रमण है । शेष
 प्रकृतियोंको तिर्यग्गतिके संयुक्त बांधता है, क्योंकि, तिर्यग्गतिके साथ इनके वन्यका
 भ्रमण देखा जाता है । मिष्यात्त्व मनुसकबद एकेन्द्रिय आठाप न्यावर, हुण्डसंस्थान
 और असंप्राप्तसुपाटिकासहननके तीन गतियोंके मिष्यादधि स्वामी हैं क्योंकि नरकगतिम
 स्वीकृतके वन्यका भ्रमण है । नारकायु नरकगति त्रीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुर्न्द्रिय आति
 नारकायुपूर्वी सूक्ष्म अपर्याप्त और साधारण इन प्रकृतियोंके वन्यके तिर्यक् व मनुष्य
 स्वामी हैं । गन्धाब्जान और वन्यविनष्टस्थान सुगम हैं । मिष्यात्त्वका चारों प्रकारका वन्य
 होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अमुव वन्य होता है ।

अप्रत्याख्यानावरणीयकी प्ररूपणा ओपके समान है ॥ १७५ ॥

यहां भी पूर्वके समान प्ररूपणा करना चाहिये । यथावा अप्रत्याख्यानावरणीय
 प्रधान वृक्षको अप्रत्याख्यानावरणीय शब्दसे कहा जाता है । जैसे कि नीम आम कच्चा
 आम और अमर, इन वृक्षोंकी प्रधानतासे इतर वृक्षोंसे भी युक्त वनोंको नीमवन
 आमवन कच्चावन आमवन और अमरवन शब्दोंसे कहा जाता है । अप्रत्याख्याम
 चतुष्क, मनुष्यगति औत्तारिकशरीर, औत्तारिकशरीरांगोपांग वज्जरमवज्जनाराचशरीर
 सहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी इन अप्रत्याख्यानावरणीयसहित प्रकृतियोंकी

पुष्पीणमय-वक्त्राणावरणीयसन्निधानं परूषणा भोषतुल्य । तं अहं—अपञ्चस्त्राणवतस्स
 वंशोदया समं वोष्मिष्णा, अर्जवदसम्मादिष्टिहि चैव तदुभयदसणादौ । मणुसगइपाजोमाणु-
 पुष्पीण पुष्प ठरुमो पच्छ वंशो, सामयसम्माइष्टि-अर्जवदसम्मादिष्टिमु तज्जोष्मेददसणादौ ।
 अवसेसण पयडीण पुष्प वंशो पच्छ ठरुमा वोष्मिष्णो तहोवत्तमादौ ।

सम्भामि पयडीणं पधो सप्परय सोदय-परोदमो । पवरि सम्भामिष्मदिष्टि-
 अर्जवदसम्मादिष्टिमु मणुसगइदुग-ओराटियदुग-व-वरिसइमयइणाप परोदमो वंशो, रेवेमुइपा-
 मावादौ । अपञ्चस्त्राणावरणवतस्स वंशो पिरतरो, पुववपिवादौ । मणुसगइ-मणुसगइ
 पाजोमाणुपुष्पीण मिष्मदिष्टि-सासणसम्मादिष्टिमु सानर-पिरतरो । कुदो पिरतरो ! आण्णादि
 देवेहिंतो इत्तिवेदमणुस्सेसुप्पणाप भतेसुनुत्तकल पिरतरत्तेण तदुभयवंशदसणादौ ।
 उवरी पिरतरो, रेवसम्भामिष्मदिष्टि अर्जवदसम्मादिष्टिमु पिरतरत्तेणुवत्तमादौ । एवमेव-
 टियसरि-ओराटियसरिगोवंगाणं पि वत्तम्, सणकुमारदिहोवेहिंतो इत्तिवेदसुप्पणाप
 पिरतरत्तेणुवत्तमादौ । वरिसइसंनइणस मिष्मदिष्टि-सामयसम्मादिष्टिमु वंशो सान्तरो ।

प्रकृषा जोषक समान है । वह इन प्रकारसे है—अप्रत्याप्यामयनुष्मका वक्ष्य और
 उक्ष्य इत्यादि साधर्म्ये व्युत्पिद्यते होते हैं क्योंकि, असंयतसम्पत्ति गुणस्थानमें ही उन दोनोंका
 व्युत्पिद्य इत्यादि जाता है । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका पूर्वमें उक्ष्य और पश्चात् वक्ष्य
 व्युत्पिद्य होता है क्योंकि साक्षात्तसम्पत्ति और असंयतसम्पत्ति गुणस्थानोंमें
 अन्तरा उक्त व्युत्पिद्य इत्यादि जाता है । छेप प्रकृतियोंका पूर्वमें वक्ष्य और पश्चात् उक्ष्य
 व्युत्पिद्य होता है क्योंकि वेसा पाया जाता है ।

छेप प्रकृतियोंका वक्ष्य सबत्र स्वाद्य पराद्य होता है । विशेष इतना है कि
 सम्पत्तिप्राप्ति और असंयतसम्पत्ति गुणस्थानोंमें मनुष्यगतिविक्रम औदारिकविक्रम
 और वक्ष्यअसंयतसम्पत्ति पराद्य वक्ष्य होता है क्योंकि इन्हीं इत्यादि उक्तमात्र है ।
 अप्रत्याप्यामयनुष्मका वक्ष्य निरन्तर होता है क्योंकि, वह उक्तवर्धी है । मनुष्यगति
 और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिष्मदिष्टि और साक्षात्तसम्पत्ति गुणस्थानोंमें
 सान्तर निरन्तर वक्ष्य होता है ।

श्रुत—निरन्तर वक्ष्य कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि आन्तरिक देवोंमेंस एवम्ही मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवोंके
 अन्तर्गुह्ये काष्ठ तत्त्व निरन्तर रूपसे उन दोनों प्रकृतियोंका वक्ष्य देखा जाता है ।

साक्षात्तसम्पत्ति ऊपर उक्त निरन्तर वक्ष्य होता है क्योंकि, सम्पत्तिप्राप्ति और
 असंयतसम्पत्ति देवोंमें निरन्तर वक्ष्य पाया जाता है । इसी प्रकार औदारिकविक्रम और
 औदारिकविक्रमोपागोपागोके भी वक्ष्य आदिप क्योंकि, समानुपादिक देवोंमेंस
 एवम्ही उत्पन्न हुए जीवोंके उक्त निरन्तर वक्ष्य पाया जाता है । अर्जवदसम्पत्ति
 मिष्मदिष्टि और साक्षात्तसम्पत्ति गुणस्थानास सान्तर वक्ष्य होता है । उपरिम

उवरि पिरितो, पडिवक्खपयइत्थि पधामावादो ।

अपच्चस्सालवठक्कस्स मन्वगुणत्रणेसु ओषपच्चया वेव । उवरि पुरिस
पुत्तुसपपच्चया सच्चय अवपदव्वा । असंजदसम्मादिट्ठिम्हि ओरात्थिय-वेठप्पियमिस्स
कम्मइयपच्चया च अवणेदव्वा । एव य-जरिसहवइरणायणसरिंसंघजणस्स वि वत्तच्च ।
उवरि सम्मामिच्छइट्ठि असंजदसम्माइट्ठिओ ओरात्थियकायजेगपच्चओ अवणेदव्वा । मणुसगइ
मणुसगइपाभोगाणुपुत्थी-ओरात्थियसरि ओरात्थियसरिंसोवगणं मिच्छइट्ठि-सासणमम्मादिट्ठिओ
दुरुवूणापपच्चया चव हँति, पुरिस-पुत्तुसपपेदपच्चयापममावादो । सम्मामिच्छदिट्ठि
असंजदसम्मादिट्ठिओ चाल्लिम पच्चया, पुरिस-पुत्तुसपपेदेहि सह आरात्थियदुगामावादो,
असंजदसम्मादिट्ठिम्हि वेठप्पियमिस्स-कम्मइयपच्चयामावादो 'च' । सेम सुगम ।

अपच्चक्खालवठक्कं मिच्छइट्ठि पठगइसंनुत्त, सासणो तिगइसंनुत्तं, उवरिमा
दुगइसंनुत्तं पंधंति । मणुसगइ-मणुसगइपाभोगाणुपुत्थीओ मणुसगइसंनुत्तं सप्पे पंधंति ।

गुणस्थानोंमें निरन्तर श्रम्य हाता है क्योंकि वहाँ उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका
भभाव है ।

अप्रत्यात्पानावरणवत्तुक्कं सेव गुणस्थानोंमें बाधप्रत्यय ही हैं । विरोधता
केयत्न इतनी है कि पुण्यबद् और नपुंसकयत् प्रत्ययोंको सर्वत्र कम करना चाहिये ।
असंयतसम्पगइदि गुणस्थानमें औदारिकमिध बहियिकमिध और काम्य प्रत्ययोंको
भी कम करना चाहिये । इन्हीं प्रकार बन्धनमन्त्रमागधशरीरसंहननक भी कहना
चाहिये । शिष्य इतना है कि सम्पगिमिध्याइदि और असंयतसम्पगइदि गुणस्थानोंमें
आचारिक कथयोग प्रत्यय कम करना चाहिये । मनुष्यगति मनुष्यगतिप्रयोगानुपूर्वी
औदारिकशरीर और आचारिकशरीरांगावांगक मिध्याइदि च सासाङ्गसम्पगइदि
गुणस्थानोंमें दो कम बाधप्रत्यय ही हैं क्योंकि, पुण्य और नपुंसक बद्प्रत्ययोंका भभाव
है । सम्पगिमिध्याइदि और असंयतसम्पगइदि गुणस्थानोंमें आसील प्रत्यय हैं क्योंकि,
यहाँ पुण्य और नपुंसक बद्के साथ औदारिकश्रिकका भभाव है तथा असंयतसम्पगइदि
गुणस्थानमें धैर्यिकमिध और काम्य प्रत्ययोंका भभाव भी है । दोय प्रत्ययप्रकरण
सुगम है ।

अप्रत्यात्पानावरणवत्तुक्कं मिध्याइदि चार गतियोंसे संयुक्त सासाङ्ग
सम्पगइदि तीन गतिवास संयुक्त और उपरिम जीव वा गतियोंसे संयुक्त बांधत है ।
मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रयोगानुपूर्वीका मनुष्यगतिम संयुक्त सभी स्थिति की जीव

अवममनिग्निययईजो मिच्छादिद्वि-सामणसम्मदिद्विपो तिरिक्त मणुमगइममुत्तं, मम्मामिच्छ
दिद्वि-अमज्जदसम्मदिद्विपो मणुमगइममुत्तं संबन्धि ।

अप्यप्पस्सणाणवरणपउत्तस्स निगइषदुगुणहाणिणो सामी । अवसेमाणं पयईणं
निगइमिच्छादिद्वि सामणसम्मदिद्विमा देवगइसम्मामिच्छादिद्वि असंजदसम्मदिद्विपो च सामी ।
बंधद्वारं बंधविषमइद्वारं च सुगम । अप्यप्पस्सणाणपउत्तस्स मिच्छादिद्वि चउत्तप्पिहो पपो ।
अप्यप्प निगिहो । अवसेमाणं पयईणं सादि मइयो ।

पच्चक्खणावरणीयमोघ ॥ १७६ ॥

एव आपरुक्कं द्विविधमेषाणुविद समरिय वत्तण ।

इस्सरदि जाव तित्थयरेत्ति ओघ ॥ १७७ ॥

आपादो पदसु सुतेसु अवदिद्वेवमयमंहरिसणं मंदबुद्धिमिस्साणुमाइह च
पुणरिषि परवेमा— इम्म रइ मय दुगुंणण बंधोदया सम वाच्छि-बन्धि, अपुप्पस्सणपरिममण

बांधन इ । दार मीज मइतियोक्क मिस्सादिद्वि च सासाद्वनसम्यग्गदि निधमणि एयं
मनुप्पयतिम संयुक्त तथा सम्यग्मिस्सादिद्वि च समंयनसम्यग्गदि मनुप्पयतिम
संयुक्त बांधन इ ।

अत्रयानपाजावत्तवत्तुक्क मीज गतिवोक्क चार गुणमयत्तपनी त्वापदी जीय
क्यामी इ । दार मइतियोक्क मीज गतिवोक्क मिस्सादिद्वि च सासाद्वनसम्यग्गदि तथा एयं
गतिक्क सम्यग्मिस्सादिद्वि च समंयनसम्यग्गदिद्वि च्यामी इ । अत्रयानपाजा
ह्यान गुणम इ । अत्रयानपाजावत्तवत्तुक्क मिस्सादिद्वि गुणमयत्तमे चारो प्रकारका और
अत्र गुणमयत्तमे मीज प्रकारका बन्ध होता इ । दार मइतियोक्क सादि च अत्रय बन्ध
होता इ ।

प्रपामपनागर्णीयवत् प्ररुता आपरु ममान इ ॥ १७६ ॥

यदी कुत्त बिमलताग गमज्ज आपमरुणयावा इमरुक्कट कहता आदिय ।

इम्म च रतिव लज्ज तीवज्ज प्रहृति तरु आपरु ममान प्ररुता इ ॥ १७७ ॥

आपरी अरुता इम मूत्रमे अवस्थित कुत्त गार्हीनी विमलतावा दिग्गमान तथा
मत्तकुत्त मिष्णक्क अनुमइह निय निर भी प्ररुतावा बन्ध इ— इम्म रति मज्ज और
कुत्तुगावा बन्ध च इदं जाना सापमे वपिद्विज्ज हात इ कयादि अनुपपन्नक्क अन्तिम

दोषह^१ वोऽठदुवलमादो । सम्प्रगुगङ्गाणेषु बधो सेदय-परोदमो, परोए वि संते बधविरोहा
मावातो । मय-दुगुछाणं मय-दुगुछाणमु पिरतय बधो, भुवबधितादो । इस्म-रदीण मिच्छाद्वि-
पुहृडि जाव पमसयब्रदा वि बधा मोनरो, एव पडिभरुउयडिबुवळमादो । उवरी गिरतरो,
पडिवकसपयडिबवामावादो । पञ्चया सुगमा, बहुमो परुविदत्तादो । मिच्छाद्वि उवगइसहुतं
बधति । पवरी हस्म-रदीओ तिगइसहुत, गिरयगइए सह बधविरोहादो । सम्प्रपयडीओ
सामगा निगइसहुत बधइ, तय गिरयगइए पवामावादो । सम्मामि गइद्वि असब्रदसम्मा-
दिदिणो दुगइसहुतं, तय गिरय-तिरिक्खगइए बधामावादो । उवरीमा देवगइसहुत, तय
मेमगइए पवामावादो । पवरी मपुव्यक्खणे चरिमसत्तमभागे भगइसहुत बधेति । निगइ
मिच्छादिदि-सामत्रमम्मादिदि मम्मामिच्छादिदि अर्षवडमम्मादिदिणो सामी, पिस्सगइए
मिच्छादिपिबेदामावादो । दुगइमज्जासंजडा सामी, देवगइए देमवड्ढममावादा । उवरीमा
मपुस्सा बध, भणत्थ महवड्ढममावादा । बधद्वारं बधविपड्ढाण च सुगम । मय-दुगुछाण

समयमें उनका बन्ध व उदय वालोंका बहुत उदय पाया जाता है । सब गुणस्थानोंमें उनका
बन्ध स्थाव्य परोक्ष होता है क्योंकि बन्ध प्रकृतियोंके उदयके भी होनेपर इनके बन्धका
कार्य विराम नहीं है । मय माग दुगुछाण सय गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है
क्योंकि व भुवबधपी है । इत्थं भार रतिका मिष्पाद्विमें केकर प्रसक्तसंयत तक
मास्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ इनको प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता
ह । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव
है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि, उनका बहुत भार प्ररूपण किया जा चुका ह ।
मिष्पाद्वि जीव उन्हें भार गतिधर्म संयुक्त बांधत है । विशेष इतना है कि
इत्थं भार रतिका तीन गतिधर्म संयुक्त बांधत है क्योंकि, मरकगतिके साथ
उनके बन्धका विरोध है । सय प्रकृतियोंको सामान्यसम्प्रदायि तीन गतिधर्मोंसे संयुक्त
बांधता है क्योंकि इस गुणस्थानमें मरकगतिके बन्ध नहीं होता । सम्प्रमिष्पाद्वि
भार असंयतसम्प्रदायि दो गतिधर्म संयुक्त बांधत है क्योंकि उन गुणस्थानोंमें मरकगति
भार लघुगतिके बन्धका अभाव ह । उपरिम जीव ब्रह्मगति संयुक्त बांधत है क्योंकि,
उपरिम गुणस्थानोंमें शेष गतिधर्मोंके बन्धका अभाव है । विज्ञापता यह है कि अपूर्वकरजक
अन्तिम सत्तम भागमें गतिधर्मोंका रहित बांधते हैं । तीन गतिधर्म मिष्पाद्वि, सासादन
सम्प्रदायि, सम्प्रमिष्पाद्वि और असंयतसम्प्रदायि स्वामी हैं क्योंकि मरकगतिमें
अन्तिम उदय सहित जीवाका अभाव है । दो गतिधर्मोंके सयतसंयत स्वामी हैं क्योंकि,
ब्रह्मगतिमें ब्रह्मगतिधर्मोंका अभाव ह । उपरिम गुणस्थानधर्मी मनुष्य ही स्वामी है क्योंकि
बन्ध गतिधर्मोंमें महाप्रतिधर्मोंका अभाव है । बन्धस्थान और बन्धविनशस्थान सुगम हैं ।

मिष्मद्दिष्टिर्ह बंधो पठमिहो । उवति तिविहो, पुवनवामावादा । हम्म-रदीर्घं सन्तरय सादि
भदुवा, अदुवर्षविहो ।

मनुस्साउवस्स पुम्ब बंधो पच्छा उदओ वोनिच्छणो, असंजदसम्मादिदि जनिपट्टिमु
जहाक्केम बंधोदयवोच्चेदसपादो । मिष्मद्दिष्टि-सासणसम्मादिट्टीसु सोदय-परोदण्य बंधा ।
असंजदसम्मादिट्टीसु परोदण्येव । कुदो ? सामावियादो । सन्तरय बंधो पिरतरो, जहण्यबंध
अत्तस्स वि अवेसुहुत्तपमापुवठमादो । मिष्मद्दिष्टिस्स पंचास,मामणस्स पचेतात्तीस पबना।
भोरुत्तिप-वेठणियमिस्स-कम्मइयअयओम-पुरिम पबुमयपच्चयाणग्मावादा । असंजदसम्मा-
दिट्टीसु चात्तिस्स पच्चया बोपन-पयसु भोरुत्तिप-भोरुत्तिपमिस्स-वेठणियमिस्स-कम्मइय
अयओम-पुरिम-पबुमयवेदशममावादा । सेसं सुगमं । सये वि मणुसगइसदुत्त बंध बध्ति,
अण्णगइदि सह विरोहो । तिगइमिष्मद्दिष्टि-सासणसम्मादिट्टिओ सामी । असंजदसम्मा
दिट्टिओ देवा वेव सामी अण्णत्तिरिषवेदो-इत्तण सम्माट्टीज मणुस्साउवस्स बंधामावादे ।
बंधाणं बंधविषदुहाणं प सुगमं ! सन्तरय सादि-अदुवो बंधो ।

मय और मनुष्साय मिष्पाद्वि गुणस्थानमें जारा प्रकारका बन्ध होता है । उपरिम
गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि वहाँ मनु बन्धका समाप है । हास्य
और रतिक बन्ध सादि प मनु बन्ध होता है क्योंकि वे मनुबन्धी हैं ।

मनुष्सायुक्त पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उच्च व्युत्पन्न होता है क्योंकि असंयत
सम्पत्ति और यतिवृत्तिकरण गुणस्थानोंमें क्रमसे उत्तक बन्ध व उच्चका व्युत्पन्न देखा
जाता है । मिष्पाद्वि और सासाज्जसम्पत्ति गुणस्थानोंमें स्वेदय परोदयम बन्ध होता है ।
असंयतसम्पत्तिधर्मोंमें परोदयसे ही बन्ध होता है क्योंकि देसा स्वभाव ही है । सर्वत्र
निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि उत्तका अथवा बन्धकास ही मनुसुद्धिमें प्रभाव पाया
जाता है । मिष्पाद्विके पक्ष और सासाज्जसम्पत्तिके पैदाकीस प्रत्यय है क्योंकि,
वहाँ भौतिकमिश्र वैकल्पिकमिश्र कार्मज कायबोग पुरुषबन्ध और सर्वसकबन्ध प्रत्ययोंका
समाप है । असंयतसम्पत्तिधर्मोंमें बाकीस प्रत्यय हैं क्योंकि भौतिकप्रत्ययोंमेंसे भौतिक,
भौतिकमिश्र वैकल्पिकमिश्र कार्मज कायबोग पुरुषबन्ध और सर्वसकबन्ध प्रत्ययोंका
समाप है । शेष प्रत्ययमरूपका सुपम है । मय ही मनुष्यगतिसे संयुक्त ही बांधत है
क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ रहके बन्धका विरोध है । तीन गतियोंके मिष्पाद्वि और
सासाज्जसम्पत्तिके ज्ञानी हैं । असंयतसम्पत्ति देव ही स्वामी हैं क्योंकि अन्य
गतिधर्म कीबदेव ब्रह्म सम्पत्तिके मनुष्सायुक्त बन्धका समाप है । बन्धाव्याज
और बन्धविनष्टस्थान सुपम हैं । सर्वत्र सादि व मनु बन्ध होता है ।

देवावस्स पुण्वमुदओ पच्छा षो वोच्छिन्नदि, अप्पमत्तासंजदसम्माविहीसु फमेव
 षोहयवोच्छेदसपादो । सम्पगुणद्वापेसु परोदएमेव षो, सोहयग्निह षसस्स षसंतामावस्स
 अवहापयो । भिरंतरो षो, भंतोमुदुत्थेय पिना षंघुवरमामावाणे । मिच्छाहृदिसस एगुपर्ववास,
 सासपस्स षउवेतालीस, असंजदसम्माविहिसस चात्तिमुत्तपवया, वेउभिय-वेउभियमिसस-ओरा
 त्थिमिसस-कम्मइयकायजोग-पुरिस-अहुंसयवेदताममावादो । उवरि पुरिस-अहुंसयवेदताहारदुपेहि
 विना ओषपवया षेव वत्तया । सेसं सुगमं । सम्पत्थ देवगइसंलुतो षो, अप्पगइहि सह षेव-
 विहादो । तिरिक्ख-मणुस-मिच्छाहृदि-सासपसम्माहृदि-असंजदसम्माहृदि-संजदसंजद। सामी,
 अप्पत्थ द्वियाण तर्षवविरोहादो । उवरिमा मणुसा षेव, अप्पत्थ महम्मइममावादो ।
 षपद्याणं सुगमं । अप्पमत्ताए सखेज्जदिमार्गं गंतूण षो वोच्छिन्नदि । कुदो ? सुत्तानुसारि
 गुरुवेसादो । साप्पि अद्भवो षो ।

देवगइ-रंभिरियवादि-वेउभिय-सेवा-कम्मइयसरि-समवतरसंसंठाण-वेउभियसरि-
 अयोर्वय-वण्ण-गध-रस-फस-देवगइपाओमापुपुत्थि-अगुस्वउदुव उवपाद-परपाहुत्तास-पसरम-
 विहायगइ-त्तस-वाटर-पन्नवत्त-पतेपसरि भिर-सुइ-सुमग-सुत्तर-अन्नेज्ज भिमिप्पसु देवगइ-देव

देवायुका पूर्वमे उद्य य और पश्चात् वन्य वृक्षिष्ठ होता है क्योंकि, अममत्त और
 असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे वन्य व उद्यका वृक्षेष्ट देखा जाता है । सब
 गुणस्थानोंमें परोक्षसे ही वन्य होता है क्योंकि, अपने उद्यके होनेपर उसके वन्यका
 अत्यन्ताभाव है । उसका निरन्तर वन्य होता है क्योंकि अन्तर्मुहूर्तके पिता उसके
 वन्यविधामका अभाव है । मिच्छादृष्टिके उर्धवास साक्षात्तसम्यग्दृष्टिके आकाशीस और
 असंयतसम्यग्दृष्टिके आकाशीस उत्तर प्रत्यय हैं क्योंकि यहाँ वैदिकिक, वैदिकिकमिध धीव
 रिक्कमिध आर्मण काययोग पुरुषवेद और मनुसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । असंयतसम्य
 ग्दृष्टि गुणस्थानके ऊपर पुरुषवेद मनुसकवेद और आहारकदिकके बिना ओषधप्रत्यय ही
 कइना चाहिये । ओष प्रत्ययपरकपल सुगम है । सर्वत्र देवगतिसे समुक्त वन्य होता है
 क्योंकि, वन्य गतियोंके साथ उसके वन्यका विरोध है । तिर्येव और मनुष्य मिच्छादृष्टि,
 साक्षात्तसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि एवं संयतासंयत स्वामी हैं क्योंकि, वन्यव
 स्थित जीवोंके उसके वन्यका विरोध है । उपरिम गुणस्थानयत्नी मनुष्य ही स्वामी हैं
 क्योंकि, वन्य गतियोंमें महागतियोंका अभाव है । वन्याध्यान सुगम है । अममत्तकासके
 संकपातके माग आकर वन्य वृक्षिष्ठ होता है क्योंकि, ऐसा सूत्रानुमारी शुद्ध उपदेश
 है । सादि व अद्भव वन्य होता है ।

देवगति पंचेतिद्रव्यजाति वैदिकिक, तैजस व अर्मण शरीर, समवतुरअसंस्थाव
 वैदिकिकशरीरायोगांग बर्ष गन्ध रस स्पर्श देवगतिमायाप्यानुपूर्वी अगुस्वउदुव कपमाव
 परमाव उच्छवास प्रशस्तविहायोगति अस वाटर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर, स्थिर, धुम
 सुमग सुत्तर, आदेय व निर्माण इनमेंसे देवगति देवगतिमायाप्यानुपूर्वी, वैदिकिकशरीर

मिच्छादिद्विष्टि देवा चउत्तिहो । उरि तिनिहो, धुरवधामावाहो । हस्म-रदीमं सत्ररव सादि
बद्धा, बद्धवधेविवाहो ।

मनुस्साउवस्म पुय्यं वंधो पच्छ उरओ वोत्तिहो, असज्जदसम्मादिद्विष्टि-वधियेद्विष्टि
जहाकमण वंधोदयवोच्छेदरसवाहो । मिच्छादिद्विष्टि-सासणमम्मादिद्विष्टि सुोदय-परोदण वंधो ।
असज्जदसम्मादिद्विष्टिमु परोदण्वेव । कुदो ? सामाधियादा । सत्तरव वंधो विरतरो, जहणवध
कालस्म वि अतोमुदुत्तपमानुबलमाहो । मिच्छादिद्विष्टि पंचास,मामजस्म पचेतात्मीम पववा
ओराटिय-वेठभियमित्स-कम्म-एकपयोग-पुरिम अर्जुसपपञ्चयाणग्मावाहो । असज्जदसम्मा-
दिद्विष्टि चार्हिस पञ्चमा ओषाण्वपमु ओराटिय-ओराटियमित्स-वेठभियमित्स-कम्म-एक
पयोग-पुरिस पवुमयवेदाणममावाहो । सेस सुगम । मण्ये वि मणुमगाइसंहुतं पव वधति,
अण्णगाहि सह विरोहाहो । तिगाइमिच्छादिद्विष्टि-सासणमम्मादिद्विष्टिओ सामी । असज्जदसम्मा
दिद्विष्टिओ देवा पेव सामी अण्णरियत्तिवेदोदइस्सअ सम्मादिद्विष्टिअ मनुस्साउवस्म वधामावाहो ।
बंधाणं बंधविषद्विष्टिअ च सुगमं । सत्तरव सादि-अदुओ वंधो ।

मय और मनुष्याका मिच्छादि गुणस्थानमें जाग प्रकाशका बन्ध होता है । अपरिम
गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि वहाँ मूत्र बन्धका अभाव है । हाथ
और रसिका सर्वत्र सादि व असुख बन्ध होता है क्योंकि वे असुखरन्धी हैं ।

मनुष्याका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय स्पृष्टिअ होता है क्योंकि असपत
सम्पत्ति और अनिष्टविकरण गुणस्थानोंमें कमसे उत्तम बन्ध व उदयका स्पृष्टिअ देखा
जाता है । मिच्छादि और सासणसम्पत्ति गुणस्थानोंमें स्वेत्य परोक्षसे बन्ध होता है ।
असपतसम्पत्तिपूर्वमें परोक्षसे ही बन्ध होता है क्योंकि, देसा इवमाव ही है । सर्वत्र
निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि उसका अभाव बन्धकास में अस्तुर्मुहूर्त प्रमाण पाया
जाता है । मिच्छादिके पंचास और सासणसम्पत्तिके पंचासोंस प्रत्यक्ष है क्योंकि,
वहाँ भौतिकमिष्ट वैकिकमिष्ट कार्मिक काययोग पुरुषवेद और सर्वसक्रेव प्रत्ययोंका
अभाव है । असपतसम्पत्तिपूर्वमें बाह्योस प्रत्यक्ष है क्योंकि ओषप्रत्ययोंमें भौतिक
भौतिकमिष्ट वैकिकमिष्ट कार्मिक काययोग पुरुषवेद और सर्वसक्रेव प्रत्ययोंका
अभाव है । शेष प्रत्ययप्रकरण सुगम है । सब ही मनुष्यगतिमें संयुक्त ही बांधन हैं
क्योंकि, अन्य गतिपात्रे साथ उसका बन्धका विधीय है । तीन गतिपोंके मिच्छादि और
सासणसम्पत्तिके स्वामी है । असपतसम्पत्तिके वध ही स्वामी हैं क्योंकि अन्य
गतिवोंमें अविज्ञेय बुद्ध सम्पत्तिपोंके मनुष्याके बन्धका अभाव है । बन्धाणान
और बन्धविषद्विष्टिअ सुगम है । सर्वत्र सादि व अदुख बन्ध होता है ।

विषा बंधुवर्तमादो । उवरिमिसु गुणद्वयेषु सोदप्येष, अपन्वत्तयाए तेसिं गुणात्ममावादो । मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वि-सम्माभिच्छाद्वि-असन्नवसम्मादिद्वि-सुमगादेज्जापं सोदय-परोद्वो बंधो । उवरि सोद्वो चैव, सामावियादो ।

तेजा-कम्मइयसरीर-वण-गंध-रस-फ्रस-अगुरुअल्लुअ-उवपाद-विमिषाणं बंधो भिरं तरी, धुववचिवादो । पर्विदियमादि-परपादुस्सास-पसत्पविहापगइ-तस-बादर पन्वत्त-पत्तयसरीर-सुमग-सुस्सर-मादेज्ज-देवगाइ-देवगाइपावोम्माधुपुष्वी-वेठवियसरीर-अंगोवंगाण मिच्छाद्विद्वि-संतार-भिरंतरो बंधो । कर्षं भिरंतरो ? अ, असंखेज्जवाठअतिरिक्ख-अणुस्सेसु भिरंतरबंधु वर्तमादो । एवं सासणस्स वि वत्तथ । पवरि पर्विदियमादि-परपादुस्सास-तस-बादर-पन्वत्त-पत्तयसरीराण बंधो भिरंतरो चैव । सम्माभिच्छाद्विद्वि-उवरिमां सासणमंगो । अवरि देवपइ-वेठवियसरीर-समन्नतरससंठण-वेठवियसरीरअंगोवंग-देवगाइपावोम्माधुपुष्वी-सुमग-सुस्सरदेज्जापं भिरंतरो बंधो, पडिवक्खपयडिअमावादो । भिर-सुमापं मिच्छाद्विद्वि-अव पमत्तसंजदो चि संतरो बंधो, पडिवक्खपयडिअधुवर्तमादो । उवरि भिरंतरो, पडिवक्ख-

भी इनका उद्भवके बिना बन्ध पाया जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें जोदयसे ही बन्ध होता है क्योंकि अपर्याप्तकासमें उन गुणस्थानोंका अभाव है । मिच्छाद्वि, सासादनसम्यग्द्वि, सम्यग्मिध्याद्वि और असंयतसम्यग्द्वि गुणस्थानोंमें सुमग व आदेयका स्वादय परोदय बन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें जोदय ही बन्ध होता है क्योंकि येसा लभाव है ।

तेजस व अमर्ष शरीर बंधं गन्ध रस स्पर्श अगुरुअल्लु, उपपात और निर्माणका बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि, वे धुवबन्धी हैं । पंचेन्द्रियवाति परचत्त उच्छ्वास प्रशस्तबिहायोगति अस बाह्व, पर्याप्त प्रत्येकशरीर सुमग सुस्वर, आदेय, देवगति देवगतिप्रयोग्यानुपूर्वी वैद्वियकशरीर और वैद्वियकशरीरंगोपांगका मिच्छाद्वि गुणस्थानमें सास्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

शुंक्ष— निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—जहाँ क्योंकि, असंख्यातवर्णायुष्क तिर्यक् और मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इसी प्रकार सासादन गुणस्थानक मी कहना चाहिये । विशेषता केवल यह है कि पंचेन्द्रियवाति परमात उच्छ्वास अस बाह्व, पर्याप्त और प्रत्येक-शरीरका बन्ध निरन्तर ही होता है । सम्यग्मिध्याद्विसे लेकर उपरिम गुणस्थानोंकी प्रकृति सासादनसम्यग्द्विसे समान है । विशेष यह है कि देवगति वैद्वियकशरीर, समन्नतरअसंस्थान वैद्वियकशरीरंगोपांग देवगतिप्रयोग्यानुपूर्वी सुमग सुस्वर और आदेयका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि इसकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । स्थिर और धुमका मिच्छाद्विसे लेकर प्रमत्तसंतत तक सास्तर बन्ध होता है क्योंकि यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । ऊपर इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,

यद्वाभोगाणुपुष्पीयेठभियसरीर-येठभियसरीरभंगोर्गगां पुष्यमुद्रबो पञ्च बंधो बोधि-
ज्जदि, अपुष्पांसंभदसम्माइटीसु दवगइपाभोगाणुपुष्पीए अपुष्प-सासमेसु क्रमेण बंधो-
इयवोन्तेहुवर्तमादो । तेजा-कम्मइयसरीर-समभतरसंयत्त वण्ण-गंध रस फल-अगुल्लभुव
उवपाद-परपाद उस्सास-पसत्त्वविहायगइ-पसेयसरीर-भिर-सुह-सुस्मर-भिमिण्णं पुष्यं बंधो पञ्च
सदबो बोधिज्जदि, अपुष्प-अभियसीसु क्रमेण बंधोइयवोन्तेहुवर्तमादो । पंविदियज्जदि-तस
पाद-पन्नच-सुमगादेन्जां पि एवं वेव वत्तय्यं ।

देवगइ-देवगइपाभोगाणुपुष्पि-येठभियसरीर-येठभियसरीरभंगोर्गगां परोदएमेव
सम्पत्त बंधो, सोदएमेवसिं बंधवितोहादो । पंविदियज्जदि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फल
अगुल्लभुव-तस-पाद-पन्नच-भिर-सुम-भिमिण्णं सोदबो सम्पगुणइमेसु बंधो, एत्थेवसिं
सुवेदयत्तसंभदो । समभतरसंयत्त-पसत्त्वविहायगइ-सुस्मर-सम्पत्त सोदय-परोदबो
बंधो, उमयहा पि ववाविरोहादो । उवपाद-परपाद-उस्सास-पसेयसरीर-मिच्छदि-
सासपसम्माइटीसु बंधो सोदय-परोदबो, विम्मइमदीए केसिंभि अपन्नचसंभे च उदएव

और वैदिककहारीतंगोपांगक्य पूर्वमें उक्त और पश्चात् बन्ध व्युत्पिन्न होता है क्योंकि,
अपूर्वकरण और अस्पर्शसम्पत्ति गुणस्वातंत्र्यमें तथा देवगतिप्राप्त्यनुपूर्वीके अपूर्वकरण
और सासाधनसम्पत्तिगुणस्वातंत्र्यमें क्रमसे बन्ध व उक्तक्य व्युत्पेक्ष पाया जाता है । ऐश्वर्य
व काम्य कहीर, समभतरसंयत्त बर्ण गन्ध रस स्पर्श अगुरुल्लभु, उपमात परमात
उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति प्रत्येककहीर, स्थिर, शुभ सुखर और निर्मात्र इनक्य
पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उक्त व्युत्पिन्न होता है क्योंकि, अपूर्वकरण और अस्पर्शसंभे
गुणस्वातंत्र्यमें क्रमसे इनके बन्ध व उक्तक्य व्युत्पेक्ष पाया जाता है । ऐश्वर्यप्राप्ति
वस बादर, पर्याप्त सुमग और भावबके भी इसी प्रकार कहा चाहिये ।

देवगति देवगतिप्राप्त्यनुपूर्वी वैदिककहारीर और वैदिककहारीतंगोपांगक्य
परोदपसे ही सर्वत्र बन्ध होता है क्योंकि स्वोक्तपसे इनके बन्धका विरोध है । ऐश्वर्यप्राप्ति
ऐश्वर्य व काम्य कहीर बर्ण गन्ध रस स्पर्श अगुरुल्लभु वस बादर, पर्याप्त स्थिर, शुभ
और निर्मात्र सब गुणस्वातंत्र्यमें स्वोक्त बन्ध होता है क्योंकि वहां ये प्रकृतिवां कुवेत्तपी
देखी जाती हैं । समभतरसंयत्त प्रशस्तविहायोगति और सुखरका सर्वत्र स्वोक्त
परोदक्य बन्ध होता है क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके बन्धका विरोध यहीं है । उपमात
परमात उच्छ्वास और प्रत्येककहीरक्य बन्ध मिथ्याकहि और सासाधनसम्पत्तिगुण
गुणस्वातंत्र्यमें स्वोक्त परोदक्य होता है, क्योंकि विमहगतीमें और किन्हीं अपर्याप्तकाम्यमें

विष्णु बधुवर्त्तमादौ । उवरिमेसु गुणद्वयेषु सोदयेन, अपञ्चसद्वप तेसि गुणानममावादौ । मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वि-सम्मामिच्छाद्वि-असमदसम्मादिद्वीसु सुमगादेन्नापं सोदय परोदयो बंधो । उवरि सोदयो भेव, सामानियादौ ।

तेजा-कम्मादयसरीर-वण्ण-नास-रस-फस-अगुरुमत्तुअ-उवपाद-विमिणार्थं बंधो गिरं तरो, धुववचिदादौ । पंचिदियजादि-परपादुस्सास-पसस्यविहायगइ-तस-बादर-पन्चस-पत्तेयसरीर-सुमग-सुस्वर-आदेय-देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुब्बी-वेठवियसरीर-अंगोवगार्थं मिच्छाद्विद्वि-सांतर-भित्तरो बंधो । कथं भित्तरो ? प, असंखेन्नावाठअतिरिक्ख-अणुस्सेसु भित्तरोबधु वर्त्तमादौ । एव सासणस्स वि वत्तव्यं । नवरि पंचिदियजादि-परपादुस्सास-तस-बादर-पन्चस-पत्तेयसरीराण बंधो भित्तरो भेव । सम्मामिच्छाद्विपहुडि उवरिभाणं सासणमंगो । नवरि देवगइ-वेठवियसरीर-समसउरससंयण-वेठवियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुब्बी-सुमग-सुस्वरदेवगइ भित्तरो बंधो, पडिबक्खपयडिबवाभावादौ । विर-सुमापं मिच्छाद्विपहुडि जाव पमससमदो सि सांतरो बंधो, पडिबक्खपयडिबधुवर्त्तमादौ । उवरि भित्तरो, पडिबक्ख

मी इनका उवपके बिना बन्ध पाया जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें सोदयसे ही बन्ध होता है क्योंकि, अपर्याप्तकासमें उस गुणस्थानोंका समाव है । मिच्छाद्वि सासादनसम्यग्द्वि, सम्यग्मिच्छाद्वि और असयतसम्यग्द्वि गुणस्थानोंमें सुमग व आदेयका स्वादय परोदय बन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें सोदय ही बन्ध होता है क्योंकि येसा समाव है ।

तेजस व कामज शरीर, वर्ण गन्ध रस स्पर्श अगुरुमत्तु अपघात और विमाणका बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि, वे धुवबन्धी हैं । पंचेन्द्रियजाति परघात उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति बस बादर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर, सुमग सुस्वर, आदेय, देवगति देवगतिप्रयोग्यानुपूर्वी कैकिपिकशरीर और कैकिपिकशरीरगोपांगका मिच्छाद्वि गुणस्थानमें सांतर-निरन्तर बन्ध होता है ।

धुक्क—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—जहाँ क्योंकि, असंख्यातवर्षाणुक्क तिर्यच और मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इसी प्रकार सासादन गुणस्थानक भी कहना चाहिये । विशेषता केवल यह है कि पंचेन्द्रियजाति परघात उच्छ्वास बस बादर, पर्याप्त और प्रत्येक-शरीरका बन्ध निरन्तर ही होता है । सम्यग्मिच्छाद्विस केकर उपरिम गुणस्थानोंकी प्ररूपणा सासादनसम्यग्द्विके समान है । विशेष यह है कि देवगति कैकिपिकशरीर, समसतुरससंस्थान कैकिपिकशरीरगोपांग देवगतिप्रयोग्यानुपूर्वी सुमग सुस्वर और आदेयका निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, इसकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका समाव है । स्थिर और धुमक मिच्छाद्विस केकर प्रमससंयत तक सांतर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । ऊपर इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,

पयस्विषाभावाद्दे । पयसा सुममा, बहुसो परुविदध्यो । अवरि देववह-नेठभियदुगणं
नेठभिय-नेठभियमिस्स-ओरत्तिमिस्स-कम्मइयपप्पया पुरिस नमुसपवेदेहि सह बबवेदया ।
सेसं सुगमं ।

देवगह-नेठभियदुगणमि सम्पत्त्य देवगहसंजुतं वसति । अवरि नेठभियदुगं मिष्म-
इही' देव-मिस्सगहसंजुतं वसति । समचरससंजुत-पसत्यविद्यायय-भिर-सुम-सुमय-सुस्स-
भादेवज्जणमाओ मिष्मदिहि सासवसम्मादिहिणो तिगहसंजुतं, मिरयपईए सह वषाभावाद्दे ।
सम्ममिष्मदिहि-वसवइसम्मादिहिणो देव-मनुसगहसंजुतं । सेसा देवगहसंजुतं वसति ।
मवसेसाओ पयसीओ मिष्मइही चरगहसंजुतं, सासवो तिगहसंजुतं, सम्मामिष्मदिहि-
वसवइसम्मादिहिणो देवगह-मनुसगहसंजुतमुवरिमा देवगहसंजुतं वसति ।

देवमह-नेठभियदुगणं तिरिक्ख-मनुसमिष्मइहि-सासवसम्माइहि सम्मामिष्मइहि-
वसवइसम्माइहि-संजुतसंजुता सामी । उपरिममज्जसा चेव, वप्पस्य तेस्सिमावाओ । बवसेसाओ
पयसीओ तियइमिष्मदिहि-सासवसम्मादिहि-सम्मामिष्मदिहि-वसवइसम्माइही दुगहसंजुता

वही प्रतिपन्न प्रकृतिचौके वप्यका ममाव है ।

प्रत्यक्ष सुगम है क्योंकि उक्तकी प्रकृपणा बहुत बार की जा चुकी है । विशेषता यह है कि देवपति और वैदिकपितृविकके वैदिकिक, वैदिकमिमिध और वैदिकमिमिध और कर्मज प्रत्ययोंको पुन्य और मनुसक केचौके साथ काम करना चाहिये । हाय प्रत्यक्षप्रकृपणा सुगम है ।

देवपतिविक और वैदिकपितृविक सर्वत्र देवपतिसे संयुक्त वसत है । विशेषता इतनी है कि वैदिकपितृविकके मिष्माइहि कीवही जीव देव व सरक गतिस संयुक्त बांधते हैं । सम-
चरससम्पन्न प्रशास्त्रविहायोगति स्थिर, सुम सुमग सुस्वर और भादेव नामकर्मोंको मिष्माइहि व सासावसम्पन्नइहि तीन गतिचौसे संयुक्त बांधते हैं । क्योंकि, मरकगतिके साथ इनके वप्यका ममाव है । सम्पगिमिष्माइहि और वसवतसम्पन्नइहि देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बांधत हैं । दोष गुणस्वामवर्ती देवगतिम संयुक्त बांधते हैं । दोष प्रकृतिचौके मिष्माइहि चारों गतिचौसे संयुक्त सासावसम्पन्नइहि तीन गतिचौसे संयुक्त सम्प गिमिष्माइहि और वसवतसम्पन्नइहि देवपति एवं मनुष्यगतिसे संयुक्त तथा उपरिम गुणस्वानवर्ती देवपतिसे संयुक्त बांधते हैं ।

देवगतिविक और वैदिकपितृविकके तियव व मनुष्य मिष्माइहि सासावसम्पन्नइहि, सम्पगिमिष्माइहि, वसवतसम्पन्नइहि और वसवतसंबत स्वामी हैं । उपरिम गुणस्वानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं । क्योंकि, वप्य गतिचौमें उक्त गुणस्वानवर्ती ममाव है । दोष प्रकृतिचौके तीन गतिचौके मिष्माइहि सासावसम्पन्नइहि और वसवतसम्पन्नइहि दो गतिचौके

संबन्ध मनुस्यइसंबन्ध न सामी । संबन्धानं संबन्धविगृह्यार्थं न सुगमं । ध्रुवबन्धनि मिच्छादिद्विभि
 र्बन्धो न तन्निहो । अण्णस्य तिबिहो, पुष्यचामात्रो । नवसेसाणं पयसीं बन्धो सादि-अद्भुतो,
 अद्भुतबन्धितादो ।

आहारसरिर-आहारसरिरगोवर्णं ओषधरूपमवहारिय पक्ष्यं । तित्थयरस्स वि
 ओषधरूपं नैव पादस्य वक्ष्यं । नवरि वेठभिय-वेठभियमिस्स-ओसात्थियमिस्स-कम्मइय-
 क्कययोग-पुरिस-अवुंसयवेदो अत्तं ब्रह्ममादिद्विपञ्चपसु अववेदम्भा । अण्णस्य पुरिस-अवुंसय
 पञ्चया नैव अववेदम्भा । तित्थयरवषस्स मनुसा नैव सामी, अण्णरित्थियेदोदइत्थयं
 तित्थयरस्स ब्रह्मामात्रो । अपुण्यकरणउवसामपसु तित्थयरस्स बन्धो, न कच्छवपसु, इत्थि-
 वेदोदइयं तित्थयरकम्मं बंधमात्राणं स्वगसेविसमारोहणामात्रो ।

नह्य इत्थिवेदोदइत्थयं सव्वसुत्तापि परुबिशानि तह्य अवुंसयवेदोदइत्थयं वि
 वक्ष्यं । नवरि सम्बत्थ इत्थिवेदमि मभिरपञ्चपसु इत्थिवेदमवपिय अवुंसयवेदो पक्खिवि
 हम्भो । अत्तं ब्रह्ममादिद्विपञ्चपसु वेठभियमिस्स-कम्मइयक्कययोगपञ्चया पक्खिविदम्भा,

संपत्तासंपत्तः, तथा मनुष्यगतिके संपत्त स्वामी हैं । ब्रह्माप्त्तान और ब्रह्मविनष्टस्थान
 सुगम हैं । भ्रुवबन्धी प्रकृतियोंका मिच्छादिष्टि गुणस्थानमें आर्य प्रकारका बन्ध होता है ।
 अण्ण गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ भ्रुव बन्धका समाव है ।
 शेष प्रकृतियोंका सावि न भ्रुव बन्ध होता है क्योंकि, वे भ्रुवबन्धी हैं ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरगोवर्णकी प्रकृष्टता ओषधप्रकृष्टताका मिश्रण कर
 कहना चाहिये । तीर्थंकर प्रकृष्टिकी भी ओषधप्रकृष्टताको ही जानकर कहना चाहिये ।
 विशेषता केवल यह है कि वैकियिक, वैकियिकमिश्र औरारिकमिश्र कर्मण क्ययोग
 पुण्यवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका असंयतसम्पन्नादिके प्रत्ययोंमेंसे कम करना चाहिये ।
 तीर्थंकर प्रकृष्टिके बन्धके मनुष्य ही स्वामी हैं क्योंकि अन्य गतियोंमें अविदोह्य युक्त
 जीवोंके तीर्थंकर प्रकृष्टिके बन्धका समाव है । अपूर्वकरण वपशामकोंमें तीर्थंकर प्रकृष्टिका
 बन्ध होता है स्वयंमें नहीं, क्योंकि, अविदोहके उदयके साथ तीर्थंकरकर्मोंको बांधनेवाले
 जीवोंके स्वयंमेंहीके आरोहणका समाव है ।

जिस प्रकार अविदोह्य युक्त जीवोंकी अपेक्षा सब जीवोंकी प्रकृष्टता की गई है
 वही प्रकार नपुंसकवेदोदय युक्त जीवोंके भी कहना चाहिये । विशेषता केवल इतनी है
 कि सर्वत्र अविदोहमें कोई भ्रुव प्रत्ययोंमेंसे अविदोहको कम कर नपुंसकवेदको जोड़ना चाहिये ।
 असंयतसम्पन्नादिके प्रत्ययोंमें वैकियिकमिश्र और कर्मण क्ययोग प्रत्ययोंको जोड़ना

पेरूपसु बाठवर्णवक्त्रेण सम्मादिष्टीजमुपपिदंसबाधो । पिरयाठ-पिरयदुग-इतिवेदानं सम्मत्त्वं
पुरिसवेदस्तेव परोक्षेण बंधो । ननुसयवेदस्स सोदपण । एइदिय-बीइदिय-तीइदिय-वठरिदिय-
बादि-भादाव-बावर-सुहुम-अपम्बस-साहारबाणं सोदय-परोक्षो बंधो, एदेसु वुत्तहायेसु एदेसि
वडिबक्खइयेसु च ननुसयवेदुदयदंसबाधो ।

तिरिक्खगाइ तिरिक्खण्णपाभोग्गालुपुप्पि-बीचागोदाणं सांतर भिंतरो बंधो । कुरो ?
तेउ-याठकइएसु ससमपुइविभेरएसु च दोसु वि गुणइयेसु भित्तरबंधुवत्तमादो । मयुसमइ
मनुसयइपाभोग्गालुपुप्पीण सांतर-भित्तो मिच्छादिद्धि-सासणसम्मादिष्टीसु बंधो । कुरो ?
आनन्दमिदेवेइति ननुसयवेदोदइत्तमगुत्सेमुपण्णाण तित्थयरस्तकम्मेण पेरूपसुपण्णमिच्छ-
इष्टीणं च भित्तरबधुवत्तमादो । भोरात्थिसरी-भोरात्थिसरीगोवाणं मिच्छादिद्धि-सासण-
सम्मादिष्टीसु सक्ककुमारदिदेव-भेरए अस्सिदूज भित्तो बंधो । अन्मत्थ सांतो वत्थो,
असंखेन्ववासाउएसु ननुसयवेदुदयामावाधो । तेउ-पम्म-सुक्कत्तेरिसयननुसयवेदोदइत्ततिरिक्ख-
मनुसमिच्छादिद्धि-असणे अस्सिदूज देवगाइ-वेठत्थिसरीरुमाणं भित्तो बंधो वत्थो ।

आदिपे कर्णोकि, आयुवन्धके वक्त्रेण सम्यग्दृष्टिर्बोध्यै मारुक्पिर्मे उत्पत्तिं देव्यै जाती है ।
मारुकायु, मारुकातिष्ठिक और स्त्रीवैश्वका सर्वत्र पुत्रवन्दके समान परोक्षवक्त्रे बन्ध होता
है । ननुसकवेदका स्वोदवक्त्रे बन्ध होता है । एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुर्न्द्रिय
अस्ति आताप स्वाधर, सूक्ष्म, अपर्वात और साधारणका स्वोदय-परोक्ष बन्ध होता है
कर्णोकि, इव वक्त्रे स्वार्णोर्मे तथा इवके प्रतिपक्ष स्वार्णोर्मे ननुसकवेदका उदय देखा जाता है ।

तिर्यग्गति तिर्यग्मातिमाभोग्गानुपूर्वी और नीचगात्रका सान्तर-विरन्तर बन्ध होता
है कर्णोकि, तेज च वायु कणिक तथा ससम पृथिवीके मारुक्पिर्मे मिच्छादृष्टि च सासादन
सम्यग्दृष्टि इन दोनों ही गुणस्वार्णोर्मे विरन्तर बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगति और
मनुष्यप्रतिप्रापेत्मानुपूर्वीका मिच्छादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्वार्णोर्मे सान्तर
विरन्तर बन्ध होता है कर्णोकि, आबतादिक देवोर्मेसे ननुसकवेदोदय युक्त मनुष्योर्मे उत्पन्न
हूप तथा तीर्थंकर मङ्गलिकी सत्ताके साथ मारुक्पिर्मे उत्पन्न हूप मिच्छादृष्टिर्बोध्यै निरन्तर
बन्ध पाया जाता है । औदारिकशरीर और औदारिकशरीरतंगोपांगका मिच्छादृष्टि और
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्वार्णोर्मे सनत्कुमारदिदेव च मारुक्पिर्बोध्यै आश्रयकर निरन्तर
बन्ध होता है । अन्मत्थ सान्तर बन्ध कहना आदिपे कर्णोकि असंख्यतावर्णानुपूर्वोर्मे
ननुसकवेदके उदयका समान है । तेज पद्म और शुक्ल देव्यावक्त्रे ननुसकवेदोदय युक्त
तिर्यग् च मनुष्य मिच्छादृष्टि एव सासादनसम्यग्दृष्टि और्बोध्यै आश्रयकर देवमतिष्ठिक और
वैदिकशरीरिका विरन्तर बन्ध कहना आदिपे ।

उपधात्-परभादुस्सास-पत्तयसरीरं असजदसम्मादिष्टीसु सोदय परोदयो पंचो,
 पिरयर्गए अपन्जत्तासंजदसम्मादिष्टीसु वि एदासिं वभुवत्तमादो । तस बादर-पन्वत्त-पत्तयसरीर
 पंचिदियवादीण मिन्मइष्टिम्हि वचो सोदय-परोदयो, यावर मुहुमापन्वत्त-साहारण-विगर्त्तिदियसु
 एदासिं वभुवत्तमादो । सप्पपयदीणं वचस्स जत्थि देवाण सामित्त तत्थ पवुसयवेदुदयामामादो ।
 एर्दिय-आदाव-वावरणं तिरिक्खगइ-मणुसगइ-मिच्छाद्विष्टी चेव सामी, देवा ण होंति; तेसु
 पवुसयवेदुदयामामादो । वण्णो वि जदि मेदो जत्थि सो समालिय वत्तम्भो ।

अथा इतिवेदस्म परूवणा कदा तथा पुरिसवेदस्स वि कायन्वा । अवरी ओभपवपसु
 इत्थि-अवुंसयवेदप चया चेव सप्पगुणद्वारेणु ववपेद्वन्वा, सेसासेसपच्चयार्णं तत्थ संभवादो ।
 इत्थि-पवुसयवेदाण पंचो परोदयो, पुरिसवेदस्स सोदयो । उपधात्-परभादुस्सास-पत्तय-
 सरीरमसंजदसम्मादिष्टिम्हि सोदय-परोदयो वचो । तित्थयरस्स परूवणा ओपतुत्थ । एव
 मण्णो वि जदि मेदो जत्थि सो समालिय वत्तम्भो ।

उपधात् परधात् उच्छ्वास भीर प्रत्येकशरीरका असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्त्रोत्र
 परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि, नरकगतिमें अपर्याप्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें भी इनका बन्ध
 पाया जाता है । अस बादर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर और पंचेन्द्रियजातिका मिष्ट्यादृष्टि
 गुणस्थानमें स्त्रोत्र-परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि, स्वावर, सूक्ष्म अपर्याप्त साधारण भीर
 विकलेश्चियोंमें इनका बन्ध पाया जाता है । सब प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी देव नहीं है
 क्योंकि उनमें नपुंसकवेदके उद्भवका अभाव है । एकेन्द्रिय माताप भीर स्वावरके तिर्यगति
 व मनुष्यगतिक मिष्ट्यादृष्टि ही स्वामी हैं देव नहीं हैं । क्योंकि, उनमें नपुंसकवेदके
 उद्भवका अभाव है । मन्थ मी यदि मेव है तो उसको धारणकर कहना चाहिये ।

जिस प्रकार श्रुतिवेदकी प्रकल्पना की गई है उसी प्रकार पुरुषवेदकी भी करना
 चाहिये । विशेष इतना है कि ओभप्रत्ययोंमस श्रुति भीर नपुंसकवेद प्रत्ययोंको ही सब
 गुणस्थानोंमें बन्ध करता चाहिये क्योंकि, दोष सब प्रत्ययोंकी वहाँ सम्भावना है । श्रुतिवेद
 भीर नपुंसकवेदका बन्ध परोक्ष होता है । पुरुषवेदका स्त्रोत्र बन्ध होता है । उपधात्
 परधात् उच्छ्वास भीर प्रत्येकशरीरका असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्त्रोत्र परोक्ष
 बन्ध होता है । तीर्थकर प्रकृतिकी प्रकल्पना ओभके समान है । इसी प्रकार मन्थ मी यदि
 मेव है तो उसको स्मरण कर कहना चाहिये ।

१ वमदी दृष्टि वचो इति पाठः ।

२ वतिगु वा समरिष वमदी वा समरिष इति पाठः ।

अवगदवेदएसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-जसकिति
उच्चागोद पंचतराह्याण को वंधो को अवधो ? ॥ १७८ ॥

सुमं ।

अणियट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराह्यउवसमा स्ववा वंधा ।
सुहुमसांपराह्यसुद्धिसजदद्दाए चरिमसमयं गतूण वंधो वोन्धिञ्जदि ।
एदे वधा, अवेससा अवधा ॥ १७९ ॥

देसामासियसुत्तमेदं वचद्वार्यं पंचविण्हद्वार्यं होम्यं पंच परूवप्पाहो । तेवेदेव
सुद्धस्वपरूवप्पा करिदे । तं वधा— एदमिं सोत्तसुद्धं पयडीमं पुण्यं वंधो पप्पअ उदवो
वोन्धिञ्जदि, सहोवठमाशं । एत्थुवठ मत्ती माहा—

आगमवचस्स साह इदियवचस्स अउससीया जे ।

देवा य ओदियवचस्स कककवचस्स जिवा सुप्पे ॥ २४ ॥

पंचपाणावरणीय-चउदसणावरणीय-पंचतराह्य-जसकिति-उच्चागोदार्ण सोदवो वेव

अरगनवेदियेमिं पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, वसुध्विति, उच्चगोत्र और
पांच मन्तरापन्न और वन्धक और और वचम्बक है ? ॥ १७८ ॥

यह सब सुगम है ।

अनिवृत्तिक्रममे लेकर सूक्ष्मसाम्प्रदायिक उपशमक व क्षपक तक वन्धक है । सूक्ष्म-
साम्प्रदायिकसुद्धिसंयतकलक अन्तिम समपक्षे जाकर वन्ध स्पुच्छिन्न होता है । ये वन्धक हैं,
अपे वचम्बक हैं ॥ १७९ ॥

यह सब देशात्मर्शक है क्योंकि, वह वचमाध्यात और वचमविषयस्यान् इन दोनोंका
ही प्रकटन करता है । इसीप्रकार इससे सुचित मर्यादा प्रकटन करता है । वह इस प्रकार
है— हम सातह प्रकटिपर्यंका पूर्वमे वच और पद्यान् उद्यप स्पुच्छिन्न होता है क्योंकि,
बिसा पाया जाता है । यहाँ अपयुक्त गाथा—

साधु आगम रूप वसुसे संयुक्त तथा त्रितमे सब जीव है वे इन्द्रिय-वसुसे
भारक ज्ञान है । वचमिज्ञान रूप वसुसे सहित वेव, तथा केवचमाध्यात रूप वसुसे युक्त सब
जिन होते हैं ॥ २४ ॥

पांच ज्ञानावरणीय चार दर्शनावरणीय पांच अन्तरापन्न वचम्विति और वच

बंधो, एत्थ एवासिं धुबोदयत्तंदसणादो । भिरतरो बंधो, एत्थ बधुवरमाभावादो । पञ्चया सुगमा, ओषम्मि परुविदत्तादो । अगइसंजुत्तो बंधो, अवगदवेवेसु पदुब्भं गइयं बंधामावादो । मज्झसा भेव सामी, अण्णत्थ स्ववगुवसामगाणममावादो । बधद्धानं बधविणट्ठहाय च सुगमं । पञ्चणाणावरणीय चउदंसणावरणीय-पञ्चतराइयाणं तिविहो बंधो, धुवत्तामावादो । अवक्खित्ति-उच्चगोदाण सादि बद्धो, बद्धवपपितादो ।

सादावेदणीयस्स को बंधो को अवधो ? ॥ १८० ॥

सुगम ।

अणियट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली बधा । सजोगिकेवल्लि-अद्दाए चरिमसमय गत्तूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ १८१ ॥

एवस्स अत्थो वुच्चदे । तं अहा— पुण्य बंधो पण्ण सरब्भो बोच्छिप्पदि, सजोगि

गोत्रका स्तोत्र्य ही बन्ध होता है क्योंकि यहाँ हम प्रकृतियोंके सुबोद्धित्व देखा जाता है । बन्ध इसका निरन्तर होता है क्योंकि, यहाँ बन्धविधामक्य अभाव है । अत्यय सुगम है क्योंकि, ओषममें इनकी प्रकृपजा की जा चुकी है । अगतिसंयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अणगतबन्धियोंमें चारों गतियोंके बन्धका अभाव है । मज्झ्य ही स्वामी हैं क्योंकि, अण्य गतियोंमें संपक और उपशामक्येक्य अभाव है । बन्धाज्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । पाँच ज्ञानावरणीय चार दर्शनावरणीय और पाँच अन्तरायका तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि भूय बन्धका अभाव है । पञ्चकोटि और उच्चगोत्रका सात्ति च समुच्च बन्ध होता है क्योंकि ये समुच्चबन्धी हैं ।

सादावेदनीयक कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १८० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनिष्टुत्तिकरपसे लेक्ख सयोगकेवली तक बन्धक हैं । सयोगकेवल्लिक्खत्ते अन्तिम समयको आकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, सेव अबन्धक हैं ॥ १८१ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है— पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उद्घ्य व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि सयोगकेवली और अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें क्रमसे

अगदसंस्तुतो, एव च उगाधवधामावाधो । पञ्चया सुगमा, बोधपञ्चपरिहितो विसेसामावाधो । मनुष्या चैव सामी, अण्णत्वेदेसिममावाधो । वधद्वयं न स्थि, एकस्मि अद्वयविरोधादो । अथवा अस्थि, पञ्चवद्विषय ए अवलम्बिन्ब्रह्मणे अगदवेदाणमभियष्टीर्ण -सस्तेजाणमुत्तमादो अणिपट्टिकर्त्त संस्तेजाणि स्रष्टाणि करिय तस्य पदुखेसु अद्वयस्तिष्ठु एगस्रडावसेसे केध संजलणस्स वधो वोच्छिज्जो । तिविहो वधो, धुवन्धिचादो ।

माण मायासजलणाण को वधो को अवधो ? ॥ १८४ ॥

सुगमं ।

अणियट्टी उवसमा स्वा वधा । अणियट्टिवादरद्वाए सेसे सेसे सस्तेज्जे भागे गतूण उधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १८५ ॥

एदासि वधोदमा समं वोच्छिज्जति, पिण्डवधाणमुदयाणुयत्तमादो । सोदय-परोदयो, उभयहा वि वधुवत्तमादो । विरंतरो, धुवन्धिचादो । अत्रगयपञ्चमो, बोधपञ्चपरिहितो अविसिद्ध-

यहाँ चारों गतियोंके बन्धका समाव है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि बोधमस्योसे यहाँ कोई भेद नहीं है । मनुष्य ही स्वामी है क्योंकि भग्न गतियोंमें अपगतवेदियोंका समाव है । बन्धाध्यान नहीं है क्योंकि एक गुणस्थानमें अध्यात्म विरोध है । अथवा बन्धाध्यान है क्योंकि पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर अपगतवेदी अनिवृत्तिकरणोंका सर्याप्त पाये जानेसे अनिवृत्तिकरणकावके संप्यात पृच्छ करके हममें बहुत खण्डोंके भीत जाने और एक जगत्के धोप रहनेपर संस्वस्तनक्षेत्रका बन्ध व्युत्पिन्न होता है । तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि वह भुवबन्धी है ।

सन्वत्तनमान और मायाका कौन पन्चक और कौन अपन्चक है ? ॥ १८४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरणवादरकत्तके श्रेय श्रेय कालमें सर्याप्त पदुमाय आकर बन्ध व्युत्पिन्न होता है । ये बन्धक हैं, श्रेय अपन्चक हैं ॥ १८५ ॥

इन दोनों प्रकृतियोंका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युत्पिन्न होते हैं क्योंकि बन्धके मय हा जानेपर इनका उदय नहीं पाया जाता । परोदय परोदय बन्ध होता है क्योंकि दोनों प्रकारसे भी बन्ध पाया जाता है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, ये

पञ्चवसादो । अगदसत्तुतो, एतत्तु चउगद्वंशामावादो । मनुससामिजो^१, अण्णत्सवगद्वेदामावादो ।
 वंशद्वानवविजो, दव्वद्वियवपविसयम्मि सण्णसंगदे अट्ठान्णुववसीदो । अपवा अट्ठान्णसम-
 ग्गिजो, अवत्तवियपग्गवद्वियजयसादो । कोपवववोप्पिग्गज्जावादो उवरिम्मट्ठान्णं सस्सेज्जववि-
 फट्ठन पणुसंहेसु अइक्कंतेसु एयसंभावसे मायव्वो वोप्पिज्जदि । पुणो सेसमेयं संहं
 सस्सेज्जववि संहववि करिय तत्थ पणुसंहेसु अइक्कंतेसु एयसंभावसे मायव्वो वोप्पिज्जदि ।
 एर कुदो वगम्भे ? सेसे सेसे सस्सेज्जामाम गंतूणे ति जिक्कयवादो वगम्भे । तिथिदो,
 पुवत्तामावादो ।

लोभसंजलणस्स को वधो को अवधो ? ॥ १८६ ॥

सुगमं ।

पुत्रवन्धो प्रकृतिपा है । प्रत्यय अवगत हैं क्योंकि बोधप्रत्ययोंसे यहाँ कार्य विशेषता नहीं
 है । अयतिसंयुक्त वन्ध होता है क्योंकि यहाँ चारों गतियोंके वन्धका समाप है । मनुष्य
 स्वामी है क्योंकि, अन्ध गतियोंमें अवगतवेदियोंका समाप है । वन्धायवान नहीं है
 क्योंकि प्रत्यापिक वपके विषयमूल सर्व संप्रहके होनेपर प्रत्यान वनता नहीं है । अयपा
 पर्यापारिक वपका अवच्छेदन करनेसे अवधानसे सहित वन्ध होता है । कायक
 वन्धप्युच्छिष्टिस्थानसे ऊपरके कायके संख्यात वन्ध करके बहुत वन्धोंको बिताकर एक
 वन्धके शेष रहनेपर मायका वन्ध प्युच्छिष्ट होता है । तत्पश्चात् शेष एक वन्धके
 संख्यात वन्ध करके उनमें बहुत वन्धोंको बिताकर एक वन्धके शेष रहनेपर मायका
 वन्ध प्युच्छिष्ट होता है ।

संक्ष—यह कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान—शेष शेषमें संख्यात बहुमात्र जाकर हम शिवपञ्चनसे उक्त
 वन्धप्युच्छिष्टिस्थान जाना जाता है ।

तीस प्रकाशका वन्ध होता है क्योंकि पुत्र वन्धका समाप है ।

मनज्जत्तेमक्क केन वपक और केन अवन्धक है ? ॥ १८६ ॥

यह वृत्त सुगम है ।

अणियट्टी उवममा सत्ता वधा । अणियट्टिनादरद्धाए चरिमसमय
गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेमा अनधा ॥ १८७ ॥

एतस्य अर्थो वृक्षदे— वंधा पुष्पमुदभो पञ्चा बोच्छिज्जदि, अणियट्टि-सुदुम
सांपराइयपरिममयमि वधोदयवोच्छेदुयलभादो । मात्तय-परोदभा, उमयहा वि पपुवलेभादो ।
गिरंतरा वधो, पुवबंधिता । अवगयपञ्चभो, आर्षपञ्चपहितो अक्षिसिद्धपञ्चयत्ता । अगद
सत्तुत्तो, पउगडपवामाभादो । मज्जुममिभो, अणय गुरगुवसामगाणममाभादो । वंधादणं
णति, सुते अणुवदिद्वसदो । किमदमणुवदिद्वे ? दण्डियायलवणादो । निविहो वधो, पुव
पधित्तो ।

कमायाणुवादेण कोधकमाईसु पचणाणावरणीय [चउदसणा
वरणीय-सादवेदणीय] चटुमजलण-जसक्किं उच्चागोद-पचतराइयाण
को वधो को अनधो ? ॥ १८८ ॥

अनिवृत्तिकरण उपग्रमरु व ध्वक पचक है । अनिवृत्तिकरणनादरकाठक अनिम
समयमे जातर पन्थ सुच्छिद्य होता है । ये पचक है, उन अनपचक है ॥ १८७ ॥

इस मूलका मय कहक है— वध्य पूर्वमे वृच्छिद्य जाता है पथान् उद्य
वृच्छिद्य जाता है वधाकि, अनिवृत्तिकरण भार मूलमसागराधिक गुणग्यामक अनिम
समयमे कमर वध्य भार उद्यका वृच्छिद्य पाया जाता है । म्यादय पचक वध्य
होता है वधाकि दाना ही प्रकरम वध्य पाया जाता है । निम्नतर वध्य होता है वधाकि,
उक्त प्रवृत्ति अद्यवध्य है । मापग्रमयाम वहां कार विचारता म दानम उक्त प्रवृत्ति वध्यक
प्रमय अवगत है । अगतिसेयुक्त वध्य होता है वधाकि वहां पाली गतिसेयुक्त वध्यका समाप
है । मनुष्य म्याम है वधाकि मय गतिसेयुक्त वध्य व उपायमकोच समाप है । वध्याप्यान
है मही वधाकि मूलमे उमका उपदना मही है ।

मय— मूलमे वध्याप्यानका उपदना क्यों नहीं किया गया है ?

समाधान— वध्याधिकमयका अवलम्बन कारमय मूलमे उमका उपदना नहीं
किया गया है ।

तान प्रकाशका वध्य होता है वधाकि, यह ध्रुववर्धी प्रवृत्ति है ।

कसायमगणानुसार मयकपानी जीरोमे पाय जानावरणीय, [पार इनावरणीय,
सातावरणीय], पार मयमय, पचरणि, उरपगाय भार पाय अनगय, इनम वैन
पचक भार वैन अनपचक है ॥ १८८ ॥

सासपसम्मादिद्वीमु सांतर भिरंतरो । कथं भिरंतरो ? असखेज्जवासाठभतिरिक्ख-मणुस्सेसु सुदुल्लेम्भियसंखेज्जवामाउणसु च भिरतरणधुवळमादो । उवरि भिरंतरो, पडिक्कसपपडीण ववामावादो ।

मिच्छादिद्विदि तेषादीमुत्तरपञ्चया, सामणे अट्ठीस, पारसकसायाणममावादो । सम्मामिच्छादिद्वि-मसज्जदसम्मादिद्वीमु जहाक्केम चोत्तीस-सत्तसीसपञ्चया, गवकसायपञ्चया-मावादो । सज्जसज्जदेसु एककीसपञ्चया, छक्कन्नायामावादो । पमत्तसज्जदेसु एककीस पञ्चया, कसापतियामावादो । अप्पमत मपुप्पकरणेसु एककूणवीसपञ्चया, कसापतिया-मावादो । उवरि तेरसमादि क्कदूण एगूणादिकमण पञ्चया आणिय वत्तध्या । सेस सुगमं ।

पञ्चपाणावरणीय-चउदसपावरणीय-चउसज्जल्ल-पञ्चतरायाणि मिच्छादिद्वी चउगइ संवुत्तं सम्मपममादिद्वी तिगइसंवुत्त, मम्मामिच्छादिद्वी मसज्जदसम्मादिद्वी देव-मणुसगइ संवुत्त, उवरिमा देवगइसंवुत्तमगइसंवुत्त च वंथति । सप्पावेदपाय-वसकिस्सीओ मिच्छादिद्वी सासपसम्मादिद्वी तिगइसंवुत्त, गिग्गण सह वंधामावादो । उवरि पाणावरणमंगो । उप्प

उपपत्त्यादि मिच्छादिद्वी और सामादनसम्पदादि गुणस्थानोंमें सास्तर निरस्तर वण्य होता है । निरस्तर वण्य कैसे होता है ? क्योंकि, असत्प्राप्तययायुक्त तिर्यक् और मनुष्योंमें तथा शुभ अदयापाम संन्यातरयायुक्तोंमें भी उसका निरस्तर वण्य पाया जाता है । ऊपर निरस्तर वण्य होता है, क्योंकि, वहां उसकी प्रतिपक्ष प्रवृत्तिके वण्यका अभाव है ।

मिच्छादिद्वी गुणस्थानमें तेषादीम और वासादन गुणस्थानमें मट्ठीस उत्तर प्रत्यय हैं क्योंकि, यहां बाह्य कार्योंका अभाव है । सम्यग्मिच्छादिद्वी और असंपन्नसम्पदादि गुणस्थानोंमें पपायमत्त र्थात्ताम और सत्तीस उत्तर प्रत्यय हैं क्योंकि यहां भी कयाय प्रत्ययोंका अभाव है । संपत्तासंपत्तोंमें इक्ष्णीम उत्तर प्रत्यय हैं क्योंकि, उनमें उह कार्योंका अभाव है । प्रमत्तसंपत्तोंमें इक्ष्णीम प्रत्यय हैं क्योंकि, उनमें तीन कार्योंका अभाव है । अयमत्त और अपूपकरण संपत्तोंमें उर्ध्वास प्रत्यय हैं क्योंकि यहां भी तीन कार्योंका अभाव है । ऊपर तेषादि आदि मकर एक कम वा कम इत्यादि कमस प्रत्ययोंको जानकर कहना चाहिये । शय प्रत्ययप्ररूपजा सुगम है ।

पांच ज्ञानापरणीय और दशानापरणीय और संन्यासम और पांच अन्नरूपक मिच्छादिद्वी और गतिर्योसे संयुक्त सामादनसम्पदादि तीन गतिर्योम संयुक्त सम्यग्मिच्छादि और असंपन्नसम्पदादि इह य मनुष्य गतिर्य संयुक्त तथा उपरिम जीव इहगतिसं संयुक्त और गतिसंयोगरहित बांधन हैं । सप्पायद्वीय और वराक्षीनिंको मिच्छादिद्वी य सामादनसम्पदादि तीन गतिर्योम संयुक्त बांधन हैं क्योंकि, नरकगतिक साथ इनके वण्यका अभाव है । उपरिम गुणस्थानोंमें ज्ञानापरणके समान प्ररूपजा है ।

सासणसम्मादिद्रीसु सांतर गित्तरे । कष भिरतरो ? असखन्जवासाउभतिरिक्ख-मणुस्सेसु सुहुलेस्सियसखेज्जवामाउणमु य भिरतरंणुयन्मादो । उवरि भिरतरो, पडिवक्खपयडीए वधामावादो ।

मिच्छाद्विद्दि तेनात्थीसुत्तरपञ्चया, सासणे अट्ठीस, पारसकसायाणमभावादो । सम्मामिच्छाद्वि-असज्जदसम्मादिद्रीसु जहाकमेण चोत्तीस-सत्तरीसपञ्चया, शक्कसायपञ्चया-भावादो । सज्जदसज्जदेषु एककीसपञ्चया, छक्कसायामावादो । पमत्तसज्जदेषु एककीस पञ्चया, कसायतियामावादो । अपमत्त-मणुक्ककरणेषु एककूगरीसपञ्चया, कसायतिया-भावादो । उवरि तेरसमादि कादूण एगूणादिकमेण पञ्चया आभिय वत्तथा । सेस सुगमं ।

पंचणापावरणीय-चउदमणावरणीय-चउसज्जलण-पचतण्डयाणि मिच्छाद्वि चउगइ संवत्त, सम्मपमम्माद्वि निगइसंवत्त, सम्मामिच्छाद्वि अज्जदसम्माद्विजो देव मणुसगइ संवत्त, उवरिमा देवगइसंवत्तमगइसमुत्त य वंथति । सादावेदणोय वसकिदीधो मिच्छाद्वि सासणसम्माद्विजो निगइसंवत्त, भिरयगइण सह वधामावादो । उवरि नापावरणमंगो । उप्पा-

उप्पगायका मिप्पाद्वि धार सामादमसम्पद्वि गुणस्यानोमं साम्तर-निरम्तर बग्घ होता है । निरम्तर बग्घ कैम हाता है ? क्योंकि असत्पानपगामुक्क तिर्यक् धार मनुष्योंमें तथा शुभ मेदपावाम् संघातयगामुक्कोंमें भी उम्का निरम्तर बग्घ पाया जाता है । ऊपर निरम्तर बग्घ हाता है, क्योंकि वहाँ उम्की प्रतिपक्ष प्रवृत्तिके बग्घका अभाव है ।

मिप्पाद्वि गुणस्यानोमं तेनामीस धार सामादम गुणस्यानोमं अट्ठीस उत्तर प्रत्यय है क्योंकि, यहाँ बारह कार्योंका अभाव है । सम्यग्मिप्पाद्वि धार अमयनसम्पद्वि गुणस्यानोमं पयाजमम सीतीस धार सीतीस उत्तर प्रत्यय है क्योंकि, यहाँ भी कार्या प्रत्ययोंका अभाव है । मयनामंयतोमं इक्कीस उत्तर प्रत्यय है क्योंकि, उनमें छह कार्योंका अभाव है । प्रमत्तमंयतोमं इक्कीस प्रत्यय है क्योंकि, उनमें तीन कार्योंका अभाव है । अपमत्त धार मणुक्कण संयतोमं उट्ठीस प्रत्यय है क्योंकि, यहाँ भी तीन कार्योंका अभाव है । ऊपर तेरहका आदि मकर एक कम हो कम इत्यादि क्रमस प्रत्ययोंको जानकर कहना चाहिये । शेष प्रत्ययप्ररूपजा सुगम है ।

पांच ज्ञानावरणीय धार द्वातावरणीय धार मज्जमम धार पांच अन्तरायका मिप्पाद्वि धार गणिपीस संयुक्त सामादमसम्पद्वि तीन गतियोंमें संयुक्त सम्यग्मिप्पाद्वि धार अमयनसम्पद्वि ब्ध य मनुष्य गतिस मयुक्त तथा उपरिम जीव वृषणमिम संयुक्त धार गनिसयोगम रहित बांधन है । सातापेदनीय धार पदाकीर्निका मिप्पाद्वि य सामादमसम्पद्वि तीन गतियोंमें संयुक्त बांधन है क्योंकि, मरकगातिक साप इनक प्रत्यय अभाव है । उपरिम गुणस्यानोमं ज्ञानावरणक समान प्ररूपजा है ।

ओपतुत्त्य विसेसामावाधो । तं जहा — अर्गताणुपविषठक्कस्स षंघोदया सम बोच्छिम्मा,
 सामणम्मि तदुमयामावदंसणादो । धीम्मिदिदितियस्स पुण्य षयो पच्छ उदओ बोच्छिम्मादि,
 सासणसम्मादिदि-पमतमज्जदुस्स कमेण षधोदयवाञ्छेदुवर्लभादो । तिरिक्खाउ तिरिक्खगद्
 उज्जेव-णीचागोदाणमेव चेव । जवरि संजडासंजदम्मि उदयवोच्छेदो । एवमिस्सिवेदस्स वि ।
 जवरि अणियदिदि तदुच्छेदो । अउसयण-अणसरपविहायगद्-दुस्सराणमेव चेव । जवरि एत्थ
 उदयवोच्छेदो जत्थि । अउसंघटणाणमेव चेव । जवरि अणमससज्जदुस्स विदिय-तदिय
 संघटणाणमुदयवोच्छेदो । अउत्तम-पंचमार्ण जत्थि उदयवोच्छेदो, उवसतकसाएसु तदुच्छेद
 दसणादो । तिरिक्खगद्पाभोगाणुपुत्री दुमग-अणादेअणं पुण्य षंघो पच्छ उदओ बोच्छिम्मा,
 सासणसम्मादिदि-अमज्जदसम्मादिहीसु कमेण षधोदयवोच्छेददसणादो ।

अणताणुपविकोपस्स सोदओ षयो । तिहं कसमायणं परादओ, तेसिमेत्सुदयामावाधो ।
 अवसेसपयडीणं सोदय-परादओ, उमयहा वि षषविरोहामावाधो । इत्थिवेद-अउसंघटण-अउ

ओपसे इतमें कोई मेह नहीं है । वह इस प्रकार है — अनन्ताणुपविषठक्कस्स षण्य और
 उदय दोनों नामों से पुच्छिष्ठ होता है क्योंकि, नामावन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव
 पड़ा जाता है । स्थानपुच्छिष्ठका पूर्वमें षण्य और पश्चात् उदय पुच्छिष्ठ होता है
 क्योंकि नामावनसम्पत्ति और प्रमत्तसंघत गुणस्थानोंमें क्रमसे षण्य व उदयका
 पुच्छेद पाया जाता है । तिर्यगायु त्रियगाति उद्यत और नीचगात्रकी भी प्रकृषया इसी
 प्रकार ही है । विद्ययता केयम इतनी है कि संघतासंघत गुणस्थानमें उनका उदयपुच्छेद
 होता है । इसी प्रकार अविद्यकी भी प्रकृषया है । विशेष इतना है कि अनिवृत्तिकरण गुण
 स्थानमें उनका उदयका पुच्छेद होता है । अतः स्थान अमशान्तिहायोगति और दुस्तरकी
 प्रकृषया भी इसी प्रकार ही है । विशेष इतना है कि यहां उनका उदयपुच्छेद नहीं है ।
 अतः सहननोंकी प्रकृषया भी इसी प्रकार ही है । विशेष इतना है कि अममससयतोंमें द्वितीय
 और तृतीय संहननका उदयपुच्छेद होता है । अतः और पंचम संहननका उदयपुच्छेद
 नहीं है क्योंकि उपशान्तकृपायामें उनके उदयका पुच्छेद देखा जाता है । त्रियगाति
 मायोम्यानुपूर्वी दुमग और अनन्तका पूर्वमें षण्य और पश्चात् उदय पुच्छिष्ठ होता है
 क्योंकि, नामावनसम्पत्ति और अमयतसम्पत्ति गुणस्थानोंमें क्रमसे उनका षण्य व
 उदयका पुच्छेद पड़ा जाता है ।

अनन्ताणुपविकोपका श्लेषय षण्य होता है । तीन करारोंका परादय षण्य होता
 है क्योंकि यहां उनका उदयका अभाव है । शय प्रवृत्तियोंका श्लेषय परोदय षण्य होता
 है क्योंकि, दोनों प्रकारस भी उनका षण्यका कोई विरोध नहीं है ।

अविद्य अतः स्थान अतः संहनन उद्यत अमशान्तिहायोगति दुमग, दुस्तर,

संघट्टण-उ भोव भणमरबिहायगइ-दुमग दुस्सर अजत्त माज पघो सांतरो, एगसमएण वि
 बंधुवरमदसप्रादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाल्लुपुप्पि-उ भोवाणि तिरिक्खगइसंभुत्त वषंति । इरिक्
 सांतर पिरित्त वषा, तेठ-वाउक्काएण सुत्तमपुइविमरइएणु च पितररपुवठमादो । अवमेमाण
 पयइीण वषो गिरंतरो, एगसमएण बंधुररमाभावादो । पच्चया सुगमा ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइपाओग्गाल्लुपुप्पि-उ भोवाणि तिरिक्खगइसंभुत्त वषंति । इरिक्
 वेदं तिगइसंभुत्तं, पिरपगइए वंभामावादो । अउमंअण-अउमपइमापि तिरिक्ख-मणुसगइसंभुत्तं
 वषंति, अण्णगईहि वंभामावादो । अण्णमरबिहायगइ-दुमग-दुस्सर वषादेअ-वीचगोअवि
 तियइसंभुत्त वषंति, देवगइए वषामावादो । सामणो तिरिक्ख-मणुसगइसंभुत्तं वषा, वसण्ण-
 गईहि विरोहादो । अउगइमिअदिअ-सामअमम्मादिहिणो साधी । उवरि सुममं, बहुमो
 परुविदअदो ।

जाव पच्चक्खाणावरणीयमोघ ॥ १९१ ॥

बेडाअइय परुविय पण्ण अवेद सुत्तं परुविद तेण विहाइअयमाहिं काइये वि
 वरभावपीदो अवमम्मे । विहा-असादेगइण मयक्खसाप-पक्खसापइइयापं परुवजाए

और अवात्तयका वण्य सात्तर होला ह कयोकि एउ समयस मी उनका वण्यविग्राम देला
 जाता है । तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और मीचगेजअ होला । ही गुणस्वानामें सात्तर
 निरन्तर वण्य होला है कयोकि तेअअविअ व वायुआपिक तथा सप्तम पृथिवीक माणिक्योमें
 निरन्तर वण्य पाया जाता है । एउ मठतिबें क वण्य निरन्तर होला है कयोकि, एक
 समयसे उनके वण्यविग्रामका समाप्त है । प्रत्यय सुगम है ।

तिर्येगायु तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और अजातअ तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधत है ।
 अविअके तीन गतियोंसे संयुक्त बांधत है कयोकि, मरुगतिसे साथ उसके वण्यअ
 समाप्त है । बार सत्थान और बार संज्ञनाका तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बांधते
 हैं कयोकि, अण्य गतियोंके साथ उनके वण्यका समाप्त है । अमरसत्तविहायायति दुमंग
 उल्ल, अवात्तेय और मीचगेजअके तीन गतियोंसे संयुक्त बांधते हैं कयोकि देवगतिके साथ
 उनके वण्यअ समाप्त ह । सासात्तसम्यग्गति इन्हें तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसं संयुक्त बांधता
 है कयोकि, उसके अण्य गतियोंके साथ उनके वण्यअ विरोध है । बारो गतियोंके मिष्याद्ये
 और सासात्तसम्यग्गति स्वामी है । अपरिम प्ररूपणा सुगम है कयोकि वह बहुत बार
 की जा चुकी है ।

प्रत्यास्मानावरणीय तक सब प्रकृतियोंकी प्ररूपणा बोधके समान है ॥ १९१ ॥

विस्वाप्तवण्यकनी प्ररूपणा करते पीछे अंति इस सूत्रकी प्ररूपणा की गई है अत
 एव 'मिद्वण्यअका भावि करक' यह अर्थापत्तिसे जाना जाता है । निम्न अस्ततावेदनीय
 एकस्थानिक, अमरवाक्याम और प्रत्याप्याव वण्यकोकी प्ररूपणा बोधक समान है । उसकी

ओषधमंगो । सो वि चित्ति एतत्तत्त्वो ।

पुरिसवेदे ओष ॥ १९२ ॥

एसो पुरिसवेदपिरेसो जेण बेसामासियो तेण पुरिसवेददड्य-मापदड्य-छेददड्याण गहम । जहा एदेसिं दड्याममोषमि परूवणा कदा तहा एत्थ वि कयन्वा । यत्ति पच्चयविसेसो जणिप वसथ्यो ।

हस्स-रदि जाव तित्थयरे ति ओष ॥ १९३ ॥

हस्स-रदिसुतमादि क्कदूण जाव तित्थयस्सुत्तं ति ताव एदेसिं सुत्ताणमोषपरूवण मवहारिय परूवेदथ ।

माणकसाईसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-सादावेदणीय तिग्गिसजलण जसकित्ति उच्चागोद-पचतराइयाण को वधो को अवधो ? ॥ १९४ ॥

सुगम ।

मी विचार कर यहां कहना चाहिये ।

पुरुषवर्द्धकी प्ररूपणा ओषधके समान है ॥ १९२ ॥

यह पुरुषवर्द्ध पदका निर्देशां श्रुति वेदामर्शांक ही मताः इसमें पुरुषवर्द्धवर्द्धक, मानववर्द्धक और ओषधवर्द्धकका ग्रहण करना चाहिये । जिस प्रकार इन वर्द्धकवर्द्धकी ओषधमें प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार यहां भी करना चाहिये । विचार इतना ही कि प्रत्यक्षमें ज्ञानकर कहना चाहिये ।

हृत्स व रतिसे ठेकर तीर्थकर प्रकृति तक ओषधके समान प्ररूपणा है ॥ १९३ ॥

हृत्स-रदि सूत्रको श्राद्धि करके तीर्थकर सूत्र तक इन सूत्रवर्द्धकी ओषधप्ररूपणाका निश्चय कर प्ररूपणा करना चाहिये ।

मानकसायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनवरणीय, सादावेदनीय, तीन संख्यलन, यशकृति, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायक कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १९४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संघट्टण ठ जेन अप्ससत्यविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अणदेअण बघो सांतरो, एगसमएण वि
 बंधुवरमइसबादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओम्माणुपुब्बि गीचागोदाण दोसु वि गुणहाअसु
 सांतर भिरंतरो बघा, तेउ-वाउक्कअएसु सत्तमपुइविपेरइएसु च गिरतरपवुवत्तमादो । अबसेअण
 पयडीअं बघो भिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमामावादो । पच्चया सुगमा ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइपाओम्माणुपुब्बि-उअओयाणि तिरिक्खगइसंभुत्तं बंधंति । इति
 वेदं तिगइसंभुत्तं, भिरयगइए पंचामावादो । अउसंअण चउसंपइणामि तिरिक्ख-मजुसयइसंभुत्तं
 बंधंति, अणगइहि पंचामावादो । अप्ससत्यविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अणदेअण-गीचागोदाणि
 तिगइसंभुत्तं बंधंति, देवगइए पंचामावादो । सासओ तिरिक्ख-मजुसयइसंभुत्तं बंधइ, तस्सअ-
 गइहि विरोहादो । अउगइमिअदिहि-सासणसम्मादिहिणो साओ । उवरि सुगमं, बहो
 परुविइत्तादो ।

जाव पच्चक्खाणावरणीयमोघ ॥ १९१ ॥

बेहाणइअं परुविय पच्च अमेद सुत्तं परुविदं तेण गिराअंअयमारिं करुणे ति
 अत्थावत्तीदो अवगमोइ । गिरा असादेगहाअ अपचत्ताअ-पच्चक्खाणइअं परुपअए

और अनायेयका बग्य सत्तर होता है क्योंकि एक समयसे भी उनका बग्यविधाम देखा
 जाता है । तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और भीष्म गोनका दोनो ही गुणत्वमोमें साम्तर
 निरन्तर बग्य होता है क्योंकि तेजकाधिक ब वायुकाधिक तथा सतत पृथिवीके भारकीयोंमें
 निरन्तर बग्य पाया जाता है । शून्य प्रकृतियों का बग्य निरन्तर होता है क्योंकि एक
 समयसे उनके बग्यविधामका समाप है । प्रत्यय सुगम है ।

तिर्यगायु तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और अजातको तिर्यग्गतिसे संयुक्त बांधते हैं ।
 क्वचिद्वा तीन गतियोंमें संयुक्त बांधते हैं क्योंकि वररुगणके साथ उसके बग्यका
 समाप है । बार संन्यास और बार संहननाका तिर्यग्गति और अनुप्यगतिसे संयुक्त बांधते
 हैं क्योंकि, अग्य गतिबाके साथ उनके बग्यका समाप है । अमरास्तविहायोगति दुर्मम
 उत्तर, अनादेय और मीचगेणका तीन गतियोंसं संयुक्त बांधते हैं क्योंकि इवगतिके साथ
 इनके बग्यका समाप है । आसादनसम्परादि इह तिर्यग्गति ब अनुप्यगतिसे संयुक्त बांधता
 है क्योंकि उसका अग्य गतियोंके साथ इनके बग्यका विशेष है । चारों गतियोंके मिषाददि
 और सागादनसम्परादि इजामी है । उपरिम प्रकण्या सुगम है क्योंकि, यह बहुत बार
 की जा चुकी है ।

अन्याभ्यानावरणीय तत्तु सच प्रकृतियोंकी प्रकण्या ओपके समान है ॥ १९१ ॥

विस्वानदृष्टककी प्रकण्या करके पीछे कृति इस सूचकी प्रकण्या की गई है अत
 एव 'मिहादृष्टकका भावि करके' यह अद्यापत्तिने जाना जाता है । मित्रा अनास्तावेदनीय
 एकस्थानिक, अमत्याक्याम और अत्याक्याम दृष्टक्योंकी प्रकण्या जायक समान है । उसका

ओषमंगो । सो वि चितिय एत्थ वत्तप्पो ।

पुरिसवेदे ओघ ॥ १९२ ॥

एसो पुरिसवेदनिदेसो जेण देसामामियो तेण पुरिमवेददइय-माणदइय-ओहदइयार्थ गइण । जहा एदंमि दइयाणमाघमि परूयणा कइ तहा एत्थ वि कइयप्पा । पवरी परूयविमेसो जाणिय वत्तप्पो ।

हस्स-रदि जाव तित्थपरे त्ति ओघ ॥ १९३ ॥

हस्स-रदिमुत्तमादि कइण जाव तित्थपएगुत्त नि ताव एदंमि गुत्ताणमोपपरूयण मवहाणिय परूयेदप्प ।

मागकसाईसु पचगागावरणीय-चउदमणावरणीय-मादावेदणीय तिणिसजलण जमकिंत्ति उच्चागोद-पचतराइयाण को वधो को अवधो ? ॥ १९४ ॥

सुगम ।

भी विचार कर यहाँ कहना चाहिये ।

पुण्ययदकी प्ररूपणा ओषके समान हे ॥ १९२ ॥

यह पुण्ययद परका निर्देश झूँकि ब्रह्मात्मक है अतः इसमें पुण्ययदब्रह्मक मानब्रह्म और ब्रह्मात्मकक प्रहण करना चाहिये । जिस प्रकार इन ब्रह्मकेकी ओषमें प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार यहाँ भी करना चाहिये । बिनाय इनका है कि प्रत्ययमेव आमकर कहना चाहिये ।

हास्य य रतिमे लेकर तीर्थकर प्रकृति तर ओषके समान प्ररूपणा है ॥ १९३ ॥

हास्य-रति सूचक भावि करक तीर्थकर सूत्र तर इन सूत्रोंकी ओषप्ररूपणाका निश्चय कर प्ररूपणा करना चाहिये ।

मानरूपानी बीर्षोर्म पाँच भ्रानावरणीय, चार दमनावरणीय, सातवेदनीय, तीन सम्बलन, पञ्चकिर्ति, उच्चगोत्र और पाँच भन्तरायक कीन पन्थक और कीन जपन्थक है । ॥ १९४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिच्छाहृष्टिपट्टि जाव अणियट्टि उवसमा खवा वधा । एदे
वधा, अवधा णत्थि ॥ १९५ ॥

कोषसंबन्धमेव एवमिह सह किञ्च परस्परि ? न, तस्य माषसंबन्धपर्यायो
पुत्रमेव बोधिसम्बन्धस्य माषादीदि बंधद्वयं पठि पञ्चास-चीत्य भगवतादेशः । एतस्य सुकृष्ण
परुषण्या कोषपर्ययो । अवधि माषस्य सोदयो, अण्येसि कसामाण पठेदयो बंधो । पञ्चपञ्च
माषकमार्य मोक्षं सेसकमाया अबोधेदया । सेसं अणिय वत्तं ।

वेद्वणि जाव पुरिसवेद-कोधसजलगाणमोघ ॥ १९६ ॥

वेद्वणि ति भुते वेद्वामिध-मिहा बसार्दं मिच्छव भरणसंस्तर-पञ्चसंस्तरादयं
पेत्तया, देसमासियत्तरो । पुरिसवेद-कोषसंबन्धे ति भुते तस्य एकस्तेव सुतस्य गहर्ण
अप्यर्थः । एदेसि सुत्तमोषपरुषणमवधरिय वत्तं ।

मिष्वाद्यधिते ठेकर अनिवृत्तिरूपगुणस्वानवर्ती उपसमक व धरक तक बन्धक है ।
ये बन्धक हैं, धरन्धक कोरं नहीं हैं ॥ १९५ ॥

सूत्र—यहां हम प्रकृतियोंके साथ संबन्धजन काधकी प्रकृपणा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—नहीं क्योंकि संबन्धजनमानक बन्धसं उसका बन्ध पूर्वमें ही व्युत्पिठ्य
हो जाता है अत एव मानाधिक्यके साथ बन्धमात्रानके प्रति उसकी प्रत्यासत्तिना अभाव
है । इसी कारण उसकी प्रकृपणा यहाँ नहीं की गई है ।

इस सूत्रकी प्रकृपणा काधके समान है । पित्राय इतना है कि मानक स्वस्वयं और
अन्य कर्माधिक्य परतेत्य बन्ध होता है । प्रत्यर्थीप्र मानकपायको छोड़कर दोय कर्माधिक्य
कम करना चाहिये । शय प्रकृपणा जानकर कहना चाहिये ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंके ठेकर पुरुषवेद और सं-उत्तमेव तक बोधके समान प्रकृपणा
है ॥ १९६ ॥

द्विस्थानिक ऐसा कहनपर द्विस्थानिक, बिना अमानावेदनीय मिष्वाद्य
अप्रत्यासत्तिमाधरण भार प्रत्यासत्तिमाधरण बन्धकीका ग्रहण करना चाहिये क्योंकि, यह
इशामशक पद है । पुरुषवेद व संबन्धजनकाय एसा कहनपर उस एक ही सूत्रका ग्रहण
करना चाहिये । हम सूत्रकी बोधप्रकृपणाका निश्चय कर व्याख्यात करना चाहिये ।

हस्सरदि जाव तित्थयरे त्ति ओघ ॥ १९७ ॥

सुगममेदं, बहुसो परुविदरसत्तापो ।

मायकसाईसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीम-सादावेदणीय
दोणिणसजलग-जसकित्ति उच्चागोद-पचतराइयाण को वधो को
अवधो ? ॥ १९८ ॥

सुगममेद ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा खवा वधा । एदे
वधा, अवधा णत्थि ॥ १९९ ॥

एद पि सुसं सुगमं ।

वेट्ठाणि जाव माणसजलणे त्ति ओघ ॥ २०० ॥

वेट्ठाणि-मिहसदेगेट्ठाण-अपप्पकखाण-पप्पकखाण-पुरिस-केष-माणसुत्ताणमोघपरु-
वधमवहारिय परुवेदम् ।

हास्य व रतिसे ठेकर तीर्थकर तक ओषके समान प्ररूपणा है ॥ १९७ ॥

यह सूत्र सुगम है क्योंकि, इसके अर्थकी बहुत बार प्ररूपणा की जा चुकी है ।

मायाकसायी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, दो
संजलन, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन कन्वक और कौन अवन्वक
है ? ॥ १९८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिप्पाइट्ठिसे ठेकर अनिष्टसिक्खण उपशमक व क्षपक तक कन्वक हैं । ये कन्वक
हैं, अवन्वक कोई नहीं हैं ॥ १९९ ॥

यह भी सूत्र सुगम है ।

हिस्वानिक प्रकृतिपोंके ठेकर संजलनमान तक ओषके समान प्ररूपणा है ॥ २०० ॥

हिस्वानिक मित्रा असातावेदनीय एकस्थानिक अग्रत्याप्पाण प्रत्याप्पाण
पुरुषवेद कांथ और मान सुबोकी ओषप्ररूपणाकर निश्चय कर प्ररूपणा करना चाहिये ।

इत्स-रदि जाव तित्ययेरे चि ओघ ॥ २०१ ॥

सुगम्मेद ।

लोभकसारिसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-सादावेदणीय
जसकित्ति-उच्चागोद-पचतराहयाण को वंधो को अवधो ? ॥२०२॥

सुगमे ।

मिच्छाहट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयजवसमा स्वा वधा ।
एदे वंधा, अवधा णत्थि ॥ २०३ ॥

एरे सुगमे ।

सेसं जाव तित्ययेरे चि ओघ ॥ २०४ ॥

सुगमे ।

अकसारिसु सादावेदणीयस्स को वंधो को अवधो ? ॥२०५॥

सुगमे ।

हास्य व रतिसे ठेकर तीर्षकर प्रकृति तक जोषके समान प्ररूपणा है ॥ २ १ ॥

यह स्रष्टु सुगम है ।

लोभकपापी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सादावेदनीय, यष्टकीर्ति,
उच्चयोग और पांच अन्तरायक कौन बन्धक और कौन बन्धक है ? ॥ २०२ ॥

यह स्रष्टु सुगम है ।

मिच्छाहट्टिसे ठेकर सुहुमसाम्पत्तिक उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । ये बन्धक
हैं, बन्धक कोई नहीं हैं ॥ २०३ ॥

यह स्रष्टु सुगम है ।

तीर्षकर प्रकृति तक श्रेय प्रकृतियोंकी प्ररूपणा जोषके समान है ॥ २ ४ ॥

यह स्रष्टु सुगम है ।

लकपापी जीवोंमें सादावेदनीयक कौन बन्धक और कौन बन्धक है ? ॥२०५॥

यह स्रष्टु सुगम है ।

उवसतकसायवीदरागछदुमत्या स्त्रीणकसायवीदरागछदुमत्या
सजोगिकेवली वधा । सजोगिकेवलिअद्धाए चरिमसमय गतूण वधो
वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेमा अवधा ॥ २०६ ॥

एदस्स अत्थो । त जहा — सादावेदणीयस्स पुंस्स वधो पच्छा उदभो वोच्छिज्जो,
सजोगि-अजोगिकेवलीसु कमेण वधोदयवोच्छेददसणादो । सोदय-परोदयो, उमयस वि वधा
विरोधादो । भिरंतयो, पडिवक्खपयडीए वधाभावादो । उवसंत-स्त्रीणकसायसु भव जोगपवया ।
सजोगीसु सत्त । अगइसंजुतो वधो । मणुसा सामी । सादि-अद्भवो वधो, अद्भववंधित्तदो ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणि विभगणाणीसु पच
णाणावरणीय णवदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-अट्टणोकसाय
तिरिक्खाउ मणुसाउ-देवाउ तिरिक्खगइ-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदिय-
जादि ओरालिय-वेउविय-तेजा-कम्मइयसरिर-पचसअण-ओरालिय-

उपशान्तकपाय वीतरागछदुमस्य, स्त्रीणकपाय वीतरागछदुमस्य और सयोगिकेवली
बन्धक है । सयोगिकेवलिउत्तिके अन्तिम समयमें आकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये
बन्धक हैं, शेष बन्धक हैं ॥ २०६ ॥

इस सूत्रका अर्थ करते हैं । यह इस प्रकार है — सादावेदनीयका पूर्वमें बन्ध
और पश्चात् उक्त व्युच्छिन्न होता है क्योंकि, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली गुणस्थानोंमें
क्रमसं उसके बन्ध और उक्त व्युच्छिन्न होता जाता है । उसका लोप्य परोक्ष बन्ध होता
है क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी उसका बन्धका विरोध नहीं है । निरस्त बन्ध होता है क्योंकि,
उसकी प्रतिपक्ष प्रवृत्तिका यहां अभाव है । उपशान्तकपाय और स्त्रीणकपाय शीतोंमें भी
योग प्रत्यय तथा सयोगी शीतोंमें सात हैं । मगलिसमुक्त बन्ध होता है । मनुष्य स्वामी है ।
सादि व अद्भव बन्ध होता है क्योंकि, यह अद्भवबन्धी है ।

ज्ञानमागण्यसे अनुसार मत्प्राप्ती, भुताज्ञानी और विमंगजानी शीतोंमें पाच
ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सोलह कपाय, आठ नोकपाय,
तिर्यगाय, मनुष्याय, देवाय, तिर्यगति, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रियगति, औदारिक,
वैक्रियिक, तैजस व काम्य शरीर, पांच संस्थान, औदारिक व वैक्रियिक शरीरगोपना, पांच

१ अर्थात् सादावेदनीयस्य वाग्रतो साध्यावरण इति पाठ ।

२ मण्डि ब्रह्मविरोधत्वे इति पाठ ।

वेदञ्चियमरीरअगोवग-पचमघट्टण-वण्ण गध रस- फाम-तिरिक्खगइ-
मणुमगइ-देवगइपाओग्गाणुपुची-अगुरुअल्हुअ-उवघाद-परघाद-
उस्मास उज्जोव दोविहायगइ तस आदर-पज्जत्त पत्तेयसरीर थिराधिर-
सुहासुह-सुभग दुभग सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकिचि-
अजसकिचि णिमिण-णीनुआगोद-पचतराडयाण को वधो को अवधो ?
॥ २०७ ॥

सुगमं ।

मिच्छाद्विष्टी सामणसम्माद्विष्टी वधा । एदे वधा, अवधा गति
॥ २०८ ॥

एष उदयाश वधा पुष्पं पच्छा वा बाध्ति-इति ति विचारा जति, एदमि पपयि
वधापयसांभ्रमावाश । पचपाणावरणीय चउदमवावरणीय-तेजा-कम्मयमरि-वण्ण-गध-रस-
फाम भगुममठुअ-मिराधिर-सुहासुह-विमिण-पंचतराडयाणं सोदभा वंधो, धुवाइयघादो ।
देवाउ-वेवगइ चउच्चियमरीर-चउच्चियमरीरअगोवम देवगइपाओग्गाणुपुच्चीवं परउमो वंधो,

मंदहन, वध गध, रस मय, नियगति, मनुष्यगति च दवगतिप्रायांयातुपूर्वी, भगुमपु,
उपपात, पपात उच्छास, उपात दो विहायोगनिपां, वम, पादर, पराप्त, प्रत्यकठरि,
रिवा, अस्ति, शुभ भुभु सुभग दुभग सुस्सर, दुस्सर, आदेय, अनादेय, यत्तमिनि
अयत्तमिनि, निमाम नीच च ऊच गात्र और पांच मन्तगय, इनस कोन पन्धक और कोन
मन्धक है ? ॥ २०७ ॥

यद मूत्र सुगमं है ।

मिप्पाद्विष्टी आर ममादनमम्यद्विष्टी पचक है । य पन्धक है, भवपक कइ मही
है ॥ २०८ ॥

यहां उदयम वध पुष्प वा पचान पुच्छिउय हाता है यह विचार मही है
कहाकि हम मरतिपौरु वध य उदयक पुच्छिउय यहां अमाव है ।

पांच मानावरणीय आर द्वाजावरणीय तत्रम य कामय शरीर यम मय
रस कर्त भगुमपु स्थिर जस्तिर शुभ भुभु निमाम आर पांच मन्तरायका
वधाव वध हाता है कहाकि ये प्रपादयी मरतिपां है । दवापु दवगति वैचियिचशरीर
वैचियिचशरीरगतारंग आर दवगतिप्रायांयातुपूर्वीका परादय वध हाता है कर्बोक, हम

एदासिं पंधेदयापमकमेण सुत्तिविरोहादो । पचदसणावरणीय-सादासाद-सोत्तसकसाय
 अङ्गोक्तसाय-तिरिक्ख-मणुसाठ-तिरिक्ख-मणुसाइ-मोराठियसरीर-पंचसंअण-मोराठियसरीर-
 धंगोवंग-पंचसंधडण-तिरिक्ख-मणुसमइपाभोगाणुपुवी-उवपाद-परपाद-उत्सास-उत्तोजव-
 दोविहायगइ-पसेयसरीर-सुमग-दुमग-सुस्सर-दुस्सर आदेअ-अपादेअ अजसकिंति-अजसकिंति-
 पीषागोदाणं सोदय-परोदओ पंधो, दोहि' वि पयोदि पंधविरोहामावादो । पंधिदिय-तस
 वादर-पमत्ताण मदि-सुदमअपिमि अइड्डीसु सोदय-परोदओ भवो । सासपसम्माइड्डीसु सोदओ
 वेव, एदासिं पडिक्खसपमडीणं तत्पुदयामावादो ।

पंचणावरणीय-पचदसणावरणीय-सोत्तसकसाय-भय-दुगुळा-तिरिक्ख-मणुस-देवाठ-
 तेजा-कम्मइयसरीर-अण-गघ-रस-फस मणुसवत्तुम-उवपाद-पिमिण-पंचतरायाण गिरंतो
 पंधो, एगसमइयपभाणुवत्तादो । सादासाद-पंचोक्तसाय-पंचसंअण-पंचसंधडण-उत्तोजव
 अणसत्तविहायगइ-यिराविर-सुमासुम-दुमग-दुस्सर अपादेअ अजसकिंति सांतो भवो, एग

प्रकृतिपोंके बन्ध य उदयके एक साथ रहनेका विरोध है । पांच दर्शनावरणीय, साठा व
 असाठा बेदनीय सोलह कपाय आठ माकयाय तिर्यंगाया मनुष्याया, तिर्यग्गति मनुष्यगति
 भौहारिकशरीर, पांच संस्थान भौहारिकशरीरांगोपांग पांच संज्ञन तिर्यग्गति य
 मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी उपघात परघात उच्छ्वास उद्योत हो विहायोगतिपां
 प्रत्येकशरीर, सुमग दुर्गम सुस्वर, दुस्वर, अनादेय अनादेय पदाकीर्ति, अनादेयकीर्ति और
 नीबगोत्रका स्वेदय-परोदय बन्ध होता है क्योंकि, दोनों ही प्रकारोंसे उनके बन्ध होनेमें
 कोई विरोध नहीं है । पंचेन्द्रियजति अस वादर और पर्याप्त मति व अत अज्ञानी
 मिथ्यादृष्टिपोंमें स्वेदय-परोदय बन्ध होता है । सासादनसम्पददृष्टिपोंमें स्वेदय ही बन्ध
 होता है क्योंकि इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतिपोंका वहाँ उदयामाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय भौ दर्शनावरणीय सोलह कपाय भय जुगुप्सा तिर्यंगाया,
 मनुष्याया देवाया, तैजस य कार्यन शरीर, यण गन्ध रस स्पर्श मणुसल्लु उपघात
 निमाण और पांच अमरायका निरम्तर बन्ध होता है, क्योंकि इनका एक समधिक बन्ध
 नहीं पाया जाता । साठा व असाठा बेदनीय पांच माकयाय पांच संस्थान पांच संज्ञन,
 उद्योत अमरास्तविहायागति स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ दुर्गम दुस्पर, अनादेय और
 पदाकीर्तिका साम्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयस मी इनका बन्धविभ्राम देखा

समर्थं वि पशामि वज्रवरमर्दमणादौ । पुग्मिषेदम्मा मांन-जित्तरो । कुदो विरंते ? वम्म-सुद्ध-
 लेस्मिपतिगिग्म मणुममिग्मइहि-मायजमग्मादिद्वीसु पुग्मिषेदम्मा विरंतरंभुवत्तमादौ । मणुम-
 गइ-मणुमगइपाभोग्माणुपुग्मिषं मांन-जित्तरो ववो । होदु मांनो, कुदो विरंतर ? व,
 सुक्कपेस्मिपमिग्मइहि-मायजमग्मादिद्वीसु विरंतरंभुवत्तमादौ । आगप्पिमरीरअपा-
 वणां मांन-जित्तरो । क्व जित्तरो ? व, जइप्पु मज्झकुमत्तादिद्वेसु व जित्त-
 रंभुवत्तमादौ । देवमइ पंचिदियज्जादि-वउत्तिपमरि तेउत्तिपमरीरमगात्तं दवगाइपाभागप्पु
 पुग्मिषवरवविद्वपगइ-सुमप-सुम्मर अदे व उदामादण मांन-जित्तरो ववो । क्वं विरंते ?
 व, जमज्झरापाउअतिगिक्के मणुममिग्मइहि-मायजमग्मादिद्वीसु तेउ-यम्म-सुक्कपेस्मिप
 सेवेज्झरापाउअतिगिक्के-मणुममिग्मइहि-मायजमग्मादिद्वीसु व विरंतरंभुवत्तमादौ । परपा-

जाला हे । पुग्मिषेदम्मा मांन-जित्तरो ववो ववो ।

शुद्ध — निरन्तर वग्म केस सम्मव हे ?

समाधान — क्योंकि, पक्क मांन शुद्ध मर्यादाक तिर्यक् व मनुष्य मिथ्यादि एवं
 साक्षात्तसम्पद्विषयोम पुग्मिषेदम्मा निरन्तर वग्म पाया जाता है ।

अनुपपत्ति भीर मनुष्यगतप्रापोग्मापुग्मिषं सांन-जित्तरो ववो ववो ।

शुद्ध — इनका सांन-जित्तरो वग्म भवे ही है पर निरन्तर वग्म केस सम्मव हे ?

समाधान — नहीं क्योंकि शुद्धमर्यादाक मिथ्यादि भीर साक्षात्तसम्पद्वि
 वृत्त निरन्तर वग्म पाया जाता है ।

औदारिकदारीर मांन औदारिकदारीरमांनपांगका सांन-जित्तरो ववो ववो ।

शुद्ध — निरन्तर वग्म केस होता है ?

समाधान — नहीं क्योंकि मांनद्विषयो तथा सनात्तुमादि वग्म निरन्तर वग्म
 पाया जाता है ।

वज्रगति पंचलिद्रवजाति वक्रियिकदारीर वक्रियिकदारीरमांनपांगका वज्रगतिमांन-
 प्यापुग्मिषं मर्यादाकपांगली सुमग सुस्थर, भाव्य भीर उच्चगोचर सांन-जित्तरो
 ववो ववो । निरन्तर वग्म केस होता है ? नहीं क्योंकि असंप्रप्रात वर्यापुग्म तिर्यक्
 व मनुष्य मिथ्यादि एवं साक्षात्तसम्पद्विषयो तथा तेउ पक्क व शुद्ध मर्यादाक
 संप्रप्रातवर्यापुग्म तिर्यक् व मनुष्य मिथ्यादि एवं साक्षात्तसम्पद्विषयो निरन्तर वग्म

दुस्सास-तम पादर-य-वत-पथेयसरीराण मिच्छाद्विष्टिष्वधो सानर-पिरतरो । कथं पिरतरो ? देव-गेरद्वेषु असुखेज्जवायाउत्तरिक्ख मणुम्मेषु च पिरतरवुत्तलमादो । सामणम्ममादिद्वीसु पिरतरो, तस्य पडिक्खस्यपडिक्खामावादो परपादुस्सामक्खविरोहिअपन्वत्तम्पु वधामावादो च । तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाआग्गाणुपुब्बि-जीवागाश्रण पि पंधा सानर-पिरतरो । कथं पिरतरो ? ज, तेउ-वाउक्खद्वामिच्छाद्वीसु सत्तमपुद्विनिम्भइद्वि सामणम्ममादिद्वीसु च पिरतर वुत्तलमादो ।

पञ्चया सुगमा ओवपञ्चइदितो भेदामावादो । तिरिक्खउ तिरिक्खगइ-तिरिक्ख गइपाओग्गाणुपुब्बि उन्नेत्ताण तिरिक्खगइसत्तुतो पधो । मणुमा मणुसगइ मणुसगइ पाओग्गाणुपुब्बिण मणुगइसत्तुतो पधो । देवाउ [देवगइ] देवगइपाओग्गाणु पुब्बिण देवगइसत्तुतो । ओगलियसरीर भेतालियमरीरअगोवग-यचमअण-यचसचइजाणं तिरिक्ख-मणुसगइसत्तुतो, अण्णगइहि यंविरोहदो । पवरिसमचउरमयअणस्स विगइ सत्तुतो, गिरयगइ अमावादो । वउत्थियसरीर-वेउत्थियमरीरअगोवगण मिच्छाद्विष्टि देव गइ पिरयगइसत्तुतो । मासने देवयइसत्तुतो । सादुवेदणीय इत्थि-गुरिम-इस्म-इदि असत्थविहाय

पाया जाता है । परपात उच्छ्वास घन पावन पयान्त और प्रत्येकगरीरका मिथ्यादृष्टि शुल्कस्थानमें सास्तर निरन्तर बन्ध होता है । निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? क्योंकि वय मायिकियों और अस्वभावप्रमाणस्युक्त निर्यय य मनुष्योंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । सामाजिकनिर्ययदृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, पहले प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है तथा परपात और उच्छ्वासका बन्धक विरोधी अस्वभावक ही बन्धना समाय है । निष्पगति निष्पगतिप्रायाप्यानुपूर्वी और मौखिकाश्रय ही बन्ध सास्तर निरन्तर होता है । निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? नहीं क्योंकि तब य पायु कानक मिथ्यादृष्टियों तथा समम गृह्यिका मिथ्यादृष्टि और सामाजिकनिर्ययदृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

प्रत्यय सुगम है क्योंकि आध्यात्मिकता यही पार भेद नहीं है । निष्पगानु निष्पगानि निष्पगतिप्रायाप्यानुपूर्वी और उच्छ्वास निष्पगानि संयुक्त बन्ध होता है । मनुष्यायु मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायाप्यानुपूर्वीय मनुष्यगति संयुक्त बन्ध होता है । इषायु [इषगति] और इषगतिप्रायाप्यानुपूर्वीय देवगति संयुक्त बन्ध होता है । धीशरिकगरीर, आशरिकगरीरोंगापीय पांच संस्थान और पांच संज्ञनका निर्यय य मनुष्यगति संयुक्त बन्ध होता है । यथाकि, मनुष्य गतिपाक माय उनका बन्धका विरुध है । बिना इतना है कि सममनुर्ययसंस्थानका तीन गतिर्यय संयुक्त बन्ध होता है । यथाकि, मरकगति का माय उमक बन्धका समाय है । पट्टिपिकगरीर और पट्टिपिक दारीरागापीयका मिथ्यादृष्टि शुल्कस्थानमें इषगति य मरकगति संयुक्त तथा सामाजिक शुल्कस्थानमें इषगति संयुक्त बन्ध होता है । सामाजिकीय श्रीचर पुण्यरद हास्य,

गह-विर-सुह-सुमग-सुस्तर-अदेय्य-असकिचीय तिगइसंहुतो बपो, विरमयईए बमत्तारो ।
 वप्पसत्तविहायमइ हुमग-सुस्तर-अणादेय-भीचागोदायं तिमइसंहुतो बपो, देवमईए बमत्तारो ।
 नवरि सत्तये तिरिक्ख-मणुसगइसंहुतो । उप्पामोदस्स देव-मणुसगइसंहुतो, बप्पगईहि
 विरोइारो । पेषणात्तरणीय-अवदंसणावरणीय-असात्तावेइयीय-सोत्तसकसाय-अरि-सोग-मव
 हुमुंअ-पंधिदिबवादि-तेआ-कम्मइयसरीर-बप्प-गव-रस-फ़स-अगुस्वत्तहुय-उवप्प-परप्प-
 उस्सास-त्तस-वात्तर-पववत्त-पवेषसरीर-अविर असुह अमसक्कि-पिमिप पंचतराइयानं मिप्प-
 इड्ढिइ चठगइसंहुतो बपो । सात्तये तिगइसंहुतो, विरमयईए बमत्तारो ।

देवाठ-देवमइ-वेठप्पियसरीर-वेठप्पियसरीरंगोबंय-देवगाइपामोमाणुप्पुप्पीयं बप्पस
 तिरिक्ख-मणुसविप्पइड्ढि-सात्तपसम्मादिड्ढिओ सामी । अवसेसाण चठमइया । बंध्यायं सुम्म ।
 बंधवोप्पेओ पत्ति, ' बंधपा वरिष ' सि सुगुडिठ्ठाओ । पुवबंधीयं मिप्पइड्ढिइ बंधो
 चठप्पिओ । सात्तये तिविओ, पुववामात्ताओ । अवसेसाणं पयडीयं बपो स्यादि-अदुओ,
 बद्धुवबंधिताओ । एवमेसा मदि-सुहबप्पाणीयं परूवणा कया ।

एति महास्तविहापोयति स्थिर, शुभ सुमम सुस्वर, अदेय और महाकीर्तिका तीन
 पतिबौद्ध संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, नरकगतिके साथ इनके बन्धका अभाव है ।
 अमहास्तविहापोयति शुभग सुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका तीन पतिबौद्ध संयुक्त
 बन्ध होता है क्योंकि, देवगतिके साथ इनके बन्धका अभाव है । विशेषता इसकी है कि
 सासात्त गुणस्वात्ममें तिर्वगाति और मनुष्ययतिसे संयुक्त बन्ध होता है । उच्चगोत्रका
 देवपति और मनुष्यगतिके संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि बन्ध गतिबौद्धके साथ इनके
 बन्धका विरोध है । पांच ज्ञानावरणीय और वर्तनावरणीय असात्तावेइयीय सोलह कपाय
 अरति होकर, मव सुगुप्ता पंचेन्द्रिय जाति वैजस व कामेज शरीर, बंधं गन्ध रस
 स्पर्श अगुल्लघु वपमात् परयात् वप्पवात्त वत्त वात्तर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर,
 अस्थिर, अशुभ अपराधीर्ति निर्माण और पांच अन्तरायका मिप्पाद्यदि गुणस्वात्ममें
 चारों पतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । सासात्त गुणस्वात्ममें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध
 होता है क्योंकि, नरकगतिके साथ इस गुणस्वात्ममें इनके बन्धका अभाव है ।

देवायु, देवपति वैद्वियिकशरीर, वैद्वियिकशरीरगोपांग और देवगतिप्रायेतमात्र
 पूर्वीके बन्धके तिर्वक व मनुष्य मिप्पाद्यदि एवं सासात्तमसम्भन्धदि स्वामी हैं । दोष
 प्रकृतिबौद्धके बन्धके चारों पतिबौद्ध तीन स्वामी हैं । बन्धाज्जात सुगम है ।
 बन्धप्युप्पेओ है वहाँ क्योंकि, यह अवन्धक नहीं है इस प्रकार सूत्रोक्त ही
 है । उच्चवर्णी प्रकृतियोंका बन्ध मिप्पाद्यदि गुणस्वात्ममें चारों प्रकारका होता है ।
 सासात्त गुणस्वात्ममें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहाँ उच्च बन्धका अभाव है ।
 दोष प्रकृतियोंका बन्ध सात्त व अशुभ होता है क्योंकि वे मनुष्यवर्णी हैं । इस प्रकार
 यह मति सुत ज्ञासिबौद्धी प्रकपणा की गई है ।

विमंगलाणीय पि एवं भव वत्तु, विसैसामावादो । पवरी उयचत्त-परपाद-उत्सस-
पवेयसरीण सोदभो पवो, अ-अत्तकले विमंगलाणामावादो । तस-आद-पञ्चत्तार्ण मिच्छा
इहिंदि सोदभो पवो, आवर-सुहुम-अपन्नत्तसु विमंगलाणामावादो । तिण्णमणुपुथ्वीणं
पवो परोदभो, अपन्नत्तकले विमंगलाणामावादो । पवएसु ओरात्थिय-वेठभियमित्त-कम्म
इयपप्पया अवप्पेइया, विमंगलाणस्स अपन्नत्तकलेण सह विरोहादो । अण्णो वि जइ अत्थि
मेवो सो संमाल्लि वत्तुवो ।

एककट्टाणी ओघ ॥ २०९ ॥

मिच्छत्त-पवुंसयवेद-गिरयाउ पिरयगइ-एइदिय-बीहिंदिय तीइदिय-चठरिंदियआदि-
हुइसत्तण भसंपत्तसेवइसंपइण-भिरयाणुपुवी-आदाव-आवर-सुहुम अप-अत्त-साहारणमैक-
ट्टापिसण्णा, एककट्टि भव मिच्छाइहिंणुणट्टाणे^१ पंचसकूलेण अवट्टापादो । एवासिं पकूवया
ओक्तुत्थ । पवरी विमंगलाणीसु एइदिय-वेइदिय-तीइदिय चठरिंदियआदि-आदाव-आवर

विमंगलाणियोंके भी इसी प्रकार कहना चाहिये क्योंकि, मति भुत मज्झिमोसे इनके
कोई विशेषता नहीं है । मेइ केवल इतना है कि उपपात परमात उच्छ्वास और प्रत्येक-
धीर, इनका स्वरूप बन्ध होता है क्योंकि, अपर्याप्तकाळमें विमंगलाणका अभाव है ।
जस पावर और पर्याप्तका मिथ्याहति गुणस्यात्ममें स्वरूप बन्ध होता है क्योंकि स्थावर,
सूक्ष्म और अपर्याप्तका जीवोंमें विमंगलाणका अभाव है । तीन भानुपूर्वी नामकर्मोंका बन्ध
परोक्ष होता है क्योंकि, अपर्याप्तकाळमें विमंगलाणका अभाव है । प्रत्ययोंमें भौतिकमिथ
धैरियिकमिथ और कर्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये क्योंकि विमंगलाणका
अपर्याप्तकाळके साथ विरोध है । और भी यदि कोई मेइ है तो उसका स्मरणकर कहना
चाहिये ।

एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्रकृति आओके समान है ॥ २०९॥

मिथ्यात्व मनुष्यकेन्द्र नारकायु नरकगति एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुर्न्द्रिय
आति हुइसंस्थान भसंपत्तसुगदिकसंस्थान नारकानुपूर्वी आताप
स्थावर, सूक्ष्म अपर्याप्त और साधारण इनकी एकस्थानिक संज्ञा है क्योंकि, एक
ही मिथ्याहति गुणस्यात्म इनका बन्ध स्वरूपसे अवस्थान है । इनकी प्रकृति आओके
समान है । विशेषता यह है कि विमंगलाणियोंमें एकन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुर्न्द्रिय

१ अ अण्णोः पवस एव अण्णो एव पवस इति पाठः ।

२ अण्णो इति मेवो आरादभो इति मेवो इति पाठः ।

३ अत्थि मिच्छाट्टेण इति पाठः ।

मह-विर-सुह-सुमग-सुस्वर-आदेज-असकिधीन तिगइसंहुतो बंधो, विरमयईए बमावाहो ।
 बप्पसत्यविहायमइ दुमन-दुस्सर अण्णदेज-मीचागोदणं तिगइसंहुतो बंधो, देवगईए बमावाहो ।
 पवरी सासणे विरिक्ख-मगुसमइसंहुतो । उच्चगोदसु देव-मपुमगइसंहुतो, बप्पगईए
 विरोहो । पंचपण्णावरणीय-अवदेसणवरणीय-असाहवेदणीय-सोत्तसकसाय-अरि-सोम-बप-
 दुग्गं-परिदियवादि-तेवा-कम्मइयसरीर-बप्प-गंध-रस-फस अगुस्सतहुन-उच्चार-नरप-
 उत्सास-तस-वाहर-प-बप-पतेयसरीर-अभिर मसुह मजसकिप्पि-पिमिष पंचंतउइयाव मिप्प-
 इड्ढिहि चउयइसंहुतो बंधो । सासणे तिगइसंहुतो, विरमयईए बमावाहो ।

देवाउ-देवगइ-वेठप्पियसरीर-वेठप्पियसरीरंगोमग-देवगइपाओगाणुपुप्पीन बंधस
 विरिक्ख-मगुसमिप्पइ-सासणसम्मादिड्ढियो सामी । अवसेसणं चउगया । बंधयणं सुयमं ।
 बंधोप्पेहो नत्ति, ' बंधमा नत्ति ' ति सुसुरिइछो । भुवबंधीनं मिप्पइड्ढिहि बंधो
 चउप्पिहो । सासणे तिगिहो, भुवछमात्ताहो । अवसेसणं पयडीनं बंधो सवि-अजुहो,
 अजुवबंधिहो । एवमेसा मदि-सुद-अण्णाणीनं पकूवया कया ।

एति प्रशस्तविहायोगति स्थिर, शुभ सुमग सुस्वर, अजेय और पञ्चकीर्तिक तीन
 गतिपोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, नरकगतिसे साय इसके बन्धका समाप है ।
 समशस्तविहायोगति शुभग सुस्वर, अमजेय और नीचगोत्रका तीन गतिपोंसे संयुक्त
 बन्ध होता है, क्योंकि, देवगतिसे साय इसके बन्धका समाप है । विरोधता इतनी है कि
 सासत्त्व गुणस्थानमें तिर्बगति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । उच्चगोत्रका
 देवगति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतिपोंके साय इसके
 बन्धका विरोध है । पांच कामावरणीय नी वर्तमावरणीय मसातावेदनीय सोकह कया
 अरति शोक मय अगुन्सा पंचेन्द्रिय जाति तैमस व कामज शरीर, बर्च गन्ध रस
 स्पर्श अगुरकपु वपयात परमात उच्चवास अर वाहर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर,
 अस्थिर, अशुभ अयचकीर्ति निर्माण और पांच अन्तरात्मिका मिप्पाद्यति गुणस्थानमें
 चारों गतिपोंसे संयुक्त बन्ध होता है । सासत्त्व गुणस्थानमें तीन गतिपोंसे संयुक्त बन्ध
 होता है क्योंकि, नरकगतिसे साय इस गुणस्थानमें इसके बन्धका समाप है ।

देवासु, देवगति वैदिकिकशरीर, वैदिकिकशरीरंगोपांग और देवगतिपायोगात्
 पूर्णके बन्धके तिर्बक व मनुष्य मिप्पाद्यति एवं सासत्त्वमय्याद्यति स्वामी हैं । दोष
 प्रकृतिपोंके बन्धके चारों गतिपोंके जीव स्वामी हैं । बन्धाध्याय सुयम है ।
 बन्धमुच्छेद है नहीं, क्योंकि, यह अवन्धक नहीं है इस प्रकार सूत्रोक्त ही
 है । अजबन्धी प्रकृतिपोंका बन्ध मिप्पाद्यति गुणस्थानमें चारों प्रकारका होता है ।
 सासत्त्व गुणस्थानमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि वहाँ अज बन्धका समाप है ।
 दोष प्रकृतिपोंका बन्ध सामि व अजुव होता है क्योंकि, वे अजबन्धी हैं । इस प्रकार
 यह मति भुव अजामिचोंकी प्रकृपणा की गई है ।

विमगणाणीं पि एव चैव वत्तव्यं, विसेसामावादो । पञ्चरि उवपाद-परपाद-उत्सास
पतेयसरीराण सोदयो वंधो, अनञ्जत्तकले विमगणाणामावादो । तस-चादर-पञ्चत्ताण मिच्छा
इद्विम्हि सोदयो वंधो, चावर-सुद्धम अपञ्जत्तएसु विमगणाणामावादो । तिप्पमाणुपुब्बीपं
बंधो परोदयो, अपञ्जत्तकले विमगणाणामावादो । पञ्चएसु ओराटिय-वेठभियमिस्स-कम्म
इयपच्चया अवजेदप्पा, विमगणाणस्स अपञ्जत्तकलेस सह विरोहादो । अण्णो वि चइ अत्थि
मेवो सो संमात्थिय वत्तव्यो ।

एककट्टाणी ओघ ॥ २०९ ॥

मिच्छत्त-गलुंसयवेद-भिरयाठ भिरयगइ-एइदिय-बीइदिय तीइदिय-चउरिंदियनादि-
हुइसठण असपत्तसेवइसंभइज-गिरयाणुपुवी-आदाय-चावर-सुद्धम अपञ्जत्त-साहायणाणमेक्क-
ट्टापिसप्पा, एककट्टि चैव मिच्छाइद्विगुणट्टापे' यवसरूपेण अवट्टाणादो । एदासिं परूवणा
ओपत्तुत्स्य । पञ्चरि विमगणाणीसु एइदिय-वेइदिय-तीइदिय चउरिंदियनादि-आदाय-चावर

विमगगणानियोंके भी इसी प्रकार कहना चाहिये क्योंकि, मति भूत भट्टानियोंसे इनके
कोई विशेषता नहीं है । मेइ केवल इतना है कि अपपात परपात उक्कवात्स और प्रत्येक-
शरीर, इनका स्वरूप बन्ध होता है क्योंकि, अपर्याप्तकासमें विमगगणानका अभाव है ।
जस चावर और पर्याप्तका मिष्पाइदि गुणस्याममें स्वरूप बन्ध होता है क्योंकि, स्थावर,
सूक्ष्म और अपर्याप्तक जीवोंमें विमगगणानका अभाव है । तीन मानुषीं नामकमोंका बन्ध
परोक्ष होता है क्योंकि, अपर्याप्तकासमें विमगगणानका अभाव है । प्रत्ययोंमें औत्वारिकमिध
वैदिकिमिध और कामेय प्रत्ययोंको कम करना चाहिये क्योंकि, विमगगणानका
अपर्याप्तकासके साथ विशेष है । और भी यदि कोई मेइ है तो उसको स्मरणकर कहना
चाहिये ।

एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २ ९॥

मिष्पात्त मपुसक्केइ नारकायु नरकगति एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुन्द्रिय
जाति हुइसठस्याम असपात्तसुपादिकसइहमन नारकानुपुवी आताप
स्थावर, सूक्ष्म अपर्याप्त और साधारण इनकी एकस्थानिक संज्ञा है क्योंकि, एक
ही मिष्पाइदि गुणस्याममें इनका बन्ध स्वरूपसे अवस्थान है । इनकी प्ररूपणा ओघके
समान है । विशेषता यह है कि विमगगणानियोंमें एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुन्द्रिय

१ अ आपसी. पञ्च एइ नामती एइ पञ्च इति पाठ ।

२ अइइ इति वेदो वा वत्तव्यो. इति वेदो इति पाठ ।

३ अत्रियु विमगगणान इति पाठ ।

सुहुम-अपम्वस-साहारमै-विरयाणुपुष्पीजं पराभो वधो, एतेसु विभगवार्जीवममात्रादा ।
सेस सुगमै ।

आमिणित्रोदिय-सुद ओहिणाणीसु पचणाणावरणीय-चउदसणा
वरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-पचतराइयाण को वधो को अवंधो ?
॥ २१० ॥

एतं सुगमै ।

असजदसम्माइट्टिणहुडि जाव सुहुमसापराइयउवसमा स्ववा
बंधा । सुहुमसापराइयअद्धाए' चरिमसमय गतूण वधो वोच्छिज्जदि ।
एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २११ ॥

एशसिमुदयादो वधो पुण्यं वोच्छिज्जो, वंधे वोच्छिज्जं सति वि पम्भ उइयईसणादा ।
पंचनावावरणीय-चउदसणावरणीय-पचतराइयाण सोदमो वधो । असकिट्टिए असजदसम्मा-
मिड्डिमि सोदम-परोदमो, पडिबन्नुदयइसणादो । उवरि सोदमो पेव, पडिबन्नुदयामात्रादो ।

आति आताप स्वावर सूक्ष्म अपयाणत माभारण और भारकापुष्पीका परोदम व प
होता है क्योंकि, हममें विभगवार्जी जीर्णोका अभाव है । दोष प्रकल्पना सुगम है ।

आमिनिवाधिक, सुत और वधनि ज्ञानी जीर्णोंमें पांच आभावरणीय, चार दर्शना-
वरणीय, पञ्चकीर्ति, उच्छगात्र और पांच अन्तरायक केन वन्धक और केन अवन्यक
है ? ॥ २१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्पगष्टिसे ठेकर सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमक व क्षपक तक वन्धक है ।
सूक्ष्मसाम्परायिककठके अन्तिम समयमें आकर वन्ध व्युच्छिज्ज होता है । ये वन्धक हैं, क्षेप
अवन्यक है ॥ २११ ॥

हम प्रकृतिवाक्य वग्य उद्भवसे पूर्वमें व्युच्छिज्ज जाता है क्योंकि, वग्यके व्युच्छिज्ज
हो जानेपर ही पीछे हमका उद्भव देखा जाता है । पांच ज्ञानावरणीय चार दर्शनावरणीय
और पांच अन्तरायक स्वादय वग्य होता है । पञ्चकीर्तिके अर्जयतसम्पगष्टि शुभस्थानमें
स्वेदय परोदय वग्य होता है क्योंकि यहाँ उच्छापी प्रतिपक्ष प्रकृतिक उद्भव देखा जाता
है । ऊपर स्वेदय ही वग्य होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिक उद्भवका अभाव है ।

सञ्चामोदस्य असञ्जदसम्मादिष्टि-संजदासंजदेसु सोदय-परोदयो, पडिक्कसुदयदसणादो ।
उवरि सोदयो चेव ।

पंचपाणावरणीय-चउदमणावरणीय-उच्चामोद-संजदासंजदस्यार्थं निर्गतो पंचो, एत्थ
बभुवरमामावादो । असंजदसम्मादिष्टिपुहुडि जाव पमतसज्जरो ताव असकिणीए पंचो
सांतो । उवरि निर्गतो, पडिक्कसुत्तमडिक्कामावादो । पच्चपा सुगमा । असंजदसम्मा
दिष्टिपे देव-मणुमगसुत्तो । उवरिमेसु देवगमसुत्तो । बभुवरसंजदसम्मादिष्टि, दुगद
संजदासंजदा मामी । उवरिमा मणुसा चेव । पचद्वाप पंचवत्तिष्ठण्णद्वार्णं च सुगम । पुव
पंचाण निविहो पंचो, पुवत्तामावादो । अवसेमाणं सादि-अदुवो, अदुवपविचो ।

णिहा पयला य ओघ ॥ २१२ ॥

पत्रि 'असंजदसम्मादिष्टिपुहुडि' जाव मविद्व्य । आपमि 'मिच्छादिष्टिपुहुडि' सि
वुत्त ; परथ पुत्त असंजदसम्मादिष्टिपुहुडि सि वत्तव्य, सण्णाणस्स हेट्ठिमणुगद्वारेसु अमावादो ।

उच्चगोरक्षा असंयतसम्पददि और सयतासंयत गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता
है क्योंकि यहां उसकी प्रतिपन्न प्रकृतिका उदय देखा जाता है । ऊपर उसका स्वोदय ही
बन्ध होता है ।

पांच आनावरणीय आर दशमावरणीय उच्चगात्र आर पांच अन्तराका
निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि यहां इनके बन्धविभागका अभाव है । असंयतसम्पदद्विसे
उत्तर प्रमत्तसंयत तक यन्त्रादिकका बन्ध उत्तर होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है
क्योंकि, यहां उसकी प्रतिपन्न प्रकृतिक बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम है । असंयतसम्प
दद्विषयोंके दय च मनुष्य गतिने संयुक्त बन्ध होता है । उपरिम जीवोंके देवगतिसे
संयुक्त बन्ध होता है । आर्य गतिपोंके असंयतसम्पदद्वि आर ही गतिपोंके
संयतासंयत स्वामी है । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी है । बन्धावधान
आर बन्ध-वृत्तिउत्तरस्थान सुगम है । भुवर्गधी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है
क्योंकि उमक भुव बन्धका अभाव है । शय प्रकृतियोंका सावि य अमृत्त बन्ध होता है,
क्योंकि, ये अमृत्तवर्गी हैं ।

निद्रा और प्रपञ्चकी प्ररूपणा ओपक समान है ॥ २१० ॥

विशयता कबन यह है कि असंयतसम्पदद्विसे उत्तर कहा जाहिय । आपमें
मिच्छाद्विसे उत्तर एसा कहा गया है परंतु यहां असंयतसम्पदद्विसे उत्तर
कहना जाहिय क्योंकि, अपरान गुणस्थानोंमें सम्पन्नमानका अभाव है । इतना ही यहां

एविषो येव विसेसो, नत्वि अण्परव करय वि ।

सादावेदणीयस्स को वंधो को अवधो ? ॥ २१३ ॥

सुगमं ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव स्तीणकसायवीदरागच्छदुमत्था
वधा । एदे वधा, अवधा नत्ति ॥ २१४ ॥

सादावेदणीयस्स वधो उदयारो पुनं पण्ण वा वोञ्छिण्णो सि विषातो नत्ति, एत्थ
बंधोत्थाणं वोञ्छेदमावाधो । सोइय-परोत्तमो बंधो, अद्वयोदयत्तादो, असंजदसम्मादिट्ठि
प्पहुडि जत्थ पमत्तसंजदो सि बंधो संतोरो । उवरि पिरतो, पडिबन्धपयडीए वधामावाधो ।
पण्णया सुगमा । असंजदसम्मादिट्ठि देव-मनुसगाइसंजदं; उवरिया देवगाइसंजदमगाइसंजदं
व वधति, सादाविवाधो । पउगाइअसंजदसम्मादिट्ठिण्णो, दुयइसवधासंजदा सामी । उवरि मनुष्य
वध । वधत्ताणं सुगमं । बंधवोञ्छेदो नत्ति, 'अवधा पत्ति' सि सुत्तुहिइत्तादो । सादि
अद्वयो बंधो, अद्वयबंधितादो ।

विशेष है अन्धकार नहीं ही और कुछ विशेषता नहीं है ।

सादावेदनीयस्स केन बन्धक और केन अवन्धक है ? ॥ २१३ ॥

यह सब सुगम है ।

असंजतसम्पत्तिसे लेकर क्षीणकपायपीतलग्नादुमत्स तक बन्धक है । ये बन्धक
हैं, अवन्धक नहीं हैं ॥ २१४ ॥

सादावेदनीयस्स बन्ध उदयसे पूर्वमे वा पश्चात् स्पृच्छिज्ज होता है यह विचार
नहीं है क्योंकि यहाँ उससे बन्ध आर उदयके स्पृच्छेत्ता अभाव है । सोइय-परोत्तम बन्ध
होता है क्योंकि वह अद्वयोदयी है । असंजतसम्पत्तिसे लेकर प्रमत्तसंजत तक उसका
बन्ध साम्यार होता है । ऊपर निरंतर बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ उसकी प्रतिपत्ति
प्रत्यक्ष बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम है । असंजतसम्पत्ति जीव देव व मनुष्य
गतिस्स संजुज्ज बांधते हैं, उपरिम जीव देवगतिसे संजुज्ज और अपत्तिस्संजुज्ज
बांधते हैं, क्योंकि, देवा स्वभाव है । बापें गतिसे असंजतसम्पत्ति और वो
पत्तिसे संजतासंजत स्वामी हैं । उपरिम शुभस्वभाववाली मनुष्य ही स्वामी हैं ।
वन्धाव्वात्त सुगम है । बन्धस्पृच्छेद नहीं है क्योंकि, वह अवन्धक नहीं है इस प्रकार
सुगम ही निर्दिष्ट है । सादि व अद्वय बन्ध होता है, क्योंकि, वह अद्वयबन्ध है ।

सेसमोघ जाव तित्थयेरि त्ति । णवरि असजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि
त्ति भाणिदब्ब ॥ २१५ ॥

एदस्स अत्थो अदि वि सुगमो तो वि सम्पापपक्खवाएणाक्खितथित्तो दुम्मेहजपाणु-
ग्गहद्धं च पुणत्थि परूवेमि — असादवेदणीयस्स पुब्ब षणो वोच्छिम्णो । उदयवोच्छेदो पत्थि,
केवलज्जाणीसु वि तदुदयदसणादो । एवमभिरासुहाणं पि वत्थं । अरदि-सोगाणं पुब्बं षणो
पच्छा उदभो वोच्छिम्णा, पमत्तापुप्पेसु षणोदयवोच्छेदुवर्त्तमादो । अजसकिटीए पुप्पमुदभो
पच्छा षणो वोच्छिम्णो, पमत्तासजदसम्मादिट्ठीसु षणोदयवोच्छेदुवर्त्तमादो । असादवेदणीय
अरदि-सोगाणं षणो सोदय-परोदया, अद्वोदयत्तादो । अभिरासुहाणं सोदभो, धुवोदयत्तादो ।
अजसकिटीए असजदसम्मादिट्ठिहि षणो सोदय-परोदभो । उवरी परोदभो षेव । एरासिं
पयडीणं सम्भासिं पि षणो सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदसणादो । पन्धया सुगमा ।
असजदसम्मादिट्ठिहि सम्भपयडीणं दुगाइसंजुणो, उपरिमार्णं देवगाइसंजुणो षणो । अठगाइ
असजदसम्मादिट्ठी दुगाइसंजदासंनवा मनुसगाइसजदा च सामी । अमंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि

येष प्ररूपणा तीर्थाकर प्रकृति तक बोधके समान है । विशेषता केवल इतनी है कि
' असंयतसम्यग्दृष्टि लेकर ' ऐसा कहना चाहिये ॥ २१५ ॥

इस सूत्रका अर्थ यद्यपि सुगम है तो भी सम्यग्ज्ञानके प्राप्तपातसं प्राप्तताविषय
अर्थात् पाकप होकर और दुर्बुद्धि जनोके अनुग्रहार्थ निरसे भी प्ररूपणा करते हैं—
असातावेदनीयका पूर्वमें बन्ध व्युत्पिन्न होता है । उदयव्युच्छेद उसका नहीं है क्योंकि,
केवलज्जाणीयोमें भी उसका उदय देखा जाता है । इसी प्रकार अस्थिर और अशुभके भी
कहना चाहिये । अरति व शोकका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युत्पिन्न होता है,
क्योंकि, प्रमत्त और अपूर्वकरण गुणस्थानोंमें क्रमसं उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया
जाता है । अयशास्तीरिका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युत्पिन्न होता है क्योंकि प्रमत्त
और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसं उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता
है । असातावेदनीय अरति और शोकका बन्ध लोभयपरोदय होता है, क्योंकि, वे
अशुभोदयी हैं । अस्थिर और अशुभका लोभय बन्ध होता है क्योंकि वे लोभोदयी हैं ।
अयशास्तीरिका बन्ध असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें लोदय-परोदय होता है । ऊपर उसका
परोदय ही बन्ध होता है । इन सब ही प्रकृतियोंका बन्ध सात्तर होता है क्योंकि, एक
समयसे भी उनका बन्धविधायक देखा जाता है । मात्थय सुगम है । असंयतसम्यग्दृष्टि
गुणस्थानमें सब प्रकृतियोंका वा गतियोंसं समुक्त तथा उपरिम और्ध्वके देवगतिसं समुक्त
बन्ध होता है । चारों गतिर्ध्वके असंयतसम्यग्दृष्टि, दो गतिर्ध्वके संयतसंयत और
मनुष्यगतिके संयत स्थानी हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि लेकर प्रमत्तसंयत तक बन्धाण्णाम

गहसमुत्तो, अण्यगहदि सह विरोहादो । अपञ्चकस्त्राणचठकस्स चठगहसंज्ञदसम्माइही
सामी । अणसेसाणं पयहीणं देव-पेरइया सामी । संघट्ठाणं वरिय, एक्कमिह गुणहाणे भूओगुण
ट्ठाणवियिदाणविरोहादो । असंज्ञदसम्मादिट्ठिमिह पंधो वोच्छिन्नदि । अपञ्चकस्त्राणचठकस्स
तिविहो ववो, धुवामावाहो । अणसेसाणं सादि भट्ठवो ।

पञ्चकस्त्राणावरणचठकमेत्य पेद्धावियमसंज्ञदसम्मादिट्ठि-संज्ञदासंज्ञददो गुणहाणेसु
समं वेव संपुबलमादो । पंधोदया सम वोच्छिण्णा, संज्ञदासंज्ञदमि तदुभयाभावदंसणादो ।
सोदय-परोदमो पंधो, धुवादयत्तादो । विरतरो पंधो, धुवसंधिचो । पञ्चया सुगमा ।
असंज्ञदसम्मादिट्ठिमु देव-मणुमगहसमुत्ता । संज्ञदामंज्ञदेसु देवगहसंमुत्तो । चठगहसंज्ञद
सम्मादिट्ठो दुगहसंज्ञदामत्रा सामी । असंज्ञदसम्मादिट्ठिणहुट्ठि जाव संज्ञदासंज्ञदो सि
संघट्ठाणं । संज्ञदामंज्ञदमि पंधो वोच्छिन्नदि । दोसु वि गुणहाणेसु तिबिहो पंधो,
धुवामावाहो ।

पुरिसनेद चठमंज्ञलम-इस्म-रदि-अप-दुगुंमणं सोदय-परोदमो पंधो । सांतर-विरतार

हाता हे कयोकि, अण्य गनियोक माय इमक वण्यका विराय हे । अणस्याण्णानचतुष्क
चारो गनियोके अमयतमम्यगहदि स्थामी हे । शर प्रहतिपोंके वय य मारका स्थामी हे ।
अणस्याण्णान मदी हे कयोकि एक गुणस्थानमें बहुत गुणस्थान जनित अण्णानका विराय
हे । अणयतमम्यगहदि गुणस्थानमें वण्य व्युत्पिच्छ हाता हे । अणस्याण्णानचतुष्क तीन
प्रकारका वण्य हाता हे कयोकि, उमक अण्य वण्यका अभाव हे । शर प्रहतिपोंका भादि य
अण्य वण्य हाता हे ।

अण्णान्णानावण्यचतुष्क पदां विरयानिक हे कयोकि, अमयतमम्यगहदि और
संयतासंयत इम हा गुणस्थानोंमें समान ही वण्य पाया जाता है । वण्य और उण्य दोनों
भावमें व्युत्पिच्छ हाता है कयोकि, संयतासंयत गुणस्थानमें उम दोनोंका अभाव तथा
जाता है । आद्य वराद्य वण्य हाता हे कयोकि यह प्रपादयी है । निरन्तर वण्य हाता
हे कयोकि, यह ध्रुववर्ण्य है । अण्य सुगम है । अमयतमम्यगहदिपोंमें वय य मनुष्य गतिमें
संयुक्त तथा संयतासंयतोंमें स्वगतिम मनुष्य वण्य हाता है । चारों गनियोक अमयत
म्यगहदि और हा गनियोक संयतासंयत स्थामी है । अमयतमम्यगहदिमें मरर संयता-
संयत तक अण्णान है । संयतासंयत गुणस्थानमें वण्य व्युत्पिच्छ हाता है । शनों ही
गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका वण्य हाता है कयोकि, ध्रुव वण्यका अभाव है ।

पुण्यवद् चार संयतम हाण्य गति अण्य और सुगुणाका आद्य-वराद्य वण्य

आव प्मत्तसंजदो ति वंपदाव । पमत्तसुवदमि वंपवोच्छेदा । एदासि वपो सादि-मदुवो ।

अपञ्चकस्त्राणवरणचठक-मनुमगद् भोराटियसरीर अवावग-वञ्जरिसहवर्णागपय
सरीरसंपदव-मनुसगद्वाभोगमाप्नुष्वीमो एकमिदं अमंजदसम्मादिद्विगुणद्वये वञ्जति ति
एदासिमय एगद्वयसंख्या । एतथ अपञ्चकस्त्राणवरणचठक-मनुसगद्वाभोगमाप्नुष्वीय वंपेत्तया
समं बोच्छिज्जा, वसजदसम्मादिद्वि मोत्तुवति पंमुदयाजुवठमादो । अवसेसाव पयडीव-
मेत्थ खमोवसमियपावमम्याए वंपोवोच्छेदा वेव, उदयवाञ्छेदो पत्थि, केतवानीमु वि
उदयदसंपादो । अपञ्चकस्त्राणवरणचठकस्स वंपो सोदय-परादमो, मदुवोदयवदो ।
मनुसगद्दुमोराटियदुग-वञ्जरिसहसंवदवाणं वंपो परो-मो, सम्मादिद्वीसु एदासि सैत्तएव वपस्स
विरोदादो । विरत्तो वंपो, असेजदसम्मानिद्विमिदं एगसमएव वजुवरमामावादो । पचया सुयमा ।
ववति मनुसगद्दुमोराटियदुग-वञ्जरिसहवर्णागपयसरीरसंपदवापमसंजदसम्मादिद्विमिदं ओग-
त्थिमकयभोग-भोराटियमिस्सकयभोगपचया पत्थि, विरिक्ख-मनुमवसजदसम्मादिद्वीसु एदासि
वंपामावादो । अपञ्चकस्त्राणवरणचठकस्स देव-मनुसगद्संजदो वंपो । अण्णासि पयडीव मनुम

है । प्रमत्तसंपद गुणस्वात्मने वन्धव्युच्छेद होता है । इन प्रकृतियोंका वन्ध सादि और मदुव
होता है ।

अप्रत्याक्यानावरणचतुष्क, मनुष्यगति भौतारिकशरीर, भौतारिकशरीरसंगोपांग
वञ्जर्ममवज्जनापचशरीरसंहनन और मनुष्यगतिप्राप्त्यापानुपूर्वी ये प्रकृतियाँ एक अनेक
सम्पगदधि गुणस्वात्मने वंधती हैं अत एव इनकी यहाँ एकस्वान संज्ञा है । यहाँ अप्रत्याक्या
चतुष्क और मनुष्यगतिप्राप्त्येम्पानुपूर्वीका वन्ध और उदय दोनों स्तरमें व्युत्थित होते हैं
क्योंकि, अनेकपदसम्पगदधि गुणस्वात्मने छोड़कर उपरिम गुणस्वात्मने हमका वन्ध और उदय
नहीं पाया जाता । होय प्रकृतियोंका यहाँ साधोपधामिक ज्ञानमार्गधामे वन्धव्युच्छेद ही है
उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, केवलज्ञानियोंमें भी उनका उदय देखा जाता है ।
अप्रत्याक्यानावरणचतुष्कका वन्ध ओदय परेत्तय होता है क्योंकि वह अतुल्योत्पी है ।
मनुष्यगतिविक, भौतारिकविक और वञ्जर्ममवज्जनापचशरीरसंहननका परेत्तय वन्ध होता है क्योंकि
सम्पगदधियोंमें इनके स्वरूपसे वन्धका विरोध है । निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि,
अनेकपदसम्पगदधि गुणस्वात्मने एक समयसे वन्धविधायका अभाव है । प्रत्यय सुगम है ।
विरोधता इतनी है कि मनुष्यगतिविक, भौतारिकविक और वञ्जर्ममवज्जनापचशरीरसंहननका
अनेकपदसम्पगदधि गुणस्वात्मने भौतारिक और भौतारिकमिश्र कापयोग प्रत्यय नहीं है
क्योंकि, तिर्येक और मनुष्य अनेकपदसम्पगदधियोंमें इनके वन्धका अभाव है । अप्रत्याक्याना
चतुष्कका देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त तथा अन्य प्रकृतियोंका मनुष्यगतिसे संयुक्त वन्ध

बोधिञ्जदि । सादि-मदुबो, मदुववभिसादो ।

देवगइ-पचिदियजाति-वेउअिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंअण-वेउअियसरीर-अगोवंग वण्ण-गव-रस फ़स-देवगइपाओगगानुपुथी-अगुरुअलहुअ-उवपाद-परपाद-उत्सास-पसत्तविहायगइ-तस-बादर-पञ्जस-पसेयसरीर-पिर-सुम-सुमग-सुस्सर-आदेज्ज-जिमिणजामाण-उत्तरे-देवगइपाओगगानुपुथी-वेउअियसरीर-वेउअियसरीरंगोवगाण पुण्वमुदओ पण्ण-बो बोधिञ्जदि, अपुण्णमवदसम्मादिट्ठीमु-बोदयवोअेदुवत्तमादो । अवसेसतेवीसपयडीण एत्थु-दयवोअेदो णत्थि, बंधवोअेदो चव, केवलपार्थसु उदयवोअेदुवत्तमादो ।

देवगइ-वेउअियदुगाण-सुअ्वगुणद्वारेणु परोदओ बंधो, एदासिमुदयववापमक्कमेण-उत्थिवेउहादो । पचिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गव-रस-फ़स-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पञ्जस-पिर-सुम-जिमिणजामाण सोदओ बंधो । समचउरससंअण उवपाद-परपाद-उत्सास-पत्तय-सरीरपमसंअदसम्मादिट्ठीमु सोदय-परोदओ बंधो । उवरीमेसु गुणद्वारेणु सोदओ वेव, सेसिमवज्जत्तदाए-अमावादो । जवरि समचउरससंअणस्य सुअ्वगुणद्वारेणु सोदय-परोदओ बंधो । पसत्तविहायगइ-सुस्सरण-सुअ्वगुणद्वारेणु सोदय-परोदओ बंधो । सुमग मादेज्जाण

अुच्छिअ हाता है । सादि य अगुण वण्ण हाता है क्योंकि, वह अगुणवर्णी है ।

देवगति पंचमिदियजाति पैत्रियिक तैजस य कामेण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान पैत्रियिकशरीरगोपांग वण्ण गण्ण रस स्यज इवगतिप्राप्यगानुपूर्वी अगुरुमसु उपधान परधान उच्छ्रवास प्रशस्तविहायगति वस बादर, पयान प्रत्यक्षशरीर, स्थिर, सुम सुमग सुस्सर, मादय भार निमाण कामकर्मोर्ध्व प्ररूपणा करत है— देवगतिप्राप्यगानुपूर्वी पैत्रियिकशरीर और पैत्रियिकशरीरगोपांगका पूर्णमें उदय और पश्चात् वण्ण अुच्छिअ हाता है क्योंकि अपूर्णकरय और असयतमस्यगद्वि गुणस्थानोंमें अमरा उतक वण्ण य उदयका अुच्छेत्त पाया जाता है । दोय तईस प्रकृतियोंका यही उदयअुच्छेत्त महीं है केवल वण्ण अुच्छेत्त ही है क्योंकि केवलशानियोंमें उतक उदयअुच्छेत्त पाया जाता है ।

देवगतिष्ठिक और पैत्रियिकठिकका सब गुणस्थानोंमें परादय वण्ण हाता है क्योंकि, इनके उदय और वण्णक एक साथ रहनेका विराय है । पंचमिदियजाति तैजस य कामेण शरीर, वण्ण गण्ण रस स्यज अगुरुमसु वस बादर, पयान स्थिर, सुम और निमाणका स्वादय वण्ण होता है । समचतुरस्रसंस्थान उपधान परधान उच्छ्रवास और प्रत्यक्षशरीरका असयतमस्यगद्वि गुणस्थानमें स्वेदय परादय वण्ण हाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें उतका स्वेदय ही वण्ण हाता है क्योंकि, उतक अययान्तकामका अभाव है । विरोध रहता है कि समचतुरस्रसंस्थानका सब गुणस्थानोंमें स्वेदय परादय वण्ण हाता है । प्रशस्तविहायगति और सुस्सरका सब गुणस्थानोंमें स्वादय-परादय वण्ण हाता है । सुमग और मादयका

मणपञ्चवणाणीसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय जसकित्ति
उच्चागोद पचतराहयाण को वधो को अवधो ? ॥ २१६ ॥

सुगम ।

पमत्तसजदण्डुडि जाव सुहुमसापराहयउवसमा स्त्वा वधा ।
सुहुमसापराहयसजदद्वाए चरिमसमम गतूण वधो वोञ्छिज्जदि ।
एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २१७ ॥

एतत् एदासि पयद्दीप मदिजाभमगगाए पमत्तमजदण्डुडिगुणहासेसु जया परूवणा
कदा तथा परूवेदव्या । जवरि एतत् सज्जस्थिति-गठंसयवेदपञ्चया अवभेदव्या, अप्ससय
वेदोदइत्तण मणपञ्चवणाणाणुप्पसीदो । पमत्तपञ्चएसु माहारदुगमवणेदव्य, मणपञ्चवणाणस्स
माहारसतिरदुगादएण सह विणेहादो । पुरिसवेदस्स सोदभो वधो । एवमणो वि विसेसो
अदि भरिष सो संमरिय वत्तम्भो ।

णिहा-पयलाण को वधो को अवंधो ? ॥ २१८ ॥

मनपर्ययज्ञानी जीर्णो पांच ज्ञानावरणीय, चार दशनावरणीय, यशकृति, उच्चगोत्र
और पांच अन्तरायक केन पन्धक और केन अपन्धक है ? ॥ २१६ ॥

यह सब सुगम है ।

प्रमत्तमपतमे टेकर सुखसाप्परायिक उपपन्नक व क्षपक तक पन्धक है । सुख
साप्परायिकसुखिसयत्तकले अन्तिम समयक आकर पन्ध प्युच्छिन्न होता है । ये पन्धक है,
शेष अपन्धक है ॥ २१७ ॥

यहाँ हम प्रवृत्तियोंकी मतिमानमागणामें प्रमत्तमपतमादिक गुणस्थानोंमें जिन
प्रकृपणा की गई है वैन प्रकृपणा करना चाहिये । विहाय हममा है कि यहाँ मपत्र तर्पण
और तर्पुमकक प्रत्ययोंके कम करना चाहिये क्योंकि अमदात्म यदादय युक्त जीर्णो
मम पर्ययज्ञानकी उत्पत्ति नहीं होती । प्रमत्तमपत गुणस्थान सम्बन्धी प्रत्ययोंमें माहारक
विकल्प कम करना चाहिये क्योंकि, मन पर्ययज्ञानका माहार-गतिरविकल्प उच्चक नाय
विहाय है । पुनरप्यकक म्यादय वन्ध होता है । इसी प्रकार अन्य भी यदि भद है ता उच्चक
स्मरण कर करना चाहिये ।

निज और प्रपठाक केन पन्धक और केन अपन्धक है ? ॥ २१८ ॥

नसंनदसम्प्रतिष्ठिभिः सोदय-योरदभो । उपरि सोदभो चैव, पडिवनसुदयामावाभो ।

पिर-सुमाजमसबदसम्मादिदिप्यहुडि जाव पमसंजडा छि सत्तये नपो । उबरि भिरंतये ।
नरसेसाथ पयडीब सव्यगुणद्वयेसु नपो भिरंतये, पडिवक्खपयडीबं नंधामावादे ।

देवगइ-वेउधियहुगाणे वउधिय-वउधियमिस्सपञ्चया वसंजइसम्मादिहिमि भवमे-
दप्पा । सेसपयडीणं पयया ओपत्तुत्त । देवगइ-वेउधियहुगाणं वेवो सव्वगुणहोमसु देवगइ
संहुत्थे । ववसेसाणं पयडीणं वेवो वसंजइसम्मादिहिमि देव-मणुसगइसंहुत्थं । उवरिमिसु गुण-
होमसु देवगइसंहुत्थे । देवगइ-वेउधियहुगाणं हुगइवसंजइसम्मादिहि-संजइसंजइ मणुसगइ
संजइ सामी । सेसाणं पयडीणं वउगइवसंजइसम्मादिहिमो दुगइसंजइसंजइ मणुसगइसंजइ
व सामी । वसंजइसम्मादिहिप्यहुदि आव अपुण्वकरणं ति वंघट्ठाणं । अपुण्वकरणद्वारे संसेव्ये
भागे गंतुणं वेवो बोधिज्जन्दि । तिमिजस्स तिविहो वेवो , धुवामावादो । अवसेसाणं वेवो
सादि-अइवो ।

आहारद्वय विरचयराजमोषफ्लवणमवहारिय मापिदृष्य ।

वर्तमानसम्यग्दर्शि गुणस्वात्ममे स्तोत्र्य परोक्ष्य बन्ध होता है। ऊपर स्तोत्र्य ही बन्ध होता है क्योंकि वहाँ उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतिपक्षे उद्भवका अभाव है।

स्वियर और शुभका असंयतसम्प्राप्तिसे लेकर प्रमत्तसंपत्त तक सन्ततर बन्ध होता है। ऊपर निम्नतर बन्ध होता है। शेष प्रकृतिपौंछ सब गुणस्वाधोर्मे निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वस्तु प्रतिपक्ष प्रकृतिपौंछ बन्धका अभाव है।

देवगति और वैद्विषिकद्विकक वैद्विषिक और वैद्विषिकमिध का उपयोग प्रत्येक के
असंयतसम्पत्ति गुणस्थानमें कम करना चाहिये। शेष प्रकृतियोंके प्रत्येक मोमके समान हैं।
देवमतिद्विक और वैद्विषिकद्विकका बन्ध सब गुणस्थानोंमें देवगतिसे संयुक्त होता है। शेष
प्रकृतियोंका बन्ध असंयतसम्पत्ति गुणस्थानमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त होता
है। उपरिसे गुणस्थानोंमें देवमतिसे संयुक्त बन्ध होता है। देवगतिद्विक और वैद्विषिकद्विकके
वा गतिपोंके असंयतसम्पत्ति व संयतासंयत तथा मनुष्यगतिसे संयत स्वामी हैं।
शेष प्रकृतियोंके बाये गतिपोंके असंयतसम्पत्ति, दो गतिपोंके संयतासंयत तथा
मनुष्यगतिसे संयत स्वामी हैं। असंयतसम्पत्तिसे लेकर अर्धैककरण तक बन्धावस्थान है।
अर्धैककरणकाके सद्यता बहुराग जाकर बन्ध वृद्धिष्ठ होता है। निर्मात्र नामकर्मका
तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि उसका हृदय बन्ध नहीं होता। शेष प्रकृतियोंका बन्ध
सावि व अज्ञ होता है।

साधारणशिक और तीर्थंकर महातन्त्री प्रकृष्या ओषधप्रकृष्याका निर्णय करके करना चाहिये।

मणपञ्चवणाणीसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय जसकिंति
उच्चागोद पचतराड्याण को वधो को अवधो ? ॥ २१६ ॥

सुगम ।

पमतसजदप्पहुडि जाव सुहुमसापराड्यउवसमा खवा वधा ।
सुहुमसापराड्यसजदद्वाए चरिमममम गतूण वधो वोच्छिज्जदि ।
एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २१७ ॥

एत एदासि पयधीज मरिषाजमगाणाए पमतसजदप्पहुडिगुणद्वयेसु वधा परूवणा
कत्ता तवा परूवेदप्पा । पवति एत सन्निधिरिम-अउमपवेदपचया अववेदप्पा, मपसस्य
वेदोदइस्सण मणपञ्चवणाणुप्यत्तीदो । पमतपचपसु माहारदुगमवमेदप्प, मणपञ्चवणाणसु
माहारमरिदुगोदएण सह विरोहदो । पुरिमवेदसु सोदमो वधो । पचमणो वि विसेसो
जदि मत्ति सो समरिय वत्तथा ।

णिहा-पयलाण को वधो को अवधो ? ॥ २१८ ॥

मनपययजानी जीवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, चार दसनावरणीय, पञ्चकिंति, उच्छगोत्र
और पांच अन्तरायक केन पचक और केन अचन्धक है ? ॥ २१६ ॥

यह खूब सुगम है ।

प्रमत्तधुयने लेकत सूक्ष्मसाम्पयिक उपशमक व क्षयक तक चन्धक है । सूक्ष्म-
साम्पयिकशुद्धिर्मुयनकालके अन्तिम समयके जाकर चन्ध म्युच्छिन्न होता है । ये चन्धक है,
क्षेप मचचक है ॥ २१७ ॥

यहाँ इन प्रवृत्तियोंकी मरिषाजमगाणामें प्रमत्तसवनादिक गुणस्थानोंमें अस्म
प्रकृषा की गर है ऐस प्रकृषा करना चाहिये । विनाय इनमा है कि यहाँ सर्वत्र स्वीकृ
और मनुमचपय प्रत्ययोंका कम करना चाहिये क्योंकि, अमशान्न वदद्वय युक्त जीवोंक
मन पययमानकी उत्पत्ति नहीं होगी । प्रमत्तसवना गुणस्थान समर्थी प्रत्ययोंमें माहारक
शिक्षा कम करना चाहिये क्योंकि, मन पययमानका माहारकासीरिदिकके उदयक माध
विनाय है । पुरुषवद्वय स्वाद्य चन्ध जाना है । इसी प्रकार अन्य भी यदि मद् है ता उमच
मरत्य कर रहना चाहिये ।

निद्रा और प्रवत्तक केन पचक और केन अचन्धक है ? ॥ २१८ ॥

सुगम ।

पमत्तसजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्टवसमा खवा वधा ।
अपुव्वकरणद्वाए सखेज्जदिमं भाग गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे
वधा, अवसेसा अवधा ॥ २१९ ॥

एदं पि सुगम, बोधम्मि वुत्तवत्तादो ।

सादावेदणीयस्म को वधो को अवधो ? ॥ २२० ॥

सुगम ।

पमत्तसजदप्पहुडि जाव सीणकसायवीयरायछदुमत्था वधा ।
एदे वधा, अवधा णत्थि ॥ २२१ ॥

सुगममदं ।

सेसमोघ जाव तित्थयरे त्ति । णवरि पमत्तसजदप्पहुडि त्ति
भाणिदव्व ॥ २२२ ॥

एदं पि सुगम ।

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसयतमे ठेकर अपूर्वकरप्रविष्ट उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरव
क्षपके संख्यातमें माग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं शेष अबन्धक हैं ॥ २१९ ॥

यह सूत्र भी सुगम है क्योंकि, बोधमें इच्छका बन्ध कहा जा चुका है ।

सत्तावेदनीयक कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २२० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसयतमे ठेकर क्षीणरूपायवीतया छद्मस्थ तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं,
अबन्धक नहीं हैं ॥ २२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

शेष प्रत्यक्षा तीर्थकर प्रकृति तक बोधके समान है । विशेष इतना है कि ' प्रमत्त-
सयतमे ठेकर ' ऐसा कहना चाहिये ॥ २२२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

केवलणाणीसु सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ २२३ ॥

सुगम ।

सजोगिकेवली वधा । सजोगिकेवल्लिअद्धाए' चरिमसमय गतूण
वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २२४ ॥

एदस्स वधो पुब्बं वोच्छिज्जदि, उदयो पच्छं वोच्छिज्जदि । सजोगि-अजोगिअरिम-
समणसु वधोदयवोच्छेदुवल्हमादो । वधो सोदय-परोदयो, अदयोदयत्तादो । विरतरो, पढि
वक्खपयडीए वधामावादो । सन्धमणजोगो असन्धमोसमणजोगो सन्धवविजोगो असन्ध
मोसवविजोगो ओराणियकायजोगो ओराणियमिस्सकायजोगो कम्मइयकायजोगो ति सच्च एदस्स
वधपच्चया । वधो अगइसहुधो, एत्थ गइवधेय विरुद्धवधादो । मनुसा सामी, वण्णत्थ
केवलीपममावादो । वधत्ताण गत्थि, एक्कमिद्दि गुणत्ताणे अद्धापेविरोहादो । अजोगिअरिमसमण
वधो वोच्छिज्जदि । सादि अदुवो वधो, अदुववधित्तादो ।

—

केवलज्ञानियोंमें सातावेदनीयका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २२३ ॥

यह सुख सुगम है ।

सयोगकेवली वन्धक है । सयोगकेवळिकाठके अन्तिम समयके जाकर वन्ध व्युच्छिन्न
होता है । ये वन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २२४ ॥

इसका वन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है उदय पश्चात् व्युच्छिन्न होता है । क्योंकि
सयोगकेवली और अयोगकेवली गुणस्थानोंके अन्तिम समयमें क्रमसे उसका वन्ध और
उदयका व्युच्छिन्न पाया जाता है । वन्ध उसका स्त्रोत्रय-परोदय होता है क्योंकि यह वस्तु
बही मरुति है । निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि यहां प्रतिपक्ष मरुतिक वन्धका अभाव है ।
सत्यमनोयोग असत्य मृगामनोयोग सत्यवचनयोग असत्य मृगवचनयोग औदारिक
काययोग औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण्यकाययोग ये सात इसके वन्धप्रत्यय हैं ।
वन्ध गतिवन्ध रहित होता है क्योंकि यहां गतिवन्धने विरुद्ध वन्ध है । मनुष्य स्वामी
है क्योंकि, अन्य गतियोंमें केवलसंयोग अभाव है । वन्धापवान नहीं है क्योंकि, एक
गुणस्थानमें अन्धकार विरोध है । अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें वन्ध व्युच्छिन्न होता
है । सादि व वस्तु वन्ध होता है क्योंकि यह वस्तुवन्धी है ।

संजमाणुवादेण सजदेसु मणपज्जवणाणिभगो ॥ २२५ ॥

वधा मणपज्जवणाणिभगमाए प्रकृषमा कदा तथा एत्थ कवन्धा । पवरि पण्ययारि
विसेसो भाविय वत्तथो । एत्थ विसेसपदुप्यायमष्टमुत्तरसुत्तं मणदि—

णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ?
॥ २२६ ॥

सुगम ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवली वधा । सजोगिकेवलि
अद्दाए चरिमसमय गतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा
अवधो ॥ २२७ ॥

सुगममेव ।

सामाहय-छेदोवट्ठवणसुद्धिसजदेसु पंचणाणावरणीय-सादावेद
णीय-लोमसंजलण-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराहयाण को वंधो को
अवधो ? ॥ २२८ ॥

संयममार्गानुसार संयत जीवोंमें मन-पर्ययानुनिर्योके समान प्रकृषणा है ॥ २२५॥

विश्व प्रकृषर मन्वपर्ययकालमार्गजामें प्रकृषणा की गई है इसी प्रकृषर यहाँ करना
चाहिये । विशेष इतना है कि प्रत्येकान्तिके भेदको जानकर कहना चाहिये । यहाँ विशेषता
वतकावेके छिये उत्तर सूच करते हैं—

विशेषता इतनी है कि सातावेदनीयक केन वन्धक और केन अवन्धक है ? ॥ २२६॥

यह सूच सुगम है ।

प्रमत्तसंयतसे छेद सयोगकेवली सक वन्धक है । सयोगकेवलीछेदके अन्तिम
समयके जाकर वन्ध स्पृष्टिष्ठ होता है । ये वन्धक है, छेप अवन्धक है ॥ २२७ ॥

यह सूच सुगम है ।

सामाधिक-छेदोपस्थापनसुद्धिमपत्तोंमें पाँच ज्ञानावरणीय, सातावेदनीय, संवत्तनत्वोम
पञ्चकीर्ति, उच्छपोत्र और पाँच अन्तराय, इनका केन वन्धक और केन अवन्धक है ?
॥ २२८ ॥

सुगम ।

पमतसजदप्पहुडि जाव अणियट्टिउवसमा खवा वधा । एदे
वधा, अयधा णत्थि ॥ २२९ ॥

एदासि पयडीणमेत्थ पंचोदयवोच्छेदामावाधो ' उदयादो किं पुम्भं पन्थम वा पंचो
वोच्छिद्यो ' ति विचारो भवति । पंचमायावरणीय षडुदसजावलीय जसकिंचि उन्धामोद
पंचतरुइयापं सोदवो वधो, एत्थ पुत्रोदयतादो । सादवेदर्णीय-स्त्रेमसंजठणार्ण सोदय परोदवो,
अद्वयोदयतादो । सादवेदर्णीय जसकिंचीण पमतसजदप्पि सर्तरो वधो, पडिवक्खपयडि
पंचुवलमादो । उव्वरि पिरंतरो, तदमावाधो । सेसापं पयडीण वधो सज्जत्थ पिरंतरो, अण्णि
संजवेसु पंचुवरमाभावाधो । पन्चया सुगमा, ओषपग्घण्हितो विसेसामावाधो । एदासि सम्भ
पयडीण पमतसंजदप्पहुडि जाव अपुग्गकरजट्ठाए छसतभागे ति पंचो देवगइसद्वयो । उव्वरि
अगइसद्वयो, तत्थ गर्णं वधामावाधो । मणुमां सामी, अज्जत्थ संजदामावाधो । पंचद्वापं

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तमंयनसे लेकर भविष्यतिकरण उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । ये पन्धक हैं,
अबन्धक नहीं हैं ॥ २२९ ॥

यहां हम प्रकृतियोंके बन्ध और उदयका श्रुत्युद्देश न होतेसे ' उदयसे क्या पूर्वमे
या पश्चात् बन्ध श्रुत्युद्देश होता है ' यह विचार नहीं है । पांच कामावरणीय, चार
इशवावरणीय धर्माधीन उच्छगात्र और पांच अमतरावका स्यादय पन्ध होता है
क्योंकि, यहां हमका भुय उदय है । मातापद्वणीय और मंत्रबमनमोमका स्योदय परोदय
पन्ध होता है क्योंकि, ये अभ्रुयादयी प्रकृतियां हैं । साप्तापद्वणीय और यदाधीनिका
प्रमत्तसंपत शुण्डयात्रमे साप्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहां हमकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका
पन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध है क्योंकि यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका
अभाव है । दोष प्रकृतियोंका पन्ध सबत्र निरन्तर है क्योंकि, विपक्षित संपत्तोंमे हमके
बन्धविधायक अभाव है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि, ओषग्रन्थोंमे यहां कोई भेद नहीं
है । हम सब प्रकृतियोंका बन्ध प्रमत्तमंयनसंस्कार मणुवद्वयकावके उह सत्यम भाग
तक इयगतिमंयुक्त होता है । ऊपर अगतिमंयुक्त बन्ध होता है क्योंकि यहां
गतिर्वीक बन्धका अभाव है । मनुष्य इयामी है क्योंकि, अन्य यनियोंमे संपत्तोंका अभाव है ।

सुखं, सुदृष्टिः । ईशान्या पवि, उरुमि नि सुखदन्ता 'साधन' नि
सुखाय । साधनं सुखदीन ईशान्या निविहा, सुखान्ताये । साधनं सुखदन्ता ।

सुखं मणयञ्चवणाणिभगो ॥ २३० ॥

तस्य मन्त्राद्वचनार्थं सुप्रत्यक्षं परमं कृत्वा तदा एव निश्चयः । ॥
निष्ठां कृत्वा, तदुपपन्नं तदुपपन्नं तदुपपन्नं तदुपपन्नं तदुपपन्नं । ॥
निष्ठां कृत्वा, तदुपपन्नं तदुपपन्नं तदुपपन्नं तदुपपन्नं तदुपपन्नं । ॥

निष्कामत्वेन पुत्रं भवति । उदयवाच्येन च, सुहृन्नाम द
कर्मफलम् वि नृणां यथासाक्षात् । अथा सादस-पदयो मद्रादयत्तदा । दिक्, पु
रिताया । पञ्चमा मुक्त्या, आनन्दप्रद्विता विधेयमावादा । देवदत्तद्वये, रत्न
रिताया । मद्रा यात्री, आनन्द भवमावादा । पनत्तवदत्तद्वि जात मद्रा

क्याण्डन गुण है क्योंकि यह मुखमें मिलिए है। क्या मुखमें नहीं है क्योंकि ऊपर
की क्या गया जगह है क्या क्या क्या क्या नहीं है इस मुखमें की क्या मुखमें क्या क्या
विष्ट है। क्या मुखमें क्या क्या क्या क्या नहीं है इस मुखमें की क्या मुखमें क्या क्या
क्या है। क्या मुखमें क्या क्या क्या क्या नहीं है इस मुखमें की क्या मुखमें क्या क्या
क्या है। क्या मुखमें क्या क्या क्या क्या नहीं है इस मुखमें की क्या मुखमें क्या क्या
क्या है। क्या मुखमें क्या क्या क्या क्या नहीं है इस मुखमें की क्या मुखमें क्या क्या

अथ प्रवृत्तियोगः प्रवृत्तयः मनस्यप्यज्ञानियादेः सुमानः ॥ २३ ॥

अग्न प्रस्था मन्त्रायपमानियाके समान है ॥ २३ ॥
 वहाँ भी अग्नि प्रस्था मन्त्रायपमानियाके समान है ॥ २३ ॥
 अग्न प्रस्था मन्त्रायपमानियाके समान है ॥ २३ ॥
 अग्न प्रस्था मन्त्रायपमानियाके समान है ॥ २३ ॥

निम्ना आर प्रयादाका पूर्वम वक्ष्य म्युच्छिद्य होता है। उनका उदयम्युच्छर नहीं है
क्योंकि शुद्धमग्न्यायनीयक और कथाव्याप्तमंयताम भी उनका उदय होता जाता है। वस्तु
व्याप्तमग्न्यायनीय होता है क्योंकि वे अक्षयवर्णी हैं। निरन्तर वक्ष्य होता है क्योंकि शुद्ध
होता है क्योंकि मयतामै अन्य मयतामै वक्ष्यका मयताम है। मनुष्य वक्ष्यी है क्योंकि, अन्य
मयतामै मंयतामै अक्षय है। अक्षयमयताम मयताम अक्षयमयताम मयताम है। मयताम

ग । अपुष्पकृत्तणद्धाए सत्तममागचरिमसमए पधो वोच्छिज्जदि । कपमेद पव्वदे ।
उहरियवयणादो । तिविहो' पधो, पुवामावादो ।

एवं चैव पुरिसवेदस्स वत्तम् । पवरि अट्ठाणमभियट्ठिअट्ठाए संखेज्जा मागा सि
इवगइ-अगइसत्तुत्थे । दुविहो पधो, अट्ठवत्तंभित्तादो ।

पचसंजलणस्स छेमसंजलणमंगो । पवरि अट्ठाणमभियट्ठिअट्ठाए संखेज्जा मागा सि ।
प्यासंजलणार्णं पि वत्तम् । पवरि कोधवत्तंभोच्छिज्जुवरिमट्ठाए संखेज्जाभागे गतूष
समपदि । सेसट्ठाए संखेज्जे भागे गतूष मायपंचट्ठाणं समपदि' सि वत्तम् ।

अरि भय दुगुट्ठाण पंचोदया सम वोच्छिज्जा, अपुष्पकृत्तणद्धाए चरिमसमए
दो । पधो सेट्ठय-परोदओ, अट्ठवोदयत्तादो । इस्स रटीण पधो पमत्तमि सत्तरो ।

सत्तम मागक अन्तिम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है ।

यह कैसे जाना जाता है ?

—सबसे अधिक मात्सर्य के पथनसे यह जाना जाता है ।

तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि भुव बन्धका समाप्त है ।

जट ही पुरुषबन्ध की कहना चाहिये । विशेषता यह है कि बन्धाध्यान
का संख्यात बहुभाग है ऐसा कहना चाहिये । देशगतिसमुत्त और
होता है । दो प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, वह अमृतावस्थी है ।

दोषही प्रकृष्टा संस्वसमसमके समान है । विशेष इतना है कि बन्धा-
ध्यानका संख्यात बहुभाग है । इसी प्रकार संस्वसम भाग और मायाके
विशेषता यह है कि संस्वसमकोषके बन्धके व्युच्छिन्न होनेके उपरिम
भाग बिलकर मानवबन्धाध्यान समाप्त होता है । दोष काष्ठके संख्यात
बन्धाध्यान समाप्त होता है ऐसा कहना चाहिये ।

मय और दुगुट्ठाका बन्ध व उदय दोषों साधमें व्युच्छिन्न होते हैं
इके अन्तिम समयमें बन्धका समाप्त देखा जाता है । बन्ध ठनका
क्योंकि वे अमृतावस्थी प्रकृतियाँ हैं । हास्य और एतिका बन्ध समाप्त

इति पाठः ।

१ प्रतिष्ठ पश्यति इति पाठः ।

कपयि इति पाठः ।

सुयमं, सुपुरिद्विच्छादो । ऋषयोऽप्येवो नरिषि, उवरि नि पंधुवर्तमादो 'ऋषया नरिषि' वि
सुच्छादो वा । सोऽसन्नं गुर्वर्षीयं पंधो त्रिविदो, पुवामावादो । अक्सेसार्णं सार्दि अद्भुतो,
अद्भुतवपिच्छादो ।

सेस मणपज्जवणाणिभंगो ॥ २३० ॥

अथा मणपज्जवणाणिस्तु सेसपयदीय परूवमा कदा तद्वा एतस्य वि श्रयस्या । से वि
विसेसो ऋषि', अमुसयदेदाहमदुगपन्वयार्णं तत्प्रासंतार्णभेत्यरिषितदसप्रादो' ।

विद्या-यस्य पुत्र्यं बंधो वोभिच्छ्रयो । उदयवोऽप्येवो नरिषि, सुहमसार्णस्य-वद्वा
अस्त्रसंभवेसु वि तदुदयदसप्रादो । बंधो सोदय-योरदयो, अद्भुवोदयच्छादो । विरतये, पुत्र
बंधिच्छादो । पन्वया सुयमा, भोषपन्वपरिदो विसेसामावादो । देवगाइसंभुतो, गर्ततरस्स'
बंधामावादो । मनुसा सामी, अण्ण ५ सभमामावादो । एमससंभदप्यहुदि जाव अणुप्यकरणे

बन्धाध्याम सुगम है क्योंकि यह सूत्रमें निर्दिष्ट है । बन्ध-मुच्छेद नहीं है क्योंकि, ऊपर
भी बन्ध पाया जाता है, अथवा अर्धबन्ध नहीं है इस सूत्रसे भी बन्ध-मुच्छेदका अभाव
सिद्ध है । और वह सुबबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध तीन प्रकार होता है, क्योंकि, सुब बन्धका
अभाव है । शेष प्रकृतियोंका साक्षि व बहुत बन्ध होता है क्योंकि ये अर्धबन्धी हैं ।

अथ प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मन-पर्यमशानियोंके समान है ॥ २३ ॥

असि प्रकर मन-पर्यमशानियोंमें शेष प्रकृतियोंकी प्ररूपणा की है उसी प्रकार
यहां भी करता साक्षि । यहां कुछ विशेषता भी है क्योंकि, मनुसकलेद् और आहारशिकके
प्रत्यक्ष जो मन पर्यमशानियोंमें नहीं थे यहां वदे जात है ।

विद्या और प्रकृतिका पूर्वमें बन्ध स्फुटित होता है । अथवा उदयमुच्छेद नहीं है,
क्योंकि, सूत्रमसाम्यपरिषि और पद्यात्प्रासबंधतोंमें भी उनका उदय देखा जाता है । बन्ध
स्वेत्प-यदेव होता है क्योंकि, व बहुतोदपी है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, सुब-
बन्धी है । प्रत्यक्ष सुगम है क्योंकि, माध्यम्यसे कोई भेद नहीं है । वेपयतिसे संयुक्त बन्ध
होता है क्योंकि, सपतोंमें बन्ध यतियोंके बन्धका अभाव है । मनुष्य स्वामी है क्योंकि, बन्ध
यतियोंमें संबन्ध अभाव है । प्रमत्तसंपतने छेकर अपूर्वकरत तक बन्धाध्याम है । अपूर्व

१ व अण्णो वो विसेसो ऋषि नरिषि अमरी वो नि विसेसो ऋषि नरिषि इति पाठ ।

२ अण्णो उवाचवा इति पाठ ।

३ अण्णोव वयो उदय-योरदयो इति पाठ ।

४ अण्णो इति पाठ ।

सि बध्नां । अपुष्पकरणदाए सत्तममागधरिमसमए बधो बोन्धिज्जदि । कधमेदं पण्वदे ? सुत्थविस्सदाहरिबवपपादो । तिविहो' पंधो, पुवामावत्तो ।

एवं चेव पुरिसवेदस्स वत्तत्वं । पवरि अद्यापमनियद्विअद्याए संखेज्जा मागा सि वत्तत्वं । देवगाइ-मगाइसंजुत्तो । दुविहो पंधा, अद्दुवपंधिप्पादो ।

कोषसज्जत्तस्स त्तेमसंजत्तमंगो । पवरि अद्यापमनियद्विअद्याए संखेज्जा मागा सि । एवं माण-मायासंजत्तमाज पि वत्तत्त्वं । पवरि कोषबंधबोन्धिपुवरिमदाए संखेज्जामो गत्तूज माणबंधदायं समप्पदि । ससदाए संखेज्जे मागे गत्तूज मायबधदायं समप्पदि' सि वत्तत्त्वं ।

इत्थं रवि-मय-दुगुत्तम बंधोदया सम बोन्धिज्जा, अपुष्पकरणदाए धरिमसमए तदभावदंसज्जत्तो । बधो सोदय-पोदधो, अद्दुवोदयप्पादो । इत्थं रवीज पंधो पमत्तमि सांतरो ।

करकालके सत्तम मागक अन्तिम समयमें बन्ध व्युत्पिन्न होता है ।

मुक्त— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— सूत्रसे अधिकद आचार्योंके पञ्चमसे यह जाना जाता है ।

उनका तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, मूल बन्धका अभाव है ।

इसी प्रकार ही पुरुषवेदके भी कहना चाहिये । विद्येयता यह है कि बन्धाध्वान अविद्वत्सिद्धकालकासका संख्यात बहुमात्र है ऐसा कहना चाहिये । देवगणिसंयुक्त और अगणिसंयुक्त बन्ध होता है । दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि यह अज्ञानबन्धी है ।

संख्यसन्नकोषकी प्रकृष्टता संख्यसन्नसामके समान है । विद्येय इतना है कि बन्धाध्वान अविद्वत्सिद्धकालकासका संख्यात बहुमात्र है । इसी प्रकार संख्यसन्न मान और मायाक भी कहना चाहिये । विद्येयता यह है कि संख्यसन्नकोषके बन्धक व्युत्पिन्न होनेके उपरिम कासका संख्यात बहुमात्र बिलाकर मानबन्धाध्वान समाप्त होता है । दोष कासके संख्यात बहुमात्र आकर मायाबन्धाध्वान समाप्त होता है ऐसा कहना चाहिये ।

हास्य रति मय और दुगुत्तमका बन्ध व उदय दोनों साधमें व्युत्पिन्न होते हैं क्योंकि अपूर्वकरणकालक अन्तिम समयमें उनका अभाव देखा जाता है । बन्ध उनका स्वीकृत परादय होता है क्योंकि, वे अज्ञानोदयी प्रकृतियाँ हैं । हास्य और रतिको बन्ध प्रमत्त

उपरि विरंतरो, पडिवक्खपयविबंयामावादो । मय-दुगुंअणं सव्वत्थ विरंतरो, पुववंविचादो । पण्णया सुग्गमा, ओषपण्णएईतो विसेसामावादो । देवगइसद्धतो अमइसंद्धतो वि, अपुण्य करणद्याए चरिमसत्तममागे गईए वंयामावादो । मणुसा सामी । पमत्तसंजइयहुडि जत्त अपुण्य करणो वि वंयद्वार्य । अपुण्यकरणचरिमसम्प वंषो वाच्छिन्वदि । मय-दुगुंअणं तिबिदो वंषो, पुववंविचादो । सेसण्ण सादि-अद्दुवो, तथिवरियववादो ।

देवाठअस्स पुण्यवरक्खत्तेसु वषोदयवोण्णेरपरिक्खा मत्तिप, उदयामावादो । परोदवो वंषो, सामाविचादो । विरंतरो, अंतोसुहुत्तेण विजा वंनुवरमामावादो । पण्णया सुग्गमा । देवगइसद्धतो । मणुसा चेव सामी । पमत्त अणमत्तसंजदा वंयद्वार्य । अपमत्तद्याए संसेम्भविसे मयं गत्त वंषो वोच्छिन्वदि । सादि अद्दुवो वंषो, अद्दुववंविचादो ।

संपदि देवगइसद्दगयणं सत्तावीसपयवीणं मण्णमाणे पुण्यवरक्खत्तेसु वंषोदयवोण्णेर परिक्खा जाणिप करण्य्या । देवगइ वेठअियदुगारं वंषो परोदएण, सामाविचादो । समचउ रससंअण-यसत्तविहायगइ-सुस्मरण सोदय-परोदवो, सजदेसु पडिवक्खपयवीणं वि उदय-

संपत गुणस्थानमे सान्तर होता है । ऊपर मिरन्तर बन्ध होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिबोके बन्धका समान है । मय और पुगुप्ताका सर्वत्र निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वे सुखबन्धी हैं । प्रत्यय सुग्गम हैं क्योंकि, ओषपण्णयोंसे कोई विरोधता नहीं है । देवगतिसंयुक्त और मगतिसंयुक्त भी बन्ध होता है क्योंकि, अपूर्वकरणकायके अन्तिम सत्तम मार्गमें यतिके बन्धका समान हो जाता है । मनुष्य स्वामी है । प्रमत्तसंपतसे लेकर अपूर्वकरण तक बन्धावस्थान है । अपूर्वकरणके अन्तिम समग्रमें बन्ध व्युत्थिष्ठ होता है । मय और पुगुप्ताका तीव्र प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, वे सुखबन्धी हैं । होप प्रकृतिबोका सादि व अद्दुव बन्ध होता है क्योंकि, वे उनसे विपरित (मनुष्य) बन्धवासी हैं ।

देवायुक्त पूर्वापर करकमावी बन्ध व उदयके व्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है क्योंकि, पहाँ तसक्ता उदयामात्र है । परादय बन्ध होता है क्योंकि, देसा स्वभाव है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके बिना वसके बन्धविद्यामका समान है । प्रत्यय सुग्गम हैं । देवपतिसंयुक्त बन्ध होता है । मनुष्य ही स्वामी है । प्रमत्त और अप्रमत्त संपत बन्धावस्थान हैं । अप्रमत्तकामके संकपालके माग जाकर बन्ध व्युत्थिष्ठ होता है । सादि व अद्दुव बन्ध होता है क्योंकि, वह अद्दुवबन्धी है ।

मय देवगतिके साथ रहनेवासी [परमविक्रमामकर्मणी] सत्ताईस प्रकृतिबोकी प्रकण्णका करते समय पूर्वापर कार्योंमें बन्ध व उदयके व्युच्छेदकी परीक्षा जानकर करमा चाहिये । देवगतिविक्रम और वैक्रियिक्रमिका बन्ध परोदवस होता है क्योंकि ऐसा स्वभाव है । समचनुरअसंस्थान प्रशास्तविहायी-पति और सुत्तरका आदय परोदय बन्ध होता है क्योंकि, संवत्तोंमें इनकी

रसपादो । अवसेसार्णं पयडीणं वधो सोदधो, ध्रुवोदयत्तादो । गिर-सुमाणं पमससजदमि
 वधो सोनरो, पञ्चिबकखपयडिबधुवलंमादो । उधरि गिरनर, तदमावादो । अवसेसाणं पयडीणं
 वधो गिरतरो, एत्थं ध्रुवपंचिदो । पञ्चया सुगमा । सम्भासि पयडीणं वधो देवगइसदुधो ।
 मणुसा सामीवो । वधद्वार्णं वधविणद्वार्णं च सुगम । ध्रुववधीणं वधो तिथिहो । अवसेसार्णं
 सादि-मदुधो ।

असाश्वेदणीय-अरदि-सोग-अधिर-असुइ अमसकिचीममेगहापिमाधं सांतरवंधीणमीध
 पञ्चयाणं देवगइसजुत्ताणं मणुससामिमाधं वधद्वार्णगिरिहियाणं पमससजदमि बोधिच्छन्नवधार्णं
 वधेण सादि-मदुधार्णं वधो सोदधो परोदधो सोदय-परोदधो वे ति आणिय परूवेदधो ।
 आहारदुग तिस्वयराणं पि आणिय यत्तय्यं ।

परिहारसुदिसजदेसु पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-सादा
 वेदणीय-चदुसजुलण-पुरिसवेद-हस्त-रदि भय-दुगुछा-देवगइ-पंचिदिय-

प्रतिपक्ष प्रकृतियौक्त्य मी वक्ष्य इत्यं ज्ञाता ह । शेष प्रकृतियौक्ता वक्ष्य स्तोत्र्य हाता हे
 क्यौकि, वे सुवेत्तयी ह । स्थिर और गुमका वक्ष्य प्रमत्तसयत्त गुणस्यानमे सास्तर होता है
 क्यौकि, यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियौक्ता वक्ष्य पाया जाता है । ऊपर निरुत्तर वक्ष्य होता है
 क्यौकि यहां प्रतिपक्ष प्रकृतियौक्ते वक्ष्यका अभाव है । शेष प्रकृतियौक्ता वक्ष्य निरुत्तर
 होगा है क्यौकि यहां वे सुवक्ष्यमी ह । प्रत्यय सुगम ह । सब प्रकृतियौक्ता वक्ष्य देवगति
 संयुक्त होता है । इनके वक्ष्यके स्वामी मनुष्य ह । वक्ष्याध्वान और वक्ष्यविनयस्यान सुगम
 ह । सुवक्ष्यमी प्रकृतियौक्ता वक्ष्य तीन प्रकारका होता है । शेष प्रकृतियौक्ता वक्ष्य सादि य
 असुव होता है ।

असातावेदनीय अरति शोक, अस्थिर अशुभ और भयसंकीर्ति इन एकस्याधिक,
 सास्तर वक्ष्यवासी भाव प्रत्ययौक्त युक्त वक्ष्यगतिसेयुक्त मनुष्यस्वामिक, वक्ष्याध्वानसे
 रक्षित प्रमत्तसयत्त गुणस्यानमावी वक्ष्यपुच्छेयमे सहित तथा वक्ष्यवी अवेसा सादि
 व वक्ष्य प्रकृतियौक्ता वक्ष्य स्तोत्र्य परोदय अथवा स्तोत्र्य परोदय है, इसकी जानकारी
 प्रकृपणा करना चाहिये । आहारदिक और तीर्थकर प्रकृतिकी भी प्रकृपणा जानकर करना
 चाहिये ।

परिहारसुदिसयतोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छद दशनावरणीय, सातावेदनीय, चार
 सज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, दुगुप्ता, देवगति, पंचन्द्रियजाति, वैक्यिक, तेजस

जादि-चेउन्विय-तेजा कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउन्वियसरीर-
अगोवग-वण्ण गध-रस-फास-देवाणुपुब्बि अगुरुल्लहुअ उवघाद-परघादु
स्सास-पमत्थविहायगड-तस वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर थिर-सुह-सुमग-
सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-तित्थयरुद्धागोद-पचंतराइयाण को
बधो को अबधो ? ॥ २३१ ॥

सुगम ।

पमत्त-अप्पमत्तसज्जा वधा । एदे वधा, अवंधा णत्थि ॥ २३२ ॥

उदयादो बंधो पुंस्व पञ्चा या बोद्धिन्नादि ति एव निचये जत्थि, एदासि
बंधोप्पेदामावादो उदइस्सअणमुदयवोप्पेदामावादो च । देवगइ-देवगइपामोन्माणुपुब्बि
वेउन्वियदुग-त्तिन्वयराण परोदयो बंधो, एदासि बंधोदयाणमनकमवुत्तिविरोहादो । पिता
पयत्त-सात्तावेदपीय चदुसंजलण-इस्म-रदि-मय-दुगुंअ-समचउरससंठाण-पसत्तविहायगड-
सुस्सरणं सोदय-परोदयो बंधो, एदासि पठिवन्सपयडीपं पि उदयदंसवादो । अबसेसायं
पयडीपं सोदया बंधो, एव एदासि पयडीपं पुवादयपुवठमादो ।

च कर्मण धरि, समचतुरससंस्थान, वैद्वियिकञ्जरीसंगोपांग, वज, गन्ध, रस, स्पृश, देवाउ
पूर्वी अगुरुल्लहु, उपधात, परधात, उच्छ्वास, प्रभस्तविहायोगति, वस, वादर, पर्याप्त,
प्रवेकञ्जरी, स्थिर, शुभ, सुमग, सुस्सर, वादय, पञ्चकित्ति, निर्माण, तीर्थकर, उच्चगोत्र
और पांच अन्तराय, इनका कौन कन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २३१ ॥

यह सब सुगम है ।

प्रमत्त और अप्रमत्त संयत बन्धक है । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २३२ ॥

उदयवन् बन्ध पूर्वमे वा पश्चात् स्फुटिउच होता है यह विचार यहाँ नहीं है
क्योंकि, इनका बन्धपुच्छेइका अभाव है तथा उदय पुच्छ मृत्तियोंके उदयपुच्छेइका
भी अभाव है । देवगनि देवगनिप्रायेतपानुपूर्वी वैद्वियिकञ्जरी और तीर्थकर, इनका
परादय बन्ध होता है कर्त्ताकि, इन मृत्तियोंके बन्ध और उदयके एक साथ अस्तित्वका
विरोध है । निद्रा प्रसन्नता गतायेदपीय चार संज्वालन हास्य यति भय सुगुप्ता
समचतुरससंस्थान प्रशान्तविहायोगति और सुदयका स्वादय परोदय बन्ध होता है
क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष मृत्तियाका भी उदय देखा जाता है । शेष मृत्तियोंका स्वोदय
बन्ध होता है, कर्त्ताकि, यहाँ इन मृत्तियोंका पुत्र उदय पाया जाता है ।

सातावेदनीय-हस्त-रति-भिर-सुम-जसकिर्त्तय पमत्तसंप्रदामि वधो सांतेर्ये । उवरी
भिरतेरे, पठिष्यन्त्यपयधीण वधामावादे । अवमेसाप पयधीण वधो भिरतेरे, अंतेसुहृत्सेप
विण्ण वधुवरमामावादे । पञ्चया सुगमा, ओषपञ्चयहितो विसेसामावादे । अवरी इत्यि
ण्वुसपवेदप वया पतिथि, अप्यसत्यवेदोद्भूत्तप परिहारसुद्धिसंयमामावादे । आहारदुगपवया
वि पतिथि, पतिहारसुद्धिसंयमेप आहारदुगोदयविरोहादे तित्वयरपादमूले द्वियार्ण गत्यसेदेहार्ण
आपत्तिनिवृत्तासंज्ञमन्त्राणां विरोधादिआहारदुगपवयरपरिविहासमाहारसंयिवादाणां समवादी वा ।

देवगणसंयुक्तो वधो, एतन्मन्त्रगणवधामावादे । मनुसा सामी, मन्त्रस्य संज्ञमामावादे ।
वधद्वारे सुगमे । वधवोच्छेदो पतिथि, 'अवधा मयि' ति सुचिन्तितसादे । धुवर्धनीय वधो
तिविहो, धुवामावादे । वधसेसापं सादि-अद्वयो, अद्वयवधित्वादे ।

असादावेदनीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-अजसकिर्त्तिणामाण
को वधो को अवधो ? ॥ २३३ ॥

सातावेदनीय हास्य रति स्थिर, सुम और पदार्थतिष्ठा प्रमत्तसंप्रदत्त गुणस्वात्मने
सम्पत्त वध होता है । ऊपर उनका निरन्तर वध होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपन्न प्रकृतियोंके
वधका समाप्त है । शेष प्रकृतियोंका वध निरन्तर होता है क्योंकि, अन्तस्तुष्टिके बिना
उनका वधविधायक समाप्त है । प्रकाय सुगम है क्योंकि, ओषधस्यार्ण कोई मेघ नहीं
है । विरोध इतना है कि स्त्रीवेद और मनुसकवद प्रत्यय नहीं है क्योंकि, अमशास्त्रवदोदय
पुक्त औषिके परिहारसुद्धिसंयमका समाप्त है । आहारकटिक प्रत्यय भी नहीं है क्योंकि
परिहारसुद्धिसंयमका माय आहारकटिकही उत्पत्तिका विरोध है; अथवा तीर्थकरके
पादमूत्रमें स्थित मन्देह रहित तथा भावात्मिकता अथवा आप्तवचनमें सम्बद्धजनित
क्रियकता और अस्वयमन्त्रसुम्तादि वय आहारपाटीरकी उत्पत्तिक कारणोंसे रहित परिहार
सुद्धिसंयमोंके आहारकटिकीरकी उत्पत्ति मत्संभव है ।

देवगणसंयुक्त वध होता है क्योंकि, यहाँ वध गतिर्गोचर वधका समाप्त है ।
मनुष्य स्वामी है क्योंकि वध गतिर्गोचर संयमका समाप्त है । वधारण्य सुगम है ।
वध-पुच्छ नहीं है क्योंकि 'अवधक नहीं है' ऐसा खरमें कहा गया है । इसमें सुवचनी
प्रकृतियोंका वध तीन प्रकारका होता है क्योंकि उनके वध वधका समाप्त है । शेष
प्रकृतियोंका सादि य अद्वय वध होता है, क्योंकि वे अमनुष्यवन्दी हैं ।

वसातावेदनीय, अग्नि, शोक, अस्थिर, मनुम और अपदार्थति तत्सकर्मका केव
वध और केव अकन्धक है ? ॥ २३३ ॥

आ वदता मुक्तिवध इति पाठः ।

२ अ-वदतो मनुजानां अ वदतो मनुजानां इति पाठः ।

जादि-चेठविय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचत्तरससठाण-वेउवियसरीर-
अगोवग-चण्ण गध-रस-फास-देवाणुपुब्बि अगुरुवल्लहुअ उवघाद-परघादु
स्सास-पमत्त्यविहायगइ-त्तस वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर थिर सुह-सुमग-
सुस्सर आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण तित्थयरुच्चागोद-पचत्तराइयाण को
बंधो को अबधो ? ॥ २३१ ॥

सुगमं ।

पमत्त-अप्पमत्तसज्जा दध्वा । एदे बधा, अबंधा णत्थि ॥ २३२ ॥

उत्पत्तौ बंधो पुंस्त्वं पञ्च वा बोद्धव्यमिति स एव विद्यते पत्थि, एदासि
बंधोऽप्येवमावासे उदात्तत्वात्सुखयोऽप्येवमावासे च । देवगद-देवगदपाभोग्मापुब्बि
वेठवियदुग-तित्थयरुणं परोदधो बंधो, एदासि बंधोदयापमत्तकम्मवुत्तिविरोधादौ । निरा-
पमत्त-सादावेदपीय-वदुसंजत्त-हस्स-रदि-मय-हुगुंका-समचत्तरससठाण-पसत्त्वविहायवत्-
सुस्सरणं सोदय-परोदधो बंधो, एदासि पडिक्कत्तपयडीयं पि सत्त्वदंसणादौ । अबसेसां
पयडीयं सोदधा बंधो, एत्थ एदासि पयडीयं पुबोदयपुवत्तमादौ ।

व कर्मण शरीर, समचत्तरससंस्थान, वैक्रियिकशरीरांगोपाय, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देशानु
पूर्वी, जगुरुत्तु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त,
प्रलेकशरीर, स्थिर, शुभ, सुमग, सुस्सर, आदय, यत्तकीर्ति, निर्माण, तीर्षकर, उच्छगोत्र
और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २३१ ॥

यह सुख सुगम है ।

प्रमत्त और अप्रमत्त संयत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २३२ ॥

उत्पत्तय बन्ध पूर्वमे वा पञ्चात् बुद्धिष्ठय होता है वह विचार यहाँ नहीं है
क्योंकि इनके बन्धपुच्छेत्तका भ्रमाव है तथा उत्पत्त पुच्छ महतिपाके उत्पत्तपुच्छेत्तका
भी भ्रमाव है । देवमत्ति देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी वैक्रियिकशरीर और तीर्थकर, इनका
परोदध बन्ध होता है क्योंकि, इन मरुतिपोंके बन्ध और उत्पत्तके एक साथ अस्तित्वका
विराध है । निद्रा प्रचसा सातापेदपीय चार संयमन हास्य एति मय सुगुप्ता
ममचत्तरससंस्थान प्रशस्तविहायोगति और सुस्सरका स्वेदय परोदध बन्ध होता है
क्योंकि, हमकी प्रसिद्ध मरुतिपोंका भी उत्पत्त देखा जाता है । शेष मरुतिपोंका स्वेदय
बन्ध होता है क्योंकि यहाँ इन मरुतिपोंका पुच्छ उत्पत्त पाया जाता है ।

सुगमं ।

अपमत्तसजदा अपमत्तसजदा वधा । अपमत्तसजदद्वाए संसेज्जे
भागे गतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥२३६॥

उदयादो वधो पुण्व पण्व वा वोच्छिण्णो ति विचारो पण्व, संवेरेसु देवाठमस्स
उदयामावादे । एदेवो वंधो, वधोदयाणमत्तकमवुत्तिविरोहादो । निरंतरो, वंतोमुदुत्तेण विणा
बंधुवरमामावादे । पण्वया सुगमा, ओषपण्वएइतो विससामावादे । गवरि माहात्तुगित्ति
पवुसपवेदप चया पण्वि । देवगइसद्वतो, मनुसा सार्मीओ, वधगयबंधुओ, अपमत्तद्वाए
संसेज्जे भागे गतूण वोच्छिण्वबंधो । सादि-अदुवो ।

आहारसरीर आहारसरीरगोवगणामाण को वधो को अवधो ?

॥ २३७ ॥

सुगम ।

अपमत्तसजदा वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥२३८॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं । अप्रमत्तसंयतका लक्ष्य संस्थात बहुमाग
जाकर बन्ध स्पृच्छित्त होता है । ये बन्धक हैं, शेष अपबन्धक हैं ॥ २३६ ॥

उदयम बन्ध पूर्वमे वा पश्चात् स्पृच्छित्त होता है यह विचार वहाँ नहीं है
क्योंकि संयत जीवोंमें उदयके उदयका अभाव है । परंतु उदय बन्ध होता है क्योंकि,
उसका बन्ध मार उदयक एक साथ रहनेका प्रयोग है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि,
अन्तर्मुक्तिके बिना उसके बन्धविधायक अभाव है । अतएव सुगम है क्योंकि आसम्भवात्
कोर चित्तवृत्ति नहीं है । विनाय इतना है कि आहारकक्षिक स्त्रीवद् और मनुष्यकेव अतएव
नहीं है । वधगति समुक्त बन्ध होता है । मनुष्य स्वामी है । वध्यात्मान सूत्रज्ञ जाना जाता
है । अप्रमत्तसंयत संस्थात बहुमाग जाकर बन्ध स्पृच्छित्त होता है । सादि व अमुक
बन्ध होता है ।

आहारकक्षिक और आहारकक्षिकगोपांग नामकमक्ष कीन वधक और कीन अपबन्धक
है ? ॥ २३७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं । ये वधक हैं, शेष अपबन्धक हैं ॥ २३८ ॥

सुमर्ग ।

पमत्तसंजदा वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २३४ ॥

असादोभेदीय अरति-सोमाजमेत्येव, उदयनोपेदो येव, उदयनोपेदो अरति; उरति तदुदयनोपेदोबलमाहो । अरति अमुमानं वि एवं येव अतन्त्रं, पमत्तसंजोगीसु बंधोदय नोपेदोवदसादो । अजसकिरीए पुष्पमुदयो पन्था बंधो बोधिमन्त्रादि, पमत्तसंजदसम्मादिहीसु बंधोदयनोपेदोवदसादो । अरति-अमुमानं सादयो, अजसकिरीए परोदयो, सेसाने बंधो सोदय-परोदयो । सार्तो बंधो, एशसिमगसमएण वि बंधुवरमदसमाहो । इरिपि-अमुसयवेदाहार इपनिउहिदोवपन्था एरव वत्तन्था । देवगह [-संज्ञता] बंधो । मनुष्या सामी । बंधदार्ण अरति, एगुणह्वात्तहि तदसमबाहो । पमत्तसंजदचरिमसमए बंधो बोधिमन्त्रादि । सादि-अदुबो बंधो, अदुवधविद्याहो ।

देवाउमस्त को वंधो को अवधो ? ॥ २३५ ॥

प्रह स्रज सुगम है ।

प्रमत्तसंयत बन्धक है । ये बन्धक हैं, सोय अवन्धक हैं ॥ २३४ ॥

असातावेदनीय अरति और होन्धका यहां बन्ध-मुपेद ही है उदयमुपेद नहीं है, क्योंकि ऊपर उलका उदयमुपेद पाया जाता है । अरति और अमुमान भी इसी प्रकार कहना चाहिये क्योंकि, प्रमत्त और संयोगकेबद्धी गुणस्वानोंमें कमसे कमके बन्ध और उदयका मुपेद देखा जाता है । अथवाकीर्तिका पूर्वमें उदय और पन्थाव बन्ध मुपेद होता है क्योंकि प्रमत्त और प्रसंयतसम्पन्नदि गुणस्वानोंमें कमसे कमके बन्ध और उदयका मुपेद देखा जाता है । अरति और अमुमानका उदय अवधकीर्तिका परोदय तथा सोय प्रकृतिबोका बन्ध स्वोदय परोदय होता है । सान्तर बन्ध होता है क्योंकि, रत प्रकृतिबोका एक समसंसे भी बन्धविधायन देखा जाता है । लीवेद, अमुसयवेद और आहारकहिकसे रहित यहां ओक्यत्वय कहना चाहिये । देवगहिसंयुक्त बन्ध होता है । मनुष्य स्वामी है । बन्धाज्वाल नहीं है क्योंकि, एक गुणस्वानोंमें उदयो सम्पादना नहीं है । प्रमत्तसंयत गुणस्वानोंके अन्तिम समसंसे बन्ध मुपेद होता है । सादि व अदुव बन्ध होता है क्योंकि, ये अदुवबन्धी प्रकृतिवा हैं ।

देवामुक्त कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २३५ ॥

सुगमं ।

पमत्तसजदा अप्पमत्तसजदा वधा । अप्पमत्तसजदद्दाए संखेज्जे
भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥२३६॥

उदयादो बंधो पुष्प पञ्च वा बोच्छिज्जो सि विचारो पत्ति, संजदेसु देवाउभस्स
उदयामावादो । फोदयो बंधो, बंधोदयाणमक्कमपुत्तिविरोद्धादो । पिरतरो, जतोमुहुत्तेण विषा
बंधुवरमामावादो । पञ्चया सुगमा, ओमपञ्चएहिंतो विसेसामावादो । पत्ति आहारपुत्ति-
पुत्तिसंवेदपञ्चया पत्ति । देवगइसद्धो, मनुसा सामीयो, अवगयबंधाधो, अप्पमत्तद्दाए
संखेज्जे भागे गतूण वोच्छिज्जबंधो । सादि-अदुसो ।

आहारसरीर आहारसरीरगोवगणामाण को वधो को अवधो ?

॥ २३७ ॥

सुगमं ।

अप्पमत्तसजदा वंधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥२३८॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत बन्धक हैं । अप्रमत्तसंयतकालक संस्थात पदुमाग
जाकर बन्ध स्पृच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अव्यक्त हैं ॥ २३६ ॥

उत्पत्त बन्ध पूर्वमे वा पश्चात् स्पृच्छिन्न होता है यह विचार यहाँ नहीं है
क्योंकि संयत जीवोंमें देवायुके उत्पत्त अभाव है । परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि,
उत्पत्त बन्ध और उत्पत्तके एक साथ रहनेका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि,
अन्तर्मुहूर्तके बिना उत्पत्तके बन्धविधायक अभाव है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि, ओपप्रत्ययोंसे
कार्य विरोधता नहीं है । विचार इतना है कि आहारकालिक अर्थ और अर्पुसकालिक प्रत्यय
नहीं हैं । वेवगति संयुक्त बन्ध होता है । मनुष्य स्वामी है । बन्धाध्वान सूत्रसंज्ञा जाता जाता
है । अप्रमत्तसंयतके मरणपश्चात् बहुभाग जाकर बन्ध स्पृच्छिन्न होता है । सादि व अप्रमत्त
बन्ध होता है ।

आहारकालिक और आहारकालिकगोवांग नामकर्मक कौन बन्धक और कौन अव्यक्त
है ? ॥ २३७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तसंयत बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष अव्यक्त हैं ॥ २३८ ॥

एवमिदं देवाउपमंगो । पवति नपद्याज नति, एककम्पि गुणद्वयं अद्यानासंयवरो ।
नपद्योप्येवो नति, उवति पि नपुवत्तमादो ।

सुहृमसापराह्यसुदिसजदेसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय
सादावेदणीय-जसकिति उद्यागोद-पचतराहयाण को यधो को अवधो ?
॥ २३९ ॥

सुगम ।

सुहृमसापराह्यउवसमा खवा यंधा । एदे यंधा, अवधधा
णति ॥ २४० ॥

एवमिदं नपद्योप्येवमाभादो उदयादो नपद्यो पुष्यं पच्यं वा वेदियिष्यं
ति न परिक्रान्ता किरदे । सादावेदणीयस्य नपद्यो सोदय-परोदयो, अपुवप वि नपविरोह-
मावरो । भिरन्ता सन्वपयदीय नपद्यो, एव गुणद्वयेसु नपुवरमाभादो । न एवसमयमभियं
सुदसुहृमसापराह्यदि विपदिवातो, सुहृमसापराह्यगुणद्वयमि ति विससणादो । योरातिव

इम दोनों प्रकृतियोंकी प्रकृष्टता देवायुके समान है । विशेष इतना है कि वन्याभ्यास
नहीं है क्योंकि, एक गुणस्वात्ममें व्याप्तकी सम्मायमा नहीं है । वन्यस्युच्छेद नहीं है
क्योंकि, ऊपर भी वन्य पाया जाता है ।

सूक्ष्मसाम्प्रदायिकसुदिसयवेमि पांच ज्ञानावरणीय, चार दृष्टनावरणीय, सादावेदनीय,
पञ्चमिदि, उच्चगोत्र और पांच वन्तराय, इनका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ?
॥ २३९ ॥

नह सृज सुयम है ।

सूक्ष्मसाम्प्रदायिक उपशमक और क्षपक वन्धक हैं । ये वन्धक हैं, अवन्धक नहीं हैं
॥ २४० ॥

इम प्रकृतियोंके वन्य व उच्चके व्युच्छेदका अभाव होनेसे उच्चसे वन्य पूर्वमें
व्युच्छिन्न होता है या पश्चात् यह परीक्षा यहां नहीं की जाती है । सादावेदनीयका वन्य
स्वोदय-परोदय होता है क्योंकि, उच्चके व होनेपर भी उसके वन्यमें कोई विशेष नहीं
है । इम सब प्रकृतियोंका निरन्तर वन्य होता है क्योंकि, इम गुणस्वात्ममें वन्यविभ्रामका
अभाव है । ऐसा माननेपर एक समय रहकर सृष्टिको प्राप्त हुए सूक्ष्मसाम्प्रदायिक सबतोंसे
व्यभिचार होगा यह भी नहीं कहा जा सकता है ; क्योंकि, 'सूक्ष्मसाम्प्रदायिक गुणस्वात्ममें
ऐसा विशेषण दिया गया है । औत्तारिक व्यवयोग काम कराय चार मनोयोग और चार

कथजोग-त्येकसाय बहुमण-वचिजोगा ति दस पन्चया । अगइसठ्ठो वंधो, एतम वउगइ
बंधामावादो । मनुमा समो, अण्णत्थ सुहुमसांपराइयाणममावादो । वंधाण जल्लि, सुहुम
सांपरायणत्तुडि ति सुवे अणुवदिट्ठत्तादो । वंधोन्नेदो जल्लि, 'अंधा जल्लि' ति धम्मपादो ।
पवणावावरणीय चउदसणावरणीय-पंचतरायाण तिबिदो वंधो, पुवामावादो । सेसाण
सादि-अद्धो ।

जहाकखादविहारसुद्धिसजदेसु सादावेदणीयस्त को वंधो को
अवधो ? ॥ २४१ ॥

सुगम ।

उवसत्तकसायवीदरागछ्छुमत्त्या स्त्रीणकसायवीयरायछ्छुमत्त्या
सजोगिकेवली वधा । सजोगिकेवल्लिअद्धाए चरिमसमम गत्तुण
[वंधो] वोळ्ळिच्चदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २४२ ॥

सुगममेइ, केवल्लमाणमगणापकूवणाए समापत्तादो ।

अपनयाग ये वधा प्रत्यय है । गतिसंयोगसे रहित बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ चारों गतिचौके
बन्धका समावेश है । मनुष्य स्वामी है क्योंकि, अन्य गतिचौके सद्धमसाम्परायिक संघर्षोंका
समावेश है । बन्धाण्णल नहीं है क्योंकि सद्धमसाम्परायिक भावि देखा स्वर्ग में मित्रता
नहीं किया गया है । बन्धनुप्पत्त नहीं है क्योंकि, अण्णत्थ नहीं है ऐसा स्वर्गका
अन्धम है । पांच ज्ञानावरणीय चार वधानावरणीय और पांच अन्तराय हमका
तीन प्रकारका वन्ध होता है क्योंकि उनके मुख वन्धका समावेश है । दोष प्रकृतियोंका सादि
व अणुय वन्ध होता है ।

यथास्मात्तविहारसुद्धिसमवर्त्ति सादावेदनीयका कीन पचक और कीन अवचक है ?
॥ २४१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपशान्तरुणाय वीतराग छद्धमस्स, धीणकपाय वीतराग छद्धमस्स और सयोगकेवली
बन्धक है । सयोगकेवल्लिअद्धे अन्तिम समयको आकर [वन्ध] स्पृग्गिच्छ होता है । ये
पन्चक है, दोष अवचक है ॥ २४२ ॥

यह सूत्र सुगम है क्योंकि, केवल्लमाणमार्गणाए प्रकृषणासे हमका समापता है ।

सजदासजदेसु पचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-
अट्टकसाय पुरिसवेद-हस्त-रदि-सोग मय-दुगुछ-देवाउ-देवगइ-पर्वेदिय
जादि-चैठविय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठण-चैठवियसरीर-
अगोवग-चण्ण-गंध रस-फास देवगइपाओग्गाणुपुब्बी अगुरुवलहुव-उव
घाद-परघाद उस्सास-पसत्यविहायगइ-तस-चादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-
यिरायिर-सुहासुह-सुमग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-
णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पचतराइयाण को बधो को अबधो ?
॥ २४३ ॥

सुगमं ।

सजदासजदा घधा । एदे चधा, अबधा णत्थि ॥ २४४ ॥

उदयाहो पुष्पं पञ्च वा बंधो वेष्टिच्छब्दो हि एतस्य विचारे मत्ति, पचवेष्टेया-
मावाहो । पंचपाणावरणीय चठदंसणावरणीय-पर्वेदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचठक
अगुरुमल्लुअचठक-भिरायिर-सुहासुह सुमगादेच्च-जसकित्ति-णिमिण-पंचतराइयाण सोदधो

संयतासंयतेभिं पांच ज्ञानावरणीय, छद इक्षणावरणीय, सादा व असदा वेदनीय, आठ
कसाय, पुरसवेद, हास्य, रति, शोक, मय, दुगुप्सा, देवायु, देवगति, पंचेन्द्रियजाति,
वैक्रियिक, तैजस व कर्मण सरीर, समचतुरससंस्वान, वैक्रियिकसरीरांगोपांग, बर्ष, गन्ध,
रस, स्पर्श देवमतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुल्लु, उपपात, परपात, उप्पवास, प्रसस्तविहाययोगति,
अस, चादर, पपात्त प्रत्येकसरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुमग, सुस्वर, आदेय,
पशकित्ति, अवशकित्ति, निर्माण, तीर्थकर, उप्पयोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक
और कौन अबन्धक है ? ॥ २४३ ॥

यह सब सुगम है ।

संयतासंयत बन्धक है । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २४४ ॥

इन प्रकृतिपौंड्र बन्ध उद्घाते पूर्वमें वा पश्चात् स्फुटिष्ठ होना है यह विचार यहाँ
नहीं है क्योंकि, उनका बन्ध-मुच्छेदका अभाव है । पांच ज्ञानावरण और इक्षणावरण
पंचेन्द्रिय जाति तैजस व कर्मण शरीर, वर्षादिक और, अगुरुल्लु आदिक और, स्थिर,
अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग आदि पशकित्ति निर्माण और पांच अन्तरायका स्वीकरण

बंधो, एतत् भुवोदयसुवर्तमादो । देवात् देवगद्-वेतम्बियसरीर-मंगोवग-देवगद्भाभोग्गाभुपुष्पी-
अजसक्ति-तित्त्वयराय परोदयो बंधो, यबोदयापमण्णोणविरोहो । पिश-ययत्त-सादसाद्
अहकत्तय-पुरिसवैद्-हम्म-रदि-अरणि-सोग-मय-दुगुल्ल-समचउरससंअण-पसत्त्वविहायग-
सुस्सरुक्कागोदणं बधा सोदय-परोदयो, उहयहा वि बंधविरोहामावादो ।

पंचपाणावरणीय-छद्मपाणावरणीय अहकत्तय पुरिसवैद् मय दुगुल्ल-देवात्-देवगद्-यधि
दियवादि-वेतम्बिय-तेजा-हम्महमसरीर-समचउरससंअण-वेतम्बियसरीरमंगोवग-अणचउरक-
देवगद्भाभोग्गाभुपुष्पी-अगुरुवल्लुवचउरक-पसत्त्वविहायग-तसचउरक-सुमग-सुस्सरुदेव-
मिमिण-तित्त्वयरुक्कागोद्-पंचतराहयणं बधो गिरतरो, एगसमएण बंधुवरमावादो । सादसाद्
हम्म-रदि-अरदि-सोग-मिराभिर-सुहामुह अजसक्ति-मजसक्तिपीणं बधो सांतरो, एगसमएण बंधु
वरमदसपादो । पक्कया सुग्गा, भोपाभुवदपच्चर्णीहो मेदमावादो । सप्पासिं पयडीण देवगद्
संतुपो बंधो, अण्णगद्दं बधामावादो । दुगद्देसम्भइणो सामी, अण्णरथ तेसिममावादो ।
बंधदामं पत्थि, एक्कदुणह्वाणे तदसंभवादो । भववा अग्नि, प-अवहियणयावत्तंपपादो ।

बन्ध होता है क्योंकि यहाँ हमका मुख उदय पाया जाता है । देवाय देवगति वैश्वियक
शरीर व वैश्वियकशरीरगोपांग देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी अयदाकीर्ति और तीर्थकरका
परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि इनके बन्ध और उदयका परस्परमें विरोध है । निम्ना प्रकटा
साता व असाता वैदनीय पाठ कथाय पुरुषवैद् हास्य रति भरति शोक मय सुगुप्ता
समचतुरस्रसंस्थान प्रशस्तविहायोगति सुखर और उच्छगोत्रका बन्ध स्तोत्र-परोक्ष
होता है क्योंकि, दोनों प्रत्यक्ष में हमके बन्धका विरोध नहीं है ।

पाँच जामावरणीय छद्म दर्शमावरणीय पाठ कथाय पुरुषवैद् मय सुगुप्ता
देवाय देवगति वैश्वियक आति वैश्वियक, तैजस व काम्य शरीर समचतुरस्रसंस्थान
वैश्वियकशरीरगोपांग वर्णाश्रित्य कार, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी अगुरुल्लु आश्रित्य कार,
प्रशस्तविहायोगति असाश्रित्य कार, सुमग सुखर भावेय निर्माण तीर्थकर, उच्छगोत्र
और पाँच अन्तराय हमका बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि एक समयसे इनके
बन्धविधायक अमाव है । साता व असाता वैदनीय हास्य रति भरति शोक, द्विपर,
अस्तिपर, शुभ अशुभ पशकीर्ति और अयशकीर्तिका बन्ध सान्तर होता है क्योंकि, एक
समयसे इनका बन्धविधायक देखा जाता है । प्रत्यय सुगम हैं क्योंकि, सामान्य अनुमतीके
प्रत्ययोंसे कोई मेह नहीं है । सब प्रकृतियोंका देवगतिसमुक्त बन्ध होता है क्योंकि, अन्य
गतिपोंके बन्धका यहाँ अमाव है । दो गतिपोंके देवगती स्वामी हैं, क्योंकि अन्य
गतिपोंमें उनका अमाव है । बन्धाध्याय नहीं है क्योंकि, एक गुणस्यानमें उसकी
हम्मावना नहीं है । भववा पर्यापारिक नयका अवलम्बन करके बन्धाध्याय है ।

वचसोच्छेदो णत्ति, ' वचसा णत्ति ' ति वयपाशे । पुवर्षपीणि तिनिहो वचो, पुवापावाशे ।
सेसां सदि-अदुवो, अदुवचपिच्छेदो ।

असजदेसु पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-सादासाद-धारस
कसाय पुरिसवेद-हस्त-रदि-अरदि-सोग भय दुगुछा मणुसगइ-देवगइ-
पचिंदियजादि-ओरालिय-वेउविय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-
मठ्ठाण ओगलिय-चउविय-अगोवग-चज्जरिसहसघट्टण-वण्ण गध रस-
फास मणुसगइ-देवगइपाओगगाणुपुब्बी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद
उस्सास-पसत्यविहायगइ-त्तस-चादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-यिराधिर-सुहा
सुह-सुभग-सुस्सर आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-
पंचंतराइयाण को वधो को अवंधो ? ॥ २४५ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्ठिप्पहुडि जाव असजदमम्मादिट्ठी वधा । एदे वधा,
अवधा णत्ति ॥ २४६ ॥

बन्धन्युच्छेद नहीं है क्योंकि अकन्धक नहीं है देमा स्वप्नमें कहा गया है । भुवचन्यो
प्रकृतिपौत्र तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि उसके भुव बन्धका समाव है । दोष
प्रकृतिबौका सादि व भद्रुय बन्ध होता है क्योंकि, ये भद्रुयबन्धी हैं ।

असंयतोंमें पांच आनावरणीय छद्म दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय चारों
कपाय, पुंसवेद, हास्य, रति, वरति, शोक भय दुगुप्ता, मनुष्यगति देवगति, पंचेन्द्रिय
आति औत्थारिक, वैकिपिक, तैवस व क्षर्यस शरीर, समचतुरससंस्थान औत्थारिक व
वैकिपिक भंमोपांग, वज्रर्षमसंहनन पर्व, गन्ध, रस स्पर्श, मनुष्यगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी
अगुच्छु, उपपत्त, परपत्त उच्छ्वास प्रशस्तविहायोगति, प्रस, चादर, पर्याप्त, फलकभरति,
लिर, बलिर, धूम, बभ्रुय, सुभग, सुस्सर आदेय, यशस्विर्ति, वयस्स्विर्ति, निर्माण, उचमोत्र
और पांच वन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अकन्धक है ? ॥ २४५ ॥

बह स्वप्न सुगम है ।

मिथ्याद्यक्षि लेकर असंयतसम्बन्ध तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, अकन्धक नहीं
हैं ॥ २४६ ॥

एत्थोदइत्तपणं षंभोदयवोन्नेशमावाधो उदयाधो बवो किं पुण्यं पम्भ वा वोन्निष्ण्वो
 ति विचारो भवति । पंचपापावरणीय चतुर्दसपावरणीय-तेजा-कम्माइयसरीर-वम्भचतक
 अगुस्सत्तुज-भिराविर-सुहत्सुह-मिमिष-पंचतराइयणं सोदधो षंभो, ध्रुवादयधाधो । देवगइ
 वेठम्वियसरीर-वेठम्वियसरीरअगोवंग-देवगइपाभोग्गाणुपुब्बीणं परोदधो बवो, षंभोदयाणं परो
 प्यरविरोहो । विहा-पयत्त-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-इत्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंसा-
 समचउरससंअण-पसत्तविहायगइ-सुमग-सुत्सर-आदेन्न-असन्नित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं
 षंभो सोदय-परोदधो उहपहा वि धंभुवलमाधो । मज्जुसगइ-मज्जुसगइपाभोग्गाणुपुब्बी-भोराठिय
 सरीर-भोराठियसरीरबंगोवंग-अजसिहसपइपाण मिष्सादिट्ठि-सासणसम्मदिट्ठिमु सोदय-परो-
 दधो, उहपहा वि धंभुवलमाधो । सम्मामिष्सादिट्ठि-असज्जदसम्मादिट्ठिमु परोदधो, सोदयण सग
 षंभस्स तत्त विरोहदसपाधो । पंचिंदियआदि-तस-बादर-पञ्चत्ताण मिष्सादिट्ठिमु सोदय-परोदधो ।
 उधरि सोदधो भेव, विगट्ठिंदिय-आवर-सुहुमापन्नचपसु सासणादीणममावाधो । उधवाद्-
 परवाद् उत्सुस-पत्तेयसरीराणं मिष्सादिट्ठि-सासणसम्मदिट्ठि-असज्जदसम्मादिट्ठिमु सोदय

यहाँ उदय पुरुष प्रकृतिपौके बन्ध और उदयके व्युत्पत्त्यका अभाव होनेसे उदयकी
 अपेक्षा बन्ध तथा पूर्वमें और या पश्चात् व्युत्पिन्न होता है यह विचार नहीं है । पांच
 ज्ञानावरणीय चार दर्शनावरणीय तैजस व कर्मण शरीर, पञ्चादिक चार, अगुसकपु,
 स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ निर्माण और पांच अन्तराय इनका स्वरूप बन्ध होता है
 क्योंकि ये शुभोदयी प्रकृतिपां हैं । देवगति वैकिकिकशरीर, वैकिकिकशरीरगोपांग और
 देवगतिप्राप्तोपानुपूर्वीका परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि, इनके बन्ध और उदयके परस्पर
 विरोध है । मित्रा प्रच्छा साता व असाता वेदनीय बाह्य कयाय पुरुषवेद हास्य रति
 अरति शोक, मय जुगुप्सा समचतुरक्षसंस्यान प्रद्यस्तविहापोगाति सुमग सुस्वर,
 मानेय पयाकीर्ति मयशकीर्ति और उच्छगोत्रका बन्ध स्वरूप-परोक्ष होता है क्योंकि,
 दोनों प्रकारसे भी इनका बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगति मनुष्यगतिप्राप्तोपानुपूर्वी
 औदारिकशरीर, औदारिकशरीरगोपांग और अजर्ममसंहननका मिष्सादिट्ठि और
 सासणसम्मदिट्ठि गुणस्थानोंमें स्वरूप परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ दोनों प्रकारसे
 भी इनका बन्ध पाया जाता है । सम्मनिमप्पादि और असंयतसम्पददि गुणस्थानोंमें
 परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि, अपने उदयक साथ अपने बन्धका वहाँ विरोध देखा जाता है ।
 पंचेन्द्रिय आदि अक्ष बाह्य और पर्याप्तका बन्ध मिष्सादिट्ठियोंमें स्वरूप परोक्ष होता है ।
 ऊपर इनका स्वरूप ही बन्ध होता है क्योंकि विच्छेन्द्रिय स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्तकोंमें
 सासाधनविक गुणस्थानोंका अभाव है । उपचात परचात उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका
 मिष्सादिट्ठि, सासाधनसम्पददि और असंयतसम्पददि गुणस्थानोंमें स्वरूप परोक्ष

फोटवो । सम्मामिच्छादिदिग्द्विन्दु स्त्रोत्रयो वैव, अपञ्चसद्व्या तस्सामावाहो ।

पंचपात्रावरणीय-अष्टपात्रावरणीय-वारसकृताय भय दुर्गुल्ल-तेजा-कम्प्यमरीर-बन्ध-
चठकक-अगुरुल्लट्टुय ठवपाद विमिम पंचतराह्याय भिरंतरो बंधो, पुवचविचाहो । साक्षसाह
हस्स-रवि-अदि सोम-विरायिर-सुहासुह-असकिचि-असकिचीन बंधो सांतरो, एमसमएन वि
बंधुकरसुपत्तमाहो । देवगाह देवगाहपाधोमागुपुष्पी-अठवियसरीर वेउवियसरीरबंधोभंग-समचठ
रससठपात्र बंधो मिच्छादिदि-सासणसम्मादिहीसु सांतर-भिरंतरो । कंधं भिरंतरो ? न, असंखेय-
वासाठमतिरिक्ख-मणुसमिच्छादिदि-सासणसम्मादिहीसु सुइतिअस्मियसंखेयवासाठएसु न
भिरंतरबंधुकरमाहो । उवरि भिरंतरो, पडिक्खसपयडिणं बंधामावाहो । पुरिसवेदस्स मिच्छा-
दिदि-सासणसम्मादिहीसु सांतर भिरंतरो । कंधं भिरंतरो ? एम सुक्कट्टेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु
पुरिसवेदस्सेव बंधुकरमाहो । उवरि भिरंतरो, पडिक्खसपयडिणं बंधामावाहो । मणुसमह-मणुस

बन्ध होता है । सम्मामिच्छादि गुणस्थानमें बनका स्वोदय ही बन्ध होता है क्योंकि
अपर्याप्तकालमें उस गुणस्थानका समाप्त है ।

पांच पात्रावरणीय छह पात्रावरणीय बारह कपाय भय दुर्गुल्ल तेजस व
काम्य शरीर, ब्रह्मविक बार, अगुरुल्लट्टु ब्रह्मात निर्माण और पांच अन्तर्यामि निरन्तर
बन्ध होता है क्योंकि, वे भुववर्णी हैं । साता व असाता केवलीय हास्य एति भरति
घोष, स्थिर, अस्थिर सुम मधुम पशकीर्ति और अयशकीर्तिका बन्ध सान्तर होता है,
क्योंकि, एक समपक्ष भी अयश बन्धविभ्राम पाया जाता है । देवगति ब्रह्मगतिमायोप्यानु
पूर्वी वैदिकविकारादी, वैदिकविकारादीपांग और समचतुरस्रसंस्थाका बन्ध मिच्छादि
और सात्त्विकसम्यग्द्वि गुणस्थानोंमें सान्तर निरन्तर होता है ।

संक्षेप—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—वहाँ क्योंकि असंख्यातवर्णगुणक तिर्यक व मनुष्य मिच्छादि एवं
सात्त्विकसम्यग्द्विर्गोंमें तथा शुभ तीव्र केस्वावाले संख्यातवर्णगुणोंमें भी उनका निरन्तर
बन्ध पाया जाता है ।

ऊपर उक्त निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिर्गोंके बन्धका
अभाव है । पुरुषवैश्या मिच्छादि और सात्त्विकसम्यग्द्विर्गोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध
होता है ।

संक्षेप—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, पद्म और शुक्ल केस्वावाले तिर्यक एवं मनुष्योंमें पुरुषवैश्या
ही बन्ध पाया जाता है ।

ऊपर उक्त निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिर्गोंके बन्धका

गङ्गापञ्चोत्थाणुस्वीर्णं मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वीसु बंधो सांतर-भिरतरो । कथं भिरतरो ?
 ण, आपादिविदेवेसु' गिरंतरबधुवळमादो । उवरि भिरतरो, गिप्पडिवक्खबंधादो । भोराठिय
 सरीर-भोराठियसरीरबंधोवंगण मिच्छाद्वीसु सासणसम्मादिद्वीसु च सांतर-भिरतरो बंधो ।
 कथं भिरतरो ? ण, देव-भेरइयसु भिरंतरबधुवळमादो । उवरि भिरतरो, गिप्पडिवक्खबंधादो ।
 वज्जरिसहस्रपडवस्स मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वीसु सांतरो । उवरि भिरतरो, गिप्पडिवक्ख
 बंधादो । पसन्त्यविहायगइ-सुमग-सुस्सपदेन्नुवागोदाण मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वीसु सांतर
 भिरतरो, भसंखेज्जवासाठपसु भिरंतरबधुवळमादो । उवरि भिरतरो, गिप्पडिवक्खबंधादो ।
 पंचिदियवादि परचादुस्सास-त्तस-वाद्द-पण्वत्त-पत्तेयसरीरणं बंधो मिच्छाद्विद्वि सांतर-भिरतरो,

अन्तर है । मनुष्यमति और मनुष्यगतिप्रयोगानुपूर्वका मिथ्यादृष्टि और साक्षात्जन
 सम्मगदृष्टियोंमें सात्तर-निरन्तर बन्ध होता है ।

प्रश्न—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—महीं क्योंकि आमतदादि बंधोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

ऊपर उक्त निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहां यह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे
 रहित है ।

औदारिकशरीर और औदारिकशरीरगोपांगका मिथ्यादृष्टि और साक्षात्जन
 सम्मगदृष्टियोंमें सात्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

प्रश्न—इसका निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—महीं क्योंकि देह और नाटकियोंमें इसका निरन्तर बन्ध पाया
 जाता है ।

ऊपर उक्त निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि यह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित
 है । अर्जुनसहजमका मिथ्यादृष्टि और साक्षात्जनसम्मगदृष्टियोंमें सात्तर बन्ध होता है । ऊपर
 निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि यह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है । प्रशस्त
 विहायोगति सुमग सुस्वर, आवेष और उच्छ्वगोदका मिथ्यादृष्टि और साक्षात्जनसम्म
 गदृष्टियोंमें सात्तर-निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि भसंख्यातवगानुपूर्वमें उनका निरन्तर बन्ध
 पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, यह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे
 रहित है । संवेन्द्रिय मति पट्यात उच्छ्वास बस वाद्द, पपांठ और प्रत्येकशरीरका
 बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सात्तर-निरन्तर होता है क्योंकि, देह व नाटकियोंमें इसका

वेठभियसरीर-वेठभियसरीरखंगोबगाय मिन्मइहीमु इगइसंछत्ते, तिरिक्ख-मणुसगईण-ममावादो । सासणसम्मादिहि-सम्मामिष्मदिहि-असंजइसम्मादिहीमु देवगइसंछत्ते । उप्पा-गोदस्स देव-मणुसगइसंछत्ते, बभस्य तस्सुदयामावादो ।

चठगइमिष्मदिहि-सासणसम्मादिहि-सम्मामिष्मदिहि-असंजइसम्मादिही समी । वंघट्ठाण सुगमं । बभस्येदो पत्थि, 'अवंधा पत्थि' चि वयपादो । पुवबंधीण मिष्ठा-इहीमु चठगइहो बंधो । सासणाहीमु तिविहो, पुवबंधामावादो । अनससायं सादि मट्ठवो, पट्ठवबंधितादो ।

वेट्टाणी ओघ ॥ २४७ ॥

वेट्टाणपयणीयं जघा मूलेयम्मि परुषण्य कदा तथा कम्पया, विसेसामावादो ।

एककट्टाणी ओघ ॥ २४८ ॥

सुगमेद ।

मणुस्साउ-देवाउआण को बंधो को अन्धधो ? ॥ २४९ ॥

देवगतिसे संयुक्त होता है । वैदिकिकशरीर और वैदिकिकशरीरखंगोपांगका बन्ध मिथ्या-इष्टिमें हो गतियोंसे संयुक्त होता है क्योंकि, उनका साथ तियगति और मनुष्यगतिके बन्धका अभाव है । सासाइनसम्पगइहि, सम्पमिथ्याइहि और असंयतसम्पगइहि गुण स्थानोंमें देवगतिसे संयुक्त उनका बन्ध होता है । उप्पगोत्रका बन्ध देवगति और मनुष्य गतिसे संयुक्त होता है क्योंकि अन्य गतियोंमें उसके उद्बन्धका अभाव है ।

आठों गतियोंके मिथ्याइष्टि, सासाइनसम्पगइहि, सम्पमिथ्याइष्टि और असंयत सम्पगइष्टि सामी हैं । बन्धायान सुगम है । बन्धभ्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, बभन्धक नहीं है ऐसा सुगम कहा गया है । भुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्याइष्टियोंमें आठों प्रकारका होता है । सासाइनसिद्धिमें तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, वहां भुव बन्धका अभाव है । दोय प्रकृतियोंका बन्ध सादि व मनुष्य होता है, क्योंकि ये मनुष्यबन्धी हैं ।

हिस्मानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओपके समान है ॥ २४७ ॥

छिस्वानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा जैसे मूलेयमें की गई है उसी प्रकार करना चाहिये क्योंकि मूलेयसे वहां कोर विद्यंगता नहीं है ।

एकस्थानिक प्रकृतिपौत्री प्ररूपणा ओपके समान है ॥ २४८ ॥

यह सब सुगम है ।

मनुष्याय और देवायुक्त्वा केन बन्धक और केन अबन्धक है ? ॥ २४९ ॥

सुगमं ।

मिच्छादृष्टी सासणसम्मादृष्टी असजदसम्मादृष्टी वधा । एदे
बंधा, अवसेसा अवधा ॥ २५० ॥

सुगमं ।

तित्ययरणामस्त को वधो को अवधो ? ॥ २५१ ॥

सुगमं ।

असजदसम्मादृष्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २५२ ॥

सुगमं ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदसणि-अचक्खुदंसणीणमोघं णेदब्बं जाव
तित्ययेरे त्ति ॥ २५३ ॥

विष्णु आर्षमाश्रयं धातु-सुख-साधारणं चक्खुदंसणीणं परेदयत्तुवत्तमादो बोध-

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासणसम्मादृष्टि और असजदसम्मादृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं,
शेष अवन्धक हैं ॥ २५० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

तीर्थंकर नामकर्मकर कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २५१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असजदसम्मादृष्टि वधक है । ये वधक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २५२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

दर्शनमार्गानुसारं चक्षुर्दर्शनीं और चक्षुर्दर्शनीं वीथीकी प्ररूपणा तीर्थंकर प्रकृति
तक बोधके समान जानना चाहिये ॥ २५३ ॥

धृक्—तीर्थ जातिवां धाताय स्वावर, सूत्रं और स्वाधारण प्रकृतियोंका
चक्षुर्दर्शनीयोंमें ब्रूकि परेदेव वक्ष्य पाया जाता है, अत एव 'वधकी प्ररूपणा बोधके समान

मिदि न पद ? न, दम्बद्विषयमवर्तयिष्ये द्विदेसामासियमुत्तेसु विरोहामावादे । पयदि
यथद्वानगयमेदपदुप्यायनद्वमुत्तमुत्तं मणदि—

णवरि विमेमो, सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ?

॥ २५४ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्यहुडि जाव स्त्रीणकसायवीयरायछदुमत्त्या वधा ।
एदे वधा, अवधा णत्ति ॥ २५५ ॥

सुगममद ।

ओहिदसणी ओहिणाणिभगो ॥ २५६ ॥

सुगम ।

केवलदसणी केवल्णाणिभगो ॥ २५७ ॥

सुगम ।

हे यह पटित महीं जाता ?

समाधान—यह छोड़ जाए महीं है क्योंकि, द्रव्याधिक मयस्य मयसम्बन्ध कर
स्थित वसामर्गक हृदयों विराघका जमाप है ।

मकृतिव्याप्यानगत मयस्य मयस्यार्थ उत्तर सूत्र कहत है—

इतनी विशेषता है कि सात्त्विकनीयस्य केन पथक और केन मयस्यक है ? ॥ २५४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादर्शमे उत्तर धीनकपाय बीलगा छदुमस्य तर पथक है । ये मयस्यक हैं,
मयस्यक नहीं है ॥ २५५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अपिद्विगता जीवोक्ती प्ररूपणा अपिद्विगतायोक्ते समान है ॥ २५६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

केवलद्विगतायोक्ती प्ररूपणा केवलद्विगतायोक्ते समान है ॥ २५७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णील्लेस्सिय-काठलेस्सियाण
मसजदमंगो ॥ २५८ ॥

किण्हलेस्साए ताव उप्पदे — पंचपात्रावरणीय छद्मसावरणीय-साक्षात्-भारत
कसाम-सुरिसवेद-इत्थं रदि-अरि-सोग-मय-दुग्गुप्ता-मनुष्यगइ-देवमइ-पंचिदियमादि-भोरत्तिय-
वेउम्भिय-तेमा-कम्मइयसरी-समवउरसंछाप-भोरत्तिय-वेउम्भियसरीरंगोवंग-वज्जरिसइसंभइव
वम्भवउकक-मनुसमइ-देवगइपात्रोगाणुपुष्पी-भगुरुवत्तुमवउक-ससत्थविहायगइ तसवउक-
विराविर-मुहामुह-सुमग-सुत्तर भादेवम-असक्खि अमसक्खि-मिमिपुम्मागोद-पंचतरायाणि
किण्हलेस्सियपउगुणहाणवीहि वम्भमाप्पाणि । तत्पुइयादा षंघो पुणं पप्पम वा वेउच्छिमा
सि परिकसए अंसंभदमंगो ।

पंचपात्रावरणीय-व उद्गसावरणीय-तेमा-कम्मइयसरी-वज्जवउक-भगुरुवत्तुम-विरा-
विर-मुहामुह-मिमिप-पंचतरायाणं षंघो सोदमो, पुणेदयत्तरो । देवगइदुग-वेउम्भियदुगणं
सोदमो, षंघोदयाण समावच्छउचिबिरोहारे । विहा-वयत्त-साक्षात्-भारतकसाम-सुरिसवेद

लेस्सामार्गानुसार कृष्णलेखावाले, नीललेखावाले और कपोतलेखावाले जीवोंकी
प्ररूपणा असंपत्तके समान है ॥ २५८ ॥

पहले कृष्णलेखाके आश्रित प्ररूपणा करते हैं— पांच आवावरणीय छद्म
वर्णसावरणीय साता व मसता वेदनीय बारह कपाव पुरुषवेद हास्य रति
भरति शोक, मय दुग्गुप्ता मनुष्यमति देवमति पंचेन्द्रिय आति, नौदरिक,
वैदिक, तैजस व अमंथ शरीर, समवउरसंस्थान नौदरिक और वैदिक
शरीररंगोपाय अमंथमसंहनन वर्णाधिक बार, मनुष्यमति और देवमति प्रापोन्मापुपूर्वी
भगुरुवत्तु आदिक बार, महास्वविहायोमति वसादिक बार, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ
सुमग सुस्वर, मनेव वहाक्खीति अयदाक्खीति निर्माण उच्छगोव और पांच अन्तराय ये
महत्तिवा कृष्णलेखावाले बार शुभस्थानवर्ती जीवों द्वारा वर्णमान हैं । उन्में उद्गपसे वज्ज
पूर्वमें ध्युच्छिन्न होता है या पप्पम इस प्रकारकी परीक्षा यहां असंपत्त जीवोंके समान है ।

पांच आवावरणीय बार वर्णसावरणीय तैजस व अमंथ शरीर, वर्णाधिक बार,
भगुरुवत्तु स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ निर्माण और पांच अन्तरायका वज्ज लाए
हाना है क्योंकि वे सुबोदनी हैं । देवमतिदिक और वैदिकदिकका परोक्ष वज्ज होता
है क्योंकि, इनके वज्ज और उद्गपके समान अन्तमें रहनेका विरोध है । मित्रा प्रवडा
साता व मसता वेदनीय बारह कपाव पुरुषवेद हास्य रति, भरति शोक, मय,

हस्त-दि-आदि-सोम-मय-दुग्ध-सम-उरस-स्रग्ध-वस-विविहाय-सुभग-सुस्वर-आदे-व-वस-
 किति-अस-किति उच्चागोदाण सोदय-परोदयो, उभयहा वि वधुषत्तमात्रे । मधुसगाद्गुगोरा
 त्रिपद्ग-वज्ररिसहस्रपञ्चार्ण मिच्छादिहि-सासणसम्मादिहीसु सोदय-परोदयो, उभयहा वि
 वधुषत्तमात्रे । सम्मामिच्छादिहि-असंजदसम्मादिहीसु परोदयो, सोदयपञ्चाणमेदेसु गुणहापेसु
 अक्षमठत्तिविरोहात्रे । पविदियजादि-तस-बाद-पञ्चस्रग्ध मिच्छादिहीसु सोदय-परोदयो,
 एत्थ पविदकसुपयहीण वि उदयसंमवात्रे । उवरि सोदयो चेव, विगर्त्तिय-यावर-सुद्धम
 अपञ्चत्तणसु सासणादीणममात्रे । उपपाद-परपादुसास-पत्तयसरीराण मिच्छादिहि-सासण
 सम्मादिहीसु सोदय-परोदयो । असंजदसम्मादिहीसु सोदय-परोदयो, छट्ठपुष्पीपञ्चमपाण-
 मप-वस-कत्ते असंजदसम्मादिहीण परोदण वषसमवात्रे । सम्मामिच्छादिहीसु सोदयो,
 एसिमपञ्चत्तदामात्रे ।

पञ्चपात्रपरणीय-छट्ठस्रग्धरणीय-आसकस्याय-मय-दुग्ध-तेजा-कम्मवसरी-वण-
 चठक-अगुन्तल्लुव उपाद-विमिण-पञ्चनपात्रार्ण पञ्चो गिरित्ते, पुवपञ्चिात्रे । सादासाद-

सुगुप्ता समञ्जससम्पत्ति प्रवृत्तिविहायैवति सुभग सुस्वर, आदेय, वसकीर्ति,
 मयशकीर्ति और उच्चगोमका स्त्रोदय परोदय वग्ध होता है क्योंकि दोनों प्रकारसे मी
 इनका वग्ध पाया जाता है । मनुष्यगणितिक बीजारिचयिक और वज्रपमसेहमनका
 मिष्यादृष्टि और सासात्रसम्पत्ति गुणस्थानोंमें स्त्रोदय परोदय वग्ध होता है क्योंकि
 वहां दोनों प्रकारसे मी वग्ध पाया जाता है । सम्पत्तिमिष्यादृष्टि और असंजदसम्पत्ति
 गुणस्थानोंमें उभका परादय वग्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें उन प्रवृत्तियोंके अपने
 वग्ध और उदयके एक साथ रहनेका विराय है । ऐवेन्द्रिय जाति प्रम बाद और पर्याप्तका
 मिष्यादृष्टियोंमें स्त्रोदय-परोदय वग्ध होता है, क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंका मी
 उदय सम्मम है । ऊपर स्त्रोदय ही वग्ध होता है क्योंकि पिच्छन्द्रिय स्थावर, सूक्ष्म
 और अपर्याप्तकोंमें सामाज्यादिक गुणस्थानोंका समाप है । उपपात परपात उच्छ्वास
 और प्रत्यक्षशीरका मिष्यादृष्टि और सासात्रसम्पत्ति गुणस्थानोंमें स्त्रोदय-परोदय
 वग्ध होता है । समपनसम्पत्तिमिष्योंमें स्त्रोदय-परादय वग्ध होता है क्योंकि, छट्ठी पृथिवीस
 पीठ भाये हुए असंजदसम्पत्तिमिष्योंके परादयस वग्ध सम्मम है । सम्पत्तिमिष्यादृष्टियोंमें
 स्त्रोदय वग्ध होता है क्योंकि उनमें अपर्याप्तताका समाप है ।

पांच शास्त्रपरणीय छट्ठ इज्जनावरणीय बाह्य कराय मय सुगुप्ता वैश्वस व
 वज्रपम शरीर, पञ्चादिक चार, अगुन्तल्लु उपपात निर्माण और पांच अन्तर्पात्रका वग्ध
 विरत्तर होता है क्योंकि, व मृषवर्धी हैं । सादा व प्रसादा येदनीय हास्य रति, अरति

१ शत्रु बाते इति वातः ।

इस्स-रदि अरि-सोर्ग-विद्यारि-सुहासुद-असक्ति-अजसकिर्त्तियं सांतेरो, अदुववयिचारे ।
 पुरिसवेद-देवगइदुग-वेठविपसरी-वेठविपसरी-भंगोवंग-समबतरसंअण-अन्तरिसहसंपइअ-
 पस्यविहायइ-सुमम-सुस्सर-अदेअण्णागोदानं मिअइदि-सासवसम्मादिहीसु सांतेरो ।
 उररि मिरतो, विप्विदवसवभाहो । मणुसमइ-मणुसगइपाभोग्गानुपुब्बीणं मिअइदि-सासव-
 सम्मादिहीसु गिरंतरो । कथं मिरंतरो ? य आरपअणुदेवार्णं मणुस्सेमुववअण्णं सुक्कळेस्सा-
 विभासेण किअइस्सेसए परिपदापमंतोमुहुत्तकत्तं मिरंतरंअणुवत्तंमारो । सुक्कळेस्साए द्विदो पम्म
 वेठ-अउ-वीत्तेस्सामो वोत्थिय कपमअमेण किअइस्सापरिपदो होअ ? य, सुक्कळेस्सारो कमेण
 अउ-वीत्तेस्सामु परिमिय पम्म किअइस्सापमाएण परिममअणुवगमारो । य य मणुसमइ
 अणवइअ अउ-वीत्तेस्साअउरो योवा, तथो तस्स बहुपुरत्तंमारो । अपवा मअिअमसुक्कळस्सिमो
 देवो जहा अिअउओ होदण अइअणुअण्णा अपरिमिय असुइतिस्साए विअदि

लोका, स्थिर, अस्थिर आरु अणुम यथाधीर्ति और अयथाधीर्ति का सामन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वे अणवबन्धी हैं। पुराणके देवगतिग्रन्थ, वैदिकशरीर, वैदिकशरीरतंगोपाय समबतुरसंस्वाव अर्धमसहजम प्रशस्तविहापोमति सुमग सुस्वर, अणव और अणवगणक मिअइदि और सासावसम्मादिहीसु सांतेरो बन्ध होता है। ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ वह मातपस प्रकृतियोंके बन्धसे स्थित है। मनुष्यगति और मनुष्यगतिमायोगानुपूर्वीक मिअइदि और सासावसम्मादिहीसु सांतेरो निरन्तर बन्ध होता है।

शुक्ल—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—महाँ क्योंकि मनुष्योंमें उत्पन्न हुए आरु अणुम वेदोंके शुक्लअणवके विभाषसे कृष्णअणवोंमें परिणत होनेपर अन्तर्मुहूर्त काळ तक निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

शुक्ल—शुक्लअणवोंमें स्थित जीव पद्म तेज अणुत और जीव अणुतोंमें जो सांघर केने एक साथ कृष्णअणवोंमें परिणत हो सकता है ?

समाधान—यह कोर होय नहीं है क्योंकि शुक्लअणवसे कमला कापात और जीव अणुतोंमें परिणमन करके पीछे कृष्णअणव पर्यायसे परिणमन स्वीकार किया गया है। आर मनुष्यगतिबन्धकाल कापात और जीव अणुतोंके कालसे योड़ा नहीं है क्योंकि वह उससे बहुत पाया जाता है। अथवा मध्यम शुक्लअणवका केव जिस प्रकार आयुक्त शीघ्र होनेपर अथवा शुक्लअणवोंके परिणमन न करके अणुम तीन अणुतोंमें विरता

तद्वा मध्ये देवा मुदयकस्येण' चेव अभियमेण अमुह्यतेस्सासु निवर्तते ति गहिदे तुब्जदे ।
अण्णे पुण आहरिया किण्णतेस्साए मनुसगइदुगस्स पिरतरे वषं पेम्भंति, मणुसगदि
पंघगदाए क्खतेस्सावधगदावुत्तम्भुवगमादो । त पि कुदो ? मुददेवाणं सम्भेसि पि क्खठ
तेस्साए चेव परिणामम्भुवगमादो । उवरि पिरंतो । भोराठियसरीर-भंगोवंगाण मिच्छाद्वि-
सासणसम्मादिहीसु सांतर-पिरंतो । कुदो ? वेरइएसु पिरतरंभुवठमादो । उवरि पिरंतो,
पडिबन्धपयडिबंधामावादो । पंपिदियवादि-परपादुस्सास-त्तस-वादर-पम्भव-पत्तेयसरीराण
मिच्छाद्विहीसु सांतर-पिरंतो, वेरइएसु पिरतरंभुवठमादो । उवरि पिरंतो, पडिबन्धपयडिबंधीयं
वचामावादो ।

पञ्चयात्रमोचभंगो । गवरी असंजदसम्माद्विपणसु वेउभियमिस्सपणओ बयभेदम्भो ।
भोराठियदुग-मणुसगइ-मणुसगइपाभोगाणुपुन्वीयं सम्मामिच्छाद्विदिदि भोराठियकयवोपिस्वि-

है इसी प्रकार सब देव मरणकालमें ही नियम रहित अशुभ चीज छेदयामें गिरते हैं,
ऐसा ग्रहण करनेपर उपर्युक्त कथन संगत होता है ।

अन्य भाषाय कृष्णछेदयामें मनुष्यगतिप्रिकका निरन्तर बन्ध नहीं मानते हैं
क्योंकि, मनुष्यगति बन्धककालसे कापातछेदयाका बन्धककाल बहुत स्वीकार किया
गया है ।

शुका — यह भी कैसे ?

समाधान — क्योंकि सब ही मृत देवोंका कापातछेदयामें ही परिवर्तन स्वीकार
किया गया है ।

ऊपर उक्त निरन्तर बन्ध होता है । भौतिकशरीर और भौतिकशरीरोंगोपांगका
मिथ्यादृष्टि व सासादमसम्पदृष्टि शुभस्थानमें सास्तर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि
भारतीयोंमें उक्त निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि यहाँ
प्रतिपक्ष प्रतियोगिक बन्धका अभाव है । पंचगम्य जाति परपात वच्चास जन्म बादर,
पयाण और मत्पेकशरीरका मिथ्यादृष्टियोंमें सास्तर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि,
भारतीयोंमें उक्त निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि
यहाँ प्रतिपक्ष प्रतियोगिक बन्धका अभाव है ।

प्रत्ययोंकी प्रकृति भाषक समान है । बिनाय इतना है कि असंपन्न
सम्पदप्रिक प्रत्ययोंमें वैकिकिकमिन्न प्रत्ययका कम करना चाहिए । भौतिककिक,
मनुष्यगति वार मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विक सम्पत्तिमत्पदृष्टि शुभस्थानमें भौतिक

१ अर्थात् देवा मुदयकस्येण आश्रयदा देवामुदयकस्येण इति पाठः ।

२ शब्दो लब्धाविष्कारादी इति पाठः ।

पुरिसवेदपञ्चपदि विद्या आत्मीसपञ्चवा । देवगद्-देवगद्वाभोगागुपुष्पी-वेठश्वियसरीर-वेठ
श्वियसरीरगोवर्गाभं वेठश्विय-वेठश्वियमिस्सपञ्चया सञ्चगुणद्वान्पञ्चपसु सञ्चस्य जगदेदम्बा ।
भोराठियदुग-मनुसगद्-मनुसगद्वाभोगागुपुष्पीभं असंजदसम्मादिद्धिमिह आत्मीस पञ्चया,
वेठश्वियमिस्स-भोराठिय-भोराठियमिस्स-कम्मइय-इत्थि-पुरिसवेदपञ्चयात्मममावाहो । कञ्चरि
सइसपदकस्स सम्मामिच्छइद्धिमिह आत्मीस पञ्चया, भोराठियकम्पभोगिरिय-पुरिसवेदपञ्चया-
ममावाहो । असंजदसम्माइद्धिमिह आत्मीस पञ्चया, भोराठिय-भोराठियमिस्स-वेठश्वियमिस्स
कम्मइयकम्पभोगित्थि-पुरिसवेदपञ्चयात्मममावाहो ।

पंचपाप्मावरणीय-ऊर्ध्वसपावरणीय-असाववेदमीय-वारसकसाय-अरुदि-सोम-मय-भुगुब्ध-
परिदियबादि-तेमा-कम्मइयसरीर-वञ्च-यंच-रस-अस-अगुस्सत्तुज-उवघाद-परपाद-उत्सास-
तस-बादर-यवत्त-पत्तेयसरीर-अभिर-असुह-अजसकित्ति-भिमिष-यंचेतराइयाभं मिच्छइद्धिमिह षठ
यइसंतुछे षथो । सासणे तिगइसंतुछो, विरयगईए अमावाहो । असंजदसम्माइद्धि-सम्मा-
मिच्छइद्धीसु हुगइसंतुछो, विरय-न्तिरिक्कगईअममावाहो । साववेदमीय-पुरिसवेद-इस्स-रि
समचठरसंतुज-पत्तयविहम्यअ-विर-सुम-सुमग-सुस्सर-आदेव-असकित्थिभं मिच्छइद्धि-सासण-

काययोग क्रीवेद् और पुरुषवेद प्रत्ययोंके विद्या आत्मीस प्रत्यय हैं । देवगति
देवगतिप्राप्तपणानुपूर्वी वैकल्पिकशरीर और वैकल्पिकशरीरगोपांगके वैकल्पिक और
वैकल्पिकमिथ प्रत्ययोंके सब गुणस्थानोंके प्रत्ययोंमें सर्वत्र कम करना चाहिये ।
औद्यारिकक्रिय, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्राप्तपणानुपूर्वीके असंप्रतसम्प्रादपि गुणस्थानमें
आत्मीस प्रत्यय हैं क्योंकि वहाँ वैकल्पिकमिथ औद्यारिक औद्यारिकमिथ कर्मज काययोग
क्रीवेद् और पुरुषवेद प्रत्ययोंका वहाँ अभाव है । ब्रह्मर्मसंहननके सम्प्रतिष्ठादपि
गुणस्थानमें आत्मीस प्रत्यय हैं क्योंकि, औद्यारिककाययोग क्रीवेद् और पुरुषवेद
प्रत्ययोंका वहाँ अभाव है । असंप्रतसम्प्रादपि गुणस्थानमें इसके आत्मीस प्रत्यय हैं क्योंकि,
औद्यारिक, औद्यारिकमिथ वैकल्पिकमिथ कर्मज काययोग क्रीवेद् और पुरुषवेद प्रत्ययोंका
वहाँ अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय ऊर्ध्व वर्तमानावरणीय आसता वेदमीय बारह कपाय अरुदि
शोक, मय भुगुब्ध, पंचमिथ आति वैसस व कर्मय शरीर, कर्ष गण्य रस स्पर्श
अगुलकसु, उपपात परपात उच्छ्वास बल बाह्य, पर्याप्त प्रत्ययशरीर, अस्थिर, अक्षुभ
अपराधीर्त, निर्माण और पांच अन्तरायका मिच्छादपि गुणस्थानमें आर्य गतिपोंसे संयुक्त
बन्ध होता है । सासात्मन गुणस्थानमें तीन गतिपोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ
मरकमतिका अभाव है । असंप्रतसम्प्रादपि और सम्प्रतिष्ठादपि गुणस्थानमें दो गतिपोंसे
संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ मरकमति और तिर्यग्गतिका अभाव है । साता वेदमीय
पुरुषवेद दास्य रति, समचठरअसंख्यान प्रष्टविहायोमति स्थिर सुम सुमय

सम्मादिहीसु तिगइसंजुतो, गिरयगईए बभावाओ । सम्मामिन्नाइहि-असंजदसम्मादिहीसु दुगइ
संजुतो, गिरय-तिरिक्खगईएममावाओ । मणुसगइ-मणुसगइपामोमाणुपुप्पीण सम्मगुणहणिसु पओ
मणुसगइसंजुतो । ओरात्थियसरीर-ओरात्थियसरीरगोवंग-वन्मरिसइसंजदपण्णं मिन्नाइहि-सासण
सम्मादिहीसु तिरिक्ख-मणुसगइसंजुतो । सम्मामिन्नाइहि-असंजदसम्माइहीसु मणुसगइसंजुतो,
अण्णगइपंभामावाओ । देवगइदुगस्स देवगइसंजुतो । वेठथियदुगस्स मिन्नाइहीसु दुगइ
संजुतो, तिरिक्ख-मणुसगईएममावाओ । सासणसम्मादिहि-सम्मामिन्नाइहि-असंजदसम्मा-
दिहीसु देवगइसंजुतो, अण्णगइपंभेण सज्जेगविरोइओ । उप्पगोदस्स सम्मगुणहणिसु
देवगइ-मणुसगइसंजुतो पओ ।

पंचणापावरणीय-छंदसपावरणीय-सादासाद-वारसकसाय-गुरिसवेद-इत्स-रदि-भरदि-
सोग-भय-दुगुष्म-पंचिंदियजादि तेजा-कम्मइयसरीर-समचठरससयण-बण्ण-गण-रस-फास-
अगुरुवत्तुवचठक-पसरवविहायगइ-तस-बादर-पञ्चस-पंचेयसरीर-धिराधिर-सुहासुह-सुभग-
सुत्सर-भादेज-असकिति-अजसकिति-जिमिज-पंचतराइय-उप्पगोदाण-चठगइमिन्नाइहि-सासण

सुत्सर, भादेय और यशकौर्तिक मिथ्याएहि और सासाइनसम्पगहि गुणस्थानोंमें तीन
गतिपोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि वहां मरकगतिका अभाव है । सम्पमिमिथ्याएहि
और असंयतसम्पगहि गुणस्थानोंमें दो गतिपोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, वहां
मरकगति और तिर्यगगतिका अभाव है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायेणानुपूर्वीका सब
गुणस्थानोंमें मनुष्यगतिये संयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशरीर औदारिकशरीरगोवांग
और अज्ञर्पमर्तहृन्मका मिथ्याएहि और सामाज्यसम्पगहि गुणस्थानोंमें तिर्यगगति और
मनुष्यगतिये संयुक्त बन्ध होता है । सम्पमिमिथ्याएहि और असंयतसम्पगहि गुणस्थानोंमें
मनुष्यगतिये संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि वहां अन्य गतिपोंके बन्धका अभाव है ।
देवगतिद्विकका देवगतिये संयुक्त बन्ध होता है । वैकिपिकद्विकका मिथ्याएहियोंमें दो
गतिपोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, त्रिपगति और मनुष्यगतिये बन्धका अभाव है ।
सासाइनसम्पगहि सम्पमिमिथ्याएहि और असंयतसम्पगहि गुणस्थानोंमें त्रिपगतिये
संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, अन्य गतिपोंके बन्धके साथ उसके संपागका विरोध है ।
उप्पगोत्रका सब गुणस्थानोंमें त्रिपगति और मनुष्यगतिये संयुक्त बन्ध होता है ।

पांच जामावरणीय छह दर्शनावरणीय छाता प मसाता बेहनीय बारह कपाय
पुण्यबह हाथ रनि भरति शोक मय जुगुप्सा, पंचत्रिंशति जाति वैज्रम बक्षमण्य शरीर
ममचमुरसंसंस्थान पण बण्ण रस स्वर्श अगुरुवत्तु भाद्रिक बार, प्रशस्तविहायागति
अम बार पण्ण प्रत्यक्षशरीर, धिर अस्थिर, शुभ मशुम सुभग सुत्सर, भादेय
यशकौर्तिक मयशर्कति, निर्माण, पांच मन्तराय और उप्पगोत्रके जाति गतिपोंके

सम्मादिष्टिभो, तिगइसम्माभिच्छइष्टि-असज्जदसम्मादिष्टिभो सामी, देवगईए बमानादो । मनुसगइ-मनुसगइपाभोग्माणुपुब्बी-भोग्गलियसरीर-भोग्गलियसरीरभोग्ग-वन्धरिसहसंपडपानं पठगइमिच्छइष्टि-साम्मणसम्मादिष्टिभो पिरयगइसम्माभिच्छइष्टि-असज्जदसम्मादिष्टिभो प सामी । देवगइ-वेठभियइगाण दुगइमिच्छइष्टि साम्मणसम्मादिष्टि-सम्माभिच्छइष्टि-असज्जदसम्मादिष्टिभो प सामी, पिरय-देवगईएममानादो ।

वैषद्यापे सुगम । ब्रह्मबोध्येतो पतिष 'ब्रह्मा ब्रह्म' ति वयणादो । पुत्रवैषीन मिच्छइष्टिभिद् वैषो पठयिहो । अन्त्यति तिनिहो, पुत्राभावादो । अद्वैतवैषीन सत्वरय स्यादि अद्वैतो, अपादि-सुभाषमभावादो ।

संपदि दुष्ठापपयवीनं परूवणा करिदे— ब्रह्मताणुवैषिबठक्कस्त वैनेदया समं वेष्टिच्छन्वन्ति, सासज्जदसम्मादिष्टिभिद् तदुभयबोध्येतुवर्तमादो । एवं तिरिक्खमइपाभोग्माणुपुब्बीए वि वत्थं । असज्जदसम्मादिष्टिभिद् नि तदुद्वो मरिष ति वै न, किम्पत्तेस्साए निद्वयाए

मिच्छादष्टि और सासाज्जदसम्मादष्टि, तथा तीन गतियोंके सम्प्रतिमिच्छादष्टि और असंपत-सम्मादष्टि स्वामी हैं क्योंकि, यहां वैश्वगतिमें इनके बन्धका अभाव है । मनुष्यगति मनुष्यगतिप्रयोगानुपूर्वी और शरीरकशरीर, और शरीरकशरीरगोपांम और ब्रह्मपमसंज्ञननन चारों गतिपक्षोंके मिच्छादष्टि और सासाज्जदसम्मादष्टि और नरकगतिमें सम्प्रतिमिच्छादष्टि व असंपतसम्मादष्टि स्वामी हैं । वैश्वगतिमें और वैश्वगतिमें दो गतियोंके मिच्छादष्टि, सासाज्जदसम्मादष्टि, सम्प्रतिमिच्छादष्टि और असंपतसम्मादष्टि स्वामी हैं क्योंकि, नरक और वैश्व गतिमें इनके बन्धका अभाव है ।

ब्रह्माध्यान सुगम है । ब्रह्मबुद्धेई वहाँ है क्योंकि, अब्रह्मवत् वहाँ है ऐसा सूत्रमें कहा गया है । ब्रह्मब्रह्मी प्रकृतियोंका मिच्छादष्टि गुणस्थानमें चारी प्रकृतका बन्ध होता है । अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ ब्रह्म बन्धका अभाव है । अद्वैतब्रह्मी प्रकृतियोंका सर्वत्र सादि व अद्वैत बन्ध होता है क्योंकि, उनके अभावे और ब्रह्म बन्धका अभाव है ।

जब कित्थम प्रकृतियोंकी प्रकृति करते हैं— अनन्तानुबन्धितानुष्कका बन्ध और उद्वेग दोनों साधमें व्युत्पन्न होते हैं, क्योंकि सासाज्जदसम्मादष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युत्पन्न पाया जाता है । इसी प्रकार तिर्यग्गतिप्रयोगानुपूर्वीके भी उद्वेग चाहिये ।

संक्षेप—असंपतसम्मादष्टि गुणस्थानमें भी तो तिर्यग्गतिप्रयोगानुपूर्वीका उद्वेग है, फिर उसका उद्वेगव्युत्पन्न सासाज्जदसम्मादष्टि गुणस्थानमें कैसे सम्भव है ।

समाधान—वेसा वहाँ है क्योंकि, कृष्णबोध्यका अनुपंग होयेपर उसका वहाँ उद्वेग

तदुद्धारसंभवाद्वा । अत्रसेसार्थं पयशीर्णं उदयबोज्जेदो जत्थि, बंधवोप्पेदो चेव । सप्पात्तिं पयशीर्णं बंधो सोदय-परोदमो, भद्दुवोदयत्तादो । धीप्पगिद्धितिय-अप्पताणुबधिसठपक-तिरिक्खाठभाणं बंधो भिरंतरो, एगसमएण पचुवरमामावादो । इत्थिवेद-चठसअण-चठसपइण-उब्बोव-अप्पसत्त्वविहायगइ-दुमग-दुस्सरं अजादेब्बमार्णं बंधो सांतरो, एगसमएण वि पचुवरसुव ठंमादो । तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओमगाणुपुब्बी-भीषागोदाय बंधो सांतरं भिरंतरो । कुदो ? सत्तमपुइवीट्ठिइमिप्पमइट्ठि-सासणसम्मदिट्ठीसु तेउ-वाउक्कइयमिप्पमइट्ठीसु प भिरंतरंभु-वठंमादो । पच्चया सुगमा । पवरि तिरिक्खाठमस्स मिप्पमइट्ठिइ वैठथियमिस्स-कम्मइय पच्चया अवप्पेदप्पा । सासणसम्मदिट्ठिइ ओरात्थियमिस्स-वैठथियमिस्स-कम्मइयपच्चया बंध भेदप्पा । धीप्पगिद्धितिय-अप्पताणुबधिसठपकण बंधो चउगइसंभुत्तो । इत्थिवेदस्स तिगइसंभुत्तो, भिरयगइए अमावादा । चठसअण चठसपइभाणं दुग्गसंभुत्तो, भिरय-वैषगइणममावादो । अप्पसरवविहायगइ-दुमग-दुस्सरं अजादेब्ब-भीषागोदायं मिप्पमइट्ठीसु तिगइसंभुत्तो, देवगइए

अप्पम्मप हे ।

शेष प्रवृत्तियोंका उदयपुच्छेद नहीं है केवल बन्धभ्युच्छेद ही है । सप्त प्रवृत्तियोंका बन्ध स्योदय परादय होता है क्योंकि, ये असंयुक्त हैं । स्यामपूथिद्वय अनन्तानुबन्धिय चतुष्क भीरतिर्यगायुक्ता बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि एक समयसे उनके बन्धविधामका समापन है । स्त्रीद्वय चार संस्थान चार महान उद्योत अमरात्मविहायोगति दुर्भग दुस्वर भीर अमात्रेयका बन्ध सात्तर होता है क्योंकि, एक समयमें भी उनका बन्धविधाम पाया जाता है । तिपगति तिपगतिप्रयोगानुपूर्वी भीर नीचगात्रका बन्ध सात्तर निरन्तर होता है क्योंकि स्याम पूथिवीमें स्थित मिथ्यादृष्टि व सासात्मसम्पदृष्टि मारकियोंमें तथा तत्र ये बाहु कायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंमें भी उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि तिपगायुके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें वैश्वियिक्कमिध भीर कर्मण प्रत्ययोंके कम करना चाहिये । सामात्मसम्पदृष्टि गुणस्थानमें भौतिकमिध वैश्वियिक्कमिध भीर कर्मण प्रत्ययोंका कम करना चाहिये । स्यामपूथिद्वय भीर अनन्तानुबन्धियचतुष्कका बन्ध चार गतियोंमें संयुक्त होता है । स्त्रीद्वयका बन्ध तीन गतियोंमें संयुक्त होता है क्योंकि, उसके साथ अरकगति का बन्धका समापन है । चार संस्थान भीर चार संतननका बन्ध दो गतियोंमें संयुक्त होता है क्योंकि, उसके साथ मरकगति भीर वपगति का बन्धका समापन है । अमरात्मविहायोगति दुर्भग दुस्वर अमात्रेय भीर नीचगात्रका मिथ्यादृष्टिभी तीन गतियोंमें संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, वपगति का यही समापन है ।

ब्रह्मसाधो । सासने दुमर्शसंस्तुते, भिरय-नेषगर्भममासाधो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खग-तिरिक्ख-
ग-पाभोगाणुपुष्पी-उज्जेवाण तिरिक्खग-संस्तुते, सामावियाधो । वीणयिदित्तिपादीण पयडीमं
बंभत्स चठग्गामिप्पमहि-सासणसम्मादिद्विपो सामी, अवियेहाधो । बंभत्सं बंभविणहृत्तमं
च सुगमं । सुवर्णमं मिप्पमहि-चठवियेहो बंभो । सासने दुमिहो, अपाह-सुवर्णमामासाधो ।
अवसेसणं बभो सादि-अदुबो, अदुवववियाधो ।

एगहापपयडीण परूवणा क्रिदे— मिप्पत्तेहिय-वीहिय-तीहिय-चउरिदियमादि
भिरयाणुपुष्पी-भादाव-पावर-सुहम-अप-च-साहारवसरीत्तमं पंवेत्तया समं वोप्पिन्नेति,
मिप्पमहि-वेव तदुमयवोप्पेदुवत्तमाधो । अवसेसणं पयडीण उदयवोप्पेदो वरिध,
बंभवोप्पेदो वेव । मिप्पत्तस बभो सोदवो । भिरयाउ-भिरयग-भिरयग-पाभोगाणुपुष्पीमं
परोदवो, सोदपय बंभविहो । अवसेसणं पयडीमं बंभो सोदय-परोदवो, उमयह भि
अनिरुद्धमाधो । मिप्पत्त-भिरयाउभाप बंभो भित्तो । अवसेसणं सांतरो, एगससण भि
वैवुवरमदमाधो । एववया सुगम । पवरि भिरयाउ-भिरयग-भिरयाणुपुष्पीमं वेठविय

सासात्मनमें हो गतिपौंस संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि वहाँ नरकगति और देवगतिक
ब्रह्म है । तिर्यगायु, तिर्यगति तिर्यगतिमायोग्यानुपूर्वी और उद्योतका तिर्यगातिसे
संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । स्वानपुष्टिकय धारि प्रकृतिबौद्ध बन्धके
चारों गतिपौंस मिथ्याहृदि और सासात्मनसम्यग्हृदि स्वामी हैं क्योंकि, इसमें कोई विरोध
नहीं है । बन्धाज्वाल और बन्धविनष्टस्यान सुगम हैं । भुवबन्धी प्रकृतिपौंस मिथ्याहृदि
गुणस्यात्ममें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सासात्मन गुणस्यात्ममें हो प्रकारका बन्ध होता
है क्योंकि वहाँ ब्रह्मदि और भुव बन्धका ब्रह्म है । दोष प्रकृतिपौंस बन्ध साधे और
भद्रुव होता है क्योंकि, वे समुच्चबन्धी हैं ।

एकस्यान प्रकृतिबौद्ध प्रकृपणा करते हैं— मिथ्यात्व एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय
बौन्द्रिय चतुरिन्द्रिय आदि नारकानुपूर्वी माताप स्यावर, सुहम अथर्पांत और
साधारणशरीरका बन्ध व उदय दोनों साधमें स्पृष्टिज होते हैं क्योंकि, मिथ्याहृदि
गुणस्यात्ममें ही उन दोनोंका स्पृष्टेय पाया जाता है । दोष प्रकृतिपौंस उदयस्पृष्टेय
नहीं है केवल बन्धानुस्पृष्ट ही है । मिथ्यात्वका बन्ध स्वोदय होता है । नारकानु
नरकगति और नरकगतिमायोग्यानुपूर्वीका परोक्ष बन्ध होता है क्योंकि, अथवे उदयके
साध इनके बन्धका विरोध है । दोष प्रकृतिपौंस बन्ध स्वोदय परोक्ष होता है क्योंकि
दोनों प्रकारने भी उनका बन्धमें कोई विरोध नहीं है । मिथ्यात्व और नारकानुका बन्ध
निरन्तर होता है । दोष प्रकृतिपौंस बन्ध सान्तर होता है क्योंकि, एक समयसे भी
उदयका बन्धविधामका देखा जाता है । अत्यन्त सुगम हैं । विरोध इतका है कि नारकानु,

वेतत्रियमिस्स-ओत्तलियमिस्स-कम्मइयपन्चया णत्थि, अपञ्चतकाले एदासिं पंचामावादे । एइंदिय आदाव-थावरणं वेतत्रियकयमोगपन्चओ अवणेयवो । पीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय सुहुम-अपञ्च-साहारणं वेतत्रिय-वेतत्रियमिस्सपन्चया अवणेदप्पा, देव-भेरइएसु एशसिं पंचामावादे । मिच्छत्तस्स चउगइसुत्तो । जसुसपवेद-हुंइसंअण पाण तिगइसंअणो, देवमदीए अमावादे । असंपत्तेवइसपइण-अपञ्चण तुगइसंअणो, पिरय-देवगइणममावादे । पिरयाउ पिरयदुगाण पिरयगइसुत्तो । अवसेसाणं पयडीणं तिरिक्खगइसुत्तो पंचो । पिरयाउ पिरयदुग-पीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियआदि-सुहुम-अपञ्च-साहारणं तिरिक्ख-मणुसा सामी । मिच्छत्त-जसुसपवेद-हुंइसंअण-असंपत्तेवइसपइणं चउगइमिच्छाइही सामी । एइंदिय-आदाव थावरणं तिगइमिच्छाइही सामी । पचदाणं जत्थि, एकक्खिह जदाणविरोहादे । बभवोअेदे सुगमे । मिच्छत्तस्स पंचो चउमिहो । अवसेसाणं सादि-अनुवो, अनुववधिसादे ।

मणुसाउअस्स मिच्छाइदि-सासपसम्मादिहीसु पंचो सेत्थ-परोदओ । असंपदसम्मा दिहीसु परोदओ । सम्मत्थ पित्तो, एगसमणं बंधुवरमामावादे । पन्चया ओपसिद्धा ।

मरकगति और मारकानुपूर्विक वैक्रियिक, वैक्रियिकमिध और औत्तारिकमिध और कामज प्रत्यय नहीं हैं क्योंकि अपपातकालमें इनके बन्धका अभाव है । एकन्द्रिय, आताप और स्वावरक वैक्रियिकप्रययोग प्रत्यय कम करना चाहिये । द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय अनुरिन्द्रिय सूक्ष्म अपपात और साधारण शरीरक वैक्रियिक और वैक्रियिकमिध प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, देश और मारकियोंमें इनके बन्धका अभाव है ।

मिष्यात्वका बन्ध चारों गतियोंमें संयुक्त होता है । मनुसकवेद और दुण्डसंस्थानक बन्ध तीन गतियोंसं संयुक्त होता है क्योंकि, इनका साथ देशगतिके बन्धका अभाव है । असंमान्यरूपाटिकासहनन और अपपातक बन्ध दो गतियोंसं संयुक्त होता है क्योंकि, इनका साथ मरक और इय गतिके बन्धका अभाव है । मारकानु और मरकद्विकक बन्ध मरकगतिसं संयुक्त होता है । दोय मरुतियोंका बन्ध तिपगगनिसं संयुक्त होता है । मारकानु मरकद्विक द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय अनुरिन्द्रिय आति सूक्ष्म अपपात और साधारण मरुतियोंक नियंत्र और मनुष्य स्वामी है । मिष्यात्व मनुसकवेद दुण्डसंस्थान और असंमान्यरूपाटिकासहननक स्वामी चारों गतियोंके मिष्याद्वि जीय है । एवेन्द्रिय आताप और स्वावर मरुतियोंक तीन गतियोंके मिष्याद्वि स्वामी है । बन्धाप्यान नहीं है क्योंकि, एक गुणस्थानमें अप्यानका विराय है । बन्धपुच्छत्त सुगम है । मिष्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है । दोय मरुतियोंका सादि व मनुष्य बन्ध होता है क्योंकि, व मनुष्यबन्धी है ।

मनुष्यायुका बन्ध मिष्याद्वि और सामादनसम्प्राद्वि गुणस्थानोंमें स्थाप्य पराद्व होता है । असमयसम्प्राद्वियोंमें उत्तक पराद्व बन्ध होता है । सबत्र निरम्भर बन्ध होता है क्योंकि एक समयमें उत्तक बन्धविनामका अभाव है । प्रत्यय आपस सिद्ध हैं ।

नवरि मिच्छद्द्विदि वेअप्पियमिस्स-कम्मइयपच्चया, साधने येअप्पियमिस्स-भोएत्थियमिस्स-कम्म-
इयपच्चया, जसंइदसम्मादिद्विदि भोएत्थियदुग-वेअप्पियमिस्स-कम्मइय अरिय-पुरिसवेदपच्चया
वववेदव्या, अमुहत्तिस्समासु मनुसाउअ वंघमाणाणं देवासंइदसम्मादिद्विदिमनुवत्तमाओ । व
च हेवेसु पम्मत्तासु अमुहत्तिस्समाओ अरिय, मवपवासिय वाअपेत्तर-ओत्थिसिअसु
अपअत्तमवेवेसु, पेव तासिमुदत्तमाओ । व च वा भोएत्था वा पअत्तमासकूमाइयनिरिक्ख
ममुमा अपअत्तपया संता आउअ वंति, तिरिक्ख-मनुमअपअत्तं मासूप अम्मत्थं तअवाअ
त्तमाओ । मनुमगत्संजुओ । तिअमिच्छद्द्वि-साअमसम्मादिद्विदिअ विरपइअसंइदसम्मादिद्विदिओ
च समी । वंघदाणं सुगम । वंघोअप्पेओ पत्थि, किअहेत्सत्ता वत्तमाअमंइदसंइदवाअमनुव
त्तमाओ । सादि अमुओ वंघो, वसुववंपिआओ ।

देवाउअस्स सअत्थ वओ पओइओ, वंघोअसु उअवंपाअमअंइदतामावाअट्ठाओ ।
मिंतरो, वंतोसुहुत्तेअ विआ वंजुअरमाआओ । सप्पेसिं पि वेअप्पिय-वेअप्पियमिस्स-भोएत्थिय
मिस्स-कम्मइयपच्चया सग-सगोअपअत्ताहिंओ अववेयव्या । देवइसजुओ । तिरिक्ख-मनुसा

विशेष इतना है कि मिच्छाद्वि गुणस्थानमें धैर्यविक्रमिभ और कामज प्रत्ययोंको
साक्षात् गुणस्थानमें धैर्यविक्रमिभ और कामज प्रत्ययोंका तथा असंयत
सम्पद्वि गुणस्थानमें धैर्यविक्रमिभ, धैर्यविक्रमिभ कामज स्वयं और पुरुषके
प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, अशुभ तीन क्षेत्रोंमें मनुष्याशुभे बाधनबाध
के अंतर्गतसम्पद्वि पाय नहीं जाते । और देव पर्याप्तश्रेष्ठ अशुभ तीन क्षेत्रोंमें होती
नहीं है क्योंकि सबमहासी धान्यमत्त और ज्योतिषी अपवाप्तक क्षेत्रोंमें ही वे पाई जाती
हैं । तथा देव मारकी अथवा पर्याप्त नामकमौल्य युक्त तिर्यक व मनुष्य अपवाप्त क्षेत्र
आशुभे बाधते नहीं हैं क्योंकि, तिर्यक और मनुष्य अपवाप्तोंको छोड़कर अन्यत्र वसका
बन्ध पाया नहीं जाता । मनुष्यगतिते संयुक्त बन्ध होता है । तीन गतिधैर्य मिच्छाद्वि
और साक्षात्सम्पद्वि तथा नरकगतिके असंयत सम्पद्वि भी स्वामी है । बन्धाव्याप्त
सुपम है । बन्धम्युच्छेद नहीं है क्योंकि, रूप्यक्षेत्रमें वर्तमान संयतासंयत पाय नहीं
जाते । सादि व मनुष्य बन्ध होता है क्योंकि वह मज्जरन्धी है ।

देवाशुभ संपन्न पओइ वन्ध होता है क्योंकि, वन्ध और उअपके हाथपर कामसे
उसके उअप और वन्धका मात्तमाआव अवस्थित है । निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि
अमृतमूर्तके बिना उसके वन्धविभ्रामअ वन्ध है । समी जीवोंके धैर्यविक्रम, धैर्यविक्रम
मिअ धैर्यविक्रमिभ और कामज प्रत्ययोंको अपने अपने भोअप्रत्ययोंमेंसे कम करना
चाहिये । देवगतिस्संयुक्त वन्ध होता है । तिर्यक और मनुष्य ही स्वामी हैं । बन्धाव्याप्त

बेव सामी । बधद्याण सुगमं । बंधवोऽप्येते गतिं, उवरिं हि बंधुवत्तमादो । सति-असुवो,
अनुवर्धविचात्रो ।

तित्वयरस्स वधो परोइमो, बंधे उअविरोहात्रो । पिरंतरो, एगसमण्य बधुवरमामावात्रो ।
मोपपञ्चणसु वेअविय-वेअवियमिस्स-कम्मइयपञ्चया अवधेअवा । देवगाइसंजुत्ते, किण्ण
ऐस्सियणेअणसु तित्वयरबधामाभेण मणुसगाइमजुवत्तमावात्रो । सामी मणुसा बेव, अण्णत्सा
समवात्रे । बधद्वार्यं गतिं, एअहिं असंजइसम्मादिदिट्ठान्ने भद्याणविरोहात्रो । बंधवोऽप्येते
गतिं, उवरिं पि बधइसमादो । सति-असुवो, अनुवर्धविचात्रो ।

एव बेव पीठ्ठेसाए परूवेअवं । पयिरे तिरिक्खगाइ-तिरिक्खगाइपाओमाण्णपुब्बी-
पीचागोत्तार्यं सासणसम्माइदिमिह सतरो बंधो, सत्तमपुइवीसासणसम्माइदिपो मोत्तण्णत्तेदासिं
सासणेसु पिरतबंधाणुवत्तमादो । न च सत्तमपुइवीपीठ्ठस्सिया सासणसम्माइदिपो अतिव,
तरय किण्णत्तेस्सं मोत्तण्णत्तेस्सामावादो । कथं मिच्छाइहीअ पीठ्ठेस्साए पिरंतरो बंधो ? न,

सुगमं है । बन्धधुच्छेद नहीं है, क्योंकि ऊपर बन्ध पाया जाता है । सति य मनुष्य बन्ध
होता है क्योंकि, वह मनुष्यबन्धी है ।

तीर्थंकर प्रवृत्तिका बन्ध परोक्ष होता है क्योंकि, बन्धके होनेपर उसके लक्ष्यका
विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे उसके बन्धविग्रामका समाप्त
है । भाष्यमन्योमें वैदिकिक, वैदिकिकमिथ और कर्मण प्रत्ययोको कम करना चाहिये ।
देवगतिसेयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, कृष्णछेद्यावाले माण्डिक्योमें तीर्थंकर प्रवृत्तिके
बन्धका समाप्त होनेसे मनुष्यगतिके संयोगका समाप्त है । स्वामी मनुष्य ही है क्योंकि,
अन्य गणियोंक कृष्णछेद्या युक्त जीवोंमें उसके बन्धकी सम्भावना नहीं है । बन्धाध्यात
नहीं है क्योंकि एक असंयतसम्यग्वादि गुणस्थानमें अध्यामका विरोध है । बन्धधुच्छेद
नहीं है क्योंकि, ऊपर ही बन्ध देखा जाता है । सति य मनुष्य बन्ध होता है, क्योंकि, वह
मनुष्यबन्धी है ।

इसी प्रकार ही नील छेद्यामें प्ररूपणा करना चाहिये । विरोध इतना है कि
तिर्यग्गति तिर्यग्गतिप्रयोगानुपूर्वी और नीलगतिका सासादनसम्यग्वादि गुणस्थानमें
सन्तर बन्ध होता है क्योंकि, सत्तम पृथिवीके सासादनसम्यग्वादिषोको छेड़कर बन्ध
इतना सासादनसम्यग्वादिषोमें निरन्तर बन्ध पाया नहीं आता । और सत्तम पृथिवीमें
नीलछेद्यावाले सासादनसम्यग्वादि हैं नहीं क्योंकि यहाँ कृष्णछेद्याको छेड़कर
अन्य छेद्याओंका समाप्त है ।

श्रुत्य—नीलछेद्यामें मिथ्यावादिषोके उतका निरन्तर बन्ध कम होता है ।

तेज-वाउकस्यएसु पीठेस्तेसिएसु तिरिक्खगइदुम-पीचापोदानं विरंतरवपुवत्तमादो । तदियपुडवीए
पीठेस्तेसाए वि संमवादो तित्थयरसंभस्स मज्झुत्ता इव भेरइया वि सामिभो होति चि किम्भ परु
विम्बदे ? तत्थ हेट्ठिमइए पीठेस्तेसासहिणं तित्थयरसंतकम्मियमिच्छाइहीणमुववादाभावादो ।
कुदो ? तरण तित्थे पुडवीए उककत्ताउदंसपादो । य य उककत्ताउत्तसु तित्थयरसंतकम्मिय-
मिच्छाइहीणमुववादो वरिण, तदोवपसाभावादो । तित्थयरसंतकम्मियमिच्छाइहीण भेरइसुववम-
मापार्थ सम्माइहीण व कइउत्तेसं मोत्तूप वण्णत्तेस्साभावादो वा य पीठ-किम्भेस्तेसाए
तित्थयरसंतकम्मिया वरिण ।

एवं कइउत्तेस्साए वि वत्थं । पवति तित्थयरसस मज्झुत्ता इव भेरइया वि सामिभो ।
मज्झु-देवमइसंसुतो वंषो । षोडशएसु एकस्से वि पग्गभो वावणेयप्पो, वेअम्बियदुमोरप्रतिम-
मिस्स-कम्मइयपग्गवार्थ भावादो । ओराठियदुम-मज्झुत्ताइदुम-वग्गविसइसंपडवार्थ वसंवर
सम्मादिट्ठिमिह वेअम्बियमिस्स-कम्मइयपग्गवा पावणेयप्पा । तिरिक्खगइपाओग्गागुप्पुवीए

समाधान—यहाँ क्योंकि तेज व वायु क्षयिक नीलछेस्पावाळे जीबोंमें तिर्पंगति
हिक और नीलमोवक्क मिरत्तर वग्ग पाया जाता है ।

शंभु—तृतीय पृथिवीमें नीलछेस्पावाळे मी सम्मावना होनेसे तीर्थंकर प्रकृतिके
वग्गके मनुष्योंके समान नारकी मी स्वामी होते हैं ऐसा क्यों नहीं कहते ?

समाधान—ऐसा नहीं है क्योंकि, वहाँ नीलछेस्पा युक्त अघस्तम इन्द्रकर्म
तीर्थंकर प्रकृतिके सत्त्ववाळे मिष्पाइयिपोंकी उत्पत्तिका समाव है । इसका कारण यह है
कि वहाँ उस पृथिवीकी उत्कृष्ट वायु देखी जाती है । और उत्कृष्ट वायुवाळे जीबोंमें
तीर्थंकरसंतकर्मिक मिष्पाइयिपोंका उत्पाद् है नहीं क्योंकि, ऐसा ठगेश नहीं है । अथवा
माटिपोंमें उत्पन्न होनेवाळे तीर्थंकरसंतकर्मिक मिष्पाइयि जीबोंके सम्पद्इयिपोंके समान
कापोत छेस्पावाळे छेइकर वग्ग छेस्पाभाक्क समाव होनेसे नील और कृष्ण छेस्पामें
तीर्थंकरकी सत्तावाळे जीव नहीं होते ।

इसी प्रकार कापोतछेस्पामें मी कइना चाहिये । विशेषता इसकी है कि तीर्थंकर
प्रकृतिके मनुष्योंके समान नारकी मी स्वामी हैं । मनुष्य और देव गतिसे संयुक्त वग्ग
होता है । भोगप्रत्यर्पमेंसे एक मी प्रत्येक कम नहीं करना चाहिये क्योंकि वैदिकविक्रिक,
औदारिकमिध और कर्मज प्रत्यर्पका पदो सम्भाव है । औदारिकविक्रिक, मनुष्यगतिविक्रिक
और वज्रवंसंहननके धर्मवत्सम्पद्इयि गुणस्थानमें वैदिकविक्रिमिध और कर्मज प्रत्यर्पोंको
कम नहीं करना चाहिये । निर्यग्गतिमायोग्यानुपूर्विका पूर्वमें वग्ग और पद्मान् उद्ग

धूधो पुन्वमुदओ पच्छ वोष्मिन्जदि, सासपसम्मादिहि-असबदसम्मादिहीसु बंधोदयवोन्हेदुष
छमादो । अण्णो वि जह मेदो अत्थि सो वि भित्ति यत्तण्णो ।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय
सादावेदणीय-चउसजलण पुरिसवेद-हस्स रदि मय दुगुछा-देवगह पचि-
दियजादिचेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-वेउव्विय-
सरीरअगोवग-वण्ण-गध रस-फास-देवगहपाओग्गाणुपुब्बी-अगुरुव-
लहुव उवघाद-परघादुस्सास-पसत्थविहायगह-तस-चादर पच्चत्त-पत्तेय-
सरीर-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर आदेज्ज जसकित्ति णिमिणुच्चागोद-पच
तराइयाण को वधो को अवधो ? ॥ २५९ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अण्णमत्तसजदा वधा । एदे वधा,
अवंधा णत्थि ॥ २६० ॥

देवगह-वेउव्वियदुगाण पुन्वमुदओ पच्छ बंधो वोष्मिन्जदि । अवसेसाणं पयहीज-

पुष्पिछद होता है क्योंकि, सासाजससम्पगदि और असयतसम्पगदि गुणस्थानोंमें क्रमसे
उत्तेक वच और उदयका पुष्पछेद पाया जाता है । अण्ण मी यदि अह ई सो ठसे मी
विचारकर कहा चाहिये ।

तेज और पद्म लेख्यावल जीर्णोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छद दशनावरणीय, साता-
वेदनीय, चार सम्बलन, पुरावेद, हास्य, रति, मय, दुगुप्सा, देवगति, पंचेन्द्रियमाति,
वैकियिक, तैजस व कर्मण शरीर, समचतुरससंस्थान, वैकियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध,
रस, स्पृश, देवगतिप्रायोगमानुपूर्वी, अगुरुल्लु, उपघात, परघात, उष्ण्वास, प्रशस्तविहायोगति,
धस, पादर, पर्याप्त, प्रसेकशरीर, स्थिर, द्युम, सुभग, सुस्सर, आदय, यक्षकीर्ति, निर्माण,
उपगोन और पांच अन्तराय, इनका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २५९ ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्यावृत्ति छेद अग्रमत्तसंयत तक वन्धक है । ये वन्धक हैं, अवन्धक नहीं हैं
॥ २६० ॥

देवगतिविक्र और वैकियिकविक्र पूर्वमें उत्पन्न और पश्चात् वच पुष्पिछद होता

सुदमाशो बंधो पुष्पं पञ्च वा बोधिमणो सि परिकृता जतिभिः, एतस्य पंचोदयवोच्छेदाभावात् ।
 पंचपात्रावरणीय-चर्दसपात्रावरणीय-पंचिदियमादि-तेजा-कर्मण्यसरीर-वण्य-गण-रस-सम-
 भगुरुकलद्रुज-सप्त-बाह्व-पञ्च-विर-सुह-विमिव-पंचंतराद्र्याणं सोदयो बंधो, पुनोदयच्छरो ।
 निद्रा पयस्य-सादवेदणीय चतुर्मज्जण-पुरिसवेद-इत्य-रति-मय-दुर्गुण-समचउरसस्य-पसर-
 विहाय-सुस्मरणं मय्यमुज्ज्वलेषु सोदय-परोक्षो बंधो, चतुर्वोदयच्छरो । देवगण-देवगण-
 पात्रोपाय-पुष्पी-वेदप्रियमस्ति-वेदप्रियमपीर-मगोपमाणं बंधो परोक्षो, सोदय-बंधनिरोद्धरो ।
 त्वपाद-परपाद उच्छास-पत्तयसरीर-मिच्छाद्वि-सासपसम्माद्वि असंजदसम्मादिद्वि-सोदय-
 परोक्षो, अपञ्चकच्छे उदयामात्रो । ससेषु पंचो सोदयो, तेसिमात्र-चछाद्य-जमात्रो ।
 सुभग-आदे-त्र-चसकिरीषं मिच्छाद्वि-पुष्टि-आव असंजदसम्माद्वि-चि बंधो सोदय-परोक्षो ।
 त्वरि सोदयो भव, पञ्चवन्सुदयामात्रो । उच्छासोदयस्य मिच्छाद्वि-पुष्टि-आव संजदसंजद-
 सि बंधो सोदय-परोक्षो । त्वरि सोदयो, पञ्चवन्सुदयामात्रो ।

पंचपात्रावरणीय-चर्दसपात्रावरणीय-चतुर्मज्जण-मय-दुर्गुण-देवगण-वेदप्रियमदुम-तेजा-

है । शेष मण्डलिकोंके उदयसे बन्ध पूर्वमे या पश्चात् स्फुटित होता है यह पटीला नहीं है, क्योंकि, यहाँ उनके बन्ध और उदयक स्पष्टोदयक अभाव है ।

पांच कालावरणीय चार दर्शनावरणीय पंचेन्द्रिय जाति तैजस व कर्मण्यसरीर, वण्य गण रस स्यर्षो भगुरुकलद्रुज सप्त बाह्व पर्याप्त स्थिर शुभ निर्मोच और पांच अस्तारवका स्थाय्य बन्ध हाता है क्योंकि, ये यबोधपी हैं । निद्रा प्रथमा साता-
 वेदनीय चार संस्मरण पुरुषवेद हास्य रति मय सुगुप्ता समचतुरस्रसंस्मान
 मद्यस्तनिहापागति और सुस्वरूप सप्त शुक्लस्थानोंमें स्थाय्य-परोक्ष बन्ध होता है
 क्योंकि, ये भगुबोधपी हैं । देवगति दूषगतिमायाभ्यानुपूर्वी, वैदिकिकशरीर और वैदिकिक
 शरीरयोगोपायका बन्ध परोक्ष होता है क्योंकि, अपने उदयक साथ इसके बन्धका विरोध
 है । त्वपाद परपाद उच्छास और मयैकशरीरका बन्ध मिच्छाद्वि, सासपसम्माद्वि
 और असंजदसम्माद्विओंके स्वेत्य परोक्ष होता है क्योंकि, अपर्याप्तकायमें इनके
 उदयका अभाव है । शेष शुक्लस्थानोंमें स्वेत्य बन्ध होता है क्योंकि उनके अपर्याप्त
 कायका अभाव है । सुभग जात्रेय और पशानीर्तिका मिच्छाद्विसे छेकर असंजद
 सम्माद्वि शुभस्थान तक स्वेत्य परोक्ष बन्ध होता है । ऊपर स्वेत्य ही बन्ध होता है
 क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष मण्डलिकोंके उदयका अभाव है । उच्छासोदयका मिच्छाद्विसे छेकर
 सजदसंजद तक स्वेत्य परोक्ष बन्ध होता है । ऊपर स्वेत्य ही बन्ध होता है क्योंकि,
 यहाँ प्रतिपक्ष मण्डलिकोंके उदयका अभाव है ।

पांच कालावरणीय छह दर्शनावरणीय चार संस्मरण मय सुगुप्ता देवगति

कम्माइयसरीर-बण्ण गघ-रस-फस्स-अगुस्सत्तुम् उवपाद-परषादुस्सास-यादर-पग्गत्त-पत्तयसरीर
 णिमिण-पघंतराह्याण वधो णिरंतरो, एत्थ धुववचिचादो । सादवेदणीय-इस्स-रदि यिर-मुह
 जसकिणीण मि-छाह्मिप्पदुडि आत्त पमत्तसंजदा चि वंधो सातरो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्ख
 पयडीण वंधामावादो । पचिदियवादि तसणामाण मिच्छाह्मिप्पि वंधो सांतर-णिरंतरो, तिरिक्खेसु
 सणक्कुमारदिदेवेसु च णिरंतस्सपुयत्तमादो । उवरि णिरंतरो, पडिवक्खपयडीण वंधामावादो ।
 पुरिसवेदस्स मिच्छाह्मि-सासणसम्मादिह्मि सुत्तरो, एगसमण णि वधुवरसुषत्तमादो । उवरि
 णिरंतरो, पडिवक्खपयडिद्वयमावादो ।

पञ्चमा सुगमा, ओषपञ्चण्हितो विसेसामावादो । जवरि देवगह-वेउध्वियदुगाण
 मिच्छाह्मि-सासणसम्मादिह्मि सु ओरात्तिपमिस्स-वेउध्वियदुग-कम्माइयकयबोगपञ्चया अव
 वेयत्था, दस-वेरप्पसु अपञ्चत्तिरिक्ख-मणुसेसु च एदासि वंधामावादो । सम्मामिच्छाह्मि
 वेउध्वियकयबोगपञ्चओ, असददस्समादिह्मि वेउध्वियदुगपञ्चओ अववेदम्हो । मिच्छ-
 ह्मि-सासणसम्मादिह्मि सणपयडीण णि ओरात्तिपमिस्सपञ्चओ अववेयत्तो, तिरिक्ख-मणुस

वैकल्पिकद्विक तैजस च कर्मण शरीर, वर्य गन्ध रस स्पर्श मगुस्सत्तु उवपात
 परपात उक्कवास वात्त पर्याप्त प्रत्येकशरीर, मित्रांश और पांच मन्तरायका बन्ध
 निरन्तर होता है क्योंकि यहाँ ये छहबन्धी हैं । छातावेदनीय हास्य रति स्थिर शुभ
 और वराकीर्तिका मिष्याहृदिसे छेकर प्रमत्तसंयतो तक खान्तर बन्ध होता है । ऊपर
 निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । पंचन्द्रिय
 जाति और बस नामकर्मका मिष्याहृदि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि
 तिर्यंश और सनत्तुमापदि देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध
 होता है क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । पुदपवेदका मिष्याहृदि
 और सासात्तनसम्पगदि गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है क्योंकि एक समयसे भी
 उच्चका बन्धविधान पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष
 प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम है क्योंकि बोधप्रत्ययोंसे कोई विशेषता नहीं है । मेव इतना है कि
 वैकल्पिक और वैकल्पिकद्विक मिष्याहृदि और सासात्तनसम्पगदि गुणस्थानोंमें आत्ता
 रिकमिध वैकल्पिकद्विक और कर्मण कायपाण प्रत्ययोंका कम करना चाहिये क्योंकि,
 वेच नात्तियों तथा अपर्णात तिर्यंश व मनुष्योंमें भी इनके बन्धका अभाव है । सम्प
 गिष्याहृदि गुणस्थानमें वैकल्पिक कायपाण प्रत्यय तथा असंयतसम्पगदि गुणस्थानमें
 वैकल्पिक और वैकल्पिकमिध प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । मिष्याहृदि और सासात्तन
 सम्पगदि गुणस्थानोंमें सभी प्रकृतियोंके औदारिकमिध प्रत्यय कम करना चाहिये

मिष्मद्वि-सामयमम्मादिद्विजमप-जतकले सुहलेम्माणममावादे ।

पथभाषावरणीय-सदसपावरणीय-सादवेदणीय चठसंभ्रतय पुरिसवेद-हस्स-रदि मय-
हुमुंस्स-पंषिदिय-तेवा-कम्मइय समचठरससंठाव-वण्णचठक्क-अगुरुवत्तुवचठक्क-पसरव-
विह्वयगदि-मिर-सुमग-सुस्सर अदेन्ज-असकित्ति विमिय-पचतराइयाय मिच्छअट्ठि-सासणसम्मा-
दिहीसु ँपो तियइसंजुत्तो, भिरयण्ण अमावादो । सम्मामिच्छअट्ठि-असअदसम्मादिहीसु
दुयअजुत्तो, भिरय तिरिस्सगअममावादो । उवरिमेसु देवगइसंजुत्तो, तस्यअण्णं ँपा
मावादो । देवअवेअभियदुगअं देवगअंजुत्तो, अण्णगइहि ँपसिरोहादो । उव्वालोदस्स
मिच्छअट्ठि-सासणसम्मादिहि-सम्मामिच्छअट्ठि-असअदसम्मादिहीसु देव-अणुमयइसंजुत्तो ।
उवरि देवगइसंजुत्तो ँपो ।

सध्यासि पयदीनं तिगमिच्छादिष्टि-सामयसम्मादिष्टि सम्मामिच्छादिष्टि-अमयद
सम्मादिष्टिणे सामी, निरपसु तेष्टेस्मादिष्टिहतेस्मात्वादेशे । दुगइसप्रदामयदा, मनुमगदमंयदा

कपीकि, तिरेख व ममुप्य मिथ्यादि एवं सासादनसम्पदशिषोके कप्यातकालमे शुभ
लेख्यामोका भमाव है ।

पाँच ज्ञानावरणीय छह दशनावरणीय सातावेदनीय चार संख्यसम पुण्यवेद
हास्य यनि मय सुगुप्ता पंचमित्र्य जाति तैत्तिरीय च कर्मज शरीर समचतुरस्रसंस्थान
ब्रह्मादिक चार, मगुरास्यु ब्राह्मिक चार, प्रशस्त्विहापोमति स्थिर, सुमय सुस्वर भाव्य
पञ्चाक्षरि निमाज भीर पाँच मन्तरायका मिथ्यादृष्टि व सासाङ्गसम्पद्दृष्टि गुणस्वान्तोम
तीन गतिपोंमे संयुक्त बन्ध हाता है क्योंकि वहाँ मरकगतिका समाप्त है। सम्पत्तिमिथ्या
दृष्टि भीर असंयतसम्पद्दृष्टि गुणस्वान्तोम दो गतिपोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि वहाँ
मरकगति भीर त्रियगगतिका समाप्त है। अपरिम गुणस्वान्तोम द्वेषगति संयुक्त बन्ध होता
है क्योंकि वहाँ भय गतिपोंके बन्धका समाप्त है। द्वेषगतिमिथ्या भीर वैदिकमिथ्यादृष्टि
द्वेषगति संयुक्त बन्ध हाता है क्योंकि, भय गतिपोंके साथ इनके बन्धका विरोध है।
उद्यमानका मिथ्यादृष्टि, सासाङ्गसम्पद्दृष्टि, सम्पत्तिमिथ्यादृष्टि भीर असंयतसम्पद्दृष्टि
गुणस्वान्तोम बंध व मनुष्य गति संयुक्त बन्ध हाता है। ऊपर द्वागतिसे संयुक्त बन्ध
हाता है।

सब ग्रन्थियों के तीन गतिषोंके मिथ्यादृष्टि, नास्तान्नासम्प्रादृष्टि, सम्प्रागिमिथ्या दृष्टि और असंपन्नसम्प्रादृष्टि ह्यामी हैं क्योंकि, गार्हकियोंमें तज्ज्ञानरवादि शुभ संख्यामीश ब्रह्माप है। हा गतिषोंके संपन्नतापत और मनुष्यगतिके संपन्न ह्यामी हैं।

सामी । पत्रि वेत्तव्यचतुष्कस्स तिरिक्ख-मणुसगइमिच्छाइहि-सासणसम्माइहि-सम्मा
मिच्छाइहि-असंजइसम्माइहि-संजइसजइ मणुसगइसजइ च सामी । वषट्ठणं सुगमं ।
पंचवोच्छेदो पत्ति, 'अवषा पत्ति' चि वषणादा । ध्रुववर्षीणं मिच्छाइहिमि पंचो
चत्तविहो । अण्णत्थ तिविहो, ध्रुवाभावादे । अवसेसाण पयवीण सव्वरय सादि-अदुवो,
अदुववर्षिच्छो ।

घेद्वणी ओघ ॥ २६१ ॥

त अहा—अपंतानुवर्षिचतुष्कस्स षडोद्या समं घोच्छिण्णा^१, सासणसम्मा
दिहिमि दोण वो छेदुवल्लादो । तिरिक्खगणाओमाणुप्पवीए पुणो उदओ चैय पत्ति,
तेत्तेस्साहियारदो । सैसाणं पयवीण पंचवोच्छेदो चैय, उदयवोच्छेदमायादो । धीणगिदित्तिय
अपंतानुवर्षिचतुष्कित्तिवेदाण सोदय-परोदओ । तिरिक्खाठ तिरिक्खगइदुग-अउसअणं-अउसं-
अउस-उन्नोव-अणसत्थविहायगइ-दूमग-गुस्सर-अणादेव-णीचागोदाणं दोसु वि गुणट्ठाणेषु पंचो

विशयता इतनी है कि वैकल्पिकचतुष्कके तिर्यक् और मनुष्य गतिके मिष्यावृष्टि सासादन
सम्पन्नवृष्टि, सम्पत्तिमिष्यावृष्टि, असंपत्तिसम्पन्नवृष्टि और संपत्तासंपत्त, तथा मनुष्यगतिके संपत्त
स्वामी है । वषट्ठध्यान सुगम है । वषट्ठ्युच्छेद नहीं है क्योंकि अवषट्ठ नहीं है
ऐसा स्वयं निर्दिष्ट है । ध्रुववर्षी प्रकृतियोंका मिष्यावृष्टि गुणस्थानमें यातें प्रकारका
वषट्ठ होता है । वषट्ठ गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका वषट्ठ होता है क्योंकि, यहाँ ध्रुव
वषट्ठका समावेश है । दोष प्रकृतियोंका सर्वत्र सादि व अष्टव वषट्ठ होता है, क्योंकि ये
अष्टववर्षी हैं ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्रकृयणा ओषके समान है ॥ २६१ ॥

यह इस प्रकार है—अपंतानुवर्षिचतुष्कका पञ्च और उदय दोनों साधमें
प्युच्छिन्न होते हैं क्योंकि सासादनसम्पन्नवृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका प्युच्छेद पाया
जाता है । परन्तु तिर्यग्गतियोग्यानुपूर्विका यहाँ उदय ही नहीं है क्योंकि, तेजोसंख्याका
अधिकार है । दोष प्रकृतियोंका वषट्ठ वषट्ठ्युच्छेद ही है क्योंकि, उनके उदयप्युच्छेदका
अभाव है । स्थानपुष्टिअथ अपंतानुवर्षिचतुष्क और क्षतिवृत्त स्वाद्य पराद्य वषट्ठ होता
है । तिर्यगायु तिर्यगतिवृत्ति, चार संस्थान चार संहृतन उद्यात अग्रस्तविहायोगतित्ति
सुमंग गुस्सर, अनादेव और मीनगोनन दोनों ही गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय

१ कीडु वेत्तिण्णा इति पाठ ।

२ अ अग्रतो - अग्रदृष्ट्याद्य च अग्रदृष्ट्या अग्रतो अग्रदृष्ट्याद्यच अग्रदृष्ट्या इति पाठ ।

सोदय-परोद्गमो । भीमगिद्धितिय-मपतागुषधिवठउत्क तिरिक्खाउवाप वंघो पिरतरो । सेरापं
सांतरो एयमएण वि पधुवरसुवठमादो । सप्पपयद्दीपं मिच्छाद्दि-सासपमम्मादिहीसु
चउवण्णैगूमेववास पच्चया, ओरुत्तेयमिस्सपच्चयामादादो । पवरि तिरिक्खाउवस्स ओरात्तिप-
दुग-वेठप्पियमिस्स-कम्मइय-पधुंसयवेदपच्चया अवणैय्वा, प-वत्तदेवे मोसूण अप्परव
वभामादादो । तिरिक्खगइदुगु-वेण चउसत्थण-चउसपइण अप्पसत्त्वविहायगइ-दुमग-नुस्सर
अणदेव-वीणागोदाण आरात्तिपदुग-पधुमयवेदपच्चया अवणैय्वा, तिरिक्ख-मणुस्से मोसूण
देवापमेदमि प-वत्ताप-वत्तापत्तासु पधुवठमादो ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुउवाप वंघो तिरिक्खगइसंभुत्ता । चउसत्थण-चउसपइण
अप्पसत्त्वविहायगइ-दुमग-नुस्सर अणदेव-वीणागोदाण दुगइसंभुत्तो, पिरय-देवगईणममावादा ।
भीमगिद्धितिय मपतागुषधिवठउत्किस्सवेदाण वंघा तिगइसंभुत्ते, पिरयगईण वमावादा ।
तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगु-वेण-चउसत्थण-चउसपइण-अप्पसत्त्वविहायगइ-दुमग-नुस्सर-
अणदेव-वीणागोदाण वपस्स देवा वेव सामी, सुइत्तिवेत्तिस्सपतिरिक्ख-मणुस्सेसु एदमि

पद्य होता है । स्थानप्रतिपद्य समस्तानुषधियतुष्क चार तिपगायुक्त वद्य निरन्तर
होता है । चार प्रकृतियाँ सांस्तर वध्य होता है क्योंकि एक समयसे भी उमका
वध्यविभाम पाया जाता है । रुच मरुतिर्योक्त मिथ्यादृष्टि और सात्म-जनमम्यगद्वि
गुणस्थानाम कमसे शीघ्र और उमेवास प्रत्यय है क्योंकि आचारिकमिथ प्रत्ययका
यहाँ भभाव है । विनाय इतना है कि तिर्यगायुक्त आचारिकद्विक वैतिपिद्धमिथ व काम्य
काययोग चार मनुष्यकषद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये क्योंकि पर्याप्त देवोंका
छोड़कर अम्यव उमक वध्यका भभाव है । तिर्यगातिद्विक, उपात चार संस्थान चार
संहसन अमशान्तिविदायांगति दुमग नुस्सर अनादय और नीयगावक आचारिकद्विक
एव मनुष्यकषद प्रत्ययको कम करना चाहिये क्योंकि, तिर्यक और मनुष्योंका छोड़कर
क्योंकि पयाण भाग अपवात अउस्थामे हमका वध्य पाया जाता है ।

तिर्यगायु तिपगानिद्विक और उपातका वध्य तिर्यगातिस संयुक्त होता है । चार
संस्थान चार संहसन अमशान्तिविदायांगति दुमग नुस्सर, अनादय और नीयगावक
वध्य वा गतिपाम संयुक्त होता है क्योंकि परक और वध्य गतिक माय हमक वध्यका
भभाव है । स्थानप्रतिपद्य समस्तानुषधियतुष्क चार त्रीवद्वका वध्य तीन गतिपास
संयुक्त होता है क्योंकि यहाँ मरकगतिक वध्यका भभाव है । तिपगायु तिपगानिद्विक,
उपात चार संस्थान चार संहसन अमशान्तिविदायांगति दुमग नुस्सर अनादय और नीय
गावक वध्यक वध्य ही रहानी है क्योंकि दुम तीन संहवाकाय निपद्य व मनुष्योंमें हमक

बधामात्रादौ । यीजगिद्वितीय अणतापुर्वचिचउद्विद्विद्वेदाण तिगइमिच्छाइद्वि-सासणसम्मादिद्विणो
सामी, पिरयगइए सुहतिरेस्सामात्राणे । पधच्छाण पययोच्छिण्णहाण च सुगमं । धुवधधीण
मिच्छाइद्विद्वि चउद्विद्वे बधो । सासणे दुविद्वे, अणाइ धुवामात्रादौ । सेसाण पयधीण बधो
सय्यस्य सादि अरुवो ।

असादावेदणीयमोघ ॥ २६२ ॥

देसामासियमुत्तपदेण सुददत्थपरुषणा कीरदे । तं जहा—अजसकिसीए पुम्बसुदमा
पच्छ बधो बोचिच्छज्जदि, पमत्तसज्जदसम्मादिद्वीसु पधोदयवोच्छेदुत्तमात्रे । असादावेदणीय
अरदि-सोग अधिरसुहाण पुष्य बधो पच्छ उदभो बोचिच्छज्जदि, तहोवत्तमादौ । अधिर
असुहाणं पधो सोदभो, धुवोदयत्तादौ । अजसकिसीए मिच्छाइद्विण्णद्वि जाब असंजदसम्माइद्वि
वि सोदय परोदभो । उवरि सोदभा चेव । असादावेदणीय अरदि-सोगाण सोदय-परोदभो,
सम्बरय अनुसोदयत्तादौ । मान्ते पधो, सध्यासिमदामिमिगममाण वि सम्मगुणद्विणेषु
पधुवरसुवत्तमादौ । पच्छया सुगमा, ओधपच्छण्णदिनो विसेसामात्रादौ । गवरि मिच्छाइद्वि

बधका अमाय है । स्थानभूद्विद्वय अनन्तापुर्वचिचउद्विद्वेदाण तीर अविद्वेदा नीम गतिपोंके
मिच्छाइद्वि तीर मातावनगम्यगद्वि स्वाणी है क्योंकि मरकगतिमें धुम तीन मरकामोंका
अमाय है । पच्छाभान तीर पच्छयुच्छिउध-भान सुगम है । धुवबन्धी प्रवृत्तिपोंका
मिच्छाइद्वि गुणस्थानम था । प्रकाशका बन्ध होता है । सामाद्वन गुणस्थानमें दो प्रकारका
बन्ध होता है क्योंकि पानी प्रकानि तीर भुद्व पच्छका अमाय है । दोय प्रवृत्तिपोंका बन्ध
मधय सादि है अमुय होता है ।

असादावेदनीयकी प्ररुपणा मोषके सुमान है ॥ २६२ ॥

इस दशमशक मूलमें सूचन न रही प्ररुपणा करने है । यह इस प्रकार है—
अपवाचीर्तिका पूर्वमें उदय भार पछान् पच्छ धुच्छिउध होता है क्योंकि, प्रमत्त भी
भरतपत्तमम्यगद्वि गुणस्थानामें प्रमत्त उसके पच्छ प उदयका धुच्छेद पाया जाता है ।
अमातापदनीय अरदि शाप मास्यर तीर अनुमका पूयम पच्छ प पछान् उदय
धुच्छिउध होता है क्योंकि, पैसा पछा जाता है । अम्यर तीर अनुमका पच्छ स्वादय
होता है क्योंकि प धुवोदयी है । अपवाचीर्तिका मिच्छाइद्वि मच्छ अमपत्तमम्यगद्वि
तक म्योदय परादय बन्ध होता है । ऊपर स्वादय ही पच्छ होता है । असातापदनीय
अरदि भार गावका स्वादय परादय पच्छा जाता है । क्योंकि, ये सर्वत्र मध्योदधी है ।
मास्यर पच्छ होता है क्योंकि इन सबका एक समयमें ही सब गुणस्थानोंमें पच्छयिधाम
पाया जाता है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि मास्यम्ययोंन यहाँ कार मर नहीं है । पिरयना

सासजसम्मादिद्वीसु बोरात्त्वमिस्सपप्पञ्चओ भवणेयस्यो । तिगइसंठुत्थे पचो मिच्छइहि-
सासजसम्मादिद्वीसु । सम्मामिच्छइहि असंजइसम्मादिद्वीसु हुगइसंठुत्थे । उपरि देसगइसंठुत्थे ।
तिगइमिच्छइहि-सासजसम्मादिद्वीसु-सम्मामिच्छइहि-मसजइसम्मादिद्वीसो, हुगइसंजइसंठुत्थे,
मणुगइसंजइसंठुत्थे च समी । मिच्छइहिपुत्थि जाव पमत्तसंठुत्थे वि बडाव । पचो-उत्थे-उत्थे
सुपमं । सादि-अनुवो पचो, अनुवर्षितादो ।

मिच्छत्त-णुसयवेद-एइदियजादि-हुंडसठाण-असपत्तसेवट्टसप
इण आदाव-यावरणामाण को वधो को अवंधो ? ॥ २६३ ॥

सुपमं ।

मिच्छइद्वी वंधा । एदे वधा, अवसेसा-अवधा ॥ २६४ ॥

मिच्छत्तस्य वंधाया सम योच्छिज्जा । णुंसयवेद-हुंडसठाण-असपत्तसेवट्टसप-
इण-आदाव-यावरणामाण पचो-उत्थे । वेव, उदयुभापादो । मिच्छत्तस्य सोदण्य पचो,
अवधामे वंधा-उत्थे-उत्थे । असयवेद-हुंडसठाण-असपत्तसेवट्टसप-इण-एइदिय-आदाव-यावरण

इतनी है कि मिष्पाइहि और सासात्तसम्यगइहि गुणस्थानोंमें भौतिकमिष्ट प्रत्यय कम
करवा चाहिये । मिष्पाइहि और सासात्तसम्यगइहि गुणस्थानोंमें ठनक बन्ध तीन गतिपोंसे
संयुक्त होता है । सम्यगिमिष्पाइहि और असंयतसम्यगइहि गुणस्थानोंमें दो गतिपोंसे संयुक्त
बन्ध होता है । ऊपर ठनक वेवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । तीन गतिपोंके मिष्पाइहि, सासा-
त्तसम्यगइहि, सम्यगिमिष्पाइहि और असंयतसम्यगइहि, दो गतिपोंके संपत्तसंयत तथा
मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं । मिष्पाइहिसे केकर प्रमत्तसंयत तक बंधाव्याप्त है ।
समन्तुच्छवस्थान सुगम है । सावि य अमुक बन्ध होता है क्योंकि, वे अमुकबन्धी हैं ।

मिष्पात्त, नपुंसकवेद एकेन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसुपाटिकसंज्ञन,
प्राप्त और स्थावर नामकर्मका क्षेत्र बन्धक और क्षेत्र बनचक है ? ॥ २६३ ॥

यह सब सुगम है ।

मिष्पाइहि बन्धक है । ये बन्धक है, क्षेत्र अपन्धक है ॥ २६४ ॥

मिष्पात्तका बन्ध और उदय दोनों साथ युष्मिज्ज होते हैं । नपुंसकवेद हुण्ड
संस्थान असंप्राप्तसुपाटिकसंज्ञन एकेन्द्रिय जाताय और स्थावर नामकर्मका केवळ
बन्धनुष्मिज्ज ही है, क्योंकि, यही इनके उदयका अभाव है । मिष्पात्तका लोचसे बन्ध
होता है क्योंकि उदयके अभावमें उदयका बन्ध पाया नहीं जाता । नपुंसकवेद हुण्ड-
संस्थान, असंप्राप्तसुपाटिकसंज्ञन एकेन्द्रिय जाताय और स्थावरका बन्ध परोक्ष

पयो परोदयो, पदासि देवेषु उदयामात्रादौ । मिच्छत्तवधो गिरतरो, ध्रुववधित्वादौ ।
अण्यपयडीण सान्तरो, गगनमण वि बहुवसुवन्मादौ । पञ्चया सुगमा, औषपञ्चपदितो
विसेसाभावादौ । पञ्चि ओराठियमिस्सपञ्चयो अवषेयम्भो, तत्त्व सुहलेस्साण अमावादौ ।
पउसयवेद-हुइसत्ताण असपत्तमेवइसपइण-गइरिय-आदाय यावरण ओराठियदुग-कम्माइय
पउसयवेदपञ्चया अवणेष्व्वा । मिच्छत्तवधो तिगइसंहुतो । पउसयवेद-हुइसत्ताण असपत्तमेवइ
सपइणाण दुगइसंहुतो, देवगइण अमावादौ । पइरिय-आदाय यावरणं तिरिक्खगइसहुतो ।
मिच्छत्तवधस्स तिगइमिच्छाइठिणो सामी । अवसेमाण पयडीण देवा पेव सामी । पचद्वार्य
पंचवोच्छिण्णद्वार्यं च सुगम । मिच्छत्तस्स वधो पउप्पिहो, ध्रुववधित्वादौ । सेमार्यं सादि-अहुवो
अहुववधित्वादौ ।

अपञ्चकस्त्राणावरणीयमोघ ॥ २६५ ॥

एदं देसामामियमुत्त । तणेदेण सुइदरपपरूवणा करिद — अपञ्चकस्त्राणावरणीयस्स
पपोदया समं वोच्छिज्जति असंजदसम्मादिट्ठिदि तदुमयवोच्छेदुषठमादौ । अवसेमाण
पंचवोच्छेदो पेव । अपञ्चकस्त्राणपउकस्स वधो मोदय-परोदयो । मणुमयइदुगोराठियदुग

हाता है क्योंकि, इनका वधोके उद्दयामाय है । मिष्याप्यत्र बन्ध निरन्तर होता है
क्योंकि, वह मुक्कवर्गी है । अन्य प्रह्नितियोंका सास्तर बन्ध होता है क्योंकि एक समयसे
ही उनका बन्धविधायक पाया जाता है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि मोघप्रत्ययोंमें कार्य मेव
महीं है । बिना इतना है कि यहाँ भीदार्तिकमिध प्रत्ययका कम करना चाहिय क्योंकि उसमें
शुभ सेदशाका अभाव है । मनुमकपेइ हुइसत्ताण अमंमाणस्त्राणदिक्खमंहेमन पणेन्द्रिय
माताय भीर स्वावरक भीदार्तिकटिक, कामण भीर मनुमकपइ प्रत्ययोंको कम करना चाहिय ।
मिष्याप्यत्र बन्ध तीन गतिपोंसं संयुक्त हाता है । मनुमकवइ हुइसत्ताण भीर अमंमाण
स्त्राणदिक्खमंहेमनका दो गतिपोंसं संयुक्त बन्ध हाता है क्योंकि, हमक माय इषगनिक
बन्धका अभाव है । एकत्रिय माताय भीर स्वावरक नियमातिम संयुक्त बन्ध हाता है ।
मिष्याप्यत्र बन्ध तीन गतिपोंसं मिष्यापि स्वामी है । दोय प्रह्नितियों वध ही स्वामी
है । पञ्चाप्याय भीर बन्धपुच्छिण्णद्वार्य सुगम है । मिष्याप्यत्र बन्ध चारों प्रकारका
हाता है, क्योंकि, यह मुक्कवर्गी है । शय प्रह्नितियोंका सादि च अमुय बन्ध हाता है
क्योंकि, व मुक्कवर्गी है ।

अत्रान्धानावरणीयकी प्ररूपणा भाषक समान है ॥ २६५ ॥

यह देनामनाक मूत्र इ इमंतिव इमं मूषित मयही प्ररूपणा करत है—
अप्रत्याख्यामावरणीयका बन्ध भीर उद्दय दोनों मायमें स्पुच्छिण्ण होने है क्योंकि
अमंयतमयगदि गुणम्यानमें उन दोनोंच स्पुच्छे पाया जाता है । दोय प्रह्नितियों
बन्धस्पुच्छ ही है । अप्रत्याख्यामावरणीयका बन्ध स्वादय परोदय होता है ।

वन्धरिसहस्ररारायणसंपदनापं बंधो परोक्ष्यो, सुहृत्सिपतिरिक्ख-मनुस्सेसु एरासि वना-
मावाहो । अपन्धकखापचठक-ओरात्थिपरीरापं बंधो विरंतरो । बंधो मनुसगइदुयस्स मिन्ध-
इडिन्धसपसम्मादिट्ठीसु सांतरो । ठवरि विरंतरो । एवं वन्धरिसहसंपदमस्स वि वत्थं ।
ओरात्थिपरीरं गोवमस्स बंधो मिन्धइडिन्धि सांतरो । ठवरि विरंतरो, एइयिवनामावाहो ।
पन्धया सुगमा । पवति अपन्धकखापचठकस्स रोसु गुणइप्पेसु ओरात्थिमिस्सपन्धो
ववपेय्थो । मनुसगइदुगोरात्थिपदुग-वन्धरिसहसंपदनापं ओरात्थिपदुग-पत्तुमयपेदपन्धया
सिप्पु गुणइप्पेसु ववपेय्थो । सम्मामिन्धइडिन्धि रो जेव ववपेय्था', ओरात्थिमिस्सपन्धमस्स
पुप्पेववापावाहो । अपन्धकखापचठकस्स मिन्धइडिन्ध-सासपसम्मादिट्ठीसु तिगइसत्तुंथो बंधो ।
ठवरि दुगइसत्तुंथो, पिय-तिरिक्खगइजममावाहो । मनुसगइदुगस्स मनुसगइसत्तुंथो ।
ओरात्थिपदुग-वन्धरिसहसंपदनापं मिन्धइडिन्ध-सासपसम्मादिट्ठीपो दुगइसत्तुंथुवति मनुसग-
सत्तुंथुमपमइवनामावाहो । अपन्धकखापचठकस्स तिगइमिन्धइडिन्ध-सासपसम्मादिट्ठी-
सम्मामिन्धइडिन्धि मसजइसम्मादिट्ठीपो सामी । ववसेसप पयडीव देवा सामी । वेपइयं

मनुष्यगतिद्विक औदारिकद्विक और वज्रर्मसंहननारणसंहननका वन्ध परोक्ष्य होता है
क्योंकि शुभ क्षेत्रावाहो तिर्वं व मनुष्योंमें इनके वन्धका समाप है । अपत्याक्यानावरणचतुष्क
और औदारिकरापीरका वन्ध निरन्तर होता है । मनुष्यगतिद्विकका वन्ध मिथ्याद्वि
और सासावजसम्पद्वि गुणस्थानोंमें सान्तर होता है । ऊपर वसका निरन्तर वन्ध होता
है । इसी प्रकार वज्रर्मसंहननके भी कहना चाहिये । औदारिकरापीरगांगांगका वन्ध
मिथ्याद्वि गुणस्थानमें सान्तर होता है । ऊपर निरन्तर होता है क्योंकि वहाँ एकेन्द्रियके
वन्धका समाप है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि अपत्याक्यानावरणचतुष्कके
दो गुणस्थानोंमें औदारिकमिथ प्रत्ययको कम करना चाहिये । मनुष्यगतिद्विक औदारिक
द्विक और वज्रर्मसंहननके औदारिकद्विक और मनुसकवेद प्रत्ययोंको तीस गुणस्थानोंमें
कम करना चाहिये । सम्मिमिथ्याद्वि गुणस्थानमें दो प्रत्ययोंको ही कम करना चाहिये
क्योंकि, औदारिकमिथ प्रत्ययका पहले ही समाप हो चुका है । अपत्याक्यानावरणचतुष्कका
मिथ्याद्वि और सासावजसम्पद्वि गुणस्थानोंमें तीन गतियोंसे संयुक्त वन्ध होता है ।
ऊपर दो गतियोंसे संयुक्त वन्ध होता है क्योंकि, वहाँ वरणाति और तिर्वगतिका
समाप है । मनुष्यगतिद्विकका मनुष्यगतिसंयुक्त वन्ध होता है । औदारिकद्विक और
वज्रर्मसंहननका मिथ्याद्वि व सासावजसम्पद्वि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त
तथा ऊपर मनुष्यगतिसे संयुक्त वन्ध होता है क्योंकि, वहाँ वन्ध गतियोंके वन्धका
समाप है । अपत्याक्यानावरणचतुष्कके तीन गतियोंके मिथ्याद्वि, सासावजसम्पद्वि
सम्मिमिथ्याद्वि और भर्षपठसम्पद्वि स्वामी हैं । शेष गतिधर्मोंके वन्ध स्वामी हैं ।

बंधवाच्छिन्नहाण च सुगमं । ध्रुवबंधीणं मिच्छाद्विद्धि बंधो बज्रविहो । अण्यत्प तिविहो,
ध्रुवामावाहो । सैसाणं बंधो सादि-अद्भुतो, अद्भुतविहो ।

पञ्चवक्त्राणचउक्कमोघं ॥ २६६ ॥

बधोदया समं शोच्छिन्ना, संजडासंजदमि तेसिं दोणमवक्त्रेण वोच्छेदुवलमाहो ।
सोदय-परोदो, दोहि वि पयोहि बधविरोहाहो । जिरंतरो, एगसमएण ध्रुवरमामात्रो ।
पञ्चया सुगमा, अपञ्चवक्त्रापपञ्चयतुल्लाहो । मिच्छाद्विद्धि-सासणसम्मादिहीसु बंधो तिगइ
सजुत्तो । सम्मामिच्छाद्विद्धि-असंजदसम्मादिहीसु दुगइसजुत्तो । उवरि देवगइसजुत्तो । तिगइ
मिच्छाद्विद्धि-सासणसम्मानिद्धि-सम्मामिच्छाद्विद्धि-असंजदसम्मादिहिणो सामी । दुगइसजडासंजडा
सामी । बंधदाण बंधवोच्छिन्नहाण च सुगमं । मिच्छाद्विद्धि बंधो बज्रविहो । उवरि
तिविहो, ध्रुवामावाहो ।

मणुस्ताउअस्स ओघमगो ॥ २६७ ॥

बन्धापान और बन्धन्युच्छिन्नहाण सुगम हैं । ध्रुवबंधी प्रकृतियोंका मिथ्याद्वि
गुणस्थानमें आये प्रकारका बन्ध होता है । अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता
ह क्योंकि, वहां ध्रुव बन्धका समाप है । शय प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अद्भुत होता है
क्योंकि ये अद्भुतबन्धी हैं ।

प्रत्याख्यानावरणचतुष्कक्षी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६६ ॥

प्रत्याख्यानावरणचतुष्कक्षी बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न हात हैं
क्योंकि, सपतासयत गुणस्थानमें दोनोंका एक साथ व्युच्छेद् पाया जाता है । सोदय
परादय बन्ध होता है क्योंकि दोनों भी प्रकारोंमें उसके बन्धमें कोई विराप नहीं है ।
निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि एक समयसे उसके बन्धविग्रामका समाप है । प्रत्यय सुगम
हैं क्योंकि, ये अप्रत्याख्यानावरणके प्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्याद्वि और सासादन
सम्पद्वि गुणस्थानोंमें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । सम्पमिमिथ्याद्वि और
असंयतसम्पद्वि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । ऊपर वेगगतिसे
संयुक्त बन्ध होता है । तीन गतियोंके मिथ्याद्वि, सासादनसम्पद्वि, सम्पमिमिथ्याद्वि
और असंयतसम्पद्वि म्यामी हैं । दो गतियोंके संयतामयत खामी हैं । बन्धापान
और बन्धन्युच्छिन्नहाण सुगम हैं । मिथ्याद्वि गुणस्थानमें आये प्रकारका बन्ध होता
है । ऊपर तीन प्रकारका बन्ध हांगा है क्योंकि वहां ध्रुव बन्धका समाप ह ।

मनुष्यायुक्षी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६७ ॥

वज्ररिसहस्ररुपायपदपङ्कजं वंशो परोदयो, सुहृदेस्त्रिभुवितिरिक्त-मनुस्सेसु पदार्थि वषा-
 मात्रादौ । अपञ्चकखापचठकक-भोराटियसरीरणं पथो गिरंतरो । वंशो मनुसगइदुगस्स मिच्छ-
 इट्ठि-सप्तपसम्मादिट्ठो सु संतरो । उवरि भिरंतरो । एव वज्ररिसहस्रपङ्कजस्स वि पत्तम् ।
 भोराटियसरीरभमेवंमस्स वंशो मिच्छइट्ठिंदि संतरो । उवरि भिरंतरो, एइदियवंशामात्रादौ ।
 पञ्चपा सुगमा । ववरि अपञ्चकखापचठककस्स दोसु गुणहण्णेषु भोराटियमिस्सपञ्चवो
 ववपेयम्भो । मनुसगइदुगोराटियदुम-वज्ररिसहस्रपङ्कजं भोराटियदुग-वत्तुमयवेदपञ्चपा
 तिसु गुणहण्णेषु ववपेयम्भा । सम्मामिच्छइट्ठिंदि दो 'वव मदमेयम्भा', भोराटियमिस्सपञ्चमस्स
 पुण्यमेवात्रादौ । अपञ्चकखापचठककस्स मिच्छइट्ठि-सप्तपसम्मादिट्ठो निगइससुतो वंशो ।
 उवरि दुगइससुतो, विरय-तिरिक्खगईयममानादौ । मनुसगइदुगस्स मनुसगइससुतो ।
 भोराटियदुम-वज्ररिसहस्रपङ्कजं मिच्छइट्ठि-सप्तपसम्मादिट्ठो दुगइससुतमुवरि मनुसग-
 ससुतमज्जपइवंशामात्रादौ । अपञ्चकखापचठककस्स तिगइमिच्छइट्ठि-सप्तपसम्मादिट्ठि
 सम्मामिच्छइट्ठि वसजदसम्मादिट्ठो सामी । अवसेसाय पयवीणं देवा सामी । वंशखापे

मनुष्यगतिशिक्षा औद्योगिकशिक्षा और वज्रार्पमसंहारकसंहारकका वज्र परोक्ष होता है क्योंकि, शुभ केसावाले तिर्यक व मनुष्योंमें इनके वज्रका समाव है । अमरत्याप्यनावरणचतुष्क और औद्योगिकशरीरका वज्र निरन्तर होता है । मनुष्यगतिशिक्षाका वज्र मिथ्याइति और सामाजिकसम्प्रदायि गुणस्थानोंमें सान्तर होता है । ऊपर उक्तका निरन्तर वज्र होता है । इसी प्रकार वज्रार्पमसंहारक भी कहा जायिये । औद्योगिकशरीरयोगीशका वज्र मिथ्याइति गुणस्थानमें सान्तर होता है । ऊपर निरन्तर होता है क्योंकि वहाँ एकत्रियके वज्रका समाव है । प्रत्यक्ष सुगम है । विशेष इतना है कि अमरत्याप्यनावरणचतुष्कके दो गुणस्थानोंमें औद्योगिकमिथ प्रत्यक्षको कम करना चाहिये । मनुष्यगतिशिक्षा, औद्योगिक शिक्षा और वज्रार्पमसंहारक औद्योगिकशिक्षा और मनुससुत व प्रत्यक्षको तीन गुणस्थानोंमें कम करना चाहिये । सम्मामिच्छा-इति गुणस्थानमें दो प्रत्यक्षको ही कम करना चाहिये क्योंकि, औद्योगिकमिथ प्रत्यक्षका पहले ही समाव हो चुका है । अमरत्याप्यनावरणचतुष्कका मिथ्याइति और सामाजिकसम्प्रदायि गुणस्थानोंमें तीन गतिधोंसे संयुक्त वज्र होता है । ऊपर दो गतिधोंसे संयुक्त वज्र होता है क्योंकि वहाँ मरकमति और तिर्यगति का समाव है । मनुष्यगतिशिक्षाका मनुष्यगतिसंयुक्त वज्र होता है । औद्योगिकशिक्षा और वज्रार्पमसंहारक मिथ्याइति व सामाजिकसम्प्रदायि गुणस्थानोंमें दो गतिधोंसे संयुक्त तथा ऊपर मनुष्यगतिसे संयुक्त वज्र होता है क्योंकि वहाँ वज्र गतिधोंके वज्र का समाव है । अमरत्याप्यनावरणचतुष्कके तीन गतिधोंके मिथ्याइति सामाजिकसम्प्रदायि और वज्रार्पमसंहारक इति स्वामी हैं । दोय मरकमति के व स्वामी है ।

बभसोच्छिष्णद्वाण च सुगमं । ध्रुवबधीन मिच्छाद्द्विष्टिं बंधो चउन्विहो । अण्णत्थ तिविहो,
ध्रुवामावात्रो । सेसार्ज बंधो सारि-अनुवो, अनुवबधित्थो ।

पच्चक्खत्ताणचउक्कमोघ ॥ २६६ ॥

बधोदया सम चोच्छिष्णा, संजदासंजदमि तेसि दोणमक्कमेण वोन्हेनुबलमादो ।
सोदय-परोउमो, दोहि वि पयोहि बधाविणेहादो । पित्तरे, एगसमएण ध्रुवरमामावात्रो ।
पच्चया सुगमा, अपच्चक्खत्ताणपच्चयतुल्लत्तादा । मिच्छाद्द्वि-सासणसुम्मादिहीसु बंधो तिगइ
सजुत्तो । सुम्मामिच्छाद्द्वि-असजदसुम्मादिहीसु दुगइसजुत्तो । उवरि देवगंसजुत्तो । तिगइ
मिच्छाद्द्वि-सासणसुम्मादिहि-सुम्मामिच्छाद्द्वि-असंजदसुम्मादिहिणो सामी । दुगइसजदासंजदा
सामी । बधदाण ध्रुवोच्छिष्णद्वाण च सुगमं । मिच्छाद्द्विष्टिं बंधो चउन्विहो । उवरि
तिविहो, ध्रुवामावात्रो ।

मणुस्साउअस्स ओघमगो ॥ २६७ ॥

बन्धाध्वान भीर बन्धयुच्छिष्ठप्रस्थान सुगम है । ध्रुवबन्धी प्रकृतिपोंका मिथ्यादृष्टि
गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता
ह क्योंकि, वहाँ भूव बन्धका अभाव है । दाव प्रकृतिपोंका बन्ध सादि ब अनुप होता है
क्योंकि, ये अष्टवर्णी हैं ।

प्रत्याप्यानावरणचतुष्करी प्ररूपया ओघके समान है ॥ २६६ ॥

प्रत्याप्यानावरणचतुष्कका बन्ध भीर उदय दामों सायमें स्पृच्छिष्ठ हात हैं
क्योंकि, सयनासपत गुणस्थानमें दोनोंएक एक साय स्पृच्छेक् पाया जाता है । स्वादय
परादय बन्ध होता है क्योंकि, दोनों भी प्रकारोंमें उसके बन्धमें कोई बिधाव नहीं है ।
निरस्तार बन्ध हाता है क्योंकि, एक समयमें उसके बन्धविभागका अभाव है । प्रत्यय सुगम
है क्योंकि, य अमत्याप्यानावरणके प्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि भीर सासाधन
सम्पगदृष्टि गुणस्थानोंमें तीन गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । सम्पगिमिथ्यादृष्टि भीर
अमयतसम्पगदृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । ऊपर देवगतिस
संयुक्त बन्ध होता है । तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, आमाधनसम्पगदृष्टि, सम्पगिमिथ्यादृष्टि
भीर अमयतसम्पगदृष्टि स्वामी हैं । दो गतियोंके संयतासंयत स्वामी हैं । बन्धाध्वान
भीर बन्धयुच्छिष्ठप्रस्थान सुगम है । मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता
है । ऊपर तीन प्रकारका बन्ध हाता ह क्योंकि, वहाँ भूव बन्धका अभाव है ।

मनुप्यायुकी प्ररूपया ओघके समान है ॥ २६७ ॥

वन्धरिसहस्रहरणस्यवस्यवपार्थं वंधो परोक्ष्यो, सुहृत्स्वितिरिक्छ-मनुस्सेसु एदासि वंधा-
मावाहो । अपञ्चकस्त्रापचउकक-भोरत्तियसरीरण वंधो भिरंतरो । वंधो मनुमगइदुमस्स मिच्छ-
इद्धि-सासणसम्मादिद्धिमु सांतरो । उव्वि भिरंतरो । एवं वन्धरिसहस्रवपार्थं वि वतप्पं ।
भोरत्तियसरीरणवंधोवंगस्स वंधो मिच्छइद्धि सांतरो । उव्वि भिरंतरो, एदंदिक्कवधामावाहो ।
पञ्चया सुगमा । वन्धरि अपञ्चकस्त्रापचउककस्स दोसु गुणद्वापेसु भोरत्तियमिस्सपञ्चओ
वधवेय्यो । मनुसमइदुगोरत्तियदुग-वन्धरिसहस्रवपार्थं भोरत्तियदुग-वंधुसव्वेदपञ्चया
तिसु गुणद्वापेसु वधवेय्यो । सम्मामिच्छइद्धि दो वेव वधवेय्यो, भोरत्तियमिस्सपञ्चयस्स
पुण्येवामावाहो । अपञ्चकस्त्रापचउककस्स मिच्छइद्धि-सासणसम्मादिद्धिमु तिगइसद्धो वंधो ।
उव्वि दुगइसद्धो, विरय-तिरिक्छगईकममावाहो । मनुमगइदुगस्स मनुमगइसद्धो ।
भोरत्तियदुग-वन्धरिसहस्रवपार्थं मिच्छइद्धि-सासणसम्मादिद्धिओ दुगइसद्धमुव्वि मनुमग-
सद्धमप्यगइवधामावाहो । अपञ्चकस्त्रापचउककस्स तिममिच्छइद्धि-सासणसम्मादिद्धि
सम्मामिच्छइद्धि वसज्जसम्मादिद्धिओ सामी । वधवेय्यं पयडीपं देवा सामी । वंधव

मनुष्यगतिवृत्ति, भौतिकवृत्ति और वज्रर्मसहस्रनका वन्ध परोक्ष होता है क्योंकि, गुण केत्यावच्छेद विषय व मनुष्योंमें इनके वन्धका अभाव है । अमत्याप्यमावरण वतुष्क और भौतिकवृत्तिवृत्ति वन्ध निरन्तर होता है । मनुष्यगतिवृत्ति वन्ध मिथ्यावृत्ति और साक्षात्तसम्बन्ध गुणस्थानोंमें सान्तर होता है । ऊपर वक्तव्य निरन्तर वन्ध होता है । इसी प्रकार वज्रर्मसहस्रनके भी कहना चाहिये । भौतिकवृत्तिवृत्तिगोपीयका वन्ध मिथ्यावृत्ति गुणस्थानमें सान्तर होता है । ऊपर निरन्तर होता है क्योंकि वहां परकेन्द्रिय वन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि अमत्याप्यमावरणवतुष्कके दो गुणस्थानोंमें भौतिकवृत्ति प्रत्ययको कम करना चाहिये । मनुष्यगतिवृत्ति भौतिक वृत्ति और वज्रर्मसहस्रनके भौतिकवृत्ति और मनुष्यके प्रत्ययोंको तीन गुणस्थानोंमें कम करना चाहिये । सम्बन्धिमथ्यावृत्ति गुणस्थानमें दो प्रत्ययोंको ही कम करना चाहिये क्योंकि भौतिकवृत्ति प्रत्ययका पहल ही अभाव हो चुका है । अमत्याप्यमावरणवतुष्कका मिथ्यावृत्ति और साक्षात्तसम्बन्ध गुणस्थानोंमें तीन गतिवृत्तिसंयुक्त वन्ध होता है । ऊपर दो गतिवृत्तिसंयुक्त वन्ध होता है क्योंकि, वहां परकेन्द्रिय और तिर्यग्गति अभाव है । मनुष्यगतिवृत्ति वन्ध मनुष्यगतिवृत्तिसंयुक्त वन्ध होता है । भौतिकवृत्ति और वज्रर्मसहस्रनका मिथ्यावृत्ति व साक्षात्तसम्बन्ध गुणस्थानोंमें दो गतिवृत्तिसंयुक्त तथा ऊपर मनुष्यगतिवृत्तिसंयुक्त वन्ध होता है क्योंकि, वहां वन्ध गतिवृत्तिसंयुक्त वन्धका अभाव है । अमत्याप्यमावरणवतुष्क तीन गतिवृत्तिसंयुक्त, साक्षात्तसम्बन्ध, सम्बन्धिमथ्यावृत्ति और वस्यवत्तसम्बन्ध स्वामी हैं । शेष गतिवृत्तिसंयुक्त वन्ध स्वामी है ।

सुगमम् । कुरो ? अप्पमत्तसंजदा येय वंधआ', उवरि तेउळेस्साए नमावद्धो ।

तित्थयरणामाण को वधो को अवधो ? असजदसम्माइट्टी जाव
अप्पमत्तसंजदा वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २७० ॥

सुगम । णवरि देव-अणुससामीओ वधो । एव तेउळेस्साए एसा' परूवणा कदा ।
अहा तेउळेस्साए परूवणा कदा तहा पम्मळेस्साए वि कम्पय्था । णवरि पुरिसवेइस्स जम्हि
सांतरो वधो परूविदो तम्हि सांतर-भिरतरो ति वत्तय्थो, पम्मळेस्सियतिरिक्ख-अणुस्सेसु
पुरिसवेइ मोत्तूण अणुवेइस्स वंधामावादे । जंसि पयडीण वंधम्स देवा येव सामी
तासिमितिरेवदपरूवओ अवपेयय्थो, देवेसु पम्मळेस्साए इत्थिवेदानुवर्त्तमावो । पबिदिय
तंसपयडीण वधो भिरंतरो ति वत्तय्थो, तेउळेस्साए एदांसि वधस्स सांतर-भिरंतरनुवर्त्तमावो ।
ओराळियमरीरभंगोवगस्स वंधो परोद्वो । भिरंतरो, पम्मळेस्साए अगोर्धणि विजा वंधामावाओ ।
पम्मळेस्साए पयडिवंधगयमेवपरूवणहुमाह—

यह सूत्र सुगम है । कारण कि अप्रमत्तसंयत ही बन्धक हैं क्योंकि इससे
ऊपरके गुणस्थानोंमें तेजोछेद्याका समाप है ।

तीर्थंकर नामकर्मन्त्र कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? असंयतसम्पद्यधियेसि
लेकर अप्रमत्तसंयत तक बंधक हैं । ये बन्धक हैं, श्रेय अवन्धक हैं ॥ २७० ॥

यह सूत्र सुगम है । विशेष इतना है कि इसके बन्धके स्थामी देव व मनुष्य हैं ।
इस प्रकार तेजोछेद्याका आश्रयकर यह प्रकृपणा की गई है । जिस प्रकार तेजोछेद्यामें
प्रकृपणा की है उसी प्रकार पद्मछेद्यामें भी करना चाहिये । विशेषता यह है कि पुरुष
देवका जहां सांस्तर बन्ध कहा गया है वहां सांस्तर निरन्तर ऐसा कहना चाहिये
क्योंकि, पद्मछेद्या कुछ तिर्यक व मनुष्योंमें पुरुषदेवको छोड़कर अन्य देवके बन्धका
समाप है । जिस प्रकृतियोंमें बन्धके देय ही स्थामी हैं उनके अतिथि प्रत्यपको कम करना
चाहिय क्योंकि वधोंमें पद्मछेद्यामें अतिथि नहीं पाया जाता । एवेन्द्रिय आति और अस
प्रकृतियोंका बन्ध निरन्तर होता है ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि, तेजोछेद्यामें इनके
बन्धके सांस्तर भिरन्तरता पाइ जाती है । भौतिकशरीरतंगोपांगका बन्ध परोद्वपसे होता
है । निरन्तर पण्य होता है क्योंकि पद्मछेद्यामें भंगोपांगके बिना बन्धका समाप है ।
पद्मछेद्यामें प्रकृतिबन्धगत भद्रके प्रकृपणार्थ भागका सूत्र कहत हैं—

तं जहा— बंधो परोक्षो, तेजस्साणं सत्त्वगुणद्वयेषु सोदण्यं बंधविरोहदो ।
 भित्तो, भंतोमुदुत्तेन विषा बंधुवरमामावाधो । पञ्चया सुगमा, बोधाविसेसदो । बंधरि
 तिसु वि गुणद्वयेषु बोधस्मिदुग-वेदभियमित्सु-कम्म-य-अउस्यवेदपञ्चया अवसेयम्मा ।
 मनुसगाइसंहुधो । देवा येव समी । मिप्पमादिहि-सासत्तमसम्मदिहि असंभदसम्मदिहि ति
 बंधदार्प । बंधवोच्छेदो सुगमो । बंधो सादि-अनुवो ।

देवाउअस्स ओधमगो ॥ २६८ ॥

प्रेम सख्यस्वरूपना करीदे । तं जहा— बंधो परोक्षो, सोदण्यं बंधविरोहदो ।
 भित्तो, भंतोमुदुत्तेन विषा बंधुवरमामावाधो । पञ्चया बोधतुल्य । बंधरि आप वि
 वेदभियदुगोरास्मिमित्सु-कम्म-य-अउस्यवेदपञ्चया अवसेयम्मा । बंधो देवगतसंहुत्ते । तिरिस्स
 मनुसगामीयो । बंधदार्प सुगम । अप्पमतदाए सखेन्दे मागे गंतून बंधवोच्छेदो ।
 सादि-अनुवो बंधो ।

आहारसरीर आहारसरीरअगोवगणामाण को बंधो को अवंधो ?
 अप्पमतसजदा बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २६९ ॥

बह इत्थ प्रकार है— बन्ध उसका परोक्ष होता है क्योंकि तेजोसंख्यामें सब
 गुणस्वानामोंमें सात्वतसंज्ञक बन्धका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि अन्तर्मुहूर्तके
 बिना उसके बन्धविधायका अभाव है । प्रत्यय सुगम है क्योंकि, उन्नत ओषसे कोई मर नहीं
 है । विशेष इतना है कि तीनों ही गुणस्वानामोंमें औत्तारेकद्विक, वैद्विपिद्विमिध, कर्मज और
 अनुसक्तबन्ध प्रत्ययोंका कम करना चाहिये । अनुसक्तसंयुक्त बन्ध होता है । देव ही
 स्वामी हैं । मिप्पमादि सात्त्वतमसम्मदिहि और असंभतसम्मदिहि, वह बन्धापना है ।
 बन्धवोच्छेद सुगम है । सादि ब अनुव बन्ध होता है ।

देवाउकी प्ररूपण ओषके समान है ॥ २६८ ॥

इस सूत्रसे सूचित धर्मकी प्ररूपणा करते हैं । बह इत्थ प्रकार है— बन्ध उसका
 परोक्ष होता है क्योंकि, स्वोद्यसंज्ञक बन्धका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है,
 क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके बिना उसके बन्धविधायका अभाव है । प्रत्यय ओषके समान है ।
 विशेषता इतनी है कि ओषमें भी वैद्विपिद्विक, वैद्विपिद्विमिध और कर्मज प्रत्ययोंको कम
 करना चाहिये । देवगतिर्संयुक्त बन्ध होता है । तिरिस्स और मनुष्य स्वामी हैं । बन्धापना
 सुगम है । अप्पमतदाए संयात बहुमाग जाकर बन्धवोच्छेद होता है । सादि ब अनुव
 बन्ध होता है ।

आहारकसरीर और आहारकसरीरगोपता नामककरीर बन्ध और कौन अप्पमत
 है ? अप्पमतसंयुक्त बन्ध है । ये बन्ध हैं, ओष बन्ध है ॥ २६९ ॥

सुगममर्द । कुत्रो ? अण्यमत्तसजदा वेव वंधमा, उवरि तेउलेस्साए अमावस्यो ।

तित्थयरणामाण को वधो को अवधो ? असजदसम्माइटी जाव
अण्यमत्तसजदा वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २७० ॥

सुगम । जवरि वेव-मणुससामीजो यधो । एयं तेउलेस्साए एसा' पळवणा कदा ।
जहा तेउलेस्साए पळवणा कदा तहा पम्मलेस्साए मि कययणा । जवरि पुरिसवेदस्स जम्हि
सांतरो भयो पळविदो तम्हि सांतर-भिरंतरो ति वसन्धो, पम्मलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु
पुरिसवेद मोत्तुण अण्यवेदस्स वंधाभावादो । जंसि पयडीणं वंधन्ध देवा वेव सामी
तासिमित्थिवेदपच्चवो अवसेयन्धो, देवेसु पम्मलेस्साए इत्थिवेदानुवत्तमादो । पंथिंदिय
संसपयडीण वधो भिरंतरो ति वसन्धो, तेउलेस्साए एदासि वंधस्स सांतर-भिरंतरपुयत्तमादो ।
ओरात्थियमरीरंजोगोवगस्स वंधो परोदधो । भिरंतरो, पम्मलेस्साए भंगोवगेण विधा वंधाभावादो ।
पम्मलेस्साए पयडिबंधगयमेवपळवणइमाह—

यह सूत्र सुगम है । कारण कि अममत्तसजदा ही वन्धक है क्योंकि, इसके
ऊपरके गुणस्थानोंमें तेजोलेइयाका अभाव है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन वन्धक और कौन अवधक है ? असंयतसम्पदछियेसि
लेकर अममत्तसजदा तक वन्धक है । ये वन्धक हैं, श्रेय अवन्धक हैं ॥ २७० ॥

यह सूत्र सुगम है । विशेष इतना है कि इसके वन्धके स्थामी वेव व मनुष्य हैं ।
इस प्रकार तेजोलेइयाका आश्रयकर यह प्रकृपणा की गई है । जिस प्रकार तेजोलेइयामें
प्रकृपणा की है वही प्रकार पद्मलेइयामें भी करना चाहिये । विशेषता यह है कि पुरुष
वेदका यहां सांतर वन्ध कहा गया है यहां सांतर निरंतर ऐसा कहना चाहिये
क्योंकि पद्मलेइया कुछ तिपेव व मनुष्योंमें पुरुषवेदको छोड़कर अन्य वेदके वन्धका
अभाव है । जिस प्रकृतियोंके वन्धके वेव ही स्थामी हैं उनके स्त्रीवेद प्रत्ययको कम करना
चाहिये क्योंकि, वहांमें पद्मलेइयामें स्त्रीवेद नहीं पाया जाता । पंचेन्द्रिय आति वीर वसु
प्रकृतियोंका वन्ध निरंतर होता है ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि, तेजोलेइयामें इसके
वन्धके सांतर-निरंतरता पाई जाती है । औदारिकदरीरांगोपांगका वन्ध परोक्षसे होता
है । निरंतर वन्ध होता है क्योंकि पद्मलेइयामें भंगोपांगके विना वन्धका अभाव है ।
पद्मलेइयामें प्रकृतिवन्धगत इसके प्रकृपणाय आगेका सूत्र कहत हैं—

पम्मलेस्सिएसु मिच्छत्तदडओ णेरइयमगो ॥ २७१ ॥

एइय-मादाय-माकराम पंधामावादो । एविओ येव मेरो, बन्ने पत्ति । उरि
अरिय सो पितिय बत्तयो ।

सुक्कलेस्सिएसु जाव तित्तियरे त्ति ओघमगो ॥ २७२ ॥

एइय सुक्करथपरूपया स्त्रीरे— पंचपात्रावरणीय चतुर्दशपात्राणीय-पंचतराश्याय
पुण्य बंधो पञ्च उदयो बोधिज्जदि, सुसुममासराइय-स्त्रीयकम्पपसु बंधोदयबोधेदुषत्तमरो ।
असक्ति-उच्चागोदयाय पि एवं येव वत्तम् । अरि उदयबोधेदो एत्थ पत्ति, अत्राभिधि
उदयबोधेददसपाओ । पंचपात्रावरणीय-चतुर्दशपात्राणीय-पंचतराश्याय सादयो बंधो,
पुनोदयपादो । मिच्छादृष्टिपुडुडि आय असंमदसम्प्राप्तिदि त्ति असक्तिपीप् सादय-परोदयो ।
उरि सादयो येव बंधो, पटिवक्कमुदयामावादो । मिच्छादृष्टिपुडुडि आय समदासंमये त्ति
उच्चागोदबंधो सोदय-परोदयो । उरि सोदयो येव, नीचागोददयामावादो । पंचपात्रावरणीय
चतुर्दशपात्राणीय-पंचतराश्याय बंधो निरंतरो, पुनोदयपादो । असक्तिपीप् मिच्छादृष्टिपुडुडि

पदमेत्स्यावाते जीवोमिं मिथ्यास्वदण्डकक्षी प्ररूपया नातिक्रियेके समान है ॥२७१॥

क्योंकि, उनके एकेन्द्रिय माताप और स्वानरक बन्धका समान है । केवल इतना
ही मेव है, और कुछ मेव नहीं है । यदि कुछ मेव है तो उसे विचारकर कहना चाहिये ।

भुक्तस्तेस्यावाते जीवोमिं तीर्षक प्रकृति तक बोधके समान प्ररूपया है ॥ २७२ ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थही प्ररूपया करने हैं— पांच ज्ञानावरणीय चार वर्तमान-
वरणीय और पांच अन्तरायका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् बन्ध स्पष्टिकृत होता है क्योंकि,
सुसुमसायरायिक और स्त्रीयकयाय शुभदयामोमिं क्रमसे उनके बन्ध और उदयका स्पष्टिकृत
पाया जाता है । पञ्चापीति और उच्चपात्रके भी इसी प्रकार कहना चाहिये । विशेष इतना है
कि उनका बन्धस्पष्टिकृत यहां नहीं है क्योंकि, अयोगकेबन्धी शुभस्थानमें उदय तथा
स्पष्टिकृत देखा जाता है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार वर्तमानावरणीय और पांच अन्तरायका स्वेत्य बन्ध
होता है क्योंकि वे सुषोदयी हैं । मिच्छादृष्टिसे लेकर असंयतसम्प्राप्ति तक पञ्चापीतिका
स्वेत्य परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्वेत्य ही बन्ध होता है क्योंकि, वहां प्रतिपत्त
प्रकृतिके बन्धका समान है । मिच्छादृष्टिसे लेकर संयतासंयत तक उच्चपात्रका बन्ध
स्वेत्य परोदय होता है । ऊपर स्वेत्य ही बन्ध होता है, क्योंकि वहां नीचागीत्रके उदयका
समान है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार वर्तमानावरणीय और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध
होता है, क्योंकि, वे सुषुप्तापी हैं । पञ्चापीतिका मिच्छादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक

आय ममत्तसंज्ञो वि बंधो सत्तरो, एगसमएण वि मंभुवरमईसपादो । उवरि पिरतरो,
परिवक्खपयइपंधामावादो । मिच्छादिहि-सासणसम्मादिहीसु ठप्पागोइस्स बंधो सत्तर-पिरतरो,
सुक्कअस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु पिरतरमंभुवत्तमादो । उवरि पिरतरो । मच्चपा सुगमा ।
पवति मिच्छादिहि-सासणसम्मादिहिपरचपसुं ओणत्थियमिस्तपरचभो अवणेषम्मो, तिरिक्ख
मणुसमिच्छादिहि-सासणसम्मादिहीपमपञ्चसकळे सुहत्थिलेस्सापममावादो । मिच्छादिहि
सासणसम्मादिहि-सम्मादिहिअसज्जसम्मादिहीसु बंधो देव-मणुसगइसंज्जो । उवरि
देवगइसंज्जो चेव, अण्णगइबंधामावादो । तिगइमिच्छादिहि-सासणसम्मादिहि-सम्मादिहि-
दिहि-असंज्जसम्मादिहिओ सुगइसंज्जदासज्जदा मणुसगइसंज्जदा च सामी । बध्दाण
बंधोच्छिण्णह्वाण च सुगमं । धुवबंधीण मिच्छादिहिं बंधो चउम्बिहो । सासणादीसु तिविहो,
धुवबंधामावादो । सेसार्ण सादि मद्दुवो, अद्दुवबंधितादो ।

एगहाण-वेहाणपयईओ उविय उवरिमाओ ताव परूवमो— पिर-पयत्थणं पुष्पं बंधो

सात्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे भी वहाँ उसका बन्धविधाम गया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । मिथ्यादि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें लक्ष्यगोत्रका बन्ध सात्तर-निरन्तर होता है क्योंकि शुक्लसेरपायामे तिर्यक् और मनुष्योंमें उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है । प्रत्यय सुगम है । विदोष इतना है कि मिथ्यादि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानके प्रत्ययोंमेंसे औदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये क्योंकि, तिर्यक् और मनुष्य मिथ्यादि एवं सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्तकालमें शुभ तीन स्वरूपोंका अभाव है ।

मिथ्यादि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादि और मत्तपतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । ऊपर प्रवर्गति संयुक्त ही बन्ध होना है क्योंकि, वहाँ बन्ध गतियोंके बन्धका अभाव है । तीन गतियोंके मिथ्यादि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादि और मत्तपतसम्यग्दृष्टि, वा गतियोंके संयतामंयत तथा मनुष्यगतिके संयत स्थानी हैं । बन्धाध्याय और बन्धपुच्छिप्रस्थान सुगम है । हृष्यगन्धी महानियोंका मिथ्यादि गुणस्थानमें बार प्रकारका बन्ध होता है । सासादनादिक गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ उनके ध्रुव बन्धका अभाव है । दो व महानियोंका सादि व मधुय बन्ध होता है, क्योंकि ये मधुयगन्धी हैं ।

एकस्थानिक और द्विस्थानिक प्रकृतियोंके छेदक ऊपरिम प्रकृतियोंकी प्रकृति

पञ्चम उद्बो वोच्छिञ्चदि, अपुष्य-स्त्रीजकसाप्सु बंधोदयवोच्छेदुवर्तमादो । सोदय-स्रोदवो
 यधो, बन्धुबोदयच्छदो । निरंतरो यधो, पुष्यवर्षविच्छदो । पञ्चमया सुगमा । अविर मिच्छद्दृष्टि
 सासपसम्मादिद्वीसु जोराठियमिस्सपञ्चओ बधयेयम्भो । मिच्छद्दृष्टि सासपसम्मादिद्वि
 सम्मामिच्छादिद्वि-असंबदसम्मादिद्वीसु देव-मनुसगदसंभुतो । उवरि देवगदसंभुतो । तिगा
 मिच्छादिद्वि-सासपसम्मादिद्वि-सम्मामिच्छादिद्वि-असंबदसम्मादिद्विओ दुमसजरासंबदा
 मनुसगदसंबदा य सामी । बंधद्वयं सुयम । अपुष्यकरणदाए संलेम्बदिमामं गंतूण बंधो
 वोच्छिञ्चदि ।

असाठावेदनीयस्स पुष्यं यधो वोच्छिञ्चो । उदयवोच्छेदो पत्ति । अरि-सोगाणं
 पुष्यं बंधो पञ्चम उद्बो वोच्छिञ्चदि, पमत्तापुष्येसु बंधोदयवोच्छेदुवर्तमादो । अविर-असुभाणं
 बंधवोच्छेदो येव, सुक्कलेस्सिएसु सव्यत्पुदयदंसपादो । अजसकिटीए पुष्यमुदयस्स
 पञ्चम बंधस्स वोच्छेदो, पमत्तासंबदसम्मादिद्वीसु बंधोदयवोच्छेदुवर्तमादो । असाठावेदनीय
 अरि-सोगाणं यधो सोदय-स्रोदवो, बन्धुबोदयच्छदो । अविर-असुभाणं सोदवो येव,
 पुष्योदयच्छदो । अजसकिटीए मिच्छद्दृष्टिपहुदि आव असंबदसम्मादिद्वि ति सोदय

करतं हि— निद्रा और प्रवृत्त्यात् पूर्वमे बन्ध और पश्चात् उदय स्पृच्छिञ्च होता है क्योंकि,
 अपूर्वकरत और शीघ्रकृपाय गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका स्पृच्छेद् पाया
 जाता है । स्त्रोदय-परोदय बन्ध होता है क्योंकि ये मनुष्यवर्षी हैं । निरन्तर बन्ध होता है
 क्योंकि, ये पुष्यवर्षी हैं । प्रत्यय सुयम है । विशेष इतना है कि मिच्छादृष्टि और सासपस
 सम्मगद्वि गुणस्थानोंमें औदारिकमित्र प्रत्ययको कम करवा चाहिये । मिच्छादृष्टि, सासपस
 सम्मगद्वि, सम्मगिमिच्छाद्वि और असंबतसम्मगद्वि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे
 संयुक्त बन्ध होता है । ऊपर देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । तीस गतिषीके मिच्छादृष्टि,
 सासपससम्मगद्वि, सम्मगिमिच्छाद्वि और असंबतसम्मगद्वि दो गतिषीके सभतासंबत
 तथा मनुष्यगतिसे संयत स्वामी हैं । बन्धान्तर सुगम है । अपूर्वकरतकाके संरवातसे
 माग जाकर बन्ध स्पृच्छिञ्च होता है ।

असाठावेदनीयस्य पूर्वमे बन्ध स्पृच्छिञ्च जाता है । उद्बोवोच्छेद नहीं है । अरि
 और शोकस्य पूर्वमे बन्ध और पश्चात् उदय स्पृच्छिञ्च होता है क्योंकि, प्रमत्त और अपूर्व
 करत गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका स्पृच्छेद् पाया जाता है । अस्तिर और
 अशुभका बन्ध-पुच्छेद् ही है क्योंकि, शुक्कलेस्सपावासे जीषीमें सर्वत्र उनका उदय बंधा
 जाता है । मयदासीतिसे पूर्वमे उदयका और पश्चात् वन्धना स्पृच्छेद् होता है क्योंकि, प्रमत्त
 और असंबतसम्मगद्वि गुणस्थानोंमें उसके बन्ध व उदयका स्पृच्छेद् पाया जाता है ।

असाठावेदनीय अरति और शोकका बन्ध स्वात्म्य परोदय होता है क्योंकि, ये
 मनुष्यवर्षी हैं । अस्तिर और अशुभका स्वात्म्य ही बन्ध होता है क्योंकि, ये पुष्यवर्षी
 हैं । मयदासीतिसे मिच्छादृष्टिसे लेकर असंबतसम्मगद्वि तक स्त्रोदय परोदय बन्ध होता

परोदओ । उवरि परोदओ चेत, असकितीए गियमेशुदसदमपादो । छप्प पि पयहीण पओ सांतरे, एगसमण्ण वि वधुवरमदमपादो । पच्चया ओघतुत्ता । वधरि मिच्छादिद्धि-सासणसम्मादिद्धिमु ओराटियमिस्सपच्चमो अवणेषथो । मिच्छादिद्धि-सासणसम्मादिद्धि सम्मामिच्छादिद्धि-अमवदमम्मादिद्धिमु छप्प पयणीण पओ देव-मशुसगाइसुत्तो । उवरि देवगाइसुत्तो । तिगइअमवदा दुगमसवदासवदा मशुसगाइसुत्ता च सामी । वधदाण पयवोच्छिण्णहाण च सुगम । पओ छप्प पि सादि अट्टो, अनुवपघिप्तादो ।

अप वक्खापावरणीयस्स वधादया सुम वोच्छिण्णा, असवइसम्मादिद्धिमिह दोण्ण वोच्छेदुपलमादो । सेसणं पचवोच्छेदो चेत, उदयवोच्छेत्ताणुवत्तमादो । अपवक्खापचउत्तस्स सोदय-परोदपण वि पओ, अनुवोदपत्तादो । अवमेषाण पया परोदमो, सुक्कलेस्साए सम्मगुणद्वेषेसु सोदण्णेदामि पंचविरोहादो । अप वक्खापचउत्त-मशुसगाइदुगोराटियदुगाण पओ गिरंतरे, एगममण्ण पधुवरमामावादो । वजरिसहसपडणस्स मिच्छादिद्धि-सासण सम्मादिद्धिमु पओ सांतरे । उवरि बिरतरे, पडिवत्तवपयन्निधामावादो । पच्चया सुगमा ।

हे । ऊपर परादय ही बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ नियमसे पञ्चकीर्तिका उदय देखा जाता है । उहाँ प्रह्नियोंका बन्ध मात्र होता है क्योंकि एक समयस भी उनका बन्धविधाम देखा जाता है । प्रत्यय भाषक समान है । बिनाप इतना है कि मिथ्याहृदि और सात्वात्म सम्मगहृदि गुणस्थानोंमें भावार्थिकमिथ प्रत्ययका कम करना है । मिथ्याहृदि सात्वात्म सम्मगहृदि, सम्मगिमिथ्याहृदि और समयतमस्यहृदि गुणस्थानोंमें उहाँ प्रह्नियोंका बन्ध रूप और मनुष्य गतिम संयुक्त होता है । ऊपर रूपगतिम संयुक्त बन्ध होता है । तीन गतियोंका असंपन्न वा गतियोंका सयतासेपन्न और मनुष्यगतिम समयत स्थामी है । बन्धाप्यान और बन्धवृत्तउच्छेद्याम सुगम है । उहाँ प्रह्नियोंका बन्ध सादि व मधुप होता है क्योंकि, व मधुपवर्गी है ।

अप्रत्याख्यानापरत्वीयका बन्ध और उदय क्षानों सायमें व्युच्छिन्न होते हैं क्योंकि, समयतमस्यहृदि गुणस्थानमें उन क्षानोंका व्युच्छिन्न पाया जाता है । तब प्रह्नियोंका बन्ध व्युच्छेत्त ही है क्योंकि, उमम उदय-वृच्छिन्न महीं पाया जाता । अप्रत्याख्यानावतुष्कका स्वादय-वरादयम बन्ध होता है क्योंकि, यह मधुषादयी है । दाय प्रह्नियोंका बन्ध परादय होता है क्योंकि, शुभमन्दयामें सब गुणस्थानोंमें स्वादयम इनका बन्धका विराध है । अप्रत्याख्यानापरत्वीयवतुष्क मनुष्यगतिम और भावार्थिकमिथ बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि एक समयस उनका बन्धविधामका अभाव है । पञ्चममईमनका मिथ्याहृदि भाव सात्वात्मसम्मगहृदि गुणस्थानोंमें मात्रा पन्ध होता है । ऊपर उमका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ प्रतिपन्न प्रह्नियोंका बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम है ।

नरि मिच्छाद्वि-सासवसम्मादिहीसु ओरात्थिमिस्सपचओ भवपेयम्भो । मणुसगइसुगोरात्थिमइसु
 वज्जरिसहसंधणपमोरात्थिमइमिरिय-वसुमयवेदपचया भवपेयम्भो, देवसु पइसिममावओ ।
 अपचकखानवउत्तस्स इगइसंतुपो बंधो । अवसेसामं मणुसगइसंतुत्थे । अपचकखानवउत्तस्स
 तिगइवीवा सामी । अवसेसामं पयइत्थं वेवा सामी । वचइत्थं वचवोत्थिअण्णत्थं च सुगमं ।
 अपचकखानवउत्तस्स मिच्छाद्विहिं वओ वउत्थिहो । उवरि तिगिहो, पुवामावओ ।
 अवसेसामं सादि-भइवो, अनुववंचित्ताओ ।

पचकखानवउत्तस्स वचोदमा-समं वोत्थिअण्णंति, समदसंजमि तइइवोत्थे
 वसपओ । वओ सोदय-परोदओ, अनुवोदयपओ । निरंतो एमसमएण वंजुवरमामावओ ।
 पचया सुगमा । नरि मिच्छाद्वि-सासवसम्मादिहीसु ओरात्थिमिस्सपचओ भवपेयम्भो,
 तिरिक्ख-मणुमिमिच्छाद्वि-सासवसम्मादिहीसु अपचकखाने मुइत्तेस्सापममावओ । वसंवेसु
 वओ देव-मणुसगइसंतुत्थे, संजसंवेसु देवमइसंतुत्थे । तिगइमसवदमुण्डावामि, सुव-
 संजसंजस व सामी । वचइत्थं वचवोत्थिअण्णत्थं च सुगमं । मिच्छाद्विहिं वओ वउत्थिहो ।

विशेष इत्यादि कि मिच्छाद्वि और सासवससम्माद्वि गुणस्थानोंमें बीहारिकमित्र
 प्रत्ययको कम करना चाहिये । मनुष्यगतिद्वि, बीहारिकद्वि और वज्जरिसहसंधनके
 बीहारिकद्वि, इति और वसुसकवेत् प्रत्ययोंको कम करना चाहिये क्योंकि,
 दोनोंमें वहाँ इस प्रत्ययोंका समाव है । अपत्याख्यावाचरणवतुत्थक दो गतिपोंसे
 संयुक्त बन्ध होता है । दो प्रत्ययोंका मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है ।
 अपत्याख्यावाचरणवतुत्थके तीन गतिबोंके जीव स्वामी हैं । दो प्रकृतिबोंके देव स्वामी
 हैं । बन्धमात्र और बन्धव्युत्पिन्नस्थान सुगम हैं । अपत्याख्यावाचरणवतुत्थक
 मिच्छाद्वि गुणस्थानमें जाते प्रकटक बन्ध होता है । ऊपर तीन प्रकटक बन्ध होता
 है क्योंकि, वहाँ ठीक बन्धका समाव है । दो प्रकृतिबोंका सादि व अनुव बन्ध होता
 है क्योंकि, व अनुवबन्धों हैं ।

प्रत्याख्यावाचणीयका बन्ध और वद्व दोनों साधमें व्युत्पिन्न होते हैं क्योंकि,
 संयतासंयत गुणस्वात्ममें वन दोनोंका व्युत्पेदे देखा जाता है । स्वोदय-परोदय बन्ध
 होता है क्योंकि, वह अनुवोत्थी प्रकृति है । निरंतर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समकसे
 उसके बन्धविधामका समाव है । प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इत्यादि कि मिच्छाद्वि और
 सासवससम्माद्वि गुणस्थानोंमें बीहारिकमित्र प्रत्यय कम करना चाहिये क्योंकि,
 तिरिक्ख और मणुमिमिच्छाद्वि एवं सासवससम्माद्विपोंमें अपरांतककमें शुभ वेश्या-
 योंका समाव है । वसंतोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । संयतासंयतोंमें
 देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । तीन गतिबोंके वसंत गुणस्थान और दो गतिबोंके
 संयतासंयत स्वामी हैं । बन्धमात्र और बन्धव्युत्पिन्नस्थान सुगम हैं । मिच्छाद्वि
 गुणस्थानमें जाते प्रकटक बन्ध होता है । ऊपर तीन प्रकटक बन्ध होता है क्योंकि,

उपरि तिविहो, पुषामावाधो ।

पुरिसवेद-कोषसंज्ञलम्बायं बंधोदया समं बोधिगुणा, अपियद्विभि तदुदयवोच्छेद
वसण्णदो । सोदय-परोदयो, उभयहा वि मधुबलमाधो । कोषसंज्ञलम्बायं बंधो विरतरो,
पुषबंवितादो । पुरिसवेदस्स मिच्छाद्वि-सावणसम्मादिहीमु सत्तर-विरतरो, मुक्कत्तेस्सिय
तिरिक्ख-मणुस्सेमु पुरिसवेद मोत्तुषण्णवेदाय बधामावाधो । उपरि विरतरो, पडिबक्खपयदि
बधामावाधो । पच्चया मुममा । पवरि मिच्छाद्वि-सावणसम्मादिहीमु मोराटियमिस्सण्णबधो
अवणेयवो । चटुसु असंजदगुणहायेसु दुमइसहुतो, उपरि देवगइसंभुतो बधो भगइसहुतो
वा । तिगइसंजदगुणहायापि दुगइसंभदासज्जो मणुसगइसज्जो च सामी । बधदाय मुयम ।
अपियद्विभदाए सखिन्ने भामो गंतूय वंधो योच्छिन्नज्जि । केवसज्जलम्बायं मिच्छाद्विहि
चठविहो बधो । उपरि तिविहो, पुषामावाधो । पुरिसवेदस्स सदि भदुवो, भदुव
बंधितादो ।

माय-माया-लोहसंज्ञलम्बायं कोहसंज्ञलम्बायं । पवरि वंधवोच्छेदपदेसो अपिय
वत्थो ।

वहां भुव बन्धका अभाव है ।

पुरुषवेद और संज्ञलम्बायं बन्ध व उदय दोनों साधर्म्य स्पष्टिग्न होते हैं
क्योंकि, अनिष्टिकरण गुणस्थानमें उन दोनोंका स्पष्टिग्न देखा जाता है । स्वोदय
परोदय बन्ध होता है क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे ही बन्ध पाया जाता है । संज्ञलम्बा
लोपका बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि, यह भुवबन्धी है । पुरुषवेदका मिथ्याद्वि
और साक्षात्तसम्यग्द्वि गुणस्थानोंमें सास्तर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि भुक्त
छेदपावाके विर्येय व मनुष्योंमें पुरुषवेदको छोड़कर अन्य सर्वोंके बन्धका अभाव है ।
ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बन्धका अभाव है ।
प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि मिथ्याद्वि और साक्षात्तसम्यग्द्वि गुणस्थानोंमें
औद्योगिकमित्र प्रत्यय कम करना चाहिये । बार भलेयत गुणस्थानोंमें वा गतियोंसे सयुक्त
और ऊपर देवगतिसे सयुक्त भगवा भगतिसेयुक्त बन्ध होता है । तीन गतियोंके भस्सपत
गुणस्थान वा गतियोंके संयत्तासंयत्त और मनुष्यगतिके संयत्त स्वामी हैं । बन्धावधान
सुगम है । अनिष्टिकरणकायके संख्यात बहुभाग आकर बन्ध स्पष्टिग्न होता है ।
संज्ञलम्बायं मिथ्याद्वि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । ऊपर तीन
प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि वहां भुव बन्धका अभाव है । पुरुषवेदका सावि व भुव
बन्ध होता है क्योंकि वह भुवबन्धी है ।

संज्ञलम्बायं माय और सोमधी प्रकृति संज्ञलम्बायंके समान है । विशेषता
इतनी है कि बन्धावधानका आनन्द करना चाहिये ।

हस्त-रवि मय-दुर्गुज्ज्वलं बंधोदया सम वोच्छिन्ना, अपुण्यकरणचरिमसमप तदुदय-
वोच्छेदसमाधौ । बंधा सोदय परोदयो, वन्दुयोदयत्वाद् । मिच्छादृष्टिपुण्ड्रि जाव फलसंतपरो
ति हस्त्यग्दीण बंधो सांतरो । उर्वरि भिरंतरो, पडिवक्त्रपयडिबंधामात्राद् । मय दुर्गुज्ज्वलं
भिरंतरो, ध्रुवबंधित्वाद् । पञ्चया सुगमा । जरि मिच्छादृष्टि-सासपसम्मादिहीनु भोरात्पिमिस्स-
पञ्चमो अवणेष्यत्वा । मिच्छादृष्टि-सासपसम्मादिहि-सम्मादिच्छादृष्टि-असंजदसम्मादिहीनु
मनुस-देवगइसत्तुत्तो । उर्वरि देवगइसत्तुत्तो भगइसंत्तुत्तो च । तिगइमिच्छादृष्टि-सासपसम्मादिहि-
सम्मादिच्छादृष्टि-असंजदसम्मादिहिन्ना दुगइसंजदामनदा मनुसगइसंजद च समी । बंधत्तुत्तं
बधवोच्छिन्नहाण च सुगमं । मय-दुर्गुज्ज्वलं मिच्छादृष्टिभिह चउन्विहो बंधा, ध्रुवबंधित्वाद् ।
उर्वरि तिगइहो, ध्रुवाभावत्वाद् । हस्त रवीज सप्यत्व सादि असुभो, वन्दुयवधित्वाद् ।

मनुसाउभस्स बधवोच्छेदो भेव, मुक्कत्तेस्साप उदयवोच्छेदापुवत्तमाद् । परोदयो बंधो,
मुक्कत्तेस्साप सप्यत्व सादपण बधविरोहत्वाद् । भिरंतरो, अंतोमुदुत्तेज विणा बंधुवरमामात्राद् ।
पञ्चया सुगमा । जरि मिच्छादृष्टि-सासपसम्मादिहि असंजदसम्मादिहीनु भोरात्पिदुप-

हास्य एति मय भीर जुगुप्साका बन्ध भीर उदय दामो साधमे व्युत्थित हात
है कर्षोकि, भर्षुर्बन्धके मलितम समवर्मे जन दोषोका व्युच्छेद वृत्ता जाता है । बन्ध
उत्तम्य सोदय परोदय होता है कर्षोकि, व मनुष्योदयी है । मिथ्यादृष्टिसे छेकर प्रमत्तसंयत
तक हास्य व रतिक्रम साम्तर बन्ध होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है कर्षोकि वहाँ
प्रतिपक्ष मङ्गतिर्षोके बन्धका जमाव है । मय भीर जुगुप्साका निरन्तर बन्ध होता है
कर्षोकि ये प्रयवन्धी है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि भीर सासात्प
सम्पददृष्टि गुणस्थानोंम भीवारिकमिध प्रत्ययमे कम करना चाहिये । मिथ्यादृष्टि,
सासात्पसम्पददृष्टि, सम्पगिमिथ्यादृष्टि और मसपतसम्पददृष्टि गुणस्थानोंमें मनुष्य
बंध गतिस संयुक्त बन्ध होता है । ऊपर बन्धमतिसंयुक्त और भगमिसंयुक्त बन्ध होता है ।
तीन गतिर्षोके मिथ्यादृष्टि सासात्पसम्पददृष्टि सम्पगिमिथ्यादृष्टि और असंजतसम्प
दृष्टि का प्रतिपक्षे सप्यतासंयत तथा मनुष्यगतिके संयत स्थामी है । बन्धावधान और
बन्ध-पुच्छिधस्वान सुगम है । मय भीर जुगुप्साका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें कार्य
प्रकारका बन्ध होता है कर्षोकि, ये प्रयवन्धी है । ऊपर तीन प्रकारका बन्ध होता है
कर्षोकि, वहाँ प्रयवन्धका जमाव है । हास्य भीर रतिक्रम संबंध सादि व मनुष्य बन्ध होता
है कर्षोकि ये मनुष्यवन्धी है ।

मनुष्यापका केवल बन्धपुच्छद ही होता है कर्षोकि, जुगुप्सहेतुवामें उसका उदय
व्युच्छेद नहीं पाया जाता । परोदय बन्ध होता है कर्षोकि, जुगुप्सहेतुवामें सर्वत्र स्त्रोदयसे
पक्षक पण्यका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है कर्षोकि, भगवद्गुह्यतक विना उसका बन्ध
विधामका जमाव है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि सासात्पसम्पददृष्टि

वेठम्वियमिस्स-कम्मइय-इत्थि पउंसयवेदपवया भवपेदम्मा । मणुस्यइत्तुत्तो । देवा सामी । मिष्साइत्ति-सासणसम्माइत्ति-असंजदसम्मादिट्ठिणो ति वचसाण । वचवोप्पिम्भद्वाण सुगमं । सादि-अनुवो वचो, अनुवर्चवितादो ।

देवाठवस्स पुण्णमुदयस्स पप्पम वंचस्स वोप्पेदो, अप्पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु वंचोदयवोप्पेदुपत्तादो । परोदवो वंचो, सोदण वंचविरोहादो । भिरंतो, अतोमुहुसेण विपा वंचुवरमावादो । पवचया सुगमा । गवरी मिष्सादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मा दिट्ठीसु वेठम्वियदुगोपत्थियमिस्स-कम्मइयपम्भया अवणेयम्मा । देवगइत्तुत्तो वंचो । मिष्साइत्तिपुहुट्ठि जाव संजदासज्जदा ति तिरिक्ख-मणुसा सामी । ठवरी मणुसा चेव । वंचदाण सुगम । अप्पमत्तदाए संसेज्जे भागे गतूण वचो वोप्पिम्भज्जदि । सादि-अनुवो, अनुवर्चवितादो ।

देवगइ-वेठम्वियदुगणं पुण्णमुदयस्स पप्पम वचस्स वोप्पेदो, अप्पमत्तासंजदसम्मादिट्ठीसु वंचोदयवोप्पेदुपत्तादो । वचसेसाणं पयहीणं वचवोप्पेदो चेव, सुक्कलेस्साए उदयवोप्पेदापुव ठमादो । देवगइ-वेठम्वियदुगणं परोदवो वंचो, सोदण वचविरोहादो । पंचिदयजादि-तेजा

भीर असेयतसम्यग्दृष्टि गुणस्यानोमं औदारिकश्रिक, वैकियिकमिन्न कामेण कायपोग क्खियेद् भीर नपुंसकपेद् मत्पयोक्के कम करना चाहिये । मनुष्यगतिर्संयुक्त बन्ध होता है । देव स्वामी है । मिष्याहृष्टि, सासादमसम्यग्दृष्टि भीर असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्यान बन्धाप्त्तान है । बन्धपुच्छेत्तस्यान सुगम है । सादि य अमुक् बन्ध होता है क्योंकि, यह अमुक्बन्धी है ।

देवायुके पूर्वमे उदयका भीर पश्चात् बन्धका प्पुच्छेत्त होता है क्योंकि अग्रमत्त भीर असेयतसम्यग्दृष्टि गुणस्यानोमं कामसे उसके बन्ध य उदयका प्पुच्छेत्त पाया जाता है । परोदय बन्ध होता है क्योंकि स्वायसे उसके बन्धका विरोध है । निरुत्तर बन्ध होता है क्योंकि, अन्तमुद्गर्त क विना उसके बन्धविधामका अभाव है । मत्पय सुगम है । विरोध इतना है कि मिष्याहृष्टि सासादमसम्यग्दृष्टि भीर असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्यानोमं वैकियिकश्रिक, औदारिकमिन्न भीर कामेण मत्पयोक्क कम करना चाहिये । दयगतिर्संयुक्त बन्ध होता है । मिष्याहृष्टिसे लेकर समतासेयत तक तिर्येव य मनुष्य स्वामी है । ऊपर मनुष्य ही स्वामी है । बन्धाप्त्तान सुगम है । अप्पमत्तकासके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध प्पुच्छिण्य होता है । सादि य अमुक् बन्ध होता है क्योंकि, यह अमुक्बन्धी है ।

देवगतिश्रिक भीर वैकियिकश्रिकके पूर्वमे उदयका भीर पश्चात् बन्धका प्पुच्छेत्त होता है क्योंकि, अप्पवत्तरण य असेयतसम्यग्दृष्टि गुणस्यानोमं कामेण उनके बन्ध य उदयका प्पुच्छेत्त पाया जाता है । दोष महत्तिपौक्का केपम बन्धप्पुच्छत्त ही है क्योंकि, सुक्कलेदयामे उक्का उदयप्पुच्छत्त नहीं पाया जाता । दयगतिश्रिक भीर वैकियिकश्रिकका परोदय बन्ध

संतरणपुवठमादो । उवरि गिरंतरो, पडिवक्खपयडिंघामावादो । विर-सुमाण मिच्छाद्विप्युडुडि
भाव पमवसज्जदो वि संतरो । उवरि गिरंतरो, पडिवक्खपयडिंघामावादो ।

पञ्चया सुगमा । देवगइ-वेउअियदुगण पधो देवगइसंतुतो । सेसाण पयडीण
मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठिसु देव-मणुसगइसंतुतो । उवरि देवगइसंतुतो ।
देवगइ-वेउअियदुगण दुगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठि-
सज्जदासंजदा मणुसगइसज्जदा च सामी । अवसेसाणं पयडीणं पधस्स तिगइमिच्छादिट्ठि-
सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठियो दुगइसज्जदासज्जदा मणुसगइसंजदा च
सामी । वंचडाण सुगमं । अपुण्यकरणद्वया सदेव्ये भागे गंतूण पधो यो उज्जदि । तेसा
कम्मइयसरीर-वण्णचठक्क-अगुरुउडुव-उवपाद-भिमिणाणं मिच्छाद्विदि पधो चउअियदो ।
उवरि विविहो, पुववविचादो । सेसाणं पयडीण सादि अद्भुयो पधो ।

माहारदुगस्स ओपभंगो । तित्थपरस्स वि ओपभंगो । दुगइमसंजदसम्मादिट्ठियो मणुस

पाया जाता है ।

ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियों का बन्धका समाप
है । स्थिर और शुभका मिथ्याहृदि से ऊपर प्रसन्नपक्ष तक सांस्तर बन्ध होता है । ऊपर
निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतियों का बन्धका समाप है ।

प्रत्यय सुगम हैं । देवगति और धैर्यविकटिकका बन्ध देवगतिसंयुक्त होता है ।
शेष प्रकृतियों का बन्ध मिथ्याहृदि, साक्षात्तसम्बन्धहृदि और असंयतसम्बन्धहृदि गुणस्थानों में
देव व मनुष्य गतिसंयुक्त होता है । ऊपर देवगतिसे संयुक्त होता है ।

देवगति और धैर्यविकटिकका दो गतियों के मिथ्याहृदि साक्षात्तसम्बन्धहृदि,
सम्बन्धमिथ्याहृदि असंयतसम्बन्धहृदि व संयतसंयत; तथा मनुष्यगतिक संयत स्वामी
हैं । शेष प्रकृतियों के बन्धके तीन गतियों का मिथ्याहृदि साक्षात्तसम्बन्धहृदि सम्बन्धमिथ्या
हृदि और असंयतसम्बन्धहृदि दो गतियों का संयतसंयत तथा मनुष्यगतिक संयत स्वामी
हैं । वंचाध्यान सुगम है । अपुण्यकरणका संयत पदुभाग जाकर बन्ध स्पृष्टिप
होता है ।

तैजस व काम्य दारिद्र्य वणादिक वार अगुरुकषु उपपात वार निमाणका
मिथ्याहृदि गुणस्थान में वारों प्रकारका बन्ध होता है । ऊपर तीन प्रकारका बन्ध होता है
क्योंकि, ये भूषवर्णी हैं । शेष प्रकृतियों का वार व मनुष्य बन्ध होता है ।

माहारविकटिकी प्रकृति भाषक समान है । तैजस प्रकृति की भी प्रकृति
भाषके समान है । पितापता इतनी है कि उसके दो गतियों का असंयतसम्बन्धहृदि और

गहस्तं ब्रह्मसं ब्रह्मपुत्रिणो च' सामी ।

णवरि विसेसो सादवेदणीयस्त मणजोगिमगो ॥ २७३ ॥

बोधार्थो क्षेत्र एव विसेसो ? न, बोधमि ब्रह्मपुत्राणमुवर्तमादो । एतत् पुत्र ते नरि,
नबोमीसु छेत्सामादो । क्व छेत्सा ब्राम ? जीव-कम्पाय संसिद्धेऽनर्परी, मिच्छासंजन-कसाय
बोला' सि मन्त्रि होदि । संस ब्रह्मसिद्धिर्भगो ।

वेद्याणि-एकद्व्याणीण णवगेवज्जविमाणवासियदेवाण भगो
॥ २७४ ॥

एतस्स देवामासियसुतस्स ब्रह्मो उच्यते । तं ब्रह्म — धीमहि इति धि-वर्णनापुत्रं वि
षट्किस्त्रिवेद-षट्छेद-षट्संभरण-अप्यस्य विद्याय गङ्-दुभग-दुस्तर-अपदेव्य-मीषा-

मनुष्यगणिके संपत्तासंपत्तादिक स्वामी है ।

परन्तु विशेष इतना है कि सात्त्विकेन्द्रनीयस्त्री प्ररूपणा मनोयोगियोंके समान है ॥ २७३ ॥

शंकर—बोधसे यहां क्या बोध है ?

समाधान—महीं क्योंकि बोधमें सात्त्विकेन्द्रनीयके अग्रगण्य पाये जाते हैं । किन्तु
यहां वे नहीं हैं कारण कि अयोगी जीवोंमें छेदपात्र भभाव है ।

शंकर—छेदपात्र किसे कहते हैं ?

समाधान—जो जीव व कर्मका सम्बन्ध करता है वह छेदपात्र कहलाती है ।
अभिप्राय यह कि मिथ्यात्व असंयम कषाय और बोधदे छेदपात्र हैं ।

शेष विवरण ब्रह्मचर्य के समान है ।

द्विस्वामिक और एकस्वामिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा भी प्रत्येक विमलवासी देवोंके
समान है ॥ २७४ ॥

इस देवामर्शक सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है—स्वाम्यद्विस्व
अव्यक्तानुष्ठानचतुष्क लक्षित चार संस्थान चार संस्थान अग्रगण्यविद्यायोगि धर्मग

१ ब्रह्मगी ब्रह्मपुत्राणमुवर्तमादो च इति वाच्यः ।

२ व ब्रह्मजो। इतिमिन्द्रवरि ब्रह्मगी ब्रह्मिष्ठवैराव इति वाच्यः ।

३ अथगी ब्रह्मपुत्रेण इति वाच्यः ।

गोदानि वेद्धानपयहीभो । एस्य अर्थाणुर्बन्धिवठक्कस्स बंधोदया समं वोन्धिण्णा । सेसाणं पयहीणं पुब्बं बवो पप्पा उदयो वोन्धि-त्रदि, तदोवठमादो । एदासिं सम्भासिं पयहीणं पि बवो परोदभो । धीणगिदितिय-अणनाणुर्बन्धिवठक्कस्स बंधो भित्तरो, धुवर्बन्धिच्छादो । इरियवेद-चउसअण-चउसपइण-अणसरयविहायगइ-दुमग-दुस्सर अणादेवज-वीणागोदानं सांतरो, एगसमएण वि बधुबसुवठमादो । पबया सुगमा । जवरी वोरठियमिस्सपबभो बवपेयम्भो । इरियवेद-चउसअण चउसपइण अणसरयविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अणादेवज-वीणागोदानं भोत्तठियदुगिरिय-चउसपवेदपम्बया जवपेयम्भा, सुक्कठेस्साए एदासिं' बंधामावदो । धीणगिदितिय-अणनाणुर्बन्धिवठक्कस्स देव-अणुसगइसंसुत्तो । सेसाणं मणुसगइ सट्ठो, देवगइए सइ बवविरोदादो । धीणगिदितिय-अणनाणुर्बन्धिवठक्कस्स तिगइसीवा सामी । सेसाण पयहीणं बभस्म देवा सामी । बभट्ठाण बंधवोन्धिण्णह्मं च सुगमं । धुवबधीण मिप्पइहिमिद्दि चउम्भियो बवो । सासणे दुविहो, अणत्त धुवामावदो । सेसाणं पयहीणं

तुस्वर, अनादय और नीचगोत्र ये क्रियात्मिक प्रकृतियाँ हैं । हममें अनन्तानुबन्धिवत्तुक्कका बन्ध और उदय नामों आधारे धुवित्तन होते हैं । दोष प्रकृतियोंका पूर्वमें बन्ध और पप्पात् उदय धुवित्तन होता है क्योंकि वैसा पाया जाता है । इन सब ही प्रकृतियोंका बन्ध परोदव होता है । स्पानपुत्तित्रय और अनन्तानुबन्धिवत्तुक्कका बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि ये धुवबन्धी हैं । क्रीविकका चार सम्पान चार संहनन समस्तस्मविहायोगति दुर्मग तुस्वर, अनादय और नीचगोत्रका सात्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयस भी इनका बन्धविधाम पाया जाता है । प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि औदारिकमिन्न प्रत्ययका कम करना चाहिये । क्रीवेद चार संस्थान चार संहनन समस्तस्मविहायोगति दुर्मग तुस्वर, अनादय और नीचगोत्रके औदारिकमिन्न क्रीवेद और नपुंसकबद् प्रत्ययोंका कम करना चाहिये क्योंकि, शुक्लमन्त्रायामें इन प्रकृतियोंके बन्धका समाच है । स्पानपुत्तित्रय और अनन्तानुबन्धिवत्तुक्कका बन्ध व अनुप्यगतिले संयुक्त बन्ध होता है । दोष प्रकृतियोंका अनुप्यगतिले संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि वेदगतिके साथ इनके बन्धका विशेष है । स्पानपुत्तित्रय और अनन्तानुबन्धिवत्तुक्कके तीन गतियोंका जीव आमी हैं । दोष प्रकृतियोंका बन्धके देव आमी हैं । बन्धायवान और बन्धपुत्तित्रयस्पाण सुगम हैं । बुवबन्धी प्रकृतियोंका मिप्पाटिठ शुक्लस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सासावम शुक्लस्थानमें वा प्रच्छरका बन्ध होता है क्योंकि वही अनादि और अब बन्धका समाच है । दोष प्रकृतियोंका नादि व अष्टव बन्ध होता है,

१ अ चारो द्वयवेत्तार तिरवहत्तेडा वृत्ति वासी द्वयवेत्तार तिरवहत्तेडा वृत्ति वासी ।

सादि-अद्भुतो, अद्भुतवैपिचारो ।

मिच्छत-अनुसंधेद-हुंइसंस्थान असंप्रसवेवद्वसंप्रदयाणि एवहावपयहीनो । एव
मिच्छतस्स वैवोदया समं वोच्छिन्ना, मिच्छतद्विष्टि चेव तदुदयवैसंपादो । वसंप्रवेद
असंप्रसवेवद्वसंप्रदयाणि पुन्य वैपो पञ्च उदयो वेच्छिन्नादि, तदोवतमादो । हुंइसंस्थानस्स
वैवोच्छेदो चेव, मुक्कलेस्साप उदयवोच्छेदामादो । मिच्छतस्स वैपो सोदयो । सेसार्थं
तिष्णं वि परोदयो । मिच्छतस्स पितरो । सेसार्थं सानरो । मिच्छतस्स हुगइसंस्थाने । सेसार्थं
मनुसगइसंस्थाने । मिच्छतस्स तिगइया समी । सेसार्थं देवा । वैवद्वान वैववेच्छिन्नाद्वानं व
सुमम । मिच्छतस्स पञ्चविष्टो वैपो । सेसान सादि-अद्भुतो ।

भविष्याणुवादेण भवसिद्धियागमोर्धं ॥ २७५ ॥

यत्किं एव भोषणरूपमादो को वि विसेसो, तेष भोषमिदि सु-वदे ।

क्योंकि, वे अनुसंधानी हैं ।

मिच्छात्व अनुसंधेद हुंइसंस्थान और असंप्राप्तवृत्तादिकसंहमन ये एकस्वाव
प्रकृतियाँ हैं । इनमें मिच्छात्वका बन्ध और उदय दोनों साधनमें व्युच्छिन्न होते हैं क्योंकि,
मिच्छावृत्ति गुणस्थानमें ही वे दोनों देखे जाते हैं । अनुसंधेद और असंप्राप्त
वृत्तादिकसंहमनका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है क्योंकि, वैसा पापा
जाता है । हुंइसंस्थानका बन्धव्युच्छेद ही है क्योंकि, हुंइसंस्थानमें उसके उदयव्युच्छेदका
जमाव है । मिच्छात्वका बन्ध स्वेत्य होता है । शेष तीनों प्रकृतियोंका परोक्ष बन्ध होता
है । मिच्छात्वका निरन्तर और शेष प्रकृतियोंका सात्तर बन्ध होता है । मिच्छात्वका दो
प्रतियोगि संयुक्त बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका मनुष्यगतिते संयुक्त बन्ध होता है ।
मिच्छात्वके बन्धके तीन गतिबोधे जीव स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके दो स्वामी हैं ।
बन्धात्मा और बन्धव्युच्छिन्नस्वाव सुगम हैं । मिच्छात्वका चारों प्रकारका बन्ध होता
है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अनुसंध बन्ध होता है ।

सम्पत्संज्ञानुसार सम्पत्तिद्विक जीवोंकी प्ररूपमा भोषके समान है ॥ २७५ ॥

यूँकि यहाँ भोषप्ररूपमासे कोई भेद नहीं है कत एव भोषके समान है देखा
जाना होता है ।

अभवसिद्धिणसु पचणाणावरणीय-णवदसणावरणीय सादासाद-
मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-चदुआउ-चदुगह-पचजादि-ओरा-
लिय-वेउविय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसठाण-ओरालिय-चेउवियअगो-
वग-छसघडण-वण्ण गध-रस-फास-चत्तारिआणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उव-
घाद-परघाद उस्सास आदावुज्जोव-दोविहायगह-त्तस-चादर थावर-सुहुम
पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर थिराधिर-सुहासुह-सुभग-दुभग
सुस्सर दुस्सर आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-
णीचुच्चागोद-पचत्तराडयाण को वधो को अवधो ? ॥ २७६ ॥

सुगम ।

सन्वे एदे वधा, अवधा णत्थि ॥ २७७ ॥

एदस्स देसामासियमुत्तस्स अत्थपरूवणा करिदे — एदामु पयडीसु एत्थ व कासिं पि
अपोदयवाप्पेदो अत्थि, उवटंममाणार्ण वोप्पेदविरोद्धदो । पंचणाणावरणीय-पउदंसणावरणीय

अभय्यसिद्धिक बीजोमें पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असत्ता
वेदनीय, मिष्यात्त, सोउह क्कयाय, नौ नोकयाय, चार भायु, चार गतिपां, पांच जप्तिपां,
औदारिक, वैक्रियिक, तेजस व कर्मज शरीर, छह संस्वान, औदारिक व वैक्रियिक अंगोलांग,
छह संहनन, वपे, गप, रस, स्पश, चार आनुपूर्वी, अगुरुत्तपु, उपपान, परपान, उप्पूरास,
आनास, ठपोत, दो विहायोमतिपां, शस, चादर, स्यावर, सुस्म, पयाप्त, अपयाप्त, प्रत्येक,
साधारणशरीर, रिवा, अस्तिर, सुम, अशुम, सुभग, दुभग, सुस्सर, दुस्सर, आदेय, अनोदेय
पराकीर्ति, अयशकीर्ति, मिमान, नीच व ऊच गोत्र और पांच अन्तपय, इनक कौन पन्थक
और कौन अययक दे ? ॥ २७६ ॥

एह गृह सुगम ह ।

ये सभी वपक दे, अययक नहीं दे ॥ २७७ ॥

एह दशमस्क श्लोक अथवी प्रकथना करत दे — इन महत्तियोंमें यहाँ किन्हीं
व भी वप आर उदयका प्युत्तइ नहीं दे वपेकि, विद्यमान ज्ञानम वम दामोद प्युत्तइका
विषय है । पांच ज्ञानावरणीय, आर दशमावरणीय मिष्यात्त तेजस व कर्मज शरीर,

पुरिस्वेदस्य पंचो सांतर-भित्तरो । कुदो ? एवम-मुक्कलेस्सिएसु भित्तरेषु वलंमादो । देवग-पवित्रियवादि-वेदवियसरीर-समचत्तरससंअण वेदवियसरीरंगोवंग-देवगइपाओमणु-पुन्वी-परमादुत्तास पसरथविहापण-तस-बादर-प-अच-पत्तेपसरीर-सुमग-सुस्सर-भादेव-उच्चागोदाण सांतर-गित्तरो पंचो । कुदो ? अमयेववासाउअ-सुहत्तिउेस्सिएतिरिक्ख मणुस्सिएसु च भित्तरेषु वलंमादो । मणुसगइ मणुसगइपामोग्गाणुपुन्वी पंचो सांतर-भित्तरो । कुदो ? आणदादिदेवसु भित्तरेषु वलंमादो । तिरिक्खग-तिरिक्खगइपामोग्गाणुपुन्वी पीचागोदाण पंचो सांतर-भित्तरो । कुदो ? तेउ-वाउक्कइएसु सचमपुव्वीभिरइएसु च भित्तरेषु वलंमादो । ओराटियसरीर-ओराटियसरीरंगोवंगणं सांतर-भित्तरो, सणक्कुमारदि देव-भारइएसु भित्तरेषु वलंमादो ।

सव्वकम्माण पचवेवास पचया । णवरि तिरिक्ख-मणुस्माउआण तेवंचास पचया, वेदवियमिस्स-कम्मइयपचयाणममावादो । देव-भिरमाउआण एकवंचास पचया, वेदवियपुगोराटियमिस्स-कम्मइयपचयाणममावादो । देवग-देवगइपामोग्गाणुपुन्वी-भिरमगइ भिरमगइपामोग्गाणुपुन्वी-वेदवियसरीर-वेदवियसरीरंगोवंगणमेकवंचास पचया, वेदविय

जाता है । पुरुषवेदका साम्तर-निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, एवम और शुक्ल छेदयापाक जीर्णो उक्त निरन्तर बन्ध पाया जाता है । देवगति पवेदियमाति वैदियिकराटीर, समचत्तरससंस्थान वैदियिकराटीरंगोवांग देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परधान उच्छ्वास मन्त्रस्थविहापणति प्रस बादर, पयांत, प्रत्यक्काटीर, सुमय सुस्सर, भादेव और उच्छ्वागत्रय साम्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि असंख्यातपराणुषु और सुम तान छेदयापाक तिर्यक् य मनुष्योमे उक्त निरन्तर बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीय साम्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, आनतादिक इहोमे उक्त निरन्तर बन्ध पाया जाता है । तिर्यगति, तिर्य गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका साम्तर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, तत्र य वायु त्रयिक जीर्णोमे तथा सप्तम पृथिवीक नारिकयोमे उक्त निरन्तर बन्ध पाया जाता है । भौतारिकराटीर और भौतारिकराटीरंगोवांगका साम्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि समस्तुमादि इय य नारिकयोमे उक्त निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

सब क्योंकि पचपन प्रत्यय है । विज्ञाप इतना है कि तिर्यगायु और मनुष्यायुके निरपन प्रत्यय है क्योंकि, यतिवकमिध और कर्मण प्रत्ययोच अभाव है । देवायु और नारकायुके इक्ष्वायन प्रत्यय है क्योंकि, वैदियिकदिक्, वातारिचमिध और कर्मण प्रत्ययोच अभाव है । देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, नरकगति नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैदियिकराटीर और वैदियिकराटीरंगोवांगक इक्ष्वायन प्रत्यय है क्योंकि वैदियिकदिक्,

हुगोयस्मिन्स्व-कर्मव्यपक्षयापममावाधो । बीहृदिय-तीहृदिय-भउरिहृदियवादि-सुहुम-अपय-
सहारण्यं तेषां पञ्चमा, वेउधियवुयामावाधो ।

सादावेद्रीय-इति-पुरिसवेद-इस्स-रदि-पस्त्वविहाययइ-समचउरससंख्य-विर-सुम-
सुमग-सुखर-आदेव-असकिचीं तिगइसंख्यो नपो, पिरयगई ममावाधो । पिरयाउ
पिरयगइ-विरयगइपाओमागुपुव्वीं विरयगइसंख्यो । देवाउ-देवगइ-देवगइपाओमागुपुव्वीं
देवमइसंख्यो । मनुसाउ-अनुसगइ-अनुसगइपाओमागुपुव्वीं मनुसगइसंख्यो । तिरिक्खाउ
तिरिक्खगइ तिरिक्खमइपाओमागुपुव्वीं अहुअदि-आहलुअओ-आवर-सुहुम-सहारण्यं
तिरिक्खगइसंख्यो । वेउधियसरी-वेउधियसरीभंगोवयां देव-विरयगइसंख्यो । ओपस्मि
सरी-ओपस्मिसरीभंगोवयां-असंख्य-असंख्य-अपन्नसपामकम्मां तिरिक्ख-मनुसगइसंख्यो
नपो । हुइसंख्य-अपस्मविहायगइ-अविर-असुइ-हुम-हुस्स-अपादेव-पीओमावाधं
तिगइसंख्यो, देवमई ममावाधो । उवायोइस्स हुगसंख्यो, विरय-तिरिक्खगईममावाधो ।
अपसेसां पयवीं नपो अठगइसंख्यो ।

देवाउ-विरयाउ-देवगइ-विरयगइ-बीहृदिय-तीहृदिय-भउरिहृदियवादि-वेउधियसरी-

औदारिकमित्र और काम्य प्रत्ययोंका अभाव है । द्वीमित्र भीमित्र चतुर्मित्र आदि
सुख अपर्णत और साधारणके विरपन प्रत्यय ई क्योंकि, उनके वैकल्पिककर्म
अभाव है ।

सादावेद्रीय स्त्रीवेद पुरुषवेद हास्य एति मशकविहायोगति समचतुरस्र-
संख्यात् स्थिर, हुम सुमग सुखर, अदेय और धरादीतिका तीव्र गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता
है क्योंकि, इनके साथ नरकगतिसे बन्धका अभाव है । नारकायु नरकगति और नरकगति
माओमागुपूर्वीका नरकगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । देवायु देवगति और देवगतिमाओमागु
पूर्वीका देवगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिमाओमागु
पूर्वीका मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । तिर्यगायु तिर्यगति व तिर्यगतिमाओमागुपूर्वी
तथा चार अतिमां जाताय उठोठ स्यावर, सुख और साधारणका तिर्यगतिसे संयुक्त
बन्ध होता है । वैकल्पिकशरीर और वैकल्पिकशरीरगोपणका देव एवं नरक गतिसे
संयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरगोपण चार संख्यात् छह संख्य
और अपर्णत नामकमोंका तिर्यगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है । हुइसंख्यात्
अपस्मविहायोगति अस्थिर, अहुम दुर्मग दुस्वर, अमदेय और पीओमावाध तीव्र
गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, इनके साथ देवगतिसे बन्धका अभाव है ।
उपसगोवध दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, उसके साथ नरकगति और
तिर्यगतिका बन्ध नहीं होता । शेष प्रकृतियोंका बन्ध चारों गतियोंसे संयुक्त होता है ।

देवायु मारकायु देवगति नरकगति द्वीमित्र भीमित्र चतुर्मित्र आदि,

बंगोर्वग-निरयगइ-देवगइपाभोगाणुपुम्बी-सुहुम-अपउज्जस-साहारणसरीरणं बपसस तिरिफ्फ-
मणुसा सामी । एइदियबादि-भादाय-भावराणं तिगइभिच्छाइही सामी, पेइयाणममावाओ ।
अवसेसाय पयडीणं अठगइमिच्छइही सामी, तेसिं सम्पवविरोहामावाओ ।

बंघट्टाणं पत्थि, एकन्दि गुणट्टाणे मट्टापविरोहो । बंघवोच्छेदो वि पत्थि, एत्थ
उत्तासेसपयडीणं पघुवर्त्तमाओ । बज्जमापपयडीसु घुवबंभीपमण्णादिमो पुवो बंघो । अवसेसायं
सादि अनुवो ।

सम्पत्ताणुवादेण सम्माइहीसु खइयसम्माइहीसु आभिणिबोहिम
णाणिमंगो ॥ २७८ ॥

जहा आभिणिबोहियणापपरुवणा कइ तेषा निरवसेसा अयप्पा, विससामावाओ ।
पवरि खइयसम्माइहिसंजइसंजइसु उप्पागोदसस सोदओ भित्तरो बपो, तिरिफ्फेसु खइय
सम्माइहीसु संजइसंजइसपणुवर्त्तमाओ । मणुसाठमं पंममाणापमिरियवेदपण्णओ पत्थि, देव
पेइएसु इत्थिवेदखइयसम्माइहीपममावाओ । एत्थिओ भेव विसेसो । अण्णो जदि अत्थि सो

बैद्धियकशरीर, बैद्धियकशरीरंगोपांग मरकगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी सूक्ष्म,
अपर्याप्त और साधारणशरीर इनके बन्धके तिरिफ्फ व मनुष्य स्वामी हैं । एकेन्द्रिय ज्ञाति
आहाप और स्थावरके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं क्योंकि मारकियोंके इनका बन्ध
नहीं होता । दोष प्रकृतियोंके बन्धके कारणे गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं क्योंकि, इनके
इन प्रकृतियोंके बन्धका कोई विरोध नहीं है ।

बन्धप्राप्तान नहीं ह क्योंकि एक गुणस्थानमें अप्पानका विराध है । बन्धमुच्छेद
भी नहीं है क्योंकि, यहाँ सूत्रोक्त सब प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । बन्धमान
प्रकृतियोंमें भुवबन्धी प्रकृतियोंका अमादि व भुव बन्ध होता है । दोष प्रकृतियोंका सादि
व अमुव बन्ध होता है ।

सम्पत्तवमागगाणुसार सम्पदधि और अयिक्कसम्पदधि जीवोंमें आभिनिबोधिक-
ज्ञानियोंके समान प्ररूपणा है ॥ २७८ ॥

त्रिस प्रकार आभिनिबोधिकज्ञानी जीवोंकी प्ररूपणा की गइ है उसी प्रकार
पूर्वरूपस यहाँ भी करना चाहिये क्योंकि, इनस यहाँ कार्य भेद नहीं
है । विरोध इतना है कि सायिकसम्पदधि संघटासंघटोंमें उप्पगावका स्वोत्प पय
निरुत्तर पण्य हाता है क्योंकि, तिरिफ्फ सायिकसम्पदधियोंमें संघटासंघट जीव पाय नहीं
जात । मनुष्यायुके बांधनेवास जीवोंके स्वीवेद प्रत्यय नहीं है क्योंकि, देव व मारकियोंमें
स्वीवेदी सायिकसम्पदधियोंका अभाव है । इतनी ही यहाँ विराधता है । अन्य कोई यदि

विशेष वसुधो । पयसिर्गन्धमेदपकृतपदसुसुतं भवति—

णवरि सादावेदणीयस्त को वधो को अवधो ? ॥ २७९ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्टिप्पट्टि जाव सजोगिकेवली वधा । सजोगि
केवलिअद्वाए चरिमसमय गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा,
अवेसेसा अवधा ॥ २८० ॥

एवं वि सुगम, यदुसो उक्तवशात् ।

वेदयसम्मादिट्टीसु पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय सादावेद
णीय-चतसंजलण-पुरिसवेद-हम्स रदि भय-दुगुप्पा-देवगति-पचिदियजादि
वेत्तव्विय-तेजा-कम्महयसरीर-समचउरससठाण-वेत्तव्वियअंगोवग-वण्ण-
गघ-रस-फास-देवगहपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवल्लुव-उवधाद-परधाद-
उस्तास-पसत्पविहायगइ-तस-धादर-पच्चत्त पत्तेयसरीर-धिर-सुम-सुमग

विशेषता है तो इसे विचारकर कहना चाहिये । प्रकृतिवत्त्वगत मेहके प्रकृपचार्य केसर
चल करते हैं—

विशेष यह कि सादावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अवधक है ? ॥ २७९ ॥

यह सब सुगम है ।

असंजदसम्पदधिमे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक है । सयोगकेवलिछदके अन्तिम
समयको जाकर बन्ध स्पृष्टिस्त होता है । ये बन्धक हैं, अथ अवधक हैं ॥ २८० ॥

यह सब भी सुगम है क्योंकि इसका वर्ण बहुत बार ध्या आ चुका है ।

वेदकसम्पदधियोंमें पाँच ज्ञानावरणीय छद वर्सनावरणीय, सादावेदनीय, पार
संभवठन, पुस्तवेद, हास्य, रति, भय दुगुप्पा, देवगति, वैश्वित्रिय जाति वैश्वित्रिक, वैश्व
वैश्वर्मण्य शरीर, समचतुरससंस्थान, वैश्वित्रिकशरीरांगोपांग, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगति
प्राप्तिपातुपुत्री, अगुरुत्तु, उपपात, परपात, उच्छ्वास, प्रसस्तविहायोपति, प्रस, वाद,

सुस्तर आदेज्ज जसकिंति णिमिणं तित्थयुरुन्नागोद-पंचतराहयाणं को
वधो को अवधो ? ॥ २८१ ॥

एत्थं अक्खसंवार काउण पण्णारस पण्णमंगा ठप्पाएवम्भा । सेरं सुग्गं ।

असजदसग्गमादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसजदा वधा । एदे
वंधा, अवधा णत्थि ॥ २८२ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स परूयणा कीरदे— देवगा-वेउन्विपदुमाप्पमत्तसजदसग्गमा-
दिट्ठिम्हि उदमो वोच्छिम्भो पुम्भमेव । अंधवोच्छेदो णत्थि, ठवरिम्हि यधुवत्तमादो । तित्थ
यस्स णत्थि उदयवोच्छेदो, एदस्स उदयोमात्तादो । अंधवोच्छेदो वि णत्थि, ठवरत्तमाप्पत्तादो ।
अवसेसाप्प पयसीम् अचोदयाणं दोण्णं वि वोच्छिदामावादो उदयादो अचो पुम्भं पण्णं वा
वोच्छिम्भो चिं ण परीक्खता कीरदे ।

पंचणापावरणीय अठदसपावरणीय-पंचिन्द्रियवादि-वेज्ञा-कम्मव्यसरीर-वण्ण गध रस-
पन्नस-मगुरुवत्तुव-तस-बादर नञ्च-धिर-मुह-णिमिण-पंचतराहयाण सोदमो अंधो, एव बुधो-

पचात्, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुमग, सुस्तर, आदेय, यशस्वि, निमाप, तीर्थकर, उच्छवोज
और पाँच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अवबन्धक है ? ॥ २८१ ॥

यहां भक्तसंवार करने कीदृष्टि गुणस्थान और सिद्धांके अग्रवर्ग एक सचोटी
पञ्चदश प्रभमंगोंको उत्पन्न करना चाहिये । दोष स्थाप्य सुमग है ।

अस्यतसम्यग्दृष्टिमे ठेकर अप्रमत्तस्यत तक-बन्धक है । ये बन्धक हैं, अवबन्धक
नहीं हैं ॥ २८२ ॥

इस देशामार्गक सूचकी प्रकृषणा करते हैं—देवगति-और-चन्द्रियविक्रिकता
उद्यम अस्यतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें पूर्वमें ही स्पृच्छित्त हो जाता है । अण्णस्युच्छद-अर्ही
है क्योंकि, ऊपर बन्ध पाया जाता है । तीर्थकर मरुत्तिका उद्यमस्युच्छद नहीं है क्योंकि
सापोपशमिकसम्यग्दृष्टिमें उसको उद्यमका अभाव है । उमक बन्धका स्पृच्छद भी नहीं है
क्योंकि वह पाया जाता है । दोष महतिपोंके बन्ध और उद्यम दोनोंके भी स्पृच्छदक
अभाव होनेसे उद्यमकी अपेक्षा बन्ध पूर्वमें अधिक पक्का स्पृच्छित्त होता है । वह
परीक्षा नहीं की जाती है ।

पाँच अनावरणीय चार ईशानावरणीय पंचिन्द्रिय वाति वैजस्र वचर्मण शरीर,
वण गध, रस, स्पर्श, मगुरुवत्तु, 'अस', बाह्य, पचात्, स्थिर, शुभ, 'निर्माण' और 'पाँच

दयत्तरो । विद्या-पयत्न-साक्षात्देवीय-वृत्तसंयत्न-पुरिसवेद-हस्त-रवि-मय-तुमुंछ-समचरस-
 संयत्न-पराव्यविद्यामय-सुस्तरणं सोदय-परोदयो बंधो, बोधि वि पयोदि बंधुवर्त्मनो ।
 देवयज्ञ-वृद्धिपयदुग-तित्त्वयणं परोदयो बंधो, सोदय बंधविरोहारो । उवाच-परमात्
 उवाच-पतेयसरीरं असंयदसम्मादिदिदि बंधो सोदय परोदयो । उचरि सोदयो वेध, तत्र
 अप-वृत्तदय जमावरो । पचरि पयत्नसंयदमि परमात्सुसाध्यं सोदय-परोदयो । सुमयदेव-
 वसकिपीयमसंयदसम्मादिदिदि बंधो सोदय-परोदयो । उचरि सोदयो वेध, पठिबन्धुवर्मा-
 मावरो । उवाचमोदस असंयदसम्मादिदिदि संयदासंयदेसु बंधो सोदय-परोदयो । उचरि
 सोदयो वेध, पठिबन्धुवर्मावरो ।

बंधाभावरणीय-संयत्नपराव्य-वृत्तसंयत्न-पुरिसवेद-मय-तुमुंछ-देवयज्ञ-पीय-
 विद्या-पयत्न-साक्षात्देवीय-वृत्तसंयत्न-पराव्यविद्यामय-सुस्तरणं-सोदय-परोदयो-
 पयत्न-पतेयसरीर-सुमय-सुस्तर-सादेव-पिमि-तित्त्वयण-परोदयो-बंधो-विरोधो,

अनसङ्गार्थे स्वेत्य बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ ये जुबोदयी हैं । विद्या प्रकाश
 साक्षात्देवीय चार संयत्न पुनःपुनः हास्य रति मय तुमुंछा समचरससंस्याव
 प्रकाशविद्यायोगति और सुस्तरार्थ स्वेत्य परोदय बन्ध होता है, क्योंकि दोनों भी
 प्रकाशसे सम्यक् बन्ध पाया जाता है । देवयज्ञिक, वैदिकिक और तीर्थंकरार्थ परोदय
 बन्ध होता है क्योंकि, स्वेत्यसे इसके बन्धका विरोध है । उपपन्न परमात् उवाच
 प्रत्येकशरीरार्थ असंयदसम्मादिदि गुणस्यात्मने स्वेत्य परोदय बन्ध होता है । ऊपर
 स्वेत्य ही बन्ध होता है क्योंकि वहाँ अपर्याप्तकायका जमाव है । विरोधता इसकी है
 कि प्रत्यक्षपत गुणस्यात्मने परमात् और उवाचार्थ स्वेत्य परोदय बन्ध होता है ।
 सुमय भवेत् और पयत्नार्थ असंयदसम्मादिदि गुणस्यात्मने स्वेत्य परोदय बन्ध
 होता है । ऊपर स्वेत्य ही बन्ध होता है क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका
 जमाव है । उवाचार्थ असंयदसम्मादिदि और संयत्नार्थोंमें स्वेत्य परोदय बन्ध
 होता है । ऊपर स्वेत्य ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके उवाच
 जमाव है ।

पांच साक्षात्देवीय छह साक्षात्देवीय चार संयत्न पुनःपुनः मय तुमुंछा
 देवयज्ञ पयत्न विद्या योगति वैदिकिक वैदिक व कर्मय शरीर, समचरससंस्याव वैदिकिक-
 शरीरार्थोंपांच बंध बन्ध रस स्वर्ग देवयज्ञिमायोगाहुपूर्ण अगुस्तर उपपन्न
 परमात् उवाच प्रकाशविद्यायोगति असंयद पर्याप्त प्रत्येकशरीर, सुमय सुस्तर,
 भवेत्, विद्या तीर्थंकर, उवाच और पांच अनसङ्गार्थ विरोध बन्ध होता है, क्योंकि,

एतस्मिन् एव वचसामिदं भावाद्दे । सादावेदणीय-इत्स-अति-पिर-मुम-असकिचिण्ण असंजदसम्मादिहि-
प्यदुहि जाव पमसंसंजदो वि वंचो सांतो । उवरि पिरतो, पडिवक्खपयडिंभाभावाद्दे ।

पण्णया सुगमा, भोषपण्णदितो विससामावाद्दे । देवगाइ-वेठप्पियदुगार्ण देवगाइ
संजुतो । सेसाणं पयडीण असंजदसम्मादिहिंमु वंचो दुगाइसंजुतो । उवरिमेसु देवगाइसंजुतो ।
देवगाइ-वेठप्पियदुगाय तिरिक्ख-भणुसअसंजदसम्मादिहि-संजदासंजदा सामी । तिरियरस्स
तिगाइअसंजदसम्मादिहिंमो सामी, तिरिक्खयईए जमावाद्दे । उवरिमा मणुसा चैव,
तेसिमण्णयाभावाद्दे । सेसाणं पयडीण वउगाइअसंजदसम्मादिहिंमो दुगाइसंजदासंजदा मणुसगाइ
संजदा च सामी । वचद्वयं सुगमं । वचवोच्छेदो अति, 'अवंचा पत्थि' ति वचवाद्दे ।
पुवर्षणीयं तिविदो वंचो, पुवामावाद्दे । सेसाणं सादि-अजुवो, अजुवर्षणियाद्दे ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-अमुह-जसकिचिणामाण
को वधो को अवधो ? ॥ २८३ ॥

एव पण्णमगा जायिय वत्तमा ।

एक समयसे इनके वचसामिदं समाप्त है । सादावेदणीय, इत्स एति स्थिर, मुम और असादावेदणीय असंजदसम्मादिहिसे लेकर ममसंसंजद तक साम्तर वच्य होता है । ऊपर निरन्तर वच्य होता है क्योंकि वही प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वच्यका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम हैं क्योंकि, भोषप्रत्ययोंसे थोड़ा विरोधता नहीं है । देवगतिद्विक और वैद्विकद्विकव्य देवगतिचतुष्क वच्य होता है । शेष प्रकृतियोंका असंजदसम्मादिहिमें दो गतियोंसे संयुक्त वच्य होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवगतिचतुष्क वच्य होता है । देवगतिद्विक और वैद्विकद्विकव्य तिर्यक् व मनुष्य असंजदसम्मादिहि एवं संयतासंयत सामी हैं । तीर्थकरप्रकृतिके तीन गतियोंके असंजदसम्मादिहि सामी हैं, क्योंकि तिर्यग्गतियें उसके वच्यका अभाव है । उपरिम गुणस्थानपत्ती मनुष्य ही स्वामी हैं क्योंकि, इनका अन्य गतियोंमें अभाव है । शेष प्रकृतियोंके चारों गतियोंके असंजदसम्मादिहि, दो गतियोंके संयतासंयत और मनुष्यगतिके संयत स्वामी हैं । वच्यपण्णया सुगम है । वच्यपुच्छेद नहीं है क्योंकि, अवच्यक नहीं है ऐसा स्वयं निर्दिष्ट है । पुवर्षणी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका वच्य होता है क्योंकि पुव वच्यका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अजुव वच्य होता है क्योंकि, वे अजुववर्षणी हैं ।

असादावेदणीय, अरति, ओक, अस्थिर, अशुम और अयशस्विता नामकर्मक । कौन वच्यक और कौन अवच्यक है ? ॥ २८३ ॥

यहां प्रश्नमार्गोंके ज्ञानकर कहा जादिय ।

अमंजदसम्मादिद्विष्णुहृदि-जाव-पमत्तसजदा वधा । एदे वधा
अवसेसा अवधा ॥ २८४ ॥

एवस्त्वो सुवदे— अदि सोम-अम्रातावेदमीय-अवि-अमुमाने वधोच्छेदो वेव ।
उद्वबोच्छेदो पति, उवदिमि उदयस्सुवर्तमादो । अजसकिचीय पुम्सुदयस्स; पम्सु वपम्स
वोम्मेदो, पमत्तसमदसम्मादिद्विष्णु वधोदयवोच्छेदुवर्तमादो । असातावेदमीय-अरि-सोम
वधो; सोदय-परोदमो; दोहि वि पयोदि वधुवर्तमादो । अवि-अमुहापं सोदवो वेव
पुवोदममादो । अजसकिचीय असंजदसम्मादिद्विष्णु सोदय-परोदवो । उवदि-परोदवो वेव
पविदन्सुदयामादो । एदासि उवदि पयवधि वधो सातरो; पगसमएव वि पपुवरमदसमादो ।

पम्सया सुग्मा, वहुसो तत्तच्छेदो । देव-अमुसगइसंस्तो वेव, अजसमदसमादो ।
अजसमदसम्मादिद्विष्णो इगइसवदसंस्तो मनुसगइसंस्तो च सामी । वधद्वानं वध
वोच्छिन्नद्वानं च सुगम । सम्पासि वधो सादि अमुवो, अमुववधिच्छेदो ।

असंयतसम्पद्यधिसे ऐकर प्रमत्तसंयत तक वन्धक है । ये वन्धक हैं, जेव अवन्यक
हैं ॥ २८४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—अरति शोक असातावेदमीय अस्विर और अमुमका
वन्धव्युत्पन्न ही है । उदयव्युत्पन्न नहीं है, क्योंकि, ऊपर उक्तका उदय पाया जाता है ।
अपराधीति के पूर्वमें उदयका और पश्चात्-वन्धका व्युत्पन्न होता है क्योंकि, प्रमत्तसंयत
और असंयतसम्पद्यधि गुणस्वामीमें क्रमसे उसके वन्ध और उदयका व्युत्पन्न पाया जाता
है । असातावेदमीय अरति और शोकका स्वोदय परोक्ष वन्ध होता है क्योंकि, दोनों
ही प्रकाशसे वन्ध पाया जाता है । अस्विर और अमुमका स्वोदय ही वन्ध होता है
क्योंकि, वे लुप्तव्यो हैं । अपराधीति का असंयतसम्पद्यधि गुणस्वामीमें स्वोदय परोक्ष
वन्ध होता है । ऊपर परोक्ष ही वन्ध होता है क्योंकि वहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका
अभाव है । इन सब प्रकृतियोंका वन्ध सात्तर होता है क्योंकि एक समयसे ही
उक्त वन्धविधायक देला जाता है ।

प्रलय सुगम है, क्योंकि, बहुत बार कहे जा चुके हैं । देव और मनुष्य-पक्षसे
संपुष्ट ही वन्ध होता है क्योंकि, वहाँ वन्ध पक्षियोंके वन्धका अभाव है । वहाँ पक्षियोंके
असंयतसम्पद्यधि दो गतियोंके संप्रतासंयत और मनुष्यगणिके संप्रत स्वामी हैं ।
वन्धापराध और वन्धव्युत्पन्नस्थाय सुगम हैं । सब प्रकृतियोंका वन्ध स्पष्ट व अक्षुब्ध
होता है क्योंकि, वे अक्षुब्धवन्धी हैं ।

अपञ्चकस्त्राणावरणीयकोह माण-माया-लोह-मणुस्साउ-मणुसगइ
ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहस्रघट्टण-मणुसाणु-
पुन्वीणामाण को धधो को अवंधो ? ॥ २८५ ॥

सुगमं ।

असजदसम्मादिट्ठी धधा । एदे धधा, अवसेसा अवधा
॥ २८६ ॥

अपञ्चकस्त्राणावरणपञ्चक-मणुसगइपामोमाणपुन्वीण बज्जेइया समं वोप्पिण्णा,
असंभदसम्मादिट्ठिहि तदुदयवोप्पेदुवलमादो । मणुसगइ-मणुसाउ-ओरालियसरीरअगोवग
व-जरिसहस्रघट्टणं धधवोप्पेदो धेव, ठवर्णि पि' उदयदसमादो । अपञ्चकस्त्राणपञ्चकस्स
धधो सोदय-परोदो । सेसाण परोदो धेव, सोदण्ण बज्जविरोदादो । इसण्णे पयडीधं धधो
भिरंतो, एगसमएण धधवरमाधावादो । अपञ्चकस्त्राणपञ्चकस्स पालीस पयया । मणुसाउमस्स
वादीस, ओरालियदुग-वेअवियमिस्स-कम्मइयपञ्चपाणममावादो । सेसाणं धोदासीस,

अप्रत्याख्यानावरणीय क्रोध, मान, माया, लोभ, मनुष्यायु, मनुष्यगति, बौद्धिक
शरीर, बौद्धिकशरीरांगोपांग, अन्नपमसहनन और मनुष्यानुपूर्वी नामकर्मका कौन बन्धक
और कौन अपबन्धक है ? ॥ २८५ ॥

यह सब सुगम है ।

असंयतमम्यगृहि बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष अपबन्धक हैं ॥ २८६ ॥

अप्रत्याख्यानावरणपञ्चक और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विका बन्धक अ उदय दोनों
साथमें धुक्किछ हाते हैं क्योंकि असंयतसम्यगृहि गुणस्थानमें उन दोनोंका धुक्किछ
पाया जाता है । मनुष्यगति मनुष्यायु बौद्धिकशरीरांगोपांग और अन्नपमसहननका
केवल पञ्चमधुक्किछ ही है क्योंकि, ऊपर में उनका उदय देखा जाता है । अप्रत्याख्याना
पञ्चकपञ्चकका पञ्च स्वोदय परोदय हाता है । दोय प्रकृतियोंका परोदय ही पञ्च होता है
क्योंकि, स्वोदयसे इनके पञ्चक बिरोध है । यहाँ प्रकृतियोंका पञ्च निरन्तर होता है,
क्योंकि, एक समयसे इनके पञ्चविधानका अभाव है । अप्रत्याख्यानावरणपञ्चकके बाकीस
प्रत्यय हैं । मनुष्यायुका व्याखीन प्रत्यय है क्योंकि, बौद्धिकशरीर वैदिकियकमिध और
कर्मण प्रत्ययोंका अभाव है । दोय प्रकृतियोंके अपासीस प्रत्यय हैं क्योंकि, इनके भीदा

भेदादियदुगामादौ । अपञ्चकस्यावचउकसस देव-मनुसगइसङ्ख्ये । सेसाव मनुसगइसङ्ख्ये, सामानिवादी । अपञ्चकस्यावचउकसस चउगइसङ्ख्येसम्मादिहिमो सामी । सेसाव देव-भेदाया । वंचद्वानं नत्थि, एककमिह नद्वानविणेहादौ । वंचवेप्पिण्णहाव सुगमं । अपञ्च-कस्यावचउकसस तिविहो वंचो, धुवामादौ । सेसाव छादि-अनुवो, मनुववंचिहादौ ।

पञ्चकस्यावचउकसस माण माया-लोभाण को अधो को अवधो ? ॥ २८७ ॥

सुगमं ।

असजदसम्मादिद्वी सजदासजदा वधा । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ २८८ ॥

एदासि सजदासजदमिह अकमेव वाप्पिण्णवंचोद्वानं, सेदय-वंचोद्वमिह विंत्त वंचोद्व, असजदसम्मादिद्वी-सजदासजदेसु जहाकमेव छाउउ-सचसीसपञ्चयाव, देव-मनुसग-संख्येसंख्येव, चउगइ-दुगइसंख्येसम्मादिद्वी-सजदासजदसमीत्याप, असजदसम्मादिद्वी-सजदा-

रिक्खिक्ख अमान है । अस्यावचउकससवचउकसस देव व मनुष्य गतिसे समुक्त बन्ध होता है । दोष प्रकृतिपोंका मनुष्यगतिसेसंयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । अस्यावचउकससवचउकसस चाहे गतिपोंके असंयतसम्बन्धहाव लामी हैं । दोष प्रकृतिपोंके देव व मनुष्य लामी हैं । बन्धावचउकसस नहीं है क्योंकि, एक गुणस्यावचउकसस अस्यावचउकसस विरोध है । बन्धावचउकसस सुगम है । अस्यावचउकससवचउकसस तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि, छुप बन्धका अमान है । शाय प्रकृतिपोंका चाहे व मनुष्य बन्ध होता है क्योंकि, वे समुक्तबन्धी हैं ।

अस्यावचउकससवचउकसस कोष, मान, माया और ऐमका क्षेत्र बन्धक और क्षेत्र बन्धक है ॥ २८९ ॥

यह सब सुगम है ।

असंयतसम्बन्ध और संयतसंयत बन्धक है । य बन्धक है, दोष बन्धक है ॥ २९० ॥

इस बार प्रकृतिपोंका बन्ध और उदय दार्जों एक साथ संयतसंयत गुणस्यावचउकसस होते हैं । अस्यावचउकसस सहित निगूठर बन्ध होता है । असंयतसम्बन्धहाव गुणस्यावचउकसस और संयतसंयत गुणस्यावचउकसस संतीस प्रत्यय हैं । इस और मनुष्य गतिसे समुक्त बन्ध होता है । चाहे गतिपोंके असंयतसम्बन्धहाव और दो गतिपोंके संयतसंयत लामी हैं । असंयतसम्बन्धहाव और संयतसंयत बन्धावचउकसस हैं । संयतसंयत गुण

सज्जद्वयाणं, समवासंअरुमि वोच्छिज्जवयाणं, धुवेण' विणा तिविहवंधुवगयाणं परवणा सुग्गा ।

देवाउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ २८९ ॥

सुग्ग ।

असज्जदसम्मादिट्ठिण्हुडि जाव अप्पमतसज्जदा वधा । अप्पमत
द्वाए संखेज्जे भागे गत्तूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा
अवंधा ॥ २९० ॥

एदस्स मत्थो उच्येदे । तं अहा — पुण्हमुदमो पच्चम [वंधो] वोच्छिज्जदि,
अप्पमतसंअदसम्मादिट्ठीसु बभोअयवोच्छेदुत्तमादो । परोदमो, निरंतरो, असंअदसम्मादिट्ठीसु
पेउअियवुगोरात्थिमिस्स-कम्मइय-पच्चयाणममावादो वादाअिसपच्चमो, उअरिमेसु गुणहाणेषु
ओषपच्चमो, देवपइसंहुतो, दुग्गअसअदसम्मादिट्ठि-संबासंअद-मनुसगाइसंअदसामीओ,
असअदसम्मादिट्ठि-संबासंअद-यमत्त-अप्पमतसंअदद्वानो, अप्पमतद्वाए संखेज्जेसु भागेसु
पच्छविठमो, सादि मत्तुओ, देवाउअस्स वंधो ति अवगंतवो ।

स्थानमें बन्ध व्युत्पिन्न होता है । कुछ बन्धोंके बिना शेष तीन प्रकारका बन्ध होता है ।
इस प्रकार इनकी प्ररूपणा सुग्ग है ।

देवासुक्का कीन बन्धक और कीन अपव्यक है ? ॥ २८९ ॥

एह सुव सुग्ग है ।

असंयतमयम्यदिसे लेकर अप्रमत्तसयत तक बन्धक है । अप्रमत्तसंयतकालके संस्कार
बहुभाग जाकर बन्ध व्युत्पिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अव्यक्त हैं ॥ २९० ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है—देवासुक्का पूर्वमें उच्य और पश्चात्
बन्ध व्युत्पिन्न होता है क्योंकि, प्रमत्त और असंयतसम्पददि गुणस्थानोंमें कामसे उत्पन्न
बन्ध व व्युत्पन्न व्युत्पेद पाया जाता है । परोक्ष और निरन्तर बन्ध होता है । असंयत
सम्पददिपयोमें वैकल्पिक, औदारिकमिध और कामज काययोग प्रत्ययोंका अभाव इत्थेस
प्यासीस प्रत्यय हैं । उपरिम गुणस्थानोंमें ओषके नामाप्रत्यय हैं । वज्रगतिस्तुच्छ बन्ध
होता है । दो गतिपोंके असंयतसम्पददि व संयतान्ययत तथा मनुष्यगतिके सयत स्थामी
हैं । असंयतसम्पददि सयतान्ययत प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयत बन्धप्रधान हैं । अप्रमत्त
कामक संस्कार बहुभागोंके बीतनेपर बन्धव्युत्पेद होता है । सादि व अमुप बन्ध होता
है । इस प्रकार देवासुक्के बन्धकी प्ररूपणा जानना चाहिये ।

आहारसरीर-आहारसरीरगोवंगणामाण को बधो को अबंधो ?

॥ २९१ ॥

सुगम ।

अप्यमत्तसजदा वधा । एदे बंधा, अवसेसा अबधा ॥ २९२ ॥

एदस्स अत्थो सुगमो ।

उवसमसम्मादिट्ठीसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-जसु

कित्ति-उच्चागोद-पंचतराइयाणं को बधो को अबधो ? ॥ २९३ ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिट्ठिप्पहुट्ठि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा बधा ।

सुहुमसांपराइयउवसमद्वाए चरिमसमय गतूण बधो वोच्छिज्जदि ।

एदे बंधा, अवसेसा अबधा ॥ २९४ ॥

पंचपाणावरणीय-चउदसणावरणीय-असत्तिष्ठि ठप्पामोद-पंचतराइयाणं बंधवोच्छेदो

आहारकसरीर और आहारकसरीरामोपांग नामकमोक्ष क्षेत्र बन्धक और क्षेत्र बन्धक है ? ॥ २९१ ॥

एद सृज सुगम है ।

अप्रमत्तसंयत बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २९२ ॥

एद सृज अर्थ सुगम है ।

उपश्रमसम्पत्ति जीवोर्मे पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पञ्चकीर्ति, ऊंच गौत्र और पांच अन्तर्गम्य क्षेत्र बन्धक और क्षेत्र अबन्धक है ? ॥ २९३ ॥

एद सृज सुगम है ।

असंयतसम्पत्ति ठेकर सूक्ष्मसाम्पत्तिक द्वाश्रमक तक बन्धक है । सूक्ष्मसाम्पत्ति-पिण्डउपश्रमककृतके अन्तिम समवको आकर बन्ध म्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २९४ ॥

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय पञ्चकीर्ति, उच्चगौत्र और पांच अन्त

येव । उदयबोच्छेदो णत्थि, स्त्रीणरुसायादिसु वि एदासिं पयङ्गीणं उदयवसपादो । तेष उदय बोच्छेदादो षंभवोच्छेदो पुन पण्य वा होदि चि विचारो णत्थि, सतासताणं सण्णियास विरोहादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-पचतएइयाण सोदमो षंघो । असकिटीए असंजदसम्मादिट्ठीसु सादय परोदमो । उवरि सेदमो षेष, पडिवक्खुदयामावादो । उच्चा-गोदस्स असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासज्जेसु सोदय-परोदमो । उवरि सोदमो षेष, पडिवक्खुदयामावादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-उच्चागो-पचतराइयाण षधो गिरंतरो, पुन षधित्तादो । असकिटीए असंजदसम्मादिट्ठिपट्ठि जाव पमत्तसंजदो ति षधो सत्तरो । उवरि गिरंतरो, पडिवक्खपयडिबधामावादो । पचया सुगमा । णवरि असंजदसम्मादिट्ठीसु भोरा-त्थियिस्सपचमो, पमत्तसंजदेषु माहारदुगपच्चमो णत्थि । असंजदसम्मादिट्ठीसु एदासिं पयङ्गीणं षधो देव-मणुसगइसंजुतो । उवरिमेषु गुणहाणेषु देवगइसंजुतो अगइमजुतो वा । चउगइमसंजदसम्मादिट्ठी दुगइसंजदसंजद मणुमगइसज्जा सामीओ । षंघहाणं षधोत्थिग्ग हाणं च सुगमं । पुवर्षणीय तिविहो षंघो, पुवामावादो । अबसेसाणं सादि अनुवा, अनुव षधित्तादो ।

रायका बन्धन्युच्छेद ही है । उदयन्युच्छेद नहीं है क्योंकि स्त्रीणरुसायादिक गुणस्थानोंमें भी इन प्रकृतियोंका उदय होता जाता है । इसी कारण उदयन्युच्छेदसे बन्धन्युच्छेद पूर्वमें या पश्चात् होता है यह विचार नहीं है; क्योंकि सत् और असत्की तुल्यताका विरोध है ।

पाँच धानावरणीय चार दर्शनावरणीय और पाँच अन्तरायका स्वरूप बन्ध होता है । पञ्चार्तिष्ठा असंयतसम्यग्दृष्टिोंमें स्वरूप परोक्ष बन्ध होता है । ऊपर स्वरूप ही बन्ध होता है क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका समाय है । उच्छगायका असंयतसम्यग्दृष्टि और सयत्तासंयत शुभस्थानोंमें स्वरूप परोक्ष बन्ध होता है । ऊपर स्वरूप ही बन्ध होता है क्योंकि यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिक उदयामाय है ।

पाँच धानावरणीय चार दर्शनावरणीय उच्छगात्र और पाँच अन्तरायका बन्ध निरन्तर होता है क्योंकि, वे अक्षरणीय हैं । पञ्चार्तिष्ठा असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसंयत तक मान्तर बन्ध होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, ऊपर प्रतिपक्ष प्रकृतिक बन्धका समाय है ।

प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें आहारिकान्ध प्रत्यय और प्रमत्तसंयतमें आहारकद्विक प्रत्यय नहीं है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें इन प्रकृतियोंका बन्ध दृढ व मनुष्य गतिसेयुक्त होता है । अपरिम गुणस्थानोंमें क्षणगतिसेयुक्त या भगति सेयुक्त बन्ध होता है । चारों गतिषोंका असंयतसम्यग्दृष्टि वा गतिषोंका सयत्तासंयत, और मनुष्यगतिके संयत स्थानों हैं । बन्धापान और बन्धन्युच्छिन्नप्रस्थान सुगम हैं । प्रत्ययधी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है क्योंकि इनके छप पक्षका समाय है । छप प्रकृतियोंका सादि व अमुच बन्ध होता है, क्योंकि, वे अमुचबन्धी हैं ।

गिह-पयलाण को वंधो को अवधो ? ॥ २१५ ॥

सुपर्ण ।

असजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव अपुब्बकरणउवसमा वधा ।
अपुब्बकरणउवसमद्वाए संखेज्जदिम भाग गतूण वंधो वोच्छिज्जदि ।
एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २१६ ॥

एरासि वंधो पुम्ब बोच्छज्जदि । उदयवोच्छेदो वरिय, खीमकसापसु वि उदय
ईसारादो । सोदय-फोदयो वंधो, वज्जवोदयत्तरो । मिंतणे, सुवर्णविद्यारो । असंखदसम्मा-
दिट्टिमु वंधेतात्थिअ पच्चया, भोरात्थिमिस्सपच्चयामावादो । पमत्तसंखदमि वधीसं पच्चया,
वाहरदुयामत्तादो । सेसमुपट्ठोपेसु मावपच्चयो, विसेसामावादो । असंखदसम्मादिट्टिमि
देव-मनुसगाइसंढुत्थे, उरिमिसे देवपसंढुत्थे, अउगइमसंखदसम्मादिट्टि-मुगाइसंखदसंखद

निद्रा और प्रवृत्तक कौन वन्यक और कौन अवश्यक है ? २१५ ॥

यह सब सुगम है ।

असंयतसम्पत्तिसे लेकर अपूर्वकरण उपद्रमक तक वन्यक है । अपूर्वकरण उपद्रम
कृतक संस्थातर्वा माय आकर वन्य व्युत्पिन्न होता है । ये वन्यक हैं, सेव अवश्यक
हैं ॥ २१६ ॥

रत्नक वन्य पूर्वमे व्युत्पिन्न होता है । उदयवुच्छेद महीं है क्योंकि, खीमकसाप
जीवोंमें भी उलका उदय देखा जाता है । उदय-परादय वन्य होता है क्योंकि, ये
अपुवोत्पत्ति हैं । विरत्तर वन्य होता है क्योंकि, सुवर्णपत्ति हैं । असंयतसम्पत्तिपूर्वमे
पैतासीस प्रत्यय हैं क्योंकि, भौतपरिक्रमिअ प्रत्ययक वहां समाव है । प्रमत्तसंयत गुण
व्याप्तमे वारंअ प्रत्यय हैं क्योंकि, वहां माहारकट्टिकका समाव है । शेष गुणव्याप्तोंमें जोध
प्रत्ययोंसे संयुक्त वन्य होता है क्योंकि, जोधसे वहां कोई विशेषता महीं है । असंयत
सम्पत्तिपरि गुणव्याप्तमें दय व मनुष्य गतिमे संयुक्त तथा अपरिम गुणव्याप्तोंमें देवगति
संयुक्त होता है । वारों गतिवौक असंयतसम्पत्तिपरि दो गतिवौके संयतासंयत और मनुष्य

मनुष्यगर्भसंज्ञासीमो, अश्वगमपक्ष्मासी, अपुष्पकरणद्वारा संज्ञेन्द्रादिमे मागे गपधिपासो,
पुनर्बन्धितो तिविहासो विद्या-पयत्नो धरो ।

सादावेदनीयस्त को बधो को अवधो ॥ २९७ ॥

सुगमं ।

असजदसम्मादिद्विष्टुहृदि जाव उवर्मंतकसायवीयरागछदुमत्या
बधा । एदे बधा, अवधा गत्यि ॥ २९८ ॥

मधुषोष्ठेर्द मोत्तु उदयशोष्ठेर्दमावाशो, सोदय-परोदयर्षादो, असजदसम्मादि जाव
पमत्तसन्धो वि सातरं धंविदुत्तुवि नितरं धंवितादो, मोवपच्छर्द्धितो असंजदसम्मादिद्वि-
धमत्तसंज्ञे मोत्तु अणत्त समापपच्छयसादो, असंजदसम्मादिद्विधमत्तसंज्ञेसु मोराष्टिय
मिस्साहारदुगामावाशो, असंजदसम्मादिद्विधु दुगर्भसंज्ञादो ठ्वरि देवगर्भसंज्ञासंज्ञादो,
अठगर्भसंज्ञदसम्मादिद्विधुगर्भसंज्ञासंज्ञद-मनुष्यगर्भसंज्ञदसामिबधादो, धंविन सादि-अदुव
सादो सुगममेद ।

गतिरूप सेवत स्वामी है । बन्धावधाम बात ही है । अपुष्पकरणद्वारा संज्ञातर्षा मागे
धीतनेपर बन्ध व्युत्पन्न होता है । पुनर्बन्धी होनेसे निद्रा व प्रच्छाका तीन प्रकार बन्ध
हस्ता है ।

सादावेदनीयका केन बधक और केन अवधक है ? ॥ २९७ ॥

यह सब सुगम है ।

असंयतसम्यग्दृष्टिमे लेख उपशान्तकपाय वीतराम छद्मस्य तरु बधक है । ये
बन्धक है, अवधक नहीं है ॥ २९८ ॥

सादावेदनीयके बन्धव्युत्पन्नको छोड़कर उदयव्युत्पन्नका अभाव होनेसे, स्वोदय
परोदय बन्ध होनेमे असंयतसम्यग्दृष्टिमे सत्तर प्रमत्तसंयत तरु साप्तर बधकर ऊपर
मिरगतरबन्धी होनेसे असंयतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयतोंको छोड़कर अग्यत्र मोक्षक अमान
मत्तय युक्त होनेसे प्रमत्तसम्यग्दृष्टिमें मोक्षारिधिमिध और प्रमत्तसंयतोंमें आहारपिष्टका
अभाव होनेसे असंयतसम्यग्दृष्टिमें दो गतिपोंसे संयुक्त तथा ऊपर देवगतिर्मयुक्त बन्ध
होनेसे, चाहे गतिपोंके असंयतसम्यग्दृष्टि, हा गतिपोंके संयतार्णय और मनुष्यगतिरूप
सपथ स्वामी होनेसे, तथा बन्धसे सादि व अमय होनेसे यह सब सुगम है ।

असादावेदणीय अरदि-सोग अथिर-असुह-अजसकिच्छिणामाण
को बधो को अवधो ? ॥ २९९ ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिद्विष्णुहृदि जाव पमत्तसजदा बधा । एदे बधा,
अवसेसा अवधा ॥ ३०० ॥

सुगममेद, मदिषाप्पममाणाए पक्खित्त्वच्छाओ ।

अपच्चक्ख्वाणावरणीयमोहिणाणिभगो ॥ ३०१ ॥

अपच्चक्ख्वाणवठक्क-मज्झमगइ बोरात्थियसरीर-बोरात्थियसरीरबंगोबंग-बन्धरिसिद-
समइण-मज्झमगइआओगमात्सुपुब्बीए एत्थ गहणं कयध्वं, देसामासियच्छाओ । सेसं सुगमं ।
णत्तरि बोरात्थियमिस्सपच्चओ अवधेयओ । कचं वेत्थियमिस्स-ऊम्मन्याप्पमुवत्तेओ ? उव
समसम्मत्तेए उवसमसेहिं पडिय क्कत्तं काऊज देवेसुप्पण्णायं तदुवत्तेमाओ ।

भमानावेदनीय, अरदि, सोक, जरिब, अज्झम और अजसकीर्ति नामकमोका कौन
पन्थक और कौन अनन्थक है ? ॥ २९९ ॥

यह सून सुगम है ।

अमपत्तमप्यरदिसे लेकर प्रमत्तमयत तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, ओप अवपक
है ॥ ३०० ॥

यह सून सुगम है क्योंकि, मदिबान मार्गजामे इसके अर्थकी प्रत्यक्षा की
आप्पुछी है ।

अप्रत्यास्त्वान्नावरणीयकी प्रकृष्टता अवभिज्ञानियोंके समान है ॥ ३०१ ॥

अप्रत्यास्त्वान्नावरणअनुक्क, मनुप्पमणि भौतारिकदासीर, भौतारिकदासीरोगोपाय
अज्झमसंत्तम धाए मनुप्पगतिप्रायोग्यानुपूर्वाक्क वहाँ ग्रहण करना चाहिय क्योंकि वह
गूढ बुद्धिमत्तक है । सोय प्रकृष्टता सुगम है । बिचार इतना है कि भौतारिकमिअ प्रत्यक्षको
कम करना चाहिये ।

उदा—यैकियिअमिअ धोर कामज जाययोग वहाँ कैस पाय जात है ?

समाधान—अपशमसम्यक्त्वके साथ उमशमध्वि अक्कुर और मरकर बपोंमें
उत्पन्न हुए जीपाक व जाना प्रत्यक्ष पाय जात है ।

णवरि आउव णत्थि ॥ ३०२ ॥

कुदो ? सम्मामिष्ठाद्विस्सेव सत्तुवसमसम्माइट्ठीणमाठमस्स पंधामावादो ।

पच्चस्ताणावरणचउक्कस्स को वधो को अवधो ? ३०३ ॥

सुगमं ।

अमजदसम्मादिट्ठी सजदामजदा [वधा] । एदे वधा, अवसेसा

अवधा ॥ ३०४ ॥

एदं वि सुगम, सुदण्णपक्खणपक्खविदित्थत्तादो ।

पुरिसवेद-कोधसजलणाण को वधो को अवधो ? ॥ ३०५ ॥

सुगमं ।

अमजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा वधा । अणि

यट्ठिउवसमद्वाए सेसे सँसेज्जे भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे

वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३०६ ॥

जिणेष इतना है कि उनके मायु कमकर पाप नहीं है ॥ ३०२ ॥

क्योंकि सम्पत्तिमिच्छाद्विष्ट सम्मान ही सब उपगमसम्पत्तिद्विष्टोंके मायुके सम्पत्ति समाप्त है ।

प्रत्याग्यानाचारणचतुष्ककर कैंन पापक और कैंन अपपाक है ? ॥ ३०३ ॥

यह गुरु सुगम है ।

अमंयतसम्पत्ति और सपत्तासंपन [पापक] है । ये पापक है, शेष अपपाक है ॥ ३०४ ॥

यह भी गुरु सुगम है क्योंकि, हगक भयभी प्ररूपणा अतप्रानप्ररूपणामें की जा चुकी है ।

पुग्गोद और संभ्यउत प्रोवस कैंन पापक और कैंन अपपाक है ? ॥ ३०५ ॥

यह गुरु सुगम है ।

अमंयतसम्पत्तिमें लेख अनिश्रुतिरूप उपगमक तत्त पापक है । अनिश्रुतिरूप उपगमक तत्तके दोरमें सम्पत्ति पदुभाग आरर पत्त प्लुट्टिय होता है । ये पापक है, शेष अपपाक है ॥ ३०६ ॥

सुगमैर्द ।

माण मायसजलणाण को वधो को अवधो ? ॥ ३०७ ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा वधा । अणि
यट्ठिउवसमद्दाए सेसे सेसे सस्सेज्जे भागे गतूण वंधो वोच्छिज्जदि ।
एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३०८ ॥

एद पि सुगम, बहुसो परुविदत्ताओ ।

लोभसजलणस्स को वधो को अवधो ? ॥ ३०९ ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा वंधा ।
अणियट्ठिउवसमद्दाए चरिमसमय गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे
वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३१० ॥

एह सख सुगम है ।

सम्पत्त मान और मायाका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ३०७ ॥

एह सख सुगम है ।

वसंपत्तसम्पत्तिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक तक बन्धक है । अनिवृत्तिकरण
उपशमकालके शेष क्षणों सत्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युत्थित होता है । ये बन्धक है,
शेष अवन्धक है ॥ ३०८ ॥

एह सख भी सुगम है क्योंकि बहुत बार इसकी प्रकरण की जा चुकी है ।

संपत्त स्वयम्पत्त कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ३०९ ॥

एह सख सुगम है ।

वसंपत्तसम्पत्तिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक तक बन्धक है । अनिवृत्तिकरण
उपशमकालके अन्तिम समयमें जाकर बंध व्युत्थित होता है । ये बन्धक है, शेष अवन्धक
है ॥ ३१० ॥

एव पि सुगमं ।

हस्त रदि भय दुगुछाण को वधो को अवधो ? ॥ ३११ ॥

सुगम ।

अमजदमम्माइट्टिप्पहुडि जाव अपुब्बकरणउवसमा वधा ।
अपुब्बकरणवसमद्दाए चरिमसमय गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा,
अवसेसा अवधा ॥ ३१२ ॥

एवं पि सुगमं ।

देवगह-पार्चिदियजादि-चेठव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचठरस-
सठण-चेठवियअगोवग-वण्ण-गध-रस-फास-देवाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ
उवघाद-परघाद-उस्सास-यसत्यविहायगदि-तम-चादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर
यिर-सुभ-सुभग-सुस्सर आदेज्ज णिमिण तित्थयरणामाण को वंधो को
अवधो ? ॥ ३१३ ॥

सुगमं ।

यह सूत्र भी सुगम है ।

हास्य, रति, मय और दुगुप्ताक्र कीन वन्धक और कीन अवन्धक है ? ॥ ३११ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दग्धिं लेख्य अपूरकरण उपशमकं तक वन्धक हैं । अपूरकरण उपशम
कालके अन्तिम समयको प्राप्त होकर पांच व्युच्छिद्य होता है । ये वन्धक हैं, शेष अपावक
हैं ॥ ३१२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

देवगति, पैचन्टिय जानि, बैन्निविक, तेज्जम व सयमण गुरीर, समवतुग्गमैस्थान,
बैन्निविकगुरीरगोपांग, वण, गन्ध, रम, स्पश, देवानुपूर्वी, अगुरुत्तु, उपपाल, परपाल,
उप्पमास, प्रसन्नविहायोगति, यम, पादर, पयान्त, प्रमेकगुरीर, रियार, गुम, सुमग, सुम्बर,
आदेय, निमाय और तीर्त्तिकर नामकमैस कीन वन्धक और कीन अपावक है ? ॥ ३१३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असजसम्मादिद्विप्पहुडि जाव अपुवकरणउवसमा वधा ।
अपुवकरणवसमद्वाए सस्वेज्जे भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे
वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३१४ ॥

एदं पि सुगमं, बहुसो कपपरवणादो ।

आहारसरीर-आहारसरीरअगोवगाण को वधो को अवधो ?
॥ ३१५ ॥

सुगमं ।

अप्पमत्तापुवकरणउवसमा वधा । अपुवकरणवसमद्वाए सस्वेजे
भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा
॥ ३१६ ॥

एदं पि सुगमं ।

सासणमम्मादिद्वी मदिणाणिभगो ॥ ३१७ ॥

असपतसम्पत्तिष्यो लेकर अपूर्वकरण उपशमक तक बन्धक है । अपूर्वकरण उपशम
करके सत्त्वात् बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक
हैं । ३१४ ॥

यह सूत्र भी सुगम है क्योंकि बहुत बार इसकी प्रकृष्टता की जा चुकी है ।

आहारकसरीर और आहारकसरीरांगोतांगका क्षेत्र बन्धक और क्षेत्र अवन्धक है ?
॥ ३१५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रपत्त और अपूर्वकरण उपशमक बन्धक है । अपूर्वकरण उपशमकरके सत्त्वात्
बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ ३१६ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

सासणसम्पत्तिष्यो की प्रकृष्टता मदिणाणिभगो समान है ॥ ३१७ ॥

पञ्चाभावरणीय-अवर्दसपावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-अद्विभोक्तसाय-तिरिक्त्वा-
मणुस-देवाउ-तिरिक्त्वा मणुस-देवगइ पंचिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-पंच-
सत्तण ओराणिय वउत्थिय-अंघोयग-पचसंभरण-वण्ण-गच रस-कास-तिरिक्त्वा-मणुस-देवगइयाओ-
माणुपुम्बी-अगुरुवल्लुभ उवपाइ-परपाद उस्सास-उन्नेव-दोविहायगइ-तस-मादर-पज्जत्त-पचेय
सरीर विराधिर-सुहासुद-सुमग-दुमग-सुस्सर-दुस्सर-आइल्ल-अणदेव-असक्ति-अजसक्ति-
अिमिण पीपुञ्चागोद-पंचतराइयपयीओ सासणसम्मादिट्ठीहि बन्धमाणिपाओ । एदासिमुदपादो
बघो पुव्व पच्छा [वा] योत्तिञ्जो चि विचरो गत्थि, एय एदासि बंधोदयवोन्नेदामावाओ ।।

पंचपाभावरणीय अउंरसपावरणीय-पंचिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण गच-रस-
पास अगुरुवल्लुभ-तस-मादर-पज्जत्त-पिराधिर-सुहासुद-अिमिण-पंचतराइयां सोदमा बंधो,
धुवोदयपाओ । देवाउ-देवगइ-वेउत्थियदुगाणं परोदयो बघो, सोदएण बंधविरोहाओ । अव
सेसाण पयडीण बघो सोदय-परोदयो, उदयहा वि बंधुवत्तभाओ ।

पंचपाभावरणीय-अवर्दसपावरणीय-सोलसकसाय मय-दुगुण-तिरिक्त्वा-मणुस-देवाउ-
पंचिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गच-रस-कास-अगुरुवल्लुभ-उवपाद-परपाद-उस्सास-

पांच ज्ञानावरणीय मौ दर्शनावरणीय साता व असाता वेदनीय सोलह कथाय
जल नैक्याय तिर्यगायु मनुष्यायु, देवाउ तिर्यगति मनुष्यगति देवगति पंचेन्द्रिय
जाति औदारिक, धैर्यिक तेजस व काम्य शरीर पांच संस्थान औदारिक व धैर्यिक
अनोपांग पांच सङ्गम बर्ण गन्ध रस स्पर्श तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी मनुष्यगति
प्रायोग्यानुपूर्वी देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी अगुरुल्लु उवपात परपात लज्जवास उद्योत दो
विहायगतिभो जस वादर, पयोत्त प्रत्येकशरीर, स्थिर अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग
दुर्मग सुस्सर दुस्सर, मादय अनादय पञ्चसीति अयसकीर्ति मिमीय, मीच व ऊंच गोत्र
और पांच अन्तराय ये प्रकृतियां सासाङ्गसम्पददि तीनों द्वारा बध्यमान हैं । इनका बन्ध
उदयसे पूर्वसे या पश्चात् स्पृष्टिष्ठ होता है यह विचार नहीं है, क्योंकि यहाँ इनके
बन्ध और उदयके स्पृष्टेयका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय पंचेन्द्रिय जाति तेजस व काम्य शरीर,
वर्ण गन्ध रस स्पर्श अगुरुल्लु जस वादर पमात्त स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ
मिमीय और पांच अन्तराय स्वोदय वन्ध होता है क्योंकि ये भुवोदयी हैं । देवाय
देवगतिविक्रम और धैर्यिकविक्रमका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि स्वोदयसे इनके बन्धका
विरोध है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध स्वोदय परोदयसे होता है क्योंकि दोनों प्रकारोंसे मी
उनका बन्ध पाया जाता है ।

पांच ज्ञानावरणीय मौ दर्शनावरणीय सोलह कथाय मय दुगुप्ता तिर्यगायु
मनुष्यायु, देवाय पंचेन्द्रिय जाति तेजस व काम्य शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरु

सप्त बाह्य-पञ्चत-पञ्चसरीर-विभिन्न-यन्त्रादयाम् भिन्नतरो षष्ठो, एतत्समयं षष्ठ्यवमाशुव
 ठमाशो । सादासाह-इत्त-रदि अदि-सोमिस्विकद-मन्त्रिमच उस्त्रय-पञ्चसवर्ण-उन्नेव-यो-
 विहापग-विहापिर-सुहासुह-मुम-उत्तर-अवादेन्न-नैसक्ति-अवसक्तिवीमं सांतरो षष्ठो, एत-
 त्समयं वि षष्ठ्यवमाशुवठमाशो । पुरिस्वेदस्स षष्ठो सांतरो-भिन्नतरो, एतत्समयं उस्त्रिपत्तु
 तिरिक्त्त-मनुस्सेसु भित्तरवपुवठमाशो । इवग-वेडवियदुग-समचठरसंस्त्रय-सुमम-सुस्त्र
 जोदेन्नुपनागोदायं षष्ठो सांतरो-भिन्नतरो, असंखेन्नुवासाउत्तु सुहतिस्त्रिपत्तिरिक्त्त-मनुस्सेसु
 च भित्तरवपुवठमाशो । मनुसग-इवगस्स षष्ठो सांतरो-भिन्नतरो, अजवादिदेवसु भित्तरवपुव-
 ठमाशो । तिरिक्त्ताइवग-मीवागोदायं षष्ठो सांतरो भिन्नतरो, सचमपुव्वीमेत्तपत्तु भित्तर
 वपुवठमाशो । भोरास्त्रिपत्तिदुगस्स वि सांतरो भित्तरो षष्ठो, देव-मेत्तपत्तु भित्तरवपुवठमाशो ।

वेवाउ-देवग-वेडवियदुगार्थं अशक्तीस पञ्चया, वेडवियदुगोरास्त्रिपत्तिस्स कम्म-
 इयाकमभावाशो । मनुस-तिरिक्त्ताउत्तु सचेत्तात्तीस पञ्चया, भोरास्त्रिपत्ति-वेडवियमिस्स-कम्म
 इयपञ्चवापमभावाशो । अवसेसार्थं पयसीणं पञ्चस पञ्चया, पञ्चमिच्छत्तपञ्चयापमभावाशो ।

अथ, उपपात परपात पञ्चभास वस बाह्य पर्वात्त मत्पेकशरीर, निर्माण और पांच
 अन्तरात्मिक निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समयसे इसका बन्धविग्राम नहीं पाया
 जाता । साता य असाता वेदनीय हास्य रति अरति शोक क्रोध मध्यम चार संस्थान
 पांच संज्ञान उद्योत दो विहायोगातिपा स्थिर, मस्थिर शुभ अशुभ दुर्गम सुखर,
 अतोत्पेय पशकीर्ति और अपशकीर्ति का सात्तर बन्ध होता है क्योंकि एक समयसे भी
 इसका बन्धविग्राम इत्ता जाता है । पुण्यपेयका बन्ध सात्तर निरन्तर होता है क्योंकि, पश
 और शुक्ल छेदपावाळे तिपेय य मनुष्यत्वे इसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । वेचमतिद्विक,
 वैकिपिकद्विक, समचतुरासंस्थान सुमम सुस्त्र, अतोत्पेय और उच्छवोत्तका सात्तर-भित्
 त्तर पञ्च हाता है क्योंकि अतवपातवरीपुक्क और शुभ तत्त्व छेदपावाळे तिपेय य मनुष्योंमें
 इसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगतिद्विकका पञ्च सात्तर-निरन्तर होता है क्योंकि,
 आनताद्विक इत्तोंमें इसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । तिपेयगतिद्विक और जीवगोबध
 बन्ध सात्तर-निरन्तर होता है क्योंकि अन्तम पृथिवीके मारकिपेत्तोंमें इसका निरन्तर बन्ध
 पाया जाता है । भौतिक-गरीपद्विकका भी सात्तर-निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, देव य
 मारकिपेत्तोंमें इसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इवापु वेचगातद्विक और वैत्रिपिकद्विक अशक्तीस मत्पय है क्योंकि वैकिपिकद्विक
 भौतिकमिध और कर्मज वापपाता मत्पयीका अभाव है । मनुष्यापु और निर्वगापुके
 मीतामीत मत्पय है क्योंकि भौतिकमिध वैत्रिपिकमिध और कर्मज मत्पयीका अभाव
 है । शय मरुनियत्तके पञ्चास मत्पय है क्योंकि, सापाद्वसम्पराद्विपीय पांच मिप्यात्त
 मत्पयीका अभाव है ।

देवाउ-देवगइ-वेउअधियहुगणं धंधो देवगइसंभुतो । मणुसाउ-मणुसगइहुगणं मणुस-
गइसंभुतो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइहुगुन्नेयाणं तिरिक्खगइसंभुतो । भोरात्थियसरीर-
मच्छिममणउसंभुत्तण-भोरात्थियसरीरअंगोवग-पंचसपइण-अणसत्थविहामगइ हुमग-हुस्सर-अणदिक्ख-
मीचलोदाणं तिरिक्ख-मणुसगइसंभुतो धंधो । उच्चागोवस्स देव मणुसगइसंभुतो धंधो,
तिरिक्खेसुच्चागोवामावादो । अणसेसाण पयडीण धंधो तिगइसंभुतो, गिरयगइअंघामावादो ।
देवाउ-देवगइ-वेउअधियहुगणं तिरिक्ख-मणुसा सामी । सेसाणं पयडीणं धंधस्स सामी नउगइ
सासणा । अंघसाण धंधोवेच्छेदो च णत्थि । उच्चासीसधुवधंधपयडीणं तिनिहो धंधो, धुवा-
मावादो । धंधसेसाणं सावि-अजुवो, अजुवधंधिच्छो ।

सम्मामिच्छाहट्ठी असंजदमगो ॥ ३१८ ॥

पंचपाणावरणीय-अदसपापरणीय-साहासाद-भारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-
सोग-मय-दुगुंहा-मणुसगइ-देवगइ-पंचिदियजादि भोरात्थिय-वेउअधिय-तेजा-वम्मइयसरीर समणउ
रससंभुत्तण-भोरात्थिय-वेउअधियअंगोवग-वज्जरिसहसंधण-अण गध-रस-फस्स-मणुसगइ-देवगइ-

वेवायु, वेवगतिद्विक और वैकल्पिकद्विकका बन्ध वेवगति संयुक्त होता है। मनुष्यायु और मनुष्यगतिद्विकका बन्ध मनुष्यगति संयुक्त होता है। तिर्यगायु तिर्यग्गतिद्विक और उचोत्तका बन्ध तिर्यग्गति संयुक्त होता है। भौतिकशरीर मरणम आर संस्थान भौतिकशरीरअंगोपांग पांच संज्ञनम अप्रशस्तविहायोगति दुर्मग दुस्वर, अमाद्य और मीचगोत्रका तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। उच्छगोत्रका वेव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि तिर्यक्कोम उच्छगोत्रका अमाद्य है। दोष प्रकृतियोंका बन्ध तीस गतियोंसे संयुक्त होता है क्योंकि सासात्मसम्पत्तिधर्मोंके नरक गतिके बन्धका अमाद्य है।

वेवायु वषगतिद्विक और वैकल्पिकद्विकके तिर्यक् व मनुष्य स्वामी हैं। दोष प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी चारों गतियोंके सासात्मसम्पत्तिधर्म हैं। वम्पाध्याम और वम्पम्युच्छेद मर्त्य हैं। उच्चासीस सुवबन्धी प्रकृतियोंका तीस प्रकरका बन्ध होता है क्योंकि, उनका सुव बन्धका अमाद्य है। दोष प्रकृतियोंका सावि य मधुव बन्ध होता है क्योंकि, ये मधुव बन्धी हैं।

सम्पत्तिध्यायिणी जीवोन्नी प्ररूपणा असंयत जीवोंके समान है ॥ ३१८ ॥

पोष ज्ञानावरणीय छह दर्शनावरणीय सात्ता व असात्ता वेदनीय बारह कथाय पुरुषवेद हास्य रति भरति शोक, मय दुगुप्ता मनुष्यगति वेवगति पञ्चन्द्रिय जाति भौतिक, वैकल्पिक तैलस व वामस शरीर, सममगुरअसंस्थान भौतिक व वैकल्पिक अंगोपांग, वज्जरमसंज्ञनम पण, गण्य, रस, स्पर्श, मनुष्यगति व वेवगति मायेम्यायु

प्राज्ञोगाजुपुष्पी-अगुस्त्वल्लुभ उवपाद-परपाद उत्सास-यमस्वविह्वयगइ-तस-बादर-यजस-पतेष
सरीर-बिराविर-सुहासुह सुमग-सुस्सर भादेज जसकिति अजमकिति-मिमिगुवागोइ-पंचतरा-
पयदीभो सम्मामिच्छाहृद्दि पञ्चमापियामो । उदयादो बवो पुव्वं पञ्च [वा] वोचिष्म्या
वि एसो विचारो णत्थि, पयदीभमेस्य बभेदयवोप्पेद्राजुवत्तमादो ।

पंचपापावरणीय-चउदंसपात्रणीय-पंचिन्द्रियवादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वज्ज-येघ-रस-
प्रास-अगुस्त्वल्लुभ-उवपाद-परपाद-उत्सास-तस-बादर-पञ्चस पतेपसरीर-बिराविर-सुहासुह-
मिमिग-पंचतरापात्रं सोइओ बवो, एरव धुबोदयसादो । विह्व-यमस्व-सादासाइ-वारसकमाय
पुरिसवेइ-इस्स-दि-अदि-सोग-मय-दुगुंज-समचअससंअय-पसरवविह्वयगइ-सुमग-सुस्सर-
भादेज्ज जसकिति-अजमकिति-उच्छागोदात्रं बवो सोदय-परोदयो, उदयहा वि बंधुवत्तमादो ।
मज्जमगइ-देवगइ-वेउभियसरीर-ओरात्थि वेउभियसरीरभगोवग-अज्जरिसइसयइय-मज्जसाइ-
देवमइप्राज्ञोगाजुपुष्पीं परोदयो बवो, सोइयय वंधविरोहादो ।

पंचपापावरणीय-उदंसपात्रणीय-वारमरुपाय-पुरिसवेइ मय-दुगुंज-मज्जमगइ-देवगइ-
पंचिन्द्रियवादि भोरात्थि-वेउभिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचअससंअय-भोरात्थि वज्जमिपत्रंयो-

पूर्वी अगुस्त्वपु उपपात परपात उच्छिष्टास प्रशस्तविहायोगति जम बादर पर्याप्त
प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग सुस्सर भादेय पशकीति अयशकीति
निर्माण उच्छिष्टास भीर गीच अन्तराय मरुतिपा सम्मामिच्छादि जीवीं द्वारा वध्यमान हैं ।
उदयसे वज्ज पूर्वम या पश्चात् स्थितिअ होता है यह विचार यहां नहीं है। क्योंकि,
यहां उक्त मरुतिवैठ वज्ज भीर उदयका ध्युक्तेइ नहीं पाया जाता है ।

पांच ज्ञानावरणीय चार इक्षानावरणीय पंचेन्द्रिय जाति तैजस य काम्य शरीर,
यसं गन्ध रस स्पर्श अगुस्त्वपु उपपात परपात उच्छिष्टास जस बादर, पयत्त
प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ निर्माण भीर पांच अन्तरायका इत्येव वज्ज
होता है क्योंकि, यहां वे ज्ञेयवर्गी हैं । मित्रा प्रवसा साता य धराता वेदजीय बारह
कथाय पुण्यवेइ इत्यय एति अरत्ति शाक, मय जुगुप्सा समचतुरस्रसंम्यास प्रशस्त
विहायोगति सुमग सुम्पर, भादेय पशकीति अयशकीति और उच्छिष्टागन्ध वज्ज
स्वात्प परोदय हाता है क्योंकि, ज्ञानों प्रकाशमें भी इत्येव वज्ज पाया जाता है । अनुप्य
गति देवगति वैश्विषिकशरीर, भीहारिक व वैश्विषिक शरीरोंगोपांग वज्जममइनन
मनुप्यगतिप्रापाण्यानुपूर्वी और देवगतिप्रापाण्यानुपूर्वीया परात्प वज्ज होता है क्योंकि
स्वात्पमे इत्येव वज्जका विराय है ।

पांच ज्ञानावरणीय छह इक्षानावरणीय बारह कथाय पुण्यवेइ मय जुगुप्सा
मनुप्यगति देवगति वैश्विषिक जाति भीहारिक वैश्विषिक तैजस य काम्य शरीर,

वंग-वज्जरिसइसपडण-वण्ण-गंध-रस-फ़स-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुब्बी-अगुस्सत्तहुम-उव-
 धाद-परधाद उस्सास-पसत्त्वियहमगइ-तस-आदर-प-वत्त-पतेपसरीर-सुमग-सुस्सर-आदेव-
 विमिणुअपागोद पंथत्ताइयाण भिरत्तेरो वधो, एत्थ भुवचनदंसपादो । सादासाद-हस्स-उदि
 अरि-सोग-भिरपिर-सुहासुह-जसकिचि-अमसकित्तीणं सांतरो, एगसमएण वि वंघुवरम
 वंसपादो ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बी-ओराटियसरीर-ओराटियसरीरोगंवंग-वज्जरिसइ-
 संपडणार्थं वाइत्तीस पचया, ओराटियकममोगामावादो । देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुब्बी-
 वेत्तवियसरीर-वेत्तवियसरीरंगोत्तगाण पि वाइत्तीस पचया, वेत्तवियकममोगा
 मावादो । अचसेसाम तेइत्तीस पचया, पंचमिअत्ताणुवंपिअठक्केराटिय-वेत्तविय
 सिस्स-कम्मइयपचयाअममावादो । मणुसगइगुरोराटियदुग-वज्जरिसइसंपडणार्थं वधो
 मणुसमइसंहुतो । देवगइ-वेत्तवियदुगाण देवगइसंहुतो । सेससव्वपयवीणं देव
 मणुसगइसंहुतो । मणुसगइगुरोराटियदुग-वज्जरिसइसंपडणार्थं देव-भेरया सामी ।
 देवगइ-वेत्तवियदुगार्थं तिरिस्स-मणुसा सामी । सेसार्थं पयवीणं वचस्स सामी

—

समवतुरकसंस्थान औदारिक व वैक्रियिक शरीररंगोपांग वज्जरमसइमन वर्य गण्य रस
 स्वरी, मनुष्यगति व देवगति प्राप्तेयानुपूर्वी अगुस्सत्तहु उपपात, परमात लब्धवास
 प्रहास्तविहायोगति अस बादर, पर्याप्त प्रत्येकशरीर, सुमग सुस्वर, आदेश निर्माण
 लब्धगांध और पांच अन्तरायका निरन्तर वण्य होता है, क्योंकि, यहाँ हमका सुखवण्य
 देखा जाता है । अता व असाता वेदनीय वास्य रति भरति शोक, स्थिर, अस्थिर,
 सुम अमुम अशकीर्ति और अयशकीर्तिक्र वास्तव वण्य होता है क्योंकि, एक समयसे
 भी हमका वण्यविधाम देखा जाता है ।

मनुष्यगति मनुष्यगतिप्राप्तेयानुपूर्वी, औदारिक शरीर, औदारिकशरीररंगो
 पांग और वज्जरमसइमनके व्याखीस प्रत्यय हैं क्योंकि, औदारिककमपयोगक
 ममाव है । देवगति देवगतिप्राप्तेयानुपूर्वी वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिक
 शरीररंगोपांगके भी व्याखीस प्रत्यय हैं क्योंकि, यहाँ वैक्रियिककामयोगक ममाव है । शेष
 प्रकृतिपोंके तैताम्हीस प्रत्यय हैं क्योंकि, पांच सिध्दात्त अमस्तानुवंपिअठक्क,
 औदारिक मिम वैक्रियिकमिम और कर्मज प्रत्ययोंका मिमगुणस्थानम ममाव है ।

मनुष्यगतिविक्रि, औदारिकविक्रि और वज्जरमसइमनका वण्य मनुष्यगतिसे संयुक्त
 होता है । देवगतिविक्रि और वैक्रियिकविक्रि वण्य देवगति संयुक्त होता है । दोप सब प्रकृ
 तियोंका वण्य देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त होता है । मनुष्यगतिविक्रि, औदारिकविक्रि व वज्ज
 रमसइमनके देव व मारपी स्वामी हैं । देवगतिविक्रि और वैक्रियिकविक्रिके तिर्येक व मनुष्य
 स्वामी हैं । दोप प्रकृतियोंके वण्यके स्वामी आर्ये गतिपोंके सम्पत्तिमप्यादधि हैं । वण्यावाण

चतुर्दशसम्मामिच्छाद्विधो । बधदाय परिय, एककम्बिद वदायविरोहार्थो । बधबोधेदो वि
पत्ति, एव सम्वासि बंधुवत्तमादो । ध्रुवबंधिपयडीयं तिबिहो बंधो, ध्रुवामत्तादो । सैसारं
सादि-बन्धुबो, वसुवर्धविचारो ।

मिच्छाद्विणीमभवसिद्धियमगो ॥ ३१९ ॥

सुगममेव सुख, विवेकमात्रादो । पत्रि ध्रुवबंधिपयडीयं चतुर्दशो बधो, सादि-सात
बंधुवत्तमादो ।

सण्णियाणवादेण सण्णीसु जाव तित्तयरे त्ति ओघमंगो
॥ ३२० ॥

एवदिय-बीहदिय-तीहदिय चउरीदियवादि भादाव-बावर-सुदुम-साहारबाधं परोदयपुव
तंमादो पंविदियवादि-वस-बादरणं सोदयबंधुवत्तमादो मेदं सुत्तं सुग्गदे ? न, देसामासिय

— —

वहीं है क्योंकि, एक गुणस्थानमें भावात्मका विरोध है । बन्धुबोधेदु भी वहीं है,
क्योंकि, वहाँ सब प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका तीव्र प्रकटका
बन्ध होता है क्योंकि, ध्रुवबन्धका यहाँ अग्रगण्य है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अन्धुव बन्ध
होता है, क्योंकि, वे अन्धुवबन्धी हैं ।

मिप्पाद्वि जीर्णोक्ती प्रकृषण व्यमपसिद्धिक जीर्णोके समान है ॥ ३१९ ॥

यह सब सुगम है क्योंकि वहाँ कोई विरोधता नहीं है । मेव इतना है कि ध्रुव
बन्धी प्रकृतियोंका यहाँ बाध प्रकटका बन्ध होता है क्योंकि, सादि व सान्तर अर्थात्
अन्धुव बन्ध पाया जाता है ।

संविमार्मवस्तुसार संजी जीर्णोक्ती तीव्रकर प्रकृति तक बोधके समान प्रकृषण है
॥ ३२ ॥

संक्षेप—क्योंकि यहाँ पक्षेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुर्दशिका आति माताप
स्यावर, सुख और साधारण प्रकृतियोंका बन्ध परोक्षसे और पक्षेन्द्रिय आति वस
व अन्धुवका बन्ध स्वीकृतसे पाया जाता है अतएव यह सब सुख वहीं है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, बेशामार्गक सुगमों इस प्रकटकी

सुषेसु एवंविहमेदविरोहादो । पयडिबंधद्वानिबंधनमेदपहुपायपडमाह—

णवरि विसेसो' सादावेदणीयस्त चक्खुदसणिमगो ॥ ३२१ ॥

सुगममेद ।

असणीसु अमवसिद्धियमगो ॥ ३२२ ॥

पचपापत्तरणीय-अवर्दसपावरणीय-सादासाद मिच्छत-सोत्तसकसाय-अवणोकसाय-अउ
आउ-अउगइ-पंचआदि-ओराठिय-वेउअिय-तेजा-कम्माइयसरीर-छसद्वान-ओराठिय-वडअियमगो-
धंग-ससंपडण-वण्ण-गंअ-रस-अस-अउआणुपुष्वी-अगुत्तवळुअ-उवपाद-परपाद-उत्सास-आदा-
उन्नेव-दोविहायगइ-तस-थावर-आदर-सुहुम-पन्नपापअस-पचेय-साहारपसरीर-भिराधिर-सुहा-
सुइ-सुभग-दूमग-सुस्सर-दुस्सर-आदर-अपादेअ-असकिरि-अवसकिरि-मिगिअ-भीपुआगोद-
पंचतराइयपयडीमो असणीहि बन्धमापियाओ । उदपादो ऋषो पुष्व पन्था वा योऽभिग्नो सि
परिक्खा णत्ति, एत्वेदसि ऋषोदयपोऽन्नेदामावाओ ।

विरोधता विरोधसे रहित है ।

महत्तियोंके बन्धावतलमिमित्तक भेदके प्ररूपणार्थ सूत्र कहते हैं—

परन्तु विरोधता इतनी है कि सातावेदनीयकी प्ररूपणा चक्खुदशनी जीवोंके समान
है ॥ ३२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असणी जीवोंमें ऋषोदयपुच्छेदादिकी प्ररूपणा अमवसिद्धिक जीवोंके समान है
॥ ३२२ ॥

पांच ज्ञानावरणीय और दशोपावरणीय साता व अज्ञानावेदनीय, मिथ्यात्व,
सोमइ कपाय और मोक्षपाय चार भासु चार गतिषों पांच जातिषों भौतिक, धैकियिक,
तैजस व अमर्ज शरीर, छह संस्थान भौतिक व धैकियिक शरीरोंमोपांग छह संज्ञकन
वर्ष गन्ध रस स्पर्श चार भासुपूर्वी अगुत्तवळु उपमात, परमात उच्छ्रयास अज्ञात
उद्योत दो विद्यायोगतिषों अस स्वावर, आदर, सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त प्रत्येक व साप्ता
रण शरीर, स्थिर अस्थिर, शुभ अशुभ सुभग दुर्मग सुस्वर, दुस्वर आदेय, अनादेय पदा
धीर्ति, अपराधीर्ति निर्माण नीच व ऊंच गोन और पांच अन्तराप ये महत्तियां असणी
जीवोंके प्राय बन्धमान हैं । उपपत्ते बन्ध पूर्वमें पा पन्थाव् धुच्छिन्न होता है यह परीक्षा
पदा नहीं है, क्योंकि, यहाँ सब महत्तियोंके बन्ध और उपपत्ते धुच्छिन्नका अभाव है ।

बाहुस्वात्स-आदाबुज्योव-दोविहायगह-तस-बावर बाहर-सुहुम-पञ्चसापञ्चस-पत्तय-साहारनसरीर-
विराभिर-सुहासुह-सुमग-दुमग-सुस्तर-दुस्तर-आदेन्त्र-अपादेन्त्र-असकिचि-अजसकिचि-उच्चा-
गोत्रार्थं सन्तरो बंधो, एगसमएण वि बनुवरमदसमादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपामोग्गाणु
पुष्वी-ओरात्तिपसरी-भीचागोदाण बंधो सन्तर-पिरतरो, सेउ पाउक्खइएसु विरंतरबंधुवत्तमादो ।

असन्धीसु पञ्चात्तीस पञ्चया सप्पपयडीपं, वेउम्भियहुग चउविहमण-तिविहवपिओग
मान्सासबमामावादो । भवरि गिरय-देवाउअ-भिरय-देवगइ-भिरयगइ-देवगइपामोग्गाणुपुष्वी
वेउम्भियसरीर-वेउम्भियसरीर-बंगोबंगार्णं तेउत्तीस पञ्चया, ओरात्तिपमिस्स-कम्मइयपञ्चयाण
ममावादो । मनुस्स-तिरिक्खाउआणं ओदात्तीस पञ्चया, कम्मइयपञ्चयामावादो । साइ
वेदधीय-इत्थि-पुरिसवेद-इस्स-रदि-समपउरससंठण-पसत्त्वविहायगइ-भिर-सुह-सुमग-सुस्तर-
आदेन्त्र-असकिचीपं बंधो तिगइसहुत्थे, भिरयगइए अमावादो । भिरयाउ-भिरयगइ-भिरयगइ
पामोग्गाणुपुष्वीपं भिरयगइसहुत्थो । मनुसाउ-मनुसगइ-मनुसगइपामोग्गाणुपुष्वीपं मनुसगइ
सहुत्थो । देवाउ-देवगइ-देवगइपामोग्गाणुपुष्वीपं देवगइसहुत्थो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ

एह सइवम मारकाणुपूर्वी मनुप्पाणुपूर्वी देवाणुपूर्वी परमात्त उच्चवास आत्ताय उद्योत्त,
को विहायोगतिथी त्रस स्यात्तर, बाहर, सुस्म पर्यात्त अपर्यात्त प्रत्येक न साधारण
शरीर, स्थिर, अस्थिर शुभ मशुभ सुमग दुर्भग सुस्वर, दुस्वर, मात्थेय अत्थेय,
पञ्चाक्षरि अष्टाक्षरि और उच्चगोत्रका सात्तर बन्ध होता है क्योंकि, एक समवेसे
भी इनका बन्धविधाम देखा जाता है । तिर्यंगात्ति तिर्यगतिमायोग्याणुपूर्वी भीहारिकशरीर
और भीष्मगोत्रका बन्ध सात्तर-निरत्तर होता है क्योंकि तेज न वायुकापिक जीर्णो
इनका निरत्तर बन्ध पाया जाता है ।

असंखी जीवोंमें सब प्रकृतियोंके पैताछीस प्रत्यय हैं क्योंकि, उनके वैद्वियिकशरीर,
चार प्रकारका मज मजुमय बचनयोगके विना तीन प्रकारका बचन योग और मज अधिक
बसंयम प्रत्ययोंका अभाव है । बिद्येयता यह है कि मारकायु देवायु, मरकागति देवगति
मरकागति न देवगतिमायोग्याणुपूर्वी वैद्वियिकशरीर और वैद्वियिकशरीरगोपांगके
तेताछीस प्रत्यय हैं क्योंकि, भीहारिकमिअ और कामेय प्रत्ययोंका अभाव है । मनुप्पायु
और तिर्यंगाणुके बचाछीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, कामेय प्रत्ययका अभाव है ।

सातावेदनीय औषेइ पुदयेवेइ हास्य एति समपतुरकासंस्थान प्रशस्तविहवो-
गति स्थिर, शुभ सुमग सुस्वर, मात्थेय और पञ्चाक्षरि का बन्ध तीन गतिपोंके संयुक्त
होता है क्योंकि, इनके साथ मरकागति के बन्धका अभाव है । मारकायु, मरकागति और
मरकागतिमायोग्याणुपूर्वीका बन्ध मरकागतिसंयुक्त होता है । मनुप्पायु, मनुप्पागति और
मनुप्पागतिमायोग्याणुपूर्वीका मनुप्पागतिसंयुक्त बन्ध होता है । देवायु देवगति और देवगति
मायोग्याणुपूर्वीका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । तिर्यंगायु तिर्यगति, तिर्यगतिमायोग्याणु

तिरिक्छगइषामोमाणुपुष्पी-यंडिय-वीडिय-वीडिय-चंडियिवादि-वादाडु-मोब-भार-
मुहुम-साइरनसरीरणे तिरिक्छगइसंभुतो बंधो । वेउभियसरीर-वेउभियसरीरबंधो
बंगाण देव विरयगइसंभुतो । नेताडियसरीरभगोबम-मविहमचउसंभुत-उसंभुत-अपनचयने
तिरिक्छ-मनुसमइसंभुतो बंधो । मउंसयवेद-हुंडसठाण अपसररविहायगइ-हुमग-हुसर
अभदेव-बीचागोशान विगइसंभुतो बंधो, देवगइए अमावादी । उ-चागोइस दुगइसंभुतो,
विरय तिरिक्छगइसं अमावादी । अवसेस्यन पयडील बंधो चउगइसंभुतो ।

तिरिक्छा वेव स्यमी, अपसररवासणीभममावादी । बंनदण नरिभ, एकद्वि
मदणविरोहादी । बंधोबोछेरो वि नरिभ, मनुवउंमादी । सतेतायिसुवुवबंधिपयडीले चउ
भिहो बंधो । सेसाण स्यादि महुबो, पडिक्छबपाणुवसंमादी ।

आहाराणुवादेण आहारणसु ओघं ॥ ३२३ ॥

एरसस सुपसस जवा बोधमि परूवणा कदा तवा कयम्मा । पवरि सम्बरण कम्म-
इयपवज्जो बबवेय्यो । चउप्पमासुप्पमीनं बंधो फोदथो । उयवाइसस सोइया ।

पूर्वी एकेन्द्रिय द्विन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय जाति माताए उघोत स्वावर, सूक्ष्म और
साधारणशरीरका तिर्यग्गतिसंयुक्त बंध होता है । वैद्विपिकशरीर और वैद्विपिक
शरीरचंपोपांगका बंध ब नरक गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । भौतिकशरीरचंपोपांग मध्यम
कार संस्थान कह संभवत और मपर्यंनका तिर्यग्गति ब मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता
है । मनुष्यकवेद हुण्डसंस्थान अमरास्तविहायोगति दुर्गम तुस्वर, मनादेव और मीन-
योगका तीव्र गतिसे संयुक्त होता है क्योंकि इनके साथ देवगतिके बन्धका अभाव है ।
उच्छ्रणाश्रक हो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, उससे साथ बरक और तिर्य-
ग्गतिक बन्ध नहीं होता । शेष प्रकृतियोंका बन्ध चारों गतियोंसे संयुक्त होता है ।

तिर्यक् जीव ही स्वामी हैं क्योंकि, अन्य गतिबोधमें मसंज्ञी जीवोंका अभाव है ।
बन्धाभ्यास नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें मर्यादाका विरोध है । बन्धमुक्तदेव भी नहीं
है क्योंकि, बन्ध पाया जाता है । सैतावीस सुबबन्धी प्रकृतियोंका चारों प्रकारका बन्ध
होता है । शेष प्रकृतियोंका सामि ब मनुष्य बन्ध होता है क्योंकि, इनके प्रतिपक्ष
मर्णाद अमादि ब सुब बन्ध नहीं पाये जाते हैं ।

आहारमार्गानुसार आहारक जीवोंमें ओघके समान प्ररूपणा है ॥ ३२३ ॥

इस सुबबो जैसे ओघमें प्ररूपणा की गई है वसी प्रकार वहां भी करना चाहिये ।
विरोधता केवळ इतनी है कि सर्वत्र कार्यज प्रत्ययको कम करना चाहिये । चार मातृ-
पूर्वियोंका बन्ध परन्ध्य होता है । उपधातका स्वांध्य बन्ध होता है ।

अणाहारणसु कम्मइयभगो ॥ ३२४ ॥

पंचपात्रावरणीय-छत्रसपात्रावरणीय-असादविदशीय-भारसकसाय-पुरिसवेद-इत्स-रदि-
[अरदि] शोग-मय-दुगुह-मनुमगद-पंचिद्विज्जादि-ओराटिय-तेजा कम्मइयसरीर समचउरससंछण
ओराटियभगोवंग-वज्जरिसहसंपहण-वण्ण-गंध रस-फ़स मनुमगइयाओगागुपुम्भी-अगुस्वत्तुभ
उवषाद-परषाद उत्सास-पसत्थविद्यायगद-त्तस-नात्तर-पञ्चत-पत्तेयसरीर-पिराभिर-सुहासुह-सुमग-
सुत्सर-आदेय-असकिचि अजसकिचि-मिमिणुबागोइ-पचतराइयपयडीओ तीहि गुमइयेहि पञ्च
माणियाओ । एदासिमुदयपुम्भावरकात्तसंधिबंधवोच्छेदपरीक्षा पत्ति, सप्पासिमम्भ बंधोदय-
दसपाओ ।

पंचपात्रावरणीय-चउदसपात्रावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फ़स-अगुस्व-
उकुव-पिराभिर-सुहासुह-मिमिण-पचतराइयार्थ सोदओ बंधो, धुवोदयवाओ । ओराटियसरीर
समचउरससंछण-ओराटियसरीरभगोवंग-वज्जरिसहसंपहण-उवषाद-परषाद-उत्सास-पसत्थ-
विद्यायगद-पत्तेयसरीर-सुत्सरार्थ परोदओ बंधो, सोदपण एत्थ बंधविरोहाओ । विद्या-पयत्त
असादवेदशीय-भारसकसाय-पुरिसवेद-इत्स-रदि-अरदि-शोग-मय-दुगुह-सुमग-आदेय-अस-
-

अनाहारक जीवैर्मि कर्मजकर्मयोगियोंके समान प्ररूपणा है ॥ ३२४ ॥

पांच ज्ञानावरणीय छत्र दशानावरणीय असाता वेदनीय बारह कर्माय पुरुषवेद,
हास्य एति [अरति] शोक, मय, दुगुहता मनुष्यगति पंचेन्द्रिय जाति औदारिक, तैजस व
कर्मज शरीर, समचतुरस्रसंस्थान औदारिकशरीरतंगोपांग वज्रर्मसंहसन वर्ज, गन्ध रस
स्पर्श मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी अगुहस्यु उपपात परपात उच्छ्वास प्रारुणविहायो
गति अस वात्त, पपात्त मत्सेकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुमग सुम्बर,
आदेय पशुकीर्ति अपशुकीर्ति, मिमाण उच्छगोत्र और पांच मन्तराय प्रकृतिपौ तीन
[मिण्यादधि, सासात्तन अचिरतसम्पदधि] गुणस्थानों द्वारा बध्यमान हैं । इन प्रकृतिपौक
उदयपुच्छेदके पूर्वापर कालसम्बन्धी बन्धपुच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, सब
प्रकृतिपौका यहाँ बन्ध और उदय वेदा जाता है ।

पांच ज्ञानावरणीय बार दशानावरणीय तैजस व कर्मज शरीर, यज गन्ध रस
स्पर्श अगुहस्यु स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ मिमाण और पांच मन्तरायका स्वेत्य
बन्ध होता है क्योंकि, ये सुबोदयी हैं । औदारिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान औदारिक
शरीरतंगोपांग वज्रर्मसंहसन उपपात परपात उच्छ्वास प्रारुणविहायोगति मत्सेक-
शरीर और सुम्बरक परादय बन्ध होता है क्योंकि, स्वेत्यसे यहाँ इनके बन्धका
विरोध है । निद्रा प्रबुद्धा असाता वेदनीय बारह कर्माय पुरुषवेद हास्य एति अरति
शोक, मय, दुगुहता, सुमग, आदय पशुकीर्ति अपशुकीर्ति और उच्छगात्रका स्वेत्य

असंजदसम्मादिहीसु भिरंतरो, पडियक्खपयडिबनाभावो । पंधिदियआदि-ओरात्तियसरीर
अगोवंग-परपादुस्सास-सस-बादर-यन्जत-पत्तेयसरीराणं मिम्मइहिहिं सोंवर-भिरंतरो, सण
अकुमारविदेव-अरएसु भिरंतरंभुवठमाओ । विगाहमरीर कधे भिरंतरा ? अ, संधि पडुअ
भिरंतरंभुवठेसाओ । सासअसम्मादिहि-असंजदसम्मादिहीसु भिरंतरो, पडियक्खपयडिबना
भावो । एवमोत्तमियसरीरस्स वि वत्तय्यं ।

मिम्मइहिस्स तेदत्तीस, सासअस्स अट्ठीस, असंजदसम्मादिहिस्स तेत्तीस
पप्पया । मजुसगइ-मजुसगइपाभोगाजुपुण्णीणं पधो मजुसगइसहुवो । ओरात्तिय
सरीर-ओरात्तियसरीरंगोवंगार्य मिम्मइहि-सासअसम्मादिहीसु तिरिक्ख-मजुसगइसहुवो ।
असंजदसम्मादिहीसु मजुसगइसंहुवो । एवं यन्जरिसहुवइरणायअसरीरसंधणस्स वि
वत्तय्यं । उच्चगोदस्स मिम्मइहि-सासअसम्मादिहीसु मजुसगइसहुवो, असंजदसम्मा
दिहीसु देव-मजुसगइसंहुवो । सेसणं पयडीणं बंधो मिम्मइहि-सासअसम्मादिहीसु तिरिक्ख
मजुसगइसंहुवो, एवेसिमपन्नत्तकठे देव-भिरयगार्यं पधामावाओ । असंजदसम्मादिहीसु देव

असंयतसम्यग्दृष्टिओंमें निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धक
अभाव है । पंचेन्द्रिय आदि भौतिकशरीरोंगोपांग परपात उच्छ्वास अस बाहर, पपात
और प्रत्येकशरीरका मिष्यादृष्टि गुणस्थानमें सात्वर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,
सनत्कुमारादि देव और मारुतिकोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

शुंक्क—विग्रहगतिमें बन्धकी निरन्तरता कैसे सम्भव है ?

समाधान—यहाँ क्योंकि शक्तिकी अपेक्षा उसकी निरन्तरताका उपदेश है ।

सासात्नसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें उनका निरन्तर बन्ध होता है,
क्योंकि, उनके प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धक अभाव है । इसी प्रकार भौतिकशरीरके भी
कइया बाहिये ।

मिष्यादृष्टिके ठेठाऔस सासात्नसम्यग्दृष्टिके मट्ठीस और असंयतसम्यग्दृष्टिके
तेत्तीस प्रत्यय हैं । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विका बन्ध मनुष्यगतिसंयुक्त
होता है । भौतिकशरीर और भौतिकशरीरोंगोपांगका मिष्यादृष्टि और सासात्नसम्य
ग्दृष्टियोंमें तिर्यग्गति य मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें
मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है । इसी प्रकार वज्रर्यमवज्जनापवज्जरीरसंहमक भी कइया
बाहिये । उच्चगोत्रका मिष्यादृष्टि और सासात्नसम्यग्दृष्टियोंमें मनुष्यगतिसंयुक्त तथा
असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें बंध य मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध
मिष्यादृष्टि और सासात्नसम्यग्दृष्टियोंमें तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसंयुक्त होता है
क्योंकि, इनके अपपातकालमें देव य मरक गतिक बन्धका अभाव है । असंयतसम्य

मनुसगर्भसंभूते, तस्मिन्गर्भे पशामावदो ।

मनुसगर्भ-मनुसगर्भाभोगाणुपुत्री भोराठियसति भोराठियसरीरभंगोर्वागम् चउमर मिच्छाद्वि-सासपसम्मादिद्वी सामी, देव-भिरयगर्भसंभदसम्मादिद्वी सामी । एवं बम्भ रिसहसंभदपस वि वत्तम् । सेसार्ण पयडीर्ण चउमरमिच्छाद्वि-सासपसम्मादिद्वि-भसंभद सम्मादिद्विभो सामी । बंधवार्ण सुगम । बंधवोच्छेदो च सुगमो । पुबबंधीर्ण बंधो मिच्छाद्वीसु चउमरिहो, सासपसम्मादिद्वि-भसंभदसम्मादिद्वीसु विविहो । सेसार्ण पयडीर्ण सप्पत्त सादि-भसुवो ।

वीचमिदितिय भर्भतापुबंधिचउमरिपवेद-तिरिक्खगर्भ-चउमरप-चउमरप-तिरिक्ख गर्भाभोगाणुपुत्री-उज्जोव भप्पसत्पविहायगर्भ-दुमग-दुस्सर अणादेज्ज-वीचगोदाणे दुमग पयडीर्ण सुबधे— अर्भतापुबंधिचउमरिक्खिक्खदाणं बंधोदया समं वोच्छिज्जा । दुमगाणादेव-पीचगोद-तिरिक्खदुगाण पुत्थं बंधो पप्पत्त उज्जो वोच्छिज्जदि । अथसेसार्ण पयडीर्ण बंधवोच्छेदो वेव, पत्तुदयविरोहायो । अर्भतापुबंधिचउमरिक्खिक्खेद-तिरिक्खगर्भदुम-दुमगाणा-देज्ज-वीचगोदाणं बंधा सेत्तप-परोद्वो, उज्जहा वि बंधविरोहापावदो । सेसार्ण परोद्वो

गतिर्षोर्मे देव च मनुष्य गतिस्तं संयुक्तं बन्धं होता है क्योंकि, इनमें मध्य गतिर्षोर्मे बन्धका अभाव है ।

मनुष्यगति मनुष्यगतिप्रायेण्यानुपूर्वी भौतारिकशरीर और भौतारिकशरीरांगो-पांगके चारों गतिर्षोर्मे मिच्छाद्वि च सासाज्जसम्माद्वि, तथा देवगति च बरक-गतिके भर्भपतसम्माद्वि स्वामी है । इसी प्रकार ब्रह्मर्षमसंभवनके भी कहना चाहिये । शेष प्रकृतिर्षोर्मे चारों गतिर्षोर्मे मिच्छाद्वि, सासाज्जसम्माद्वि और भर्भपतसम्माद्वि स्वामी हैं । बन्धान्नाम सुगम है । बन्धमुच्छेद भी सुगम है । पुबबंधी प्रकृतिर्षोर्मा बन्ध मिच्छाद्विर्षोर्मे चारों प्रकारका होता है । सासाज्जसम्माद्वि और भर्भपतसम्मा-द्विर्षोर्मे तीन प्रकारका बन्ध होता है । शेष प्रकृतिर्षोर्मा सर्वत्र सादि च मनुष्य बन्ध होता है ।

स्वानुद्विज्जप मनन्तापुबन्धिचउमर, त्वीवेत्तिर्भगति चार संवत्त चार संवत्त चार तिर्भगतिप्रायेण्यानुपूर्वी उद्योत भग्गस्त्वविहायगति दुर्मग दुस्सर, अनदेय और नीचगोत्र इन द्विस्वाम प्रकृतिर्षोर्मा प्रकृति चउमर है— मनन्तापुबन्धिचउमर और त्वीवेत्तिर्भग बन्ध च उद्योत दोनों साथ व्युच्छिज्ज हते हैं । दुर्मग अनदेय नीचगोत्र और तिर्भगतिर्षोर्मा पूर्वमे बन्ध और पश्चात् उद्योत व्युच्छिज्ज होता है । शेष प्रकृतिर्षोर्मा केवल बन्धमुच्छेद ही है क्योंकि, यहां उनके उद्योत विरोध है । मनन्तापुबन्धिचउमर, त्वीवेत्तिर्भगतिर्षोर्मा, दुर्मग अनदेय और नीचगोत्रका बन्ध स्वेत्येव परोद्व होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके बन्धका विरोध नहीं है । शेष प्रकृतिर्षोर्मा परोद्व बन्ध

पंचो, एस्पुदयामावादो । धीनगिदितिय-अणताणुबधिचउक्कण पिरतरो पंचो, अणैगसमय
 पंचसत्तिंसंखुत्तादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुप्पि-पीचागोदाणं मिच्छइहीसु सत्तर
 पिरतरो, तेठ-वाउक्कइएसु विग्गहं कउणुप्पण्णाण तरो विग्गहगइए गयाणं सतमपुइवीओ
 विग्गहं कउण विग्गयाणं च गिरंतरपुवउमादो । साउणमि सातरो, एगसमएण वि वउ
 वरमसत्तिंसपादो । सेसाणं पयहीण बघो सम्भरय सतरो, सामाविमादो । पच्चया सुगमा ।
 तिरिक्खगइपाओग्गाणुप्पि उज्जोवाण तिरिक्खगइसुत्तो । चउसअण वउसचइयाण तिरिक्ख
 मणुसगइसंखुत्तो । इत्थिपेदस्स दुगइसंखुत्तो, देव-पिरयगइमममावादो । अणसत्थविहापगइ
 हुमग-वुस्सर-अपादेज्ज-पीचागोदाण पंचो मिच्छइहिमिह सासणे दुगइसंखुत्तो, देव-पिरय
 गइमममावादो । धीनगिदितिय अणताणुबधिचउक्कण मिच्छइहिमिह सासणे दुगइसंखुत्तो,
 पिरय-देवगइमममावादो । चउगइमिच्छइहि-सासणसम्मादिठिणे सामी । पंचद्याण पच-
 बोच्छेदद्याणं च सुगम । पुववपीणं पंचो मिच्छइहिमिह चउठिहो । सासणे तिविहो,

होता है क्योंकि, यहां उनका उद्गममात्र है । स्थानप्रक्षिप्त और अनन्तानुबन्धिततुष्कका
 निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि ये अनेक समयरूप बन्धदाकितसे संयुक्त हैं । तिर्यग्गति तिर्य
 गतिप्रायोगयानुपूर्वी और नीचगोत्रका मिथ्यादृष्टिमें साम्प्र-निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि,
 तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमें विग्रह करके उत्पन्न हुए, उनमेंसे विग्रहगतिमें
 गये हुए, तथा सप्तम पृथिवीसे विग्रह करके निकले हुए जीवोंके उनका निरन्तर बन्ध पाया
 जाता है । साक्षात्त गुणस्थानमें उनका साम्प्र बन्ध हाता है क्योंकि, एक समयसे भी
 बन्धविग्रामशक्ति देखी जाती है । दोष प्रकृतियोंका बन्ध सबत्र साम्प्र होता है क्योंकि,
 येसा स्वभाव है । प्रत्यय सुगम है । तिर्यग्गतिप्रायोगयानुपूर्वी और उद्योतका तिर्यग्गतिसे
 संयुक्त बन्ध होता है । बार सस्थान और बार सहननका तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त
 बन्ध होता है । कृत्विदका दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि, यहां उक्त दो गुणस्थानोंमें
 दोष व मरक गतिके बन्धका अभाव है । अप्रगस्तविहायोगति दुर्मग पुस्वर, जनार्णय और
 नीचगोत्रका बन्ध मिथ्यादृष्टि व साक्षात्तसम्प्रदृष्टि गुणस्थानमें दो गतियोंसे संयुक्त होता है
 क्योंकि, दोष व मरक गतिके बन्धका अभाव है । स्थानप्रक्षिप्त और अनन्तानुबन्धिततुष्कका
 मिथ्यादृष्टि व साक्षात्तसम्प्रदृष्टि गुणस्थानमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है क्योंकि,
 मरक व दोष गतिके बन्धका अभाव है । बार गतियोंके मिथ्यादृष्टि और साक्षात्तसम्प्रदृष्टि
 स्वामी हैं । बन्धाप्ताव व बन्धनुच्छेदस्थान सुगम है । प्रवक्ष्यी प्रकृतियोंका बन्ध
 मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें बारों प्रकारका होता है । साक्षात्त गुणस्थानमें तीन प्रकारका बन्ध

पुत्राभावात् ।

मिच्छत-वर्तुस्यवेद-पठ्यादि-हुङ्घसंज्ञक असंपत्तयेवद्वय-आदाव-साहचर-मुहुम-
अपञ्च-साहचरसंज्ञायां प्रत्यये— उदात्तो बभौ पुंस् पञ्च वा वोष्मिन्वो णि
[विभार्] मिच्छत-पठ्यादि-दावर-मुहुम-अपञ्चार्थं अस्ति, अहमेव बभौव्यवोष्मेदसंज्ञायां ।
वर्तुस्यवेदस्य पुंस् बभौ पञ्च उदात्तो वोष्मिन्वदि, असंपदसम्प्रादिदिभिर् उदव्यवोष्मेद
इसंज्ञायां । हुङ्घसंज्ञक-असंपत्तयेवद्वय-आदाव-साहचरसंज्ञायां बभौव्यवोष्मेदो वेव, उदव्य
वोष्मेदो अस्ति, अभावात्स मावपुरांगमत्तसंज्ञायां । य य एवार्थि पयङीन् विगाहरीय
उदात्तो अस्ति, अपुबठमादौ । मिच्छतस्य बभौ सोदएव, असंपत्तयेवद्वय-पठ्यादि-दावर-मुहुम-
अपञ्चार्थं सोदय-पठ्यायम, हुङ्घसंज्ञक असंपत्तयेवद्वय-आदाव-साहचरार्थं पठ्यायम ।
मिच्छतस्य बभौ विंतीरो । सेसां सन्तीरो, विपमाभावात् । पञ्चया मुपमा । मिच्छत
वर्तुस्यवेद-हुङ्घसंज्ञक-असंपत्तयेवद्वय-अप-अपार्थं बभौ तिरिक्त्वा-ममुस्यइसंज्ञायां । पठ-
यादि-आदाव-दावर-मुहुम-साहचरार्थं तिरिक्त्वाइसंज्ञायां । मिच्छत-वर्तुस्यवेद-हुङ्घसंज्ञक
असंपत्तयेवद्वय-अप-अपार्थं तिरिक्त्वाइसंज्ञायां । पठ्यादि-आदाव-दावरार्थं तिरिक्त्वाइसंज्ञायां ।

होता है, क्योंकि वहाँ हुङ्घसंज्ञक अभाव है ।

मिच्छात् बभुंसकवेद चार आतिपा हुङ्घसंज्ञाया असंपत्तयेवद्वय-आदाव-साहचर-मुहुम-
अपञ्च-साहचरसंज्ञायां प्रत्यये— उदात्तो बभौ पुंस् पञ्च वा वोष्मिन्वो णि
[विभार्] मिच्छत-पठ्यादि-दावर-मुहुम-अपञ्चार्थं अस्ति, अहमेव बभौव्यवोष्मेदसंज्ञायां ।
वर्तुस्यवेदस्य पुंस् बभौ पञ्च उदात्तो वोष्मिन्वदि, असंपदसम्प्रादिदिभिर् उदव्यवोष्मेद
इसंज्ञायां । हुङ्घसंज्ञक-असंपत्तयेवद्वय-आदाव-साहचरसंज्ञायां बभौव्यवोष्मेदो वेव, उदव्य
वोष्मेदो अस्ति, अभावात्स मावपुरांगमत्तसंज्ञायां । य य एवार्थि पयङीन् विगाहरीय
उदात्तो अस्ति, अपुबठमादौ । मिच्छतस्य बभौ सोदएव, असंपत्तयेवद्वय-पठ्यादि-दावर-मुहुम-
अपञ्चार्थं सोदय-पठ्यायम, हुङ्घसंज्ञक असंपत्तयेवद्वय-आदाव-साहचरार्थं पठ्यायम ।
मिच्छतस्य बभौ विंतीरो । सेसां सन्तीरो, विपमाभावात् । पञ्चया मुपमा । मिच्छत
वर्तुस्यवेद-हुङ्घसंज्ञक-असंपत्तयेवद्वय-अप-अपार्थं बभौ तिरिक्त्वा-ममुस्यइसंज्ञायां । पठ-
यादि-आदाव-दावर-मुहुम-साहचरार्थं तिरिक्त्वाइसंज्ञायां । मिच्छत-वर्तुस्यवेद-हुङ्घसंज्ञक
असंपत्तयेवद्वय-अप-अपार्थं तिरिक्त्वाइसंज्ञायां । पठ्यादि-आदाव-दावरार्थं तिरिक्त्वाइसंज्ञायां ।

सामी, तिरियगईय अमावादी । बीईदिय-तीईदिय-बउरिईय-मुहुम-अपववत-साहारपापे
तिरिक्ख-मनुसा सामी, देव-येरइयसु यइसि बंधामावादी । बंधद्वारं अरिय, पक्कमिह
बद्धावविरोइइयो । बंधवोच्छेदद्वारं सुगमं । मिच्छसबंधो वउअविहो । सेसाण सादि-अनुवो ।

सात्वेदभीयस्स अमाहारीसु बंधवोच्छेदो वेव, उदमवोच्छेदामावादी । संभवत्स
बंधो सोदय-परोइयो । मिच्छाद्वि-सासणसम्मादिहि-असंजदसम्मादिहिंसु सांतरो, पडिबक्ख
पयडिबपुवत्तमादी । समोमिहि भिरंतरो, पडिबक्खपयडिबंधामावादी । पच्चया सुगमा ।
अवरि समोमिहि कम्मइयकयबोगपच्चयो एक्यो वेव, अण्णेसिमसंभवादी । मिच्छाद्वि-
सासणसम्मादिहिंसु तिरिक्ख-अणुसमइसंजुत्थो । असंजदसम्मादिहिंसु देव-अणुसगइसंजुत्थो ।
समोमिंसु अगइसंजुत्थो । पठमइमिच्छाद्वि-सासणसम्मादिहि-असंजदसम्मादिहिंसी मणुसमइ
केवलिणो च सामी । बंधद्वारं बंधवोच्छेदद्वारं च सुगमं । सादि-अनुवो बंधो,
साधावियादी ।

देवमइ-वेउअवियसरीर वेउअवियसरीरभंगोत्तंग-देवमइपाबोगाणुपुम्भी-तिरियवरपाभाव-

गतिपोंके मिच्छाद्वि स्वामी हैं, क्योंकि, मरकगतिमें इनके बन्धका अभाव है । द्वीन्द्रिय
बीन्द्रिय अतुतिन्द्रिय, सुखम अपयोंत और साधारणके तिर्यक और मनुष्य स्वामी हैं
क्योंकि, देव व नाटकीयोंमें इनके बन्धका अभाव है । बन्धाप्नान नहीं है क्योंकि एक
गुणस्थानमें अन्धानका विरोध है । बन्धमुच्छेदस्याम सुगम है । मिच्छात्वका बन्ध
चारों प्रकारका होता है । दोष प्रकृतियोंका सादि व अनुब बन्ध होता है ।

सातावेदभीयका अमाहायि जीवोंमें केवल बन्धमुच्छेद ही है, क्योंकि, वहां वस्तुके
उदयमुच्छेदका अभाव है । सर्वत्र वस्तुका स्वोदय परोदय बन्ध होता है । मिच्छाद्वि, सासा
वमसम्माद्वि और असंपतसम्माद्वि गुणस्थानमें साम्तर बन्ध होता है क्योंकि, वहां प्रति
पक्ष प्रकृतिका बन्ध पाया जाता है । सयोगकेवली गुणस्थानमें वस्तुका निरम्तर बन्ध होता
है क्योंकि वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । विरोध इतमों है कि
सयोगकेवली गुणस्थानमें केवल एक कार्मण कययोग प्रत्यय ही है क्योंकि, अन्य प्रत्ययोंकी
वहां सम्भावना नहीं है । मिच्छाद्वि और सासावमसम्माद्वि गुणस्थानोंमें तिर्यगाति
व मनुष्यगतिम संयुक्त बन्ध होता है । असंपतसम्माद्विपोंमें देवगति और मनुष्यगतिसे
संयुक्त बन्ध होता है । सयोगकेवली जीवोंमें गतिसंयोगसे रहित बन्ध होता है । चारों
गतिपोंके मिच्छाद्वि सासावमसम्माद्वि और असंपतसम्माद्वि तथा मनुष्यगतिके
केवली स्वामी हैं । बन्धाप्नान और बन्धमुच्छिन्नस्थान सुगम हैं । सादि व अनुब बन्ध
होता है क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

देवगति वैद्विपिअरीर, वैद्विपिअरीरंगोत्तंग देवगतिमायोगाणुपुदी और

मंसंजसम्प्रादिद्विभो बन्धमाप्नोते पयसीर्ण उच्छिदे — एवमसि परेदप्य नभो । कुरो, साधु-
विपात्रो । विरतेते, एगसमप्य नैधुवरमस्यैव नमावाहो । पञ्चया सुगमा । पयसि देवस्य
अउत्कृष्टस्य अउस्यपञ्चभो मरिच । तित्पयरस्स देव-मनुस्यमसंजुतो । तित्पयरस्स तिरिक्कसर्प-
विषा तिग्लमसंजसम्प्रादिद्विभो सामी । सेषार्ण तिरिक्क-मनुस्य सामी । बंधद्वार्ण नं
योपिण्णहृत्त न सुगम । सादि-मनुभो नभो, ननुवर्धिताहो ।

एव ब्रह्मसामिन्निबन्धो समो ।

तीर्थंकर नामकर्म इस अक्षयतसम्प्रादि जीवों द्वारा ब्रह्मनाम प्रकृतियोंकी प्रकृष्टता करते हैं—
इसका पठेवपसे बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि,
एक समबन्धे इसके बन्धविध्वान्नाशकिक्रमभाव है । अत्यय संगम है । विशेषता इसकी है कि
इसप्रतिबन्धके नानुसङ्गवेद अत्यय नहीं है । तीर्थंकर प्रकृतिक्रम देव और मनुष्य प्रकृतिसे
सङ्गुक्त बन्ध होता है । तीर्थंकर प्रकृतिके तिर्यग्गतिके बिना तीम्भ गतियोंके अक्षयतसम्प्रादि
स्वामी हैं । दोष प्रकृतियोंके तिर्यक् न मनुष्य स्वामी हैं । ब्रह्माध्याय और ब्रह्मधुम्भिक्रम
स्थान सुगम हैं । सादि न मनुष्य बन्ध होता है क्योंकि ये मनुष्यवर्णी प्रकृतिवर्ग हैं ।

इस प्रकार ब्रह्मस्वामित्वादिबन्ध समोक्त हुआ ।

पारिशिष्ट

१ वधसामित्तविचय-सुत्ताणि ।

सूत्र सङ्ख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सङ्ख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	ओ सा बंधसामित्तविचयमो याम तस्स इमो बुविदो पियेसो भोघेण भावेसेण य ।	१	७ गीतूय बघो पोच्छिग्गदि । एवे बंधा, भवसेसा बबंधा ।	१३
२	भोघेण बंधसामित्तविचयस्स पोइसब्बीवसमासाणि णाद् व्वापि भवति ।	४	८ मिच्छादिहूरी सासणसम्माइहूरी बंधा । एवे बधा भवसेसा बबंधा ।	३०
३	मिच्छादिहूरी सासणसम्माइहूरी सम्मासामिच्छादिहूरी भर्त्तज्जसम्मा- इहूरी संज्जवासेज्जदा पमसमेज्जदा अप्यमत्तसंज्जदा मपुम्भकरणपइहु उवसमा खवा भपियहिवाइर सांपराइयपइहुउवसमा खवा सुहुमसांपराइयपइहुउवसमा खवा उवसतकसापवीपरायछुमुत्था वीथकसापवीपरायछुमुत्था सज्जागिकेवली भजोगिकेवली ।	४	९ गीहा पयसाय को बघो को भवयो ?	३१
४	एवेसिं चोइसर्णं जीवसमासाणं पयविर्बधवोच्छेदो कइप्पा मवदि ।	५	१० मिच्छादिहूरीपइहुदि जाव मपुम्भ करणपइहुसुखिसंज्जदेसु उव समा खवा बंधा । मपुम्भकरण जाय संजेग्गदिम मार्गं गीतूय बंधो पोच्छिग्गदि । एवे बधा भवसेसा बबंधा ।	३५
५	एवण्णं पाणावरणीयाणं वहुण्हं ईसणावरणीयाणं जसक्खिंति वण्णागोइ—एवण्णमवतरायाणं को बंधो को भवयो ?	७	११ सात्तावेइणीयस्स को बघो को भवयो ?	३६
६	मिच्छादिहूरीपइहुदि जाव सुहुम सांपराइयसुखिसंज्जदेसु उवसमा खवा बंधा । सुहुमसांपराइय सुखिसंज्जदेजाय अरिमसमयं		१२ मिच्छादिहूरीपइहुदि जाव सज्जोगि केवसिं ति बंधा । सज्जोगि केवसिंमजाय अरिमसमयं गीतूय बंधो पोच्छिग्गदि । एवे बंधा भवसेसा बबंधा ।	३९
			१३ मत्तावेइणीय-अरदि-सोग—	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
३१	देवाउमस्त को बंधो को बंधयो ?	१४	बंधा । मपुष्यकरणदाय संलेजे भाये गंतुष्य बंधो बोधिउज्ज्वि । एदे बंधा बबसेसा बबधा ।	७३
३२	मिच्छाहृदी सासणसम्माहृदी असंज्जसम्माहृदी सज्जसासज्जा पमत्तसज्जा मपमत्तसज्जा बंधा । मपमत्तसंज्जदाय सले उज्ज्विमागं गंतुष्य बंधो बोधिउज्ज्वि । एदे बंधा, बबसेसा बबंधा ।	१५	कदिहि कारणहि जीवा तित्थयरणामगोर्द कम्मं वधति ?	७४
३३	देवगाइ-पंचिद्विपज्जादि-बेउभिय-तेजा कम्मइयसरीर ममचउरस-रुठाण-बेउभियसरीरभगोवग-बण-गंध रस फास-देवगाइ-पाभोगाणुपुष्पि-मगुदवळडुब-उबपाव-परपाव उस्सास-पसत्थ विहायगाइ-तस-वावर-पज्जस-पत्तेयसरीर धिर सुम-सुमग-सुस्सर-आदेउज्ज निमिज्जामार्थ को बंधो को बंधयो ?	१६	४० तत्थ इमेहि सोलसेहि करणेहि जीवा तित्थयरणामगोर्द कम्मं वधति ?	७५
३४	मिच्छाहृद्विपुडुडि जाब मपुष्य-करणपरहुउबसमा खावा बंधा । मपुष्यकरणदाय संलेजे भागे गंतुष्य बंधो बोधिउज्ज्वि । एदे बंधा बबसेसा बबधा ।	१७	४१ ईसणविसुज्जदाय विषयसंपण-दाय सीयण्वहसु गिरविचारदाय पाषाणपसु अपरिहीणदाय कज सपपहिसुज्जमदाय समिसंवेग संपणदाय अधाधामे तथा तदे साहूण पासुमपरिभागदाय साहूणं समाहिसंघारणाय साहूणं वे-जाबण्वजोगहसदाय बरहत्त मचीय बहुसुहमचीय पधयण मचीय पधयणवळडुदाय पय यज्जमाधयदाय ममिक्खणं ममिक्खणं पाणोभजोगहसदाय इच्छादि सोलसेहि करणेहि जीवा तित्थयरणामगोर्द कम्मं वधति ।	७६
३५	माहारसरीर माहारसरीरभंगो-बंगणमाय को बंधो को बबंधो ?	७७	४२ अस्त इमं तित्थयरणामगोर्द कम्मन्स उहणं सदेवासुरमाणु-सस्त लोगस्त मच्छपिग्गा पूज पिग्गा बंधुणिग्गा जमसंधिग्गा पेवाउ धम्मतित्थयर मिणा केवळियो हवति ।	७७
३६	मपमत्तसज्जा मपुष्यकरण परहुउबसमा कथा बंधा । मपुष्यकरणदाय संलेजे भागे गंतुष्य बंधो बोधिउज्ज्वि । एदे बंधा बबसेसा बबंधा ।	७८	४३ आदेसेण गविषाणुआदेण पिरय गरीय पेराएसु ईबपाजायरण उवसपायरण-सादासाव-बारस कसाय-पुरिसवेइ हस्स-रदि-परदि-साय-मय-मुगुंठा मज्जम-गदि-पंचिद्विपज्जादि-भोरासिय-	७८
३७	तित्थयरणामस्त को बंधो को बबंधो ?	७९		
३८	असंज्जसम्माहृद्विपुडुडि जाब मपुष्यकरणपरहुउबसमा कथा			

सूत्र सख्या

सूत्र

शुद्ध सूत्र सख्या

सूत्र

शुद्ध

तेजो कम्मदयसरीर-समभउरस-
संठाण-भोराळिपसरीरभंगोबंग
बउररिसइसंघइण-वण-गंध-
रस-फलस मणुसगइयाभोग्गाणु-
पुन्नि-अगुवसहुय-उवपात्-पर-
याह-उस्तास पसत्पविहायपणि
तस-बादर-पउरस-पसेवसरीर-
पिणपिर-सुहासुह-सुमग-सुस्सर
भादेउअ जसकिंति-अजसकिंति-
मिमिपुब्बागोह-एवंतरापार्थ
को बंधो को बंधो ?

४४ मिच्छाद्विप्पहुडि जाव मसंज्ज
सम्मदिही बंधा । एवे बंधा
अबंधा नत्थि ।

४५ विहाविहा-पपसापपसा-यंज-
गिदिमभंठाणुर्धमिकोय-माय-
माया-सोम-इतिपेह-तिरिक्काउ
तिरिक्काह-अइसंठाण-अइसंघ
इण-तिरिक्कागइयाभोग्गाणु-
पुप्पी-उउओव-अपसत्पविहाय-
गह-सुमग-सुस्सर-भादेउअ-
जीबापोवाले को बंधो को
अबंधो ?

४६ मिच्छाद्विप्प सासजसम्माद्वि
बंधा । एवे बंधा अपसेसा
अबंधा ।

४७ मिच्छस-अहुंसयधे-इइसंठाण-
असंपणधेवइसरीरसंपण-
आमाय को बंधो का अबंधा ?

४८ मिच्छाद्विप्प बंधा । एव बंधा
अवयसा अबंधा ।

४९ मज्झसाउजसस ५५ बंधा का
अबंधा ?

५० मिच्छाद्विप्प सासजसम्माद्वि
असंज्जसम्माद्वि बंधा । एवे
बंधा, अपसेसा अबंधा ।

५१ तित्थयरयामकम्मस्स को बंधो
को अबंधो ?

५२ असंज्जसम्माद्विप्प बंधा । एवे
बंधा अपसेसा अबंधा ।

५३ एव तिसु उवरिमासु पुडवीसु
वेयव्वं ।

५४ अउत्तीप एवमीए सट्ठीए
पुडवीए एवं वेव वव्वं । एवरि
विसेसो तित्थयरं मत्थि ।

५५ सत्तमाए पुडवीए वेरइया एव
आवावरवीय-छउंसवावरवीय-
सावासाह-बारसकमाव-पुरिस-
वेह-इस्स-एवि मरवि सोम मव-
उगुण-यंजिदिबज्जाणि भोराळिप
तेजो कम्मदयसरीर-समभउरस-
संठाण भोराळिपसरीरभंगोबंग-
बउररिसइसंघइण-वण-गंध-
रस फलस मणुसवसहुय-उवपात्-
परपाह-उस्तास-पसत्पविहाय-
गह-उस-बादर-पउरस-पसेव-
सरीर पिणपिर [सुहा] सुह
सुमग-सुस्सर-भादेउअ जसकिंति
अजसकिंति मिमि-एवंतरा-
इयार्थ का बंधो को अबंधो ?

५६ मिच्छाद्विप्पहुडि जाव मसं
ज्जसम्माद्विप्प बंधा । एव बंधा
अबंधा नत्थि ।

५७ विहाविहा-पपसापपसा-यंज-
गिदि-अनंताणुर्धमिकोय माय-
माया-सोम-इतिपेह-तिरिक्का-
ह-अइसंठाण-अइसंघइण-

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	तिरिक्खगहपाभोगाणुपुष्पी— उज्जोव भणसत्त्वविहायगह-नुमग पुस्सर-मज्झिम-जीवागोत्तार्य को बंधो को बंधो ?	१०९	किंति-पिमिज उज्जोवोद्द पंधत- रादयार्ण को बंधो को बंधो ?	११२
५८ मिच्छाद्वी सासपसम्माद्वी बधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धवा ।	"		११ मिच्छाद्वीपुद्दि जाव संज्झ- संज्झा बंधा । एदे बंधा बन्धवा परिय ।	११३
५९ मिच्छा-ज्झुसपवेद-तिरिक्खाउ हुंसंठाण-मसंपत्तसेवहुंसंघण पामार्ण को बंधो को बंधो ?	१११		१५ विहायिहा-पयसापयसा-धीय- गिहि मणसाणुविक्खेय-माण- माया-सोम-इत्थियेव-तिरिक्खाउ मज्झिम-तिरिक्खगह-मज्झिमगह मोराद्विपसरीर-ज्झसंठाण मोरा द्विपसरीरमोराद्वि-यज्झसंघण- तिरिक्खगह-मज्झिमगहपामो- णाणुपुष्पी-उज्जोव-भणसत्त्व- विहायगह-नुमग-पुस्सर-मज्झ- मज्झिम-जीवागोत्तार्य को बंधो को बंधो ?	११५
६० मिच्छाद्वी बंधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धवा ।	"		१६ मिच्छाद्वी सासपसम्माद्वी बधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धवा ।	"
६१ मज्झिमगह-मज्झिमगहपामोणाणु- पुष्पी-उज्जोवोत्तार्य को बंधो को बंधो ?	"		१७ मिच्छा-ज्झुसपवेद-भिरपाउ- भिरपाउ-परिद्वि-वीरिद्वि-सीरि- द्वि-ज्झसंठाण-मसंपत्तसेवहुंसंघण-भिर- पाउ-मज्झिमगहपामोणाणुपुष्पी- भावाव- याव-सुज्झ-मज्झिम-साहारण सरीरपामार्ण को बंधो को बंधो ?	१२३
६२ सम्मामिच्छाद्वी मसंज्झसम्मा- द्वी बंधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धवा ।	११२		१८ मिच्छाद्वी बधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धवा ।	"
६३ तिरिक्खगहपामोणाणुपुष्पी- पिपित्तिरिक्खा पंधिद्विपित्तिरिक्ख पज्झा पंधिद्विपित्तिरिक्खजोपि पौसु पंधपायावरणीय-उज्झसंजा- वरणीय-साहासाव-मज्झिमगह- पुत्तिसेव-इत्थ-रवि-भरवि-सोग मय-पुत्ति-वेवगह पंधिद्वि- जावि-वेववि-तेजा-कम्मद्वि- सरीर-समज्झसंघण-वेव- विपसरीरमोराद्वि वण्ण-रंघ- रघ-पत्त-वेवगहपामोणाणु- पुष्पी-मज्झिमगह-उज्झ-पर- भावा-उत्तमास-पसत्त्वविहायगह- उज्झ-वत्त-पज्झ-पत्त-सरीर- [पित्त] विर-सुहास-सुमग पुस्सर भावेज्ज जसकिंति मज्झ			१९ मिच्छाद्वीपुद्दि जाव भसं- ज्झसम्माद्वी बंधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धवा ।	"

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
८२	मिच्छाद्वि बंधा । एदे बंधा मयसेसा मबंधा ।	१४३	असकिसि-असकिसि मिमिष- उच्छागोह पबंधराह्याण को बंधो को मबंधो ?	१४९
८३	मणुस्साउमस्त को बंधो को मबंधो ?	१४४	११ मिच्छाद्विपुह्वि जाय मसज्ज सम्माद्वि बंधा । एदे बंधा मबंधा परिप ।	"
८४	मिच्छाद्वि सासणसम्माद्वि मसज्जसम्माद्वि बंधा । एदे बंधा मयसेसा मबंधा ।	"	१२ विहाविहा-पयछापयसा यीण- मिमिष मणतापुषधिकोप-भाण- माणा-सोम इतिपेव-अउसंठाण- अउसयइण मणसत्पविहायगह हुमग हुस्सर मणवेज्ज पीणा- गोदाण को बंधो को मबंधो ?	१५२
८५	तित्थपरणामकम्मस्त को बंधो को मबंधो ?	१४५	१३ मिच्छाद्वि सासणसम्माद्वि बंधा । एदे बंधा मयसेसा मबंधा ।	"
८६	मसंज्जसम्माद्वि बंधा । एदे बंधा मयसेसा मबंधा ।	"	१४ मिच्छस णमुमयवेह-हुइसंठाण- असपससेवहुमयइणपामाये को बंधो को मबंधो ?	१५३
८७	मबजवासिप-वाणवेतर-ओदि- सियवेवाण वेधमंगो । पवरि पिसेसो तित्थवर णत्थि ।	१४६	१५ मिच्छाद्वि बंधा । एदे बंधा मयसेसा मबंधा ।	"
८८	साहमीसाणकण्ठवासिपवेवाण वेधमंगो ।	१४७	१६ मणुस्साउमस्त को बंधो को मबंधो ?	१५४
८९	सणकुमारण्यहुनि जाय सहर सहस्सारकण्ठवासिपवेवाण एह माय पुइमीय णेरपण मंगो ।	१४८	१७ मिच्छाद्वि सासणसम्माद्वि असज्जसम्माद्वि बंधा । एदे बंधा मयसेसा मबंधा ।	"
९०	जायह जाय पवरोवज्जविमाण वासिपवेवेसु पवणाणावरणीय छन्सजावरणीय-सादासाह- वारसकसाय-पुरिचवेह इस्स- रवि मय पुगुंछा मणुसगह पवि- सियजहि भोरसिप तेजा कम्म- एसरीर समअउरससंठाण भोरा अियसरीरमगोबैग-अज्जरिह- सयइण बण्ण-संभरस फलस- मणुसगहपामेत्तापुपुष्पी मणुस अहुव अकथाह परमाह-उस्सास- पसत्पविहायगह तम-बावट- पज्जस पसेपसरीर पिराधिर- सुहासुह सुमग हुस्सर मणवेज्ज		१८ मणुसिज जाय सम्मद्विसिहि विमाणवासिपवेवेसु पवणाणा वरणीय-अवसंथावरणीय सदा- साह-वारसकसाय-पुरिचवेह-	१५५

सूत्र सफ्या

सूत्र

सूत्र सफ्या

सूत्र

सूत्र

इत्थं रति-वर्ति-सोय-मय-
 पुण्ड्र-मनुस्साह-मनुसगा-
 पंचिद्विपञ्चानि मोरादिय-तेजा
 कम्माद्वमपर-समचरस-
 संछन्न-मोरादियसपर्ययो-
 र्वा करवित्तसहस्यद्वय वच-
 मेष रस फल-मनुसगापामो-
 ग्यानुपुष्पी अगुदमखुल-अव-
 बाह परबाह सस्सास-पसत्य
 विहायमाह तस बाह परवत्त-
 पत्तपत्तरी विरापिर सुहासु
 सुमय सुस्तर-मनुस-अस-
 किति-असकिति-विमिष-
 सिन्धयर वचपापत्त पंचतरा-
 पार्थ को वयो को सर्वयो ?

१५५

११ असेअसम्मादिद्वौ वंधा। अर्धचा
 नसि ।

१५६

१०९ इतिबापुनलेज परंदिपा बाह्य
 सुहमा परवत्ता अपवत्ता
 बीरंदिप तीरंदिप अठरंदिप-
 परवत्ता अपवत्ता पंचिद्विप
 अपवत्तार्थ पंचिद्विपठिरिअ
 अपवत्तमंगो ।

१५८

११ पंचिद्विप-पंचिद्विपपरवत्तपुसु
 पंचपाप्मावरणीय वद्वत्तवा-
 कणीय असकिति-वचपापत्त
 पंचतरापार्थ को वंधो को
 सर्वयो ?

१६०

१०४ मिच्छादिपुण्ड्रिआव सुहम
 सांपाहपुसुमिसंजवेसु ठ-
 समा कथा वंधा । सुहमसांप
 पाहपुसुमिसंजवेसु कृति
 सम्यं वंदू वंधो वाचि
 ज्ञति । एदे वंधा अवसेसा
 सर्वथा ।

१०२

१०५ विहासिहा पवसापवसा वीव-
 गिदि अर्धतापुवधिक्कोव माय
 माया छम्म-इरियवेद-तिरि-
 क्काअतिरिक्काअ-असंछन्न
 वदसंयद्वय तिरिक्काअपामो
 ग्यानुपुष्पी-अजोव-अपसाप-
 विहायमाह-दुपय पुस्तर वना-
 इज वीवागोवार्थ को वंधो
 को सर्वयो ?

१०५

१०६ मिच्छादिपुण्ड्रिआव सुहम
 वंधा । एदे वंधा अवसेसा
 सर्वथा ।

१०६

१०७ विहापवसाव को वंधा को
 सर्वयो ?

१०७

१०८ मिच्छादिपुण्ड्रिआव सुहम
 करणपंचिद्विपुसुमिसंजवेसु उय
 समा कथा वंधा । अपुण्ड्रकर
 संजवेसु संजवेसु मार्य
 वंदू वंधो वाचिज्ज्ञति । एदे
 वंधा अवसेसा सर्वथा ।

१०८

१०९ सात्वेद्वीयस्त को वंधो को
 सर्वयो ?

१०९

११० मिच्छादिपुण्ड्रिआव सजोगि-
 केद्वी वंधा । सजोगिकवसि
 अज्जय करिमधमप वंदू वंधो
 वाचिज्ज्ञति । एदे वंधा अव
 सेसा सर्वथा ।

११०

१११ असात्वेद्वीय-मरति सोय-
 मयिर-असुह-असकिति-
 वामाव को वंधो को सर्वयो ?

१११

११२ मिच्छादिपुण्ड्रिआव पमत्त
 संजवेसु वंधा । एदे वंधा
 अवसेसा सर्वथा ।

११२

सूत्र सप्तम

सूत्र

पृष्ठ सूत्र सप्तम

सूत्र

पृष्ठ

११३ मिच्छासत्त-पञ्चसयवेद विरयार
विरयार-परिदिय-वीरिय-वीरि
विष-वठरिदिय-वठरि-कुटसंठान
असंपत्तसेवदुसंपत्त-विरयानु-
पुत्थी भावाव-धावट-सुद्धम अय-
उत्त-साहारणसरीरणामार्ज
को बंधो को बंधो ? १८०

११४ मिच्छासत्त-बंधा । एवे बंधा
अवसेसा बंधा ।

११५ अयपञ्चकलापावरणीयकोष —
माज-माया कोम-मनुसगह—
भोरासियसरीर—भोरासिय—
सरीरभगोवग-वठरिसहवर
पाठयमसरीरसंभजन-मनुस
गहपाभोग्यापुत्थिभामार्ज को
बंधो को बंधो ? १८२

११६ मिच्छासत्त-पुत्थि जाव अत्त-
अत्तसम्मासत्त-बंधा । एवे बंधा
अवसेसा बंधा । १८३

११७ पञ्चकलापावरणीयकोष-माज —
माया-कोमार्ज को बंधो को
बंधो ? १८४

११८ मिच्छासत्त-पुत्थि जाव संभजा
संभजा बंधा । एवे बंधा अज
सेसा बंधा ।

११९ पुरिसवेद कोषसंभजनार्ज को
बंधो को बंधो ?

१२० मिच्छासत्त-पुत्थि जाव अजि
यद्विवावरत्तापरायपविद्वज्ज
समा बंधा । अजियद्वि
वावरत्ताप सेसे संभजनार्ज
यत्तु बंधो बोधिज्जवि । एवे
बंधा अवसेसा बंधा ।

१२१ माज मायासंभजनार्ज को बंधो
को बंधो ? १८५

१२२ मिच्छासत्त-पुत्थि जाव अजि
यद्वि उवसमा बंधा बंधा ।
अजियद्विवावरत्ताप सेसे सेसे
संभजनार्ज मागे यत्तु बंधो
बोधिज्जवि । एवे बंधा
अवसेसा बंधा ।

१२३ कोमसंभजनार्ज को बंधो को
बंधो ?

१२४ मिच्छासत्त-पुत्थि जाव अजि
यद्वि उवसमा बंधा बंधा ।
अजियद्विवावरत्ताप अरिम
समयं यत्तु बंधो बोधिज्जवि ।
एवे बंधा अवसेसा बंधा ।

१२५ हत्त-रवि-अय-पुत्थि जाव को
बंधो को बंधो ? १८६

१२६ मिच्छासत्त-पुत्थि जाव अयुत्त
अयुत्तपविद्वज्ज उवसमा बंधा ।
अयुत्तअयुत्ताप अरिमसमयं
यत्तु बंधो बोधिज्जवि । एवे
बंधा अवसेसा बंधा ।

१२७ मनुस्साउवसत्त को बंधो को
बंधो ?

१२८ मिच्छासत्त-साधनसम्मासत्त-
अत्तसंभजनार्ज बंधा । एवे
बंधा अवसेसा बंधा ।

१२९ वेवाडमसत्त को बंधो को
बंधो ? १८७

१३० मिच्छासत्त-साधनसम्मासत्त-
अत्तसंभजनार्ज संभजासंभजा
अयमत्तसंभजा अयमत्तसंभजा
बंधा । अयमत्तसंभजा संभजे

सूत्र संख्या

सूत्र

श्रुत सूत्र संख्या

सूत्र

पृष्ठ

अभिर्न मासं यंतूय बंधो बोधित
पञ्चि । एते बंधा, भवसेसा
अर्धधा ।

१८७

१११ देवमाह-पंचिद्विज्जादि-बद्धिप
तेजा कम्ममयसरीर समचउरस
संठाव देवमिबमरीरभंगोर्ध्व-
बन्ध गंध रस फलस-ब्रह्माह
पाभोगालुपुष्पी-भगुणबद्धव-
उबधाह परधाह-उस्सास-
पसत्पविहापगह-सस बाह्व-
पञ्चस-पसेपसरीर पिर-सुम
सुभग-सुस्सर भवेउज्ज विमिष
जामार्ज को बंधो को अर्धधो ?

११२ मिच्छाहट्ठिप्यहृदि जाव मपुष्प-
करजपरहुडवसमा खवा बंधा ।
मपुष्पकरजजाय संसेग्गे माये
यंतूय बंधो बोधित्पञ्चि । एते
बंधा, भवसेसा अर्धधा ।

१८८

११३ आहारसरीर आहारभंगोर्ध्व-
जामार्ज को बंधो को
अर्धधो ?

१८९

११४ अप्यमत्तसंज्ञा मपुष्पकरज
परहुडवसमा खवा बंधा ।
मपुष्पकरजजाय संसेग्गे माये
यंतूय बंधो बोधित्पञ्चि । एते
बंधा भवसेसा अर्धधा ।

११५ तित्थवरत्तामाय को बंधो को
अर्धधो ?

११६ अर्धज्जसम्मार्तिट्ठिप्यहृदि जाव
मपुष्पकरजपरहुडवसमा खवा
बंधा । मपुष्पकरजजाय संसेग्गे
माये यंतूय बंधो बोधित्पञ्चि ।
एते बंधा भवसेसा अर्धधा ।

"

११७ कायाशुभाह्व पुडविक्काह
माडकाह-बजण्हिकाह-
पिगोव्वीव-बाह्व-सुहुम-
पञ्चसापञ्चसाव बह्वबज
ण्हिकाहयपसेयसरीरपञ्चसा
पञ्चसाव व पंचिद्विपनिरिक्क
अपञ्चसमंगो ।

१९२

११८ तेजकाह-बाहकाह-बाह्व-
सुहुम पञ्चसापञ्चसाव सा
बज भंगो । जवरि चित्तेसो
ममुस्साह ममुसगह ममुसगह
पाभोगालुपुष्पी-उबधागार्ह
वत्थि ।

१९९

११९ तसकाह तसकाहपञ्चसाव
मोर्ध्व भेदध्वं जाव तित्थवेरे
त्ति ।

२००

१२० जोगालुबधेव पंचमपञ्चोमि
पंचवविज्जोमि-कामजोगीसु मोर्ध्व
भेदध्वं जाव तित्थवेरे त्ति ।

२०१

१२१ सत्तावेद्वीवस्स को बंधो को
अर्धधो ? मिच्छाहट्ठिप्यहृदि
जाव लज्जोमिकेवली बंधा ।
एते बंधा अर्धधा वत्थि ।

२०२

१२२ भोपट्ठियकरजजोगीव ममुस
गहमंगो ।

२०३

१२३ जवरि चित्तेसा सत्तावेद्व
वीवस्स मज्जोमिमंगो ।

२०४

१२४ भोपट्ठियमिस्सकापजोगीसु
पंचवापावरवीव छव्वसपावर-
वीव-असाहविद्वीव-वारस-
कसाप-पुरिसवेद्व-इस्स-पवि-
जट्ठि-सोप भव-मुहुम-पवि-
द्विज्जादि-तेजा-कम्ममयसरीर-
समचउरससंठाव-बन्ध-गंध

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	रस-कास-अगुरुबलदुष्प-उद- घात-परधातु उस्सास-पसत्य- विहायग-रस-बाध-पञ्चस- पसेयसरीर पिपायिर-सुहासुह सुमय-सुस्तर-भादेज-जस- किसि-विमिश्र उष्णगोत्र-यं- तपहयार्थ को बंधो को बन्धो ?	२०५	साहारणसरीरगामार्थ को बंधो को बन्धो ?	२१३
१४५	मिच्छाहृद्दी सासजसम्माहृद्दी मसंजदसम्माहृद्दी बंधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धपा ।	२०६	१५१ मिच्छाहृद्दी बंधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धपा ।	"
१४६	विहायिहा-पयसापयसा र्थिय गिहि-अपंतापुर्बधियेध माज मापासोम-इतिषेद-तिरिक्क- ग-मजुसग-भोरासियसरीर- जडसंठाप भोरासियसरीरभंगो बंग-यंजसंघडय तिरिक्कग- मजुसग-पामोमागुपुष्पी- जउमो-अपसत्यविहायग- सुमय-सुस्तर मयदेज-धीवा- गोवार्थ को बंधो को बन्धो ?	२०७	१५२ देवग-वेठभियसरीर-वेठविय सरीरमयोपंग-देवग-पामो- ग्गाणुपुष्पी-तित्यपरगामार्थ को बंधो को बन्धो ?	२१४
१४७	मिच्छाहृद्दी सासजसम्माहृद्दी बंधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धपा ।	"	१५३ मसंजदसम्माहृद्दी बंधा । एदे बंधा भवसेसा बन्धपा ।	२१५
१४८	सादेवेदीयस्स को बंधो को बन्धो ?	२१२	१५४ वेठभियक्यभोगीय देवग-प मयो ।	"
१४९	मिच्छाहृद्दी सासजसम्माहृद्दी मसंजदसम्माहृद्दी सजोगि केवळी बंधा । एदे बंधा, बन्धपा वत्थि ।	"	१५५ वेठभियमित्तक्यभोगीयदेव- गभंगो ।	२१६
१५०	मिच्छा-जडसंघदेह-तिरि- क्क-मजुसाठ-जमुज-इ- संठाप मसंजसंघदेह-संघडय- भावा-पावर-सुहुम मजुजस-		१५६ ववति विसेसो वेठभियसु तिरिक्काठम वत्थि मजु- स्साठम वत्थि ।	२२९
			१५७ साहारक्यभोगि-साहारमित्त क्यभोगीसु पंजयापावरणीय छर्दसपावरणीय-सादासाह- जमुसंजसज-पुरिसदेह-इस्स- रवि-अरवि-सोग-मय-सुगुहा- देवा-देवग-यंभियज- वेठभिय-सेजा-कम्मपसरीर- समजउरससंठाप-वेठभिय- सरीरभंगोबंग वण्ण-गीध-रस- कास-देवग-पामोमागुपुष्पी- अगुरुबलदुष्प-उदघात-परधातु स्सास पसत्यविहायग-रस- बाध-पञ्चस-पसेयसरीर- पिपायिर-सुहासुह-सुमय- सुस्तर-भादेज-जस- किसि-विमिश्र-तित्यपर- उष्णगोत्र-यंजसंघहयार्थ को	

सूत्र सङ्ख्या

सूत्र

पृष्ठ सूत्र सङ्ख्या

सूत्र

पृष्ठ

अहिर्मं मायं गंतूय बंधो बाध्मि
ज्जति । एवे बंधा, भवसेसा
अर्बधा ।

१८७

१११ वेवयय पंविद्विपजाति वेवभिव
तेजा कम्मइयसरीर समवडरस
सठाव वेवभिवसरीरधंगोबंग-
बण्ण-गंध रस कास-वेवगइ
पाभोमगाधुपुष्पी-मगुदवसहुव-
ववधात् परपात्-उस्सास-
पसत्पविहापगइ-तस-बाहर-
पग्गत्त-पत्तेवसरीर पिर सुम
सुमग-सुस्सर मनेग्ग-विमिष
जामार्ज को बंधो को अर्बधो ?

११२ मिच्छारट्ठिप्यहुडि जाव अपुण्ण
करजपरहुडवसमा ज्जा बंधा ।
अपुण्णकरजजाय संखेग्गे माये
पंतूय बंधो बाध्मिज्जति । एवे
बंधा, भवसेसा अर्बधा ।

१८८

११३ आहारसरीर आहारमंगावंग-
जामार्ज को बंधो को
अर्बधो ?

१९१

११४ अण्णमत्तसंखदा अपुण्णकरज
परहुडवसमा ज्जा बंधा ।
अपुण्णकरजजाय संखेग्गे मागे
गंतूय बंधो बाध्मिज्जति । एवे
बंधा भवसेसा अर्बधा ।

११५ तित्थवरजामाय को बंधो को
अर्बधो ?

११६ अर्संजइसम्माट्ठिप्यहुडि जाव
अपुण्णकरजपरहुडवसमा ज्जा
बंधा । अपुण्णकरजजाय संखेग्गे
माय गंतूय बंधो बाध्मिज्जति ।
एवे बंधा, भवसेसा अर्बधा ।

"

११७ कयाधुवादेव पुटविकारव
आडकारव-वमप्पविकारव-
विगोइजीव-बाहर-सुहुम-
पग्गत्तापग्गत्तायं बाहरवम
प्विकारवपत्तेवसरीरपग्गत्ता
पग्गत्तायं व पंविद्विपनिरिक्क
अपग्गत्तमंगो ।

१९२

११८ तेडकारव-बाठकारव-बाहर-
सुहुम पग्गत्तापग्गत्तायं सो
वेव मंगो । जवरि विसेसो
मज्जुस्साइ मज्जुसगइ मज्जुसगइ
पाभोमगाधुपुष्पी-उप्पायात्
वत्थि ।

१९७

११९ तसकारव तसकारवपग्गत्ताय
मोयं वेदवई जाव तित्थवेरे
त्ति ।

२००

१२० जोगाधुवादेव पंचमज्जोपि
पंचवज्जिजागि-अपज्जोगीसु मोयं
वेपथ्यं जाव तित्थवेरे त्ति ।

२०१

१२१ सत्तावेद्वीपस्स को बंधो को
अर्बधो ? मिच्छारट्ठिप्यहुडि
जाव सज्जोगिकेवळी ज्जा ।
एवे बंधा अर्बधा वत्थि ।

२०२

१२२ ओपत्तिपक्कवज्जोगीयं मज्जुस
गइमंगो ।

२०३

१२३ जवरि विसेसो सत्तावेद
वीपस्स मज्जोगीमंगो ।

२०५

१२४ ओपत्तिपमिस्सकापज्जोगीसु
पंचवाचावरणीय छंदसवावर-
भीय-जसादावईवीव-वारस-
कसाय-पुरिउवेद-इस्स-एदि-
अरदि-साय भय जुगुछ-पंवि-
दिवजादि तेजा-कम्मइयसरीर-
समवडरससठाव-बण्ण-गंध-

सूत्र संख्या

सूत्र

पृष्ठ सूत्र सख्या

सूत्र

पृष्ठ

रस-कास-मगुदमल्लुभ-उब-
पाद-परपाद-उस्तास-पसतय-
विहापगह-सस-बादर-पञ्चस-
पसेयसरीर-यिराधिर-मुहासुह
सुमग-सुस्तर-मादेज-जस-
किसि-पिमिष उचचागोह-यं-
तपाहयार् को बंधो को
बन्धो ?

२०५

१४५ मिच्छाहृद्दी सासजसम्माहृद्दी
मसंजदसम्माहृद्दी बंधा । एदे बंधा
मबसेसा मबंधा ।

२०६

१४६ धिरापिहा-पयसाययळा दीप
गिद्धि-मयंतापुबंभिकोष माज
मापा-ओम-इरियवेद-तिरिक्क-
गह-मणुसगह-ओराधियसरीर-
कडसंठाण मोराधियसरीरमंगो
बंग-यं-कसंघडय तिरिक्कगह-
मणुसगहपामेगापुपुब्बी-
उज्जोब-मणुसतपविहापगह-
हुमग-सुस्तर मणवेज जीवा-
गोदार् को बंधो को मबंधो ?

२०७

१४७ मिच्छाहृद्दी सासजसम्माहृद्दी
बंधा । एदे बंधा मबसेसा
मबंधा ।

"

१४८ सादेवेद्वीयस्स को बंधो को
मबंधो ?

२१२

१४९ मिच्छाहृद्दी सासजसम्माहृद्दी
मसंजदसम्माहृद्दी सजोगि
केवळी बंधा । एदे बंधा मबधा
पति ।

"

१५० मिच्छस-पयंसपवेद-तिरि-
क्कह-मणुसाह-बुमादि-हुह-
संठाण मसंघडसेवहसंघडय-
भादाह पादर-सुहुम मपञ्चस-

साहारणसरीरणामार् को बंधो
को मबंधो ?

२१३

१५१ मिच्छाहृद्दी बंधा । एदे बंधा
मबसेसा मबंधा ।

"

१५२ देवगह वेडभियसरीर-वेडविप
सरीरमंगोबग देवगहपामो-
गणुपुब्बी-तिरयपरणामार् को
बंधो को मबंधो ?

२१४

१५३ मसंजदसम्माहृद्दी बंधा । एदे
बंधा मबसेसा मबंधा ।

२१५

१५४ वेडभियकपजोगीणं देवगहप
मंगो ।

"

१५५ वेडभियमिस्सकामजोगीणं देव
गहमंगो ।

२१६

१५६ मवरि बिसेसो वेडुबियासु
तिरिक्काहमं पति मणु
स्साहमं पति ।

२२१

१५७ माहारकपजोगि-माहारमिस्स
कपजोगीसु पंजपायावरणीय
सर्वसपावरणीय-सादासाह-
बुसेजडय-पुदेसवेद-हस्स-
एवि-मरवि-सोग-मय-पुगुण-
देवाठ-देवगह-पंविधिपजति-
वेडभिय-तेजा-कम्मइयसरीर-
समजडरससंठाण-वेडभिय-
सरीरमंगोबग बण-नीय-रस-
पास-देवगहपामो-गणुपुब्बी-
मगुदमल्लुभ-उबपाद-परपाद-
स्तास-पसतपविहापगह-तस-
बादर-पञ्चस-पसेयसरीर-
यिराधिर-मुहासुह-सुमग-
सुस्तर मादेज-जसकिसि-
मजसधिसि-पिमिष-तिरयपर-
उचचागोह-यं-तपाहयार् को

सूत्र संख्या	सूत्र	शृष्ट सूत्र संख्या	सूत्र	शृष्ट
	बंदो को बर्बो ?	२९९	१९१ साक्षादेदजीयस्त को बंदो को बर्बो ?	२३८
१५८	पमससेजवा बंधा । एदे बंधा बबेया जरिय ।	२३०	१९४ मिच्छाद्वि सासबसम्माद्वि बसंजइसम्माद्वि सजाणि केवसी बंधा । एदे बंधा बर्बो पत्ति ।	२३९
१५९	कम्महयकपजोयीसु पंषणाया- वरणीय—अर्हसपावरणीय— अमहावेदणीय—वारसससाय- पुरिसवेइ इस्स एदि—अएदि— सोग—अप बुगुंछा मजुसगह— पंविदिपजइ बोराडिप टेजा- कम्महयसरीर—समबजरस— संडान मोराडिबसरीरअगोर्बम बज्जरितइसपइय बज्ज—एय- रस—अस मजुसगहपाभोगागु- पुब्बी भगुरबज्जइय—अजपात्— परपाडुसास पसत्पविहापगह ठस बाइर परज्ज—असेपसरीर यिउपिर सुहासुह—सुमग— सुस्सर आदेअ—असकिंति— अजसकिंति—अमिजुक्कापेत् एवेतएराण को बंधो को बर्बो ?	२३२	१९५ मिच्छाद्वि बंधा । एदे बंधा बबेया बर्बो ।	२४०
१६०	मिच्छाद्वि सासबसम्माद्वि बसंजइसम्माद्वि बंधा । एदे बंधा बबेया बर्बो ।	"	१९७ वेवगाइ वेदविजसरीर—वेद— विजसरीरअगोर्बम—वेवगह— पामोमागुपुब्धि—तिप्पपर— पामार्थ को बंधो को बर्बो ?	२४१
१६१	विहापिइअपकापसा योज- गिहि—अर्बेतागुर्बिओज—माय माता कोम—इतिपवेइ—तिरिक्क- गह—अजंडाज—अउसंपइय— तिरिक्कयइपाभोगागुपुब्धि— अजोक्—अपसत्पविहापगह— सुमग सुस्सर अजोक् योजा पेत्तार्थ को बंधो को बर्बो ?	२३३	१९८ बसंजइसम्माद्वि बंधा । एदे बंधा बबेया बर्बो ।	"
१६२	मिच्छाद्वि सासबसम्माद्वि बंधा । एदे बंधा बबेया बर्बो ।	२३४	१९९ वेवणी भोय ।	२४५
			२०० लिहा पपका प भोय ।	२४६
			२०१ मसाइवेदजीयमोय ।	२४७
			२०४ पक्कणी भोय ।	"

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
१७५	अप्यव्यक्तज्ञानावावरणीयमोष ।	२५१	१८९	लोमसंज्ञकणस्त को बंधो को अवधो ? २६१
१७६	पच्यव्यक्तज्ञानावावरणीयमोष ।	२५४	१९०	अभियष्टी उवसमा खवा बंधा । अभियष्टिवावरणात् अरिम समर्थं गंतुं बंधो बोधिरुज्ज्वलि । एदे बंधा, अवसेसा भवंधा । २६१
१७७	हस्त रवि आब तित्पयेरि ति मोष ।	"	१९१	कसापापुवादेण कोयकसारसु पंचपापावरणीय- [अउदसपा- वरणीय-सादावेद्वीय] कबुसंज अन असकिति उवसागोद-र्य गुर्याण को बंधो को अवधो ? ,
१७८	अवगद्वेद्वयसु पंचपापावर णीय-अउदसपावरणीय अस- किति-उवसागोद-र्यसंतरायाण को बंधो को अवधो ? २६४	२६४	१९२	मिच्छाहृद्विपुडि आब अवि- यष्टि ति उवसमा खवा बंधा । एदे बंधा अवंधा जतिप । २७०
१७९	अभियष्टिपुडि आब सुहुम सांपरायउवसमा खवा बंधा । सुहुमसांपरायसुदिसंज्ञकवाए अरिमसमर्थं गंतुं बंधो बोधिरु- ज्ज्वलि । एदे बंधा, अवसेसा भवंधा ।	"	१९३	बेद्वयि मोष । २७२
१८०	सादावेद्वीयस्त को बंधो को अवधो ? २६५	२६५	१९४	आब पच्यव्यक्तज्ञानावरणीयमोष । २७४
१८१	अभियष्टिपुडि आब सजोमि केयली बंधा । सजागिकेवदि अज्ञात् अरिमसमर्थं गंतुं बंधो बोधिरुज्ज्वलि । एदे बंधा अव- सेसा भवंधा ।	"	१९५	पुरिसवेदे मोष । २७५
१८२	कोमसंज्ञकणस्त को बंधो को अवधो ? २६६	२६६	१९६	हस्त रवि आब तित्पयेरि ति मोष । "
१८३	अभियष्टी उवसमा खवा बंधा । अभियष्टिवावरणात् संलेखे मगे गंतुं बंधो बोधिरुज्ज्वलि । एदे बंधा अवसेसा भवंधा ।	"	१९७	माजकसारसु पंचपापावर णीय-अउदसपावरणीय सादा- वेद्वीय तिग्गिसंज्ञकण-अस- किति-उवसागोद-र्यसंतरायाण को बंधो को अवधो ? "
१८४	माय-मायासंज्ञकण को बंधो को अवधो ? २६७	२६७	१९८	मिच्छाहृद्विपुडि आब अवि- यष्टी उवसमा खवा बंधा । एदे बंधा अवंधा जतिप । २७६
१८५	अभियष्टी उवसमा खवा बंधा । अभियष्टिवावरणात् सेसे सेसे संलेखे मगे गंतुं बंधो बोधिरुज्ज्वलि । एदे बंधा, अव- सेसा भवंधा ।	"	१९९	बेद्वयि आब पुरिसवेद-कोष संज्ञकणमोष । "
१८६	अभियष्टी उवसमा खवा बंधा । अभियष्टिवावरणात् सेसे सेसे संलेखे मगे गंतुं बंधो बोधिरुज्ज्वलि । एदे बंधा, अव- सेसा भवंधा ।	"	२००	हस्त-रवि आब तित्पयेरि ति मोष । २७७
१८७	मायकसारसु पंचपापावर णीय-अउदसपावरणीय सादा- वेद्वीय-तिग्गिसंज्ञकण-अस-	"	२०१	हस्त-रवि आब तित्पयेरि ति मोष ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
२१४	मल्लज्वलसम्मादिद्विपुद्गुडि जाव लीजकसापवीररागछुमरया बधा । एदे बंधा भर्बधा गरिय ।	२८८	२१४	सज्जागिकबधी बंधा । सज्जागि केवलिभद्राप करिमसमय गंतून बंधा बोधिछग्गदि । एदे बधा भवसेसा भवधा ।	२९७
२१५	संसमोघ जाव तिरपयेरि ति । बवरि मल्लज्वलसम्मादिद्विपुद्गुडि ति माणिद्वर्ध ।	२८९	२१५	संज्जमाप्पुपादेज संज्जदेसु मज्ज पग्गवप्पाणिमंगो ।	२९८
२१६	मज्जपग्गवप्पाणीसु पञ्चप्पाणा वरणीय-अज्जसंजावरणीय- असकिप्पि उच्चाभोद् पंचतरा- याज को बंधो को भर्बधो ?	२९५	२१६	जवरि बिससा सत्तापेद्वणीयस्स को बंधो को भर्बधो ?	"
२१७	पमत्तसंज्जवपुद्गुडि जाव सुद्धम सांपरायणवत्तमा कथा बंधा । सुद्धमसांपरायणसंज्जवद्वाए करिमसमय गंतून बंधो बोधि- छग्गदि । एदे बंधा भवसेसा भर्बधा ।	"	२१७	पमत्तसंज्जवपुद्गुडि जाव सज्जागि केवली बंधा । सज्जागिकबलि भद्राप करिमसमय गंतून बंधो बोधिछग्गदि । एदे पधा भवसेसा भर्बधा ।	"
२१८	विहा पयच्छाज को बंधा को भर्बधो ?	"	२१८	सामादयछेदोबभूवजसुद्धि- सज्जदेसु पंचपाणावरणीय- सत्तापेद्वणीय सोमसज्जज्ज- असकिप्पि उच्चाभोद्-पञ्चतरा- याज को बंधो को भर्बधो ?	"
२१९	पमत्तसंज्जवपुद्गुडि जाव मपुज्ज- करयपद्गुडवत्तमा कथा बंधा । मपुज्जकरयद्वाए संलेग्गदिमं मार्ग गंतून बंधो बोधिछग्गदि । एदे बंधा भवसेसा भर्बधा ।	२९६	२१९	पमत्तसंज्जवपुद्गुडि जाव भंणि पट्टिज्वत्तमा कथा बंधा । एदे बंधा भर्बधा गरिय ।	२९९
२२०	सत्तापेद्वणीयस्स को बंधो को भर्बधो ?	"	२२०	सेसे मज्जपग्गवप्पाणिमंगो ।	३००
२२१	पमत्तसंज्जवपुद्गुडि जाव लीज कमायणीपरापछुमरया बंधा । एदे बंधा भर्बधा गरिय ।	"	२२१	परिहारसुद्धिसंज्जदेसु पंच पाणावरणीय छर्त्तसप्पावरणीय सत्तापेद्वणीय-अपुत्तंज्जज्ज- पुरिसवेद् इस्स-एदि-मय- दुग्गुछा देवद-पंचिद्विपुद्गुडि- पेज्जिपेसेजा-कम्मवत्तरीर- समवत्तसत्तज्ज-अउधिय- सरीरसंगोवंग बण्ण गंध-रत्त- पास-देवापुप्पि अशुदवत्तदुग्ग वत्तपाव परपापुत्तसत्त-पत्तय- विहापगद-सत्त-वात्तर परज्जत्त- पत्तेयसरीर पिर-सुह-सुमग-	"
२२२	सेसमोर्ध जाव तिरपयेरि ति । बवरि पमत्तसंज्जवपुद्गुडि ति माणिद्वर्ध ।	"	२२२	केवलिभद्राप करिमसमय गंतून बंधा बोधिछग्गदि । एदे बंधा भवसेसा भर्बधा ।	"
२२३	केवलिभद्राप करिमसमय गंतून बंधो बोधिछग्गदि । एदे बंधा भवसेसा भर्बधा ।	२९७			

सूत्र संख्या	सूत्र	शृङ्खला सूत्र संख्या	सूत्र	शृङ्खला सूत्र संख्या
	पाभोगाणुपुष्पी भगुदमसङ्गम उत्तमाद्-परमाद्-उत्तमास- पसत्पविद्यापगद्-तस-बाद्- पञ्चत्त-यत्तयसरीर-यिरापर- सुहासुद् सुमग-सुस्तर भाद्- जसकित्ति मज्जसकित्ति-पिमिषु पञ्चागोद्-पञ्चतराहयार्ण को बन्धो को बन्धो ?		णीछलस्त्रिय-पञ्चलस्त्रियानम संज्ञवमेगो ।	१२०
२४६	मिच्छाद्विपुद्गुद्गि जाव मय अज्ञसम्माद्विपुद्गुद्गि बन्धा । एदे बन्धा मयसेसा मयसा ।	२१८	२५९ तेउलस्त्रिय-पम्मसेस्त्रियपसु- पञ्चवाणावरणीय छर्त्तसणावर- णीय-सात्तावणीय-पञ्चसंज्ञ- सम-पुरिससेद्-तस्स-रत्ति-मय- बुगुछा देवगाद्-पञ्चिद्वियजादि- वडिद्विय-सेजा-कम्मदयसरीर- समपउत्तरसंज्ञाण-वेडिद्विय- सरीरमेगावण पण्ण-नीच-रस- कास-देवगादपाभागाणुपुष्पी- भगुदमसङ्गम-उत्तमाद्-परमाद्- उत्तमास पसत्पविद्यापगद्-तस- बाद्-पञ्चत्त-पञ्चयसरीर- यिर-सुहा-सुमग-सुस्तर-भाद्- जसकित्ति पिमिषुपञ्चागोद्-पञ्च तराहयार्ण को बन्धा को बन्धो ?	२१९
२४७	वेदुणी मोघ ।	२१७	२६० मिच्छाद्विपुद्गुद्गि जाव मय मत्तसंज्ञा बन्धा । एदे बन्धा मयसा मयसा ।	१२१
२४८	एकदुणी मोघ ।	"	२६१ मयसेसा मयसा ।	"
२४९	मणुस्साउ-देवाग्गमार्ण का बन्धा को बन्धो ?	"	२६२ मयसेसा मयसा ।	"
२५०	मिच्छाद्विपुद्गुद्गि जाव मय अज्ञसम्माद्विपुद्गुद्गि बन्धा । एदे बन्धा मयसेसा मयसा ।	२१८	२६३ मयसेसा मयसा ।	"
२५१	तिरयपरणामस्स को बन्धा को मयसा ?	"	२६४ मयसेसा मयसा ।	"
२५२	मयसेसा मयसा ।	"	२६५ मयसेसा मयसा ।	"
२५३	मयसेसा मयसा ।	"	२६६ मयसेसा मयसा ।	"
२५४	मयसेसा मयसा ।	"	२६७ मयसेसा मयसा ।	"
२५५	मयसेसा मयसा ।	"	२६८ मयसेसा मयसा ।	"
२५६	मयसेसा मयसा ।	"	२६९ मयसेसा मयसा ।	"
२५७	मयसेसा मयसा ।	"	२७० मयसेसा मयसा ।	"
२५८	मयसेसा मयसा ।	"	२७१ मयसेसा मयसा ।	"
२५९	मयसेसा मयसा ।	"	२७२ मयसेसा मयसा ।	"
२६०	मयसेसा मयसा ।	"	२७३ मयसेसा मयसा ।	"
२६१	मयसेसा मयसा ।	"	२७४ मयसेसा मयसा ।	"
२६२	मयसेसा मयसा ।	"	२७५ मयसेसा मयसा ।	"
२६३	मयसेसा मयसा ।	"	२७६ मयसेसा मयसा ।	"
२६४	मयसेसा मयसा ।	"	२७७ मयसेसा मयसा ।	"
२६५	मयसेसा मयसा ।	"	२७८ मयसेसा मयसा ।	"
२६६	मयसेसा मयसा ।	"	२७९ मयसेसा मयसा ।	"
२६७	मयसेसा मयसा ।	"	२८० मयसेसा मयसा ।	"
२६८	मयसेसा मयसा ।	"	२८१ मयसेसा मयसा ।	"
२६९	मयसेसा मयसा ।	"	२८२ मयसेसा मयसा ।	"
२७०	मयसेसा मयसा ।	"	२८३ मयसेसा मयसा ।	"
२७१	मयसेसा मयसा ।	"	२८४ मयसेसा मयसा ।	"
२७२	मयसेसा मयसा ।	"	२८५ मयसेसा मयसा ।	"
२७३	मयसेसा मयसा ।	"	२८६ मयसेसा मयसा ।	"
२७४	मयसेसा मयसा ।	"	२८७ मयसेसा मयसा ।	"
२७५	मयसेसा मयसा ।	"	२८८ मयसेसा मयसा ।	"
२७६	मयसेसा मयसा ।	"	२८९ मयसेसा मयसा ।	"
२७७	मयसेसा मयसा ।	"	२९० मयसेसा मयसा ।	"
२७८	मयसेसा मयसा ।	"	२९१ मयसेसा मयसा ।	"
२७९	मयसेसा मयसा ।	"	२९२ मयसेसा मयसा ।	"
२८०	मयसेसा मयसा ।	"	२९३ मयसेसा मयसा ।	"
२८१	मयसेसा मयसा ।	"	२९४ मयसेसा मयसा ।	"
२८२	मयसेसा मयसा ।	"	२९५ मयसेसा मयसा ।	"
२८३	मयसेसा मयसा ।	"	२९६ मयसेसा मयसा ।	"
२८४	मयसेसा मयसा ।	"	२९७ मयसेसा मयसा ।	"
२८५	मयसेसा मयसा ।	"	२९८ मयसेसा मयसा ।	"
२८६	मयसेसा मयसा ।	"	२९९ मयसेसा मयसा ।	"
२८७	मयसेसा मयसा ।	"	३०० मयसेसा मयसा ।	"

सूत्र संख्या

सूत्र

पृष्ठ सूत्र संख्या

सूत्र

पृष्ठ

२१९ आहारसरीर-आहारसरीरमगो-
बन्धयामार्ग को बन्धो को
बन्धो? अन्धमत्तसंज्ञा बन्धा।
एवै बन्धा मवसेसा मवैधा।

१४४

२२० तित्थपरयामार्ग को बन्धो को
बन्धो? मत्तसंज्ञासम्माद्वी जाव
अन्धमत्तसंज्ञा बन्धा। एवै
बन्धा, मवसेसा मवैधा।

१४५

२२१ पम्मवेस्सिएसु मिच्छत्तईमो
अत्थपरमगो।

१४६

२२२ सुक्खेस्सिएसु जाव तित्थपरे
ति आद्यमगो।

"

२२३ जवरि बिसेसो सत्तावेद्वीयस्स
मज्झिमगो।

१४७

२२४ वेद्वामि एक्कद्वीयं जवरिज्ज
विमाज्जासिपेवार्थ मगो।

"

२२५ मविपायुवात्थं मवसिद्धिपाय
मोषे।

१४८

२२६ ममवसिद्धिएसु एवजावावर-
णीय-अवर्त्तमावरणीय सत्ता-
सत् मिच्छत्त-सोसत्तसत्ताप-
जवरिज्जसत्ता-अनुवाज-अनुवा
एवजावि-ओरादिय-वेद्विज्ज
तेजा-कम्मइयसरीर-उत्तंजाव-
ओरादिय-वेद्विज्जमगो-
बन्ध-उत्तंजाव बन्ध गीय-रत्त-
फास-अत्तमिज्जापुप्फा मगुद्व
सद्व उवपात्-परपात्-उत्ताम
आत्तापुज्जोव-वेद्विज्जमगो-
बन्ध-वावर-सुदुम-पज्जत्त-
अपज्जत्त पत्त-सत्तामत्तरीर
पिपयित-सुहासुह-सुमय-
सुमय-सुस्मर-सुस्मर-आवेज्ज-

मज्झिज्ज असत्ति-अज्ज-
त्ति-मिमिज्ज वीज्जवागेत्त-
एवत्तवागोत्त को बन्धो को
बन्धो?

१४९

२२७ सत्थे एवै वधा बन्धा जतिय।

"

२२८ सम्मत्तायुवात्थं सम्माद्वीसु
अवसम्माद्वीसु आमिज्ज
बोद्धिवाभिमतो।

१५०

२२९ जवरि सत्तावेद्वीयस्स को
बन्धो को मवधा?

१५१

२३० मत्तसंज्ञासम्माद्विज्जिज्ज जाव
सत्तागिक्खेवदी बन्धा। सत्तागि
क्खेवदिमत्ताप जवरिसमय
सत्ता बन्धा बोद्धिज्जमि। एवै
बन्धा, मवसेसा मवैधा।

"

२३१ वेद्वसम्माद्विज्जिज्ज एवजावा
वरणीय उवत्तवावरणीय-सत्ता-
वेद्वीय-अवर्त्तज्ज-पुरिज्ज
वेद्व-इत्त-एदि मव तुगुज्ज-वेव
गति-एविविज्जमि-वेद्विज्ज
तेजा-कम्मइयसरीर-समवत्तस
सत्ताव वेद्विज्जमगो-बन्ध-
गीय-रत्त-फास-वेवमवपातो-
गात्तापुप्फा मगुद्वसत्तुव उव
पात्-परपात्-उत्ताम-वसत्त-
विहायमत्त तत्त बन्ध-पज्जत्त-
पत्त-सत्तरीर-पित्त-सुम-सुमग-
सुस्मर-आवेज्ज-असत्ति-
मिमिज्ज तित्थपरववागेत्त एवै
तत्तावत्त को बन्धो को मवधा?

"

२३२ मत्तसंज्ञासम्माद्विज्जिज्ज जाव
अन्धमत्तमज्जा बन्धा। एवै
बन्धा मवधा जतिय।

१५५

सूत्र संख्या	सूत्र	शृङ्खला सूत्र संख्या	सूत्र	शृङ्खला सूत्र संख्या
२८३	असत्त्वबेदनीय भवति सोग— अपिर भसुह—मज्जसकिति— पामाण को बंधो को भवधो ?	३३७	२८३	असत्त्वबेदनीय भवति सोग— अपिर भसुह—मज्जसकिति— पामाण को बंधो को भवधो ?
२८४	असत्त्वबेदनीयमविद्विष्यद्वि जाव पमत्तसत्तवा बंधा । एदे बंधा भवसेसा भवधो ।	३३८	२८४	असत्त्वबेदनीयमविद्विष्यद्वि जाव सुद्धमसांपरायणवत्तमा बंधा । सुद्धमसांपरायणवत्तमा बंधा । अपिरमत्तमयं गंतुं बंधो बोधिस- सत्तवि । एदे बंधा, भवसेसा भवधो ।
२८५	अपचक्खजावावरणीयकोह— माण—माथा सोह मज्जसत्ताह— मज्जसत्ताह—मोयसियसरीर— मोयसियसरीरमगोबंग बखरि सहसंघटन—मज्जसत्तापुम्भी— पामाण को बंधो को भवधो ?	३३९	२८५	अपचक्खजावावरणीयकोह— माण—माथा सोह मज्जसत्ताह— मज्जसत्ताह—मोयसियसरीर— मोयसियसरीरमगोबंग बखरि सहसंघटन—मज्जसत्तापुम्भी— पामाण को बंधो को भवधो ?
२८६	असत्त्वबेदनीयमविद्वि बंधा । एदे बंधा भवसेसा भवधो ।		२८६	असत्त्वबेदनीयमविद्वि बंधा । एदे बंधा भवसेसा भवधो ।
२८७	अपचक्खजावावरणीयकोह माण माथासोमाण को बंधो को भवधो ?	३४०	२८७	अपचक्खजावावरणीयकोह माण माथासोमाण को बंधो को भवधो ?
२८८	असत्त्वबेदनीयमविद्वि सत्त्व- संज्ञा बंधा । एदे बंधा भव- सेसा भवधो ।	"	२८८	असत्त्वबेदनीयमविद्वि सत्त्व- संज्ञा बंधा । एदे बंधा भव- सेसा भवधो ।
२८९	देवावमत्त को बंधो को भवधो ?	३४१	२८९	देवावमत्त को बंधो को भवधो ?
२९०	असत्त्वबेदनीयमविद्वि जाव अपमत्तसत्तवा बंधा । अप मत्तजाव संखेजे भागे पंतु बंधो बोधिसत्तवि । एदे बंधा, भवसेसा भवधो ।	"	२९०	असत्त्वबेदनीयमविद्वि जाव अपमत्तसत्तवा बंधा । अप मत्तजाव संखेजे भागे पंतु बंधो बोधिसत्तवि । एदे बंधा, भवसेसा भवधो ।
२९१	माहारसरीर—माहारसरीरगो- बंगजामाण को बंधो को भवधो ?	३४२	२९१	माहारसरीर—माहारसरीरगो- बंगजामाण को बंधो को भवधो ?
२९२	अपमत्तसत्तवा बंधा । एदे बंधा, भवसेसा भवधो ।	"	२९२	अपमत्तसत्तवा बंधा । एदे बंधा, भवसेसा भवधो ।
२९३	अपचक्खजावावरणीयकोह— माणिमंगो ।		२९३	अपचक्खजावावरणीयकोह— माणिमंगो ।
२९४	अपचक्खजावावरणीयकोह— माणिमंगो ।		२९४	अपचक्खजावावरणीयकोह— माणिमंगो ।

२ अवतरण-गाथा-सूची

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ अन्त्यत्र कही	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ अन्त्यत्र कही
१३	अगुदममङ्गु उबघाव	१७	२२	पलवण्णा हर बण्णा	२४
२४	भागमबकनू साङ्ग	२९४ प्र मा. ३ ३४	९	पण्णरस कसापा विणु	१२
१७	इत्थि-प्यईसयेवेदा	१८	१८	पंवासुइसंघडवा	१८
२१	उवरिस्सपंअए पुण	२४ गो. क. ७८	१०	पुण्णुत्तवसेसामो	१३
२०	अनुपण्णइगो वंघो	" " ७८७	१	वंघेय य संजोगो	३
१५	जालतरायवसय	१७	३	वंधोवय पुण्ण वा	८
१२	आर्यतरायवसय	१५	५	" "	"
११	तित्थयट-भिरय-वैवाडम	१४	२	वंघो वंघविही पुण	
२३	इस अङ्गुरस इसप	२८ गो. क. ७९२	८	मिच्छस मय बुगुंठा	१२
२	इस अनुदिगि सत्तारस	११ " २९३	१३	सत्तावीसेवामो	१५
७	वेवाउ वेवबडककाहार	"	१४	सत्तताळ पुवामो	१९
४	पक्कयम्मामिच्छविही	८	१९	सांठरणिरेनरेण य	१९

३ न्यायोक्तियां

क्रम संख्या	न्याय	पृष्ठ क्रम संख्या	न्याय	पृष्ठ
१	अहा उइसो तहा विइसो ति आणावकडुमोयेजे ति उअ।	४	इति हो वि जण अविर्लंबिकण विइयेगमणयस्स भायामाअण्ववहार विरोहामावत्तो।	३
२	परिस्ति न तद् उपमतिर्लप्य यत्तत			

४ ग्रन्थोल्लेख

१. कृष्णायपादक

ब्रह्मावपाह्मसुतावर्धं सुतं पित्रमपि सि इत्तं सत्त्वं विद्यमहं हिनु । ५१

२ अर्थिसुख

सुधिसुतक्षत्राणमुपपसेध पक्षणे पयडीणमुदयपाप्यरो बनुबमि
पावरार्थं सासणमम्मारिभिदि इदयबोष्टेणम्मवगमात्ता ।

२ महाकर्मप्रकृतिप्रभृत

मिष्टान्न पर्याय-वीर्यिय तीर्यिय-धर्तिरिचमादि भाग्य-यावर-मुहुम-
मयज्ज-साधारणानि दृष्टानि पयशीनि मिष्टान्नादिरस आरिभसमममि इत्युवाचछा ।
एषो महात्मन्यपयश्याहउवपमो ।

४ प्याकरपसुन

एष उच्य सामना ति सुतं भाविषुडीय कपत्रकारसहो । १०

५. सद्यः प्रस्तावः

मयमत्तवत् संवाग्नेषु भागेषु मयेषु देवायमस्य वयो नोऽपिहृत्तपि सि
केषु वि मुत्तपोऽप्यस्य वषट्कार । ६५

५ पारिभाषिक शब्दसूची

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
न		अज्ञानमिच्छात्तव	१०
अगतिर्लोक्युक्त	८	अतिशय	८९
अगुण्यपु	१	अज्ञान	८ ११
अज्ञानार्थी	११८	अमुक	८
		अज्ञानार्थी	९

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अमरित	३	अप्सर्यामिक	२०५
अमादिक	८	असंख्यातक्यायुष्क	११६
अमाद्वेप	९	असंज्ञी	३८७
अमाहारक	३९१	असंभाव्यसृष्टिकासंहमन	१०
अमिष्टसिद्धरज	४	असंघत	३१६
अनुमाप बन्ध	२	असंघतसम्बन्ध	४
अनेकान्त	१४५	असंयम	२, १९
अन्तर	३३	असंयम प्रत्यय	२५
अन्तरकरण	५३	असाताङ्गक	२४२, २७४
अन्तराय	१०	अस्थिर	१०
अपगतवेद	२६८, २६९		
अपमोन्त	९	आ	
अपूर्वकरण	४	आचार्य	७२, ७३
अप्यायिक	१९२	आलाप	९, २००
अप्रत्यय	८	आदेय	११
अप्रत्याख्यानाबन्धङ्गक	२५१, २७४	आदेश	९३
अप्रमत्तसंघत	४	आनुपूर्वी	९
अमभ्यसिद्धिक	३५९	आमितिबोधिकाज्ञानी	२८६
अमिषेय	१	आम्यन्तर तप	८६
अमीक्ष्य अमीक्ष्यज्ञानोपयोगयुक्तता	७९, ९१	आवश्यक	८४
अयहाक्रीति	९	आवश्यकपरिहीनता	७९, ८३
अयोगिकेवली	४	आहारक	३९०
अरति	१०	आहारककापयोगी	२९९
अरहन्त	८९	आहारकमिषकापयोगी	"
अरहन्तमक्ति	७९, ८९	आहारकराशौचक	९
अर्चना	९८		
अर्थापत्ति	२७४	इ	
अर्धनाराचसंहमन	१०	इन्द्रियास्तंयम	२१
अर्पणासूत्र	१९९, १९९, २००	उ	
अर्पित	५	उच्छ्वगात्र	११
अर्धमि	२३४	उच्छ्वसात	१०
अर्धमिज्ञानी	२८६	उत्तरमकृतिबन्ध	२
अर्धमिज्ञानी	३१९	उत्तर प्रत्यय	२०
अध्यागाहमूलप्रकृतिबंध	२	उपोत	९, २००
अनुम	१०	उपमात	१०

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
उपशमक	२३२	उपक	२३५
उपशमसम्प्रदायि	३७२	हायिकनम्यगृहि	३९३
उपशान्तकपाय	४	हीनकपाय	४
उपसंहार	५७		
ए		ग	
एक एक मूलमकृतिबन्ध	२	गतिचंचुक	८
एकस्यामकृदक	२७४	गीम	१
एकस्यानिक	२७९	घ	
एकान्तमिर्यात्त	२	क	
एकेन्द्रिय	९	कान्तुशंली	३१८
ऐ		कान्तुमिन्द्रिय	९
ऐन्द्रिय	९२	कारिबिनिमय	८ ८९
औ		कर्मिस्त	९
औदारिककपायोपी	२ ३	ख	
औदारिकमिन्द्रियभागी	३०५	जीवसमाप्त	४
औदारिकशरीर	१०	जीवस्थान	५
औदारिकशरीरयोगोपांग		कुरुप्ता	१
क		ज्ञानविषय	८
कपरबुद्ध	९२	ज्ञानावरणीय	१
कपाय	३ १९	ज्योतिषी	१४९
कपायमत्तय	२१ ३५	त	
कपोतसङ्घा	३२ ३३२	सिर्गगायु	९
कर्मनकपायभागी	२३९	सिर्गमाति	३
कर्ममहादीर	१	सिर्ग	१९९
कौमिलसंहारम	३	तीर्थ	९२
कृति	९	तीर्थकर	११ ७२ ७३
कृष्णधन्वा	३२	तीर्थकरजामयोधकर्म	७४, ७८
केवड	२३४	तीर्थकरसस्तकर्मिक	३३२
कवचकानी	२९३	तेज	२००
कवचकानी	३१९	तेजकपायिक	१९२
कवचप्रतिरोधनदा	७५ ८५	तेजाखेदवा	३३३
		तेजसशरीर	१०
		वस	११
		जीमिन्द्रिय	९

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
द		निरस्तबन्धप्रकृति	१७
दर्शनविनय	८०	निर्माण	१०
दर्शनविशिष्टयुक्ता	७७	नीचगोच	२
दर्शनमापरणीय	१०	मीछसेरवा	३२० ३३१
दुर्मग	९	नैगमनय	६
दुस्वर	१०		
देवमति	९	प	
देवामु	"	परमसेरवा	३३३, ३४५
देशप्रती	२५५, ३११	परमात	१०
द्रव्यसुत	९१	पट्टाट्टुमिर्दयत	३०३
द्रव्यार्थिकमय	३	परेत्प	७
द्रिस्थानबन्धक	२७४	पर्याप्त	११
द्रिस्थानी	२४५, २७२	पर्याय	५, ३
द्विभिन्न	९	पर्यापार्थिकमय	३ ७८
द्व		पंचेन्द्रियजाति	११
धर्म	९३	पंचेन्द्रियतिर्य्य	११२
धुव	८	पंचेन्द्रियतिर्य्यमपर्याप्त	१२७
धुवबन्ध	१७	पंचेन्द्रियतिर्य्यमपर्याप्त	११३
धुवबन्धप्रकृति	"	पंचेन्द्रियतिर्य्यमोनिमती	"
धुवबन्धी	"	पुरुषवेद	१०
न		पुरुषवेदवृष्टक	२७५
धुंसकवेद	१०	पृथिवीक्षपिक	१९३
धर्मसब	९२	प्रकृतिबन्ध	२, ७
धरकगति	९	प्रकृतिबन्धमुच्छेद	५
धारकामु	"	प्रकृतिसमुत्पत्तिर्तमा	७
मापकसंज्ञान	१०	प्रकृतिस्थानबन्ध	२
मिगेरजीव	१९९	प्रकृता	१०
मिद्रा	१०	प्रकृतप्रकृता	९
मिद्रावृष्टक	२७४	प्रतिष्ठापय	८३ ८४
मिद्रामिद्रा	९	प्रत्यक्षज्ञानी	५७
मिद्रिष्ठात्ता	८२	प्रत्ययविधि	८
मिरस्त	८	प्रत्याक्ष्यान	८३ ८५
मिरस्तबन्ध	१७	प्रत्याक्ष्यानवृष्टक	२७४
		प्रत्याक्ष्यानवृष्टक	९
		प्रत्याक्ष्यान	९

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
प्रत्येकशरीर	१०	म	
प्रवेदावगन्ध	२	मतिमहानी	२७९
प्रमत्तसंपत्	४	मनापर्यवहारी	२९५
प्रमोक्ष	६	मनुष्यत्रयार्पात्	१३
प्रयोजन	१	मनुष्यमति	११
प्रवचन	७२, ७३, ९	मनुष्यमी	१३
प्रवचनप्रमाचना	७९, ९१	मनुष्यपर्याप्त	"
प्रवचनमक्ति	७९, ९०	मनुष्यायु	११
प्रवचनमत्तसत्ता	"	महाकर्ममकृतिमाहृत	९
प्रान्वर्तव्य	२१	महामह	२२
प्रानुक्तपरित्यामता	७१, ८७	महावती	२५५, २५६
व		मातृवृद्धक	२७५
वन्द्य	२, ३, ८	मार्गावात्पान	८
वन्द्यक	२	मिधवात्	२, ९, १९
वन्द्यम	"	मिध्यावृष्टि	४, ३८९
वन्द्यमीय	"	मूकमकृतिवन्द्य	२
वन्द्यविधान	"	मूकप्रत्यय	२
वन्द्यविधि	८	य	
वन्द्यधुक्त्र	५	वयाववातसंपत्	३९
वन्द्यत्वमित्त्वविषय	३	वयावकृतप	७९, ८९
वन्द्याभ्यान	८	वराकीर्ति	११
वहुपुत्र	७९, ७३, ८९	वोता	२, २
वहुपुत्रमक्ति	७९, ८९	वोताप्रत्यय	२१
वात्	११	र	
वाक्वतप	८९	रति	१०
य		रस	"
यव	१	ठ	
यवमवासी	१४९	सन्धि	८९
यवमसिद्धि	१५८	सन्धिसंवेगसम्पत्ता	७९, ८९
योग	१७१	मेहवा	२५५
यावत्पुत्र	९१	योमवृद्धक	२७५
मुत्रगावगन्ध	२		

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
ब्रह्माण्डसंहनन	१०	भुतमहानी	२७९
ब्रह्मण्यमनाण्डसंहनन	"	भुतकेवली	५७
बनस्पतिकायिक	१९२	भुतहानी	२८६
बन्धना	८९, ८४, ९९		
बर्गधा	२	स	
बर्ग	१०	समता	८३, ८४
बामध्वतर	१४६	समाधि	८८
बायुध्वरिक	१९२	सम्बन्ध	१ २
बिमहगति	१९०	सम्बन्धवि	३३३
बिमय	८०	सम्पत्तिमध्यावि	४ ३८३
बिजयसम्पद्यता	७९, ८०	सपोगकेवली	४
बिपीतमिध्यान्व	२०	सर्वातोमद्र	९२
बिर्मगहानी	२७९	सरपातवर्णायुष्क	११३
बिरति	८२	संज्ञी	३८६
बिहायोगति	१०	संज्वलन	१०
बेदकसम्पत्तब	"	संयत	२९८
बेदकसम्पद्यवि	३६४	सपतासंयत	४ ३१०
बेदना	२	संवेग	८६
बेदनीय	११	संस्थान	१०
बैक्रियिककाययोमी	२१५, २३२	सादिक	८
बैक्रियिकशरीर	९	साधारण	९
बैक्रियिकशरीरगोपांग	"	साधु	८७ २६४
बैमयिकमिध्यान्व	२०	साधुसमाधि	७९, ८८
बैषामस्य	८८	साम्तर	७
बैषामस्यपाणयुक्तता	७९, ८८	साम्तर निरन्तर	८
व्यमिचार	३०८	साम्तरवन्धनकृति	१७
व्युत्सर्ग	८३ ८५	सामायिकप्रेरोपस्थापनशुद्धिसंयत	२९८
व्रत	८३	साक्षात्तसम्पद्यवि	४, ३८०
		सांशयिकमिध्यान्व	२०
व्रीह	८२	सुभग	११
व्रीहव्रतेषु निरीतिचारता	७९, ८२	सुस्वर	१०
शुक्लसेइया	३४६	सूत्रम	९
शुभ	१०	सूत्रमसाधारणपिक	४
शोक	"	सूत्रमसाम्पद्यिकसंबत	३०८
		सूत्र	५७

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
वलय	८१, ८४	स्वामित्व	८
वत्प्राप्तपुमि	९	स्वामित्व	८
क्रीडन्	१०	स्वोदय	७
वभाषत	९	स्वोदय-परोदय	८
रिमतिवन्ध	९		
विभर	१०	ह	
वर्ग	८	हास्य	१०



भय
 भयभङ्गामी
 मध्यमिष्ठिक
 मय
 भावभुत
 भुजगारवन्ध

